NEK BANNE AUR BANANE KE TARIQE (HINDI)

नेक बनने और बनाने के त़रीक़े

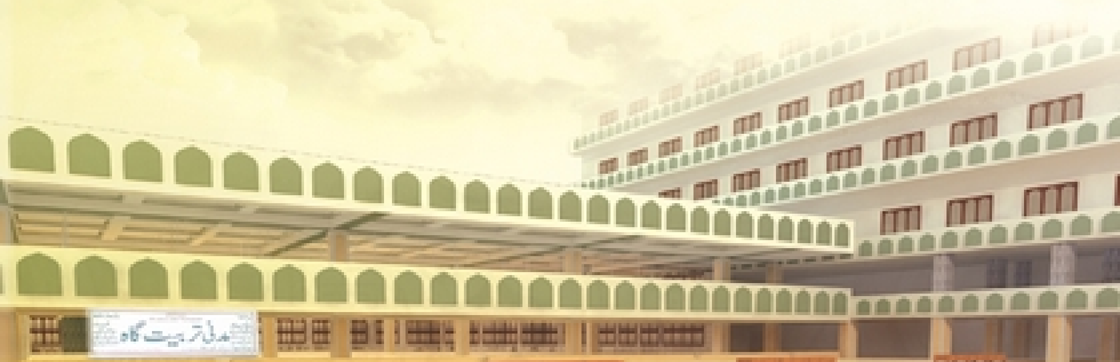

मदनी चैनल देखते रहिये

ٱلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(مستطرف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया) (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

मजलिसे तराजिम हिन्द (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ येह किताब मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में मुरत्तब की है। मजलिसे तराजिम (हिन्द) ने इस किताब को हिन्दी रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह ग़लत़ी पाएं तो मजलिस को सफ़ह़ा और सत़र नम्बर के साथ Sms, E-mail, Whats App या Telegram के ज़रीए़ इत्त़िलाअ़ दे कर सवाबे आख़िरत कमाइये।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबित़ा न फ़रमाएं!!!

...राबित़ा :-

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदाबाद-1, गुजरात (हिन्द) ☎ 9327776311
E-mail : tarajim.hind@dawateislami.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ॽ = ئ	ु = وُ	आ = آ	य = ی	ह = ھ	व = و	न = ن

म–दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने वाले

आ़शिक़ाने रसूल के लिये म–दनी गुलदस्ता

नेक बनने और बनाने के त़रीके़

पेशकश

मजलिसे म–दनी क़ाफ़िला व

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

नाशिर

मक्तबतुल मदीना

421, उर्दू मार्केट, मटया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद,

देहली – 6 फ़ोन : (011) 23284560

www.dawateislami.net

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللہ   وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا حَبِیْبَ اللہ

नाम किताब : नेक बनने और बनाने के त़रीक़े

पेशकश : मजलिसे म-दनी क़ाफ़िला (दा'वते इस्लामी)

त़बाअ़ते अव्वल : र-मज़ानुल मुबारक सि. 1433 हि., ऑगष्ट 2012 ई.

त़बाअ़ते दुवुम : मुहर्रमुल ह़राम सि. 1438 हि., अक्तूबर सि. 2016 ई.

नाशिर : 421, उर्दू मार्केट, मटया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद, देहली-6

-: मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें :-

- ❁..... **अजमेर** : **मक्तबतुल मदीना, 19 / 216** फ़लाहे दारैन मस्जिद, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह अजमेर शरीफ़, राजस्थान, फ़ोन : **0145-2629385**
- ❁..... **बरेली** : **मक्तबतुल मदीना,** दरगाह आ'ला ह़ज़रत, मह़ल्ला सौदागरान, रज़ा नगर, बरेली शरीफ़, यु.पी. फ़ोन : **09313895994**
- ❁..... **गुलबर्गा** : **मक्तबतुल मदीना,** फ़ैज़ाने मदीना मस्जिद, तिम्मापुरी चौक, गुलबर्गा शरीफ़, कर्नाटक फ़ोन : **09241277503**
- ❁..... **बनारस** : **मक्तबतुल मदीना,** अल्लू की मस्जिद के पास, अम्बाशाह की तकिया, मदनपुरा, बनारस, यु.पी. फ़ोन : **09369023101**
- ❁..... **कानपुर** : **मक्तबतुल मदीना,** मस्जिद मख़्दूमे सिमनानी, नज़्द गुर्बत पार्क, डिपटी पडाव चौराहा, कानपुर, यु.पी. फ़ोन : **09616214045**
- ❁..... **कलकत्ता** : **मक्तबतुल मदीना, 35A/H/2** मोमिन पुर रोड, दो तल्ला मस्जिद के पास, कलकत्ता, बंगाल, फ़ोन : **033-32615212**
- ❁..... **नागपुर** : **मक्तबतुल मदीना,** ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ीनगर रोड, मोमिन पुरा, नागपुर (ताजपुर) महाराष्ट्र, फ़ोन : **09326310099**
- ❁..... **अनंतनाग** : **मक्तबतुल मदीना,** मदनी तरबिय्यत गाह, टाउन होल के सामने, अनंतनाग, (इस्लामाबाद), कश्मीर, फ़ोन : **09797977438**
- ❁..... **सुरत** : **मक्तबतुल मदीना,** वलिया भाई मस्जिद के सामने, ख़्वाजा दाना दरगाह के पास, सुरत, गुजरात, फ़ोन : **09601267861**
- ❁..... **इन्दोर** : **मक्तबतुल मदीना,** शोप नम्बर **13**, बोम्बे बाज़ार, उदा पुरा, इन्दोर, एम. पी. (मध्य प्रदेश) फ़ोन : **09303230692**
- ❁..... **बेंग्लोर** : **मक्तबतुल मदीना,** शोप **13**, ह़ज़रत बिलाल मस्जिद कोम्पलेक्स, नवां मेन पिल्लाना गार्डन, अ़रेबिक कोलेज, बेंग्लोर, कर्नाटक : **09343268414**
- ❁..... **हुबली** : **मक्तबतुल मदीना,** ए. जे. मुढोल कोम्पलेक्स, ए. जे. मुढोल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक, फ़ोन : **08363244860**

Web : www.dawateislami.net / E.mail : ilmiapak@dawateislami.net

म-दनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। إِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा

www.dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा

www.dawateislami.net

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡكَ یَا رَسُوۡلَ اللّٰہ

- ..... इजमाली फ़ेहरिस्त 3
- ..... इस किताब को पढ़ने की 22 निय्यतें 9
- ..... तआ़रुफ़ अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या 11
- ..... ज़रूर पढ़िये (पेशे लफ़्ज़) 13
- ..... मआख़ज़ो मराजेअ़ 671
- ..... तफ़्सीली फ़ेहरिस्त 676
- ..... तआ़रुफ़े कुतुब अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या 690

इजमाली फ़ेहरिस्त

नम्बर	उ़नवान	सफ़्हा
1	**बाब 1 : म-दनी क़ाफ़िला**	1
2	म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करने की अहम्मिय्यत	1
3	राहे ख़ुदा मे सफ़र की तरग़ीब पर मुश्तमिल रिवायात व हिकायात	16
4	31 फ़रामीने अमीरे अहले सुन्नत	29
5	अ़लाक़े में म-दनी क़ाफ़िला कैसे तय्यार किया जाए	35
6	क़ाफ़िला से क़ाफ़िले कैसे सफ़र करवाए	41
7	अमीरे क़ाफ़िला को कैसा होना चाहिए	46
8	शुरकाए क़ाफ़िला की तरबिय्यत के म-दनी फूल	48
9	म-दनी क़ाफ़िले को सफ़र करवाने के म-दनी फूल	55
10	एहतरामे मस्जिद के म-दनी फूल	65

www.dawateislami.net

11	म-दनी क़ाफ़िले से मु-तअ़ल्लिक़ चन्द सुवाल जवाब	73
12	**बाब 2 : म-दनी क़ाफ़िले का जदवल**	83
13	म-दनी क़ाफ़िले के जदवल पर अ़मल की ब-रकतें	83
14	**तरबिय्यती बयानात** बराए रवानगिये म-दनी क़ाफ़िला	86
15	पहला तरबिय्यती बयान	86
16	**म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करने की 72 निय्यतें**	101
17	दूसरा तरबिय्यती बयान	104
18	म-दनी क़ाफ़िले का मुख़्तसर जदवल व सामाने म-दनी क़ाफ़िला	114
19	म-दनी क़ाफ़िले के जदवल की तफ़्सील	121
20	इनफ़िरादी कोशिश के म-दनी फूल	137
21	इनफ़िरादी कोशिश के लिये पहली तरग़ीब : राहे ख़ुदा में क़ुरबानियां	141
22	दूसरी तरग़ीब : वक़्त की क़द्र	144
23	तीसरी तरग़ीब : नेकी की दा'वत	147
24	चोथी तरग़ीब : **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में ह़ाज़िरी	150
25	सुन्नतें सिखने का ह़ल्क़ा	153
26	चौक दर्स	158
27	नमाज़ सीखने का ह़ल्क़ा	160
28	दुआ़एं याद करने का ह़ल्क़ा	172
29	नेकी की दा'वत (मुख़्तसर)	177
30	सदाए मदीना का त़रीक़ा	188
31	**बाब : 3 दर्स व बयान**	191
32	दर्स की अहम्मिय्यत	191

www.dawateislami.net

33	दर्स की ब-रकात	192
34	दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत के म-दनी फूल	194
35	मस्जिद में दर्स देने के मक़ासिद	197
36	फ़ैज़ाने सुन्नत से दर्स देने का त़रीक़ा	199
37	बयान की अहम्मिय्यत	204
38	बयान के मक़ासिद	205
39	बयान की अक़्साम	211
40	बयान तय्यार करने का त़रीक़ा	214
41	मुबल्लिग़ के म-दनी फूल	216
42	**फ़ज्र के बयानात**	221
43	**बयान नम्बर 1 :** फ़ैज़ाने ज़िक्रुल्लाह	221
44	**बयान नम्बर 2 :** फ़ैज़ाने तिलावत	228
45	**बयान नम्बर 3 :** फ़ैज़ाने नवाफ़िल	238
46	**बयान नम्बर 4 :** नफ़्ली रोज़ों के फ़ज़ाइल	249
47	**बयान नम्बर 5 :** ज़िक्रुल्लाह के फ़ज़ाइल	257
48	**बयान नम्बर 6 :** फ़ैज़ाने सलातो सलाम	266
49	**बयान नम्बर 7 :** फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह	279
50	**बयान नम्बर 8 :** ज़िक्र की फ़ज़ीलत	294
51	**बयान नम्बर 9 :** म-दनी इन्आमात पर अ़मल का त़रीक़ा	308
52	**बाब नम्बर 4 : अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत**	319
53	**बयानाते अ़स्र**	328
54	**बयान नम्बर : 1** नेकी की दा'वत	328

www.dawateislami.net

55	**बयान नम्बर : 2** नेकी की दा'वत	336
56	**बयान नम्बर : 3** नेकी की दा'वत	343
57	**बयान नम्बर : 4** नेकी की दा'वत	348
58	**बयान नम्बर : 5** नेकी की दा'वत	353
59	**बयान नम्बर : 6** नेकी की दा'वत	359
60	**बयान नम्बर : 7** नेकी की दा'वत	365
61	**बयान नम्बर : 8** नेकी की दा'वत	369
62	**बयान नम्बर : 9** नेकी की दा'वत	374
63	**बयानाते मग़रिब**	379
64	बयान नम्बर 1 : ह़िल्म व बुर्द बारी	379
65	बयान नम्बर 2 : राहे ख़ुदा में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल	387
66	बयान नम्बर 3 : दुन्या की मज़म्मत	397
67	बयान नम्बर 4 : क़ब्र की पुकार	409
68	बयान नम्बर 5 : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर	423
69	बयान नम्बर 6 : मुह़ासबए नफ़्स	435
70	बयान नम्बर 7 : अ़फ़्व व दर गुज़र की फ़ज़ीलत	448
71	बयान नम्बर 8 : इ़ल्मे दीन	459
72	बयान नम्बर 9 : जूदो सख़ा	472
73	बयान नम्बर 10 : मक़्सदे ह़यात	482
74	बयान नम्बर 11 : हुस्ने अख़्लाक़	496
75	**बाब 5 : दुआ़एं सुन्नतें और आदाब**	509
76	दुआ़ की अहमिय्यत	509

www.dawateislami.net

77	म-दनी क़ाफ़िले के जदवल में शामिल दुआ़एं	511
78	सुन्नतें और आदाब	527
79	सलाम करने की सुन्नतें और आदाब	527
80	सलाम के 11 म-दनी फूल	539
81	मुसाफ़ह़ा और मुआ़नक़ा की सुन्नतें और आदाब	542
82	हाथ मिलाने के 14 म-दनी फूल	549
83	बात चीत करने की सुन्नतें और आदाब	552
84	बात चीत करने के 12 म-दनी फूल	554
85	घर में आने जाने की सुन्नतें और आदाब	557
86	घर में आने जाने के 12 म-दनी फूल	565
87	सफ़र की सुन्नतें और आदाब	568
88	राहे ख़ुदा में सफ़र करने का षवाब	573
89	क़ाफ़िले में चलो (अमीरे अहले सुन्नत के अश्आ़र)	578
90	सुरमा लगाने की सुन्नतें और आदाब	580
91	सुरमा लगाने के 4 म-दनी फूल	583
92	छींकने की सुन्नतें और आदाब	585
93	छींकने के आदाब के 17 म-दनी फूल	586
94	नाख़ुन, ह़जामत, मूए बग़ल, वग़ैरा से मु-तअ़ल्लिक़ सुन्नतें और आदाब	589
95	नाख़ुन काटने के 9 म-दनी फूल	593
96	ज़ुल्फ़ें रखने की सुन्नतें और आदाब	596
97	ज़ुल्फ़ों और सर के बालों वग़ैरा के 22 म-दनी फूल	598
98	तेल डालने और कंघी करने के आदाब व 19 म-दनी फूल	603

99	ज़ीनत की सुन्नतें और आदाब	609
100	ख़ुश्बू लगाना सुन्नत है	613
101	ख़ुश्बू लगाने की 47 निय्यतें	619
102	खाने की सुन्नतें और आदाब	621
103	खाने की "40" निय्यतें	626
104	पानी पीने की सुन्नतें और आदाब	628
105	पानी पीने की 15 निय्यतें व चाय पीने की 6 निय्यतें	629
106	पानी पीने के 12 म-दनी फूल	630
107	चलने की सुन्नतें और आदाब	632
108	चलने के 15 म-दनी फूल	633
109	बेठने की सुन्नतें और आदाब	637
110	लिबास पहनने के आदाब व 14 म-दनी फूल	640
111	म-दनी हुल्या	643
112	इमामे के 17 म-दनी फूल	644
113	जूता पहनने की सुन्नतें और आदाब	646
114	जूते पहनने के 7 म-दनी फूल	647
115	सोने जागने की सुन्नतें और आदाब	649
116	सोने जागने के 15 म-दनी फूल	650
117	मिस्वाक के 20 म-दनी फूल	653
118	क़ब्रिस्तान की ह़ाज़िरी के 16 म-दनी फूल	656
119	इस्तिन्जा का त़रीक़ा और आदाब	660
120	मेहमान नवाज़ी की सुन्नतें और आदाब	667
121	आह ! म-दनी क़ाफ़िला अब जा रहा है लौट कर (नज़्म)	670

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

"नेक बनने और बनाने के त़रीके" के बाईस 22 हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की 22 निय्यतें

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : "نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ या'नी मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।"

(المعجم الکبیر للطبرانی ج٦ ص١٨٥ حدیث٥٩٤٢)

दो म-दनी फूल : ﴾1﴿ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़-मले ख़ैर का षवाब नहीं मिलता।

﴾2﴿ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना षवाब भी ज़ियादा।

﴾1﴿ हर बार ह़म्द व ﴾2﴿ सलात और ﴾3﴿ **तअ़व्वुज़** व ﴾4﴿ तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा (इसी सफ़ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़-रबी इ़बारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) ﴾5﴿ रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा ﴾6﴿ ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और ﴾7﴿ क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा ﴾8﴿ शरई मसाइल सीखूंगा ﴾9﴿ अगर कोई बात समझ न आई तो उ़-लमा से पूछ लूंगा ﴾10﴿ किताब मुकम्मल पढ़ने के लिये ब निय्यते ह़ुसूले इ़ल्मे दीन रोज़ाना चन्द सफ़ह़ात पढ़ कर इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने के षवाब का ह़क़दार बनूंगा ﴾11﴿ इस किताब के मुत़ा-लए़ का षवाब सारी उम्मत को ईसाल करूंगा ﴾12﴿ क़ुरआनी आयात और ﴾13﴿ अह़ादीषे मुबारका की ज़ियारत करूंगा ﴾14﴿ जहां जहां "अल्लाह" का नामे

www.dawateislami.net

पाक आएगा वहां "عَزَّوَجَلَّ" और ﴾15﴿ जहां जहां "सरकार" का इस्मे मुबारक आएगा वहां "صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم" पढ़ूंगा ﴾16﴿ (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) इन्दज़्ज़रूरत ख़ास ख़ास मक़ामात पर अन्डर लाइन करूंगा ﴾17﴿ दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा ﴾18﴿ इस किताब में दिये गए जदवल के मुताबिक़ म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करूंगा ﴾19﴿ इस ह़दीषे पाक "تَهَادَوْا تَحَابُّوْا" या'नी एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी । (مؤطا امام مالک ج ۲ ص ۴۰۷ حدیث ۱۷۳۱) पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़ ता'दाद में) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा ﴾20﴿ जिन को दूंगा ह़त्तल इम्कान उन्हें येह हदफ़ भी दूंगा कि आप इतने (म-षलन 25) दिन के अन्दर अन्दर मुकम्मल पढ़ लीजिये ﴾21﴿ इस किताब के ज़रीए आ़शिक़ाने रसूल की तरबिय्यत की कोशिश करूंगा ﴾22﴿ किताबत वग़ैरा में शरई ग़-लती मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी तौर पर मुत्तलअ़ करूंगा

(नाशिरीन व मुसन्निफ़ वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

कामिल मुसलमान की ता'रीफ़

सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा *صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान है : "اَلْمُسْلِمُ مَنْ سَلِمَ الْمُسْلِمُوْنَ مِنْ لِّسَانِهٖ وَيَدِهٖ" या'नी* ***मुसलमान*** *वोह है कि उस के* ***हाथ*** *और* ***ज़बान*** *से* ***दूसरे मुसलमान महफ़ूज़*** *रहें ।* (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 59 ब ह़वाला : صحیح البخاری، کتاب الایمان،باب المسلم من سلم...الخ،الحدیث:۱۰،ج۱،ص۱۵)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَلٰی اِحْسَا نِهٖ وَ بِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ والٖہ وسلَّم

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **"दा'वते इस्लामी"** नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब ह़ुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मु-तअ़द्दिद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** भी है जो **दा'वते इस्लामी** के उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम کَثَّرَهُمُ اللّٰہ تعالٰی पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल छे शो'बे हैं :

﴾1﴿ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत
﴾2﴿ शो'बए दर्सी कुतुब
﴾3﴿ शो'बए इस्लाही़ कुतुब
﴾4﴿ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब
﴾5﴿ शो'बए तख़रीज
﴾6﴿ शो'बए तराजिमे कुतुब

www.dawateislami.net

"**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल ब-रकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शमए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माहि़ये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइषे ख़ैरो ब-रकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरांमाया तसानीफ़ को अ़स्रे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सहल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती म-दनी काम में हर मुम्किन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ "**दा'वते इस्लामी**" की तमाम मजालिस ब शुमूल "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़-मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा जल्वए मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم में शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में अपने म-दनी ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमाए।

اٰمِين بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالیٰ علیه واٰلهٖ وسلَّم

र-मज़ानुल मुबारक 1425 हि.

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

ज़रूर पढ़िये

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी**, जिस की बुन्याद आज से तक़रीबन तीस साल क़ब्ल ज़ुल क़ा'दतिल ह़राम **1401 सि. हि.** ब मुत़ाबिक़ सितम्बर 1981 सि.ई. में बाबुल मदीना कराची में शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा **मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ ने रखी, **मीठे मीठे मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की इनायतों, **सह़ाबए किराम** رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْھِمْ की ब-रकतों, **औलियाए उ़ज़्ज़ाम** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْھِمْ की निस्बतों, **उ़-लमाओ मशाइख़े अहले सुन्नत** دامت فیوضھم की शफ़्क़तों और **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ की शबो रोज़ कोशिशों के नतीजे में आज "**दा'वते इस्लामी**" का म-दनी पैग़ाम ता दमे तह़रीर दुन्या के कमो बेश **150** ममालिक में पहुंच चुका है और काम्याबी का सफ़र अभी जारी है।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ की तरबिय्यत की ब-रकत से तय्यार होने वाले मुबल्लिग़ीने दा'वते इस्लामी के ज़रीए़ दुन्या के मुख़्तलिफ़ ममालिक में "**म-दनी क़ाफ़िलों**" का म-दनी जाल बिछाया जा चुका है, **आ़शिक़ाने रसूल** के सुन्नतों की तरबिय्यत के बे शुमार **म-दनी क़ाफ़िले** 3 दिन, 12 दिन, 30 दिन और 12 माह के लिये मुल्क ब मुल्क, शहर ब शहर और क़र्या ब क़र्या सफ़र

www.dawateislami.net

कर के इल्मे दीन और सुन्नतों की बहारें लुटा रहे और नेकी की दा'वत की धूमें मचा रहे हैं। **मु-तअ़द्दद** मक़ामात पर **म-दनी तरबिय्यत गाहें** क़ाइम हैं जिन में दूरो नज़्दीक से इस्लामी भाई आ कर क़ियाम करते, आ़शिक़ाने रसूल की सोहबत में सुन्नतों की तरबिय्यत पाते और फिर क़ुर्बो जवार में जा कर "**नेकी की दा'वत**" के म-दनी फूल महकाते हैं। नए **मुबल्लिग़ीन** की तरबिय्यत के लिये मुख़्तलिफ़ कोर्सिज़ का एहतिमाम किया गया है म-षलन 41 दिन का म-दनी क़ाफ़िला कोर्स, 63 दिन का तरबिय्यती कोर्स, गूंगे बहरों के लिये 30 दिन का तरबिय्यती कोर्स, इमामत कोर्स और मुदर्रिस कोर्स वग़ैरहुम।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! **यक़ीनन राहे ख़ुदा** में सफ़र करने वाले **आ़शिक़ाने रसूल** के हमराह **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करना बहुत बड़ी सआ़दत है। इन म-दनी क़ाफ़िलों की ब-रकत से पंज वक़्ता नमाज़ व नवाफ़िल की पाबन्दी के साथ साथ प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतें भी सीखने को मिलती हैं और इल्मे दीन के लिये सफ़र का षवाब अलग से ह़ासिल होता है।

ह़ज़रते अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ से रिवायत है कि मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि "जो इल्म की तलाश में किसी रास्ते पर चलता है तो **अल्लाह तआ़ला** उस के लिये जन्नत का रास्ता आसान फ़रमा देता है और बेशक फ़िरिश्ते त़ालिबुल इल्म के अ़मल से ख़ुश हो कर उस के लिये अपने पर बिछा देते हैं और बेशक ज़मीनो आस्मान में रहने वाले यहां तक कि पानी में मछलियां

आ़लिमे दीन के लिये इस्तिग़्फ़ार करती हैं और आ़लिम की आ़बिद पर फ़ज़ीलत ऐसी है जैसी चौदहवीं रात के चांद की दीगर सितारों पर और बेशक उ़-लमा अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के वारिष हैं, बेशक अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام दिरहम व दीनार का वारिष नहीं बनाते बल्कि येह नुफ़ूसे क़ुदसिय्या عَلَيْهِمُ السَّلَام तो सिर्फ़ इ़ल्म का वारिष बनाते हैं तो जिस ने इसे ह़ासिल कर लिया उस ने बड़ा हि़स्सा पा लिया।"

(سنن ابن ماجه، كتاب السنة،باب فضل العلماء...الخ الحديث:٢٢٣،ج١، ص١٤٥)

इस के साथ साथ इन **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र की ब-रकत से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपने साबिक़ा त़र्ज़े ज़िन्दगी पर ग़ौरो फ़िक्र का मौक़अ़ मिलेगा और दिल हुस्ने आ़क़िबत के लिये बेचैन हो जाएगा जिस के नतीजे में इरतिकाबे गुनाह की कषरत पर नदामत मह़सूस होगी और तौबा की तौफ़ीक़ मिलेगी। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

आ़शिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों में मुसल्सल सफ़र करने के नतीजे में ज़बान पर फ़ोह़श कलामी और फ़ुज़ूल गोई की जगह दुरूदे पाक जारी हो जाएगा, येह तिलावते क़ुरआन, ह़म्दे इलाही عَزَّوَجَلَّ और ना'ते रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की आ़दी बन जाएगी, ग़ुस्से की आ़दत रुख़्सत हो जाएगी और इस की जगह नर्मी ले लेगी, बे सब्री की आ़दत तर्क कर के साबिरो शाकिर रहना नसीब होगा, तकब्बुर से जान छूट जाएगी और एह़तिरामे मुस्लिम का जज़्बा मिलेगा, दुन्यावी मालो दौलत की लालच से पीछा छूटेगा और नेकियों की ह़िर्स मिलेगी। राहे ख़ुदा में मुसल्सल सफ़र करने वाले की ज़िन्दगी में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो जाएगा اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आ़शिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र के मुकम्मल फ़वाइद उसी वक़्त ह़ासिल हो सकते हैं जब हम घर से चलने से लौटने तक, तरबिय्यत के तमाम म-दनी फूलों से आगाह हों। इन म-दनी फूलों की मा'लूमात के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना ने दो किताबें शाएअ़ की हैं :

﴾1﴿ निसाबे म-दनी क़ाफ़िला ﴾2﴿ रहनुमाए जदवल

दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के मुह़र्रमुल ह़राम 1432 हि. ब मुत़ाबिक़ जनवरी सि. 2011 ई. के म-दनी मश्वरे में इन पर नज़रे षानी का तै़ हुवा चुनान्चे चन्द अराकीने शूरा और मजलिसे म-दनी क़ाफ़िला के ज़िम्मादारान का म-दनी मश्वरा यकुम रबीउ़न्नूर 1432 हि. ब मुत़ाबिक़ फ़रवरी 2011 ई. को आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची में हुवा। उस म-दनी मश्वरे में दीगर म-दनी फूलों के इ़लावा येह भी तै़ हुवा कि निसाबे म-दनी क़ाफ़िला और रहनुमाए जदवल को यक्जा कर दिया जाए ताकि म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने वाले आ़शिक़ाने रसूल को आसानी हो और वोह ज़ियादा से ज़ियादा इस्लामी मसाइल व उ़लूम ह़ासिल कर सकें नीज़ वोह किताब मुकम्मल जदवल, बयानात, दुआ़ओं, सुन्नतों और आदाब की जामेअ़ हो ताकि दौराने सफ़र फ़ैज़ाने सुन्नत और नमाज़ के अह़काम के इ़लावा किसी और किताब की ज़रूरत न रहे। येह काम दा'वते इस्लामी की इ़ल्मी और तह़क़ीक़ी मजलिस **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** को सौंपा गया।

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! मज़्कूरा म-दनी मश्वरे के म-दनी फूलों की रोशनी में मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** के इस्लामी भाइयों ने इस पर काम किया और किताब के नाम के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा **मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्ता़र क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की बारगाह से रुजूअ़ किया तो आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने अपनी कषीर म-दनी मसरूफ़ियात के बा वुजूद शफ़्क़त फ़रमाई और इस का नाम **"नेक बनने और बनाने के त़रीके़"** रखा। बिला शुबा येह किताब म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने वाले आ़शिक़ाने रसूल के लिये जदवल, तरबिय्यत, बयानात और इ़ल्मी मा'लूमात पर मुश्तमिल म-दनी क़ाफ़िले का एन्साईक्लो पीडिया है। इस को इस अन्दाज़ से मुरत्तब किया गया कि इस में 3 दिन, 12 दिन और 30 दिन के म-दनी क़ाफ़िलों में सीखी जाने वाली तमाम दुआ़एं, सुन्नतें और आदाब नीज़ बा'द नमाज़े फ़ज्र, अ़स्र और मग़रिब में होने वाले **सुन्नतों भरे 29 बयानात** भी शामिल हैं।

अ़स्र ता मग़रिब फ़ैज़ाने सुन्नत से दर्स देने वाले तमाम सफ़ह़ात के नम्बर और ज़ोहर की नमाज़ के बा'द सीखने सिखाने के ह़ल्के़ में अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की किताब **"नमाज़ के अह़काम"** से जदवल के मुत़ाबिक़ सफ़ह़ात के नम्बर भी दर्ज कर दिये गए। इस में आप को जो ख़ूबियां दिखाई दें वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा, उस के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की नज़्रे करम,

www.dawateislami.net

उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہ تعالٰی बिल ख़ुसूस शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه के फ़ैज़ से हैं और जो ख़ामियां नज़र आएं उन में यक़ीनन हमारी कोताही को दख़्ल है।

अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है कि हमें "**अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश**" करने के लिये **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल और **म-दनी क़ाफ़िलों** का मुसाफ़िर बनते रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और **दा'वते इस्लामी** की तमाम मजालिस ब शुमूल **मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** को दिन पच्चीसवीं रात छब्बीसवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِیِّ الْاَمِين صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

शो'बए इस्लाही कुतुब

(मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

महब्बतों के चोरों से बचो

बुज़ुर्गाने दीन *رَحِمَهُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن फ़रमाते हैं : अ़क़्लों के दुश्मनों और* ***मह़ब्बतों*** *के चोरों से बचो, येह चोर* ***बदगोई*** *करने वाले और* ***चुग़ली*** *खाने वाले हैं और चोर तो माल चुराते हैं जब कि* ***येह*** *(ग़ीबतें और चुग़्लियां करने वाले)* ***लोग मह़ब्बतें चुराते हैं।***

(ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 94, ब ह़वाला اَلْمُسْتَطْرَف ج١ ص١٥١)

www.dawateislami.net

बाब नम्बर 1

म-दनी क़ाफ़िला

इस बाब में :

म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करने की **अहम्मिय्यत, राहे ख़ुदा** में सफ़र की **तरग़ीब** पर मुश्तमिल रिवायात व हिकायात, **म-दनी क़ाफ़िले** और दीगर **म-दनी कामों** के बारे में **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के **इर्शादात, अ़लाक़े** में **म-दनी क़ाफ़िले** तय्यार करने के **म-दनी फूल, म-दनी क़ाफ़िले** के ज़रीए **मज़ीद म-दनी क़ाफ़िले** सफ़र करवाने के त़रीक़े, **अमीरे क़ाफ़िला** और **शुरूअ़** से **आख़िर** तक **म-दनी क़ाफ़िले का सफ़र** कैसा होना चाहिये, **एह़तिरामे मस्जिद** के **म-दनी फूल, म-दनी क़ाफ़िले** से मु-तअ़ल्लिक़ चन्द **ज़रूरी सुवाल जवाब**, इन के इलावा **मज़ीद उ़नवानात** भी शामिल हैं ।

www.dawateislami.net

बाब 1 : म-दनी क़ाफ़िला

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ अपनी किताब **"घरेलू इलाज"** में नक़्ल फ़रमाते हैं कि **मदीने** के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमियान, सरवरे ज़ीशान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जो मुझ पर रोज़ाना दिन में **एक हज़ार बार दुरूदे पाक** पढ़ेगा वोह उस वक़्त तक नहीं मरेगा जब तक जन्नत में अपना मक़ाम न देख ले।"

(اَلتَّرْغِیب وَالتَّرْھِیب ج۲ص۳۲۸ حدیث ۲۲)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(1) म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करने की अहम्मिय्यत

प्यारे इस्लामी भाइयो !

आज सारी दुन्या में मुसलमानों की अकषरिय्यत शरई अह़काम पर अ़मल के मुआ़मले में बेह़द ग़फ़लत व सुस्ती का शिकार है।

इ़बादात को ही ले लीजिये नमाज़ व रोज़ा वग़ैरा की अदाएगी में जिस त़रह़ कोताही की जाती है इस का अन्दाज़ा गन्जान आबाद मक़ाम पर किसी भी मस्जिद में नमाज़ियों की ता'दाद को देख कर लगाया जा सकता है या फिर दौराने र-मज़ान "दिन दहाड़े" होटलों

वग़ैरा में बिला उ़ज़्रे शरई रोज़ा न रखने वाले "रोज़ा ख़ोरों" की ता'दाद को देख कर,...... और जहां तक मुआ़मलात म-षलन आपस में ख़रीदो फ़रोख़्त, निकाह़ व त़लाक़, उजरत दे कर कोई काम करवाने का तअ़ल्लुक़ है तो इल्मे दीन से मह़रूमी के बा वुजूद कोई भी काम करते वक़्त उ़मूमन उस की शरई हैषिय्यत मा'लूम ही नहीं की जाती कि हम जो कुछ करने जा रहे हैं वोह जाइज़ है या ना जाइज़ ? और अगर कोई ख़ैर ख़्वाही करते हुए उस के ना जाइज़ होने के बारे में बता भी दे तो मुख़्तलिफ़ ह़ीलों बहानों से अपने फ़े'ल को जाइज़ क़रार देने की कोशिश की जाती है । रहे अ़क़ाइद तो इन का मुआ़मला सब से ज़ियादा नाज़ुक है कि हमारी अकषरिय्यत तश्वीश की ह़द तक अपने अ़क़ाइद से ना बलद है जिस की वजह से ऐसे कलिमात भी बक दिये जाते हैं जिन्हें उ़-लमाए किराम ने कुफ़्र क़रार दिया है । (कुफ़्रिय्या कलिमात की मा'लूमात के लिये अमीरे अहले सुन्नत مدَّظِلُّهُ الْعَالِی की किताब "**कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब**" का मुत़ालआ़ फ़रमाइये)

सिर्फ़ इसी पर बस नहीं बल्कि गुनाहों का एक सैलाब है जिस में मुसलमान बहते जा रहे हैं, झूट, ग़ीबत, चुग़ली, चोरी, क़त्ल, जूआ, सूद का लैन दैन, ज़िना, अमानत में ख़ियानत, वालिदैन की ना फ़रमानी, मुसलमानों को बिला वज्हे शरई अज़िय्यत देना, बुग़्ज़ो कीना, तकब्बुर ह़सद वग़ैरा ।

अल ग़रज़ वोह कौन सा गुनाह है जिस का इरतिकाब आज हमारे मुआ़-शरे में कषरत से नहीं किया जा रहा ?

www.dawateislami.net

एक त़रफ़ तो इतनी परेशान कुन सूरते ह़ाल और दूसरी त़रफ़ अग़्यार हैं जो मुसलमानों को तबाहो बरबाद करने के लिये अपने दिन रात एक किये हुए हैं ह़त्ता कि अपने तमाम तर वसाइल भी इस मक़्सद की तकमील के लिये इस्ति'माल करने से दरेग़ नहीं करते। कुफ़्फ़ार की तह़रीकें किस क़दर तेज़ी से अपने बात़िल मज़्हब के लिये काम कर रही हैं इस का अन्दाज़ा दर्जे ज़ैल वाक़िए़ से लगाया जा सकता है :

ट्रेन में एक इस्लामी भाई की मुलाक़ात एक ऐसे शख़्स से हुई जो हुल्ये से ग़ैर मुल्की लग रहा था। जब इस्लामी भाई ने उस से पूछा कि "तुम्हारा पाकिस्तान आने का क्या मक़्सद है ?" तो उस ने जवाब दिया कि "मैं अपने फ़ुलां मज़्हब की तब्लीग़ के लिये आया हूं।" उस की गुफ़्तगू से मा'लूम हुवा कि वोह पाकिस्तान के सूबे बाबुल इस्लाम सिन्ध में दादू शहर में रहता है और 15 साल से इस काम में मसरूफ़ है, उस की शादी पाकिस्तान के मश्हूर शहर मरी में हुई है, उस के वालिदैन केनेडा में रहते हैं जो साल में एक मरतबा पाकिस्तान आते हैं या'नी उस की अपने वालिदैन से साल में एक मरतबा मुलाक़ात होती है और वोह मुसल्सल अपने (बात़िल) मज़्हब की तब्लीग़ कर रहा है।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह तो एक मिषाल थी, इस जैसे न जाने कितने लोग होंगे जो मुसलमानों को ईमान की दौलत से मह़रूम करने के लिये सरगर्मे अ़मल होंगे।

इस लिये हमें चाहिये कि ख़्वाबे गफ़्लत से बेदार हों और अपनी आख़िरत की बेहतरी के लिये बानिये दा'वते इस्लामी, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़ता कर्दा इस म-दनी मक़्सद को अपना लें कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।"** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

याद रखिये ! अपनी इस्लाह़ के लिये म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये राहे खु़दा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने के लिये "दा'वते इस्लामी" के म-दनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बनना बेहद ज़रूरी है। क्यूंकि सारी दुन्या में नेकी की दा'वत म-दनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बन कर ही आ़म की जा सकती है।

खु़द हमारे म-दनी आक़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने राहे खु़दा में मु-तअ़द्दिद सफ़र किये, जिन के दौरान सरवरे कौनैन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने बहुत सी तकालीफ़ का सामना किया, मुसीबतें झेलीं, त़ा'ने सुने, ज़ख़्म सहे, पथ्थर खाए, फ़ाक़ों के सबब पेट पर पथ्थर बांधे,...... लेकिन फिर भी रातों को उठ उठ कर, रो रो कर लोगों की हिदायत के लिये दुआ़एं कीं और राहे खु़दा में सफ़र कर के लोगों के पास जा जा कर इस्लाम की दा'वत को आ़म किया।

इसी त़रह़ इमामे हु़सैन رَضِىَ اللّٰه تَعَالٰى عَنْهُ ने भी राहे खु़दा में सफ़र किया और करबला के मैदान में भूक, प्यास और दुश्मनों के बहुत बड़े

www.dawateislami.net

गुरौह का सामना किया, ह़त्ता कि इस्लाम की सर बुलन्दी के लिये अपनी जान तक क़ुरबान कर दी। ख़ुद शहीद हो कर इस्लाम का परचम ऊंचा कर गए और हमें येह सबक़ दे दिया कि "**इस्लाम की इशाअ़त और नेकी की दा'वत देने के लिये राहे ख़ुदा में सफ़र इख़्तियार करें।**"

सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِم की अकषरिय्यत ऐसी थी जिन्हों ने सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से इल्मे दीन ह़ासिल किया फिर उसे सारी दुन्या में फैलाने के लिये राहे ख़ुदा में सफ़र इख़्तियार किया। येही वजह है कि सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم के मज़ारात सिर्फ़ मदीनए त़य्यिबा ही में नहीं बल्कि दुन्या के मु-तअ़द्दिद मक़ामात पर भी मौजूद हैं। इन के बा'द ताबिईन, तबए़ ताबिईन, अइम्मए उ़ज़्ज़ाम और औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی ने नेकी की दा'वत को आ़म करने के इस सिल्सिले को जिस आबो ताब के साथ क़ाइम रखा, वोह वाक़िफ़ाने तारीख़ (तारीख़ जानने वालों) से मख़्फ़ी नहीं। इसी त़रह़ ह़ुज़ूर सय्यिदुना ग़ौषे आ'ज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के दामने अक़्दस से जो पाकबाज़ लोग वाबस्ता हुए उन्हों ने दीने इस्लाम के लिये भरपूर कोशिशें कीं और आ'ला ह़ज़रत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الرَّحۡمٰن और आप के मुरीदीन व मु-तवस्सिलीन ने भी इस काम का बीड़ा उठाया और इस्लाम के पैग़ाम को दुन्या में आ़म करने के लिये भरपूर जिद्दो जहद की।

इन्ही अकाबिरीने इस्लाम के नक़्शे क़दम पर चलते हुए अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने मुसलमानों की इस्लाह़ के लिये शबो रोज़ कोशिश की और इन की कोशिशों का नतीजा आज **"दा'वते इस्लामी"** की आ़लमगीर तह़रीक की सूरत में हमारे सामने है। बानिये दा'वते इस्लामी مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی ने हर इस्लामी भाई के लिये ख़ुसूसी तौ़र पर दो म-दनी काम अ़ता फ़रमाए हैं, जिन के तह़त सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिशें की जा सकती हैं।

(1) म-दनी इन्आ़मात　　**(2) म-दनी क़ाफ़िले**

अगर हर इस्लामी भाई इन दो म-दनी कामों के लिये अपनी भरपूर कोशिश सर्फ़ करे तो पूरी दुन्या में दा'वते इस्लामी की धूम मच जाएगी और कुछ ही अ़र्से में दा'वते इस्लामी का येह पैग़ाम हर मुल्क, हर सूबे, हर शहर, हर गाउं, हर मह़ल्ले और हर घर में पहुंच जाएगा, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने और दूसरे इस्लामी भाइयों को सफ़र करवाने की अहम्मिय्यत का अन्दाज़ा मुन्दरिजए ज़ैल वाक़ेआ़त से बख़ूबी लगाया जा सकता है।

बलूचिस्तान का वाक़ेआ़

आ़शिक़ाने रसूल का एक म-दनी क़ाफ़िला बलूचिस्तान की एक आबादी में गया। अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत के दौरान शु-रकाए क़ाफ़िला ने जब एक उ़म्र रसीदा बुज़ुर्ग को नेकी की दा'वत दी तो उस ज़ईफ़ बुज़ुर्ग ने जज़्बात की शिद्दत से रोना शुरूअ़ कर दिया

www.dawateislami.net

और कहने लगे कि ''अफ़सोस ! तुम ने आने में बहुत देर कर दी, अब आए हो जब हमारी आधी बस्ती दीन से दूर हो चुकी है, ख़ुद मेरे घर में दो नौ जवान दीन से दूर हो गए,...... काश ! मेरी जवानी में येह तह्रीक होती तो ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं कभी भी घर में सुकून से न बैठता, बल्कि म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र कर के हर ग़रीब व अमीर को ईमान की हि़फ़ाज़त की दा'वत देता।''

वीरान मस्जिद

आ़शिक़ाने रसूल का एक म-दनी क़ाफ़िला सुन्नतों की तरबिय्यत की ग़रज़ से अन्दरूने सिन्ध गया। जब क़ाफ़िले वाले उस गाउं में पहुंचे तो देखा कि मस्जिद पर ताला पड़ा हुवा है। लोगों से मा'लूमात करने के बा'द जब उस मस्जिद को खोला गया तो क़ाफ़िले वाले येह देख कर इन्तिहाई ग़मगीन हो गए कि त़वील अ़र्से से सफ़ाई न होने के सबब मस्जिद में हर त़रफ़ गर्दो ग़ुबार फैला हुवा है और दीवारों पर मकड़ी के बड़े बड़े जाले नज़र आ रहे हैं। म-दनी क़ाफ़िले वालों ने वहां के लोगों से निहायत अफ़सुर्दा लहजे में पूछा कि ''मस्जिद कब से बन्द है ?'' तो उन्हें बताया गया कि ''अ़र्सए दराज़ से मस्जिद बन्द है क्यूंकि लोगों ने नमाज़ पढ़ना ही छोड़ दिया, लिहाज़ा इमाम साहि़ब भी यहां से चले गए और अब लोग दुन्या दारी में मसरूफ़ हैं चुनान्चे नमाज़ियों के न होने की वजह से मस्जिद को ताला लगा दिया गया है।'' जब कि उस अ़लाक़े में अकषर दुकानों पर गाने बाजे और फ़िल्में दिखाने का सिलसिला सरे आ़म जारी था।

बूढ़ा रोने लगा

आ़शिक़ाने रसूल का 30 दिन का एक म-दनी क़ाफ़िला सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र पर था। दौराने तरबिय्यत एक अ़लाक़े के मक़ामी इस्लामी भाइयों ने इ़ल्मे दीन सीखने के ह़ल्क़ों में शिर्कत की तो जब ग़ुस्ल के फ़राइज़ सिखाए गए तो एक बुज़ुर्ग रोते हुए कहने लगे कि "मेरी उ़म्र 70 साल है लेकिन ग़ुस्ल के फ़राइज़ के बारे में मुझे आज क़ाफ़िले वालों से पता चला है जब कि इस से पहले मुझे येह बात मा'लूम ही न थी कि ग़ुस्ल में फ़राइज़ भी होते हैं।"

दर्द भरे मक्तूब की पुकार

दा'वते इस्लामी के एक ज़िम्मादार इस्लामी भाई को बैरूने मुल्क से एक मकतूब मौसूल हुवा जिस का मज़्मून कुछ यूं था कि "मेरे वालिदैन पहले मुसलमान थे लेकिन इ़ल्मे दीन और इस्लामी तरबिय्यत से बिलकुल दूर थे, जिस की वजह से ग़ैर मुस्लिमों ने उन को अपने बात़िल मज़्हब की तब्लीग़ की, आह ! वोह आज ग़ैर मुस्लिम हैं। इस के बा वुजूद आज हमारे यहां मुसलमानों को शरई अह़काम सिखाने वाला कोई नहीं और न ही कोई नेकी की दा'वत देने वाला। मेरे वालिदैन ख़ुद तो ग़ैर मुस्लिम हो ही गए लेकिन वोह दीगर अफ़राद के ईमान की तबाही के भी दरपै हैं। लिहाज़ा यहां हमारे मुल्क में दा'वते इस्लामी के म-दनी क़ाफ़िलों की अशद्द ज़रूरत है, पाकिस्तान से आ़शिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िले रवाना कीजिये जो हमारे मुल्क में नेकी की दा'वत आ़म करें।"

इन सब की जहालत का ज़िम्मादार कौन ?

ज़िलअ़ ठठ्ठा बाबुल इस्लाम सिन्ध, केटी बन्दर के नज़्दीक एक जज़ीरा है। वहां क़ादियानियों ने खुले आ़म अपने दीन की तब्लीग़ शुरूअ़ कर दी और दीनी मा'लूमात से मह़रूमी की वजह से वहां के लोग मुरतद होना शुरूअ़ हो गए। वहां जहालत का येह आ़लम है कि मय्यित को दफ़्न नहीं करते बल्कि ग़ुस्ल दिये बिग़ैर समुन्दर में फेंक देते हैं।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ज़रा सोचिये कि अब वहां और इस क़िस्म के दीगर अ़लाक़ों के लोगों का ईमान कैसे बचाया जाए ? मेरे दिल जलाने वाले इस्लामी भाइयो ! इन ना मुसाइद ह़ालात के मुक़ाबले के लिये हमें दर्जे ज़ैल दो म-दनी काम अपनी ज़ात पर नाफ़िज़ कर लेने चाहिएं :

(1) ख़ुद भी म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना है...... और

(2) इस्लामी भाइयों को तय्यार कर के हाथों हाथ म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करवाना है।

मां ! इस्लाम क्या है ?

आ़शिक़ाने रसूल का एक म-दनी क़ाफ़िला सुन्नतों की तब्लीग़ के लिये रूस पहुंचा तो वहां के एक मुसलमान ने येह वाक़िआ़ रोते हुए बयान किया कि

"यहां पर मेरी मुलाक़ात एक ऐसे नौ जवान से हुई जो अपने चेहरे और ख़द्दो ख़ाल से मुसलमान लग रहा था। मुलाक़ात के दौरान उस ने बताया कि "मैं भी पहले मुसलमान था लेकिन अब ग़ैर

www.dawateislami.net

मुस्लिम हो चुका हूं जब कि मेरे वालिदैन अभी भी मुसलमान हैं। (अपने ग़ैर मुस्लिम होने का वाक़ेआ़ बताते हुए उस ने कहा कि) मेरे मुसलमान होने की वजह से कॉलेज के नौ जवान त़-लबा मुझ से बार बार मज़्हबे इस्लाम के बारे में सुवालात करते लेकिन मग़रिबी तहज़ीब व तमद्दुन के माह़ोल में परवरिश होने की बिना पर मैं बग़लें झांक कर रह जाता। रोज़ रोज़ की परेशानी से तंग आ कर एक दिन मैं ने अपनी मां से पूछा, "मां ! मुझे बताओ कि इस्लाम क्या है ? मुझ से कॉलेज में त़-लबा इस के बारे में पूछते हैं।" तो मेरी मां ने जवाब दिया, "मुझे तो ख़ुद मा'लूम नहीं कि इस्लाम क्या है।" जब मेरी मां मुझे इस्लाम के बारे में कुछ न बता सकी तो मैं ने सोचा कि "जिस मज़्हब के बारे में न मैं कुछ जानता हूं और न ही मेरी मां तो मैं उसे क्यूं इख़्तियार करूं, चुनान्चे मैं ने अपने दोस्तों का मज़्हब इख़्तियार कर लिया।" फिर वोह नौ जवान मुझ से कहने लगा, "अब आप ही बताएं कि क़ुसूर वार कौन ? हम...... या...... वोह मुसलमान जिन को इस्लाम के बारे में इ़ल्म था लेकिन उन्हों ने उसे हम तक नहीं पहुंचाया ?"

आह ! इस्लाम से दूरी

म-दनी तरबिय्यत गाह बाबुल मदीना कराची से एक म-दनी क़ाफ़िला 3 दिन के लिये बाबुल मदीना के अत़राफ़ में वाक़ेअ़ एक गोठ में पहुंचा। उस म-दनी क़ाफ़िले में दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के एक रुक्न भी शामिल थे। तीसरे और आख़िरी दिन

www.dawateislami.net

जब दो पहर के खाने से पहले ह़ल्क़ा लगा हुवा था तो एक नौ जवान मस्जिद में आया और कहने लगा कि "मुझे एक मस्अला पूछना है।" चुनान्चे दो इस्लामी भाई उसे एक त़रफ़ ले गए। उस नौ जवान ने कहा कि "मैं मस्जिद के क़रीब से गुज़र रहा था कि अचानक मेरे दिल में ख़याल आया कि यहां एक क़ाफ़िला आया हुवा है, इन से मा'लूमात ह़ासिल करता हूं कि मुसलमानों और क़ादियानियों में क्या फ़र्क़ है ?" फिर उस ने बताया कि "मेरी मा'लूमात के मुत़ाबिक़ क़ादियानी भी हमारी ही त़रह़ होते हैं, दोनों के पास एक जैसा क़ुरआने पाक है, उन की तमाम इबादतें हमारी इबादतों की मिष्ल हैं। मेरे काफ़ी दोस्त उस (क़ादियानियों की) त़रफ़ माइल हो चुके हैं और मैं भी पिछले हफ़्ते क़ादियानी बनने के फ़ॉर्म पर साइन करने वाला था मगर किसी वजह से नहीं कर सका, अब आप म-दनी क़ाफ़िले वाले मुझे सह़ीह़ मा'लूमात फ़राहम करें कि मुसलमान और क़ादियानी में क्या फ़र्क़ है ?" उस ने मज़ीद बताया कि "मैं उन की इबादत गाह में भी जा चुका हूं, मेरे पास उन की बहुत किताबें भी हैं, मेरा येह ज़ेह्न बनाया गया है कि नमाज़ें पांच नहीं होतीं बल्कि तीन होती हैं जो तीन मिनट में अदा की जा सकती हैं।" उस की बात सुनने के बा'द जब उस पर इनफ़िरादी कोशिश की गई तो اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! उस ने तौबा कर ली और अ़त्त़ारी सिल्सिले में भी दाख़िल हो गया और अपने दोस्तों को भी उस बात़िल मज़्हब से बचाने के लिये आयन्दा मुलाक़ात करवाने की भी तरकीब बनाई।

www.dawateislami.net

आह ! सारा गोठ ही दाढ़ी मुन्डा

बाबुल इस्लाम सिन्ध के ज़िलअ़ दादू में 30 दिन का एक म-दनी क़ाफ़िला सफ़र पर था । एक गोठ में तीन दिन के म-दनी क़ाफ़िले की तरकीब बनाई गई । जब क़ाफ़िले वाले एक मस्जिद में पहुंचे तो किसी मुअज़्ज़िन के मौजूद न होने की बिना पर ख़ुद ही अज़ान दी । जब जमाअ़त का वक़्त हुवा तो चन्द नमाज़ी मस्जिद में आए और क़ाफ़िले वालों को कहा कि आप नमाज़ पढ़ाएं । अमीरे क़ाफ़िला ने जवाब दिया : "इमाम साहिब कहां हैं ? वोही नमाज़ पढ़ाएं तो ज़ियादा बेहतर है ।" लोगों ने बताया कि "यहां मस्जिद में नमाज़ की जमाअ़त नहीं होती बल्कि सब लोग अपनी अपनी नमाज़ पढ़ते हैं, क्यूंकि पूरे गोठ में एक भी शख़्स ऐसा नहीं है जो इमाम बन सके जिस की एक वजह येह है कि इस पूरे गोठ में कोई शख़्स भी ऐसा नहीं जिस की सुन्नत के मुत़ाबिक़ दाढ़ी शरीफ़ हो ।"

अफ़्सोस ! नमाज़ के लिये कोई भी न आया

एक म-दनी क़ाफ़िला किसी बहुत बड़े गोठ में पहुंचा । उस गोठ में एक बहुत बड़ा बाज़ार था जिस में तीन सो सालह पुरानी तारीख़ी मस्जिद भी थी । लेकिन आह ! मस्जिद के आस पास की दुकानों में सरे आ़म वीसीआर (V.C.R) पर फ़िल्में दिखाई जा रही थीं ।

जब अज़ाने ज़ोहर हुई तो जमाअ़त में सिवाए मुअज़्ज़िन और क़ाफ़िले वालों के मस्जिद में दूसरा कोई नमाज़ी न था । ह़त्ता कि

अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत के दौरान जब लोगों को मस्जिद में आने की दा'वत दी गई तो कोई भी मस्जिद में आने के लिये तय्यार न हुवा।

मस्जिद तो बना दी शब भर में ईमां की ह़रारत वालों ने

मन अपना पुराना पापी है बरसों में नमाज़ी बन न सका

प्यारे इस्लामी भाइयो ! दर्जे ज़ैल मुख़्तसर वाक़ेआ़त पढ़िये और अन्दाज़ा लगाइये कि अग़्यार हमारी बे अ़-मली से फ़ाएदा उठा कर हमारी मसाजिद से क्या सुलूक कर रहे हैं।

(1) "एक रिपोर्ट के मुताबिक़ एक मुल्क में गै़र मुस्लिमों ने 157 मसाजिद को ताले लगा दिये और मसाजिद को तिजारती और रिहाइशी मक़ासिद के लिये गै़र मुस्लिमों के ह़वाले कर दिया गया। सरकारी तह़वील के बहाने 324 मसाजिद को नमाज़ियों के लिये बन्द कर दिया गया।"

(2) "एक मुल्क के एक शहर में 92 मसाजिद को मवेशियों के बाड़े और रिहाइश गाहों में तब्दील कर दिया गया।"

(3) "इसी त़रह़ एक मुल्क के एक क़स्बे में 23 मई 1988 ई. को मस्जिद पर ना जाइज़ क़ब्ज़ा कर के उस में मूर्तियां वग़ैरा रख दी गईं।"

(4) "इसी त़रह़ एक अख़्बार में एक ख़बर शाएअ़ हुई कि यूरोप के एक मुल्क में तुर्क मुसलमानों की एक मस्जिद को आग लगा दी और शहीद कर दिया।"

www.dawateislami.net

प्यारे इस्लामी भाइयो ! इन सब ह़क़ाइक़ के बा वुजूद हम अभी तक ख़्वाबे ग़फ़लत में हैं। घरेलू आसाइशें छोड़ कर चन्द दिन के लिये राहे ख़ुदा में सफ़र के लिये हमारा नफ़्स तय्यार नहीं होता, हां ! दुन्या की माद्दी दौलत कमाने के लिये अपने घर वालों से बरसहा बरस के लिये सेंकड़ों मील दूर जाने के लिये फ़ौरन तय्यार हो जाते हैं।

क्या मुसलमानों की ख़स्ता ह़ाली, मस्जिदों की वीरानी, सिनेमा घरों की आबादी, फ़ेशन की यलग़ार, मग़रिबी तहज़ीब की तूमार, घर घर टीवी केबल सिस्टम, इन्टर नेट और वीसीआर, क़दम क़दम पर ना फ़रमानियों की भरमार, हाए मुसलमान का बिगड़ा हुवा किरदार,......

येह सब कुछ हमें पुकार पुकार कर दा'वते फ़िक्र नहीं दे रहा है कि "हमें सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये म-दनी क़ाफ़िलों का ज़रूर बिज़्ज़रूर मुसाफ़िर बनना चाहिये।"

आज हमें ज़िन्दगी में यक मुश्त **12** माह, हर **12** माह में **30** दिन और उ़म्र भर हर माह **3** दिन के लिये राहे ख़ुदा में सफ़र करना बेह़द मुश्किल मह़सूस होता है।

सोचिये तो सही ! अगर हम में से हर एक अपनी मजबूरियों में फंस कर रह गया तो आख़िर कौन इन म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करेगा ? कौन सारी दुन्या के लोगों तक नेकी की दा'वत पहुंचाएगा ?

www.dawateislami.net

ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी उम्मत की ख़ैर ख़्वाही कौन करेगा ? कौन अग़्यार की वज़्अ़ क़त़्अ़ पर इतराने वाले मुसलमानों को सुन्नतों के सांचे में ढलने का ज़ेह्न देगा ? कौन इन्हें येह म-दनी मक़्सद अपनाने की तरग़ीब देगा कि

"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है । اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ"

याद रखिये ! आज लोगों की निगाहें दा'वते इस्लामी के म-दनी क़ाफ़िलों की मुन्तज़िर हैं । हर मस्जिद, हर गाउं, हर शहर, हर डिवीज़न, हर सूबे और हर काबीना से येह सदा सुनाई दे रही है, **"म-दनी क़ाफ़िलों की अशद्द ज़रूरत है"** क्यूंकि मुसलमानों की इस्लाह़, मस्जिदों की आबाद कारी, सारी दुन्या में सुन्नतों की धूम मचाने, पूरी दुन्या में नेकी की दा'वत आ़म करने और हर इस्लामी भाई की म-दनी तरबिय्यत का बेहतरीन ज़रीआ़ म-दनी क़ाफ़िले हैं । अमीरे अहले सुन्नत, शैख़े त़रीक़त, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ फ़रमाते हैं कि **"दा'वते इस्लामी की बक़ा म-दनी क़ाफ़िलों में है ।"**

लिहाज़ा हमें न सिर्फ़ ख़ुद म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करना है बल्कि अपने घर, मस्जिद, मह़ल्ले, ऑफ़िस, स्कूल, कॉलेज, फ़ेक्टरी, दुकान, मार्केट, बाज़ार और हर मक़ाम पर दीगर इस्लामी भाइयों को इनफ़िरादी कोशिश के ज़रीए़ म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र की तरग़ीब भी दिलानी है । اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

(2) राहे ख़ुदा में सफ़र की तरग़ीब पर मुश्तमिल रिवायात व ह़िकायात

फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

(1) "जो आदमी इ़ल्म की तलाश करने के लिये किसी रास्ते पर चले **अल्लाह तआ़ला** उस के लिये जन्नत का रास्ता आसान फ़रमा देता है।"

(صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء، باب فضل الاجتماع...الخ، الحدیث:۲۶۹۹، ص۱۴۴۸)

(2) "जो क़ौम **अल्लाह तआ़ला** के घरों में से किसी घर में कु़रआन पढ़ने और आपस में कु़रआन सीखने सिखाने के लिये जम्अ़ हो तो उन पर (i) सकीना (इत़्मीनान व सुकून) नाज़िल होता है (ii) रह़मत उन्हें ढांप लेती है (iii) फ़िरिश्ते उन्हें घेर लेते हैं (iv) और **अल्लाह तआ़ला** उन का ज़िक्र फ़िरिश्तों के सामने फ़रमाता है।" (المرجع السابق، الحدیث:۲۷۰۰، ص۱۴۴۸)

(3) "जो शख़्स इ़ल्म की त़लब में चले वोह लौट आने तक **अल्लाह तआ़ला** के रास्ते में है।"

(جامع الترمذی، کتاب العلم، باب فضل طلب العلم، الحدیث:۲۶۵۶، ج۴، ص۲۹۵)

(4) "**अल्लाह तआ़ला** जिस से भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे दीन की समझ बूझ अ़त़ा फ़रमा देता है।"

(المرجع السابق، باب اذا اراد اللّٰہ...إلخ، الحدیث:۲۶۵۴، ج۴، ص۲۹۴)

(5) "जो शख़्स इ़ल्म ह़ासिल करे वोह उस के पिछले गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाता है।" (المرجع السابق، باب فضل العلم، الحدیث ۲۶۵۷، ج۴، ص۲۹۵)

www.dawateislami.net

(6) तुम्हारे पास मशरिक़ से कुछ लोग इ़ल्म ह़ासिल करने आएंगे पस जब वोह तुम्हारे पास आएं तो उन्हें भलाई की वसिय्यत करो।

(جامع الترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی الاستیصاء...إلخ،الحدیث:۲۶۶۰،ج٤،ص۲۹٦)

(7) **अल्लाह तआ़ला** उस शख़्स को हरा भरा (या'नी दुन्या में ख़ुश व ख़ुर्रम और आख़िरत में उस का चेहरा तरो ताज़ा) रखे जो मुझ से ह़दीषे पाक सुने, फिर जैसा सुने वैसा ही पहुंचा दे क्यूंकि बहुत से लोग जिन तक मस्अला पहुंचाया जाए सुनने वाले से ज़ियादा समझदार होते हैं। (المرجع السابق، باب ماجاء فی الحث علی تبلیغ السماع، الحدیث:۲٦٦٦،ج٤،ص۲۹۹)

(8) "اِنَّ الدَّالَّ عَلَی الْخَیْرِ کَفَاعِلِہٖ बेशक नेकी की त़रफ़ राहनुमाई करने वाला नेकी करने वाले की त़रह़ है।"

(المرجع السابق، باب ماجاء الدال...الخ،الحدیث:۲٦۷۹،ج٤،ص۳۰۵)

(9) जिस शख़्स ने मुसलमानों में कोई नेक त़रीक़ा जारी किया और उस के बा'द उस त़रीके़ पर अ़मल किया गया तो उस त़रीके़ पर अ़मल करने वालों का अज्र भी उस (या'नी जारी करने वाले) के नामए आ'माल में लिखा जाएगा और अ़मल करने वालों के अज्र में कमी नहीं होगी। (المرجع السابق، باب من دعا الی ھدی...إلخ،الحدیث:۲٦۸٤،ج٤،ص ۳۰۸)

(10) بَلِّغُوْا عَنِّیْ وَلَوْاٰیَـۃً...إلخ मेरी त़रफ़ से लोगों को पहुंचा दो अगर्चे एक ही आयत हो और बनी इसराईल से रिवायात लो तो कोई ह़रज नहीं और जो जान बूझ कर मुझ पर झूट बांधे वोह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले। (المرجع السابق،باب ماجاء فی الحدیث عن بنی اسرائیل،فی الحدیث:۲٦۷۸،ج٤،ص۳۰۵)

www.dawateislami.net

(11) जिस शख़्स ने मेरी सुन्नतों में से किसी ऐसी सुन्नत को ज़िन्दा किया जिस पर मेरे विसाल के बा'द अ़मल तर्क किया जा चुका था तो उस को उस सुन्नत पर अ़मल करने वालों का अज्र भी मिलेगा और उन के षवाब में कोई कमी न होगी ।

(جامع الترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی الاخذ بالسنة...الخ، الحدیث:۲٦۸٦، ج٤،ص۳۰۹)

(12) जो शख़्स किसी रास्ते पर इल्म ह़ासिल करने के लिये चले **अल्लाह तआ़ला** उस को जन्नत के रास्ते पर ले जाता है ।

(المرجع السابق، باب ماجاء فی فضل الفقه،الحدیث:۲٦۹۱،ج٤،ص۳۱۲)

(13) मुनाफ़िक़ में दो ख़स्लतें जम्अ़ नहीं होतीं अच्छे अख़्लाक़ और दीन का इल्म । (المرجع السابق،الحدیث:۲٦۹۳،ج٤،ص۳۱۳)

(14) बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के फ़िरिश्ते लोगों को नेकी सिखाने वाले पर रह़मत भेजते हैं ह़त्ता कि च्यूंटियां अपने सूराख़ों में और मछलियां (पानी में) उस के लिये रह़मत मांगते हैं ।

(المرجع السابق،الحدیث:۲٦۹٤،ج٤،ص۳۱٤)

(15) मोमिन कभी ख़ैर या'नी इल्म से सैर नहीं होता यहां तक कि वोह जन्नत में पहुंच जाता है । (المرجع السابق،الحدیث:۲٦۹٥،ج٤،ص۳۱٤)

(16) "اَلْکَلِمَةُ الْحِکْمَةُ ضَالَّةُ الْمُؤْمِنِ فَحَیْثُ وَجَدَھَا ھُوَ اَحَقُّ بِھَا" अच्छी और दीनी बात मोमिन की अपनी गुमशुदा चीज़ है जहां पाए वोही उस का ह़क़दार है । (المرجع السابق،الحدیث:۲٦۹٦،ج٤،ص۳۱٤)

www.dawateislami.net

(17) **अल्लाह तआ़ला** जिस के साथ बहुत ज़ियादा भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे दीन में समझ अ़त़ा फ़रमाता है।

(صحیح البخاری، کتاب العلم، باب من یرد اللّٰہ بہ خیرا، الحدیث:۷۱، ج۱، ص۴۳)

(18) सिर्फ़ दो चीज़ों पर रश्क करना अच्छा है एक वोह शख़्स जिसे **अल्लाह तआ़ला** ने माल दिया हो और वोह उस को नेकी के रास्ते में ख़र्च करता हो और दूसरा वोह शख़्स जिसे **अल्लाह तआ़ला** ने दीन का इ़ल्म अ़त़ा फ़रमाया और वोह उस के मुत़ाबिक़ फ़ैसले करता और दूसरों को येह इ़ल्म सिखाता हो।

(المرجع السابق، باب الاغتباط فی العلم، الحدیث:۷۳، ج۱، ص۴۳)

(19) इ़ल्म को ख़ूब फैलाओ और लोगों में बैठो, ताकि इ़ल्म न जानने वाले इ़ल्म ह़ासिल करें क्यूंकि जब तक इ़ल्म को राज़ नहीं बनाया जाएगा इ़ल्म नहीं उठेगा। (المرجع السابق، باب کیف یقبض العلم، ج۱، ص ۵۴)

(20) लोगों से वोही बात बयान करो जिस को लोग समझ लें क्या तुम पसन्द करोगे कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) और उस के रसूल (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) को झुटलाया जाए ?

(المرجع السابق، باب من خص بالعلم...إلخ، ج ۱، ص ۶۷)

(21) जिस ने हिदायत व भलाई की दा'वत दी उसे उस भलाई की पैरवी करने वालों के बराबर अज्र मिलेगा और उन के षवाब में कोई कमी न होगी और जिस ने किसी को गुमराही की दा'वत दी उसे इस गुमराही की पैरवी करने वालों के बराबर गुनाह होगा और उन के गुनाहों में कमी न होगी।

(صحیح مسلم، کتاب العلم،باب من سن سنۃ حسنۃ، الحدیث:۲۶۷۴،ص۱۴۳۸)

www.dawateislami.net

(22) **अल्लाह** की क़सम अगर **अल्लाह तआला** तुम्हारे सबब से किसी एक आदमी को हिदायत अ़ता फ़रमा दे तो येह तुम्हारे लिये सुर्ख़ ऊंटों से बेहतर है।

(سنن ابی داود، کتاب العلم ، باب فضل نشرالعلم،الحدیث:۳٦٦۱، ج۳، ص ٤٥۰)

(23) मैं ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम से चार ग़ुलाम आज़ाद करने से येह बात ज़ियादा पसन्द करता हूं कि मैं नमाज़े फ़ज्र के बा'द ऐसी क़ौम के साथ बैठूं जो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) का ज़िक्र करती हो यहां तक कि सूरज तुलूअ़ हो जाए और मैं चार ग़ुलाम आज़ाद करने से ज़ियादा इस बात को पसन्द करता हूं कि नमाज़े अ़स्र के बा'द ऐसी क़ौम के साथ बैठूं जो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) का ज़िक्र करती हो यहां तक कि सूरज ग़ुरूब हो जाए।

(المرجع السابق، باب فی القصص،الحدیث:۳٦٦۷، ج۳، ص ٤٥٢)

(24) ऐ अबू ज़र ! सुब्ह़ के वक़्त तेरा **किताबुल्लाह** से एक आयत सीखना तेरे लिये सो रकअ़तें अदा करने से अच्छा है और सुब्ह़ के वक़्त तेरा इ़ल्म की एक बात सीखना हज़ार रकअ़त नमाज़ पढ़ने से अच्छा है ख़्वाह उस पर अ़मल हो या न हो।

(سنن ابن ماجه ، کتاب السنة، باب فی فضل من تعلم القرآن،الحدیث:۲۱۹، ج۱،ص۱٤۲)

(25) طَلَبُ الْعِلْمِ فَرِيْضَةٌ عَلٰى كُلِّ مُسْلِمٍ इ़ल्म का ह़ासिल करना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है। (المرجع السابق، باب فی فضل العلماء،الحدیث:۲۲٤،ج۱،ص۱٤٦)

(26) जो अपने घर से त़-लबे इ़ल्म के लिये चला फ़िरिश्ते उस के अ़मल से राज़ी हो कर उस के लिये अपने पर बिछा देते हैं।

(المرجع السابق،الحدیث:۲۲٦،ج۱،ص۱٤۹)

www.dawateislami.net

(27) जो शख़्स मेरी मस्जिद में इल्म सीखने या सिखाने के लिये गया वोह भलाई के साथ ही लौटेगा ।

(سنن ابن ماجه ، كتاب السنة،باب فی فضل العلماء، الحديث:٢٢٧، ج١، ص١٤٩)

(28) मोमिन को उस के अ़मल और नेकियों से मरने के बा'द भी येह चीज़ें पहुंचती रहती हैं : (1) **इल्म** जिस की इस ने ता'लीम दी और इशाअ़त की (2) **औलादे सालेह़** जिसे छोड़ कर मरा है (3) **मुस्ह़फ़** (कुरआने मजीद) जिसे मीराष में छोड़ा (4) **मस्जिद** बनाई (5) मुसाफ़िर के लिये **मकान** बना दिया (6) लोगों के लिये **नह्‌र** जारी कर दी (7) अपनी सिह़्ह़त और ज़िन्दगी में अपने माल में से स-दक़ा निकाल दिया जो उस के मरने के बा'द उस को मिलेगा । (المرجع السابق، باب ثواب معلم الناس الخير،الحديث:٢٤٦،ج١،ص١٥٨)

(29) ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह** बिन **अ़म्र** رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنھُما फ़रमाते हैं कि एक बार **हु़ज़ूरे अक़्दस** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपने हुजरए मुबारका से मस्जिद में तशरीफ़ लाए तो दो ह़ल्क़े सजे हुए थे एक कुरआने मजीद पढ़ रहा था और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) से दुआ़ मांग रहा था जब कि दूसरा इल्म सीखने सिखाने में मश्ग़ूल था फ़रमाया : "दोनों भलाई पर हैं । येह लोग कुरआन की तिलावत और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) से दुआ़ कर रहे हैं । **अल्लाह तआ़ला** चाहे तो इन्हें अ़ता़ करे या न करे और येह लोग इल्म सीखने सिखाने में मश्ग़ूल हैं और बेशक मैं मुअ़ल्लिम बना कर भेजा गया हूं ।" फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم वहीं तशरीफ़ फ़रमा हुए । (المرجع السابق، باب فضل العلماء، الحديث:٢٢٩،ج٤، ص ١٥٠)

(30) कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो भलाई के फैलने और बुराई को रोकने का ज़रीआ़ होते हैं और कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो बुराई फैलने

www.dawateislami.net

और भलाई में रुकावट का ज़रीआ़ होते हैं सो मुबारक है उन लोगों के लिये जिन्हें **अल्लाह तआ़ला** ने ख़ैर के फैलने का ज़रीआ़ बनाया और हलाकत है उन लोगों के लिये जो बुराई फैलने का सबब हो गए।

(سنن ابن ماجه ، کتاب السنة،، باب من کان مفتاحا للخیر،الحدیث:۲۳۷،ج۱، ص۱۵۵)

(31) अ़न क़रीब इ़ल्म ह़ासिल करने के लिये तुम्हारे पास लोग आएंगे जब तुम उन को देखो तो कहो तुम्हें **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की वसिय्यत मुबारक हो और उन्हें इ़ल्म सिखाओ।

(المرجع السابق، باب الوصاة بطلبة العلم،الحدیث:۲۴۷،ج۱،ص ۱۶۱)

(32) किसी मुसलमान का दिल तीन बातों में ख़ियानत नहीं करता (1) ख़ालिस **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के लिये अ़मल करना (2) हर मुसलमान की ख़ैर ख़्वाही करना (3) मुसलमान की जमाअ़त को लाज़िम पकड़ना क्यूंकि इन की दुआ़ दूसरों को घेरे होती है (या'नी दूसरों को शैत़ान के फ़रेब से मह़फ़ूज़ रखती है)।

(سنن الدارمی،المقدمة، باب الاقتداء بالعلماء،الحدیث:۲۳۰،ج۱، ص۸۷)

(33) दो ह़रीस सैर नहीं होते। (1) इ़ल्म का त़लब करने वाला (2) दुन्या का त़लब करने वाला।

(المرجع السابق، باب فی فضل العلم والعالم،الحدیث:۳۳۴،ج۱،ص۱۰۸)

(34) जो इ़ल्म ह़ासिल करने के लिये किसी रास्ते पर चला **अल्लाह तआ़ला** इस रास्ते की ब-रकत से उस के लिये जन्नत के रास्ते आसान फ़रमा देता है। फ़िरिश्ते त़ालिबे इ़ल्म की रिज़ा के लिये अपने पर बिछा देते हैं। त़ालिबे इ़ल्म के लिये जो आस्मान व ज़मीन में हैं ह़त्ता कि पानी में मछलियां सब इस्तिग़्फ़ार करते हैं।

(المرجع السابق،الحدیث:۳۴۲،ج۱، ص۱۱۰)

www.dawateislami.net

(35) जिसे मौत इस ह़ाल में आए कि वोह इस्लाम ज़िन्दा करने के लिये इल्म सीख रहा हो तो जन्नत में उस के और अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के दरमियान एक द-रजे का फ़र्क़ होगा।

(سنن الدارمی،المقدمۃ،باب فی فضل العلم والعالم،الحدیث:۳۵٤،ج۱،ص۱۱۲)

(36) जो इल्म त़लब करे फिर उसे ह़ासिल करने में काम्याब हो जाए तो उस के लिये दो गुना अज्र है। अगर ह़ासिल न कर सके तो एक अज्र है।

(المرجع السابق،الحدیث:۳۳۵،ج۱،ص۱۰۹)

(37) रसूले करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी मस्जिद में दो मजालिस पर गुज़रे तो फ़रमाया : "येह दोनों भलाई पर हैं, मगर एक मजलिस दूसरी से बेहतर है, पस येह **अल्लाह तआला** से दुआ कर रहे हैं और उस की त़रफ़ राग़िब हैं **अल्लाह तआला** अगर चाहे इन्हें दे चाहे न दे जब कि येह लोग दीनी मसाइल और इल्म सीख रहे हैं और न जानने वालों को सिखा रहे हैं येही अफ़ज़ल हैं। मैं मुअ़ल्लिम ही बना कर भेजा गया हूं।" फिर आप उन में तशरीफ़ फ़रमा हुए।

(المرجع السابق،الحدیث:۳٤۹،ج۱،ص۱۱۱)

(38) "क्या तुम जानते हो बड़ा सख़ी कौन है?" अ़र्ज़ किया गया : اَللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَم या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللّٰه تعالٰی علیه واٰلهٖ وسلَّم ज़ियादा जानते हैं। फ़रमाया : "**अल्लाह तआला** बड़ा जवाद है फिर औलादे आदम में मैं बड़ा सख़ी हूं और मेरे बा'द वोह शख़्स बड़ा सख़ी है जो इल्म सीखे और फिर उसे फैलाए वोह क़ियामत के दिन एक जमाअ़त हो कर आएगा।"

(شعب الایمان للبیہقی، باب فی نشر العلم، الحدیث:۱۷٦۷،ج۲،ص۲۸۱)

www.dawateislami.net

(39) مَنْ طَلَبَ الْعِلْمَ تَكَفَّلَ اللّٰهُ لَهٗ بِرِزْقِهٖ जो शख़्स इल्म की त़लब में रहता है **अल्लाह** **तआ़ला** उस के रिज़्क़ का ज़ामिन है।

(تاریخ بغداد ،محمد بن القاسم ، الرقم:۱۰٤٥،ج۳، ص۳۹۸)

(40) अफ़्ज़ल इबादत दीन के मसाइल सीखना है और अफ़्ज़ल दीन शुबुहात से बचना है। (المعجم الاوسط، الحديث:۹۲٦٤،ج٦، ص٤٢٠)

(41) इल्म की फ़ज़ीलत इबादत की फ़ज़ीलत से ज़ियादा है। तुम्हारा अच्छा दीन शुबुहात से बचना है। (المعجم الاوسط، الحديث:۳۹٦۰،ج۳، ص۹۲)

(42) थोड़ा सा इल्म कषीर इबादत से अच्छा है।

(الترغيب و الترهيب، كتاب العلم، باب الترغيب فى العلم...الخ ، الحديث:٥، ج١،ص٥٠)

(43) इल्म ह़ासिल करो क्यूंकि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये इल्म ह़ासिल करना उस से डरना है। इस को त़लब करना इबादत है। इस का मुज़ा-करा करना तस्बीह़ है, इस के मु-तअ़ल्लिक़ बह़ष करना जिहाद है और जो नहीं जानता उसे सिखाना स-दक़ा है।

(جامع بيان العلم وفضله، باب جامع فى فضل العلم، الحديث:۲٤۰، ص۷۷)

(44) त़ालिबे इल्म को इस ह़ाल में मौत आई कि वोह त़-लबे इल्म में मसरूफ़ था तो वोह शहीद है। (المرجع السابق، الحديث:۱۹٤، ص٦٤)

(45) जिस ने इल्म का एक बाब इस लिये सीखा कि लोगों को इस की ता'लीम देगा तो उसे सत्तर सिद्दीक़ीन का षवाब अ़त़ा किया जाएगा।

(الترغيب و الترهيب،كتاب العلم،باب الترغيب فى العلم...إلخ،الحديث:۱۹،ج١، ص٥٤)

(46) अफ़्ज़ल स-दक़ा येह है कि कोई मुसलमान शख़्स इल्म ह़ासिल करे फिर अपने मुसलमान भाई को इल्म सिखाए।

(سنن ابن ماجه،كتاب السنة، باب ثواب معلم الناس الخير،الحديث:۲٤۳،ج١،ص١٥٨)

www.dawateislami.net

(47) जिस ने इल्म सिखाया उसे उस पर अ़मल करने वालों का अज्र भी मिलेगा और अ़मल करने वालों के अज्र में कोई कमी भी न होगी।

(سنن ابن ماجه،كتاب السنة،باب ثواب معلم الناس الخير،الحديث:٢٤٠،ج١،ص١٥٦)

(48) जो सुब्ह़ मस्जिद में सिर्फ़ नेकी सीखने या सिखाने की निय्यत से गया उस के लिये मुकम्मल ह़ज करने वाले की त़रह़ अज्र है।

(المعجم الكبير، الحديث ٧٤٨٣، ج ٨ ، ص ٩٤)

(49) "जब तुम जन्नत की क्यारियों से गुज़रो तो कुछ चुन लिया करो।" अ़र्ज़ किया कि जन्नत की क्यारियां क्या हैं? फ़रमाया : "इल्म की मजालिस।" (المرجع السابق،الحديث:١١١٥٨،ج١١، ص٧٨)

(50) "ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! हमारे ख़ु-लफ़ा पर रह़म फ़रमा।" अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप के ख़ु-लफ़ा कौन हैं? फ़रमाया : "जो मेरे बा'द आएंगे और मेरी अह़ादीष और सुन्नतें बयान करेंगे और लोगों को सिखाएंगे।"

(المعجم الاوسط، الحديث:٥٨٤٦،ج٤،ص ٢٣٩)

(51) जो शख़्स इल्म की त़लब में किसी रास्ते को चले **अल्लाह तआ़ला** उस को जन्नत के रास्ते पर ले जाता है और त़ालिबे इल्म की ख़ुशनूदी के लिये फ़िरिश्ते अपने बाज़ू बिछा देते हैं और आ़लिम के लिये आस्मान वाले और ज़मीन में बसने वाले और पानी के अन्दर मछलियां येह सब इस्तिग़्फ़ार करते हैं और आ़लिम की फ़ज़ीलत आ़बिद पर ऐसी है कि जैसे चौदहवीं रात के चांद को तमाम सितारों पर और बेशक उ़-लमा वारिषे अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام हैं।

(سنن الترمذی،كتاب العلم، باب ماجاء فی فضل الفقه،الحديث:٢٦٩١،ج٤،ص٣١٢)

www.dawateislami.net

अक़्वाले सह़ाबा رِضْوَانُ اللّٰهِ تعَالٰی عَلَيهِم

(1) ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "ऐ लोगो ! तुम अपने आप को और अपने अहलो इ़याल को भलाई सिखाओ।"

(المستدرك للحاكم،التفسير، باب شان نزول،حديث:٣٨٧٩،ج٣،ص٣١٧)

(2) ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : تَفَقَّهُوْا قَبْلَ اَنْ تُسَوَّدُوْا "ऐ लोगो ! इ़ल्म ह़ासिल करो क़ब्ल इस से कि तुम्हें किसी क़ौम का सरदार बना दिया जाए।"

(صحيح البخارى،كتاب العلم، باب الاغتباط فى العلم و الحكمة،ج١،ص٤٣)

(3) ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "आ़लिम बनो या त़ालिबे इ़ल्म बनो या इन की सोह़बत इख़्तियार करने वाले बनो, इन के इ़लावा चौथा न बनना हलाक हो जाओगे।" (سنن الدارمى،المقدمة، باب ذهاب العلم،الحديث:٢٤٨،ج١، ص٩١)

(4) ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "रात में एक घड़ी इ़ल्म का दर्स तमाम रात जागने से अफ़ज़ल है।"

(المرجع السابق،باب مذاكرة العلم،الحديث:٦١٤،ج١،ص١٥٧)

(5) ह़ज़रते का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "दुन्या और इस में जो कुछ है वोह मलऊ़न (या'नी ला'नत किया गया है) मगर इ़ल्म ह़ासिल करने वाला और इस का मुअ़ल्लिम अच्छा है।"

(المرجع السابق، باب فى فضل العلم والعالم،الحديث:٣٢٢،ج١،ص١٠٦)

(6) ह़ज़रते ह़सन बिन सालेह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "लोग दीन में इ़ल्म के इस त़रह़ मोह़ताज हैं जिस त़रह़ दुन्या में खाने पीने के मोह़ताज हैं।" (سنن الدارمى،المقدمة،باب فى فضل العلم و العالم،الحديث:٣٢٦،ج١، ص١٠٧)

www.dawateislami.net

(**7**) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسلَّم से रिवायत करते हैं, आप صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسلَّم ने फ़रमाया : "अ़न क़रीब फ़ितने होंगे सुब्ह़ इन्सान मोमिन होगा और शाम को काफ़िर, सिवाए उस शख़्स के जिसे **अल्लाह तआ़ला** ने इल्म के साथ ज़िन्दा रखा।"

(المرجع السابق ، الحدیث: ۳۳۸،ج۱، ص ۱۰۹)

(**8**) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "मैं शबे क़द्र में शब बेदारी करने से ज़ियादा येह पसन्द करता हूं कि एक साअ़त दीन के मसाइल सीखने के लिये बैठूं।"

(الترغیب و الترھیب، کتاب العلم،الترغیب فی العلم...إلخ، الحدیث:۳۸،ج۱،ص۵۸)

अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَھُمُ اللّٰہُ تعالٰی

(**1**) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुर्रह़मान **हुबुली** رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि "तू अपने भाई को जो कलिमए ह़िक्मत तोह़फ़े में दे उस से अफ़ज़ल कोई तोह़फ़ा नहीं।"

(سنن دارمی،المقدمہ،باب فضل العلم و العالم،الحدیث:۳۵۱،ج۱،ص۱۱۲)

(**2**) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "जो शख़्स इल्म ह़ासिल करने के लिये सुब्ह़ो शाम सफ़र को जिहाद नहीं समझता उस की अ़क़्ल और राय नाक़िस है।"

(جامع بیان العلم و فضلہ،باب تفضیل العلماء علی الشھداء، رقم: ۱۴۳،ص۴۹)

(3) ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं : "मैं मदीनए मुनव्वरह से शाम का सफ़र 30 दिन में कर के पहुंचा एक ह़दीष शरीफ़ सुनने के लिये।" (اُسُدُ الغابۃ فی معرفۃ الصحابۃ،عبداللّٰہ بن اُنَیس، ج۳،ص۱۷۸)

(4) इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحۡمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : "जब तक क़ब्र में न चला जाऊं इ़ल्म ह़ासिल करना न छोड़ूंगा।"

वाक़ेआ़त

(1) इमाम बुख़ारी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہ के वालिद बहुत बड़े सरमाया दार थे, इमाम बुख़ारी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہ ने उन का दिया हुवा सारा माल त़-लबे ह़दीष में सर्फ़ कर डाला।

(2) ह़ज़रते इमाम यह़्या बिन मोईन رَحۡمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہ ने इ़ल्मे दीन की त़लब में अपना कुल सरमाया 80 हज़ार दीनार भी सर्फ़ कर डाला यहां तक कि जूता तक न ख़रीद पाए और नंगे पैर चलते थे।

(3) ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह** बिन मुबारक رَحۡمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہ ने इ़ल्मे दीन की राह में अपनी पूंजी या'नी चालीस 40 हज़ार दीनार सर्फ़ कर डाले।

★★★★★

म-दनी फूल

सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस ने किसी की सोह़बत इख़्तियार की अगर्चे लम्ह़े भर के लिये हो, बरोज़े क़ियामत सुवाल होगा कि इस में ***अल्लाह*** *عَزَّوَجَلَّ का ह़क़ क़ाइम किया या उसे ज़ाएअ़ कर दिया।"*

(احیاء العلوم،کتاب اداب الالفۃ...الخ، الباب الثانی فی حقوق الاخوہ...الخ ج۲، ص۲۱۸)

www.dawateislami.net

(3) 31 फ़रामीने अमीरे अहले सुन्नत مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی

बानिये दा'वते इस्लामी, मुर्शिदे गिरामी अमीरे अहले सुन्नत, शैख़े त़रीक़त, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ फ़रमाते हैं :

(1) दा'वते इस्लामी की बक़ा म-दनी क़ाफ़िलों में है।

(2) म-दनी क़ाफ़िले दा'वते इस्लामी के लिये रीढ़ की हड्डी की ह़ैषिय्यत रखते हैं।

(3) हर इस्लामी भाई ज़िन्दगी में यक मुश्त 12 माह और हर 12 माह में एक माह और उ़म्र भर हर माह 3 दिन के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करे और इस सफ़र के मा'मूल को अपने ऊपर नाफ़िज़ कर के दूसरों तक पहुंचाने की कोशिश करे।

(4) एक माह के म-दनी क़ाफ़िलों की काम्याबी के लिये ज़िम्मादारान का सफ़र बेह़द ज़रूरी है।

(5) मुझे ऐसे ज़िम्मादारान चाहिएं जो म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने वाले हों।

(6) मेरा पसन्दीदा इस्लामी भाई वोह है जो लाख सुस्ती हो मगर तीन दिन म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करता हो, जो दाढ़ी और ज़ुल्फ़ों से आरास्ता और सुन्नत के मुत़ाबिक़ म-दनी लिबास व इ़मामा शरीफ़ से मुज़य्यन हो। मुझे कमाउ बेटे पसन्द हैं (या'नी जो म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र और म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल करते हों)।

(7) म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र के बिग़ैर कोई भी दा'वते इस्लामी वाला मेरा पसन्दीदा नहीं बन सकता।

www.dawateislami.net

(8) मेरी नज़र में ह़क़ीक़ी मा'नों में दा'वते इस्लामी वाला वोह है जो कम अज़ कम इन पांच म-दनी इन्आ़मात का आ़मिल हो :

(1) हर माह पाबन्दी से 3 दिन म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करता हो। (तीन दिन के म-दनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर वोह माना जाएगा जो येह तीन दिन मुकम्मल जदवल के मुत़ाबिक़ गुज़ारता हो)

(2) हफ़्तावार इजतिमाअ़ में अव्वल ता आख़िर शिर्कत करता हो।

(3) हर हफ़्ते अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत में अव्वल ता आख़िर शिर्कत करता हो।

(4) रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हुए म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की यकुम तारीख़ को अपने ज़िम्मादार को जम्अ़ कराता हो।

(5) रोज़ाना कम अज़ कम दो घन्टे दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों में सर्फ़ करता हो।

(9) तमाम इस्लामी भाइयों को बस येही धुन होनी चाहिये कि जिस त़रह़ भी बन पड़े हम लोगों को म-दनी क़ाफ़िलों के लिये तय्यार करें।

(10) मुझे म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने वालों से प्यार है।

(11) हमारी मन्ज़िल म-दनी क़ाफ़िलों के ज़रीए़ पूरी दुन्या में सुन्नतों की बहारें आ़म करना है।

(12) दुन्यावी या तन्ज़ीमी काम में चाहे जितनी भी मसरूफ़िय्यत हो जब तक कोई मानेए़ शरई न हो हर माह 3 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में ज़रूर सफ़र कीजिये।

www.dawateislami.net

(**13**) इस्लामी भाइयों के साथ ख़ुश त़बई के लिये होने वाली गुफ़्तगू में भी म-दनी क़ाफ़िलों के वाक़ेआ़त सुनाते रहिये।

(**14**) अगर वुसअ़त हो तो हर माह या हर दूसरे माह एक इस्लामी भाई को अपने ख़र्च पर सफ़र भी करवाइये।

(**15**) इधर उधर की बातों के बजाए म-दनी क़ाफ़िलों ही की बातें कीजिये। आप का ओढ़ना बिछोना बस म-दनी क़ाफ़िला म-दनी क़ाफ़िला म-दनी क़ाफ़िला म-दनी क़ाफ़िला म-दनी क़ाफ़िला हो।

(**16**) मशहूर मज़ारात और बड़ी मसाजिद में लोग ज़ियादा होते हैं, लिहाज़ा वहां ऐसे इस्लामी भाइयों की बा क़ाइदा ज़िम्मादारी लगाई जाए कि वोह म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र के लिये इनफ़िरादी कोशिश के ज़रीए इस्लामी भाइयों को तय्यार करें।

(**17**) दूसरों को तरग़ीब दिलाने के लिये ख़ुद सरापा तरग़ीब बनना पड़ता है।

(**18**) दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल मर्कज़ी मजलिसे शूरा का हर निगरान व रुक्न और हर ज़िम्मादार हर माह तीन दिन के म-दनी क़ाफ़िले में जदवल के मुत़ाबिक़ सफ़र करे।

म-दनी क़ाफ़िले या तन्ज़ीमी कामों के लिये दूसरे शहर या दूसरे मुल्क जाए तो सिर्फ़ मस्जिद ही में मो'तकिफ़ रहे, ह़स्बे ज़रूरत बाहर निकले तो फिर मस्जिद में आ कर मो'तकिफ़ हो जाए, अपने जुम्ला म-दनी मश्वरे भी मसाजिद में कीजिये। हर दम मसाजिद को आबाद रखिये।

www.dawateislami.net

صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم आप की क़ब्र मीठे मीठे मुस्त़फ़ा اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ के जल्वों से आबाद होगी।

(19) किसी भी मुशा-वरत का म-दनी मश्वरा हो तो उस में उसी माह के फ़ज़ाइल और नफ़्ली रोज़ों की तरग़ीब दिलाई जाए, हफ़्तावार इजतिमाअ़ में भी येही तरकीब रखी जाए, इस याद दिहानी से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अ़मल का जज़्बा बढ़ेगा।

(20) बयान या म-दनी मुज़ा-करे की कम अज़् कम एक केसिट रोज़ाना सुनने की आ़दत बनाइये, इस म-दनी काम में इस्लामी भाइयों से तआ़वुन के लिये एक आसान त़रीक़ा येह भी है कि ह़ल्क़ा सत़ह़ पर एक लाएब्रेरी बनाम **अल मदीना लाएब्रेरी** बनाई जाए जिस में कन्ज़ुल ईमान, मक्तबतुल मदीना की त़रफ़ से जारी कर्दा रसाइल, बयानात, और म-दनी मुज़ा-करों की केसिटें रखी जाएं ताकि तमाम इस्लामी भाई पढ़ और सुन सकें। इस के लिये ह़ल्क़े की मस्जिद में फ़िनाए मस्जिद या मस्जिद में एक अलमारी रखी जाए और एक वक़्त मुक़र्रर किया जाए जिस के मुत़ाबिक़ रोज़ाना 25 या 30 मिनट लाएब्रेरी खोली जाए और इस के इन्तिज़ाम के लिये एक मजलिस बनाई जाए। जो इस्लामी भाई चाहे वोह एक दिन या सात दिन के लिये रिसाला या केसिट ले जाए जिस का इन्दिराज एक रजिस्टर में किया जाए। फिर जब तक वापस न लाए, मज़ीद रिसाले और केसिटें न दी जाएं।

(21) निजी त़ौर पर इजतिमाए ज़िक्रो ना'त करने वालों को भी चाहिये कि शु-रका में रसाइल व बयानात की केसिटें तक़्सीम फ़रमाया करें।

www.dawateislami.net

(22) जुलूसे मीलादुन्नबी صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم में लंगरे रसाइल का एहतिमाम कीजिये और अपने अपने पल्ले से मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ शुदा सुन्नतों भरे रसाइल ख़ूब ख़ूब तक़्सीम कीजिये। आप का बांटा हुवा रिसाला पढ़ कर अगर एक फ़र्द भी नमाज़ी या सुन्नतों का आ़दी बन गया या दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो गया तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप का दोनों जहानों में बेड़ा पार होगा।

(23) जहां कहीं भी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना हो वहां हर वक़्त एक ख़ैर ख़्वाह इस्लामी भाई हो जो हर आने जाने वाले, जाने अनजाने से ख़ुश अख़्लाक़ी से पेश आए और दिलजूई और ख़ैर ख़्वाही करते हुए उस पर इनफ़िरादी कोशिश करे।

(24) अगर शरई रुकावट न हो तो दीन की ख़ाति़र घर से बाहर राहे ख़ुदा में रहने की आ़दत बनाइये।

मैं ने घर में मुक़य्यद रह कर नहीं, कषरत के साथ घर से बाहर रह कर **बि इज़्निल्लाह** दीन की ख़िदमत की सआ़दत पाई है।

(25) मुबल्लिग़ीन दौराने बयान रिसालों और सुन्नतों भरे बयानात की केसिटें सुनने की तरग़ीब दिलाएं, म-षलन अगर किसी रिसाले से बयान करें तो उस के बारे में लोगों को बताएं कि मैं ने फ़ुलां रिसाले से बयान किया है, आप इस को हदिय्यतन ह़ासिल कर के पढ़िये और तक़्सीम कीजिये।

www.dawateislami.net

(26) मदनी दर्स का त़रीक़ा जो "फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द अव्वल" में है उस के मुत़ाबिक़ बैठ कर दर्स दीजिये। (इस किताब में भी येह त़रीक़ा सफ़ह़ा 199 पर दर्ज कर दिया गया है)

(27) ख़ादिमीने फ़ैज़ाने मदीना और इमाम व मुअज़्ज़िन, टेलीफ़ोन ऑपरेटर्ज़ और मक्तबतुल मदीना का अ़मला भी रोज़ाना केसिट सुनने का एहतिमाम फ़रमाएं।

(28) म-दनी मर्कज़ में इमाम और मुअज़्ज़िन दा'वते इस्लामी के सर की ह़ैषिय्यत रखते हैं। लिहाज़ा सिर्फ़ ऐसे इस्लामी भाइयों को येह ज़िम्मादारी सोंपी जाए जो म-दनी क़ाफ़िला कोर्स कर चुके हों। जो लोगों को इजतिमाअ़ में कामिल शिर्कत और म-दनी क़ाफ़िले में हर माह सफ़र की तरग़ीब दिलाते रहें। येह ऐसे मिलन सार हों कि जो अजनबी आ जाए वोह उस को म-दनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बना दें।

(29) जब तक हम ख़ुद म-दनी काम नहीं करेंगे तो दूसरों को किस त़रह़ पाबन्द करेंगे ?

(30) ह़क़ीक़ी कारकर्दगी वोह है जिस से लोगों में अ़मल का जज़्बा पैदा हो और आख़िरत की ब-रकतें मिलें।

(31) तमाम ज़िम्मादार इस्लामी भाई "दिलजूई के फ़ज़ाइल" पर मुश्तमिल बयान की केसिट ज़रूर सुन लें।

★★★★★★

नोट : मदनी इन्आ़मात से मुतअ़ल्लिक़ मज़ीद फ़रामीने अमीरे अहले सुन्नत जानने के लिये सफ़ह़ा नम्बर 697 मुलाह़ज़ा फ़रमाइये।

(4) अ़लाक़े में म-दनी क़ाफ़िला कैसे तय्यार किया जाए ?

(1) म-दनी क़ाफ़िले तय्यार करने के लिये हर इस्लामी भाई के लिये बिल उ़मूम जब कि म-दनी क़ाफ़िला ज़िम्मादारान के लिये बिल ख़ुसूस इनफ़िरादी कोशिश करने की मुख़्तलिफ़ सूरतें हैं :

(1) दर्स में शिर्कत करने वालों पर इनफ़िरादी कोशिश......

(2) हफ़्तावार इजतिमाअ़ में शरीक होने वालों पर इनफ़िरादी कोशिश......

(3) नए इस्लामी भाइयों पर इनफ़िरादी कोशिश और माह़ोल से वाबस्ता ज़िम्मादारान पर इनफ़िरादी कोशिश......

(4) क़रीबी रिश्तेदारों और अ़ज़ीज़ों पर इनफ़िरादी कोशिश......

(5) मार्केटों में इनफ़िरादी कोशिश......

(6) जो आप के पास काम करते हैं उन पर या जिन के पास आप काम करते हैं उन पर इनफ़िरादी कोशिश......

(2) हम में से हर एक को चाहिये कि म-दनी क़ाफ़िले तय्यार करने का ज़ेह्न बनाते हुए ह़िकमते अ़-मली के ज़रीए़ हर एक इस्लामी भाई तक म-दनी क़ाफ़िले की दा'वत पहुंचाने की कोशिश करें ।

(3) जब, जिस से, जहां और जिस लिये भी मुलाक़ात हो । मुलाक़ात के इख़्तिताम पर ह़क़्क़े सोह़बत अदा करने की निय्यत से म-दनी क़ाफ़िले की दा'वत ज़रूर दें कि सरकारे मदीना صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

ने फ़रमाया : "जिस किसी ने किसी की सोह़बत इख़्तियार की अगर्चे लम्ह़ा भर के लिये हो, बरोज़े क़ियामत सुवाल होगा कि ह़क़्क़े सोह़बत अदा किया था या ज़ाएअ़।" (احیاء العلوم مع اتحاف ج۷ ص ۸۲)

इस का फ़ाएदा येह होगा कि हम जिस जिस इस्लामी भाई को ह़िकमते अ़-मली से बार बार म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र की दा'वत देते रहेंगे तो येह दा'वत कानों के रास्ते उस के दिल पर नक़्श हो जाएगी। क्यूंकि अ़-रबी मक़ूला है : "اِذَا کُرِّرَ تَقَرَّرَ जब कोई बात बार बार कही जाए तो वोह दिल में क़रार पकड़ लेती है।" जिस त़रह़ इ़त्र की लम्ह़ा भर की सोह़बत भी इन्सान को ख़ुश्बू का एह़सास दिलाती है और फूल का मिट्टी के साथ रहना मिट्टी को ख़ुश्बूदार कर देता है, बिलकुल इसी त़रह़ हमारी मुख़्तसर सोह़बत भी इस्लामी भाई को येह एह़सास दिलाए कि

"मुझे म-दनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बनना चाहिये"

(**4**) येह दा'वत म-दनी क़ाफ़िलों के तआ़रुफ़, राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र के फ़ज़ाइल और म-दनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बनने के लिये भरपूर तरग़ीबी कलिमात पर मुश्तमिल होनी चाहिये। फिर आख़िर में म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करने की निय्यत करवाना और उस का नाम व पता लिखना न भूलिये।

(**5**) येह नाम व पता निय्यत करने वाले इस्लामी भाई के अ़लाक़े के म-दनी क़ाफ़िला ज़िम्मादार तक पहुंचा दीजिये और ख़ुद भी उस पर इनफ़िरादी कोशिश का सिलसिला जारी रखिये। फिर म-दनी क़ाफ़िला

www.dawateislami.net

ज़िम्मादार को चाहिये कि म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की निय्यत करने वाले तमाम इस्लामी भाइयों की एक फ़ेहरिस्त मुरत्तब कर ले। फिर वोह रोज़ाना उन में से मुन्तख़ब इस्लामी भाइयों से बिल ख़ुसूस और दूसरे इस्लामी भाइयों से बिल उ़मूम उन के घर, दुकान या दफ़्तर वग़ैरा में मुलाक़ात करे और म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की तरग़ीबी याद दिहानी करवाता रहे, ह़त्ता कि म-दनी क़ाफ़िले के सफ़र की तारीख़ से पहले पहले तमाम निय्यत करने वाले इस्लामी भाइयों से मुलाक़ात मुकम्मल कर ले। मुलाक़ात के लिये जाते वक़्त म-दनी क़ाफ़िला पेड और क़लम साथ होना ज़रूरी है।

(6) म-दनी क़ाफ़िले के सफ़र की तारीख़ पहले मुक़र्रर होनी चाहिये।

(7) जब भी किसी को म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की दा'वत देने की ग़रज़ से मुलाक़ात करने जाएं तो बा वुज़ू हो कर जाएं, इस से आप की ख़ुद ए'तिमादी में इज़ाफ़ा होगा।

(8) म-दनी क़ाफ़िला तय्यार करने के दौरान हमें कितनी ही दुश्वारियां पेश आएं, उम्मीद का दामन हाथ से न छूटे और मायूसी हमारे क़रीब भी न फटकने पाए क्यूंकि मायूस होने से हिम्मत जवाब दे जाती है, जिस के नतीजे में जज़्बा पहले तो कम होना शुरूअ़ होता है फिर बिल आख़िर ख़त्म हो जाता है। लिहाज़ा हिम्मत हारे बिग़ैर इनफ़िरादी कोशिश मुसल्सल जारी रखें। मश्हूर है कि एक बादशाह जिस का लश्कर शिकस्त खा चुका था, सख़्त मायूसी के आ़लम में एक ग़ार में पनाह लिये हुए था। अचानक उस की निगाह एक मकड़ी पर पड़ी

www.dawateislami.net

जिस ने ग़ार की दीवार पर चढ़ने की कोशिश की मगर नाकाम रही, लेकिन उस ने हिम्मत न हारी और अपनी कोशिश जारी रखी, बिल आख़िर वोह अपने मक़सद में काम्याब हो गई। उस बादशाह को येह बात समझ आ गई कि जहदे मुसल्सल की बिना पर मुश्किल से मुश्किल मुहिम को सर किया जा सकता है। चुनान्चे उस ने अपनी तमाम तर हिम्मत मुज्तमअ़ करते हुए अपने बिखरे हुए लश्कर को जम्अ़ किया और फिर से दुश्मन पर ह़म्ला किया और फ़त्ह़ याब हुवा।

इसी त़रह़ सख़्त पथ्थर पर पानी के चन्द क़त़रे गिराए जाएं तो उस में सूराख़ होना मुश्किल बल्कि ना मुम्किन है लेकिन अगर येही क़त़रे मुसल्सल तीस दिन गिरते रहें तो पथ्थर में छोटा सा सूराख़ ज़रूर हो जाएगा। बिलकुल इसी त़रह़ अगर हम किसी इस्लामी भाई को मुसल्सल दा'वत देते रहेंगे, बिल आख़िर वोह म-दनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बनने के लिये तय्यार हो ही जाएगा। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

(9) ताजदारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया :

اَلدُّعَآءُ سِلَاحُ الْمُؤمِنِ وَعِمَادُالدِّيْنِ وَنُوْرُالسَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

या'नी दुआ़ मोमिन का हथियार है और दीन का सुतून और आस्मान व ज़मीन का नूर है।

(المستدرك، كتاب الدعاء، باب الدعاء سلاح المومن، الحديث:۱۸۵۵، ج ۲،ص ۱۶۲)

इस लिये म-दनी क़ाफ़िले की तय्यारी के लिये अ़-मली कोशिश करने के साथ साथ सिदक़े दिल से रब तआ़ला की बारगाह में दुआ़ भी करते रहें कि दुआ़ मोमिन का हथियार है। इस के इ़लावा जब

www.dawateislami.net

भी घर से म-दनी क़ाफ़िले की तय्यारी के लिये चलें तो वालिदैन से दुआ़ करवाएं।

(10) येह काम मुश्किल ज़रूर है, लेकिन याद रखिये कि जो काम जितना दुश्वार होता है उतना ही उस का अज्र ज़ियादा होता है। चुनान्चे ह़ज़रते इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الصَّمَد फ़रमाते हैं : "जो अ़मल दुन्या में जितना दुश्वार गुज़ार होगा मीज़ाने अ़मल पर वोह उतना ही ज़ियादा वज़्नदार होगा।" (حلية الاولياء، ابراهيم بن ادهم، الرقم:١١٢١٥، ج٨، ص١٦)

(11) म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की दा'वत के दौरान अगर कोई इस्लामी भाई अपनी परेशानी बताए तो अफ़सोस करते हुए हमदर्दी का इज़्हार करें और अगर मुनासिब समझें तो उस की परेशानी का ह़ल भी पेश करें। इस के बा'द म-दनी क़ाफ़िलों की ब-रकत से मसाइब से छुटकारा पाने वालों के वाक़ेआ़त सुनाते हुए राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र की तरग़ीब भी दें। और अगर वोह ख़ुशी की ख़बर सुनाए तो मुबारक बाद देते हुए उस से मुआ़-नक़ा भी करें (अमरद के साथ मुआ़-नक़ा करना मह़ल्ले फ़ितना है इस से इजतिनाब ज़रूरी है), फिर उसे शुक्राने के तौ़र पर म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की तरग़ीब दीजिये। हां ! अगर आप ख़ुद परेशान हों तो उसे येह मह़सूस भी न होनें दें कि आप परेशान हैं।

(12) जिस से मुलाक़ात करें, तोह़फ़ा पेश करें (जब कि कोई मानेए़ शरई न हो) क्यूंकि ह़दीषे पाक में है, "बाहम तोह़फ़ा दो मह़ब्बत बढ़ेगी।" (الموطا للامام مالك، كتاب حسن الخلق، باب ماجاء في المهاجرة، الحديث:١٧٣١، ج٢، ص٤٠٧)

(13) म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र के लिये तय्यार हो जाने वाले

www.dawateislami.net

इस्लामी भाई से सफ़र का सामान रवानगी की तारीख़ से दो दिन पहले ले लें।

(14) अगर किसी को इजाज़त का मस्अला दरपेश हो तो घर पर जा कर इजाज़त त़लब करें।

(15) जब ज़िम्मादारों का म-दनी मश्वरा हो तो ज़िम्मादारों से म-दनी क़ाफ़िले के सफ़र की तारीख़ें ले लें।

(16) म-दनी क़ाफ़िला रवाना करने से पहले अमीरे क़ाफ़िला ज़रूर तय्यार करें।

(17) जब कोई म-दनी क़ाफ़िला सफ़र पर रवाना हो तो उस की ख़ूब तश्हीर की जाए। हर इस्लामी भाई बत़ौरे तरग़ीब दूसरों को बताए कि "اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! मैं फ़ुलां दिन क़ाफ़िले में जा रहा हूं।"

(18) तमाम ज़ैली ह़ल्क़ों में ज़िम्मादारे क़ाफ़िला के ज़रीए़ हफ़्ता भर तमाम दर्सों और बयानात में ए'लाने क़ाफ़िला होना चाहिये, नीज़ हर मस्जिद की सत़ह़ पर हफ़्ते में कम अज़ कम एक दिन पूरा बयान सिर्फ़ क़ाफ़िले के मौज़ूअ़ पर हो।

(19) हफ़्तावार अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत की मज़्बूत़ तरकीब बनाई जाए और इस से म-दनी क़ाफ़िला तय्यार किया जाए।

(20) क़ाफ़िले में सफ़र से मु-तअ़ल्लिक़ा अहदाफ़ को तमाम इस्लामी भाई आपस में तक़्सीम कर लें। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ हदफ़ से ज़ियादा क़ाफ़िले तय्यार हो जाएंगे।

(21) हर इस्लामी भाई को धुन होनी चाहिये कि

"मुझे म-दनी क़ाफ़िले तय्यार करने हैं।"

★★★★★

www.dawateislami.net

(5) क़ाफ़िला से क़ाफ़िले कैसे सफ़र करवाएं ?

(1) म-दनी क़ाफ़िले की काम्याबी का इन्हिसार तीन बातों पर है :

(1) जहां पर म-दनी क़ाफ़िला जाए वहां से दूसरा म-दनी क़ाफ़िला सफ़र भी करवाए।

(2) म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करने वालों में से हर एक का ज़ेहन येह बन जाए कि मुझे कम अज़ कम हर माह तीन दिन म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करना है।

(3) म-दनी क़ाफ़िले वाले जब वापस अ़लाक़े में जाएं तो वहां भी म-दनी काम की धूम मच जाए।

(2) "दा'वते इस्लामी" के काम की जान "म-दनी क़ाफ़िला" और म-दनी क़ाफ़िले की जान "मुलाक़ात या'नी इनफ़िरादी कोशिश" और इनफ़िरादी कोशिश की जान "ख़ुश अख़्लाक़ी" को हर वक़्त पेशे नज़र रखा जाए।

(3) तीन दिन के म-दनी क़ाफ़िले में पहले दिन मुख़्तलिफ़ इस्लामी भाइयों पर इनफ़िरादी कोशिश कर के उन्हें म-दनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बनने की भरपूर तरग़ीब दिलाई जाए और निय्यत करवाने के बा'द उन के नाम भी लिख लिये जाएं। फिर दूसरे दिन घरों पर मुलाक़ात कर के इस्लामी भाइयों को म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र के लिये तरग़ीब दी जाए। इसी दौरान म-दनी क़ाफ़िले के शु-रका में से कोई मुबल्लिग़ ज़ेहनी त़ौर पर तय्यार रहे फिर जैसे ही दूसरे म-दनी क़ाफ़िले की तरकीब बने वोह उस क़ाफ़िले को ले कर वहां से रवाना

www.dawateislami.net

हो जाए और अगर मुबल्लिग़ की तरकीब न बन पाए तो नए तय्यार होने वाले इस्लामी भाइयों को हाथों हाथ म-दनी तरबिय्यत गाह में पेश कर दीजिये ।

(4) पहले दिन सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों के मौज़ूअ़ पर बयान किया जाए ताकि लोगों के ज़ेहनों में सुन्नतों की अहम्मिय्यत बैठ जाए। **दूसरे दिन** हुस्ने अख़्लाक़ पर बयान हो और **तीसरे दिन** ख़ौफ़े इलाही और इ़श्क़े रसूल पर बयान हो ।

हुस्ने अख़्लाक़ के बयान से शौक़ बेदार होगा, ख़ौफ़े इलाही عَزَّوَجَلَّ से दिल नर्म होंगे, इ़श्क़े रसूल के बयान में आंखों से अश्कों की बरसात होगी तो राहे ख़ुदा में सफ़र करवाने में आसानी होगी। येह भी हो सकता है कि पहले दिन म-दनी क़ाफ़िलों की निय्यत, राहे ख़ुदा में सफ़र की अहम्मिय्यत और निय्यत के फ़ज़ाइल पर बयान हो। दूसरे दिन नाम लिखवाने की तरग़ीब दिलाएं और नाम लिखे जाएं और तीसरे दिन बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰه تعَالٰی की दीन की ख़ातिर क़ुरबानियां बता कर सफ़र की तरग़ीब दिलाएं और हाथों हाथ सफ़र की तरकीब बनाएं ।

(5) जिस मस्जिद में म-दनी क़ाफ़िला ठहरे, म-दनी क़ाफ़िले में शरीक इस्लामी भाई उस मस्जिद के ज़िम्मादार से मिल कर वहां के नमाज़ी ह़ज़रात या दीगर इस्लामी भाइयों की मसरूफ़ियात के बारे में मा'लूमात ह़ासिल कर लें। नीज़ अ़लाक़े के इस्लामी भाइयों से म-दनी क़ाफ़िला सफ़र करवाने के सिलसिले में भरपूर तआ़वुन की दर-ख़्वास्त भी करें ।

(6) इनफ़िरादी कोशिश के ह़ल्के़ (11:21 ता 12:00) में दो इस्लामी भाई मसाजिद के अइम्मए किराम, उ़-लमाए दीन और मशाइख़े इ़ज़ाम की बारगाह में ह़ाज़िर हों और उन से म-दनी काम और म-दनी क़ाफ़िलों में इज़ाफ़े के लिये दुआ़ की दरख़्वास्त करें और अह़सन अन्दाज़ में म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की इल्तिजा करें ।

(7) अगर म-दनी क़ाफ़िला किसी गाउं या गोठ में जाए तो इनफ़िरादी कोशिश के ह़ल्के़ में वहां के वडेरे या चौधरी साह़िब और शहर में जाए तो शख़्सिय्यात के घरों वग़ैरा पर जा कर नेकी की दा'वत दें । अगर वोह क़ाफ़िले में सफ़र के लिये तय्यार हो गए तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ वहां से क़ाफ़िला ख़ुद ही तय्यार हो जाएगा । इन शख़्सिय्यात को इन्तिहाई मह़ब्बत से पहले मस्जिद में आने की दा'वत दें फिर उन्हें म-दनी क़ाफ़िले की अहम्मिय्यत बता कर म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करने के लिये तय्यार करें ।

(8) शु-रकाए क़ाफ़िला में से हर इस्लामी भाई को इख़्लास के साथ कोशिश करनी चाहिये कि "हमें यहां से ज़ियादा से ज़ियादा म-दनी क़ाफ़िले सफ़र करवाने हैं ।"

इस सिल्सिले में दर्सो बयान में भी तरग़ीब दिलाएं और इस के बा'द इनफ़िरादी कोशिश के ज़रीए़ भी ।

(9) जब नए इस्लामी भाई मस्जिद में आएं तो इनफ़िरादी कोशिश के ज़रीए़ उन के ज़ेहन में इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने और सुन्नतें सीखने की अहम्मिय्यत उजागर कर के उन्हें म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र के

www.dawateislami.net

लिये तय्यार करें। इस के साथ साथ उन्हें "राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने के फ़ज़ाइलो ब-रकात" और "दा'वते इस्लामी की म-दनी बहारें" सुना कर भी तरग़ीब दिलाएं। और अगर किसी पुराने इस्लामी भाई से मुलाक़ात हो तो उन्हें म-दनी क़ाफ़िले की क़द्रो क़ीमत का एह़सास दिला कर म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की तरग़ीब दीजिये। नीज़ उन का येह भी ज़ेह्न बनाइये कि यूं तो हर सुन्नी दा'वते इस्लामी वाला है लेकिन हमें ह़क़ीक़ी मा'नों में "दा'वते इस्लामी" वाला बनने के लिये कम अज़ कम पांच म-दनी इन्आ़मात का आ़मिल बनना है :

(1) हर माह पाबन्दी से 3 दिन म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करना है।

(2) हफ़्तावार इजतिमाअ़ में अव्वल ता आख़िर शिर्कत करनी है।

(3) हर हफ़्ते अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत में अव्वल ता आख़िर शरीक होना है।

(4) रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हुए म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की दस तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मादार को जम्अ़ कराना है।

(5) रोज़ाना कम अज़ कम दो घन्टे दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों में सर्फ़ करने हैं।

(10) जब भी किसी पर म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र के लिये तय्यार करने की ग़रज़ से इनफ़िरादी कोशिश फ़रमाएं तो वक़्त की मुना-सबत से मा क़ब्ल बयान कर्दा चीज़ों के साथ साथ राहे ख़ुदा में पेश की गई

www.dawateislami.net

अस्लाफ़ (बुज़ुर्गाने दीन) رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की कुरबानी के वाक़ेआत भी सुनाएं फिर राहे ख़ुदा में सफ़र से रोकने वाली रुकावटों को दूर करने का त़रीक़ा भी बताएं। इस के बा'द मज़्कूरा इस्लामी भाई को म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र के उख़रवी फ़ज़ाइल के साथ साथ दुन्यावी ब-रकात के बारे में भी बताइये।

(11) याद रखिये कि म-दनी क़ाफ़िला तय्यार करने के लिये इनफ़िरादी कोशिश, इजतिमाई बयान से कहीं ज़ियादा मुअष्षिर षाबित होती है और इनफ़िरादी कोशिश में ज़ाती किरदार को बहुत अहम्मिय्यत ह़ासिल होती है, लिहाज़ा ! अगर हम बा अ़मल होंगे तो हम से मुलाक़ात करने वाले दा'वते इस्लामी से मुतअष्षिर होंगे, लेकिन अगर हमारे क़ौल व फ़े'ल में तज़ाद होगा तो हम से वाबस्ता रहने वाले इस्लामी भाइयों के बद ज़न हो जाने का क़वी अन्देशा है।

(12) जो इस्लामी भाई म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र के लिये तय्यार हो चुके हों, उन की ख़ैर ख़्वाही की तरकीब बनाई जाए म-षलन निमकों, बिस्किट या फ़्रूट पेश कीजिये कि इस से उन के दिल में म-दनी माह़ोल की मह़ब्बत में इज़ाफ़ा होगा और शैत़ान को उन्हें म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र से रोकने में नाकामी का सामना करना पड़ेगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

(13) किसी इस्लामी भाई को म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र के लिये तय्यार कर लेने ही पर इक्तिफ़ा न करें बल्कि क़ाफ़िले में सफ़र के बा'द भी उसे मुस्तक़िल त़ौर पर म-दनी माह़ोल में लाने के लिये इनफ़िरादी कोशिश जारी रखिये।

★★★★★★

(6) अमीरे क़ाफ़िला को कैसा होना चाहिये ?

प्यारे इस्लामी भाइयो !

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी का म-दनी काम दिन ब दिन वसीअ़ और मज़बूत़ तर होता जा रहा है । इब्तिदा के तजरिबाती मराहि़ल से गुज़रने के बा'द अब हर काम की बा क़ाइदा तरकीब बन चुकी है और येह बात अब रोज़े रोशन की त़रह़ वाज़ेह़ हो चुकी है कि अगर हम पूरी दुन्या में दा'वते इस्लामी का मदनी काम करना चाहते हैं और अपने म-दनी मक़सद (मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है) में कामिल काम्याबी की तमन्ना रखते हैं तो हमें अपने म-दनी क़ाफ़िलों को मज़्बूत़ बनाना होगा ।

इस के लिये हमें हर इस्लामी भाई को राहे ख़ुदा का मुसाफ़िर बनाने के लिये मुसल्सल कोशिश करना होगी ताकि हर मुसलमान सुन्नतों का आ़मिल और तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत का मुख़्लिस **मुबल्लिग़** बन कर दूसरों को नेकी की दा'वत देने वाला बन जाए । इस के इ़लावा हमें ख़ुद भी म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र को अपना मुस्तक़िल मा'मूल बनाना होगा ।

इन म-दनी क़ाफ़िलों की काम्याबी और तरक़्क़ी का राज़ इस में पोशीदा है कि म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने वाले इस्लामी भाइयों को इतनी बेहतरीन तरबिय्यत दी जाए कि वोह एक मरतबा सफ़र करने के बा'द न सिर्फ़ ख़ुद बार बार म-दनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िर बनें बल्कि दूसरे इस्लामी भाइयों को म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करवाने वाले बन जाएं ।

www.dawateislami.net

म-दनी क़ाफ़िले में बेहतरीन तरबिय्यत देने में आसानी के लिये हमारे म-दनी मर्कज़ ने "जदवल" की सूरत में हमें एक रहनुमा अ़ता फ़रमा दिया है।

अब इस जदवल पर कमा हक़्क़ुहू अ़मल करवाने के लिये ऐसा मज़्बूत़ अमीरे क़ाफ़िला दरकार है जो बा अख़्लाक़, इस्लामी भाइयों का ख़ैर ख़्वाह, उन की नफ़्सिय्यात को समझने वाला, बा ह़िकमत, तजरिबा कार और म-दनी ज़ेह्न रखने वाला हो। क्यूंकि अगर अमीरे क़ाफ़िला कमज़ोर होगा तो क़ाफ़िले में इन्तिशार, जदवल पर अ़-दमे अ़मल, आपस में उलझने, एक दूसरे के बारे में बद गुमानी करने और क़ाफ़िला टूटने जैसे नुक़्सानात का सामना करना पड़ेगा, जिस की बिना पर क़ाफ़िला अपने मक़ासिद में नाकाम हो सकता है।

अल ग़रज़ म-दनी क़ाफ़िलों की काम्याबी के लिये अमीरे क़ाफ़िला का मज़्बूत़ होना बेह़द ज़रूरी है।

याद रहे ! अमीरे क़ाफ़िला के लिये अगर्चे सनद याफ़्ता आ़लिम होना ज़रूरी नहीं ताहम उस में :

(1) फ़र्ज़ उ़लूम ह़ासिल करने का जज़्बा (2) समझ व ह़िकमते अ़-मली (3) हुस्ने अख़्लाक़ (4) क़ुव्वते बरदाश्त (5) सनजीदगी (6) ख़िदमत का जज़्बा (7) हर किसी को अपने साथ ले कर चलने और काम लेने की सलाह़िय्यत का पाया जाना ज़रूरी है।

★★★★★

शु-रकाए क़ाफ़िला की तरबिय्यत के म-दनी फूल

अमीरे क़ाफ़िला को चाहिये कि वोह शु-रकाए क़ाफ़िला की तरबिय्यत करने में दर्जे ज़ैल पहलू मद्दे नज़र रखे......

(1) इत़ाअ़ते अमीर के लिये ज़ेह्न बनाना :

अमीरे क़ाफ़िला को चाहिये कि इत़ाअ़ते अमीर के ह़वाले से शु-रकाए क़ाफ़िला का इस त़रह़ ज़ेह्न बनाए......

"**प्यारे इस्लामी भाइयो** ! क़ाफ़िले में अमीरे क़ाफ़िला इस लिये बनाया जाता है कि म-दनी क़ाफ़िले के तमाम मा'मूलात मुनज़्ज़म अन्दाज़ में पायए तकमील को पहुंच जाएं। जब भी कोई सफ़र किया जाए तो हमें चाहिये कि किसी इस्लामी भाई को अपना अमीर मुक़र्रर कर लें।

जैसा कि आक़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अगर तीन शख़्स सफ़र में हों तो उन्हें चाहिये कि एक को अपना अमीर बना लें।" (کنزالعمال، الحدیث:۱۷۴۹۶، ج۶، ص۳۰۰)

अमीर की इत़ाअ़त हम पर लाज़िम है लेकिन अमीर को चाहिये कि ख़ुद को क़ौम का ख़ादिम समझे या'नी लोगों को चाहिये कि अमीरे क़ाफ़िला की इत़ाअ़त करें और अमीर को चाहिये कि अपने आप को दूसरों से बड़ा समझने के बजाए ख़ुद को उन का ख़ादिम तसव्वुर करे और उन की ख़ैर ख़्वाही करता रहे।

www.dawateislami.net

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मुझे म-दनी मर्कज़ की त़रफ़ से आप की ख़िदमत पर मामूर किया गया है, आप की ख़िदमत में दरख़्वास्त है कि जब भी कोई बात आप की बारगाह में अ़र्ज़ करूं ऊपर बयान कर्दा बातों की रोशनी में उसे ज़रूर श-रफ़े क़बूलिय्यत बख़्शियेगा और अगर कहीं कोई कमी पाएं तो नेकी की दा'वत के आदाब का ख़याल रखते हुए मेरी इस्लाह़ फ़रमा दें।"

(2) नज़्मो ज़ब्त़ :

अमीरे क़ाफ़िला का सब से अहम काम येह है कि शु-रकाए क़ाफ़िला को नेकी की दा'वत, नमाज़, ज़िक्र, दुरूद और सीखने सिखाने में जदवल के मुत़ाबिक़ इनफ़िरादी और इजतिमाई त़ौर पर मश्ग़ूल रखे। इस के लिये म-दनी क़ाफ़िले में नज़्मो ज़ब्त़ का जितना ख़याल रखा जाएगा जदवल पर अ़मल उतना ही आसान होगा और जदवल पर अ़मल करने की ब-रकत से येह क़ाफ़िला अपने मक़ासिद में अ़ज़ीम काम्याबी ह़ासिल करेगा।

नज़्मो ज़ब्त़ क़ाइम रखने के सिल्सिले में शु-रकाए क़ाफ़िला के इत्तिह़ाद को बुन्यादी हैषिय्यत ह़ासिल है। लिहाज़ा अमीरे क़ाफ़िला के लिये ज़रूरी है कि म-दनी क़ाफ़िले में नज़्मो ज़ब्त़ क़ाइम रखने के लिये शु-रकाए क़ाफ़िला में बिल ख़ुसूस इन मवाक़ेअ़ पर इत्तिह़ाद पैदा करने की कोशिश करे :

(1) खाना खाते वक़्त...... (2) सफ़र में दुआ़ पढ़ाते वक़्त......

www.dawateislami.net

(3) तरबिय्यत देते वक़्त...... (4) रात को आराम करते वक़्त......
(5) सफ़र के दौरान...... (6) नवाफ़िल, इशराक़ व चाश्त व तहज्जुद में......
(7) सदाए मदीना लगाते वक़्त...... (8) नेकी की दा'वत देते वक़्त।

और आपस में इत्तिह़ाद उसी वक़्त पैदा हो सकता है जब तमाम शु-रकाए क़ाफ़िला एक दूसरे से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये मह़ब्बत करें। इसी त़रह़ अमीरे क़ाफ़िला को भी चाहिये कि अपने दिल में शु-रकाए क़ाफ़िला की मह़ब्बत रखे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये आपस में मह़ब्बत करने वालों के बारे में ग़ैब दां आक़ा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस में तीन औसाफ़ होंगे वोह ईमान की लज़्ज़त पाएगा।

(1) जिस के नज़दीक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के ह़बीब صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत तमाम आ़लम से ज़ियादा हो।

(2) जो किसी से ख़ास **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही के लिये मह़ब्बत रखता हो।

(3) जिस को ईमान लाने के बा'द कुफ़्र की त़रफ़ पलटने से ऐसी नफ़रत हो जैसी आग में डाले जाने से होती है।"

(صحیح البخاری، کتاب الایمان، باب حلاوۃ الایمان، الحدیث ١٦، ج١، ص ١٧)

जब शु-रकाए क़ाफ़िला के दरमियान मह़ब्बत भरी फ़ज़ा क़ाइम हो जाएगी तो हर इस्लामी भाई इस्लाम का मुख़्लिस मुबल्लिग़ बन कर नेकी की दा'वत की ज़िम्मादारियां पूरी दियानत दारी से अदा करने की पूरी कोशिश करेगा। सब के सामने एक ही मक़सद होगा कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश**

www.dawateislami.net

करनी है। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ " और येह मक़्सद तमाम शु-रकाए क़ाफ़िला को मह़ब्बत व उख़ुव्वत की मज़्बूत़ लड़ी में पिरोए रखेगा जिस की वजह से क़ाफ़िले में सब का वक़्त ख़ुश गवार गुज़रेगा।

(3) म-दनी मश्वरा :

अमीरे क़ाफ़िला को चाहिये कि क़ाफ़िले के तमाम उमूर म-दनी मश्वरे के त़रीक़ए कार के मुत़ाबिक़ शु-रकाए क़ाफ़िला के मश्वरे से तै करे। इस की ब-रकत से दूसरे इस्लामी भाइयों को अपनी अहम्मिय्यत और क़ाफ़िले के मुआ़मलात में शिर्कत का एह़सास होगा, क़ाफ़िले में उन की दिल चस्पी बढ़ेगी और उन के दिल में अमीरे क़ाफ़िला के लिये एह़तिराम वसीअ़ हो जाएगा। मश्वरे के ज़रीए़ ज़िम्मादारियां अह़्सन अन्दाज़ में बाहम तक़्सीम हो जाती हैं और हर काम के मुख़्तलिफ़ पहलू निखर कर सामने आते हैं। मश्वरा करना हमारे आक़ा صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत भी है जैसा कि **अल्लाह तआ़ला** ने क़ुरआने ह़कीम में इर्शाद फ़रमाया :

وَشَاوِرْهُمْ فِي الْاَمْرِ ۚ فَاِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ

(پ۴،آل عمران:۱۵۹)

*तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और कामों में उन से मश्वरा लो और जिस किसी बात का इरादा पक्का कर लो तो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) पर भरोसा करो।*

सरकारे मदीना صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स किसी काम का इरादा करे और उस के बारे में किसी से मश्वरा करे और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की रिज़ा के लिये फ़ैसला करे तो उसे सब से बेहतर काम की त़रफ़ रहनुमाई की जाती है।"

(شعب الایمان للبیهقی، الحادی و الخمسون،باب فی الحکم بین الناس،الحدیث:۷۵۳۸،ج۶،ص۷۵)

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का इर्शाद है : "कोई क़ौम जब भी आपस में मश्वरा करती है **अल्लाह** तआला उसे उन की अफ़्ज़ल राय की त़रफ़ हिदायत दे देता है।"

(تفسیر قرطبی، سورۃ آل عمران ، تحت الآیۃ:۱۵۹،ج۲،ص ۱۹۳)

मश्वरे से पहले अमीरे क़ाफ़िला तमाम शु-रका को इस बात का ज़रूर एह़सास दिलाए कि हम एक अहम मक़्सद के लिये म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र कर रहे हैं लिहाज़ा हम सब को चाहिये कि सन्जीदगी का दामन थामे रखें, किसी की बात काट कर दरमियान में बोलना या कई इस्लामी भाइयों का एक साथ बोलना या गुफ़्तगू के दौरान त़न्ज़ व मज़ाक़ का सिल्सिला शुरूअ़ कर देना इन्तिहाई ग़ैर मुनासिब है।

अमीरे क़ाफ़िला को चाहिये कि मश्वरे के दौरान सब की तजावीज़ तवज्जोह से सुने ताकि इस्लामी भाइयों की ह़ौसला शि-कनी न हो क्यूंकि अगर किसी की तजवीज़ या मश्वरा तवज्जोह से न सुना गया तो मुम्किन है कि वोह आयन्दा मश्वरा देने से ही गुरेज़ करे। इस त़रह़ अमीरे क़ाफ़िला उस की फ़िक्री सलाहि़य्यतों से इस्तिफ़ादा न कर पाएगा। फिर अगर किसी की तजवीज़ क़ाबिले अ़मल न हो तब भी उस के अच्छे पहलूओं की ता'रीफ़ करे और मुम्किन हो तो ह़ौसला अफ़्ज़ाई करने के साथ साथ उसे समझाए कि इस की तजवीज़ के कौन से पहलू किन वुजूहात की बिना पर क़ाबिले अ़मल नहीं।

www.dawateislami.net

शु-रकाए क़ाफ़िला का येह भी ज़ेहन बनाया जाए कि जब एक ही मौज़ूअ़ पर मश्वरा देने वाले कषीर हों तो हर एक की राय पर अ़मल मुमकिन नहीं होता लिहाज़ा कोई भी इस्लामी भाई इसे हरगिज़ अना का मस्अला न बनाए कि मेरा मश्वरा क्यूं नहीं माना गया ?

(4) शु-रकाए क़ाफ़िला से अच्छा बरताव :

अच्छा अमीर वोही होता है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा को अपने पेशे नज़र रखे, अपने मक़सद से मुख़्लिस हो, अपने ज़ेरे तरबिय्यत इस्लामी भाइयों से पुर ख़ुलूस महब्बत करने वाला हो, अपने इस्लामी भाइयों की तरबिय्यत के लिये हर वक़्त कोशां रहे और उन के दिल में ऐसा घर कर जाए कि शरीअ़त के दाएरे में रह कर उन्हें ख़्वाह कैसा ही काम करने को कहे वोह बे चूनो चरा उस के हुक्म को बजा लाएं ।

बा'ज़ अमीरे क़ाफ़िला येह शिक्वा करते हैं कि शु-रकाए क़ाफ़िला इत़ाअ़त नहीं करते । इस की वजह साफ़ ज़ाहिर है कि अमीरे क़ाफ़िला को इत़ाअ़त करवाना ही नहीं आता, हर वक़्त हुक्म देने के अन्दाज़ में गुफ़्तगू करना, ख़ुद को इस्लामी भाइयों से बरतर जानना, इस्लामी भाइयों की मा'मूली ग़-लत़ियों पर उन्हें सख़्त अल्फ़ाज़ और ह़क़ारत भरे लहजे में डांटना वग़ैरा येह सब चीज़ें मिल कर शु-रकाए क़ाफ़िला को अमीरे क़ाफ़िला से **मु-तनफ़्फ़िर** कर देती हैं ।

याद रखिये ! किसी की महब्बत उस की इत़ाअ़त करवाती है लिहाज़ा ज़रूरी है कि अमीरे क़ाफ़िला और शु-रकाए क़ाफ़िला के दरमियान अख़ुव्वत व महब्बत का मज़्बूत़ रिश्ता क़ाइम हो । इस के इ़लावा अमीरे क़ाफ़िला ख़ुद भी जदवल की पाबन्दी करने में बेहद

www.dawateislami.net

चुस्ती का मुज़ा-हरा करे क्यूंकि अमीरे क़ाफ़िला के अ़मल का अषर पूरे क़ाफ़िले पर पड़ता है। इस लिये अगर अमीरे क़ाफ़िला, म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र का पाबन्द, म-दनी इन्आ़मात का आ़मिल, तक़्वा व परहेज़ गारी से आरास्ता होगा तो पूरा क़ाफ़िला म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल पैरा हो जाएगा। लेकिन अगर अमीरे क़ाफ़िला ख़ुद बे अ़मल होगा या जदवल पर अ़मल में सुस्ती का मुज़ा-हरा करेगा तो शु-रकाए क़ाफ़िला का सुस्त हो जाना बईद अज़ गुमान नहीं।

शु-रकाए क़ाफ़िला के दिल नाज़ुक आबगीनों की त़रह़ होते हैं, जो मा'मूली सी ठेस से टूट सकते हैं, लिहाज़ा ! अमीरे क़ाफ़िला को चाहिये कि हर एक से उस के नफ़्सियाती तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ सुलूक करे और उन्हें बोरियत से बचाने के लिये खुश्क मिज़ाजी और अफ़सुर्दगी से कोसों दूर भागे बल्कि शरई इजाज़त के तह़्त खुश त़बई भी करे।

हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم भी अपने शायाने शान खुश त़बई फ़रमाते चुनान्चे ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह** बिन ह़ारिस رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "मैं ने आक़ा व मौला صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से ज़ियादा मुस्कुराने वाला कोई नहीं देखा।"

(جامع الترمذی،شمائل ، باب ماجاء فی ضحک رسول اللّٰہ، الحدیث:٢٢٦،ج٥، ص٥٤٢)

शु-रकाए क़ाफ़िला की तरबिय्यत के लिये मज़कूरा बाला त़रीक़ों को अपनाने से आप का क़ाफ़िला एक यादगार क़ाफ़िला कहलाएगा। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

★★★★★

www.dawateislami.net

(7) म-दनी क़ाफ़िले को सफ़र करवाने के म-दनी फूल

(शुरूअ़ से आख़िर तक क़ाफ़िले का सफ़र कैसा होना चाहिये ?)

अज़ : अमीरे अहले सुन्नत अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

सफ़र से क़ब्ल म-दनी फूल :

(1) रवानगी से पहले ही मक़ामे सफ़र, वक़्त और सामाने सफ़र के बारे में शु-रकाए क़ाफ़िला को इत्तिलाअ़ कर दी जाए।

(2) शु-रकाए क़ाफ़िला रवानगी के मुक़र्ररा वक़्त से पहले पहले मुक़र्ररा जगह म-षलन "म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना" में पहुंच जाएं ताकि तरबिय्यत भी हो जाए और दीगर ह़ाजात से फ़रागत पा लेने के बा'द क़ाफ़िले की बा आसानी रवानगी मुमकिन हो सके।

(3) रवानगी से क़ब्ल जो तरबिय्यत मिले उस के म-दनी फूल इस्लामी भाई अपनी डायरी में ज़रूरतन लिख लें।

(4) म-दनी क़ाफ़िले में जदवल के मुत़ाबिक़ सफ़र हो एक म-दनी क़ाफ़िले में कम अज़ कम **7** इस्लामी भाई और ज़ियादा से ज़ियादा **12** इस्लामी भाई हों।

(5) अमीरे क़ाफ़िला के पास सुन्नत बॉक्स, चटाई, पेट पर बांधने का पथ्थर, मिट्टी के बरतन, सुन्नत के मुत़ाबिक़ **3** उंगलियों से खाने की आ़दत बनाने के लिये रबड़ बेंड, अज़ान व इक़ामत के ए'लानात के कार्ड मौजूद होने चाहिएं।

(6) अमीरे क़ाफ़िला के पास म-दनी क़ाफ़िला पेड, म-दनी क़ाफ़िलों की निय्यत का कार्ड, सामाने म-दनी इन्आ़मात और ख़ुसूसी त़ौर पर अ़त्त़ारी पेड ज़रूर होना चाहिये।

www.dawateislami.net

(7) म-दनी क़ाफ़िले में अमीरे अहले सुन्नत शैख़े त़रीक़त دامت برکاتہم العالیہ के रसाइल, बयानात और म-दनी मुज़ा-करों की केसिटें तोह़फ़े में पेश करने की तरकीब बनाएं।

(8) तरबिय्यत के बा'द अमीरे क़ाफ़िला सब इस्लामी भाइयों को पहले अपने बारे में बताए फिर उन का तआ़रुफ़ ह़ासिल करे, इस त़रह़ वोह सब इस्लामी भाइयों के नाम से वाक़िफ़ हो जाएगा और शु-रका भी एक दूसरे के नाम जान लेंगे।

(9) अमीरे क़ाफ़िला अपने और शु-रका के नाम व पता वग़ैरा फ़ॉर्म पर लिख कर तरबिय्यत गाह या म-दनी क़ाफ़िला ज़िम्मादार को जम्अ़ करवा दे और कारकर्दगी फ़ॉर्म में भी दर्ज कर ले।

(10) फिर अमीरे क़ाफ़िला इस्लामी भाइयों को इन मौज़ूआ़त पर सुन्नतें और आदाब बताए :

★ सफ़र की सुन्नतें और आदाब ★ बाज़ार में जाने के आदाब ★ एह़तिरामे मस्जिद। नीज़ नए इस्लामी भाइयों को तरग़ीब दिलाने का त़रीक़ा वग़ैरा समझाए।

(11) अमीरे क़ाफ़िला रवानगी से क़ब्ल ही मुनासिब अख़राजात जम्अ़ कर के लिख ले ताकि म-दनी क़ाफ़िला ख़त्म होने पर बा आसानी ह़िसाब हो सके।

(12) हर एक से यक्सां रक़म जम्अ़ कराए अगर येह मुम्किन न हो तो जिस के पास कम रक़म हो कोई इस्लामी भाई उस की कमी पूरी कर दे अगर येह न हो सके तो **अमीरे क़ाफ़िला** फ़क़त़ मुबहम (या'नी ग़ैर वाज़ेह़) सा ए'लान न करे, बल्कि सब से फ़र्दन फ़र्दन सरा-ह़तन

www.dawateislami.net

(या'नी एक एक से साफ़ लफ़्ज़ों में) इजाज़त ले। हां कम रक़म देने वाले की निशान देही कर के उस को शरमिन्दा न किया जाए। म-षलन **अमीरे क़ाफ़िला** एक एक से कहे : म-षलन हम ने सब से फ़ी कस **92** रुपै लिये हैं मगर एक इस्लामी भाई ऐसे हैं जिन्हों ने **63** रुपै दिये हैं, क्या आप की त़रफ़ से इजाज़त है कि वोह भी खाने पीने वग़ैरा मुआ़मलात में बराबर के शरीक रहें ? (जो जो इजाज़त देंगे सिर्फ़ उन ही की त़रफ़ से इजाज़त मानी जाएगी। बिलफ़र्ज़ किसी ने इजाज़त न दी तो उस का ह़िसाब अलग रखना ज़रूरी है)

(13) चूल्हा, दस्तर ख़्वान व बरतन वग़ैरा सामान को देख ले जिस चीज़ की कमी हो उसे शामिल कर ले।

(14) फ़ैज़ाने सुन्नत, रसाइल और ज़रूरी इस्लामी किताबें और अगर ज़रूरत हो तो मसा-लह़ा जात वग़ैरा भी साथ ले जाएं।

(15) रवानगी से क़ब्ल तमाम इस्लामी भाई दो रकअ़त नमाज़े सफ़र अदा करें बशर्ते़ कि मकरूह वक़्त न हो।

(16) फिर दुआ़ कर के रवाना हों, येह दुआ़ अमीरे क़ाफ़िला कराए।

(17) अमीरे क़ाफ़िला हर दो इस्लामी भाइयों को आपस में रफ़ीक़ बना दे।

(18) रफ़ीक़ जान पहचान वाले या दोस्ती वाले न हों बल्कि एक नए और एक पुराने को रफ़ीक़ बनाया जाए।

(19) जिस सुवारी में सफ़र करना है म-षलन ट्रेन या बस उस की मा'लूमात पहले से ले लें और वक़्त वग़ैरा भी मा'लूम कर लें और फिर जिस पर आसानी हो उस सुवारी पर सफ़र फ़रमाएं।

www.dawateislami.net

दौराने सफ़र म-दनी फूल

(20) अब हर इस्लामी भाई अपना अपना सामान ख़ुद उठाएं और अपने अपने रफ़ीक़ के साथ चलें। मुन्तशिर हो कर चलने की बजाए दो दो की क़ित़ार में चलें, तस्बीह़ वग़ैरा पर दुरूद शरीफ़ पढ़ते रहें या आपस में सिर्फ़ और सिर्फ़ सुन्नतों की ख़िदमत, अपनी इस्लाह़ और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करने का ज़ेह्न बनाएं।

(21) इसी त़रह़ सुवारी पर अमीरे क़ाफ़िला की इजाज़त से सुवार हों।

(22) सुवारी पर हमेशा सब्रो तह़म्मुल से सुवार हों, धक्कम पेल से गुरेज़ करें।

(23) अमीरे क़ाफ़िला सब को सुवार करने के बा'द सुवार हो। जब सब को निशस्त मिल जाए तो आख़िर में ख़ुद बैठे वरना खड़ा रहे या नीचे बैठ जाए।

(24) अमीरे क़ाफ़िला ख़ुद दुआ पढ़ाए या शु-रका में से किसी को पढ़ाने की इजाज़त दे।

(25) बे वुक़ूफ़ों की त़रह़ बस में शोर न मचाएं और न बस की दीवारें बजाएं।

(26) जहां कहीं ठहरें तो एक साथ ठहरें मुन्तशिर हो कर न ठहरें।

(27) रफ़ीक़े सफ़र तमाम सफ़र इकठ्ठा करें फ़ुज़ूल गोई से मुकम्मल इजतिनाब करें बल्कि सुन्नतें और दुआएं याद करवाएं।

(28) अगर सफ़र में थकावट या ग़ुनूदगी त़ारी हो तो गुफ़्तगू के बजाए आराम करें।

(29) अलग अलग बैठे हों तो बराबर में बैठने वाले से हुस्ने अख़्लाक़ के साथ बातचीत शुरूअ़ करें, "**दा'वते इस्लामी**" का तआ़रुफ़ कराने के बा'द म-दनी क़ाफ़िले की दा'वत पेश करें।

(30) अगर कोई सुवाल या तनक़ीद करे तो ख़ामोश रहें मुनासिब ख़याल फ़रमाएं तो अमीरे क़ाफ़िला से मुलाक़ात करा दें।

(31) तमाम इस्लामी भाई अपने सामान की ख़ुद हिफ़ाज़त करें और ख़ुद उठाएं।

(32) चलती बस या गाड़ी में सुवार होने और उतरने से गुरेज़ करें।

(33) जब कभी बस में सुवार हों तो सलाम करें और जहां जगह मिल जाए तशरीफ़ रखें, दीगर मुसाफ़िरों से मुलाक़ात करें, ह़ाल अह़वाल पूछें।

रिवायत में आता है कि "जब दो इस्लामी भाई आपस में भाईचारा क़ाइम करें तो दोनों को चाहिये कि पहले अपने नाम, वल्दिय्यत, ख़ानदान और क़बीलों के नाम बतलाएं ताकि दोस्ती ज़ियादा मुस्तह़्कम हो।"

(سنن الترمذی ، کتاب الزھد، باب ماجاء فی اعلام الحب،الحدیث:۲۴۰۰،ج۴،ص۱۷۶)

(34) किसी मौज़ूअ़ पर बह़ष न करें, बल्कि अगर कोई करे तो कहें मैं अदना सा त़ालिबे इल्म हूं आप उ़-लमाए अहले सुन्नत से रुजूअ़ करें।

(35) अमीरे क़ाफ़िला, क़ाफ़िले वालों की ख़ूब ख़िदमत करे और इसे बोझ नहीं बल्कि सआ़दत तसव्वुर करे।

ह़दीषे पाक में है : "سَیِّدُ الْقَوْمِ خَادِمُھُمْ" या'नी "क़ौम का सरदार क़ौम का ख़ादिम होता है।" (شعب الایمان للبیھقی،ج٦،ص٣٣٤، الحدیث:٨٤٠٧)

उन का सामान बारी बारी उठाए, सब को यक्सां मह़ब्बत दे, किसी एक का हो कर न रह जाए।

(36) शु-रकाए क़ाफ़िला लाख ग़-लत़ियां करें हरगिज़ हरगिज़ ग़ुस्सा न करे वरना नुक़्सान ही होगा नर्मी, नर्मी, नर्मी और सिर्फ़ नर्मी का रवय्या रखे।

(37) जब मत़्लूबा अ़लाक़ा आ जाए तो अमीरे क़ाफ़िला की इजाज़त से इन्तिहाई नज़्मो ज़ब्त़ से उतरें। बाज़ार से गुज़रते हुए अपनी निगाहें झुकाए रखें, निगाहें नीची रखना सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नते करीमा भी है। (احیاء العلوم ، ج٢،ص٤٤٢)

इधर उधर देखने की वजह से बद निगाही में मुब्तला हो जाने का ग़ालिब इम्कान है। मन्क़ूल है : "जो शख़्स शह्वत से किसी **अज्नबिय्या** के ह़ुस्नो जमाल को देखेगा क़ियामत के दिन उस की आंखों में सीसा पिघला कर डाला जाएगा।"

(الھدایۃ،کتاب الکراھیۃ ، فصل فی الوطء...الخ، ج٢،ص٣٦٨)

(38) आपस में म-दनी मक़्सद या'नी "**मुझे अपनी** (इस्लाह़ की कोशिश म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल कर के) **और** (म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र कर के) **सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।**" के बारे में गुफ़्तगू करें या ज़िक्रो दुरूद करते रहें। दो, दो की क़त़ार में रफ़ीक़ के हमराह चलें, रास्ते में जब भी दुआ़ पढ़ें लहजा धीमा रखें।

मक़ामे तरबिय्यत के म-दनी फूल :

(39) मत़्लूबा मस्जिद में पहुंच कर सीधा क़दम दाख़िल करें, दुआ़ पढ़ें, निय्यते ए'तिकाफ़ भी फ़रमाएं। सामान मस्जिद के एक कोने में समेट कर ऊपर चादर वग़ैरा डाल कर रखें।

(40) अमीरे क़ाफ़िला मस्जिद इन्तिज़ामिया व इमाम साहिबान नीज़ उस ह़ल्क़े के ज़ैली मुशा-वरत के निगरान व क़ाफ़िला ज़िम्मादार वग़ैरा से मुलाक़ात कर के क़ाफ़िले की आमद की इत्तिलाअ़ दे, (मश्वरा कर के फ़ौरी तफ़्सीलात बता कर ज़िम्मादारियां सोंपी जाएं और जदवल पर अ़मल शुरूअ़ करें)

(41) मस्जिद के किसी काम में मुदा-ख़लत न करें ह़त्ता कि अज़ान व इक़ामत की भी इजाज़त त़लब न करें, अज़ ख़ुद इजाज़त मिल जाए तो ह़रज नहीं।

(42) ऐसे अफ़्आ़ल से बचें जिस से लोग आप से बद ज़न हों। म-षलन अज़ान के बा'द भी लैटे रहना, हुल्लड़ बाज़ी करना, शोर मचाना और हंसी मज़ाक़ में लगे रहना।

(43) मस्जिद की ख़ैर ख़्वाही करें और नमाज़ियों को ख़ैर ख़्वाही के ज़रीए़ दर्सो बयान के लिये नर्मी से रोकें।

(44) रोज़ाना मुक़र्ररा वक़्त पर शु-रकाए क़ाफ़िला को आज का जदवल बताए और उन के मश्वरे से ए'लान, दर्सो बयान, वक़्फ़ए इस्तिराह़त में अगर ज़रूरत मह़सूस करें तो जाग कर सामान की ह़िफ़ाज़त वग़ैरा, तहज्जुद और फ़ज्र के लिये जगाने, दर्सो बयान के वक़्त जाने वाले नमाज़ियों को रोकने की फ़र्दन फ़र्दन दरख़्वास्त करने

www.dawateislami.net

वाले और मुबल्लिग़ के क़रीब बिठाने के लिये ख़ैर ख़्वाह, बयान के बा'द क़ाफ़िलों के लिये नाम व पता लिखने, सौदा सलफ़ लाने, पकाने, खिलाने और बरतन वग़ैरा धोने की ज़िम्मादारियां मुख़्तलिफ़ इस्लामी भाइयों के सिपुर्द करे।

(45) दो पहर और शाम के खाने के लिये सालन एक ही दफ़्आ़ बनाया जाए, बाज़ार में खाने की अश्या ख़रीदने के लिये जाएं तो जल्दी वापस आएं क्यूंकि बाज़ार को शैत़ान का घर कहा गया है।

(46) बा'द नमाज़े फ़ज्र **7** मिनट बयान, इस के बा'द म-दनी ह़ल्क़े की तरकीब हो, **3** आयात कन्ज़ुल ईमान, **4** सफ़ह़ात फ़ैज़ाने सुन्नत, श-ज-रए अ़त़्त़ारिय्या और इस के बा'द इशराक़ व चाश्त तक **10** सूरतें या मद्रसतुल मदीना बालिग़ान लगाया जाए।

(47) म-दनी क़ाफ़िले में इशा के बा'द रसाइले अ़त़्त़ारिय्या वाले ह़ल्क़े की जगह केसिट इज्तिमाअ़ की तरकीब की जाए, जिस में एक रोज़ बयान और एक रोज़ म-दनी मुज़ा-करा सुनने की तरकीब बनाई जाए और कोई मजबूरी हो तो रसाइले अ़त़्त़ारिय्या से 26 मिनट का ह़ल्क़ा लगाया जाए।

(48) अपने खाने में मक़ामी इस्लामी भाइयों को भी शामिल कर लिया जाए। और इनफ़िरादी कोशिश के ज़रीए आने वालों की ख़ैर ख़्वाही की तरकीब बनाई जाए म-षलन निम्को, फ्रूट वग़ैरा पेश किये जाएं। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आपस में भाईचारा क़ाइम होगा।

(अमीरे क़ाफ़िला पहले दिन इब्तिदा में ही एक एक से इस की भी इजाज़त ले ले। अगर एक फ़र्द ने भी इजाज़त न दी तो उस का ह़िसाब अलग रखना ज़रूरी हो जाएगा)

(49) अमीरे क़ाफ़िला पहले दिन से ही अपना, शु-रकाए क़ाफ़िला

का और अहले अ़लाक़ा इस्लामी भाइयों का ज़ेहन बनाए कि यहां से हाथों हाथ म-दनी क़ाफ़िला तय्यार करना है।

(50) तमाम उमूर सुन्नत के मुताबिक़ करें अगर कोई ख़ैर ख़्वाही करे तो खाना मस्जिद में ही खाएं हत्तल इम्कान किसी के घर पर न जाएं।

(51) तमाम नमाज़ें सफ़े अव्वल में तक्बीरे ऊला के साथ अदा करें।

(52) वक़्फ़ए आराम के इख़्तिताम पर उठाते वक़्त पाउं दबा कर उठाएं।

(53) सीखने सिखाने के ह़ल्क़ों की अहम्मिय्यत को उजागर किया जाए और सब इस्लामी भाई तमाम ह़ल्क़ों में शरीक हों।

(54) वहां से हाथों हाथ इस्लामी भाइयों को सफ़र पर रवाना करने के लिये मक़ामी इस्लामी भाइयों का ज़ेहन बनाए और सब को हाथों हाथ सफ़र की दा'वत दें।

(55) जो एक मरतबा सफ़र करे उस की ऐसी तरबिय्यत हो कि वोह अ़लाक़े में म-दनी कामों में शिर्कत और हर माह 3 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करने वाला बन जाए।

(56) बयानात हमेशा मुषबत और इस्लाह़ी मौज़ूआत पर हों।

(57) जहां गए हैं वहां के मा'मूलात और तन्ज़ीमी कामों में मुदा-ख़लत न करें।

(58) आख़िरी दिन मुम्किन हो तो हुसूले ब-रकत के लिये किसी मज़ार पर ह़ाज़िरी दें।

(59) आख़िरी रात दुआ़ कराई जाए।

(60) म-दनी क़ाफ़िला फ़ॉर्म म-दनी क़ाफ़िले में ही पुर करें।

(61) आख़िरी दिन मस्जिद इन्तिज़ामिया और अहले मह़ल्ला से मुआ़फ़ी तलाफ़ी भी करें।

www.dawateislami.net

(62) बाहम मश्वरे से मस्जिद के अख़्राजात और बिजली बिल वग़ैरा की मद में मस्जिद इन्तिज़ामिया को कम अज़ कम 92 रुपै चन्दा पेश करें।

(63) आख़िरी दिन सब मिल कर मस्जिद की सफ़ाई भी करें।

(64) तीन दिन के म-दनी क़ाफ़िले में तीसरे दिन बा'दे मग़रिब बयान और बा'दे इशा दर्स होना चाहिये।

वापसी के म-दनी फूल :

(65) ब वक़्ते रुख़्सत अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का कलाम "आह ! म-दनी क़ाफ़िला अब जा रहा है लौट कर" मिल कर पढ़ा जाए जो इस किताब के सफ़हा **670** पर दर्ज है।

(66) वापसी का सफ़र भी आदाब के मुताबिक़ किया जाए।

(67) वापसी पर तमाम शु-रका अमीरे क़ाफ़िला के हमराह अपने म-दनी मर्कज़ में (जहां से म-दनी क़ाफ़िला रवाना हुवा था) हाज़िर हों और कारकर्दगी पेश करें।

(68) अमीरे क़ाफ़िला रोज़ का रोज़ हिसाब लिख लिया करे सिर्फ़ अपनी याद दाश्त पर ए'तिमाद करने में ग़-लतियों का काफ़ी इमकान है। वाजिब है कि पाई पाई का हिसाब कर के हर एक को उस के हिस्से की रक़म लौटा दी जाए।

(69) अमीरे क़ाफ़िला और शु-रका एक दूसरे से मुआफ़ी तलाफ़ी करें।

(70) म-दनी क़ाफ़िले में जो सीखा उसे अपने अ़लाक़े में इस्लामी भाइयों को भी सिखाएं।

(71) अपने अ़लाक़े में म-दनी कामों की धूमें मचा दें।

www.dawateislami.net

एह़तिरामे मस्जिद के म-दनी फूल

(अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ की किताब फ़ैज़ाने सुन्नत से माख़ूज़)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! चूंकि म-दनी क़ाफ़िले वालों को अकषर वक़्त मस्जिद ही में गुज़ारना होता है इस लिये मुनासिब येही है कि चन्द बातें एह़तिरामे मस्जिद से **मु-तअ़ल्लिक़** सीख लीजिये। शु-रकाए क़ाफ़िला को चाहिये कि जब मस्जिद में दाख़िल हों तो फ़ौरन ए'तिकाफ़ की निय्यत फ़रमा लिया करें। दौराने ए'तिकाफ़ मस्जिद के अन्दर ज़रूरतन **दुन्यवी** बात करने की इजाज़त है लेकिन धीमी आवाज़ के साथ और एह़तिरामे मस्जिद को मलह़ूज़ रखते हुए बात कीजिये। येह नहीं होना चाहिये कि आप चिल्ला कर किसी इस्लामी भाई को बुला रहे हों और वोह भी आप को चिल्ला कर जवाब दे रहा हो, "अबे तबे" और गुल गपाड़े से मस्जिद गूंज रही हो। येह अन्दाज़ ना जाइज़ व गुनाह है। याद रखिये ! मस्जिद में बिला ज़रूरत **दुन्यवी** बातचीत की **मो'तकिफ़** को भी इजाज़त नहीं।

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رضی اللہ تعالٰی عنہ से रिवायत है कि नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत, शहनशाहे नुबुव्वत صلّی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلّم ने इर्शाद फ़रमाया :

يَأتِي عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ يَكُوْنُ حَدِيثُهُمْ
فِي مَسَاجِدِهِمْ فِي أَمْرِ دُنْيَاهُمْ فَلا تُجَالِسُوْهُمْ فَلَيْسَ لِلّٰهِ فِيهِمْ حَاجَةٌ

तरजमा : "लोगों पर एक ज़माना ऐसा आएगा कि मसाजिद में दुन्या की बातें होंगी, तुम उन के साथ मत बैठो कि उन को ***अल्लाह*** *عزّوجلّ से कुछ काम नहीं।"*

(شُعَبُ الایمان، ج۳، ص۸۷، حدیث ۲۹۶۲)

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं :

"مَنْ سَمِعَ رَجُلًا يَنْشُدُ ضَالَّةً فِي الْمَسْجِدِفَقُوْلُوْا لَارَدَّهَااللّٰهُ عَلَيْكَ فَاِنَّ الْمَسَاجِدَ لَمْ تُبْنَ لِهٰذَا."

*तरजमा : जो किसी को मस्जिद में ब आवाज़े बुलन्द गुमशुदा चीज़ ढूंडते सुनें तो वोह कहें : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ वोह गुमशुदा शै तुझे न मिलाए क्यूंकि मस्जिदें इस काम के लिये नहीं बनाई गईं ।"*

(صحيح مسلم ص ٢٨٤ حديث ٥٦٨)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जो लोग अपने जूते या कोई और चीज़ गुम हो जाने पर मस्जिद में शोर करते हुए ढूंडते फिरते हैं उन को बयान कर्दा ह़दीषे मुबारक से दर्स ह़ासिल करना चाहिये । मा'लूम हुवा कि हर उस काम से मस्जिद को बचाना ज़रूरी है जिस से मस्जिद का तक़द्दुस पामाल होता हो । दुन्यवी बातें, हंसी मज़ाक़ और इसी त़रह़ की लग़वियात के लिये मस्जिदें नहीं बनाई गईं बल्कि मस्जिदें तो इबादते इलाही के लिये बनाई गई हैं । मस्जिद में बुलन्द आवाज़ से गुफ़्तगू करने को सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان कितना ना पसन्द करते हैं इस का इस रिवायत से अन्दाज़ा लगाइये । चुनान्चे **हज़रते** सय्यिदुना साइब बिन यज़ीद رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "मैं मस्जिद में खड़ा हुवा था कि मुझे किसी ने कंकरी मारी । मैं ने देखा तो वोह ह़ज़रते सय्यिदुना **अमीरुल मुअमिनीन** उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہ थे, उन्हों ने मुझ से (इशारा कर के) फ़रमाया : "इन दो शख़्सों को मेरे पास लाओ !" मैं उन दोनों को ले आया, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہ ने उन से इस्तिफ़्सार फ़रमाया :

www.dawateislami.net

"तुम कहां से तअ़ल्लुक़ रखते हो ?" अ़र्ज़ की : "त़ाइफ़ से ।" फ़रमाया : "अगर तुम **मदीनए मुनव्वरह** के रहने वाले होते (क्यूंकि वोह मस्जिद के आदाब बख़ूबी जानते हैं) तो मैं तुम्हें ज़रूर सज़ा देता (क्यूंकि) तुम **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मस्जिद में अपनी आवाज़ें बुलन्द करते हो !" (صحیح بخاری، ج۱،ص۱۷۸، حدیث۴۷۰)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ली क़ारी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡبَارِی **मुह़क़्क़िक़ अ़लल इत़्लाक़** शैख़ इब्ने हुमाम عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡسَّلَام के ह़वाले से नक़्ल फ़रमाते हैं :

اَلۡکَلَامُ الۡمُبَاحُ فِی الۡمَسۡجِدِ مَکۡرُوۡہٌ یَاکُلُ الۡحَسَنَاتِ

तरजमा : "मस्जिद में मुबाह़ (या'नी जाइज़) बात करना मकरूहे (तह़रीमी) है और नेकियों को खा जाता है ।" (مرقاۃالمفاتیح، ج۲، ص۴۴۹)

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, बि इज़्ने परवर दगार दो[2] जहां के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : اَلضِّحۡکُ فِی الۡمَسۡجِدِ ظُلۡمَۃٌ فِی الۡقَبۡرِ. तरजमा : "मस्जिद में हंसना क़ब्र में अंधेरा (लाता) है ।" (الجامعُ الصَّغیرص۳۲۲حدیث:۵۲۳۱)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरा बाला रिवायात को बार बार पढ़िये और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से लरज़िये ! कहीं ऐसा न हो कि मस्जिद में दाख़िल तो हुए षवाब कमाने मगर ख़ूब हंस बोल कर नेकियां बरबाद कर के बाहर निकले कि मस्जिद में दुन्या की जाइज़ बात भी नेकियों को खा जाती है । लिहाज़ा मस्जिद में पुर

www.dawateislami.net

सुकून और ख़ामोश रहिये । बयान भी करें या सुनें तो सन्जीदगी के साथ कि कोई ऐसी बात न हो जिस से लोगों को हंसी आए । न खुद हंसिये न लोगों को हंसने दीजिये कि मस्जिद में हंसना **क़ब्र** में अंधेरा लाता है । हां ज़रूरतन मुस्कुराना मन्अ़ नहीं । मस्जिद के एह्तिराम का जे़ह्न बनाने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र का मा'मूल बनाइये ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

"بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم" के उन्नीस हुरूफ़ की निस्बत से मस्जिद के मु-तअ़ल्लिक़ 19 म-दनी फूल

मरवी है कि एक मस्जिद अपने रब عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर शिकायत करने चली कि लोग मुझ में दुन्या की बातें करते हैं । मलाएका उसे आते हुए मिले और बोले, हम उन (मस्जिद में दुन्या की बातें करने वालों) के हलाक करने को भेजे गए हैं ।

(الحديقة الندية، نوع ٤٠،كلام الدنيا فی المساجد بلا عذر، ج٢،ص٣١٨)

रिवायत किया गया है कि "जो लोग ग़ीबत करते (जो कि सख़्त हराम और ज़िना से भी अशद्द है) और जो लोग मस्जिद में दुन्या की बातें करते हैं उन के मुंह से गन्दी बदबू निकलती है जिस से फ़िरिश्ते **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर उन की शिकायत करते हैं ।"

سُبْحٰنَ اللّٰه (عَزَّوَجَلَّ) ! जब मुबाह़ व जाइज़ बात बिला ज़रूरते शरइय्या

www.dawateislami.net

करने को मस्जिद में बैठने पर येह आफ़तें हैं तो (मस्जिद में) ह़राम व ना जाइज़ काम करने का क्या ह़ाल होगा !

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि.16, स. 316 و الحديقة الندية، نوع ٤٠، كلام الدنيا فى المساجد بلا عذر، ج٢، ص٣١٨)

दरज़ी को इजाज़त नहीं कि मस्जिद में बैठ कर कपड़े सिये। हां अगर बच्चों को रोकने और मस्जिद की ह़िफ़ाज़त के लिये बैठा तो ह़रज नहीं। इसी त़रह़ कातिब को (मस्जिद में) उजरत पर किताबत करने की इजाज़त नहीं। (فتاوٰی هنديه ج١ص١١٠)

मस्जिद के अन्दर किसी क़िस्म का कूड़ा हरगिज़ न फेंकें। सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى "**जज़्बुल क़ुलूब**" में नक़्ल करते हैं कि मस्जिद में अगर ख़स (या'नी तिन्का) भी फेंका जाए तो इस से मस्जिद को इस क़दर तक्लीफ़ पहुंचती है जिस क़दर तक्लीफ़ इन्सान को अपनी आंख में ख़स (या'नी मा'मूली ज़र्रा) पड़ जाने से होती है। (جذبُ القُلُوب ص٢٥٧)

मस्जिद की दीवार, इस के फ़र्श, चटाई या दरी के ऊपर या उस के नीचे थूकना, नाक सिनकना, नाक या कान में से मैल निकाल कर लगाना, मस्जिद की दरी या चटाई से धागा या तिन्का वग़ैरा नोचना सब ममनूअ़ है। ज़रूरतन अपने रुमाल वग़ैरा से नाक पोंछने में कोई मुज़ा-यक़ा नहीं। **मस्जिद** का कूड़ा झाड़ कर ऐसी जगह मत डालिये जहां बे अ-दबी हो। जूते उतार कर मस्जिद में साथ ले जाना चाहें तो गर्द वग़ैरा बाहर झाड़ लें। अगर पाउं के तल्वों में गर्द के ज़र्रात लगे हों तो अपने रुमाल वग़ैरा से पोंछ कर मस्जिद में दाख़िल हों। **मस्जिद** के वुज़ूख़ाने पर वुज़ू करने के बा'द पाउं वुज़ूख़ाने ही पर

www.dawateislami.net

अच्छी त़रह़ ख़ुश्क कर लीजिये। गीले पाउं ले कर चलने से मस्जिद का फ़र्श गन्दा और दरियां मैली और बदनुमा हो जाती हैं।

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह **अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के **मल्फ़ूज़ात शरीफ़** से बा'ज़ आदाबे मस्जिद पेश किये जा रहे हैं :

मस्जिद में दौड़ना या ज़ोर से क़दम रखना, जिस से धमक पैदा हो मन्अ़ है। वुज़ू करने के बा'द आ'ज़ाए वुज़ू से एक भी छींट पानी फ़र्शे मस्जिद पर न गिरे। (याद रखिये ! आ'ज़ाए वुज़ू से वुज़ू के पानी के क़त़रे फ़र्शे मस्जिद पर गिराना, ना जाइज़ है)

मस्जिद के एक द-रजे से दूसरे द-रजे के दाख़िले के वक़्त (म-षलन सेह़न में दाख़िल हों तब भी और सेह़न से अन्दरूनी ह़िस्से में जाएं जब भी) सीधा क़दम बढ़ाया जाए ह़त्ता कि अगर सफ़ बिछी हो उस पर भी सीधा क़दम रखें और जब वहां से हटें तब भी सीधा क़दम फ़र्शे मस्जिद पर रखें (या'नी आते जाते हर बिछी हुई सफ़ पर पहले सीधा क़दम रखें) या ख़त़ीब जब मिम्बर पर जाने का इरादा करे, पहले सीधा क़दम रखे और जब उतरे तो (भी) सीधा क़दम उतारे।

मस्जिद में अगर छींक आए तो कोशिश करें आहिस्ता आवाज़ निकले इसी त़रह़ खांसी। सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मस्जिद में ज़ोर की छींक को ना पसन्द फ़रमाते। इसी त़रह़ डकार को ज़ब्त़ करना चाहिये और न हो तो ह़त्तल इम्कान आवाज़ दबाई जाए अगर्चे ग़ैरे मस्जिद में हो। ख़ुसूसन मजलिस में या किसी मुअ़ज़्ज़म (या'नी बुज़ुर्ग) के सामने बे तहज़ीबी है। ह़दीष में है : "एक शख़्स ने दरबारे

www.dawateislami.net

अक़्दस صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم में डकार ली, आप صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "हम से अपनी डकार दूर रख कि क़ियामत के रोज़ सब से ज़ियादा भूका वोह होगा जो दुन्या में ज़ियादा पेट भरता है।" (شَرحُ السُّنَّة ج٧ ص٢٩٤ حديث ٢٩٤٤) और जमाही में आवाज़ कहीं भी नहीं निकालनी चाहिये, अगर्चे मस्जिद से बाहर तन्हा हो क्यूंकि येह शैत़ान का क़ह्क़हा है। जमाही जब आए ह़त्तल इम्कान मुंह बन्द रखें मुंह खोलने से शैत़ान मुंह में थूक देता है। अगर यूं न रुके तो ऊपर के दांतों से नीचे का होंट दबा लें, अगर इस त़रह़ भी न रुके तो ह़त्तल इम्कान मुंह कम खोलें और उलटा हाथ उलटी त़रफ़ से मुंह पर रख लें। चूंकि जमाही शैत़ान की त़रफ़ से है और अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام इस से मह़फ़ूज़ हैं। लिहाज़ा जमाही आए तो येह तसव्वुर करें कि "अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को जमाही नहीं आती।" اِنۡ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلّ फ़ौरन रुक जाएगी। (رَدُّالْمُحتار ج٢ ص٤١٣)

तमस्ख़ुर (मस्ख़रा पन) वैसे ही ममनूअ़ है और मस्जिद में सख़्त ना जाइज़।

मस्जिद में हंसना मन्अ़ है कि क़ब्र में तारीकी (या'नी अंधेरा) लाता है। मौक़अ़ के लिह़ाज़ से तबस्सुम में ह़रज नहीं।

मस्जिद के फ़र्श पर कोई चीज़ फेंकी न जाए बल्कि आहिस्ता से रख दी जाए। मौसिमे गरमा में लोग पंखा झलते झलते फेंक देते हैं (मस्जिद में टोपी, चादर वग़ैरा भी न फेंकें इसी त़रह़ चादर या रुमाल से

फ़र्श इस त़रह़ न झाड़ें कि आवाज़ पैदा हो) या लकड़ी, छत्री वग़ैरा रखते वक़्त दूर से छोड़ दिया करते हैं। इस की मुमा-न-अ़त है। ग़रज़ मस्जिद का एह़तिराम हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है।

मस्जिद में ह़दस (या'नी रीह़ ख़ारिज करना) मन्अ़ है ज़रूरत हो तो (जो ए'तिकाफ़ में नहीं हैं वोह) बाहर चले जाएं। लिहाज़ा **मो'तकिफ़** को चाहिये कि अय्यामे ए'तिकाफ़ में थोड़ा खाए, पेट हलका रखे कि क़ज़ाए ह़ाजत के वक़्त के सिवा किसी वक़्त इख़राजे रीह़ की ह़ाजत न हो। वोह इस के लिये बाहर न जा सकेगा (अलबत्ता इह़ात़ए मस्जिद में मौजूद बैतुल ख़ला में रीह़ ख़ारिज करने के लिये जा सकता है)।

क़िब्ला की त़रफ़ पाउं फैलाना तो हर जगह मन्अ़ है। मस्जिद में किसी त़रफ़ न फैलाए कि येह ख़िलाफ़े आदाबे दरबार है। **ह़ज़रते सिरी सक़त़ी** رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه मस्जिद में तन्हा बैठे थे, पाउं फैला लिया, गोशए मस्जिद से हातिफ़ ने आवाज़ दी : "क्या ! बादशाहों के ह़ुज़ूर में यूं ही बैठते हैं?" मअ़न (या'नी फ़ौरन) पाउं समेटे और ऐसे समेटे कि वक़्ते इन्तिक़ाल ही फैले। (छोटे बच्चों को भी प्यार करते, उठाते, लिटाते वक़्त एह़तियात़ करें कि उन के पाउं क़िब्ले की त़रफ़ न हों और मुताते (पोटी करवाते) वक़्त भी ज़रूरी है कि उस का रुख़ क़िब्ले की त़रफ़ न हो)

इस्ति'माल शुदा जूता मस्जिद में पहन कर जाना गुस्ताख़ी व बे अ-दबी है। (मुलख़्ख़सन अज़ अल मलफ़ूज़ मा'रूफ़ बिह "मलफ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत" ह़िस्सए दुवुम, स. 317 ता 324)

www.dawateislami.net

म-दनी क़ाफ़िले से मु-तअ़ल्लिक़ चन्द ज़रूरी सुवाल जवाब

*(अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه की किताब चन्दे के बारे में सुवाल जवाब का एक हिस्सा)*

ह़लाल व ह़राम के मसाइल का सीखना फ़र्ज़ है

रह़मते आ़लम, **नूरे मुजस्सम**, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "जो कोई **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के फ़राइज़ के **मु-तअ़ल्लिक़** एक या दो या तीन या चार या पांच कलिमात सीखे और उसे अच्छी त़रह़ याद कर ले और फिर लोगों को सिखाए तो वोह **जन्नत** में दाख़िल होगा।" (اَلتَّرغِيب وَالتَّرهِيب،ج۱،ص٥٤،حديث:(۱۲۰)۔۲۰)

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "हर शख़्स पर उस की ह़ालते मौजूदा के मस्अले सीखना फ़र्ज़े ऐन है और इन्हीं में से मसाइले ह़लाल व ह़राम कि हर फ़र्दे बशर इन का मोह़ताज है।" (तफ़्सीली मा'लूमात के लिये फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द, 23 स. 623 ता 630 का मुत़ालआ़ फ़रमाइये)

क़ाफ़िले वालों का मद्रसे के मत़बख़ से खाना पकाना

सुवाल : अगर जामिअ़तुल मदीना से मुल्ह़िक़ा मस्जिद में **म-दनी क़ाफ़िला** क़ियाम करे और शु-रकाए क़ाफ़िला जामिअ़तुल मदीना के मत़बख़ (या'नी बावर्ची ख़ाने) में अपना खाना पका लें तो जाइज़ है या नहीं ?

जवाब : जाइज़ नहीं। क्यूंकि गेस का बिल, माचिस, बरतन वग़ैरा सब पर **चन्दे** की रक़म सर्फ़ की जाती है। बा'ज़ अवक़ात ऐसा भी होता होगा कि लोग जामिअ़तुल मदीना के लिये बरतन वग़ैरा **वक़्फ़** कर देते होंगे।

www.dawateislami.net

ऐसी सूरत में भी बाहर वालों को इस्ति'माल की शरअ़न इजाज़त नहीं हो सकती। **म-दनी क़ाफ़िले** वालों के लिये ज़रूरी है कि अपने चूल्हे बरतन वग़ैरा की तरकीब रखें, **नमक** भी कम पड़ने की सूरत में मद्रसे से न लें। येह भी ज़ेह्न में रहे कि यूं कह कर भी नहीं ले सकते कि चलो अभी ले लेते हैं, पैसे दे देंगे या जितना लिया है उस से ज़ियादा दे देंगे। ज़िमनन अ़र्ज़ है कि येह एह़तियात़ हर जगह लाज़िमी है कि **फ़िनाए मस्जिद** बल्कि ख़ारिजे मस्जिद में भी ऐसी जगह पकाएं जहां से मस्जिद के अन्दर धूआं या बदबू वग़ैरा दाख़िल न हो। खाना खाने या धोने पकाने वग़ैरा में वहां की दरी या फ़र्श वग़ैरा बिलकुल आलूदा न हो इस का ख़याल रखना ज़रूरी है।

क़ाफ़िले वालों का फ़िनाए मस्जिद में खाना पकाना

सुवाल : क्या म-दनी क़ाफ़िले वालों का **फ़िनाए मस्जिद** में खाना पकाना जाइज़ है ?

जवाब : मस्जिद को बदबूदार चीज़ों से बचाना **वाजिब** है अगर फ़िनाए मस्जिद में खाना पकाने के बा वुजूद मस्जिद को (म-षलन माचिस की तीली जलने पर उड़ने वाली बदबू, कच्चे गोश्त, कच्चे लहसन व पियाज़ वग़ैरा की) **बदबू** से बचाया जा सकता हो तो जाइज़ है। अलबत्ता ऊपर दिये गए जवाब में मज़्कूरा एह़तियातें ज़रूर मलहूज़ रहें।

क्या म-दनी क़ाफ़िले वाले जामिअ़तुल मदीना का खाना खा सकते हैं ?

सुवाल : म-दनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िर **दा'वते इस्लामी** के जामिअ़तुल मदीना या किसी भी मद्रसे के त़-लबा का खाना खा सकते हैं या नहीं ?

जवाब : नहीं खा सकते।

www.dawateislami.net

मद्रसे के कम्बल दूसरा कोई इस्ति'माल कर सकता है या नहीं ?

सुवाल : मस्जिद में **म-दनी क़ाफ़िला** आ कर ठहरे तो सर्दियों की सूरत में जामिअ़तुल मदीना के त़-लबा के लिये मिले हुए कम्बल वग़ैरा म-दनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िर इस्ति'माल कर सकते हैं या नहीं ?

जवाब : त़-लबा को दिये गए कम्बल त़-लबा के इ़लावा असातिज़ा, अ़मला और मेहमान इस्ति'माल कर सकते हैं। इन के सिवा म-दनी क़ाफ़िले वाले या आ़म मुसलमान इस्ति'माल नहीं कर सकते। हां देने वाले ने देने से क़ब्ल सराह़त कर दी हो या'नी वाज़ेह़ अल्फ़ाज़ में कह दिया हो कि म-दनी क़ाफ़िले वाले बल्कि हर मुसलमान को इस्ति'माल करने का इख़्तियार है तो कर सकते हैं।

म-दनी क़ाफ़िले के अख़राजात के बारे में सुवाल जवाब

सुवाल : सात इस्लामी भाई दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के तीन रोज़ा **म-दनी क़ाफ़िले** के मुसाफ़िर बने सब ने अख़राजात के लिये फ़ी कस **92** रुपै जम्अ़ करवाए मगर एक ने **63** रुपै पेश किये और सब मिलजुल कर यक्सां त़ौर पर खाना वग़ैरा खाते रहे, इस सूरत में कोई मस्अला तो नहीं ?

जवाब : अगर मिलजुल कर ख़र्च करना हो तो येह ज़रूरी है कि सब से **यक्सां रक़म** वुसूल की जाए ऐसा न हो कि बा'ज़ से कम ली जाए और खाना, पीना और दीगर सहूलियात बराबर बराबर दी जाएं कि इस सूरत में कम रक़म जम्अ़ करवाने वाले ज़ियादा देने वालों के ह़िस्से में बिला इजाज़ते शरई शामिल हो कर गुनाहगार होंगे। **नबिय्ये अकरम** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "एक मुसलमान का ख़ून, माल और इ़ज़्ज़त दूसरे मुसलमान पर ह़राम है।"

(صَحِیح مُسلِم ص۱۳۸۶۔۱۳۸۷حدیث۲۵٦٤)

www.dawateislami.net

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीषे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी कोई मुसलमान किसी मुसलमान का माल बिग़ैर उस की इजाज़त न ले, किसी की आबरू रेज़ी न करे, किसी मुसलमान को नाह़क़ और ज़ुल्मन क़त्ल न करे कि येह सब सख़्त जुर्म हैं।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 553)

क़ाफ़िले में सब यक्सां रक़म जम्अ़ करवाएं

म-दनी क़ाफ़िले में हर एक यक्सां रक़म जम्अ़ करवाए अगर येह मुम्किन न हो तो जिस के पास कम रक़म हो कोई इस्लामी भाई उस की कमी पूरी कर दे अगर येह न हो सके तो **अमीरे क़ाफ़िला** फक़त़ मुबहम (या'नी ग़ैर वाज़ेह़) सा ए'लान न करे, बल्कि सब से फ़र्दन फ़र्दन सरा-ह़तन (या'नी एक एक से साफ़ लफ़्ज़ों में) इजाज़त ले। हां कम रक़म देने वाले की निशान देही कर के उस को शरमिन्दा न किया जाए। म-षलन **अमीरे क़ाफ़िला** एक एक से कहे : म-षलन हम ने सब से फ़ी कस 92 रुपै लिये हैं मगर एक इस्लामी भाई ऐसे हैं जिन्हों ने 63 रुपै दिये हैं, क्या आप की त़रफ़ से इजाज़त है कि वोह भी खाने पीने वग़ैरा मुआ़मलात में बराबर के शरीक रहें ? जो जो इजाज़त देंगे सिर्फ़ उन ही की त़रफ़ से इजाज़त मानी जाएगी। बिलफ़र्ज़ किसी ने इजाज़त न दी तो उस का ह़िसाब अलग रखना ज़रूरी है।

रक़म यक्सां हो मगर ख़ूराक सब की यक्सां नहीं होती......?

सुवाल : येह तो बड़ा मस्अला हो गया ! अगर सब ने बराबर बराबर रक़म जम्अ़ करवाई है फिर भी किस की ख़ूराक कम होती है और किसी की ज़ियादा, इस का भी ह़ल बता दीजिये।

www.dawateislami.net

जवाब : येह मस्अला और है, ऐसी सूरत में कम ज़ियादा खाने में कोई ह़रज नहीं ।

चुनान्चे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ **बहारे शरीअ़त** जिल्द सिवुम हिस्सा 16 **सफ़ह़ा** 381 पर **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "**बहुत** से लोगों ने चन्दा कर के खाने की चीज़ तय्यार की और सब मिल कर उसे खाएंगे, चन्दा सब ने बराबर दिया है और खाना कोई कम खाएगा कोई ज़ियादा इस में ह़रज नहीं । इसी त़रह़ मुसाफ़िरों ने अपने तोशे और खाने की चीज़ें एक साथ मिल कर खाईं इस में भी ह़रज नहीं । अगर्चे कोई कम खाएगा कोई ज़ियादा या बा'ज़ की चीज़ें अच्छी हैं और बा'ज़ की वैसी नहीं ।"

(فتاوی ھندیة ،ج۵،ص ۳۴۱۔۳۴۲)

म-दनी क़ाफ़िला और मेहमानों की ख़ैर ख़्वाही

सुवाल : दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र के दौरान अकषर बा'ज़ मक़ामी इस्लामी भाइयों या राहगीरों वग़ैरा को भी खाने में शामिल कर लिया जाता है इस की क्या सूरत होनी चाहिये ?

जवाब : अमीरे क़ाफ़िला पहले दिन इबतिदा में ही एक एक से इस की भी इजाज़त ले ले । अगर एक फ़र्द ने भी इजाज़त न दी तो उस का ह़िसाब अलग रखना ज़रूरी हो जाएगा ।

इख़्तितामे क़ाफ़िला पर बची हुई रक़म का मसरफ़ क्या ?

सुवाल : म-दनी क़ाफ़िले के इख़्तिताम पर अगर मुश्तरिका रक़म बच जाए तो उस के क्या मसारिफ़ हैं ?

जवाब : अमीरे क़ाफ़िला रोज़ का रोज़ ह़िसाब लिख लिया करे सिर्फ़

www.dawateislami.net

अपनी याद दाश्त पर ए'तिमाद करने में ग़-लति़यों का काफ़ी इमकान है। **वाजिब है कि पाई पाई का हि़साब कर के हर एक को उस के हि़स्से की रक़म लौटा दी जाए।** हां जो मरज़ी से अपने हि़स्से की रक़म किसी कारे ख़ैर में देना चाहे तो दे सकता है। बाहम मश्वरे से म-षलन येह भी तै़ किया जा सकता है कि हम बची हुई रक़म इसी मस्जिद के चन्दे में पेश कर देते हैं।

दूसरे के ख़र्च पर सफ़र किया, रक़म बच गई, क्या करे ?

सुवाल : अगर किसी ने दूसरे इस्लामी भाई की रक़म से **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र किया उस में से कुछ रक़म बच गई तो क्या अपनी मरज़ी से उस को किसी कारे ख़ैर में ख़र्च कर सकता है ?

जवाब : नहीं कर सकता। वोह तो उस रक़म में से दूसरों को खिला भी नहीं सकता। न **म-दनी क़ाफ़िले** के लवाज़िमात से हट कर इस में से कुछ ख़र्च कर सकता है। जो कुछ रक़म बच गई वोह देने वाले को लौटानी होगी वरना गुनहगार होगा। इस की सूरत येही है कि अख़राजात देने वाले से साफ़ साफ़ लफ़्ज़ों में हर त़रह़ की इजाज़त ले ली जाए। म-षलन उस से अ़र्ज़ की जाए कि आप की रक़म में से हो सकता है कि दीगर इस्लामी भाइयों को भी खाना खिलाया जाए, इस में से नए इस्लामी भाइयों को तोह़फ़े भी दिये जा सकते हैं बच जाने की सूरत में **दा'वते इस्लामी** के चन्दे में भी शामिल कर सकते हैं। लिहाज़ा बराए करम ! हर नेक और जाइज़ काम में ख़र्च करने की **कुल्ली इजाज़त** इनायत फ़रमा दीजिये। **म-दनी क़ाफ़िले** में राहे ख़ुदा में पल्ले से

www.dawateislami.net

ख़र्च करने वाले के लिये षवाब भी ज़ियादा और मसाइल भी कम। ख़र्च में मियाना रवी से काम लीजिय और दोनों जहां की ब–रकतें लूटिये।

आधी ज़िन्दगी, आधी अ़क्ल और आधा इ़ल्म !

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا रिवायत करते हैं कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत, पैकरे जूदो सख़ावत, सरापा रह़मत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : (1) ख़र्च करने में मियाना रवी आधी ज़िन्दगी है और (2) लोगों से **मह़ब्बत** करना आधी अ़क्ल है और (3) अच्छा सुवाल आधा इ़ल्म है। (شُعَبُ الْاِیْمَان ج٥ ص٢٥٤ ـ ٢٥٥ حدیث ٦٥٦٨)

इस ह़दीषे मुबारक के तीनों ह़िस्सों की जुदा जुदा शर्ह़ करते हुए **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : سُبْحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ अ़जीब फ़रमाने आ़ली है ! (1) ख़ुशह़ाली का दारो मदार दो चीज़ों पर है : कमाना, ख़र्च करना मगर इन दोनों में ख़र्च करना बहुत ही कमाल है, कमाना सब जानते हैं, ख़र्च करना कोई कोई जानता है। जिसे ख़र्च करने का सलीक़ा आ गया वोह اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ हमेशा ख़ुश रहेगा। (2) अ़क्ल के सारे काम एक त़रफ़ हैं और लोगों से **मह़ब्बत** कर के उन्हें अपना बना लेना एक त़रफ़, लोगों की **मह़ब्बत** से दीनी दुन्यावी हज़ारों काम निकलते हैं, लोगों के दिलों में अपनी **मह़ब्बत** पैदा कर लो फिर (नेकी की दा'वत दे कर) उन्हें नमाज़ी, ह़ाजी, ग़ाज़ी (जो चाहो) बना दो। मगर ख़याल रहे कि लोगों की **मह़ब्बत** ह़ासिल करने के लिये **अल्लाह व रसूल** (عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم) को नाराज़ न कर लो बल्कि लोगों से

महब्बत **अल्लाह** **व रसूल** (عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم) की रिज़ा के लिये होनी चाहिये। (3) इल्म व ता'लीम में दो चीज़ें होती हैं, शागिर्द का सुवाल उस्ताद का जवाब, इन दोनों से मिल कर इल्म की तकमील होती है। अगर शागिर्द सुवाल अच्छे करेगा जवाब भी अच्छे पाएगा। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 634, 635)

ग़रीबों के लिये रक़म मिली, मालदारों पर ख़र्च कर दी, अब क्या करे ?

सुवाल : अगर किसी ने येह कह कर दा'वते इस्लामी के किसी अ़लाक़े के **क़ाफ़िला ज़िम्मादार** को कुछ रक़म दी कि ग़रीब इस्लामी भाइयों को **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र करवा देना। अब ज़िम्मेदार ने ग़नी (या'नी मालदार) नए इस्लामी भाइयों को इस जज़्बे के तहत उस रक़म से सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र करवा दिया ताकि वोह **म-दनी माह़ोल** से क़रीब हो जाएं। ऐसी सूरत में क्या हुक्मे शरई है ?

जवाब : ऐसा करने वाला "**ज़िम्मेदार**" दर ह़क़ीक़त "**ग़ैर ज़िम्मेदार**" है, और ऐसी ग़-लत़ी के सबब गुनहगार है, उसे **तावान** भी देना होगा और तौबा भी वाजिब। हां अगर वोह रक़म देने वाला चाहे तो मुआ़फ़ कर सकता है अगर वोह मुआ़फ़ न करे तो जितनी रक़म ग़लत़ इस्ति'माल की उतनी उस देने वाले **ज़िम्मेदार** को पल्ले से देनी होगी या पल्ले से दी जाने वाली रक़म नए सिरे से ख़र्च करने की इजाज़त लेनी होगी। जब भी कोई ऐसे मौक़अ़ पर ग़रीबों की क़ैद लगा कर चन्दा पेश करे तो चन्दा क़बूल करने से पेशतर उस को वाज़ेह़ तौर पर

www.dawateislami.net

इन लफ़्ज़ों में कह देना मुफ़ीद है कि **"आप "ग़रीबों" की क़ैद हटा कर हर नेक और जाइज़ काम में ख़र्च करने के कुल्ली इख़्तियारात दे दीजिये कि इस रक़म से ग़रीब सफ़र करे या मालदार, इस से किसी को पूरे अख़राजात देंगे तो किसी की ह़स्बे ज़रूरत कमी पूरी करेंगे, नीज़ इस से मस्जिद में आए हुए मेहमानों की ख़ैर ख़्वाही भी की जाएगी वग़ैरा।"** (यहां भी येह बात ज़ेह्न में रखिये कि चन्दा पेश करने वाला अगर ख़ुद उस रक़म का मालिक है तब तो उस का मज़्कूरा अलफ़ाज़ सुन कर हां कहना कारआमद होगा और अगर मालिक नहीं म–षलन रक़म भिजवाने वाले का बेटा, भाई या मुलाज़िम वग़ैरा है तो उस चन्दा लाने वाले "वकील" का हां कहना फ़ुज़ूल होगा। लिहाज़ा अस्ल मालिक से कुल्ली इख़्तियारात लेने होंगे। हां अगर पहले ही से मालिक ने येह सारी इजाज़तें दे कर वकील को भेजा है तो अब वकील का इजाज़त देना मान लिया जाएगा)

म–दनी क़ाफ़िले के लिये मिली हुई रक़म दूसरे दीनी कामों में......?

सुवाल : म–दनी क़ाफ़िले सफ़र करवाने के मद में मिला हुवा चन्दा **दा'वते इस्लामी** के दीगर **म–दनी कामों** में ख़र्च किया जा सकता है या नहीं ?

जवाब : नहीं किया जा सकता। उस को अलग रखना होगा, अगर दीगर **म–दनी कामों** में ख़र्च कर दिया तो **तावान व तौबा** की तरकीब बनानी होगी। सहूलत इसी में है कि किसी एक मद में **चन्दा** लेने के बजाए देने वाले की ख़िदमत में हमेशा येह मोह़तात़ जुम्ला ज़िक्र कर देने की आ़दत बना ली जाए : **बराए करम ! आप हमें हर त़रह़ के नेक और जाइज़ काम में ख़र्च करने की इजाज़त इनायत फ़रमा दीजिये।**

www.dawateislami.net

मालदारों को चन्दे से इजतिमाअ़ में ले जाना कैसा ?

सुवाल : किसी इस्लामी भाई ने **ग़रीब** इस्लामी भाइयों को **सालाना बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे इजतिमाअ़** (सह़राए मदीना मदीनतुल औलिया मुलतान शरीफ़) में ले जाने के लिये रक़म पेश की मगर "वकील" उस रक़म से अपने साह़िबे हैसि़य्यत दोस्तों को ले गया। अब नादिम है, क्या करे ?

जवाब : चन्दा जिस मद में दिया जाए उसी में इस्ति'माल करना **वाजिब** है। "वकील" ने ख़ियानत की। इस का **तावान** अदा करे या'नी जितनी रक़म मालदारों पर ख़र्च की उतनी पल्ले से **चन्दा दिहन्दा** (या'नी चन्दा देने वाले) को पेश कर दे और तौबा भी करे। येह **उसूल** हमेशा याद रखिये कि **चन्दा** देने वाला शरीअ़त के दाएरे में रह कर जैसा कहे वैसे ही करना होता है। अब जब कि उस ने **ग़रीबों** की क़ैद लगा दी तो **ग़रीबों** ही को देना होगा अगर वोह सराह़तन (या'नी खुले लफ़्ज़ों में) कह दे, "मेरी रक़म से फ़क़त़ **किराया** अदा करना" तो उस की रक़म से सिर्फ़ **किराया** ही अदा किया जाएगा, खा पी नहीं सकते। अगर उस ने कह दिया : "फ़ुलां फ़ुलां को इस रक़म से **सालाना इजतिमाअ़** में ले जाओ" तो अब उन्हीं को ले जाना होगा किसी और को नहीं ले जा सकते, अगर वोह न गए या किसी त़रह़ रक़म बच गई तो वोह रक़म वापस लौटानी होगी, मख़्सूस अ़लाक़े वालों को ले जाने की सराह़त कर दी तो दूसरे अ़लाक़े वाले को नहीं ले जा सकते। **अल ग़रज़ चन्दे** में अपनी त़रफ़ से न किसी त़रह़ का तसर्रुफ़ करे न ही बिला इजाज़ते शरई उस का एक लुक़्मा भी खुद खाए न किसी को खिलाए वरना आख़िरत में पकड़ होगी।

www.dawateislami.net

बाब नम्बर 2

म-दनी क़ाफ़िले का जदवल

इस बाब में :

म-दनी क़ाफ़िले के **जदवल** पर अ़मल की **ब-रकतें, म-दनी क़ाफ़िले** की तरबिय्यत के **बयानात, ज़ादे म-दनी क़ाफ़िला, म-दनी क़ाफ़िले** का **मुख़्तसर** और **तफ़्सीली जदवल, इनफ़िरादी कोशिश** के **म-दनी फूल, इनफ़िरादी कोशिश** के लिये **तरग़ीबात, म-दनी क़ाफ़िले** के **मुख़्तलिफ़ तरबिय्यती ह़ल्क़ों** के बारे में **अहम मा'लूमात** नीज़ **अ़लाक़ाई दौरा** बराए **नेकी की दा'वत** और **सदाए मदीना** का **त़रीक़ा**, इन के इ़लावा **मज़ीद उ़न्वानात** भी शामिल हैं ।

बाब 2 : म-दनी क़ाफ़िले का जदवल

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले "101 म-दनी फूल" में नक़्ल फ़रमाते हैं कि **रसूले** अकरम, **नूरे मुजस्सम**, रह़मते आ़लम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : "क़ियामत के रोज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़र्श के सिवा कोई साया नहीं होगा, तीन शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़र्श के साए में होंगे।" अ़र्ज़ की गई : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह कौन लोग होंगे ? इर्शाद फ़रमाया : (1) "वोह शख़्स जो मेरे उम्मती की परेशानी दूर करे (2) मेरी **सुन्नत** को ज़िन्दा करने वाला (3) मुझ पर कषरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाला।"

(البدور السّافرة فی امور الآ خرة للسیوطی ص ١٣١ حدیث ٣٦٦)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

म-दनी क़ाफ़िले के जदवल पर अ़मल की ब-रकतें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब हम जदवल पर अ़मल करेंगे तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ हमें बहुत से फ़ाएदे और ब-रकतें ह़ासिल होंगी। **म-षलन**

(1) जदवल पर अ़मल की ब-रकत से तमाम काम मुनासिब वक़्त में हो सकेंगे, जिस की वजह से किसी का वक़्त ज़ाएअ़ नहीं होगा।

www.dawateislami.net

(2) शु-रकाए क़ाफ़िला को ख़ूब सीखने का मौक़अ़ मिलेगा ।

(3) सफ़र करने वालों की तरबिय्यत पर मुकम्मल तवज्जोह हो सकेगी ।

(4) जदवल पर अ़मल का ज़ेह्न बन गया तो इत़ाअ़त करने का ज़ेह्न भी बन जाएगा ।

(5) जदवल पर अ़मल की ब-रकत से कम अज़् कम चार क़िस्म के इस्लामी भाइयों को म-दनी क़ाफ़िले की ब-रकात नसीब होंगी : (1) म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करने वालों को...... (2) दौराने सफ़र म-दनी क़ाफ़िले के साथ सफ़र में शामिल होने वालों को...... (3) जहां म-दनी क़ाफ़िला सफ़र कर के पहुंचेगा वहां रहने वालों को...... (4) वापस आने के बा'द शु-रकाए क़ाफ़िला के अपने अ़लाक़े वालों को......

(6) शु-रकाए क़ाफ़िला का दोबारा सफ़र के लिये ब आसानी ज़ेह्न बन जाएगा ।

(7) इस्लामी भाई दर्सो बयान सीखने की सआ़दत ह़ासिल कर लेंगे ।

(8) मक़ामे तरबिय्यत से हाथों हाथ म-दनी क़ाफ़िले तय्यार हो सकेंगे ।

(9) इस्लामी भाई खाना बनाना भी सीख जाएंगे । जिस की वजह से म-दनी क़ाफ़िले के अख़्राजात में कमी वाक़ेअ़ होगी ।

(10) इस्लामी भाइयों में आपस में मह़ब्बत बढ़ जाएगी ।

(11) इमाम साहि़ब व मस्जिद कमेटी के अराकीन भी हमारे हुस्ने अ़मल से मुतअष्षिर होंगे ।

(12) सुस्ती का शिकार हो जाने वाले वहां के मक़ामी इस्लामी भाइयों को म-दनी काम के लिये मु-तह़र्रिक करने में आसानी रहेगी ।

www.dawateislami.net

(13) म-दनी क़ाफ़िले मुस्तह़्कम व मुनज़्ज़म हो कर मुस्तक़िल सफ़र करेंगे।

(14) म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल करने में इस्तिक़ामत नसीब होगी।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आप ने मुला-ह़ज़ा फ़रमाया कि "जदवल" पर अ़मल करने में कितने फ़वाइद पोशीदा हैं। लिहाज़ा ! हमें चाहिये कि समझदारी का षुबूत देते हुए ख़ुद भी म-दनी क़ाफ़िले में जदवल के मुत़ाबिक़ ही सफ़र करें और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दें। बिल ख़ुसूस ! **अमीरे क़ाफ़िला** अगर अपना येह ज़ेह्न बना ले कि हमें जदवल की पाबन्दी करनी है तो शु-रकाए क़ाफ़िला भी पाबन्दी करने वाले बन जाएंगे, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

याद रखिये कि "**दूसरों को तरग़ीब देने के लिये सरापा तरग़ीब बनना पड़ता है।**"

म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की इब्तिदा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! म-दनी क़ाफ़िले के जदवल पर अ़मल में आसानी के लिये हमें म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र के आग़ाज़ में "तरबिय्यत" ह़ासिल कर लेनी चाहिये। क्यूंकि जो इस्लामी भाई तरबिय्यत ह़ासिल कर के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करते हैं वोह म-दनी क़ाफ़िले के फ़वाइदो ष-मरात बेहतर अन्दाज़ से ह़ासिल कर लेते हैं और अपने वक़्त को म-दनी मर्कज़ के त़रीक़ए कार के मुत़ाबिक़ गुज़ारने में भी काम्याब हो जाते हैं। इस के बर अ़क्स जो म-दनी क़ाफ़िले बिग़ैर तरबिय्यत के सफ़र करते हैं उन्हें मुख़्तलिफ़ मसाइल का सामना हो सकता है। इस सिलिसले में ज़िम्मादारान को चाहिये कि हमेशा तरबिय्यत के बा'द ही म-दनी क़ाफ़िले रवाना करें। तरबिय्यत करने वालों की सहूलत के लिये 2 तरबिय्यती बयान पेशे ख़िदमत हैं।

www.dawateislami.net

तरबिय्यती बयानात
बराए रवानगिये म-दनी क़ाफ़िला

पहला तरबिय्यती बयान :

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल क़ौलुल बदीअ़ में है : एक शख़्स ने ख़्वाब में ख़ौफ़नाक बला देखी, घबरा कर पूछा : तू कौन है ? बला ने जवाब दिया : मैं तेरे बुरे आ'माल हूं। पूछा : तुझ से नजात की क्या सूरत है ? जवाब मिला : दुरूद शरीफ़ की कषरत। (القول البديع ص۱۱۳)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के आ़जिज़ बन्दे और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के अदना गुलाम हैं। यक़ीनन ज़िन्दगी बेह़द मुख़्तसर है। हम लम्ह़ा ब लम्ह़ा मौत के क़रीब होते जा रहे हैं। अ़न क़रीब हमें अंधेरी क़ब्र में उतार दिया जाएगा। नजात तमाम जहानों के पालने वाले **अल्लाह रब्बुल आ़-लमीन** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त और मुअमिनीन पर रह़मो करम फ़रमाने वाले **रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम** صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों की इत्तेबाअ़ में है।

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने हमें अपनी ज़िन्दगी **अल्लाह रब्बुल आ़-लमीन** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त और **रसूले करीम,**

www.dawateislami.net

रऊफुर्रहीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों की इत्तिबाअ़ में गुज़ारने के लिये एक अ़ज़ीम **म-दनी मक़सद** अ़ता फ़रमाया है कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करना है और येही वोह अ़ज़ीम मक़सद है कि इख़्लास के साथ इस पर अ़मल कर के हम **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के नेक बन्दे बन सकते हैं और दुन्या व आख़िरत में काम्याबी पा सकते हैं।

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने तह़रीरी बयान **"नेक बनने का नुस्ख़ा"** में इर्शाद फ़रमाते हैं :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क्या आप वाक़ेई नेक बनना चाहते हैं ? तो फिर इस के लिये आप को थोड़ी बहुत कोशिश करनी पड़ेगी । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस्लामी भाइयों के लिये 72, इस्लामी बहनों के लिये 63, त़लबए इल्मे दीन के लिये 92, दीनी त़ालिबात के लिये 83, मदनी मुन्नों और मुन्नियों के लिये 40, जब कि ख़ुसूसी इस्लामी भाइयों (या'नी गूंगे बहरों) के लिये 27, हैं ।(1) बेशुमार इस्लामी भाई, इस्लामी बहनें और त़लबा म-दनी इन्आ़मात के मुत़ाबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना सोने से क़ब्ल **"फ़िक्रे मदनी करते हुए"** या'नी अपने आ'माल का जाइज़ा ले कर **मदनी इन्आ़मात** के जेबी साइज़ रिसाले में दिये गए ख़ाने पुर करते हैं। येह म-दनी इन्आ़मात सुवालात की सूरत में हैं, मेरी दुआ़ है कि जो कोई इख़्लास के साथ इन पर अ़मल करे परवर दगार عَزَّ وَجَلَّ उस को जन्नतुल फ़िरदौस में अपने प्यारे मह़बूब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस अ़त़ा फ़रमाए । اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

---

(1).....इन के इलावा जेल के क़ैदियों के लिये 52, हुज्जाजे किराम के लिये 19, और मो'तमिरीन के लिये 19, हैं।

www.dawateislami.net

आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मज़ीद इर्शाद फ़रमाते हैं : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! हो सकता है आप में से किसी को मेरे **म-दनी इन्आमात** मुश्किल मा'लूम हों मगर हिम्मत न हारें। कश्फुल ख़िफ़ा में है : اَفْضَلُ الْعِبَادَةِ اَحْمَزُهَا या'नी अफ़्ज़ल तरीन इबादत वोह है जिस में ज़हमत ज़ियादा हो। (كشف الخفاء باب افضل العبادات،الحديث٣٥٩،ج١،ص١٤١)

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم फ़रमाते हैं : "दुन्या में जो अ़मल जितना दुश्वार होगा। बरोज़े क़ियामत मीज़ाने अ़मल में वोह उतना ही ज़ियादा वज़्नदार होगा।" (تذكرة الاولياء، ج١،ص٩٥)

जब आप अ़मल शुरूअ़ कर देंगे तो वोह आप के लिये اِنْ شَآءَاللّٰهعَزَّوَجَلَّ आसान हो जाएगा। ग़ालिबन आप को तजरिबा होगा कि सख़्त सर्दी के वक़्त वुज़ू के लिये बैठते हैं तो शुरूअ़ में सर्दी से दांत बजते हैं फिर जब हिम्मत कर के वुज़ू शुरूअ़ कर देते हैं तो इब्तिदाअन ठन्डक ज़ियादा मह़सूस होती है और फिर ब तदरीज कम हो जाती है। हर मुश्किल काम का येही उसूल है। म-षलन किसी को कोई मोहलिक बीमारी लग जाए तो वोह बेचैन हो जाता है फिर रफ़्ता रफ़्ता जब आ़दी हो जाता है तो क़ुव्वते बरदाश्त भी पैदा हो जाती है एक इस्लामी भाई इरकुन्निसा के मरज़ में मुब्तला हो गए। येह मरज़ उ़मूमन पाउं के टख़्ने से ले कर रान के ऊपर के जोड़ तक होता है और महीनों और बा'ज़ों को बरसों तक नहीं छोड़ता। वोह तश्वीश में पड़ गए थे। मैं ने अ़र्ज़ किया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बेहतर करेगा। घबराएं नहीं जब आप आ़दी हो जाएंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰهعَزَّوَجَلَّ बरदाश्त करना आसान हो जाएगा। कुछ अ़र्से के बा'द मिले तो मेरे इस्तिफ़्सार पर बताया कि दर्द

www.dawateislami.net

तो वोही है मगर आप के कहने के मुत़ाबिक़ मैं आ़दी हो चुका हूं इस लिये काम चल जाता है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **म-दनी इन्आ़मात** तो हमें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमां बरदार बनाने और हमारी दुन्या व आख़िरत की बेहतरी के लिये हैं। यक़ीनन शैत़ान आप को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दोस्ती करने में रुकावट पर रुकावट खड़ी करेगा। आप हिम्मत न हारियेगा। शैत़ान व नफ़्स को चाहे कितना ही ना गवार गुज़रे आप को इन "**म-दनी इन्आ़मात**" पर अ़मल करना ही चाहिये।

अगर आप सब ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ात़िर **ब समीमे** क़ल्ब इन **म-दनी इन्आ़मात** के रसाइल को क़बूल फ़रमा कर इस पर अ़मल करना शुरूअ़ कर दिया तो आप जीते जी बहुत जल्द اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की ब-रकतें देख लेंगे। आप को اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ सुकूने क़ल्ब नसीब होगा, बात़िन की सफ़ाई होगी। ख़ौफ़े ख़ुदा व इ़श्क़े मुस्त़फ़ा के सोते (या'नी चश्मे) आप के क़ल्ब से फूटेंगे।

اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की ब-रकत से आप के अ़लाक़े में भी दा'वते इस्लामी का म-दनी काम ह़ैरत अंगेज़ ह़द तक बढ़ जाएगा। चूंकि **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के ह़ुसूल का ज़रीआ़ है। लिहाज़ा शैत़ान आप को बहुत सुस्ती दिलाएगा। त़रह़ त़रह़ के ह़ीले बहाने समझाएगा। आप का दिल नहीं लग पाएगा। मगर आप हिम्मत मत हारियेगा। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दिल भी लग ही जाएगा।

ऐ रज़ा हर काम का इक वक़्त है

दिल को भी आराम हो ही जाएगा

www.dawateislami.net

शैत़ान से धोका न खाना

"**कीमियाए सआदत**" में **हुज्जतुल इस्लाम** इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़षमान मग़रिबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی से उन के मुरीद ने अ़र्ज़ किया, कभी कभी ऐसा होता है कि दिल की रग़बत के बिग़ैर भी मेरी ज़बान से **ज़िक्रुल्लाह** जारी रहता है । उन्हों ने फ़रमाया : "येह भी तो मक़ामे शुक्र है कि तुम्हारे एक उ़ज़्व (या'नी ज़बान) को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने ज़िक्र की तौफ़ीक़ बख़्शी है ।" जिस का दिल **ज़िक्रुल्लाह** में नहीं लगता उस को बा'ज़ अवक़ात शैत़ान वस्वसा डालता है कि जब तेरा दिल **ज़िक्रुल्लाह** में नहीं लगता तो ख़ामोश हो जा कि ऐसा ज़िक्र करना बे अ-दबी है ।

इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : "इस वस्वसे का जवाब देने वाले तीन क़िस्म के लोग हैं । **एक** क़िस्म उन लोगों की है जो ऐसे मौक़अ़ पर शैत़ान से कहते हैं, ख़ूब तवज्जोह दिलाई अब मैं तुझे ज़िच करने के लिये दिल को भी ह़ाज़िर करता हूं इस त़रह़ शैत़ान के ज़ख़्मों पर नमक पाशी हो जाती है । **दूसरे** वोह अह़मक़ हैं जो शैत़ान से कहते हैं, तूने ठीक कहा जब दिल ही ह़ाज़िर नहीं तो ज़बान हिलाए जाने से क्या फ़ाएदा ! और वोह **ज़िक्रुल्लाह** से ख़ामोश हो जाते हैं । येह नादान समझते हैं कि हम ने अ़क़्ल मन्दी का काम किया ह़ालांकि उन्हों ने शैत़ान को अपना हमदर्द समझ कर धोका खा लिया है । **तीसरी** क़िस्म के लोग वोह हैं जो कहते हैं अगर्चे हम दिल को ह़ाज़िर नहीं कर सके मगर फिर भी ज़बान को **ज़िक्रुल्लाह** में मसरूफ़ रखना ख़ामोश रहने से बेहतर है । अगर्चे दिल लगा कर **ज़िक्रुल्लाह** करना इस त़रह़ के **ज़िक्रुल्लाह** से कहीं बेहतर है ।" (کیمیائے سعادت، ج۲، ص۷۷۱)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! दिल न लगे तब भी अ़मल को जारी रखना ही हमारे लिये बेहतर है। बहर ह़ाल नेक बनने के म-दनी नुस्ख़ों पर अ़मल करते जाइये। कभी न कभी तो اِنْ شَآءَاللّٰهعَزَّوَجَلَّ मन्ज़िल पा ही लेंगे।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهعَزَّوَجَلَّ ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो एह़सान से हमें राहे ख़ुदा में सफ़र की सआ़दत ह़ासिल हो रही है। राहे ख़ुदा में सफ़र के तो क्या कहने ! इन म-दनी क़ाफ़िलों में ब आसानी म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल करने की भी सआ़दत ह़ासिल होती है।

याद रखिये ! हमें नेक बनने पर इस्तिक़ामत पाने के लिये म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र को अपना मा'मूल बनाना होगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का करोड़हा करोड़ एह़सान है कि उस ने हमें अपनी राह में सफ़र करने वाले आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों की तरबिय्यत की ख़ात़िर म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र के लिये यहां जम्अ़ होने की सआ़दत अ़त़ा फ़रमाई है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهعَزَّوَجَلَّ ! म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र बे शुमार नेकियां ह़ासिल करने और उन पर इस्तिक़ामत पाने का बेहतरीन ज़रीआ़ है बल्कि राहे ख़ुदा में सफ़र करने वाले आ़शिक़ाने रसूल की अ़-ज़मत के तो क्या कहने कि जहां ख़ुश नसीब आ़शिक़ाने रसूल पर राहे ख़ुदा में सफ़र की ब-रकत से क़दम क़दम पर **अल्लाह तआ़ला** की रह़मतों की छमाछम बरसात हो रही है वहीं अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की सुन्नत, सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की सुन्नत, और बुज़ुर्गाने दीन

www.dawateislami.net

رحمہم اللہ تعالیٰ के मुक़द्दस त़रीक़े पर चलने की भी सआ़दत ह़ासिल हो रही है ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عزوجل ! राहे ख़ुदा में सफ़र कर के इल्मे दीन ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिलता है । इल्मे दीन ह़ासिल करने के बहुत से फ़ज़ाइल हैं :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رضی اللہ تعالیٰ عنہ फ़रमाते हैं कि सरकारे मदीना صلّی اللہ تعالیٰ علیہ و الہٖ وسلّم ने फ़रमाया : "जो अपने दीन का इ़ल्म सीखने के लिये सुब्ह़ को चला या शाम को, वोह जन्नती है ।"

(کنزالعمال،کتاب العلم،الحدیث:۲۸۷۰۲،ج۱۰،ص۶۱)

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़म्र** बिन क़ैस رضی اللہ تعالیٰ عنہ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صلّی اللہ تعالیٰ علیہ و الہٖ وسلّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस के क़दम राहे ख़ुदा में ख़ाक आलूद हो जाएं **अल्लाह** عزوجل उस के पूरे जिस्म को जहन्नम पर ह़राम फ़रमा देगा ।"

(المعجم الاوسط ،من اسمہ محمد،الحدیث:۵۵۳۳،ج۴،ص۱۵۱)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की ब-रकत से न सिर्फ़ बे शुमार नेकियां ह़ासिल होती हैं बल्कि राहे ख़ुदा में सफ़र करने वाले के लिये जहन्नम से आज़ादी और जन्नत की बिशारत भी अह़ादीष में मौजूद है, लिहाज़ा पहले तो शैत़ान कोशिश करता है कि किसी को **म-दनी इन्आ़मात** पर इस्तिक़ामत पाने के लिये म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करने ही न दे फिर अगर कोई **अल्लाह** عزوجل के फ़ज़्लो करम से म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करने

www.dawateislami.net

में काम्याब हो जाए तो फिर शैत़ान इस कोशिश में लग जाता है कि किसी त़रीके़ से म-दनी क़ाफ़िले में ऐसे काम करवाए जिस की वजह से षवाब के बजाए गुनाहों का अम्बार जम्अ़ हो जाए । अगर हम **म-दनी मर्कज़** की हिदायात के मुत़ाबिक़ सफ़र करेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ शैत़ान से हि़फ़ाज़त भी रहेगी और बे शुमार नेकियां ह़ासिल करने में आसानियां भी मिलेंगी और **म-दनी इन्अ़ामात** पर अ़मल करना हमारे लिये बहुत आसान होगा ।

तरबिय्यती बयान का आख़िरी हि़स्सा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! चार म-दनी फूलों पर अ़मल करना हमारे म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की बुन्याद है जिस त़रह़ मकान के देर पा रहने का इन्ह़िसार उस की बुन्याद पर होता है इसी त़रह़ म-दनी क़ाफ़िले की काम्याबी इन चार उसूलों पर मुन्ह़सिर है ।

वोह चार म-दनी फूल येह हैं :

(1) अमीर की इत़ाअ़त (2) शैत़ान के ह़ीले और साज़िशों से बचना (3) सब्र (4) मसाजिद का अ-दबो एह़तिराम ।

(1) अमीर की इत़ाअ़त :

जब भी कोई सफ़र किया जाए तो हमें चाहिये कि किसी इस्लामी भाई को अपना अमीर मुक़र्रर कर लें जैसा कि म-दनी आक़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : “अगर तीन शख़्स सफ़र में हों तो उन्हें चाहिये कि एक को अपना अमीर बना लें ।”

(كنزالعمال، الحديث ١٧٤٩٦، ج٦، ص ٣٠٠)

नोट : मदनी इन्अ़ामात से मुतअ़ल्लिक़ मज़ीद मा'लूमात के लिये सफ़ह़ा नम्बर **709** ता **711** मुलाह़ज़ा फ़रमाइये ।

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! आशिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िले में भी किसी एक को अमीरे क़ाफ़िला बनाया जाता है ताकि क़ाफ़िले में तमाम मा'मूलात मुनज़्ज़म अन्दाज़ में पूरे किये जा सकें।

इत़ाअ़त का पहलू तक़रीबन हर जगह मौजूद है, म-षलन हर इदारे में उसूल व ज़वाबित़ होते हैं और एक सर-बराह होता है, घर का निज़ाम चलाने के लिये भी एक सर-बराह होता है, जो सर-बराह की इत़ाअ़त करता है फ़रमां बरदार कहलाता है और फ़ाएदे में रहता है। लिहाज़ा हम भी अमीरे क़ाफ़िला की इत़ाअ़त करेंगे तो बे शुमार फ़वाइदो ब-रकात ह़ासिल कर सकेंगे, जो अमीरे क़ाफ़िला की इत़ाअ़त करता है वोह काम्याब हो जाता है और अपनी मन्ज़िल पा लेता है, क्यूंकि अमीरे क़ाफ़िला रेलगाड़ी के एन्जिन की मानिन्द होता है जिस त़रह़ ट्रेन के डिब्बे एन्जिन के साथ वाबस्ता रहें उस के पीछे पीछे चलें तो मन्ज़िल पर पहुंच ही जाते हैं और जो डिब्बा पीछे न चले अ़लाह़िदा हो कर पटरी से उतर जाए वोह मन्ज़िल तक नहीं पहुंच पाता। इसी त़रह़ हम भी अगर अपने अमीर की इत़ाअ़त करते हुए सफ़र करेंगे तो अपनी मन्ज़िल पर बख़ैरो आ़फ़िय्यत पहुंचने में काम्याब हो जाएंगे, और अगर अपनी मरज़ी के मुत़ाबिक़ चलने की कोशिश की तो बहुत बड़े नुक़्सान और आज़माइशों में मुब्तला हो सकते हैं।

अमीर की इत़ाअ़त न करने वाला शैत़ान की चालों में आ कर अपने **म-दनी मक़सद** को भुला बैठता है और अपना तमाम वक़्त ग़फ़लत में गुज़ार देता है बल्कि बा'ज़ अवक़ात तो बद गुमानी जैसी बीमारी में मुब्तला हो जाता है। लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम येह ज़ेहन बनाएं कि हर ह़ाल में अमीरे क़ाफ़िला की इत़ाअ़त करेंगे। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

(2) शैत़ान के ह़ीलों से दिफ़ाअ़ की तरकीब :

प्यारे इस्लामी भाइयो ! शैत़ान जो हमारा खुला दुश्मन है, उसे येह कब गवारा है कि ख़ुश नसीब आ़शिक़ाने रसूल राहे ख़ुदा में सफ़र करने वाली अ़ज़ीम सुन्नत अदा करें और इस अ़ज़ीम मक़सद कि

"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है" को पूरा करने की कोशिश करें, इस लिये पहले तो शैत़ान की कोशिश येह होती है कि म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने ही न दे फिर अगर कोई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल से सफ़र करने में काम्याब हो जाए तो शैत़ान अपने लश्कर के साथ उस पर ह़म्ले करता रहता है और म-दनी क़ाफ़िले की वापसी तक मुसल्सल मुख़्तलिफ़ चालों, ह़ीलों और साज़िशों के ज़रीए़ म-दनी क़ाफ़िले को बरबाद करने, म-दनी क़ाफ़िले को तोड़ने की कोशिश करता रहता है म-षलन सुवारी ख़राब हो गई या लेट हो गई तो शैत़ान फ़ौरन बे सब्री करवा कर शोरो गुल करवा कर या सुवारी या ड्राइवर को बुरा कहलवा कर बहकाने की कोशिश करेगा। यूंही सफ़र की थकावट और बा'ज़ अवक़ात नींद की कमी की वजह से त़बीअ़त में चिड़चिड़ा पन, बद अख़्लाक़ी करवाने की शैत़ान पूरी कोशिश करेगा।

बा'ज़ अवक़ात खाना मिलने में देर हो गई या किसी इस्लामी भाई ने खाना अच्छा नहीं पकाया, या खाने में नमक मिर्च

www.dawateislami.net

की कमी बेशी हो गई, अब भी शैत़ान गुस्सा दिलाने की कोशिश करेगा। फिर किसी इस्लामी भाई को "**जदवल**" के उसूलों की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करवा के और दूसरों के ख़िलाफ़ भड़का कर, लड़वाने या नाराज़ी पैदा करने की कोशिश करेगा इस त़रह़ म-दनी क़ाफ़िले में नाराज़ी या बद अख़्लाक़ी की फ़ज़ा क़ाइम हो सकती है।

शैत़ान की एक और चाल वक़्त का ज़ाएअ़ करवाना भी है, इस के लिये शैत़ान येह भी सिखाता है, म-षलन खाना पकाने और खाना खाने में जान बूझ कर ज़ियादा वक़्त सर्फ़ करना, बिला ज़रूरत गुस्ल करना, कपड़े या बरतन धोने में देर लगाना, ज़रूरत की अश्या की ख़रीदारी के बहाने बाज़ारों में घूमना, रात को देर तक बातें कर के जागना और सुब्ह़ सीखने सिखाने के ह़ल्क़ों से ग़फ़लत करना येह भी शैत़ान की एक चाल है ज़ाहिर है कि जब कोई इस्लामी भाई आराम के वक़्फ़े में इधर उधर घूमेगा या लाइट जला कर कोई काम करेगा, दूसरों के साथ मिल कर बातें करेगा तो दूसरे इस्लामी भाइयों की नींद में ख़लल पड़ेगा और इस त़रह़ वोह भी सुब्ह़ ह़ल्क़ों में सुस्ती का शिकार रहेंगे।

लिहाज़ा हर इस्लामी भाई से दर्द मन्दाना इल्तिजा है कि शैत़ान की इन ख़त़रनाक चालों को भरपूर ह़िकमते अ़-मली और जज़्बे से नाकाम बनाने की कोशिश करे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम सब को शैत़ान के ह़ीलों से मह़फ़ूज़ फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(3) सब्र :

हमें राहे खुदा में सफ़र करते हुए क़दम क़दम पर सब्र के मवाक़ेअ़ आएंगे, इस लिये हमें येह निय्यत करनी होगी कि اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं राहे खुदा में आने वाली तकालीफ़ पर सब्र कर के शैत़ान को मायूस करता रहूंगा।

हमारे प्यारे मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : “मुसलमान को जो भी तकलीफ़, अज़िय्यत, अन्देशा, ग़म और मलाल पहुंचे यहां तक कि अगर उस को कांटा भी चुभ जाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन तकालीफ़ के सबब उस के गुनाह मिटा देता है।” (صحیح البخاری،کتاب المرضٰی، باب کفا رۃ المرض، الحدیث:۵٦٤٠،ج٤، ص٣)

سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! सब्र करने वाले के वारे ही न्यारे हो जाते हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से उस के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं।

राहे खुदा में आने वाली तकालीफ़ पर सब्र करना हमारे मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी सुन्नत है। ऐ काश ! हम पर भी करम हो जाए और हम भी सुन्नत पर अ़मल करने वाले बन जाएं, राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ की तमाम तर सख़्तियों पर सब्र करना सीख जाएं। हमारे मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की राह में कांटे बिछाए गए, त़ाइफ़ में पथ्थर बरसाए गए मगर फिर भी आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم लोगों को नेकी की दा'वत देते रहे।

www.dawateislami.net

जब भी कोई इस्लामी भाई किसी को नेकी की दा'वत दे और इस के सबब कोई तक्लीफ़ उठानी पड़े तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ و اٰلِهٖ وَسَلَّم की तकालीफ़ को याद कर के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करे कि उस ने इसे दीन की ख़ातिर सख़्तियां झेलने वाली सुन्नत अदा करने की सआदत अ़ता फ़रमाई। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ

(4) मसाजिद का अ-दबो एह़तिराम :

प्यारे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की ब-रकत से हमें शबो रोज़ मस्जिद में गुज़ारने की सआदत ह़ासिल होती है जो कि यक़ीनन बहुत बड़ी सआदत है।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِىَ اللّٰه تعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ و اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : "मस्जिद परहेज़ गार का घर है और जिस का घर मस्जिद हो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अपनी रह़मत, रिज़ा और पुल सिरात़ से ब ह़िफ़ाज़त गुज़ार कर अपनी रिज़ा वाले घर जन्नत की ज़मानत देता है।"

(مجمع الزوائد ، کتاب الصلاۃ ،باب لزوم المسجد،الحدیث:٢٠٢٦،ج٢،ص١٣٤)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللّٰه تعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ و اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब कोई बन्दा ज़िक्र व नमाज़ के लिये मस्जिद को ठिकाना बना लेता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से ऐसे रिज़ा का इज़्हार फ़रमाता है जैसे लोग अपने गुमशुदा शख़्स की अपने हां आमद पर ख़ुश होते हैं।"

(سنن ابن ماجه،کتاب المساجدو الجماعات،باب لزوم المساجد،الحدیث:٨٠٠،ج١،ص٤٣٨)

www.dawateislami.net

जहां मस्जिद में रहना इस क़दर अज्रो षवाब का बाइष है वहीं मस्जिद का अ-दबो एह़तिराम न करने पर सख़्त वईदें भी आई हैं :

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि सरवरे काएनात, शहनशाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : "लोगों पर एक ज़माना ऐसा आएगा कि मसाजिद में दुन्या की बातें होंगी, तुम उन के पास मत बैठो कि उन को **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से कुछ काम नहीं।" (کشف الخفاء ،الحدیث:۳۲۴۶،ج۲، ص۳۶۳)

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि "मस्जिद में हंसना क़ब्र में अंधेरा (लाता) है।"

(الجامع الصغیر، الحدیث: ۵۲۳۱ ج ۱،ص۳۲۲)

शैत़ान की पूरी कोशिश येह होगी कि मस्जिद में दुन्यावी बातें करवाए, या वोह मस्जिद में बात बात पर हंसाने की कोशिश करेगा लिहाज़ा तमाम इस्लामी भाई निय्यत कीजिये कि मस्जिद का ख़ूब अ-दबो एह़तिराम करते हुए मुकम्मल सन्जीदा रहने की कोशिश करेंगे। ऐसा न हो कि हम ने राहे ख़ुदा में सफ़र तो नेकियां कमाने के लिये इख़्तियार किया मगर मस्जिद की बे अ-दबी कर के, अमीरे क़ाफ़िला की ना फ़रमानी कर के, किसी की दिल आज़ारी कर के, अपना क़ीमती वक़्त ग़फ़लत में गुज़ार कर, जब वापस पलटें तो बहुत सारे अज्रो षवाब से मह़रूमी, और गुनाहों का अम्बार हमारे सर पर हो।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें म-दनी मर्कज़ की हिदायात के मुताबिक़ सफ़र करने, अपने अमीरे क़ाफ़िला की हर पल इताअ़त करने, मसाजिद का अ-दबो एह़तिराम करने, शैत़ान के ह़ीले और साज़िशों से बचने, एक दूसरे का ख़याल रखने और राहे ख़ुदा में आने वाली तकालीफ़ पर सब्र करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہُ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करने के लिये हमें **72** निय्यतें अ़त़ा फ़रमाई हैं, चुनान्चे

आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इर्शाद फ़रमाते हैं : म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र के लिये सिर्फ़ परेशानी दूर होने की दुआ़ की निय्यत करने के बजाए आख़िरत के तअ़ल्लुक़ से मज़ीद अच्छी अच्छी निय्यतें भी शामिल हों तो मदीना मदीना।

ह़दीषे पाक में है : "मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।" (المعجم الکبیر للطبرانی، حدیث:۵۹۴۲،ج۶،ص۱۸۵)

अब हम म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र पर रवाना हो रहे हैं तो शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की अ़त़ा कर्दा **72** निय्यतें मिल कर दोहरा लेते हैं और इन पर अ़मल करने की निय्यत भी कर लेते हैं हर निय्यत पर सब मिल कर اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ का ज़ोरदार ना'रा लगाएं।

www.dawateislami.net

म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करने की 72 निय्यतें

(1) अस्ल मक़्सूद या'नी म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करूंगा (2) अपने ज़ाती ख़र्च पर सफ़र करूंगा (3) पल्ले से खाऊंगा (4) सुवारी की दुआ़ पढ़ूंगा (5) अगर किसी इस्लामी भाई को जगह नहीं मिली तो अपनी निशस्त पर ब इसरार बिठाऊंगा (6,7) कोई बूढ़ा या बीमार मुसलमान नज़र आएगा तो उस के लिये निशस्त ख़ाली कर दूंगा (8) म-दनी क़ाफ़िले वालों की ख़िदमत करूंगा (9) अमीरे क़ाफ़िला की इत़ाअ़त करूंगा (10,11,12) ज़बान, आंख और पेट का क़ुफ़्ले मदीना लगाऊंगा या'नी फ़ुज़ूल गोई, फ़ुज़ूल निगाही से बचूंगा और भूक से कम खाऊंगा (13) सफ़र में हर मौक़अ़ पर म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल जारी रखूंगा (14,15,16) वुज़ू, नमाज़ और क़ुरआने पाक पढ़ने में जो ग़-लतियां होंगी वोह आ़शिक़ाने रसूल की सोहबत में रह कर दुरुस्त करूंगा (जानने वाला निय्यत करे कि सिखाऊंगा) (17,18) सुन्नतें और दुआ़एं सीखूंगा और (19) दूसरों को सिखाऊंगा और (20) इन पर ज़िन्दगी भर अ़मल करता रहूंगा (21,22,23,24,25) तमाम फ़र्ज़ नमाज़ें मस्जिद की पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त अदा करूंगा (26) तहज्जुद (27,28) इशराक़ व चाश्त और (29) अव्वाबीन की नमाज़ें पढ़ूंगा (30,31) एक लम्हा भी ज़ाएअ़ नहीं होने दूंगा, **अल्लाह अल्लाह** करता रहूंगा, दुरूद शरीफ़ पढ़ता रहूंगा (दौराने दर्सो बयान बिग़ैर कुछ पढ़े ख़ामोशी से सुनना होता है) (32) सदाए मदीना लगाऊंगा या'नी नमाज़े फ़ज्र के लिये मुसलमानों को जगाऊंगा (33,34,35) रास्ते में जब मस्जिद नज़र आएगी तो उस की ज़ियारत करूंगा और बुलन्द

www.dawateislami.net

आवाज़ से दुरूद शरीफ़ पढूंगा, मौक़अ़ मिला तो صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب कह कर दूसरों को भी दुरूद शरीफ़ पढ़ाऊंगा (36,37) बाज़ार में जाना पड़ा तो बिल ख़ुसूस नीची निगाहें किये गुज़रते हुए बाज़ार की दुआ़ पढूंगा (38,39,40) मुसलमानों को सलाम कर के उन से पुर तपाक त़रीके़ पर मुलाक़ात करूंगा (41) ख़ूब इनफ़िरादी कोशिश करूंगा (42,43) हाथों हाथ म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र के लिये मुसलमानों को तय्यार करूंगा (44) नेकी की दा'वत दूंगा (45) दर्स दूंगा (46) मौक़अ़ मिला तो सुन्नतों भरा बयान करूंगा (47,48) जहां क़ाफ़िला जाएगा वहां के किसी बुज़ुर्ग के मज़ार शरीफ़ पर म-दनी क़ाफ़िले के हमराह ह़ाज़िरी दूंगा (49) सुन्नी आ़लिम की ज़ियारत करूंगा (50) अगर म-दनी क़ाफ़िले का कोई मुसाफ़िर बीमार हो गया तो तीमार दारी करूंगा (51) अगर किसी मुसाफ़िर के पास ख़र्च ख़त्म हो गया तो अमीरे क़ाफ़िला के मश्वरे से उस की माली इमदाद करूंगा (52,53,54) सफ़र में अपने लिये, अपने घर वालों के लिये और उम्मते मुस्लिमा के लिये दुआ़ए ख़ैर करूंगा (55,56) जिस मस्जिद में क़ियाम होगा उस मस्जिद और वहां के वुज़ूख़ाने की सफ़ाई करूंगा (57) अगर किसी ने बिला वजह सख़्ती की तब भी सब्र करूंगा (58,59) थकन वग़ैरा के सबब ग़ुस्सा आ गया तो ज़बान का क़ुफ़्ले मदीना लगाते हुए ज़ब्त़ करूंगा (60,61,62) अगर मस्जिद में म-दनी क़ाफ़िले को क़ियाम की इजाज़त न मिली तो किसी से उलझने के बजाए उस को अपने इख़्लास की कमी तसव्वुर करूंगा और म-दनी क़ाफ़िले के साथ हाथ उठा कर दुआ़ए ख़ैर करता हुवा पलटूंगा (63) अगर कोई झगड़ा करेगा तो ह़क़ पर होने के बा वुजूद उस से

www.dawateislami.net

झगड़ा न कर के ह़दीषे पाक में दी हुई बिशारते मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का ह़क़दार बनूंगा : "जो ह़क़ पर होते हुए झगड़ा तर्क कर दे उस के लिये जन्नत के दरमियान में मकान बनाया जाएगा।"

(سنن الترمذی، ج ۳ ، ص ۴۰۱ ، الحدیث:۲۰۰۰)

(64,65) अगर किसी ने ज़ुल्मन मारा भी तो जवाबी कारवाई करने के बजाए शुक्र अदा करूंगा कि राहे ख़ुदा में मार खाने वाली सुन्नते बिलाली अदा हुई (66,67,68) अगर मेरी वजह से किसी मुसलमान की दिल आज़ारी हो गई तो उसी वक़्त अह़सन त़रीक़े पर मुआ़फ़ी मांगूंगा (69,70,71) चूंकि हर वक़्त साथ रहने में ह़क़ त-लफ़िय्यों का ज़ियादा इमकान रहता है लिहाज़ा वापसी पर इन्तिहाई लजाजत के साथ फ़र्दन फ़र्दन मुआ़फ़ी तलाफ़ी करूंगा (72) सफ़र से वापसी पर घर वालों के लिये तोह़फ़ा ले जाने की सुन्नत अदा करूंगा। सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब सफ़र से कोई वापस आए तो घर वालों के लिये कुछ न कुछ हदिय्या लाए, अगर्चे अपनी झोली में पथ्थर ही डाल लाए।"

(کنزالعمال، کتاب السفر اداب متفرقه ،حدیث ۱۷۵۰۲،ج۶،ص ۳۰۱)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें जदवल के मुत़ाबिक़ म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

★★★★★

दूसरा तरबिय्यती बयान बराए रवानगिये म-दनी क़ाफ़िला

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम त़-बरानी رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَيْه नक़्ल फ़रमाते हैं कि सरकारे दो आ़लम صَلَّى الله تعَالٰی عَلَيْهِ وَ الِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक भेजा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है और जो मुझ पर दस बार दुरूदे पाक भेजे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है और जो मुझ पर सो बार दुरूदे पाक भेजे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह बन्दा निफ़ाक़ और दोज़ख़ की आग से बरी है और क़ियामत के दिन उस को शहीदों के साथ रखेगा।"

(المعجم الاوسط،الحديث ٧٢٣٥،ج٥،ص٢٥٢)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللّٰهُ تعالٰى على محمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के आ़जिज़ बन्दे और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى الله تعَالٰی عَلَيْهِ وَ الِهٖ وَسَلَّم के अदना ग़ुलाम हैं। यक़ीनन ज़िन्दगी बेह़द मुख़्तसर है, हम लम्ह़ा ब लम्ह़ा मौत के क़रीब होते जा रहे हैं, अ़न क़रीब हमें अंधेरी क़ब्र में उतार दिया जाएगा। नजात तमाम जहानों के पालने वाले **अल्लाहो रब्बुल आ़-लमीन** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त और मुअमिनीन पर रह़मो करम फ़रमाने वाले **रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम** صَلَّى الله تعَالٰی عَلَيْهِ وَ الِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों के इत्तेबाअ़ में है।

www.dawateislami.net

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई** دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه ने हमें अपनी ज़िन्दगी **अल्लाह रब्बुल आ़-लमीन** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त और मुअमिनीन पर रह़मो करम फ़रमाने वाले **रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों के इत्तेबाअ़ में गुज़ारने के लिये एक अ़ज़ीम म-दनी मक़सद अ़त़ा फ़रमाया है कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है ।** اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल और पूरी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करना है और येही वोह अ़ज़ीम मक़सद है कि इख़्लास के साथ इस पर अ़मल कर के हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे बन सकते हैं और दुन्या व आख़िरत में काम्याबी पा सकते हैं ।

कुछ नेकियां कमा ले जल्द आख़िरत बना ले
कोई नहीं भरोसा ऐ भाई ! ज़िन्दगी का

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی अपने तह़रीरी बयान "**मैं सुधरना चाहता हूं**" में फ़रमाते हैं :

अल्लाह तआ़ला पारह 15 सूरए बनी इसराईल आयत 19 में इर्शाद फ़रमाता है :

﴿ وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ وَسَعٰى لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَّشْكُوْرًا ۝۱۹ ﴾

www.dawateislami.net

मेरे आक़ाए ने'मत, **आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल ब-रकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शमए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, पीरे त़रीक़त, आ़लिमे शरीअ़त, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, बाइ़षे ख़ैरो ब-रकत, मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن अपने शोह्रए आफ़ाक़ तर-ज-मए कु़रआन **कन्ज़ुल ईमान** में इस का **तर्जमा यूं फ़रमाते हैं :**

"और जो आख़िरत चाहे और उस की सी कोशिश करे और हो ईमान वाला तो उन्हीं की कोशिश ठिकाने लगी।"

आज हमारी ह़ालत येह है कि अपनी "**दुन्यावी कल**" (या'नी मुस्तक़्बिल) सुधारने के लिये तो बहुत ग़ौरो फ़िक्र करते, उस के लिये त़रह़ त़रह़ की आसाइशें जम्अ़ करने की हर दम कोशिश करते, ख़ूब बेंक बेलेन्स बढ़ाते, कारोबार चमकाते, फ़्यूचर प्रोग्राम्ज़ तरतीब देते और न जाने क्या क्या मन्सूब बनाते हैं कि किसी त़रह़ हमारी येह "**दुन्यावी कल**" बेहतर हो जाए, हमारा दुन्यावी मुस्तक़्बिल संवर जाए, लेकिन अफ़सोस ! कि हम अपनी "**उख़्रवी कल**" (या'नी आख़िरत) को सुधारने की फ़िक्र से यकसर ग़ाफ़िल और इस की तय्यारी के मुआ़मले में बिलकुल काहिल हैं। ह़ालांकि सिर्फ़ इस दुन्यावी कल ही के सुधरने का इन्तिज़ार करने वाले न जाने कितने नादान इन्सानों की आहे ह़सरत मौत की हिचकियों से हम आग़ोश हो जाती है और वोह रोशन मुस्तक़्बिल पा कर ख़ुशियां मनाने के बजाए अंधेरी क़ब्र में उतर कर का'रे अफ़सोस में जा पड़ते हैं। फ़क़त़ दुन्यावी ज़िन्दगी सुधारने के तफ़क्कुरात में मुस्तग़्रक़ हो कर इसी के लिये मसरूफ़े तगो दौ रहना, अपनी आख़िरत की भलाई के लिये फ़िक्र व

www.dawateislami.net

अ़मल से ग़फ़लत बरतना, साबिक़ा आ'माल पर अपना एह़तिसाब करते हुए आयन्दा गुनाहों से बचने और नेकियां करने का अ़ज़्म न करना सरासर नुक़्सान व ख़ुसरान है और समझदार वोही है जिस ने ह़िसाबे आख़िरत को पेशे नज़र रखते हुए ख़ुद को सुधारने के लिये अपने नफ़्स का सख़्ती से मुह़ा-सबा किया, गुनाहों पर अफ़सोस और इन के बुरे अन्जाम का ख़ौफ़ मह़सूस किया। जैसा कि हमारे अस्लाफ़ का त़र्ज़े अ़मल रहा। चुनान्चे

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی नक़्ल फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्नुस्सम्मा رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने एक बार (''फ़िक्रे मदीना'' करते हुए) अपनी उ़म्र शुमार की तो वोह (तक़्रीबन) साठ बरस बनी। उन साठ बरसों को बारह से ज़र्ब देने पर सात सो बीस महीने बने। सात सो बीस को मज़ीद तीस से मज़रूब किया तो ह़ासिले ज़र्ब इक्कीस हज़ार छ सो आया। जो आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की मुबारक उ़म्र के अय्याम थे। फिर अपने आप से मुख़ात़िब हो कर फ़रमाने लगे, अगर मुझ से रोज़ाना एक गुनाह भी सरज़द हुवा हो तो अब तक इक्कीस हज़ार छे सो गुनाह हो चुके ! जब कि इस मुद्दत में ऐसे अय्याम भी शामिल होंगे जिन में यौमिय्या एक हज़ार तक भी गुनाह हुए होंगे। येह कहना था कि ख़ौफ़े ख़ुदा से लरज़ने लगे फिर यकायक एक चीख़ उन के मुंह से निकल कर फ़ज़ा की पहनाइयों में गुम हो गई और आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ज़मीन पर तशरीफ़ ले आए। देखा गया तो त़ाइरे रूह़ क़-फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर चुका था। (کیمیائے سعادت، ج ۲، ص ۸۹۱)

www.dawateislami.net

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर फ़रमाइये कि हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تعَالٰی का अन्दाज़े "**फ़िक्रे मदीना**" किस क़दर आ'ला था और वोह किस त़रह़ नफ़्स को सुधारने के लिये इस का मुह़ा-सबा फ़रमाते और हर दम नेकियों में मसरूफ़ रहने के बा वुजूद ख़ुद को गुनहगार तसव्वुर करते और हमेशा **अल्लाह तआला** से डरते रहते यहां तक कि फ़र्ते ख़ौफ़ से बा'ज़ों की रूहें परवाज़ कर जातीं । मगर अफ़सोस ! हमारी ह़ालत येह है कि शबो रोज़ गुनाहों के समुन्दर में ग़र्क़ रहने के बा वुजूद एह़सासे नदामत है न ख़ौफ़े आक़िबत ।

हमारे अस्लाफ़ رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تعَالٰی शब बेदारियां करते, कषरत से रोज़े रखते, कषीर आ'माले ख़ैर बजा लाते मगर फिर भी ख़ुद को कम तरीन ख़याल करते हुए ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से गिर्या कनां रहते ।

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُ रोज़ाना अपना एह़तिसाब फ़रमाया करते और जब रात आती तो अपने पाउं पर दुर्रा मार कर फ़रमाते : बता, आज तूने "**क्या क्या**" किया है ? (إحياء العُلوم، كتاب المراقبة و المحاسبة، ج٥، ص١٣٧)

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُ का इस त़रह़ अपने नफ़्स को मलामत करना और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ दिला कर उस का मुह़ा-सबा करना हमारी ता'लीम के लिये था । चुनान्चे एक मौक़अ़ पर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُ ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! अपने आ'माल का मुह़ा-सबा करो इस से पहले कि इन का ह़िसाब लिया जाए ।" (المرجع السابق)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अपने साबिक़ा आ'माल का हिसाब करना मुह़ा-सबा कहलाता है। काश ! रोज़ाना रात "**फ़िक्रे मदीना**" करते हुए हमें अपने नफ़्स के साथ तमाम दिन का हिसाब करने की सआदत मिल जाया करे और यूं हमें सरमायए आ'माल में नफ़्अ व नुक़्सान की मा'लूमात होती रहे। जिस त़रह़ शरीके तिजारत से हिसाब लेने में भरपूर कोशिश की जाती है इसी त़रह़ नफ़्स के साथ भी हिसाब किताब में बहुत ज़ियादा एह़तियात़ ज़रूरी है क्यूंकि नफ़्स बहुत चालाक और ह़ीला साज़ है येह हमें अपनी सरकशी भी इत़ाअत के लिबास में पेश करता है ताकि बुराई में भी हमें नफ़्अ नज़र आए ह़ालांकि इस में सरासर नुक़्सान है। सिर्फ़ येही नहीं बल्कि सह़ीह़ मा'नों में सुधरने के लिये तमाम जाइज़ उमूर में भी नफ़्स से हिसाब त़लब करना चाहिये। अगर इस में हमें नफ़्स का क़ुसूर नज़र आए तो उस से सख़्ती के साथ कमी पूरी करवानी चाहिये।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी رَحْمَةُاللهِ تَعالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "जल्दी करो ! जल्दी करो ! तुम्हारी ज़िन्दगी क्या है ? येह सांसें ही तो हैं कि अगर येह रुक जाएं तो तुम्हारे उन आ'माल का सिल्सिला मुन्क़त़अ हो जाए जिन से तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब ह़ासिल करते हो।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ रह़्म फ़रमाए उस शख़्स पर जिस ने अपने आ'माल का जाएज़ा लिया और अपने गुनाहों पर कुछ आंसू बहाए।"

(إحیاء علوم الدین، کتاب ذکر الموت، الباب الثانی فی طول الامل، ج۵، ص۲۰۵)

www.dawateislami.net

ग़ौर कीजिये कि हम तो सर ता पा गुनाहों में डूबे हैं, आख़िर कौन सा गुनाह ऐसा है जो हम नहीं करते ? नेकियां हम से नहीं हो पातीं और अगर हो भी जाएं तो इख़्लास का दूर दूर तक कोई पता नहीं होता, लोगों को अपने नेक आ'माल सुना कर रियाकारी का शिकार हो जाते हैं, हमारा नामए आ'माल नेकियों से ख़ाली और गुनाहों से पुर होता जा रहा है। लेकिन अफ़्सोस ! हमें इस के बुरे नताइज और ख़ुद को सुधारने का कोई एह़सास नहीं।

लिहाज़ा हमें जहन्नम से अपने आप को बचाने और **जन्नतुल फ़िरदौस** में दाख़िला पाने के लिये येह ज़ेह्न बनाना होगा कि **"मैं सुधरना चाहता हूं"** और इस के लिये अपने अन्दर ख़ौफ़े ख़ुदा व इश्क़े मुस्त़फ़ा पैदा करने की भरपूर कोशिश करनी होगी।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इनायत से हम गुनाहों से बचेंगे, नमाज़ों और सुन्नतों की पाबन्दी करेंगे, **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करेंगे, रोज़ाना रात **"फ़िक्रे मदीना"** करते हुए **"म-दनी इन्आ़मात"** का रिसाला पुर करेंगे और फिर हर माह अपने यहां के "ज़िम्मादार" को जम्अ़ करवाएंगे तो ब फ़ज़्ले ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ ब वसीलए मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم जहन्नम से बच कर दाख़िले जन्नत होंगे जो कि अस्ल काम्याबी है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप का और हमारा, सब का ईमान सलामत रखे, हमें बार बार ह़ज नसीब फ़रमाए, हमेशा गुम्बदे ख़ज़रा के साए में रखे, मुख़्लिस आ़शिक़े रसूल बनाए, हिम्मत कीजिये और आज से तै कर लीजिये **"मैं सुधरना चाहता हूं।"**

www.dawateislami.net

लिहाज़ा आज के बा'द मेरी कोई नमाज़ क़ज़ा नहीं होगी...... اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ , **र-मज़ानुल मुबारक** का कोई रोज़ा क़ज़ा नहीं होगा...... اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ , फ़िल्में डिरामे नहीं देखूंगा...... اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ , गाने बाजे नहीं सुनूंगा...... اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ , दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िलों में हर माह तीन दिन सफ़र किया करूंगा...... اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ, हर माह म-दनी इन्आ़मात का रिसाला अपने ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाया करूंगा...... اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

इलाही रह़म फ़रमा मैं सुधरना चाहता हूं अब

नबी का तुझ को सदक़ा मैं सुधरना चाहता हूं अब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये अभी हम ने जो नेक बनने और अपने आप को सुधारने की निय्यत की है उस पर इख़्लास के साथ अ़मल और नेक बनने पर इस्तिक़ामत पाने के लिये म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र को मा'मूल बनाना होगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के करोड़हा करोड़ एह़सान कि उस ने आज हमें राहे ख़ुदा में सफ़र करने वाले आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों की तरबिय्यत की ख़ातिर म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र के लिये यहां जम्अ़ होने की सआ़दत अ़ता फ़रमाई है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र बे शुमार नेकियां ह़ासिल करने और इन पर इस्तिक़ामत पाने का बेहतरीन ज़रीआ़ है। बल्कि

www.dawateislami.net

राहे ख़ुदा में सफ़र करने वाले **आ़शिक़ाने रसूल** की अ़-ज़मत के तो क्या कहने कि जहां ख़ुश नसीब आ़शिक़ाने रसूल पर राहे ख़ुदा में सफ़र करने पर क़दम क़दम पर **अल्लाह तआ़ला** की रह़मतों की **छमाछम** बरसात हो रही है वहीं अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की सुन्नत, सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की सुन्नत और बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के मुक़द्दस त़रीक़े पर चलने की सआ़दत ह़ासिल हो रही है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने के बहुत से फ़ज़ाइल हैं :

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی से मुर्सलन रिवायत है कि नबिय्ये करीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ و التسليم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिसे इस ह़ालत में मौत आए कि वोह इस्लाम की सर बुलन्दी के लिये इ़ल्म सीख रहा हो तो जन्नत में उस के और अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के दरमियान एक द-रजा होगा।" (या'नी वोह उन का क़ुर्ब पाएगा)

(سنن دارمی، المقدمة،باب فی فضل العلم و العالم، الحدیث:٣٥٤،ج١، ص١١٢)

ह़ज़रते सफ़्वान बिन **अ़स्साल मुरादी** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा तो आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मस्जिद में अपने (धारीदार) सुर्ख़ कम्बल से टेक लगाए तशरीफ़ फ़रमा थे, मैं ने अ़र्ज़ किया, **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं इ़ल्म ह़ासिल करने आया हूं तो आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "त़ालिबुल इ़ल्म को ख़ुश

www.dawateislami.net

आ–मदीद, बेशक त़ालिबुल इ़ल्म को मलाएका अपने परों से ढांप लेते हैं फिर उन में बा'ज़ मलाएका दीगर बा'ज़ मलाएका पर सुवारी करते हुए त़–लबे इ़ल्म की वजह से त़ालिबुल इ़ल्म की मह़ब्बत में आस्माने दुन्या तक पहुंच जाते हैं।"

(الترغیب والترھیب، کتاب العلم،الترغیب فی العلم وطلبہ، الحدیث:۱۰۹،ج۱،ص٦٦)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने म–दनी क़ाफ़िले में सफ़र की ब–रकत से न सिर्फ़ बे शुमार नेकियां ह़ासिल होती हैं बल्कि राहे ख़ुदा में सफ़र करने वाले के लिये जहन्नम से आज़ादी और जन्नत की बिशारत भी अह़ादीष में मौजूद है, लिहाज़ा पहले तो शैत़ान कोशिश करता है कि किसी को **म–दनी इन्आ़मात** पर इस्तिक़ामत पाने के लिये **म–दनी क़ाफ़िले** में सफ़र करने ही न दे फिर अगर कोई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से म–दनी क़ाफ़िले में सफ़र करने में काम्याब हो भी जाए तो फिर शैत़ान इस कोशिश में लग जाता है कि किसी त़रीक़े से म–दनी क़ाफ़िले में ऐसे काम करवाए जिस की वजह से षवाब के बजाए गुनाहों का अम्बार जम्अ़ हो जाए।

अगर हम **म–दनी मर्कज़** की हिदायात के मुत़ाबिक़ सफ़र करेंगे तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ शैत़ान से ह़िफ़ाज़त भी रहेगी और बे शुमार नेकियां ह़ासिल करने में आसानियां भी मिलेंगी और म–दनी इन्आ़मात पर अ़मल करना हमारे लिये बहुत आसान होगा।

इस के बा'द सफ़ह़ा ﴾93﴿ से **तरबिय्यती बयान का आख़िरी ह़िस्सा** बयान कीजिये।

www.dawateislami.net

म-दनी क़ाफ़िले का मुख़्तसर जदवल व सामाने म-दनी क़ाफ़िला

जदवल और ए'लानात की दोहराई और मश्वरे का ह़ल्क़ा : (9:30) ता (9:56)

इस ह़ल्के़ में (5 मिनट) तिलावत व ना'त और बाक़ी (26 मिनट) में जदवल और ए'लानात की दोहराई और मश्वरे का ह़ल्क़ा लगाया जाए, (इसी दौरान मदनी इन्आ़मात के रसाइल भी तक़्सीम किये जाएं) 3 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में जदवल की दोहराई अमीरे क़ाफ़िला ख़ुद ही करे, शु-रका से सिर्फ़ एक एक काम पर मश्वरा किया जाए, मश्वरा मश्वरे के त़ौर पर ही लिया जाए।

म-दनी मक़्सद का बयान : (9:56) ता (10:37)

(41 मिनट) इस ह़ल्के़ में इब्तिदाई 26 मिनट अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रसाइल से बयान और आख़िरी 15 मिनट में जै़ली ह़ल्के़ के म-दनी कामों में से किसी एक म-दनी काम पर जे़ह्न बनाया जाए।

इनफ़िरादी इ़बादत का ह़ल्क़ा : (10:37) ता (10:56)

(19 मिनट) इस ह़ल्के़ में तिलावते क़ुरआन, **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, दुरूद शरीफ़, मदनी इन्आ़मात का अ़मली व फ़र्ज़ी जदवल, यौमे क़ुफ़्ले मदीना का पेम्फ़्लेट (इसी किताब के सफ़ह़ा 712 ता 716 पर मुलाह़ज़ा कीजिये), रिज़ाए रब्बुल अनाम के काम, (येह 72 मदनी इन्आ़मात के सफ़ह़ा 24 पर मुलाह़ज़ा कीजिये) रिसाला 40 रूह़ानी इलाज से वज़ाइफ़ की तरकीब बनाई जाए। इस में मुत़ालआ़[1] भी कर सकते हैं।

(1)...ज़हे नसीब "जन्नत के त़लबगारों के लिये मदनी गुलदस्ता" से मुत़ालआ़ हो तो मदीना मदीना, अमीरे अहले सुन्नत के रसाइल की फे़हरिस्त सफ़ह़ा 712 ता 716 से मुलाह़ज़ा कीजिये।

www.dawateislami.net

मुख़्तसर नेकी की दा'वत : (10:56) ता (11:08)

(12 मिनट) इस में मुख़्तसर नेकी की दा'वत याद करवाई जाए, अगर येह किसी को याद हो तो उसे इनफ़िरादी कोशिश के लिये तरग़ीबात याद करवाई जाएं।

इनफ़िरादी कोशिश का त़रीक़ा : (11:08) ता (11:20)

(12 मिनट) अमीरे क़ाफ़िला इनफ़िरादी कोशिश का त़रीक़ए कार सिखाए और अ़-मली त़रीक़ा कर के दिखाए और जिन इस्लामी भाइयों को तरग़ीबात पिछले ह़ल्क़े में याद न हुई हों तो उन को इस ह़ल्क़े में भी याद करवाई जाएं।

इनफ़िरादी कोशिश का ह़ल्क़ा :
(11:20) ता (12:00)

(40 मिनट) इस में इस्लामी भाई बाहर जा कर मुख़्तलिफ़ जगहों पर इनफ़िरादी कोशिश फ़रमाएं और इस्लामी भाइयों को हाथों हाथ मस्जिद में लाने की तरकीब बनाएं, इसी दौरान कुछ इस्लामी भाई मस्जिद में ज़ैली ह़ल्क़े के म-दनी कामों पर एक दूसरे का ज़ेह्न बनाएं। इसी वक़्त में बा असर शख़्सिय्यात म-षलन उ़-लमा, मशाइख़, चौधरी, वडेरों वग़ैरा से मुलाक़ात कर के दा'वते इस्लामी और इस के शो'बाजात का तआ़रुफ़ करवाएं और म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की दा'वत पेश करें।

सुन्नतें सीखने का ह़ल्क़ा : (12:00) ता (12:30)

(30 मिनट) इस ह़ल्क़े में अमीरे क़ाफ़िला शु-रका को सुन्नतें

---

(1)...मदनी इन्आ़मात की 26 सेकेन्ड की इनफ़िरादी कोशिश जानने का त़रीक़ा "जन्नत के त़लबगारों के लिये मदनी गुलदस्ता" सफ़ह़ा 86 मुलाह़ज़ा फ़रमा लीजिये।

www.dawateislami.net

सिखाने की तरकीब बनाए 3 दिन, 12 दिन और 30 दिन के म-दनी क़ाफ़िलों में सुन्नतें सीखने की तरतीब अलग अलग होगी, जिस की तफ़्सीलात सफ़्हा **154** ता **157** पर मुला-हज़ा फ़रमाएं।

वक़्फ़ए त़आम व चौक दर्स : (12:30)

खाना खाएं और अज़ाने ज़ोहर से 12 मिनट क़ब्ल (7 मिनट) फ़ैज़ाने सुन्नत से चौक दर्स दें। बा'दे दर्स नमाज़े ज़ोहर की दा'वत दे कर शु-रका को अपने साथ मस्जिद में लाने की कोशिश करें। जो इस्लामी भाई क़रीब की मस्जिदों में दर्स के लिये जाएंगे वोह चौक दर्स के बा'द रवाना हो जाएं।

बा'दे ज़ोहर दर्स :

(7 मिनट) फ़ैज़ाने सुन्नत से मदनी दर्स दिया जाए।

नमाज़ के अह़काम : (30 मिनट)

इस ह़ल्क़े में 3 दिन, 12 दिन और 30 दिन के म-दनी क़ाफ़िलों में सीखने की तरतीब अलग अलग होगी, जिस की तफ़्सीलात सफ़्हा **160** ता **171** पर मुला-हज़ा फ़रमाएं।

दर्स व बयान सीखने का ह़ल्क़ा : (19 मिनट)

इस ह़ल्क़े में अमीरे क़ाफ़िला शु-रका में से जो दर्स नहीं दे सकते उन को दर्स और जिन को बयान करना नहीं आता उन को बयान करना सिखाए।

दुआओं का ह़ल्क़ा : (19 मिनट)

गर्मियों में येह ह़ल्क़ा उसी वक़्त और सर्दियों में इशा के बा'द होगा।

www.dawateislami.net

वक़्फ़ए आराम :

हल्क़ों के बा'द अ़स्र तक वक़्फ़ए आराम।

बा'दे अ़स्र ए'लान व बयान :

(12 मिनट) नेकी की दा'वत के फ़ज़ाइल पर बयान हो। (अ़स्र के बयानात सफ़्ह़ा 328 पर मुला-ह़ज़ा करें)

अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत :

अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत अ़स्र के बा'द ही किया जाए।

अ़स्र ता मग़्रिब दर्स :

इस दौरान फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़्रीज शुदा) और बयानाते अ़त्तारिय्या वग़ैरा से दर्स किया जाए। आख़िर में चन्द मिनट सुन्नतें सीखने सिखाने का ह़ल्क़ा लगाया जाए।

बा'दे मग़्रिब ए'लान व बयान :

मग़्रिब के बा'द बयान किसी अच्छे मुबल्लिग़ से करवाया जाए, इस के बा'द इनफ़िरादी कोशिश (12 मिनट) की जाए।

पहले दिन म-दनी क़ाफ़िलों की निय्यत और राहे ख़ुदा में सफ़र की अहम्मिय्यत और निय्यत के फ़ज़ाइल पर बयान हो।

दूसरे दिन नाम लिखवाने की तरग़ीब दिलाएं और नाम लिखे जाएं और

तीसरे दिन बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की दीन की ख़ातिर क़ुरबानियां बता कर सफ़र की तरग़ीब दिलाएं और हाथों हाथ सफ़र की तरकीब बनाएं। (मग़्रिब के बयानात सफ़्ह़ा 379 पर मुला-ह़ज़ा करें)

www.dawateislami.net

वक़्फ़ए त़आम :

मग़रिब ता इशा खाना खाएं।

बा'दे इशा दर्स :

(7 मिनट) फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़रीज शुदा) से मदनी दर्स दिया जाए।

केसिट बयान :

केसिट बयान शुरूअ़ करने से पहले (7 मिनट) बाहर जा कर इनफ़िरादी कोशिश करें और फिर केसिट बयान की तरकीब बनाएं, अगर केसिट बयान मुयस्सर न हो तो 26 मिनट अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रसाइल में से कोई रिसाला सुनाया जाए।

दोहराई का ह़ल्क़ा :

आज पूरे दिन में जो कुछ सीखा है अमीरे क़ाफ़िला ख़ुद ही इस की दोहराई करे और अगर कोई बख़ुशी सुनाना चाहे तो सुने और हौसला अफ़्ज़ाई भी करे।

सोने से क़ब्ल और बेदार होने के बा'द के मा'मूलात :

इजतिमाइ फ़िक्रे मदीना[1] करने, सलातुत्तौबा पढ़ने, सूरए मुल्क सुनने के बा'द वक़्फ़ए आराम हो और सुब्ह़े सादिक़ से (19 मिनट) क़ब्ल बेदार हो कर नमाज़े तहज्जुद अदा की जाए। जो इस्लामी भाई क़रीब की मस्जिदों में दर्स के लिये जाएंगे अज़ाने फ़ज्र से क़ब्ल रवाना हो जाएं। अज़ाने फ़ज्र के बा'द सदाए मदीना लगाई जाए।

---

(1)...इजतिमाई फ़िक्रे मदीना करने का त़रीक़ा सफ़्ह़ा 720 पर मुलाह़ज़ा कीजिये।

www.dawateislami.net

बा'दे फ़ज्र ए'लान व बयान :

7 मिनट से 12 मिनट तक, इन मौज़ूआत, **ज़िक्रुल्लाह, बिस्मिल्लाह** शरीफ़, तिलावते कुरआन और दुरूद शरीफ़ के फ़ज़ाइल, में से किसी एक पर बयान किया जाए।

म-दनी ह़ल्क़ा :

अमीरे क़ाफ़िला फ़ज्र के बयान के बा'द शु-रका को ह़ल्के़ की सूरत में बिठा कर कन्ज़ुल ईमान से 3 आयात तिलावत मअ़ तरजमा व तफ़्सीर और फ़ैज़ाने सुन्नत से चार सफ़ह़ात सुनाने के बा'द शु-रका के साथ मिल कर श-जरह पढ़े।

आख़िरी दस सूरतें सीखने या मद्र-सतुल मदीना का ह़ल्क़ा :

3 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में शु-रका को आख़िरी दस सूरतों में से सीखने सिखाने की तरकीब बनाए, 12 दिन और 30 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में मद्र-सतुल मदीना बालिग़ान की तरकीब बनाई जाए, जिस में म-दनी क़ाइदा मुकम्मल पढ़ाया जाए।

बा'दे इशराक़ व चाश्त वक़्फ़ए आराम, नाश्ता :

(9:00) बजे नाश्ता (9:30) दोबारा म-दनी ह़ल्क़े का आग़ाज़ किया जाए।

★★★★★

www.dawateislami.net

सामाने म-दनी क़ाफ़िला की फ़ेहरिस्त

सुन्नत बॉक्स	डायरी व क़लम
म-दनी बनियान	म-दनी बेग तमाम सामान के लिये
म-दनी तहबन्द	चूल्हा एक अ़दद
कुफ़्ले मदीना का ऐ़नक	थाल 2 अ़दद (ज़हे नसीब मिट्टी की प्लेट हो)
निय्यतों का कार्ड	जग एक अ़दद, गिलास 3 अ़दद
म-दनी इन्आ़मात के रसाइल मअ़	(ज़हे नसीब मिट्टी का प्याला हो)
मुस्तक़िल कुफ़्ले मदीना के कार्डज़	पतीली 3 अ़दद
म-दनी चादर 2 अ़दद	कप 9 अ़दद
इमामा शरीफ़	एक अ़दद छुरी
चिपड़ी टोपी	3 अ़दद चमचे बड़े
तस्बीह़	एक अ़दद चाय की छन्नी (छलनी)
2 या 3 अ़दद म-दनी सूट	दस्तर ख़्वान
टॉर्च	दस्तर ख़्वान साफ़ करने के लिये साफ़ी
अलार्म वाली घड़ी	एक अ़दद डोंगा चाय के लिये
लिह़ाफ़ (सर्दी से बचने के लिये), चटाई	फ़ैज़ाने सुन्नत के तमाम अबवाब
नेक बनने और बनाने के त़रीक़े	नमाज़ के अह़काम, म-दनी रसाइल

www.dawateislami.net

म-दनी क़ाफ़िले के जदवल की तफ़्सील

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

म-दनी क़ाफ़िले के जदवल की इब्तिदा म-दनी मश्वरे से होती है ।

﴾बा'ज़ मक़ामात पर म-दनी इन्आ़मात की निशानदेही **ब्रेकेट** के ज़रीए की गई है﴿

जदवल और ए'लानात की दोहराई, मश्वरे का ह़ल्क़ा : (9:30) ता (9:56)

मस्जिद में पहुंच कर ﴾1﴿ (मदनी इन्आ़म नम्बर 39 के मुत़ाबिक़) बा वुज़ू रहने की निय्यत के साथ वुज़ू फ़रमा कर मकरूह वक़्त न हो तो दोगाना अदा कीजिये, ﴾2﴿ दोगाना में तह़िय्यतुल वुज़ू और तह़िय्यतुल मस्जिद भी आ गई । अगर थकन हो तो आराम ले कर, वरना अब (5 मिनट) तिलावत व ना'त के बा'द अमीरे क़ाफ़िला म-दनी मश्वरे का ह़ल्क़ा शुरूअ़ करे, मुख़्तलिफ़ उमूर के बारे में मश्वरा करे । (रोज़ाना सुब्ह़ साढ़े नव बजे म-दनी मश्वरे से क़ब्ल तिलावत व ना'त (5 मिनट) का इसी त़रह़ एहतिमाम फ़रमाइये) म-दनी मश्वरे के ह़ल्क़े को तीन ह़िस्सों में तक़्सीम किया गया है : (i) जदवल की दोहराई (ii) ए'लानात की दोहराई (iii) दर्स व बयान वग़ैरा की ज़िम्मा दारियां मश्वरे के ज़रीए तक़्सीम करना । (साथ साथ मदनी इन्आ़मात के रसाइल भी तक़्सीम किये जाएं) (26 मिनट) अब जदवल की दोहराई अमीरे क़ाफ़िला ख़ुद ही करे ।

www.dawateislami.net

(i) जदवल की दोहराई :

3 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में अमीरे क़ाफ़िला जदवल की दोहराई इस त़रह़ करे कि तमाम शु-रका को जदवल समझ में आ जाए, न बहुत तेज़ी के साथ दोहराए न ही बिलकुल आहिस्ता कि शु-रका बोर हो जाएं। **3** दिन के म-दनी क़ाफ़िले में जदवल की दोहराई सिर्फ़ अमीरे क़ाफ़िला ही करे। **12** और **30** दिन के म-दनी क़ाफ़िले में दीगर मज़बूत़ इस्लामी भाइयों को भी येह ख़िदमत दी जा सकती है। अगर शु-रका में से कोई दोहराना चाहे तो उसे इजाज़त दे लेकिन किसी से ज़बर दस्ती दोहराई न करवाए, अगर शु-रका में से कोई दोहराए तो अमीरे क़ाफ़िला उसे दरमियान में न टोके, जदवल की दोहराई इस त़रह़ होगी :

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ म-दनी मश्वरे का ह़ल्क़ा जारी है, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ साढ़े 12 बजे तक सीखने सिखाने का अ़मल जारी रहेगा। इस के बा'द खाना तय्यार हुवा (माहे र-मज़ानुल मुबारक में इस जगह खाने का तज़्किरा न करें) तो (मदनी इन्आ़म नम्बर 11 पर अ़मल की निय्यत करते हुए) सुन्नत के मुत़ाबिक़ बैठ कर पर्दे में पर्दा वाले मदनी इन्आ़म पर अ़मल करते हुए खा लिया जाएगा नहीं तो (मदनी इन्आ़म नम्बर 36 पर अ़मल की निय्यत करते हुए) निगाहें झुकाए, (मदनी इन्आ़म नम्बर 6 पर अ़मल करने की निय्यत करते हुए) मुसलमानों को सलाम करते हुए चलने के मदनी इन्आ़मात पर अ़मल करते हुए किसी तो सुन्नत के मुत़ाबिक़ बैठ कर पर्दे में पर्दा वाले म-दनी इन्आ़म पर अ़मल करते हुए खा लिया जाएगा नहीं तो निगाहे झुकाए मुसलमानों को सलाम करते हुए चलने के म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल करते हुए किसी बा रौनक़ मक़ाम पर اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ हुक़ूक़े आ़म्मा का ख़याल रखते हुए चौक दर्स दिया जाएगा।

नमाज़े ज़ोहर के लिये जल्दी से तय्यार हो कर नमाज़े ज़ोहर के लिये जल्दी से तय्यार हो (मदनी इन्आ़म नम्बर 2 पर अ़मल की

www.dawateislami.net

निय्यत करते हुए) मस्जिद की पहली सफ़ में मअ़ तकबीरे ऊला वाले म-दनी इन्आ़म के मुत़ाबिक़ बा जमाअ़त नमाज़े ज़ोहर अदा की जाएगी। नमाज़े ज़ोहर के बा'द (मदनी इन्आ़म नम्बर 12 पर अ़मल की निय्यत करते हुए) मदनी दर्स देने या सुनने वाले म-दनी इन्आ़म पर अ़मल की सआ़दत ह़ासिल की जाएगी। फिर اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ सीखने सिखाने का अ़मल जारी रहेगा, वक़्त मिलेगा तो आराम कर लिया जाएगा, नहीं तो अज़ाने अ़स्र से क़ब्ल तय्यार हो कर, नमाज़े अ़स्र मस्जिद की पहली सफ़ में मअ़ तकबीरे ऊला वाले म-दनी इन्आ़म के मुत़ाबिक़ मअ़ सुन्नते क़ब्लिया बा जमाअ़त नमाज़े अ़स्र अदा की जाएगी। नमाज़ के बा'द एक इस्लामी भाई ए'लान फ़रमाएंगे फिर اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बयान होगा। बयान के बा'द अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत वाले म-दनी इन्आ़म पर अ़मल की सआ़दत ह़ासिल करने के लिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बाहर जाएंगे। इस दौरान मस्जिद में दर्स का सिल्सिला जारी रहेगा, अज़ाने मग़रिब से तक़रीबन दस मिनट क़ब्ल दोबारा मस्जिद में आ जाएंगे और त़बई ह़ाजात वग़ैरा से फ़ारिग़ हो कर अज़ान व इक़ामत के वक़्त ख़ामोश रह कर जवाब देने वाले म-दनी इन्आ़म के मुत़ाबिक़ अज़ान व इक़ामत का जवाब देंगे और मअ़ तकबीरे ऊला वाले म-दनी इन्आ़म पर अ़मल कर के बा जमाअ़त नमाज़े मग़रिब अदा करेंगे।

नमाज़ के बा'द एक इस्लामी भाई ए'लान करेंगे फिर اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बयान होगा। बयान के बा'द (12 मिनट) इनफ़िरादी कोशिश करने वाले म-दनी इन्आ़म पर अ़मल की सआ़दत ह़ासिल की जाएगी, खाना मुयस्सर हुवा तो म-दनी इन्आ़मात के मुत़ाबिक़ पर्दे में पर्दा की एह़तियात़ के साथ पेट का क़ुफ़्ले मदीना लगाते हुए खा लिया जाएगा, नहीं तो अज़ाने इशा से क़ब्ल जल्दी तय्यारी कर के मस्जिद की पहली सफ़ में मअ़ तकबीरे ऊला वाले म-दनी इन्आ़म के मुत़ाबिक़ नमाज़े इशा बा जमाअ़त अदा की जाएगी, दर्स के बा'द कुछ इस्लामी

भाई (7 मिनट) के लिये बाहर जा कर इस्लामी भाइयों पर इनफ़िरादी कोशिश करने वाले म-दनी इन्आ़म पर अ़मल की सआ़दत ह़ासिल करेंगे और फिर اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ केसिट इजतिमाअ़ वाले म-दनी इन्आ़म के मुत़ाबिक़ बयान की एक केसिट या **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रसाइल में से एक रिसाला सुनने की सआ़दत ह़ासिल करेंगे।

इस के बा'द दोहराई का ह़ल्क़ा होगा फिर **सलातुत्तौबा** और **सूरए मुल्क** वाले म-दनी इन्आ़म पर अ़मल की सआ़दत ह़ासिल की जाएगी, इस के बा'द तमाम इस्लामी भाई इजतिमाई त़ौर पर फ़िक्रे मदीना वाले म-दनी इन्आ़म पर अ़मल की सआ़दत पा कर म-दनी इन्आ़म के मुत़ाबिक़ सुन्नत बॉक्स सिरहाने रख कर सोते वक़्त के अवराद पढ़ कर मुमकिना सूरत में पर्दे में पर्दा की तरकीब कर के सो जाएंगे।

वक़्ते मुनासिब पर तहज्जुद की नमाज़ के लिये जगाया जाएगा, तमाम इस्लामी भाई तहज्जुद की नमाज़ वाले म-दनी इन्आ़म पर अ़मल की सआ़दत ह़ासिल करेंगे फिर श-ज-रए अ़त्त़ारिय्या वाले म-दनी इन्आ़म पर अ़मल करते हुए तिलावत और ज़िक्रो दुरूद में मश्ग़ूल हो जाएंगे। अज़ाने फ़ज्र के बा'द तमाम इस्लामी भाई सदाए मदीना वाले म-दनी इन्आ़म पर अ़मल की सआ़दत पाने के लिये मस्जिद से बाहर तशरीफ़ ले जाएंगे। जमाअ़ते फ़ज्र से तक़रीबन दस मिनट क़ब्ल वापस आ कर मस्जिद की पहली सफ़ में मअ़ तकबीरे ऊला वाले म-दनी इन्आ़म के मुत़ाबिक़ नमाज़े फ़ज्र बा जमाअ़त अदा करेंगे, नमाज़ के बा'द एक इस्लामी भाई ए'लान फ़रमाएंगे फिर

www.dawateislami.net

اِنْ شَآءَاللّٰہعَزَّوَجَلَّ बयान होगा, इस के बा'द اِنْ شَآءَاللّٰہعَزَّوَجَلَّ सीखने सिखाने का अ़मल जारी रहेगा। फिर तमाम इस्लामी भाई इशराक़ व चाश्त के नवाफ़िल अदा करने वाले म-दनी इन्आ़म पर अ़मल की सआ़दत ह़ासिल करेंगे। फिर वक़्फ़ए आराम होगा।

(8:45) पर तमाम इस्लामी भाइयों को नींद से बेदार किया जाएगा। तमाम इस्लामी भाई त़बई ह़ाजात वग़ैरा से फ़ारिग़ हो कर (9:00) बजे नाश्ता करेंगे और اِنْ شَآءَاللّٰہعَزَّوَجَلَّ साढ़े नव बजे दोबारा इसी त़रह़ म-दनी मश्वरे का ह़ल्क़ा शुरूअ़ हो जाएगा।

नोट :

अमीरे क़ाफ़िला को चाहिये कि जिस दिन का जो जदवल हो उसी के मुत़ाबिक़ जदवल की दोहराई करे, ऐसा न हो कि जदवल शुरूअ़ हो रहा हो ज़ोहर से और दोहराई (9:30) बजे से शुरूअ़ की जाए, और अगर वापसी मग़रिब में है या इ़शा में या किसी भी वक़्त हो वहीं तक जदवल दोहराए आगे न दोहराए। बिल ख़ुसूस आख़िरी दिन अमीरे क़ाफ़िला को चाहिये कि जदवल की दोहराई करने के बा'द शु-रका का येह ज़ेह्न बनाए कि आह ! आज हमारे म-दनी क़ाफ़िले का आख़िरी दिन है और اِنْ شَآءَاللّٰہعَزَّوَجَلَّ हमारे म-दनी क़ाफ़िले की वापसी म-दनी तरबिय्यत गाह में होगी, जहां हम अपने म-दनी क़ाफ़िले की कारकर्दगी पेश करेंगे और फिर अमीरे क़ाफ़िला, शु-रका को तरग़ीब दिला कर अच्छी अच्छी निय्यतें भी करवाए।

www.dawateislami.net

(ii) अब अमीरे क़ाफ़िला ए'लानात की दोहराई की तरकीब बनाए

ए'लानात की दोहराई :

जदवल की दोहराई के बा'द अब अमीरे क़ाफ़िला ए'लानात की अहम्मिय्यत बताए और रोज़ाना ए'लान के म-दनी फूलों से चन्द म-दनी फूल पेश करे।

ए'लान करने की फ़ज़ीलत :

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ए'लान बयान ही की एक कड़ी है, अगर हम बयान करना चाहते हैं तो हमें चाहिये कि पहले ए'लान करना सीखें। ए'लान भी एक क़िस्म की नेकी की दा'वत है, चुनान्चे अगर किसी के ए'लान करने से कोई बयान में बैठ गया और अ़मल करने वाला बन गया तो ए'लान करने वाले को भी बराबर षवाब मिलता रहेगा। ए'लान करने वाले को भी हर बात के बदले एक साल की इ़बादत का षवाब मिलेगा, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي नक़्ल फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते मूसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की : "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! जो अपने भाई को बुलाए, उसे नेकी का हुक्म दे और बुराई से मन्अ़ करे तो उस की जज़ा क्या है ?" इर्शाद फ़रमाया : "मैं उस की हर बात पर एक साल की इ़बादत का षवाब लिखता हूं और उसे जहन्नम की सज़ा देने में मुझे ह़या आती है।" (مکاشفۃ القلوب، باب فی الامر بالمعروف والنھی عن المنکر،ص٤٨)

www.dawateislami.net

ए'लान के म-दनी फूल :

चूंकि ए'लान भी एक क़िस्म की नेकी की दा'वत है, लिहाज़ा इस के आदाब को पेशे नज़र रखना भी बहुत ज़रूरी है।

(1) ए'लान करने वाले के लिये ज़रूरी है कि पहली सफ़ में इमाम साहि़ब के क़रीब, इक़ामत कहने वाले की दाईं जानिब नमाज़ अदा करे।

(2) इमाम साहि़ब के सलाम फैरते ही ए'लान करने वाला इस्लामी भाई खड़े हो कर क़िब्ला शरीफ़ की त़रफ़ रुख़ कर के नमाज़ियों की ता'दाद के मुत़ाबिक़ आवाज़ बुलन्द करते हुए ए'लान करे। मगर इस बात का ख़याल रखे कि ऐसी बुलन्द आवाज़ भी न हो जिस से नमाज़ पढ़ने वालों को तश्वीश हो।

(3) ए'लान बयान के लिये तआ़रुफ़ की ह़ैषिय्यत रखता है। चुनान्चे ए'लान जितने अच्छे अन्दाज़ से होगा, सुनने वाले बयान के बारे में उतना ही अच्छा तअष्षुर लेंगे और अगर ए'लान का अन्दाज़ ना मुनासिब हो या निहायत तेज़ी से ए'लान किया गया तो सुनने वाले बयान के बारे में भी इसी क़िस्म के तअष्षुरात क़ाइम कर लेंगे।

(4) ए'लान करने वाला चादर नीचे रख कर ही खड़ा हो और हाथ नमाज़ के अन्दाज़ में न बंधे हों।

(5) ए'लान को पहले ही से याद करना भी ज़रूरी है।

(6) ए'लान वोही किया जाए जो जदवल में दिया गया है।

(7) ए'लान ठहर ठहर कर समझाने वाले अन्दाज़ में हो।

www.dawateislami.net

अब (दौराने मश्वरा) अमीरे क़ाफ़िला पहले खड़े हो कर ख़ुद ए'लान सुनाए। फिर शु-रका से यूं अ़र्ज़ करे "आप भी इसी त़रह ए'लान दोहराने की कोशिश करें" लेकिन अमीरे क़ाफ़िला किसी से ज़बर दस्ती न करे, अब शु-रका ए'लाने अ़स्र दोहराएं फिर अमीरे क़ाफ़िला खड़े हो कर ए'लाने मग़रिब कर के दिखाए फिर शु-रका ए'लाने मग़रिब दोहराएं, इसी त़रह फ़ज्र का ए'लान।

ए'लानात दर्जे ज़ैल हैं :

ए'लाने फ़ज्र

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه

"मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अभी दुआ़ के फ़ौरन बा'द اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सुन्नतों भरा बयान होगा, तशरीफ़ रखिये और ढेरों षवाब कमाइये।"

ए'लाने अ़स्र

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه

"आप के अ़लाक़े में नेकी की दा'वत आ़म करने के लिये आप की मदद दरकार है। बराए करम, दुआ़ के बा'द तशरीफ़ रखिये और ढेरों षवाब कमाइये।"

www.dawateislami.net

ए'लाने मग़रिब

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡکَ یَا رَسُوۡلَ اللّٰہ

"मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अभी नमाज़ के फ़ौरन बा'द اِنۡ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ सुन्नतों भरा बयान होगा, तशरीफ़ रखिये और ढेरों षवाब कमाइये।"

(iii) ज़िम्मादारियां तक़्सीम करना :

ए'लानात की दोहराई के बा'द अमीरे क़ाफ़िला दर्स व बयान व दीगर मसाजिद में फ़ज्र व ज़ोहर में बमअ़ रु-फ़क़ा जा कर दर्स देने और खाना पकाने की ज़िम्मा दारियों के बारे में मश्वरा कर के ज़िम्मा दारियां तक़्सीम करे। खाने की तय्यारी इशराक़ व चाश्त से ले कर मश्वरे के ह़ल्क़े से पहले कर ली जाए। नीज़ दो वक़्त का सालन एक साथ ही तय्यार कर लिया जाए। रोज़ाना बदल बदल कर ज़िम्मा दारियां दी जाएं, येह न हो कि रोज़ाना के लिये बरतन धोने या पकाने के लिये एक ही इस्लामी भाई को मख़्सूस कर लिया जाए कि बेचारा सुन्नतें सीखने से ही मह़रूम रहे। एक इस्लामी भाई की ज़िम्मादारी येह हो कि ज़रूरतन आराम के वक़्फ़े में जाग कर सामान वग़ैरा की ह़िफ़ाज़त करे।

www.dawateislami.net

मश्वरे का त़रीक़ए कार :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! म-दनी क़ाफ़िलों में मश्वरा इन नौ म-दनी कामों पर लिया जाता है :

(1) चौक दस (2) ज़ोहर का दर्स (3) ए'लाने अ़स्र (4) बयाने अ़स्र (5) ए'लाने मग़रिब (6) बयाने मग़रिब (7) इशा का दर्स (8) ए'लाने फ़ज्र (9) बयाने फ़ज्र ।

इन नौ मदनी कामों के बारे में शु-रकाए क़ाफ़िला से हर एक इस्लामी भाई से सिर्फ़ एक ही काम पर मश्वरा लिया जाए, मश्वरा मश्वरे के त़ौर पर ही होना चाहिये ताकि इस्लामी भाई मज़ाक़ न बनाएं ।

मश्वरा सीधी जानिब से इस त़रह़ लेना है म-षलन अमीरे क़ाफ़िला शु-रका से यूं पूछे "शाहिद भाई ! आप मश्वरा दें ज़ोहर का दर्स किस इस्लामी भाई से करवाया जाए ?" अब शाहिद भाई यूं अ़र्ज़ करें "मेरा नाक़िस मश्वरा है कि ज़ोहर का दर्स ख़लील भाई से करवा लिया जाए आगे आप की मरज़ी ।"

अब अमीरे क़ाफ़िला दूसरे इस्लामी भाई से अ़स्र के ए'लान का मश्वरा ले, अब बारी बारी तमाम शु-रका से इसी त़रह़ मश्वरा ले । अमीरे क़ाफ़िला को चाहिये कि मश्वरा लेने से क़ब्ल शु-रका को येह ज़ेह्न दे कि मश्वरा देने वाला इस्लामी भाई अपने मश्वरे के बारे में बत़ौरे आ़जिज़ी "**नाक़िस मश्वरा**" का लफ़्ज़ इस्ति'माल करे । जिस इस्लामी भाई को ज़िम्मादारी देने के बारे में मश्वरा दिया जाए, वोह اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ कहे जब कि दीगर इस्लामी भाई हर मरतबा मश्वरा देने पर (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र की निय्यत से) سُبْحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ ज़रूर कहें ।

www.dawateislami.net

इस त़रह़ मश्वरा देने वाले और जिस के बारे में मश्वरा दिया गया दोनों की ह़ौसला अफ़्ज़ाई भी हो जाएगी। अमीरे क़ाफ़िला को चाहिये कि शु-रका का येह भी ज़ेह्न बनाए कि मश्वरा देने वाला इस्लामी भाई जब किसी ज़िम्मादारी के बारे में मश्वरा दे तो अपने इलावा दीगर मौजूद शु-रकाए क़ाफ़िला के बारे में ही मश्वरा दे।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मश्वरा करने के इस त़रीक़े पर अ़मल करने की ब-रकत से अजनबिय्यत मह़सूस करने वाले इस्लामी भाई म-दनी क़ाफ़िले वालों के साथ घुल मिल जाएंगे और उन से मश्वरा लेने से उन की ह़ौसला अफ़्ज़ाई होगी। मश्वरा देने वाले इस्लामी भाइयों की ख़िदमत में येह दरख़्वास्त भी की जाए कि दर्सो बयान की ज़िम्मादारी के बारे में मश्वरा देते वक़्त उन इस्लामी भाइयों का नाम भी लें जो फ़िलह़ाल दर्सो बयान की सलाह़िय्यत नहीं रखते। इस का फ़ाएदा येह होगा कि उन इस्लामी भाइयों का भी दर्सो बयान करने के बारे में ज़ेह्न बनेगा।

सब से मश्वरा लेने के बा'द अमीरे क़ाफ़िला दर्जे ज़ैल ज़िम्मा दारियां तक़्सीम करे :

(1) चौक दर्स......

(2) नमाज़े फ़ज्र व ज़ोहर में मुख़्तलिफ़ मसाजिद में जाने की ज़िम्मादारी......

(3) ज़ोहर का दर्स......

www.dawateislami.net

(4) अ़स्र का ए'लान......

(5) अ़स्र का 12 मिनट का बयान......

(6) अ़स्र ता मग़रिब दर्स......

(7) अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत में जो इस्लामी भाई बाहर जाएंगे उन को इसी ह़ल्क़े में बता दिया जाए।

(8) अ़लाक़ाई दौरा का निगरान......

(9) मग़रिब का ए'लान......

(10) मग़रिब का बयान......

(11) इशा का दर्स......

(12) बा'दे इशा केसिट बयान या रसाइले अ़त्तारिय्या का दर्स......

(13) फ़ज्र का ए'लान......

(14) फ़ज्र का बयान......

(15) खाने की ख़ैर ख़्वाही की ज़िम्मादारी (दो इस्लामी भाई)......

(16) सोने वालों को जगाने की ज़िम्मादारी......

(17) मस्जिद की ख़ैर ख़्वाही की ज़िम्मादारी (म-षलन ट्यूब लाइट, पंखे, दरियां वग़ैरा की ख़ैर ख़्वाही)

(18) दर्सो बयान के वक़्त जाने वाले नमाज़ी इस्लामी भाइयों को रोकने वाले ख़ैर ख़्वाह......

इस्लामी भाइयों की ज़िम्मादारी......

जब येह ज़िम्मा दारियां तक़्सीम हो जाएं तो जिस इस्लामी को जो ज़िम्मादारी दी जाए वोह उसे अपने म-दनी पेड या डायरी में लिख ले और अमीरे क़ाफ़िला भी सब की ज़िम्मा दारियां अपने पास डायरी में तह़रीर कर ले ताकि वक़्तन फ़ वक़्तन इन को याद दिहानी करवा सके।

म-दनी मक़्सद का ह़ल्क़ा : (9:56 से 10:37)

इस ह़ल्क़े में अमीरे क़ाफ़िला इब्तिदाई 26 मिनट अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रसाइल से बयान करे, बयान इस अन्दाज़ में हो कि शु-रका बोर न हों, अमीरे क़ाफ़िला इस बयान के ज़रीए़ इस्लामी भाइयों को येह ज़ेहन दे कि "**मुझे नेक बनना है।**" इस बयान के ज़रीए़ अमीरे क़ाफ़िला शु-रका में ऐसा जज़्बा पैदा कर दे कि जो नमाज़ नहीं पढ़ते थे उन का नमाज़ पढ़ने का, जो म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र नहीं करते थे उन का म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने का, जो दर्स नहीं देते थे उन का दर्स देने का, जो बयान नहीं करते थे उन का बयान करने का, जो इजतिमाअ़ में नहीं आते थे उन का इजतिमाअ़ में आने का ज़ेहन बन जाए। अमीरे क़ाफ़िला इस बयान के ज़रीए़ इस्लामी भाइयों में म-दनी मक़्सद के तह़त नेकी की दा'वत का जज़्बा बेदार करे कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ"

www.dawateislami.net

हर इस्लामी भाई का येह ज़ेहन बनाए कि अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना है और आख़िर में रोज़ाना ज़ैली ह़ल्क़े के म-दनी कामों में से किसी एक म-दनी काम का ज़ेहन बनाए। ज़ैली ह़ल्क़े के म-दनी काम येह हैं :

(रोज़ाना के पांच म-दनी काम)

1. सदाए मदीना 2. बा'दे फ़ज्र म-दनी ह़ल्क़ा 3. मस्जिद दर्स 4. चौक दर्स 5. मद्र-सतुल मदीना बालिग़ाना।

(हफ़्तावार पांच म-दनी काम)

1. हफ़्तावार इजतिमाअ़ 2. यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़ 3. हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरा 4. हफ़्तावार मदनी ह़ल्क़ा 5. अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत

(माहाना दो म-दनी काम)

1. म-दनी इन्आ़मात 2. म-दनी क़ाफ़िला। मैं भी इन म-दनी कामों को करने की निय्यत करता हूं और आप भी निय्यत फ़रमा लीजिये। (اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ)

रसाइले अमीरे अहले सुन्नत مَدَّظِلُّهُ الْعَالِي से म-दनी क़ाफ़िलों में बयानात की तरकीब

3 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में तरतीब :

पहले दिन : "मैं सुधरना चाहता हूं"/ "मस्जिदें ख़ुश्बूदार रखिये"

दूसरे दिन : "दा'वते इस्लामी का तआ़रुफ़ या बहारें"

तीसरे दिन : "नेक बनने का नुस्ख़ा"

★ हर माह के तीन दिन के म-दनी क़ाफ़िले में मुख़्तलिफ़ रसाइल से बयानात की तरकीब बनाइये।

www.dawateislami.net

12 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में तरतीब :

(1) मैं सुधरना चाहता हूं (2) अनमोल हीरे
(3) नेक बनने का नुस्ख़ा (4) मस्जिदें ख़ुश्बूदार रखिये
(5) दा'वते इस्लामी का तआ़रुफ़ या मदनी बहारें (6) जोशे ईमानी
(7) ग़ीबत की तबाह कारियां (8) वीरान मह़ल
(9) एह़तिरामे मुस्लिम (10) ज़ुल्म का अन्जाम
(11) गुनाहों का इलाज (12) बादशाहों की हड्डियां

30 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में तरतीब :

प्यारे इस्लामी भाइयो ! चूंकि **30** दिन के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की तरकीब कुछ यूं होती है, पहले तीन दिन म-दनी क़ाफ़िले की तरबिय्यत होती है फिर बारह दिन के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र किया जाता है, फिर तीन दिन कारकर्दगी ली जाती है और मज़ीद तरबिय्यत होती है फिर बारह दिन के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र होता है, इस लिये म-दनी मक़्सद के बयान के रसाइल को दो ह़िस्सों में तक़्सीम किया गया है,

पहले बारह दिन

(**12** दिन के म-दनी क़ाफ़िले के मज़्कूरा बाला 12 रसाइल से बयानात की तरकीब बनाइये)

दूसरे बारह दिन

(1) क़ियामत का इमतिह़ान (2) मुर्दे के सदमे
(3) दा'वते इस्लामी की बहारें (4) कफ़न चोर के इनकिशाफ़ात
(5) शैत़ान के चार गधे (6) गाने बाजे की होल नाकियां

(7) अबू जह्ल की मौत (8) नह्र की सदाएं
(9) पुल सिरात़ की दहशत (10) ज़ुल्म का अन्जाम
(11) बुरे ख़ातिमे के अस्बाब (12) भयानक ऊंट

इनफ़िरादी इबादत का ह़ल्क़ा : (10:37 से 10:56)

(19 मिनट) इस ह़ल्क़े में अमीरे क़ाफ़िला कोशिश करे कि तमाम इस्लामी भाई इनफ़िरादी इबादत में मसरूफ़ हो जाएं, कोई तिलावते क़ुरआन में मसरूफ़ हो जाए, कोई **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ में मसरूफ़ हो जाए, कोई मदीने शरीफ़ की त़रफ़ रुख़ कर के 313 बार दुरूद शरीफ़ पढ़ने में मसरूफ़ हो जाए, कोई इस्लामी भाई श-जरह शरीफ़ से वज़ाइफ़ की तरकीब बनाए तो कोई 40 रूह़ानी इलाज से वज़ाइफ़ पढ़ने की तरकीब बनाए। कोई मुत़ा-लए़ में मसरूफ़ हो जाए। इस ह़ल्क़े में कोई भी इस्लामी भाई फ़ारिग़ न बैठे।

नेकी की दा'वत का ह़ल्क़ा : (10:56 से 11:08)

अमीरे क़ाफ़िला इस ह़ल्क़े में (12 मिनट) मुख़्तसर नेकी की दा'वत याद करवाए जो बख़ुशी सुनाना चाहे वोह खड़ा हो कर सुनाए। नेकी की दा'वत याद करवाने के बा'द तरग़ीबात भी याद करवाई जा सकती हैं। तरग़ीबात आख़िरी सफ़ह़ात पर मौजूद हैं।

इनफ़िरादी कोशिश का त़रीक़ा : (11:08 से 11:19)

इस ह़ल्क़े में अमीरे क़ाफ़िला इनफ़िरादी कोशिश का त़रीक़ा सिखाए और रोज़ाना इनफ़िरादी कोशिश के म-दनी फूलों से चन्द म-दनी फूल पेश करे।

www.dawateislami.net

इनफ़िरादी कोशिश के म-दनी फूल

(1) इनफ़िरादी कोशिश म-दनी कामों की जान है।

(2) **दा'वते इस्लामी** का तक़रीबन **99%** म-दनी काम इनफ़िरादी कोशिश से ही हो रहा है।

(3) इनफ़िरादी कोशिश की रूह़ **मिलन-सारी** है।

(4) इनफ़िरादी कोशिश करने वाले के लिये मुख़ात़ब (या'नी जिस से बात कर रहा है उस) की नफ़्सियात परखना बेह़द ज़रूरी है।

(5) इनफ़िरादी कोशिश हो या म-दनी क़ाफ़िला या इजतिमाअ़ के सुन्नतों भरे ह़ल्क़े हों या दीनो दुन्या का कोई सा मुआ़मला कहीं भी किसी एक फ़र्द से बराहे रास्त इस त़रह़ के सुवालात न किये जाएं जिस की वजह से उस के झूट में मुब्तला होने का ख़त़रा पैदा हो। ग़फ़लत व बे एह़तियात़ी का दौर है आज कल अकषर बिला तकल्लुफ़ **झूट** बोला जाने लगा है इस लिये सख़्त एह़तियात़ की ह़ाजत है।

(6) दो इस्लामी भाई मिल कर जाएं।

(7) आपस में गुफ़्तगू करने के बजाए ज़िक्रो दुरूद में मश्ग़ूल रहें।

(8) जिस किसी इस्लामी भाई के पास जाएं उसे सलाम करें और गर्मजोशी से मुलाक़ात करें।

(9) नाम वग़ैरा पूछ लें ताकि अजनबिय्यत कम हो जाए।

(10) इस के बा'द यूं कहे : "दा'वते इस्लामी का एक म-दनी क़ाफ़िला राहे ख़ुदा में सफ़र करता हुवा आप के यहां की............ मस्जिद में आया हुवा है।" (फिर दी गई तरग़ीबात में से किसी एक के

www.dawateislami.net

ज़रीए इनफ़िरादी कोशिश करें। तरग़ीबात सफ़्हा **141** पर मुला-ह़ज़ा करें)

(**11**) नमाज़ की तरग़ीब इस अन्दाज़ में दिलाइये कि वोह नमाज़ी हो तब भी उस को बुरा न लगे और बे नमाज़ी हो तब भी बोल न पड़े कि मैं बे नमाज़ी हूं, नीज़ उस के अ़लाक़े की उस मस्जिद में नमाज़ की दर-ख़्वास्त कीजिये जहां **दा'वते इस्लामी** का म-दनी काम हो रहा हो।

(**12**) **इजतिमाए व म-दनी क़ाफ़िले** की ब-रकतें और फ़ज़ीलतें बयान कीजिये। अगर सामने वाला सिर्फ़ "हां" कहे तो उस से اِنْ شَآءَاللّٰہعَزَّوَجَلَّ भी कहलवा लीजिये। और मुमकिना सूरत में येह भी कह दीजिये कि हमें मा'ना पर नज़र रखते हुए اِنْ شَآءَاللّٰہعَزَّوَجَلَّ कहने की आ़दत डालनी चाहिये "اِنْ شَآءَاللّٰہعَزَّوَجَلَّ" के मा'ना हैं "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो" और वाक़ेई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के चाहे बिग़ैर हम कुछ भी नहीं कर सकते।

(**13**) **अगर** म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र के लिये तय्यार हो जाए तो सफ़र की तारीख़ ले लीजिये, नाम व पता, फ़ोन नम्बर वग़ैरा अपने पास मह़फ़ूज़ कर लीजिये। और उस वक़्त तक राबित़ा करते रहिये जब तक सफ़र मुकम्मल कर लेने की सआ़दत ह़ासिल न कर ले।

(**14**) म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र के बा'द भी उस से मरबूत़ (या'नी राबिते़ में) रहिये यहां तक कि वोह **म-दनी माह़ोल** में रच बस कर दूसरों को **म-दनी क़ाफ़िले** का मुसाफ़िर बनाने वाला न बन जाए।

www.dawateislami.net

(15) हाथों हाथ मस्जिद में आने की दा'वत इस त़रह़ दें :
"اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस वक़्त मस्जिद में सीखने सिखाने का ह़ल्क़ा जारी है। आप भी इस में शिर्कत फ़रमा लीजिये।"

(16) अगर वोह तय्यार हो जाए तो उन को अपने साथ मस्जिद में ले आएं और ह़ल्क़े में शामिल कर दें।

(17) अगर वोह साथ चलने के लिये तय्यार न हों तो उन से पूछ लें कि "फिर आप किस वक़्त तशरीफ़ लाएंगे ? हम आप का इन्तिज़ार करेंगे।"

(18) इनफ़िरादी कोशिश के दौरान किसी से बह़्ष में हरगिज़ हरगिज़ न उलझें।

(19) अगर कोई तंग करे या डांट दे तो ख़ामोशी इख़्तियार करें और सब्र कर के ढेरों षवाब ह़ासिल करें।

(20) इनफ़िरादी कोशिश के लिये दिये गए 40 मिनट के वक़्त की पाबन्दी फ़रमाएं, ऐसा न हो कि कोई एक घन्टा इनफ़िरादी कोशिश में सर्फ़ कर दे तो कोई डेढ़ घन्टा। क्यूंकि इस सूरत में जदवल के दूसरे ह़ल्क़े मुतअष्षिर होंगे।

(21) आपस में किसी पर तनक़ीद न करें।

(22) अमीरे क़ाफ़िला के बारे में बद गुमानियां न करें।

(23) किसी ज़िम्मादार के बारे में बह़षो मुबाह़षा करने के बजाए सिर्फ़ और सिर्फ़ म-दनी क़ाफ़िले से म-दनी क़ाफ़िला तय्यार करने और वापस अ़लाक़े में जा कर जैली ह़ल्क़े में म-दनी काम करने के बारे में गुफ़्तगू करें।

www.dawateislami.net

(24) इनफ़िरादी कोशिश के दौरान कम अज़् कम तीन इस्लामी भाई मस्जिद में ही तशरीफ़ रखें और ज़ैली ह़ल्क़े के म-दनी कामों पर एक दूसरे का ज़ेह्न बनाएं ।

(25) 30 दिन और 12 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में जिन इस्लामी भाइयों को तरग़ीबात गुज़श्ता ह़ल्क़े में याद न हुई हों तो उन को इस ह़ल्क़े में भी याद करवाई जा सकती हैं और एक दूसरे को सुनाई जाएं ।

इनफ़िरादी कोशिश का ह़ल्क़ा : (11:20 से 12:00)

इस में इस्लामी भाई ﴾3﴿ नज़रें झुकाए बा वक़ार अन्दाज़ में ﴾4﴿ आ़म मुसलमानों के पास ख़ुद जा कर उन को सलाम कर के इस्लाहे़ आ'माल, गुनाहों से इजतिनाब और मौत व आख़िरत की सोच देते हुए म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र के लिये उन पर इनफ़िरादी कोशिश करें और हाथों हाथ मस्जिद में लाने की तरकीब भी बनाएं । ﴾5﴿ मुख़ात़ब के चेहरे पर निगाहें गाड़े बिग़ैर गुफ़्तगू करने की कोशिश फ़रमाएं । (इस की आ़दत बनाने के लिये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ कुफ़्ले मदीना के ऐनक का इस्ति'माल मुफ़ीद रहेगा) इसी दौरान कुछ इस्लामी भाई मस्जिद में ज़ैली ह़ल्क़े के म-दनी कामों पर एक दूसरे का ज़ेह्न बनाएं । इसी वक़्त में बा अषर शख़्सिय्यात म-षलन उ़-लमा, मशाइख़, चौधरी, वडेरों वग़ैरा से मुलाक़ात कर के दा'वते इस्लामी के शो'बाजात का तआ़रुफ़ और म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की दा'वत पेश करें । (41 मिनट)

www.dawateislami.net

इनफ़िरादी कोशिश के लिये तरग़ीबात

पहली तरग़ीब : राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में कुरबानियां

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! येह हमारी ख़ुश क़िस्मती है कि हम मुसलमान हैं। ज़रा ग़ौर कीजिये कि जिस इस्लाम का नूर हमें घर बैठे नसीब हो गया इस को फैलाने के लिये हमारे प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने कितनी तकालीफ़ उठाईं । कुफ़्फ़ारे बद अत़्वार आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को बेह़द सताते, बुरा भला कहते, आप की राहों में कांटे बिछाते, कभी सजदे की ह़ालत में आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की पुश्ते अत़हर पर ऊंट की ओझड़ी रख देते तो कभी आप के मुबारक गले में चादर का पट्टा डाल कर इस ज़ोर से खींचते कि आंखें उबल आतीं। जब आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم दा'वते इस्लाम के लिये ताइफ़ तशरीफ़ ले गए तो कुफ़्फ़ारे ना हनजार ने गालियां दीं, मज़ाक़ उड़ाया और पथराव तक किया जिस से जिस्मे नाज़नीन लहू लुहान हो गया और ना'लैन ख़ून से भर गईं । जब सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बे क़रार हो कर बैठ जाते तो कुफ़्फ़ारे जफ़ा कार बाज़ू थाम कर उठा देते। जब आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم दोबारा चलने लगते तो वोह फिर से पथ्थर बरसाने लगते। मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हिम्मत न हारी और मुसल्सल कोशिश जारी रखी, बिल आख़िर येह कोशिशें रंग लाईं और इस्लाम की रोशनी चारों अत़राफ़े आलम में फैल गई ।

www.dawateislami.net

आप ने देखा कि सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने किस क़दर मेह़नत व मशक़्क़त से इस्लाम की दा'वत दी और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم और औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی ने भी पैग़ामे इस्लाम को आ़म करने के लिये दुन्या भर में सफ़र इख़्तियार किया। उन्हों ने इस्लाम की ख़ात़िर राहे ख़ुदा में अपनी जानें तक क़ुरबान कीं। उन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या की कोशिशों ही का नतीजा है कि आज श-जरे इस्लाम हरा भरा नज़र आ रहा है।

मुसलमानों की चौदह सो सालह तारीख़ बताती है कि हम इ़ज़्ज़तो अ़-ज़मत और शानो शौकत के तन्हा मालिक थे मगर आह ! अब मुसलमानों की ह़ालते ज़ार हमारे सामने है और इस की वजह येह है कि वोह नमाज़ी थे और हमारी अकषरिय्यत बे नमाज़ी, वोह सुन्नत के दीवाने थे और हम फ़ेशन के मस्ताने, वोह ख़ुद भी नेकियां करते और दूसरों तक भी नेकी की दा'वत पहुंचाते थे जब कि हम न सिर्फ़ ख़ुद गुनाह करते हैं बल्कि दूसरों को भी गुनाहों के असबाब मुहय्या करते हैं, वोह इस्लाम की सर बुन्लदी की ख़ात़िर राहे ख़ुदा में सफ़र करते जब कि हम मह़ज़ माले दुन्या की जुस्त्जू में दूर दराज़ के सफ़र इख़्तियार करते हैं उन्हें नेकियां कमाने की जुस्त्जू जब कि हमें माल कमाने की आरज़ू। जो इस्लाम हमें सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم और औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की बे शुमार क़ुरबानियों के बा'द नसीब हुवा है, अफ़सोस सद अफ़सोस ! उस की तरक़्क़ी व इशाअ़त की हमें बिलकुल फ़िक्र नहीं। आज मुसलमान तर्के नमाज़ और दीगर गुनाहों पर दिलेर हो चुका है, मस्जिदें वीरान और गुनाहों के अड्डे आबाद हैं, हर त़रफ़ ग़फ़लत का दौर दौरा है।

www.dawateislami.net

प्यारे भाई ! अ़न क़रीब हमें भी मरना है, अंधेरी क़ब्र में उतरना है और अपनी करनी का फल भुगतना है। क़ब्र की होलनाक तारीकी और क़ियामत का दह़्शत नाक मन्ज़र, येह भुलाने वाली बातें नहीं हैं। सरकारे मदीना صَلَّى اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द अब किसी को नुबुव्वत नहीं मिलेगी, अब हम ग़ुलामाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है और इस का मुअष्षर तरीन ज़रीआ़ आ़शिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना है। इस के लिये वक़्त, माल और जान की कुरबानी पेश करना और तकालीफ़ पर सब्र करना, येह सब अ़ज़ीम सुन्नतें हैं। म-दनी क़ाफ़िलों में इ़ल्मे दीन ह़ासिल होता है और इ़ल्मे दीन की फ़ज़ीलत के क्या कहने......

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मैं ने रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना कि "जो इ़ल्म की तलाश में किसी रास्ते पर चलता है तो **अल्लाह तआ़ला** उस के लिये जन्नत का रास्ता आसान फ़रमा देता है और बेशक फ़िरिश्ते त़ालिबे इ़ल्म के अ़मल से ख़ुश हो कर उस के लिये अपने पर बिछा देते हैं और बेशक ज़मीन व आस्मान में रहने वाले यहां तक कि पानी में मछलियां आ़लिमे दीन के लिये इस्तिग़फ़ार करती हैं और आ़लिम की आ़बिद पर फ़ज़ीलत ऐसी है जैसी चौदहवीं रात के चांद की दीगर सितारों पर और बेशक उ़-लमा वारिषे अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلام हैं बेशक अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلام दिरहम व दीनार का वारिष नहीं बनाते बल्कि येह नुफ़ूसे कुदसिय्या عَلَیْہِمُ السَّلام तो सिर्फ़ इ़ल्म का वारिष बनाते हैं तो जिस ने इसे ह़ासिल कर लिया उस ने बड़ा ह़िस्सा पा लिया।" (سنن ابن ماجہ ، کتاب السنۃ، الحدیث:۲۲۳،ج۱،ص۱٤٥)

www.dawateislami.net

प्यारे भाई ! ज़रा ग़ौर कीजिये कि दुन्यावी ज़रूरिय्यात को पूरा करने और आसाइशों के हुसूल के लिये लोग कई कई साल के लिये अपने वालिदैन, बीवी बच्चों और दोस्त अह़बाब को छोड़ कर अपने वत़न से दूर दूसरे मुमालिक का सफ़र इख़्तियार करते हैं । आख़िरत का मुआ़मला तो दुन्या से कहीं ज़ियादा अहम तरीन है, मैं आप से सिर्फ़ तीस दिन की दर-ख़्वास्त करता हूं, बराए करम तीस दिन के लिये म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र की निय्यत फ़रमा लें और अपना नाम भी लिखवा दीजिये । **अल्लाह तआ़ला** आप को और मुझे दोनों जहां की भलाइयां नसीब फ़रमाए ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

दूसरी तरग़ीब : वक़्त की क़द्र

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने हमें अशरफ़ुल मख़्लूक़ात बनाया और अपने प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सदके़ में ईमान अ़त़ा फ़रमाया । हमारे लिये इस दुन्या में त़रह़ त़रह़ की ने'मतें पैदा फ़रमाईं । जिस त़रह़ चांद, सूरज, हवा, पानी येह सब उस की अ़ज़ीम ने'मतें हैं ।

प्यारे इस्लामी भाई ! इसी त़रह़ वक़्त और ज़िन्दगी भी **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की ने'मत है । खोई हुई दौलत तो दोबारा ह़ासिल हो सकती है, मगर खोया हुवा वक़्त लाख कोशिश के बा वुजूद वापस नहीं आ सकता । ह़ज़रते सय्यिदुना मा'क़िल बिन यसार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "कोई दिन ऐसा नहीं जो दुन्या में आए और वोह येह

www.dawateislami.net

निदा न करे : ‘‘ऐ इब्ने आदम ! मैं तेरे हां जदीद मख़्लूक़ हूं, आज तू मुझ में जो अ़मल करेगा मैं कल क़ियामत के दिन उस की गवाही दूंगा, तू मुझ में नेकी कर ताकि मैं तेरे लिये कल क़ियामत में नेकी की गवाही दूं, मेरे चले जाने के बा'द तू कभी मुझे न देख सकेगा।’’

(حلية الاولياء، الحديث:١٥٠١،ج٢، ص٣٤٤)

दुन्या में वोही लोग काम्याब ठहरे जिन्हों ने वक़्त की क़द्र की। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से और वक़्त की क़द्र करने की ब-रकत से अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی ‘‘ग़ौषुल आ'ज़म’’ कहलाए, अ़ली हिजवेरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ‘‘दाता गन्ज बख़्श’’ मश्हूर हुए और मोईनुद्दीन رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ‘‘ख़्वाजा ग़रीब नवाज़’’ बनने का ए'ज़ाज़ पाया।

प्यारे इस्लामी भाई ! हमें चाहिये कि अपने वक़्त को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त में गुज़ारें और इस के लिये नेक सोह़बत इख़्तियार करना बेह़द ज़रूरी है। प्यारे आक़ा, मक्की म-दनी सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमियान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ‘‘अच्छे और बुरे मुसाहिब की मिसाल, मुश्क उठाने वाले और भट्टी झोंकने वाले की त़रह़ है, कस्तूरी उठाने वाला तुम्हें तोह़फ़ा देगा या तुम उस से ख़रीदोगे या तुम्हें उस से उ़म्दा ख़ुश्बू आएगी, जब कि भट्टी झोंकने वाला या तुम्हारे कपड़े जलाएगा या तुम्हें उस से ना गवार बू आएगी।’’

(صحيح مسلم،كتاب البر و الصلة، باب استحباب مجالسة الصالحين، الحديث:٢٦٢٨،ص١٤١٤)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ येह नेक सोहबत हमें दा'वते इस्लामी का पाकीज़ा माहोल फ़राहम करता है। इस म-दनी माहोल की ब-रकत से लाखों मुसलमानों को गुनाहों से तौबा की तौफ़ीक़ मिली और वोह ताइब हो कर सलातो सुन्नत की राह पर गामज़न हो गए। जो बे नमाज़ी थे नमाज़ी बन गए, बद निगाही के आ़दी निगाहें नीची रखने की सुन्नत पर अ़मल करने वाले बन गए, गाने सुनने के शौक़ीन सुन्नतों भरे बयानात और म-दनी मुज़ा-करात के केसिट सुनने वाले बन गए, फ़ोहूश कलामी करने वाले ना'ते मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पढ़ने वाले बन गए, यूरोपी ममालिक की रंगीनियों को देखने के ख़्वाब अपनी आंखों में सजाने वाले गुम्बदे ख़ज़रा की ज़ियारत के लिये तड़पने वाले बन गए, माल की मह़ब्बत में गुम रहने वाले फ़िक्रे आख़िरत में मुब्तला रहने वाले बन गए, फ़ोहूश रसाइल व डायजेस्ट के रस्या अमीरे अहले सुन्नत مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی व उ़-लमाए अहले सुन्नत دامت فُیُوضُھُم के रसाइल और दीगर दीनी कुतुब का मुत़ालआ़ करने वाले बन गए, तफ़रीह़ की ख़ात़िर टूर पर जाने के आ़दी राहे ख़ुदा में सफ़र करने वाले बन गए, "खाओ पियो और जान बनाओ" के ना'रे को अपनी ज़िन्दगी का मह़्वर क़रार देने वाले इस म-दनी मक़सद को अपनाने वाले बन गए कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ"

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िले 3 दिन, 12 दिन, 30 दिन और 12 माह के लिये राहे ख़ुदा में सफ़र की सआ़दत ह़ासिल करते रहते हैं। इन म-दनी क़ाफ़िलों की ब-रकत से पंज वक़्ता नमाज़ की पाबन्दी के साथ साथ

www.dawateislami.net

प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतें भी सीखने को मिलती हैं और इल्मे दीन के लिये सफ़र का षवाब अलग से ह़ासिल होता है। आप भी म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र की निय्यत फ़रमा लीजिये। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को बार बार मक्का शरीफ़ और मदीने शरीफ़ का सफ़र नसीब फ़रमाए। اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالى عليه واٰله وسلَّم

तीसरी तरग़ीब : नेकी की दा'वत

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ हम मुसलमान हैं और मुसलमान का हर काम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ुशनूदी के लिये होना चाहिये, मगर बद क़िस्मती से हमारी अकषरिय्यत नेकी के रास्ते से दूर होती जा रही है, शायद इसी वजह से हमें त़रह़ त़रह़ की परेशानियों का सामना है, कोई बीमार है तो कोई क़र्ज़दार, कोई घरेलू ना चाक़ियों का शिकार है तो कोई तंगदस्तो बे रोज़गार, कोई अवलाद का त़लब गार है तो कोई ना फ़रमान अवलाद की वजह से बेज़ार, अल ग़रज़ हर एक किसी न किसी मुसीबत में गरिफ़्तार है यक़ीनन दुन्या व आख़िरत की हर परेशानी का वाह़िद ह़ल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के बताए हुए कामों में लग जाना है

मुसलमानों के लिये सब से पहला फ़र्ज़ नमाज़ है मगर अफ़्सोस! कि हमारी मस्जिदें वीरान हैं, यक़ीनन "नमाज़ दीन का सुतून है।"

(کنز العمال، کتاب الصلاۃ،الفصل الثانی فی فضائل الصلاۃ،الحدیث:۱۸۸۸۵،ج۷،ص۱۱۵)

नमाज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुशनूदी का सबब है, नमाज़ से रह़मत नाज़िल होती है, नमाज़ से गुनाह मुआफ़ होते हैं, नमाज़ बीमारियों से बचाती है, नमाज़ दुआओं की क़बूलिय्यत का सबब है।

(كنز العمال،الحديث:١٩٠٣٦،ج٧،ص١٢٧)

नमाज़ से रोज़ी में ब-रकत होती है, नमाज़ अंधेरी क़ब्र का चराग़ है, नमाज़ जन्नत की कुन्जी है।

(المسند للامام احمد بن حنبل،حديث:١٤٦٦٨،ج٥،ص١٠٣)

नमाज़ मोमिन का नूर है। (الجامع الصغير،باب الصاد،الحديث:٥١٨٠،ص٣١٩)

नमाज़ मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की आंखों की ठन्डक है। (كنز العمال،كتاب الصلاة،باب في فضائل الصلاة،الفصل الثانى،الحديث:١٨٩٠٨،ج٧،ص١١٧)

नमाज़ पुल सिरात़ के लिये आसानी है, नमाज़ी को सरकार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त नसीब होगी।

बे नमाज़ी से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नाराज़ होता है, जो जान बूझ कर एक नमाज़ भी छोड़ देता है उस का नाम जहन्नम के दरवाज़े पर लिख दिया जाता है।

(المرجع السابق،باب الترهيب عن ترك الصلاة،الحديث١٩٠٨٦،ج٧،ص١٣٢)

ज़िन्दगी बेह़द मुख़्तसर है, यक़ीनन समझदार वोही है जो जितना दुन्या में रहना है उतना दुन्या के लिये और जितना अ़र्सा क़ब्रो आख़िरत का है उतनी क़ब्रो आख़िरत की तय्यारी में मश्ग़ूल रहे, कई हंसते बोलते इन्सान अचानक मौत का शिकार हो कर देखते ही देखते अंधेरी क़ब्र में पहुंच जाते हैं इसी त़रह़ हमें भी मरना पड़ेगा अंधेरी क़ब्र में उतरना पड़ेगा अपनी करनी का फल भुगतना पड़ेगा। ह़दीष शरीफ़

में है : "क़ब्र रोज़ाना पुकार कर कहती है : ऐ आदमी ! क्या तू मुझे भूल गया ? याद रख मैं तन्हाई का घर हूं, मैं अजनबिय्यत का घर हूं, मैं घबराहट का घर हूं, मैं कीड़े मकोड़ों का घर हूं, मैं तंगी का घर हूं, मगर जिस के लिये **अल्लाह तआ़ला** मुझे वसीअ़ कर दे ।" फिर आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने मज़ीद इर्शाद फ़रमाया : "क़ब्र जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है या दोज़ख़ के गढ़ों में से एक गढ़ा ।"

(المعجم الاوسط، الحديث:٨٦١٣،ج٦،ص٢٣٢)

जब क़ब्र से निकलेंगे तो क़ियामत का पचास हज़ार सालह दिन होगा, सूरज एक मील पर रह कर आग बरसा रहा होगा, तांबे की दहकती हुई ज़मीन पर नंगे पाउं खड़ा किया जाएगा, ह़दीष शरीफ़ में है : "उस वक़्त तक बन्दा क़ियामत के रोज़ क़दम नहीं हटा सकेगा जब तक उस से पांच सुवालात न कर लिये जाएं (1) उ़म्र किस काम में सर्फ़ की ? (2) जवानी कैसे गुज़ारी ? (3,4) माल किस त़रह़ कमाया और किस त़रह़ ख़र्च किया ? (5) अपने इ़ल्म पर कहां तक अ़मल किया ?"

(سنن الترمذی، کتاب صفة القيامة،باب فی القيامة، الحديث:٢٤٢٤،ج٤،ص١٨٨)

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत का दर्द ले कर "दा'वते इस्लामी" का एक म-दनी क़ाफ़िला आप के अ़लाक़े की............ मस्जिद में आया हुवा है, बराए करम ! आप भी अपने क़ीमती वक़्त में से चन्द लम्ह़ात **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللهُ تعالٰی علیه واٰلهٖ وسلَّم की ख़ुशनूदी के लिये हमें दीजिये और मस्जिद में तशरीफ़ ले चलिये मस्जिद में सुन्नतों भरा दर्स जारी है, اِنْ شَآءَاللهُ عَزَّوَجَلَّ षवाब का बहुत बड़ा ख़ज़ाना

www.dawateislami.net

आप के हाथ आएगा जैसा कि सरवरे आ़लम, नूरे मुजस्सम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया :

"ऐ अबू ज़र ! सुब्ह़ के वक़्त तेरा **किताबुल्लाह** से एक आयत सीखना तेरे लिये सो100 रक्अ़तें अदा करने से अच्छा है और सुब्ह़ के वक़्त तेरा इ़ल्म की एक बात सीखना हज़ार रक्अ़त नमाज़ पढ़ने से अच्छा है ख़्वाह उस पर अ़मल हो या न हो।"

(سنن ابن ماجه ، كتاب السنة ،باب في فضل من تعلم....الخ ،الحديث:٢١٩، ج١،ص١٤٢)

अगर आप के पास वक़्त है तो अभी तशरीफ़ ले चलिये। **अल्लाह तआ़ला** आप को और हमें दोनों जहां की भलाइयां नसीब फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

चौथी तरग़ीब : अल्लाह तआ़ला की बारगाह में ह़ाज़िरी

प्यारे इस्लामी भाई ! इस ह़क़ीक़त से किसी मुसलमान को इन्कार नहीं हो सकता कि मुख़्तसर सी ज़िन्दगी के अय्याम गुज़ारने के बा'द हर एक को अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर तमाम आ'माल का ह़िसाब देना है। हर एक की ह़ाज़िरी का अन्दाज़ मुख़्तलिफ़ होगा, कोई गर्मी की वजह से अपने पसीने में डुबकियां खा रहा होगा और किसी को अपनी ज़िल्लतो रुस्वाई का ख़ौफ़ अपनी लपेट में लिये हुए होगा, किसी की कमर भूक की वजह से झुक चुकी होगी तो कोई प्यास के मारे बिलबिला रहा होगा, किसी का रंग जहन्नम को देख कर ज़र्द पड़ गया होगा तो कोई जन्नत से मह़रूमी की बिना पर अश्के नदामत बहा रहा होगा लेकिन इस के बर अ़क्स कुछ ख़ुश नसीब ऐसे भी होंगे जिन्हें उस दिन न तो कोई ख़ौफ़

www.dawateislami.net

होगा और न कोई ग़म, वोह अ़र्श के साए में होंगे, उन्हें सीधे हाथ में आ'माल नामा दिया जाएगा, हौज़े कौषर से छलकते हुए जाम पीने को मिलेंगे, पुल सिरात़ से बिजली की सी तेज़ी से गुज़र जाएंगे और उन्हें जन्नत में दाख़िला नसीब होगा। यक़ीनन पहला गुरौह उन लोगों का होगा जिन्हों ने अपनी ज़िन्दगी **अल्लाह तआ़ला** की ना फ़रमानियों में बसर की होगी, जब कि दूसरा गुरौह उन बन्दों का होगा जिन की ज़िन्दगी **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त में गुज़री होगी।

प्यारे भाई ! अगर हम मैदाने मह़शर की परेशानी से बचना चाहते हैं तो हमें अपनी मुख़्तसर सी ज़िन्दगी इस त़रह़ से गुज़ारनी चाहिये कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ हम से राज़ी हो जाए। इस मक़सद को पाने के लिये इ़ल्मे दीन की ह़ाजत है और इ़ल्मे दीन के ह़ुसूल के लिये बेहतरीन ज़रीआ़ राहे ख़ुदा में सफ़र करने वाले आ़शिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना भी है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िले 3 दिन, 12 दिन, 30 दिन और 12 माह के लिये राहे ख़ुदा में सफ़र की सआ़दत ह़ासिल करते रहते हैं। इन म-दनी क़ाफ़िलों की ब-रकत से पंज वक़्ता नमाज़ की पाबन्दी के साथ साथ प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतें भी सीखने को मिलती हैं और इ़ल्मे दीन के लिये सफ़र का षवाब अलग से ह़ासिल होता है जैसा कि ह़ज़रते अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मैं ने नबिय्ये करीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالتَّسْلِیم को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना कि "जो इ़ल्म की तलाश में किसी रास्ते पर चलता है तो

www.dawateislami.net

अल्लाह तआ़ला उस के लिये जन्नत का रास्ता आसान फ़रमा देता है और बेशक फ़िरिश्ते त़ालिबे इ़ल्म के अ़मल से ख़ुश हो कर उस के लिये अपने पर बिछा देते हैं और बेशक ज़मीन व आस्मान में रहने वाले यहां तक कि पानी में मछलियां आ़लिमे दीन के लिये इस्तिग़्फ़ार करती हैं और आ़लिम की आ़बिद पर फ़ज़ीलत ऐसी है जैसी चौदहवीं रात के चांद की दीगर सितारों पर और बेशक उ़-लमा अम्बिया عَلَيۡهِمُ السَّلام के वारिष हैं बेशक अम्बिया عَلَيۡهِمُ السَّلَام दिरहम व दीनार का वारिष नहीं बनाते बल्कि येह नुफ़ूसे क़ुदसिय्या عَلَيۡهِمُ السَّلَام तो सिर्फ़ इ़ल्म का वारिष बनाते हैं तो जिस ने इसे ह़ासिल कर लिया उस ने बड़ा ह़िस्सा पा लिया।"

(سنن ابن ماجه، كتاب السنة،باب فضل العلماء...الخ،الحديث:٢٢٣،ج١، ص١٤٥)

इस के इ़लावा जब हम अपनी रोज़ मर्रा की दुन्यावी मसरूफ़िय्यात तर्क कर के अपने घर वालों और दोस्तों की सोह़बत छोड़ कर इन क़ाफ़िलों में सफ़र करेंगे तो इन क़ाफ़िलों में सफ़र के दौरान हमें अपने त़र्ज़े ज़िन्दगी पर दियानत दाराना ग़ौरो फ़िक्र का मौक़अ़ मुयस्सर आएगा, अपनी आख़िरत को बेहतर से बेहतर बनाने की ख़्वाहिश दिल में पैदा होगी, जिस के नतीजे में अब तक किये जाने वाले गुनाहों के इरतिकाब पर नदामत मह़सूस होगी और तौबा की तौफ़ीक़ मिलेगी।

इन क़ाफ़िलों में मुसल्सल सफ़र करने के नतीजे में फ़ोह़्श कलामी और फ़ुज़ूल गोई की जगह ज़बान से दुरूदे पाक जारी हो जाएगा, येह तिलावते क़ुरआन, ह़म्दे इलाही और ना'ते रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की आ़दी बन जाएगी, दुन्या की मह़ब्बत में डूबा

www.dawateislami.net

हुवा दिल आख़िरत की बेहतरी के लिये बेचैन हो जाएगा, अग़्यार की वज़्अ़ क़त़्अ़ पर इतराने वाला जिस्म अपने प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों का आईना दार बन जाएगा, ग़ैरों के त़रीक़ों को छोड़ कर अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السّلام के नक़्शे क़दम पर चलने की तड़प नसीब होगी, यूरोपी ममालिक की रंगीनियों को देखने की ख़्वाहिश दम तोड़ देगी और **मक्कतुल मुकर्रमह** व **मदीनतुल मुनव्वरह** के मुक़द्दस सफ़र की दीवानगी नसीब होगी, वक़्त की दौलत को मह़्ज़ दुन्या कमाने के लिये सर्फ़ करने के बजाए अपनी आख़िरत की बेहतरी के लिये ख़िदमते दीन में सर्फ़ करने का शुऊ़र नसीब होगा اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ । आप भी म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की निय्यत फ़रमा लें ।

सुन्नतें सीखने का ह़ल्क़ा : (12:00 से 12:30)

इस ह़ल्क़े में 3 दिन, 12 दिन और 30 दिन के म-दनी क़ाफ़िलों में सुन्नतें सीखने की तरतीब अलग अलग होगी । अमीरे क़ाफ़िला सुन्नतें सिखाते हुए मह़ब्बत व प्यार से तरकीब बनाए, हरगिज़ हरगिज़ किसी को न डांटे और याद रहे इस ह़ल्क़े में सुन्नतें सिखानी और याद करवानी हैं और साथ साथ इन सुन्नतों पर अ़मल का ज़ेह्न भी बनाना है, ऐसा न हो कि शु-रका को खड़ा कर के सुन्नतें सुनाने पर ज़ोर दिया जाए। याद करने के बा'द कोई ख़ुद सुनाना चाहे तो उस की मरज़ी लेकिन अमीरे क़ाफ़िला इस मुआ़मले में शु-रका पर हरगिज़ हरगिज़ सख़्ती न करे ।

है फ़लाह़ो कामरानी नर्मी व आसानी में

हर बना काम बिगड़ जाता है नादानी में

www.dawateislami.net

हर माह तीन दिन के म-दनी क़ाफ़िले में सुन्नतें और आदाब सीखने के 12 माह का जदवल

मुह़र्रमुल ह़राम में 3 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में सुन्नतें व आदाब सीखने की तरतीब :

पहला दिन : जनाज़े को कन्धा देने की सुन्नतें और आदाब (नमाज़ के अह़काम सफ़ह़ा नम्बर 388)

दूसरा दिन : क़ब्रिस्तान में दाख़िल होने की सुन्नतें और आदाब (इसी किताब का सफ़ह़ा 656)

तीसरा दिन : क़ब्र पर मिट्टी डालने की सुन्नतें और आदाब (नमाज़ के अह़काम सफ़ह़ा नम्बर 469)

स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र में 3 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में सुन्नतें व आदाब सीखने की तरतीब :

पहला दिन : इस्तिन्जा की सुन्नतें और आदाब (इसी किताब का सफ़ह़ा 660)

दूसरा दिन : ह़जामत और मूए ज़ेरे नाफ़ की सुन्नतें और आदाब (इसी किताब का सफ़ह़ा 589)

तीसरा दिन : इमामा शरीफ़ की सुन्नतें और आदाब (इसी किताब का सफ़ह़ा 644)

रबीउ़ल अव्वल में 3 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में सुन्नतें व आदाब सीखने की तरतीब :

पहला दिन : लिबास पहनने की सुन्नतें और आदाब (इसी किताब का सफ़ह़ा 640)

दूसरा दिन : सुरमा लगाने की सुन्नतें और आदाब (इसी किताब का सफ़ह़ा 580)

तीसरा दिन : मुआ़-नक़ा करने की सुन्नतें और आदाब (इसी किताब का सफ़ह़ा 542)

रबीउ़ल आख़िर में 3 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में सुन्नतें व आदाब सीखने की तरतीब :

पहला दिन : ख़ुश्बू लगाने की सुन्नतें और आदाब (इसी किताब का सफ़ह़ा 613)

दूसरा दिन : तेल और कंघा करने की सुन्नतें और आदाब (इसी किताब का सफ़ह़ा 603)

तीसरा दिन : नाख़ुन काटने की सुन्नतें और आदाब (इसी किताब का सफ़ह़ा 593)

www.dawateislami.net

जुमादल ऊला में 3 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में सुन्नतें व आदाब सीखने की तरतीब :

पहला दिन : पानी पीने की सुन्नतें और आदाब (इसी किताब का सफ़हा 628)

दूसरा दिन : मस्जिद में दाख़िल होने की सुन्नतें और आदाब (इसी किताब का सफ़हा 65)

तीसरा दिन : मस्जिद में बैठने के आदाब और म-दनी फूल (इसी किताब का सफ़हा 68)

जुमादल उख़रा में 3 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में सुन्नतें व आदाब सीखने की तरतीब :

पहला दिन : मजलिस में बैठने की सुन्नतें और आदाब (इसी किताब का सफ़हा 637)

दूसरा दिन : चलने की सुन्नतें और आदाब (इसी किताब का सफ़हा 632)

तीसरा दिन : मुसा-फ़हा करने की सुन्नतें और आदाब (इसी किताब का सफ़हा 549)

र-जबुल मुरज्जब में 3 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में सुन्नतें व आदाब सीखने की तरतीब :

पहला दिन : मेहमान नवाज़ी की सुन्नतें और आदाब (इसी किताब का सफ़हा 667)

दूसरा दिन : ज़ीनत की सुन्नतें और आदाब (इसी किताब का सफ़हा 609)

तीसरा दिन : छींकने की सुन्नतें और आदाब (इसी किताब का सफ़हा 585)

शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म में 3 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में सुन्नतें व आदाब सीखने की तरतीब :

पहला दिन : तयम्मुम का त़रीक़ा व म-दनी फूल (नमाज़ के अह़काम का सफ़हा 128)

दूसरा दिन : ज़ुल्फ़ें रखने की सुन्नतें और आदाब (इसी किताब का सफ़हा 596)

तीसरा दिन : बातचीत की सुन्नतें और आदाब (इसी किताब का सफ़हा 552)

र-मज़ानुल मुबारक में 3 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में सुन्नतें व आदाब सीखने की तरतीब :

पहला दिन : खाना खाने की सुन्नतें और आदाब (इसी किताब का सफ़हा 621)

दूसरा दिन : सलाम करने की सुन्नतें और आदाब (इसी किताब का सफ़हा 527)

तीसरा दिन : मिस्वाक की सुन्नतें और आदाब (इसी किताब का सफ़हा 653)

शव्वालुल मुकर्रम में 3 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में सुन्नतें व आदाब सीखने की तरतीब :

पहला दिन : सफ़र की सुन्नतें और आदाब (इसी किताब का सफ़ह़ा 568)

दूसरा दिन : घर में आने जाने की सुन्नतें और आदाब (इसी किताब का सफ़ह़ा 557)

तीसरा दिन : जूते पहनने की सुन्नतें और आदाब (इसी किताब का सफ़ह़ा 646)

ज़ी क़ा'दतुल ह़राम में 3 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में सुन्नतें व आदाब सीखने की तरतीब :

पहला दिन : सोने की सुन्नतें और आदाब (इसी किताब का सफ़ह़ा 649)

दूसरा दिन : तेल लगाने की सुन्नतें और आदाब (इसी किताब का सफ़ह़ा 603)

तीसरा दिन : सुरमा लगाने की सुन्नतें और आदाब (इसी किताब का सफ़ह़ा 580)

ज़िल ह़िज्जतिल ह़राम में 3 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में सुन्नतें व आदाब सीखने की तरतीब :

पहला दिन : ह़जामत और मूए ज़ेरे नाफ़ की सुन्नतें और आदाब (इसी किताब का सफ़ह़ा 589)

दूसरा दिन : मेहमान नवाज़ी की सुन्नतें और आदाब (इसी किताब का सफ़ह़ा 667)

तीसरा दिन : बैठने की सुन्नतें और आदाब (इसी किताब का सफ़ह़ा 637)

12 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में "सुन्नतें" सीखने सिखाने की तरकीब :

(1) खाने की सुन्नतें और आदाब
(2) इस्तिन्जा की सुन्नतें और आदाब
(3) मिस्वाक की सुन्नतें और आदाब
(4) उठने और बैठने की सुन्नतें और आदाब
(5) सोने की सुन्नतें और आदाब
(6) सीखी हुई सुन्नतों की दोहराई
(7) पानी पीने की सुन्नतें और आदाब
(8) इ़त्र लगाने की सुन्नतें और आदाब
(9) छींकने की सुन्नतें और आदाब
(10) घर में आने जाने की सुन्नतें और आदाब
(11) सर में तेल डालने की सुन्नतें और आदाब
(12) सीखी हुई सुन्नतों की दोहराई

www.dawateislami.net

30 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में "सुन्नतें" सीखने सिखाने की तरतीब :

पहले बारह दिन में

(1) सलाम की सुन्नतें और आदाब (2) खाने की सुन्नतें और आदाब

(3) मिस्वाक शरीफ़ की सुन्नतें और आदाब (4) इमामा की सुन्नतें और आदाब

(5) इस्तिन्जा की सुन्नतें और आदाब (6) सीखी हुई सुन्नतों की दोहराई

(7) सोने की सुन्नतें और आदाब (8) पीने की सुन्नतें और आदाब

(9) गुफ़्तगू की सुन्नतें और आदाब (10) इत्र लगाने की सुन्नतें और आदाब

(11) लिबास की सुन्नतें और आदाब (12) सीखी हुई सुन्नतों की दोहराई

दूसरे बारह दिन में

(1) छींकने की सुन्नतें और आदाब (2) घर में आने जाने की सुन्नतें और आदाब

(3) सुरमा लगाने की सुन्नतें और आदाब (4) तेल लगाने की सुन्नतें और आदाब

(5) ज़ीनत की सुन्नतें और आदाब (6) सीखी हुई सुन्नतों की दोहराई

(7) जूते पहनने की सुन्नतें और आदाब (8) मुसा-फ़हा की सुन्नतें और आदाब

(9) मेहमान नवाज़ी की सुन्नतें और आदाब (10) नाखुन व हजामत वग़ैरा की सुन्नतें और आदाब

(11) क़र्ज़ की सुन्नतें और आदाब (12) सीखी हुई सुन्नतों की दोहराई

*नोट : सुन्नतें और आदाब आयन्दा सफ़हात (**527**) में मुला-हज़ा फ़रमाएं ।*

www.dawateislami.net

वक़्फ़ए त़आ़म : (12:30)

फिर खाना तनावुल फ़रमाइये। (भूक से कम खाने का ज़ेह्न देते हुए तीन उंगलियों से खाने की सुन्नत पर अ़मल का मश्वरा भी दीजिये इस की आ़दत डालने और दूसरों को डलवाने के लिये थोड़े से रबड़ बेंड जेब में रख लिये जाएं। हर खाने के मौक़अ़ पर बिन्सर या'नी छुंगलिया के बराबर वाली उंगली को मोड़ कर उस में रबड़ बेंड डाल लेना, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुफ़ीद रहेगा, मगर अमीरे क़ाफ़िला येह वज़ाह़त ज़रूर करता रहे कि हम सुन्नत की आ़दत बनाने के लिये ऐसा कर रहे हैं, वरना उंगली बांधना सुन्नत भी नहीं और मन्अ़ भी नहीं) मुमकिन हो तो ﴾6﴿ मिट्टी के बरतन भी ज़रूर इस्ति'माल कीजिये।

चौक दर्स :

अज़ाने ज़ोहर से 12 मिनट क़ब्ल किसी बा रौनक़ मक़ाम पर हुक़ूके़ आ़म्मा का ख़याल रखते हुए म-षलन राह चलने वाले मुसलमानों और मवेशियों वग़ैरा का रास्ता रोके बिग़ैर ﴾7﴿ रोज़ाना कम अज़् कम दो दर्स देने की निय्यत के साथ फ़ैज़ाने सुन्नत से 7 मिनट चौक दर्स दीजिये।

﴾8﴿ अज़ान होने पर ख़ामोश हो जाइये और अज़ान का जवाब दीजिये। इस दौरान इशारे से गुफ़्त्गू और रखने उठाने वग़ैरा के कामों से भी इजतिनाब कीजिये (अज़ानो इक़ामत के वक़्त हमेशा इसी त़रह एहतिमाम फ़रमाइये) हर इस्लामी भाई कम अज़् कम एक इस्लामी भाई

www.dawateislami.net

को साथ ला कर नमाज़े ज़ोहर ﴾9﴿ मअ़ सुन्नते क़ब्लिय्या ﴾10﴿ पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ ﴾11﴿ ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ की सअ़य करते हुए बा जमाअ़त अदा करे। बा'द नमाज़ पूरे आदाब का ख़याल रखते हुए दुआ़ मांगिये। जो इस्लामी भाई क़रीब की मस्जिदों में दर्स के लिये जाएंगे वोह चौक दर्स के बा'द रवाना हो जाएं। अलबत्ता उन में से कोई इस्लामी भाई मस्जिद में हो और अज़ान हो जाए तो अब उसे दूसरी मस्जिद में जाने की इजाज़त नहीं चुनान्चे

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़बूआ़ **1250** सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द अव्वल हिस्सा **4** सफ़्ह़ा **697** पर है :

मस्अला : जिस शख़्स ने नमाज़ न पढ़ी हो उसे मस्जिद से अज़ान के बा'द निकलना मकरूहे तह़रीमी है। हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**अज़ान** के बा'द जो मस्जिद से चला गया और किसी ह़ाजत के लिये नहीं गया और न वापस होने का इरादा है वोह मुनाफ़िक़ है।"

(سنن ابن ماجه، کتاب الاذان و السنة فيها،باب اذا اذن...الخ الحديث:۷۳۴،ج ۱،ص ۴۰۵)

मस्अला : जो शख़्स किसी दूसरी मस्जिद की जमाअ़त का मुन्तज़िम हो, म-षलन इमाम या मुअज़्ज़िन हो कि उस के होने से लोग होते हैं वरना मु-तफ़र्रिक़ हो जाते हैं ऐसे शख़्स को इजाज़त है कि यहां से अपनी मस्जिद को चला जाए अगर्चे यहां इक़ामत भी शुरूअ़ हो गई हो मगर जिस मस्जिद का मुन्तज़िम है अगर वहां जमाअ़त हो चुकी तो अब यहां से जाने की इजाज़त नहीं।

www.dawateislami.net

दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत :

बा'द नमाज़े ज़ोहर (7 मिनट) फ़ैज़ाने सुन्नत से दर्स दिया जाए, (एक इस्लामी भाई को ख़ैर ख़्वाह बनाइये जो दर्स/ बयान में सब को मुबल्लिग़ के क़रीब बिठाए और जाने वालों को नर्मी के साथ शिर्कत की दरख़्वास्त करे। बा'दे दर्स बैठे बैठे इनफ़िरादी कोशिश कीजिये)

नमाज़ सीखने का हल्क़ा :

"**नमाज़ के अह़काम**" से (30 मिनट) का ह़ल्क़ा लगाया जाए, जो कुछ नमाज़ के अह़काम में लिखा है ह़ल्क़े में वोही पढ़ कर सुनाना और याद करवाना है अपनी त़रफ़ से हरगिज़ हरगिज़ वज़ाह़त न करें। न किसी मुआ़मले पर बह़ष करें, कोई बह़ष करे भी तो अमीरे क़ाफ़िला यूं अ़र्ज़ करे कि नमाज़ के अह़काम में मस्अला येह लिखा है मज़ीद वज़ाह़त के लिये आप उ़-लमाए किराम से राबित़ा फ़रमा लें। इस ह़ल्क़े में हर माह 3 दिन, 12 दिन और 30 दिन के म-दनी क़ाफ़िलों में सीखने सिखाने की तरतीब अलग अलग होगी जो कि दर्जे ज़ैल है :

हर माह तीन दिन के म-दनी क़ाफ़िले में नमाज़ के अह़काम से सीखने सिखाने का 12 माह का जदवल

मुह़र्रमुल ह़राम में "नमाज़ के अह़काम" से सीखने सिखाने की तरतीब :

(पहला दिन) वुज़ू का त़रीक़ा, फ़राइज़ और सुन्नतें (स. 8 ता 16)

(इस में अमीरे क़ाफ़िला वुज़ू के फ़राइज़ और सुन्नतें याद करवाए और बाक़ी समझाने वाले अन्दाज़ में पढ़ कर सुना दे)

www.dawateislami.net

(दूसरा दिन) ग़ुस्ल का त़रीक़ा और ग़ुस्ल के फ़राइज़ (स. 100 ता 104) (इस में अमीरे क़ाफ़िला सिर्फ़ ग़ुस्ल के फ़राइज़ याद करवाए बाक़ी समझाने वाले अन्दाज़ में पढ़ कर सुना दे)

(तीसरा दिन) तयम्मुम की सुन्नतें व तयम्मुम के फ़राइज़ और तयम्मुम का त़रीक़ा (स. 126 ता 129) (इस में अमीरे क़ाफ़िला तयम्मुम के फ़राइज़ और त़रीक़ा याद करवाए बाक़ी समझाने वाले अन्दाज़ में पढ़ कर सुना दे)

स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र में "नमाज़ के अह़काम" से सीखने सिखाने की तरकीब :

(पहला दिन) नमाज़ की शराइत़ (स. 199 ता 200) (इस में अमीरे क़ाफ़िला नमाज़ की शराइत़ याद करवाए बाक़ी समझाने वाले अन्दाज़ में पढ़ कर सुना दे)

(दूसरा दिन) नमाज़ के फ़राइज़ और नमाज़ का अ़-मली त़रीक़ा सिखाए (स. 201 ता 217) (इस में अमीरे क़ाफ़िला नमाज़ के फ़राइज़ याद करवाए बाक़ी समझाने वाले अन्दाज़ में पढ़ कर सुना दे)

(तीसरा दिन) नमाज़े वित्र के **9** म-दनी फूल, **सजदए सह्व का त़रीक़ा**, सजदए तिलावत के **8** म-दनी फूल, **सजदए तिलावत का त़रीक़ा** और **सजदए शुक्र का त़रीक़ा** (स. 273 ता 286) (इस में अमीरे क़ाफ़िला समझाने वाले अन्दाज़ में पढ़ कर सुना दे)

रबीउ़ल अव्वल में "नमाज़ के अह़काम" से सीखने सिखाने की तरकीब :

(पहला दिन) नमाज़े जनाज़ा फ़र्ज़े किफ़ाया है, नमाज़े जनाज़ा के अरकान, नमाज़े जनाज़ा का त़रीक़ा और नमाज़े जनाज़ा के मसाइल (स. 380 ता 388) (इस में अमीरे क़ाफ़िला नमाज़े जनाज़ा के अरकान और नमाज़े जनाज़ा का त़रीक़ा याद करवाए बाक़ी समझाने वाले अन्दाज़ में पढ़ कर सुना दे)

www.dawateislami.net

(दूसरा दिन) शरई सफ़र की मसाफ़त, मुसाफ़िर बनने के लिये शर्त़ और मुसाफ़िर कब बनता है (स. 303 ता 312)

(इस में अमीरे क़ाफ़िला समझाने वाले अन्दाज़ में पढ़ कर सुना दे)

(तीसरा दिन) ग़ुस्ले मय्यित का त़रीक़ा और मय्यित को दफ़नाने का त़रीक़ा (स. 465 ता 469)

(इस में अमीरे क़ाफ़िला समझाने वाले अन्दाज़ में पढ़ कर सुना दे)

रबीउ़ल आख़िर में "नमाज़ के अह़काम" से सीखने सिखाने की तरकीब :

(पहला दिन) नमाज़ तोड़ने वाली **29** बातें (स. 239 ता 246) (इस में अमीरे क़ाफ़िला अ़-मले कषीर की ता'रीफ़ याद करवाए बाक़ी समझाने वाले अन्दाज़ में पढ़ कर सुना दे)

(दूसरा दिन) नमाज़ का अ़-मली त़रीक़ा (स. 181 ता 191) और रिसाला "**कपड़े पाक करने का त़रीक़ा**" (मअ़ नजासतों का बयान) (स. 25 से 37 तक) (इस में अमीरे क़ाफ़िला नमाज़ का अ़-मली त़रीक़ा याद करवाए और नजासत के मु-तअ़ल्लिक़ अह़काम समझाने वाले अन्दाज़ में पढ़ कर सुना दे)

(तीसरा दिन) ईसाले षवाब के **17** म-दनी फूल और फ़ातिह़ा का त़रीक़ा (स. 482 ता 497) (इस में अमीरे क़ाफ़िला फ़ातिह़ा का त़रीक़ा याद करवाए बाक़ी समझाने वाले अन्दाज़ में पढ़ कर सुना दे)

जुमादल ऊला में "नमाज़ के अह़काम" से सीखने सिखाने की तरकीब :

(पहला दिन) वुज़ू के **29** मुस्तह़ब्बात और **15** मकरूहात नीज़ मुस्ता'मल पानी का अहम मस्अला (स. 16 ता 22) (इस में अमीरे क़ाफ़िला समझाने वाले अन्दाज़ में पढ़ कर सुना दे)

(दूसरा दिन) कब कब ग़ुस्ल करना सुन्नत है, एक ग़ुस्ल में मुख़्तलिफ़ निय्यतें, क़ुरआने पाक पढ़ने या छूने के **10** आदाब और नापाकी की

www.dawateislami.net

ह़ालत में दुरूदे पाक पढ़ना (स. 115 ता 126) (इस में अमीरे क़ाफ़िला समझाने वाले अन्दाज़ में पढ़ कर सुना दे)

(तीसरा दिन) नमाज़ की तक़रीबन **96** सुन्नतों में से तक्बीरे तह़रीमा, क़ियाम और रुकूअ़ की सुन्नतें (स. 221 ता 224) (इस में अमीरे क़ाफ़िला समझाने वाले अन्दाज़ में पढ़ कर सुना दे)

जुमादष्षानी में "नमाज़ के अह़काम" से सीखने सिखाने की तरकीब :

(पहला दिन) चलती गाड़ी में नमाज़ के मसाइल और सफ़र में क़ज़ा नमाज़ें किस त़रह़ पढ़ें, क़स्र के बदले चार की निय्यत बांध ली तो ? (स. 313 ता 320) (इस में अमीरे क़ाफ़िला सफ़र में क़ज़ा नमाज़ पढ़ने का त़रीक़ा याद करवाए और बाक़ी समझाने वाले अन्दाज़ में पढ़ कर सुना दे)

(दूसरा दिन) क़ज़ाए उ़म्री का त़रीक़ा, क़ज़ा करने में तरतीब और नमाज़े क़स्र की क़ज़ा (स. 338 ता 345) (इस में अमीरे क़ाफ़िला क़ज़ाए उ़म्री का त़रीक़ा याद करवाए और बाक़ी समझाने वाले अन्दाज़ में पढ़ कर सुना दे)

(तीसरा दिन) नमाज़ का अ़-मली त़रीक़ा याद करवाना है (स. 181 ता 191) और रिसाला "**कपड़े पाक करने का त़रीक़ा**" (मअ़ नजासतों का बयान) (सफ़्ह़ा 1 से ले कर 12 तक) पढ़ कर सुना दे।

२-जबुल मुरज्जब में "नमाज़ के अह़काम" से सीखने सिखाने की तरकीब :

(पहला दिन) नमाज़ की तक़रीबन **96** सुन्नतों में से क़ौमा, जल्सा, सजदा और दूसरी रक्अ़त के लिये उठने की सुन्नतें (स. 225 ता 228) (इस में अमीरे क़ाफ़िला नमाज़ की येह सुन्नतें याद करवाए)

(दूसरा दिन) नमाज़ के **16** मकरूहाते तह़रीमा (स. 247 ता 254) (इस में अमीरे क़ाफ़िला नमाज़ के मकरूहात समझाने वाले अन्दाज़ में पढ़ कर सुना दे)

www.dawateislami.net

(तीसरा दिन) नमाज़ तोड़ने वाली **15** बातें (स. 239 ता 242) (इस में अमीरे क़ाफ़िला नमाज़ तोड़ने वाली चीज़ें समझाने वाले अन्दाज़ में पढ़ कर सुना दे)

शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म में "नमाज़ के अह़काम" से सीखने सिखाने की तरकीब :

(पहला दिन) नमाज़ी के आगे से गुज़रने के बारे में **15** अह़काम (स. 286 ता 296) (इस में अमीरे क़ाफ़िला समझाने वाले अन्दाज़ में पढ़ कर सुना दे)

(दूसरा दिन) ख़ुत़्बे के **7** म-दनी फूल और जुमुआ़ की इमामत का अहम मस्अला और जुमुआ़ की सुन्नतें (स. 426 ता 434) (इस में अमीरे क़ाफ़िला समझाने वाले अन्दाज़ में पढ़ कर सुना दे)

(तीसरा दिन) नमाज़े वित्र के **9** म-दनी फूल और नमाज़ का अ़-मली त़रीक़ा (स. 273 व 181) (इस में अमीरे क़ाफ़िला पहले नमाज़े वित्र के म-दनी फूल बयान करे इस के बा'द नमाज़ का अ़-मली त़रीक़ा करवाए)

र-मज़ानुल मुबारक में "नमाज़ के अह़काम" से सीखने सिखाने की तरकीब :

(पहला दिन) रिसाला "कपड़े पाक करने का त़रीक़ा" (मअ़ नजासतों का बयान) (स. 13 से ले कर 26 तक) और नमाज़ का अ़-मली त़रीक़ा करवाए।

(दूसरा दिन) ईद की **20** सुन्नतें और आदाब (स. 444 ता 446) (इस में अमीरे क़ाफ़िला समझाने वाले अन्दाज़ में पढ़ कर सुना दे)

(तीसरा दिन) नमाज़े ईद का त़रीक़ा (स. 439 ता 444) (इस में अमीरे क़ाफ़िला नमाज़े ईद का त़रीक़ा याद करवाए बाक़ी समझाने वाले अन्दाज़ में पढ़ कर सुनाए)

www.dawateislami.net

शव्वालुल मुकर्रम में "नमाज़ के अह़काम" से सीखने सिखाने की तरकीब :

(पहला दिन) तर्के जमाअ़त के **20** आ'ज़ार (स. 268 ता 269) व नमाज़ का अ़-मली त़रीक़ा (इस में अमीरे क़ाफ़िला समझाने वाले अन्दाज़ में पढ़ कर सुना दे)

(दूसरा दिन) नमाज़ के **30** वाजिबात (स. 217 ता 221) (इस में अमीरे क़ाफ़िला कम अज़ कम **12** वाजिबात याद करवाए बाक़ी समझाने वाले अन्दाज़ में पढ़ कर सुना दे)

(तीसरा दिन) नमाज़ की तक़रीबन **96** सुन्नतों में से क़ा'दह, सलाम फैरने और सलाम फैरने के बा'द और सुन्नते **बा'दिय्यह** की सुन्नतें (स. 228 ता 233) (इस में अमीरे क़ाफ़िला नमाज़ की येह सुन्नतें याद करवाए)

ज़ी क़ा'दतुल ह़राम में "नमाज़ के अह़काम" से सीखने सिखाने की तरकीब :

(पहला दिन) जिन का वुज़ू न रहता हो उन के लिये **6** अह़काम (स. 43 ता 46) और वुज़ू में शक आने के **5** अह़काम (स. 33 ता 34) (इस में अमीरे क़ाफ़िला अच्छी त़रह़ समझाने की कोशिश करे)

(दूसरा दिन) ज़ख़्म वग़ैरा से ख़ून निकलने के **5** अह़काम, इन्जेक्शन से वुज़ू टूटेगा या नहीं (स. 26 ता 27) कै से कब वुज़ू टूटता है (स. 30) (इस में अमीरे क़ाफ़िला समझाने वाले अन्दाज़ में पढ़ कर सुना दे)

(तीसरा दिन) नमाज़ का अ़-मली त़रीक़ा और नमाज़ की शराइत़ (स. 193 ता 200) (इस में अमीरे क़ाफ़िला नमाज़ की शराइत़ याद करवाए बाक़ी समझाने वाले अन्दाज़ में पढ़ कर सुना दे)

www.dawateislami.net

जिल हिज्जतिल ह़राम में “नमाज़ के अह़काम” से सीखने सिखाने की तरकीब :

(पहला दिन) रिसाला “कपड़े पाक करने का त़रीक़ा” (मअ़ नजासतों का बयान) (सफ़ह़ा 26 से ले कर 40 तक) (अमीरे क़ाफ़िला समझाने वाले अन्दाज़ में पढ़ कर सुना दे)

(दूसरा दिन) नमाज़ का अ़-मली त़रीक़ा करवाए (स. 181) और वुज़ू के फ़राइज़ (स. 14) और ग़ुस्ल के फ़राइज़ (स. 101) (इस में अमीरे क़ाफ़िला वुज़ू और ग़ुस्ल के फ़राइज़ याद करवाए)

(तीसरा दिन) तक्बीरे तश्रीक़ के **8** म-दनी फूल (स. 447 ता 449) और नमाज़े ईद का त़रीक़ा (स. 449 ता 440) (इस में अमीरे क़ाफ़िला नमाज़े ईद का अ़-मली त़रीक़ा करवाए और बाक़ी समझाने वाले अन्दाज़ में पढ़ कर सुना दे)

12 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में “नमाज़ के अह़काम” से सिखाने की तरतीब :

1 वुज़ू का त़रीक़ा, फ़राइज़, सुन्नतें (12 मिनट) (स. 8 ता 16) (इस में अमीरे क़ाफ़िला वुज़ू के फ़राइज़ और इस की सुन्नतें याद करवाए बाक़ी समझाने वाले अन्दाज़ में सिर्फ़ पढ़ कर सुनाए)

2 ग़ुस्ल का त़रीक़ा, ग़ुस्ल के फ़राइज़ (स. 100 ता 104) (इस में अमीरे क़ाफ़िला सिर्फ़ ग़ुस्ल के फ़राइज़ याद करवाए और बाक़ी समझाने वाले अन्दाज़ में सिर्फ़ पढ़ कर सुनाए)

3 तयम्मुम की सुन्नतें, तयम्मुम का त़रीक़ा, तयम्मुम के फ़राइज़ (स. 124 ता 129) (इस में अमीरे क़ाफ़िला तयम्मुम के फ़राइज़ और त़रीक़ा याद करवाए, बाक़ी समझाने वाले अन्दाज़ में पढ़ कर सुनाए)

4 नमाज़ की शराइत़ (स. 193 ता 200) (इस में अमीरे क़ाफ़िला

www.dawateislami.net

नमाज़ की शराइत़ याद करवाए और मज़ीद तफ़्सीलात समझाने वाले अन्दाज़ में सिर्फ़ पढ़ कर सुनाए)

«5» नमाज़ का अ़-मली त़रीक़ा (स. 181 ता 191) (इस में अमीरे क़ाफ़िला नमाज़ का अ़-मली त़रीक़ा करवाए)

«6» शरई सफ़र की मसाफ़त, मुसाफ़िर बनने के लिये शर्त़ और मुसाफ़िर कब तक मुसाफ़िर है। (स. 303 ता 312) (इस में अमीरे क़ाफ़िला समझाने वाले अन्दाज़ में सिर्फ़ पढ़ कर सुनाए)

«7» मर्द व औ़रत के कफ़न की तफ़्सील और कफ़न पहनाने का त़रीक़ा (स. 465 ता 469) (इस में अमीरे क़ाफ़िला मर्द और औ़रत के कफ़न में कितने कपड़े हैं और कौन कौन से याद करवाए और कफ़न पहनाने का त़रीक़ा समझाने वाले अन्दाज़ में सिर्फ़ पढ़ कर सुनाए)

«8» नमाज़ के "33" मकरूहाते तह़रीमा (स. 247 ता 259) (इस में अमीरे क़ाफ़िला समझाने वाले अन्दाज़ में सिर्फ़ पढ़ कर सुनाए)

«9» नमाज़े जनाज़ा फ़र्ज़े किफ़ाया है, नमाज़े जनाज़ा के अरकान, नमाज़े जनाज़ा का त़रीक़ा और नमाज़े जनाज़ा के मसाइल (स. 380 ता 388) (इस में अमीरे क़ाफ़िला नमाज़े जनाज़ा के अरकान और नमाज़े जनाज़ा का त़रीक़ा याद करवाए बाक़ी मसाइल समझाने वाले अन्दाज़ में सिर्फ़ पढ़ कर सुनाए)

«10» नमाज़े ईद का त़रीक़ा (स. 436 ता 451) (ईद की नमाज़ का त़रीक़ा याद करवाए और बाक़ी समझाने वाले अन्दाज़ में सिर्फ़ पढ़ कर सुनाए)

«11» नमाज़ के फ़राइज़ (स. 201 ता 217) (इस में अमीरे क़ाफ़िला नमाज़ के फ़राइज़ याद करवाए और मज़ीद तफ़्सीलात समझाने वाले अन्दाज़ में सिर्फ़ पढ़ कर सुनाए)

«12» नमाज़ें क़ज़ा करने का गुनाह, अदा, क़ज़ा, वाजिबुल इआ़दा, क़ज़ा करने में तरतीब वग़ैरा (स. 323 ता 337) (इस में अमीरे क़ाफ़िला समझाने वाले अन्दाज़ में सिर्फ़ पढ़ कर सुनाए)

www.dawateislami.net

30 दिन के क़ाफ़िले में "नमाज़ के अह़काम" से सिखाने की तरतीब : पहले बारह 12 दिन में

﴾1﴿ वुज़ू का त़रीक़ा, फ़राइज़ और सुन्नतें (स. 8 ता 16) (इस में अमीरे क़ाफ़िला वुज़ू के फ़राइज़ और इस की सुन्नतें याद करवाए बाक़ी समझाने वाले अन्दाज़ में सिर्फ़ पढ़ कर सुनाए)

﴾2﴿ ग़ुस्ल का त़रीक़ा, ग़ुस्ल के फ़राइज़ (स. 100 ता 104) (इस में अमीरे क़ाफ़िला सिर्फ़ ग़ुस्ल के फ़राइज़ याद करवाए और बाक़ी समझाने वाले अन्दाज़ में सिर्फ़ पढ़ कर सुनाए)

﴾3﴿ तयम्मुम की सुन्नतें, तयम्मुम का त़रीक़ा, तयम्मुम के फ़राइज़ और नमाज़ का अ़-मली त़रीक़ा (स. 124 ता 129) (इस में अमीरे क़ाफ़िला तयम्मुम के फ़राइज़ और त़रीक़ा याद करवाए, बाक़ी समझाने वाले अन्दाज़ में सिर्फ़ पढ़ कर सुनाए)

﴾4﴿ नमाज़ की शराइत़ (स. 193 ता 200) (इस में अमीरे क़ाफ़िला नमाज़ की शराइत़ याद करवाए और मज़ीद तफ़्सीलात समझाने वाले अन्दाज़ में सिर्फ़ पढ़ कर सुनाए)

﴾5﴿ नमाज़ के फ़राइज़ और नमाज़ का अ़-मली त़रीक़ा (स. 201 ता 217) (इस में अमीरे क़ाफ़िला नमाज़ के फ़राइज़ याद करवाए बाक़ी समझाने वाले अन्दाज़ में सिर्फ़ पढ़ कर सुनाए)

﴾6﴿ नमाज़े वित्र के "9" म-दनी फूल, सजदए सह्व का त़रीक़ा, सजदए तिलावत के "8" म-दनी फूल, सजदए तिलावत का त़रीक़ा और सजदए शुक्र का त़रीक़ा (स. 273 ता 286) (इस में अमीरे क़ाफ़िला समझाने वाले अन्दाज़ में सिर्फ़ पढ़ कर सुनाए)

﴾7﴿ नमाज़े जनाज़ा फ़र्ज़े किफ़ाया है, नमाज़े जनाज़ा के अरकान,

www.dawateislami.net

नमाजे़ जनाज़ा का त़रीक़ा और नमाजे़ जनाज़ा के मसाइल (स. 380 ता 388) (इस में अमीरे क़ाफ़िला नमाजे़ जनाज़ा के अरकान और नमाजे़ जनाज़ा का त़रीक़ा याद करवाए और बाक़ी मसाइल समझाने वाले अन्दाज़ में सिर्फ़ पढ़ कर सुनाए)

﴾8﴿ शरई सफ़र की मसाफ़त, मुसाफ़िर बनने के लिये शर्त़ और मुसाफ़िर कब तक मुसाफ़िर है। (स. 303 ता 312) (इस में अमीरे क़ाफ़िला सिर्फ़ समझाने वाले अन्दाज़ में पढ़ कर सुनाए)

﴾9﴿ ग़ुस्ले मय्यित का त़रीक़ा और दफ़्नाने का त़रीक़ा (स. 465 ता 469) (इस में अमीरे क़ाफ़िला समझाने वाले अन्दाज़ में सिर्फ़ पढ़ कर सुनाए)

﴾10﴿ नमाज़ तोड़ने वाली "29" बातें (स. 239 ता 246) (इस में अमीरे क़ाफ़िला अ़-मले कषीर की ता'रीफ़ याद याद करवाए बाक़ी समझाने वाले अन्दाज़ में सिर्फ़ पढ़ कर सुनाए)

﴾11﴿ नमाज़ का अ़-मली त़रीक़ा (स. 181 ता 191) (इस में अमीरे क़ाफ़िला नमाज़ का अ़-मली त़रीक़ा करवाए)

﴾12﴿ नमाज़ी के आगे से गुज़रने के बारे में "15" अह़काम (स. 286 ता 296) (इस में अमीरे क़ाफ़िला समझाने वाले अन्दाज़ में सिर्फ़ पढ़ कर सुनाए)

दूसरे बारह दिन में

﴾1﴿ वुज़ू के "26" मुस्तह़ब्बात, "15" मकरूहात, मुस्ता'मल पानी का अहम मस्अला (स. 16 ता 22) (इस में अमीरे क़ाफ़िला समझाने वाले अन्दाज़ में सिर्फ़ पढ़ कर सुनाए)

﴾2﴿ कब कब ग़ुस्ल करना सुन्नत है, एक ग़ुस्ल में मुख़्तलिफ़ निय्यतें, क़ुरआने पाक पढ़ने या छूने के "10" आदाब और नापाकी की ह़ालत में दुरूद शरीफ़ पढ़ना (स. 115 ता 126) (इस में अमीरे क़ाफ़िला समझाने वाले अन्दाज़ में सिर्फ़ पढ़ कर सुनाए)

www.dawateislami.net

﴾3﴿ नमाज़ की तक़रीबन "96" सुन्नतें और सुन्नतों का एक अहम मस्अला (स. 221 ता 228) (इस में अमीरे क़ाफ़िला समझाने वाले अन्दाज़ में सिर्फ़ पढ़ कर सुनाए)

﴾4﴿ क़स्र के बदले चार की निय्यत बांध ली तो ? चलती गाड़ी में नमाज़ के मसाइल और सफ़र में क़ज़ा नमाज़ें किस त़रह़ पढ़ें (स. 313 ता 320) (इस में अमीरे क़ाफ़िला सफ़र में क़ज़ा नमाज़ पढ़ने का त़रीक़ा याद करवाए और बाक़ी समझाने वाले अन्दाज़ में सिर्फ़ पढ़ कर सुनाए)

﴾5﴿ क़ज़ाए उम्री का त़रीक़ा, क़ज़ा करने में तरतीब और नमाज़े क़स्र की क़ज़ा (स. 338 ता 345) (इस में अमीरे क़ाफ़िला क़ज़ाए उम्री का त़रीक़ा याद करवाए और बाक़ी समझाने वाले अन्दाज़ में सिर्फ़ पढ़ कर सुनाए)

﴾6﴿ नमाज़े ईद का त़रीक़ा (स. 439 ता 444) (इस में अमीरे क़ाफ़िला ईद की नमाज़ का त़रीक़ा याद करवाए और बाक़ी समझाने वाले अन्दाज़ में सिर्फ़ पढ़ कर सुनाए)

﴾7﴿ ईसाले षवाब के "17" म-दनी फूल और फ़ातिह़ा का त़रीक़ा (स. 482 ता 497) (इस में अमीरे क़ाफ़िला फ़ातिह़ा का त़रीक़ा याद करवाए और बाक़ी समझाने वाले अन्दाज़ में सिर्फ़ पढ़ कर सुनाए)

﴾8﴿ जुमुआ़ की सुन्नतें और ख़ुत़्बे के "7" म-दनी फूल और नमाज़ का अ़-मली त़रीक़ा (स. 426 ता 433) (इस में अमीरे क़ाफ़िला समझाने वाले अन्दाज़ में सिर्फ़ पढ़ कर सुनाए)

﴾9﴿ तर्के जमाअ़त के "20" आ'ज़ार और नमाज़े वित्र के "9" म-दनी फूल (स. 268 ता 273) (इस में अमीरे क़ाफ़िला समझाने वाले अन्दाज़ में सिर्फ़ पढ़ कर सुनाए)

﴾10﴿ क़ै से कब वुज़ू टूटता है ? थूक में ख़ून, वुज़ू में शक आने के

www.dawateislami.net

"5" अह़काम (स. 30 ता 34) (इस में अमीरे क़ाफ़िला कै से कब वुज़ू टूटता है याद करवाए बाक़ी समझाने वाले अन्दाज़ में सिर्फ़ पढ़ कर सुनाए)

﴾11﴿ नमाज़ के "30" वाजिबात (स. 217 ता 221) (इस में अमीरे क़ाफ़िला कम अज़ कम "7" याद करवाए बाक़ी समझाने वाले अन्दाज़ में सिर्फ़ पढ़ कर सुनाए)

﴾12﴿ जनाज़े को कन्धा देने का षवाब, जनाज़े को कन्धा देने का त़रीक़ा, वापसी के मसाइल, काफ़िर के जनाज़े और इ़यादत के अह़काम (स. 385 ता 393)(इस में अमीरे क़ाफ़िला जनाज़े को कन्धा देने का त़रीक़ा याद करवाए और बाक़ी समझाने वाले अन्दाज़ में सिर्फ़ पढ़ कर सुनाए)

दर्स व बयान सीखने का ह़ल्क़ा : (19 मिनट)

इस ह़ल्क़े में अमीरे क़ाफ़िला शु-रका में से जिन को दर्स नहीं आता उन को दर्स सिखाए और जिन को बयान करना नहीं आता उन को बयान करना सिखाए। येह ह़ल्क़ा बहुत अहम्मिय्यत का ह़ामिल है लिहाज़ा इस पर ख़ुसूसी तवज्जोह दी जाए क्यूंकि इस के ज़रीए़ हम अपने अ़लाक़ों में मुबल्लिग़ीन और मुअ़ल्लिमीन की ता'दाद में भरपूर इज़ाफ़ा कर सकते हैं। अमीरे क़ाफ़िला 12 दिन और 30 दिन के म-दनी क़ाफ़िलों में जिन इस्लामी भाइयों को दर्स व बयान करना नहीं आता उन से अ़-मली त़रीक़ा भी इसी ह़ल्क़े में करवाए ताकि अ़वाम के सामने जाने से पहले उन को अच्छी त़रह़ मश्क़ हो जाए म-षलन रजब भाई इ़शा का दर्स देंगे तो अमीरे क़ाफ़िला फ़ैज़ाने सुन्नत में से निशान लगा कर दे दे कि आप ने यहां से यहां तक दर्स देना है अब रजब भाई इस ह़ल्क़े में तय्यारी भी करेंगे और मश्क़ भी करेंगे।

www.dawateislami.net

दुआएं याद करने का ह़ल्क़ा : (19 मिनट)

गर्मियों में इस वक़्त और सर्दियों में येह ह़ल्क़ा इशा के बा'द होगा । इस ह़ल्के़ में हर माह 3 दिन, 12 दिन और 30 दिन के क़ाफ़िलों में "**दुआएं**" सीखने सिखाने की तरतीब अलग अलग होगी । जो कि दर्जे ज़ैल है :

हर माह तीन दिन के क़ाफ़िले में दुआएं सीखने का 12 माह का जदवल

मुह़र्रमुल ह़राम में 3 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में दुआएं सीखने की तरतीब :

पहला दिन : जनाज़ा देख कर पढ़ने की दुआ.. (इसी किताब का सफ़ह़ा नम्बर 511)

दूसरा दिन : क़ब्रिस्तान में दाख़िल होने की दुआ...(इसी किताब का सफ़ह़ा नम्बर 511)

तीसरा दिन : क़ब्र पर मिट्टी डालने की दुआ...(इसी किताब का सफ़ह़ा नम्बर 511)

स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र में 3 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में दुआएं सीखने की तरतीब :

पहला दिन : बैतुल ख़ला में दाख़िल होने की दुआ..(इसी किताब का सफ़ह़ा नम्बर 511)

दूसरा दिन : बैतुल ख़ला से बाहर निकलने की दुआ..(इसी किताब का सफ़ह़ा नम्बर 512)

तीसरा दिन : शैत़ान से बचने का अ़मल.. (इसी किताब का सफ़ह़ा नम्बर 512)

रबीउ़ल अव्वल में 3 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में दुआएं सीखने की तरतीब :

पहला दिन : नया लिबास पहनने की दुआ..(इसी किताब का सफ़ह़ा नम्बर 512)

दूसरा दिन : सुरमा लगाने की दुआ.. (इसी किताब का सफ़ह़ा नम्बर 513)

तीसरा दिन : मुस्कुराता हुवा देख कर पढ़ने की दुआ..(इसी किताब का सफ़ह़ा नम्बर 513)

www.dawateislami.net

रबीउल आख़िर शरीफ़ में 3 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में दुआएं सीखने की तरतीब :

पहला दिन : इत्र लगा कर देने की दुआ... (इसी किताब का सफ़हा नम्बर 513)

दूसरा दिन : तीसरा कलिमा शरीफ़... (इसी किताब का सफ़हा नम्बर 524)

तीसरा दिन : ईमाने मुफ़स्सल... (इसी किताब का सफ़हा नम्बर 523)

जुमादल ऊला में 3 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में दुआएं सीखने की तरतीब :

पहला दिन : आबे ज़मज़म पीते वक़्त की दुआ.. (इसी किताब का सफ़हा नम्बर 513)

दूसरा दिन : मस्जिद में दाख़िल होने की दुआ.. (इसी किताब का सफ़हा नम्बर 513)

तीसरा दिन : मस्जिद से निकलने की दुआ.. (इसी किताब का सफ़हा नम्बर 514)

जुमादल उख़रा में 3 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में दुआएं सीखने की तरतीब :

पहला दिन : मजलिस के इख़्तिताम पर पढ़ने वाली दुआ.. (इसी किताब का सफ़हा नम्बर 514)

दूसरा दिन : बाज़ार जाने की दुआ.. (इसी किताब का सफ़हा नम्बर 514)

तीसरा दिन : बाज़ार में नुक़्सान न हो बल्कि फ़ाएदा हो.. (इसी किताब का सफ़हा नम्बर 515)

र-जबुल मुरज्जब में 3 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में दुआएं सीखने की तरतीब :

पहला दिन : किसी के हां खाए तो पढ़ने की दुआ.. (इसी किताब का सफ़हा नम्बर 516)

दूसरा दिन : आईना देख कर पढ़ने की दुआ.. (इसी किताब का सफ़हा नम्बर 516)

तीसरा दिन : छींक के जवाब वाली दुआ.. (इसी किताब का सफ़हा नम्बर 516)

www.dawateislami.net

शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म में 3 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में दुआएं सीखने की तरतीब :

पहला दिन : अदाएगिये क़र्ज़ की दुआ.. (इसी किताब का सफ़ह़ा नम्बर 517)

दूसरा दिन : ईमाने मुज्मल...... (इसी किताब का सफ़ह़ा नम्बर 523)

तीसरा दिन : ग़ीबत से बचने की दुआ.. (इसी किताब का सफ़ह़ा नम्बर 518)

र-मज़ानुल मुबारक में 3 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में दुआएं सीखने की तरतीब :

पहला दिन : खाना खाने की दुआ... (इसी किताब का सफ़ह़ा नम्बर 516)

दूसरा दिन : खाना खाने के बा'द की दुआ... (इसी किताब का सफ़ह़ा नम्बर 516)

तीसरा दिन : दूध पीने के बा'द की दुआ... (इसी किताब का सफ़ह़ा नम्बर 518)

शव्वालुल मुकर्रम में 3 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में दुआएं सीखने की तरतीब :

पहला दिन : सुवारी की दुआ.. (इसी किताब का सफ़ह़ा नम्बर 519)

दूसरा दिन : घर से निकलने की दुआ.. (इसी किताब का सफ़ह़ा नम्बर 519)

तीसरा दिन : घर में दाख़िल होने की दुआ.. (इसी किताब का सफ़ह़ा नम्बर 519)

ज़ी क़ा'दतुल ह़राम में 3 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में दुआएं सीखने की तरतीब :

पहला दिन : सोने की दुआ.. (इसी किताब का सफ़ह़ा नम्बर 519)

दूसरा दिन : बेदार होने की दुआ.. (इसी किताब का सफ़ह़ा नम्बर 520)

तीसरा दिन : इयादत करने की दुआ.. (इसी किताब का सफ़ह़ा नम्बर 521)

www.dawateislami.net

ज़िल हि़ज्जतिल ह़राम में 3 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में दुआ़एं सीखने की तरतीब :

पहला दिन : जल जाने पर पढ़ने की दुआ़... (इसी किताब का सफ़्ह़ा नम्बर 520)

दूसरा दिन : ज़हरीले जानवरों से हि़फ़ाज़त की दुआ़.. (इसी किताब का सफ़्ह़ा नम्बर 520)

तीसरा दिन : सख़्त ख़त़रे के वक़्त की दुआ़.. (इसी किताब का सफ़्ह़ा नम्बर 521)

12 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में "दुआ़एं" सीखने सिखाने की तरतीब :

(1) घर से बाहर निकलने की दुआ़ (2) सुवारी पर सुवार होने की दुआ़
(3) इस्तिन्जा ख़ाने में दाख़िल होने की दुआ़ (4) सोते वक़्त की दुआ़
(5) खाना खाने से पहले की दुआ़ (6) घर में दाख़िल होने की दुआ़
(7) पहला और दूसरा कलिमा (8) किसी को मुस्कुराता देख कर पढ़ने की दुआ़
(9) मस्जिद में दाख़िल होने की दुआ़ (10) मस्जिद से बाहर आने की दुआ़
(11) तीसरा कलिमा (12) चौथा कलिमा

30 दिन के म-दनी क़ाफ़िल में "दुआ़एं" सीखने सिखाने की तरतीब :

पहले 12 दिन में

(1) घर से बाहर निकलने की दुआ़ (2) सुवारी पर सुवार होने की दुआ़
(3) क़ब्रिस्तान में दाख़िल होने की दुआ़ (4) सोते वक़्त की दुआ़
(5) खाना खाने से पहले और बा'द की दुआ़ (6) घर में दाख़िल होने की दुआ़
(7) पहला, दूसरा कलिमा (8) रिज़्क़ में कुशादगी की दुआ़
(9) मस्जिद में दाख़िल होने की दुआ़ (10) मस्जिद से बाहर आने की दुआ़
(11) सो कर उठने की दुआ़ (12) जो दुआ़एं सीखीं उन की दोहराई

दूसरे 12 दिन में

(1) सुरमा लगाने की दुआ़ (2) बालिग़ मर्द व औ़रत की नमाज़े जनाज़ा की दुआ़

(3) क़ब्र पर मिट्टी डालते वक़्त की दुआ़ (4) लिबास पहनने की दुआ़

(5) छींकने की दुआ़ और जवाब (6) पांचवां कलिमा

(7) छटा कलिमा (8) ईमाने मुज्मल

(9) ईमाने मुफ़स्सल (10) ना बालिग़ की नमाज़े जनाज़ा की दुआ़

(11) बैतुल ख़ला में जाने और बाहर आने की दुआ़ (12) जो दुआ़एं सीखीं उन की दोहराई

नोट : मज़्कूरा दुआ़एं आयन्दा सफ़ह़ात (नम्बर **511**) में मुला-ह़ज़ा कीजिये।

पांचवां और छटा कलिमा शरीफ़ दो निशस्तों में याद करवाया जाए।

वक़्फ़ए आराम : ह़ल्क़ों के बा'द अज़ाने अ़स्र तक वक़्फ़ए इस्तिराह़त।

बा'द नमाज़े अ़स्र : अ़लाक़ाई दौरे का ए'लान दुआ़ से पहले कर लीजिये। (अमीरे क़ाफ़िला को चाहिये कि क़ाफ़िला पहुंचते ही इमामे मस्जिद/ख़त़ीब/कमेटी वग़ैरा से ए'लानात की इजाज़त की तरकीब बना ले, ए'लान करने वाले को चाहिये कि नमाज़े अ़स्र इक़ामत कहने वाले की दाईं जानिब अदा करे और वहीं क़िब्ला रू खड़े हो कर ए'लान करे, ए'लान इतनी आवाज़ से हो कि तमाम नमाज़ी ब आसानी सुन सकें) दुआ़ के बा'द नेकी की दा'वत के फ़ज़ाइल पर (12 मिनट) बयान हो, ह़ाज़िरीन को अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत के लिये तय्यार किया जाए।

www.dawateislami.net

फिर म-दनी मर्कज़ के दिये हुए त़रीक़े के मुत़ाबिक़ अ़स्र के बा'द ही ﴾12﴿ अ़लाक़ाई दौरा कीजिये और मुख़्तसर नेकी की दा'वत का ज़ैल में दिया हुवा मज़्मून (ज़बानी याद कर के) पेश कीजिये।

नेकी की दा'वत (मुख़्तसर)

हम **अल्लाह** पाक के गुनाहगार बन्दे और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के गुलाम हैं। यक़ीनन ज़िन्दगी मुख़्तसर है, हम हर वक़्त मौत के क़रीब होते जा रहे हैं। हमें जल्द ही अंधेरी क़ब्र में उतार दिया जाएगा। नजात **अल्लाह** पाक का हुक्म मानने और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों पर अ़मल करने में है।

आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" का एक मदनी क़ाफ़िला .... शहर से आप के अ़लाक़े की .... मस्जिद में आया हुवा है। हम "**नेकी की दा'वत**" देने के लिये ह़ाज़िर हुए हैं। मस्जिद में अभी दर्स जारी है, दर्स में शिर्कत करने के लिये मेहरबानी फ़रमा कर अभी तशरीफ़ ले चलिये, हम आप को लेने के लिये आए हैं, आइये ! तशरीफ़ ले चलिये ! (अगर वोह तय्यार न हों तो कहें कि) अगर अभी नहीं आ सकते तो नमाज़े मग़रिब वहीं अदा फ़रमा लीजिये। नमाज़ के बा'द اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ सुन्नतों भरा बयान होगा। आप से दरख़्वास्त है कि बयान ज़रूर सुनियेगा।

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें और आप को दोनों जहान की भलाइयां नसीब फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

★ अ़लाक़ाई दौरा (बराए नेकी की दा'वत) अ़स्र ता मग़्रिब ही किया जाए।

अ़स्र ता मग़्रिब मस्जिद में दर्स की तरकीब कुछ इस त़रह़ होगी :

इस दौरान फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़्रीज शुदा) और बयानाते अ़त्तारिय्या वग़ैरा से दर्स किया जाए। आख़िर में चन्द मिनट सुन्नतें सीखने सिखाने का ह़ल्क़ा लगाया जाए।

"3 दिन" के म-दनी क़ाफ़िले में तरतीब कुछ इस त़रह़ होगी :

3 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में सिर्फ़ फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़्रीज शुदा) के बाब आदाबे त़आ़म से तरकीब की जाए। तफ़्सील दर्जे ज़ैल है :

(1) फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़्रीज शुदा) के नीचे दिये हुए।

(सफ़ह़ा नम्बर 177 ता 209)

(2) फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़्रीज शुदा) के नीचे दिये हुए।

(सफ़ह़ा नम्बर 210 ता 242)

(3) फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़्रीज शुदा) के नीचे दिये हुए।

(सफ़ह़ा नम्बर 243 ता 276)

★ हर माह के तीन दिन के म-दनी क़ाफ़िले में मुख़्तलिफ़ मक़ामात से दर्स की तरकीब बनाइये।

www.dawateislami.net

"12" दिन के म-दनी क़ाफ़िले में तरतीब कुछ इस त़रह़ होगी :

12 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में **फ़ैज़ाने सुन्नत** (तख़रीज शुदा) के बाब **फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह,** आदाबे त़आ़म और पेट का कुफ़्ले मदीना से तरकीब की जाए। तफ़्सील दर्जे ज़ैल है :

पहले 3 दिन फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़रीज शुदा) के बाब आदाबे त़आ़म से तरकीब कुछ इस त़रह़ होगी :

(1) फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़रीज शुदा) (नीचे दिये हुए सफ़्ह़ा नम्बर : **177** ता **209**)

(2) फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़रीज शुदा) (नीचे दिये हुए सफ़्ह़ा नम्बर : **210** ता **242**)

(3) फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़रीज शुदा) (नीचे दिये हुए सफ़्ह़ा नम्बर : **243** ता **276**)

दूसरे 3 दिन फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़रीज शुदा) के बाब फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह से तरकीब कुछ इस त़रह़ होगी :

(4) फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़रीज शुदा) (नीचे दिये हुए सफ़्ह़ा नम्बर : **1** ता **35** शे'र)

(5) फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़रीज शुदा) (नीचे दिये हुए सफ़्ह़ा नम्बर : **35** ता **70**)

(6) फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़रीज शुदा) (नीचे दिये हुए सफ़्ह़ा नम्बर : **71** ता **104**)

तीसरे 3 दिन फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़रीज शुदा) के बाब पेट का कुफ़्ले मदीना से तरकीब कुछ इस त़रह़ होगी :

(7) फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़रीज शुदा) (नीचे दिये हुए सफ़्ह़ा नम्बर : **643** ता **675** शे'र)

(8) फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़रीज शुदा) (नीचे दिये हुए सफ़्ह़ा नम्बर : **676** ता **709**)

(9) फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़रीज शुदा) (नीचे दिये हुए सफ़्ह़ा नम्बर : **710** ता **751**)

www.dawateislami.net

चौथे 3 दिन फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़रीज शुदा) के बाब आदाबे तआ़म से तरकीब कुछ इस त़रह़ होगी :

(10) फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़रीज शुदा) (नीचे दिये हुए सफ़्हा नम्बर : 277 ता 318)

(11) फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़रीज शुदा) (नीचे दिये हुए सफ़्हा नम्बर : 318 ता 342)

(12) फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़रीज शुदा) (नीचे दिये हुए सफ़्हा नम्बर : 343 ता 375)

30 दिन के क़ाफ़िले में अ़स्र ता मग़रिब के दर्स की तरकीब :

30 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में भी फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़रीज शुदा, जिल्द अव्वल) के बाब : पेट का क़ुफ़्ले मदीना, आदाबे त़आ़म, **फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह** और अमीरे अहले सुन्नत مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی के बयानाते अ़त्तारिय्या से दर्स दिया जाए। जिस की तफ़्सील दर्जे ज़ैल है :

पहले 12 दिन में फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़रीज शुदा) के बाब आदाबे तआ़म से तरकीब कुछ इस त़रह़ होगी :

(1) फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़रीज शुदा) (नीचे दिये हुए सफ़्हा नम्बर : 177 ता 209)

(2) फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़रीज शुदा) (नीचे दिये हुए सफ़्हा नम्बर : 210 ता 242)

(3) फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़रीज शुदा) (नीचे दिये हुए सफ़्हा नम्बर : 243 ता 276)

www.dawateislami.net

फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़रीज शुदा) के बाब फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह से तरकीब कुछ इस त़रह होगी :

(4) फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़रीज शुदा) (नीचे दिये हुए सफ़हा नम्बर : 1 ता 35 शे'र)

(5) फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़रीज शुदा) (नीचे दिये हुए सफ़हा नम्बर : 35 ता 70)

(6) फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़रीज शुदा) (नीचे दिये हुए सफ़हा नम्बर : 71 ता 104)

फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़रीज शुदा) के बाब पेट का कुफ़्ले मदीना से तरकीब कुछ इस त़रह होगी :

(7) फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़रीज शुदा) (नीचे दिये हुए सफ़हा नम्बर : 643 ता 675 शे'र)

(8) फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़रीज शुदा) (नीचे दिये हुए सफ़हा नम्बर : 676 ता 709)

(9) फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़रीज शुदा) (नीचे दिये हुए सफ़हा नम्बर : 710 ता 751)

फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़रीज शुदा) के बाब आदाबे त़आ़म से तरकीब कुछ इस त़रह होगी :

(10) फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़रीज शुदा) (नीचे दिये हुए सफ़हा नम्बर : 277 ता 318)

(11) फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़रीज शुदा) (नीचे दिये हुए सफ़हा नम्बर : 318 ता 342)

(12) फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़रीज शुदा) (नीचे दिये हुए सफ़हा नम्बर : 343 ता 375)

दूसरे 12 दिन में तरतीब :

(13) बयानाते अ़त्तारिय्या (में से एक रिसाला समझाने वाले अन्दाज़ में सिर्फ़ पढ़ कर सुनाएं)

(14) बयानाते अ़त्तारिय्या (में से एक रिसाला समझाने वाले अन्दाज़ में सिर्फ़ पढ़ कर सुनाएं)

(15) बयानाते अ़त्तारिय्या (में से एक रिसाला समझाने वाले अन्दाज़ में सिर्फ़ पढ़ कर सुनाएं)

www.dawateislami.net

फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़रीज शुदा) के बाब आदाबे तआम से तरकीब कुछ इस तरह होगी :

(16) फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़रीज शुदा) (नीचे दिये हुए सफ़हा नम्बर : 376 ता 409)

(17) फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़रीज शुदा) (नीचे दिये हुए सफ़हा नम्बर : 410 ता 445)

(18) फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़रीज शुदा) (नीचे दिये हुए सफ़हा नम्बर : 446 ता 480)

फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़रीज शुदा) के बाब फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह से तरकीब कुछ इस तरह होगी :

(19) फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़रीज शुदा) (नीचे दिये हुए सफ़हा नम्बर : 105 ता 138)

(20) फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़रीज शुदा) (नीचे दिये हुए सफ़हा नम्बर : 139 ता 163)

फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़रीज शुदा) के बाब फ़ैज़ाने र-मज़ान से तरकीब कुछ इस तरह होगी :

(21) फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़रीज शुदा) (नीचे दिये हुए सफ़हा नम्बर : 1333 ता 1363)

(22) फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़रीज शुदा) (नीचे दिये हुए सफ़हा नम्बर : 1364 ता 1394)

फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़रीज शुदा) के बाब आदाबे तआम से तरकीब कुछ इस तरह होगी :

(23) फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़रीज शुदा) (नीचे दिये हुए सफ़हा नम्बर : 481 ता 514)

(24) फ़ैज़ाने सुन्नत (तख़रीज शुदा) (नीचे दिये हुए सफ़हा नम्बर : 515 ता 550)

बा'द नमाज़े मग़रिब :

फ़र्ज़ों के बा'द दुआ से पहले ए'लान, पहले और दूसरे दिन (तक़रीबन 12 मिनट) क़ाफ़िलों में हाथों हाथ सफ़र की तरग़ीब पर आख़िरी दिन (26 मिनट) बयान हो। पहले दिन तरग़ीब दिला कर

www.dawateislami.net

निय्यतें करवाएं और दूसरे दिन निय्यत करवाने के साथ साथ नाम भी लिखें, आख़िरी रात सफ़र की निय्यत करने और नाम लिखवाने वालों के साथ इजतिमाअ़ कर के (तीसरे दिन अमीरे क़ाफ़िला को चाहिये कि इस बात का ख़ुसूसी ख़याल रखे कि मग़रिब और इशा दोनों में से जिस में नमाज़ी ज़ियादा हों उसी नमाज़ में इजतिमाअ़ की तरकीब बनाए जिस में मुख़्तसर तिलावत, ना'त शरीफ़ और 26 मिनट का बयान, सलातो सलाम के तीन अश्आ़र और दुआ़ की जाए) म-दनी क़ाफ़िलों की भरपूर तरग़ीब पर बयान हो। इख़्तिताम पर हाथों हाथ तय्यार होने वालों की म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र की तरकीब बनाइये। ﴾13﴿ ख़ुद भी यक मुश्त 12 माह के लिये सफ़र की निय्यत फ़रमा कर (मुमकिन हो तो) हाथों हाथ सफ़र की तरकीब बना लीजिये।

खाना इशा से पहले ही खा लिया जाएगा।

बा'द नमाज़े इशा :

फ़ैज़ाने सुन्नत तख़रीज शुदा से (7 मिनट) दर्स दीजिये फिर केसिट बयान से पहले (7 मिनट) इनफ़िरादी कोशिश के लिये दो दो इस्लामी भाई बाहर जाएं और फिर वापस आ कर ﴾14﴿ केसिट इजतिमाअ़ की तरकीब बनाएं, जिस में एक दिन अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का बयान और एक दिन म-दनी मुज़ा-करा सुनें। अगर केसिट बयान मुयस्सर न हो तो अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रसाइल से 26 मिनट दर्स किया जाए।

(नोट : जिन ज़िम्मादारान के बयानात की केसिटें मक्तबतुल मदीना पर आ चुकी हैं, इस ह़ल्क़े में उन के बयानात के केसिटें भी चला सकते हैं)

www.dawateislami.net

इस ह़ल्क़े में ﴾15﴿ कम अज़् कम दो घन्टे दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों में सर्फ़ करने की निय्यत के साथ ﴾16﴿ पर्दे में पर्दा के एहतिमाम और ﴾17﴿ पूरे दिन सब्ज़ इमामा शरीफ़ मअ़ सरबन्द, ज़ुल्फ़ें, एक मुश्त दाढ़ी, सुन्नत के मुत़ाबिक़ सफ़ेद लिबास, सामने सीने की जानिब मिस्वाक और टख़्नों से ऊंचे पाइंचे रखने की निय्यत के साथ शरीक हों। बा'दे ह़ल्क़ा इनफ़िरादी कोशिश के ज़रीए म-दनी माह़ोल की ब-रकतें बता कर क़ाफ़िलों में सफ़र की निय्यतें करवा कर नाम वग़ैरा लिखें और ﴾18﴿ अपने साथ सफ़र भी करवाएं। शु-रकाए क़ाफ़िला को चूंकि अकषर वक़्त मस्जिद ही में गुज़ारना है लिहाज़ा क़ुफ़्ले मदीना से मु-तअ़ल्लिक़ इन चन्द इन्आ़मात के नफ़ाज़ में दोनों जहां की आ़फ़िय्यत है। म-षलन ﴾19﴿ क़ह्क़हा लगाने से बचते हुए ﴾20﴿ ज़रूरी बात भी ﴾21﴿ दा'वते इस्लामी की इस्तिलाह़ात के इस्ति'माल के साथ कम लफ़्ज़ों में (दुरुस्त तलफ़्फ़ुज़ की अदाएगी का लिहाज़ रखते हुए) ﴾22﴿ लिख कर या इशारे से कीजिये। ﴾23﴿ नज़रें झुका कर सामने वाले के चेहरे पर निगाहें गाड़े बिग़ैर गुफ़्तगू की आ़दत डालिये (इस के लिये क़ुफ़्ले मदीना की ऐनक का इस्ति'माल मुफ़ीद है) और फ़ुज़ूल बात मुंह से निकलने पर नादिम हो कर दुरूदे पाक पढ़िये।

दोहराई का ह़ल्क़ा :

आज जो कुछ सीखा है अमीरे क़ाफ़िला ह़ल्क़े की सूरत में शु-रका के सामने ख़ुद ही इस की दोहराई करे और अगर कोई ब ख़ुशी

सुनाना चाहे तो सुने । फिर अमीरे क़ाफ़िला म-दनी इन्आ़मात के मुत़ाबिक़ «24» इजतिमाई फ़िक्रे मदीना करवाए । जिस में तमाम शु-रकाए क़ाफ़िला सनजीदगी और तवज्जोह के साथ आज म-दनी इन्आ़मात के मुत़ाबिक़ कहां तक अ़मल हुवा के तह्त रिसाला पुर करने की तरकीब करें । फिर इजतिमाई तरग़ीब दिला कर इरादा करवाएं कि «25» रोज़ाना कम अज़् कम दो इस्लामी भाइयों को म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र और हर माह म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के जम्अ़ करवाने के लिये तरग़ीब दिलाएंगे «26» और اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ख़ुद भी हर माह म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के जम्अ़ करवाने के साथ साथ तीन दिन के लिये म-दनी क़ाफ़िले में हर माह सफ़र भी करेंगे ।

अख़्लाक़ी निखार के लिये :

«27» आप जनाब और जी कहने की आ़दत डालने और बात समझ में आने के बा वुजूद सुवालिया अन्दाज़ में "हैं" या "क्या ?" कहने «28» दूसरों की बात इत़्मीनान से सुनने के बजाए उस की बात काट कर अपनी बात शुरूअ़ करने «29» इलज़ाम तराशी, गाली गलोच करने और नाम बिगाड़ने से बचने «30» उ़यूब पर मुत्त़लअ़ होने पर पर्दा पोशी और राज़ की बात की हिफ़ाज़त की आ़दत बनाने «31» झूट, ग़ीबत, चुग़ली, ह़सद, तकब्बुर और वा'दा ख़िलाफ़ी वग़ैरा से ख़ुद को बचाने «32» दूसरों से मांग कर चीज़ें इस्ति'माल करने «33» ऐसे फ़ुज़ूल सुवाल करने से बचे जिस से

www.dawateislami.net

मुसलमान उ़मूमन झूट के गुनाह में मुब्तला हो जाते हैं (म-षलन बिला ज़रूरत पूछना कि भाई हमारा खाना कैसा लगा ? आप को सफ़र में तक्लीफ़ तो नहीं हुई ? वग़ैरा) ﴾34﴿ आ़जिज़ी के ऐसे अलफ़ाज़ (जिन की दिल ताईद न करे) बोलने, फ़िल्में डिरामे देखने और गाने बाजे सुनने की आ़दत निकालने ﴾35﴿ सलाम का जवाब और छींकने वाला اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ कहे तो उस के जवाब में يَرْحَمُكَ اللّٰه इतनी आवाज़ से कहना कि वोह सुन ले ﴾36﴿ आयन्दा की हर जाइज़ बात के इरादे पर (मा'ना पर नज़र रखते हुए) اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ , मिज़ाज पुर्सी पर शिक्वा करने के बजाए اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى كُلِّ حَال , किसी ने'मत को देख कर مَاشَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ, और مَعَاذَاللّٰہ गुनाह होते ही फ़ौरन तौबा करने की आ़दत बनाने के लिये भी कोशिश फ़रमाएंगे। (اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ)

बा अदब बा नसीब बे अदब बे नसीब

एक तकिये पर दो या एक चादर में भी दो इस्लामी भाई हरगिज़ हरगिज़ न सोएं, अपनी चादर या चटाई बिछा कर सोने में एह़तियात़ ज़ियादा है। (बेदार होने पर चादर या चटाई और कपड़े तब्दील कर के फ़ौरन तह फ़रमा लिया करें) नज़्मो ज़ब्त़ के साथ एक क़ित़ार में सोएं, हमेशा दो इस्लामी भाइयों के दरमियान कम अज़ कम दो हाथ का फ़ासिला रखें ज़रूरतन एक या दो इस्लामी भाई जाग कर सामान वग़ैरा की ह़िफ़ाज़त फ़रमाएं।

तहज्जुद : सुब्हे सादिक़ से 19 मिनट क़ब्ल तहज्जुद के लिये जगाइये, नमाज़े तहज्जुद के बा'द अज़ाने फ़ज्र तक ज़िक्रो दुरूद और

www.dawateislami.net

तिलावत का सिल्सिला जारी रखिये मुत़ालआ भी किया जा सकता है । तमाम इस्लामी भाई रोज़ाना **श-ज-रए अ़त्तारिय्या** से ﴾37﴿ चन्द अवराद कम अज़ कम "70 बार اَسْتَغْفِرُ الله 166 बार لَا اِلٰـهَ اِلَّا الله फिर तीन बार مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه صلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم " और ﴾38﴿ बारह मिनट आंखें बन्द कर के कम अज़ कम 313 बार दुरूद शरीफ़ पढ़ें (ज़िन्दगी भर के लिये इस का मा'मूल बना लीजिये) । जो इस्लामी भाई क़रीब की मस्जिदों में दर्स के लिये जाएंगे अज़ाने फ़ज्र से क़ब्ल रवाना हो जाएं ।

(अगर "**ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" पढ़ना दुश्वार मा'लूम हो तो मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی का "**नूरुल इरफ़ान**" पढ़ें कि काफ़ी आसान है और येह भी **कन्ज़ुल ईमान** ही की **तफ़्सीर** है ।)

सदाए मदीना :

अज़ाने फ़ज्र के बा'द मगर बिग़ैर मेगाफ़ोन के दो दो इस्लामी भाई ﴾39﴿ सदाए मदीना लगाएं । लेकिन इस बात का ख़याल रखिये कि इतनी ज़ोरदार आवाज़ न हो कि मरीज़ों, बच्चों और इस्लामी बहनें घर में नमाज़ में मश्ग़ूल हों या पढ़ कर दोबारा लैट गई हों, उन को तश्वीश हो । दर्सो बयान करने, ना'त शरीफ़ पढ़ने और स्पीकर चलाने वग़ैरा में हमेशा नमाज़ियों, तिलावत करने वालों और सोने वालों की ईज़ा रसानी से बचना शरअ़न वाजिब है । कहीं ऐसा न हो कि हम ज़ाहिरी इबादत से ख़ुश हो रहे हों मगर इस में दूसरों की परेशानी का बाइ़स बन कर ह़क़ीक़त में مَعَاذَاللّٰه गुनहगार और दोज़ख़ के ह़क़दार बन रहे हों ।

www.dawateislami.net

सदाए मदीना का त़रीक़ा

بِسمِ اللهِ الرَّحمٰنِ الرَّحِيم पढ़ कर थोड़े थोड़े वक़्फ़े से दुरूदो सलाम के ज़ैल में दिये हुए सीग़े पढ़ते रहें।

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحٰبِکَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلامُ عَلَیْکَ یَا نَبِیَّ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِکَ وَ اَصْحٰبِکَ یَا نُوْرَاللّٰہ

अब इस त़रह़ सदाए मदीना लगाएं :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नमाज़े फ़ज्र का वक़्त हो गया है। सोने से नमाज़ बेहतर है जल्दी जल्दी उठिये और नमाज़ की तय्यारी कीजिये। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को बार बार ह़ज नसीब करे और बार बार मीठा मदीना दिखाए, जल्दी जल्दी उठिये और नमाज़े फ़ज्र की तय्यारी कीजिये। (अब फिर ऊपर दिया हुवा दुरूदो सलाम पढ़िये। इस के बा'द मौक़अ़ की मुना-सबत से दोबारा ऊपर दिया हुवा मज़्मून या सफ़ह़ा **190** पर दिये गए अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَه के नज़्म कर्दा अश्आ़र में से मुन्तख़ब अश्आ़र पढ़िये)

फ़ज्र :

फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द ए'लान हो और बारह मिनट के सुन्नतों भरे बयान के बा'द पुर तपाक त़रीक़े पर मुलाक़ात करते हुए इनफ़िरादी कोशिश फ़रमाएं, फ़ज्र ता इशराक़ वाले म-दनी ह़ल्क़े में शिर्कत की निय्यत के साथ जिन इस्लामी भाइयों को क़ुरआने मजीद पढ़ना नहीं

www.dawateislami.net

आता, अमीरे क़ाफ़िला 30 दिन के म–दनी क़ाफ़िले में उन को म–दनी क़ाइदा पढ़ाने की तरकीब बनाए । यूं ﴾40﴿ मद्र–सतुल मदीना बालिग़ान में रोज़ाना शिर्कत की निय्यत और ﴾41﴿ एक बार क़ुरआने पाक नाज़िरा दुरुस्त मख़ारिज से पढ़ने की निय्यत के साथ रु–फ़क़ा 30 मिनट तक आख़िरी दस सूरतों में से कोई सूरत एक दूसरे को (जिस क़दर मुमकिन हो) याद करवाइये और तलफ़्फ़ुज़ की दुरुस्ती के लिये ए'राब का लिहाज़ रखते हुए ﴾42﴿ कम अज़ कम चार सफ़ह़ात फ़ैज़ाने सुन्नत तख़रीज शुदा का मुत़ालआ फ़रमाइये और मिल कर श–ज–रए अ़त्तारिय्या पढ़िये । इशराक़ व चाश्त के बा'द (9 बजे तक) वक़्फ़ए इस्तिराह़त हो ।

मुत़ालआ :

जो सोना नहीं चाहते वोह मस्जिद में तिलावत, इ़बादत या मुत़ालआ वग़ैरा फ़रमाएं । दौराने वक़्फ़ा ﴾43﴿ 12 मिनट किसी सुन्नी आ़लिम की किताब का मुत़ालआ म–षलन **ह़ुसामुल ह़–र–मैन मअ़ तम्हीदुल ईमान** म–दनी गुलदस्ते से ﴾44﴿ बहारे शरीअ़त के मज़ामीन और ﴾45﴿ **मिन्हाजुल आ़बिदीन** के अब्वाब और ﴾46﴿ اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ कम अज़ कम हर साल ﴾47﴿ तमाम रसाइल और ﴾48﴿ तमाम म–दनी फूलों के पेम्फ़लेट का मुत़ालआ करूंगा की निय्यत से (जिस क़दर मुमकिन हो) मुत़ालआ भी फ़रमा सकते हैं । मस्जिद के बाहर (किसी वक़्त भी न घूमें) बा'दे इस्तिराह़त पर्दे में पर्दा के एहतिमाम के साथ नाश्ता फ़रमाइये ।

www.dawateislami.net

सदाए मदीना के अश्आर

फ़ज्र का वक़्त हो गया उठ्ठो !

फ़ज्र का वक़्त हो गया उठ्ठो ! ऐ ग़ुलामाने मुस्त़फ़ा उठ्ठो !
जागो जागो ऐ भाइयो- बहनो ! छोड़ दो अब तो बिस्तरा उठ्ठो !
तुम को ह़ज की ख़ुदा सआ़दत दे जल्वा देखो मदीने का उठ्ठो !
उठ्ठो ज़िक्रे ख़ुदा करो उठ कर दिल से लो नामे मुस्त़फ़ा उठ्ठो !
फ़ज्र की हो चुकी अज़ानें वक़्त हो गया है नमाज़ का उठ्ठो !
भाइयो ! उठ कर अब वुज़ू कर लो और चलो ख़ानए ख़ुदा उठ्ठो !
नींद से तो नमाज़ बेहतर है ! अब न मुत्लक़ भी लेटना उठ्ठो !
उठ चुको अब खड़े भी हो जाओ ! आंख शैत़ां न दे लगा उठ्ठो !
जागो जागो नमाज़ ग़फ़्लत से कर न बैठो कहीं क़ज़ा उठ्ठो !
अब "जो सोए नमाज़ खोए" वक़्त सोने का अब नहीं रहा उठ्ठो !
याद रख्खो ! नमाज़ गर छोड़ी क़ब्र में पाओगे सज़ा उठ्ठो !
बे नमाज़ी फंसेगा मह़शर में होगा नाराज़ किब्रिया उठ्ठो !
मैं "सदाए मदीना" देता हूं तुम को त़यबा का वासित़ा उठ्ठो !
मैं भिकारी नहीं हूं दर दर का मैं हूं सरकार का गदा उठ्ठो !
मुझ को देना न पाई पैसा तुम ! मैं हूं त़ालिब सवाब का उठ्ठो !
तुम को देता है येह दुआ़ अ़त्त़ार फ़ज़्ल तुम पर करे ख़ुदा उठ्ठो !

www.dawateislami.net

बाब नम्बर 3

दर्स व बयान

इस बाब में :

दर्स की अहम्मिय्यत, दर्स के **म-दनी फूल,** मस्जिद में दर्स देने के मक़ासिद, दर्स का त़रीक़ा, बयान की अहम्मिय्यत, बयान के **मक़ासिद,** बयान के **म-दनी फूल,** बयान तय्यार करने का त़रीक़ा, मुबल्लिग़ के **म-दनी फूल** और बा'दे फ़ज्र होने वाले 9 बयानात, इन के इलावा मज़ीद **उनवानात** भी शामिल हैं।

www.dawateislami.net

बाब 3 : दर्स व बयान

दर्स की अहम्मिय्यत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! "दा'वते इस्लामी" का बुन्यादी काम मस्जिद दर्स है।

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने नूर मस्जिद मीठा दर बाबुल मदीना कराची से दर्स का आग़ाज़ फ़रमाया, और आज اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी का पैग़ाम अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ब-रकत से दुन्या के कमो बेश (ता दमे तह़रीर) 150 मुमालिक में पहुंच चुका है।

याद रखिये ! जिस त़रह़ हर इमारत की बुन्याद और अस्ल होती है इसी त़रह़ हमारे तन्ज़ीमी कामों की अस्ल मस्जिद दर्स है। जब तक हमारी हर मस्जिद में "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" का दर्स शुरूअ़ न हो जाए हमें चैन से नहीं बैठना चाहिये।

दर्स इतना पुर कशिश हो कि नमाज़ी दर्स में खिंचे चले आएं और दर्स सुनने वालों की ता'दाद बढ़ जाए।

अगर हम दर्स देते रहेंगे तो हमारी मस्जिदें आबाद रहेंगी। इसी त़रह़ अगर हम बाज़ारों, घरों, मह़ल्लों और दुकानों में दर्से **फ़ैज़ाने सुन्नत** दें तो बे शुमार ब-रकतें पाएंगे।

दर्स की ब-रकात

★ एक म-दनी क़ाफ़िला सख्खर के एक गाउं में गया। एक इस्लामी भाई ने नमाज़ के बा'द दर्स दिया। दर्स में पानी पीने की सुन्नतें और आख़िर में खड़े हो कर पीने के नुक़सानात बयान किये। एक बड़ी उ़म्र के साहिब जो वहां तशरीफ़ फ़रमा थे, येह सुन कर रोने लगे। लोगों ने पूछा : "आप क्यूं रो रहे हैं?" उन्हों ने कुछ इस त़रह़ अपने जज़्बात का इज़्हार किया कि "मेरी त़वील उ़म्र गुज़र गई मगर मुझे इन सुन्नतों के बारे में मा'लूमात नहीं, अ़न क़रीब मैं भी मरने वाला हूं, अभी तक मुझे **सरकारे मदीना** صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों के बारे में इ़ल्म ही नहीं तो क़ब्र में आप صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को कैसे पहचानूंगा।" वोह बुज़ुर्ग इतने ज़ईफ़ थे कि उन्हें सहारा दे कर उठाना पड़ता। वोह दा'वते इस्लामी से इतने मुतअष्षिर हुए कि اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ सर पर सब्ज़ सब्ज़ इ़मामा शरीफ़ सजा लिया।

★ एक म-दनी क़ाफ़िला बहावल पूर पहुंचा। वहां एक गाउं में क़ाफ़िले वालों ने दो दिन गुज़ारे तो एक चौधरी साहिब ने क़ाफ़िले वालों को दा'वत की पेशकश की तो अमीरे क़ाफ़िला ने इस म-दनी फ़ीस (या'नी इस शर्त़) पर दा'वत क़बूल की, कि पहले आप के घर दर्स होगा, फिर खाना खाएंगे। चुनान्चे दर्स शुरूअ़ हो गया। फ़ैज़ाने सुन्नत से "**हुक़ूक़ुल इ़बाद**" के बारे में दर्स दिया गया, दर्स के बा'द चौधरी साहिब यूं कहने लगे कि "मेरी जवानी गुज़रने वाली है मगर अफ़्सोस! मुझे "**हुक़ूक़ुल इ़बाद**" के बारे में इतनी मा'लूमात नहीं

www.dawateislami.net

थी। मैं आज ही से निय्यत करता हूं कि दाढ़ी और इमामा शरीफ़ सजा लूंगा।"

★ एक म-दनी क़ाफ़िला नवाब शाह शहर में गया। क़ाफ़िले वालों ने शहर के एक चौक में हुक़ूक़े आम्मा का लिहाज़ रखते हुए चौक दर्स दिया, एक पोलीस इन्स्पेक्टर भी चौक दर्स में शामिल हो गया। फ़ैज़ाने सुन्नत से दर्स जारी था कि इन्स्पेक्टर साहिब के दिल पर दर्स का इतना अषर हुवा कि वोह उसी वक़्त दर्स के बा'द मस्जिद में नमाज़ अदा करने के लिये आ गए।

दर्स देने वाले को खुली आंखों से मुर्शिद का दीदार

★ **आ़शिक़ाने रसूल** का एक **म-दनी क़ाफ़िला** राहे ख़ुदा में सफ़र कर के सरदारआबाद (फ़ैसलआबाद) गया, उन दिनों सख़्त सर्दी थी। इस्लामी भाई बताते हैं कि मैं दर्स देने के लिये रवाना हुवा। मेरे नफ़्स ने मुझे सर्दी से डराया और सुस्ती का मश्वरा दिया लेकिन मैं ने दिल में ठान ली कि आज दर्स ज़रूर दूंगा। अभी निय्यत कर के चला ही था कि मैं ने खुली आंखों से देखा कि सामने शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी र-ज़वी** دامت برکاتھم العالیہ चले आ रहे हैं। (ह़ालां कि वोह उस वक़्त सरदारआबाद में नहीं थे) इस त़रह़ दर्स देने के अ़ज़्मे मुसम्मम की ब-रकत से मुझे दीदारे मुर्शिद हो गया।

www.dawateislami.net

दर्से फै़ज़ाने सुन्नत के म-दनी फूल

★ **फ़रमाने** मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जो शख़्स मेरी उम्मत तक कोई इस्लामी बात पहुंचाए ताकि उस से सुन्नत क़ाइम की जाए या उस से बद मज़्हबी दूर की जाए तो वोह जन्नती है।

(حِلْیَۃُ الْاولیاء ج ۱۰ ص ٤٥ رقم ١٤٤٦٦)

★ **सरकारे** मदीना صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह तआला** उस को तरो ताज़ा रखे जो मेरी ह़दीष को सुने, याद रखे और दूसरों तक पहुंचाए।" (سُنَنِ تِرمِذی ج٤ ص٢٩٨ حدیث ٢٦٦٥)

★ **ह़ज़रते** सय्यिदुना इद्रीस عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के नामे मुबारक की एक ह़िक्मत येह भी है कि कुतुबे इलाहिय्यह की कस्रते दर्सो तदरीस के बाइ़ष आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का नाम **इद्रीस** हुवा।

(تفسیر کبیر ج ۷ ص ۵۵۰، تفسیر الحسنات ج٤ ص٤٨)

★ **हुज़ूरे** ग़ौषे पाक رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं, "دَرَسْتُ الْعِلْمَ حَتّٰی صِرْتُ قُطْبًا" *(या'नी मैं इ़ल्म का **दर्स** लेता रहा यहां तक कि मक़ामे **क़ुत़्बिय्यत** पर फ़ाइज़ हो गया)* (قصیدۂ غوثیہ)

★ **फै़ज़ाने सुन्नत** से **दर्स** देना भी दा'वते इस्लामी का एक म-दनी काम है। घर, मस्जिद, दुकान, स्कूल, कोलेज, चौक वग़ैरा में वक़्त मुक़र्रर कर के रोज़ाना **दर्स** के ज़रीए़ ख़ूब ख़ूब सुन्नतों के **म-दनी फूल** लुटाइये और ढेरों षवाब कमाइये।

★ **फ़ैज़ाने सुन्नत** से रोज़ाना कम अज़ कम **दो दर्स** देने या सुनने की सआ़दत ह़ासिल कीजिये।

पारह 28 सू-रतुत्तह़रीम की छटी आयत में इर्शाद होता है :

يٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِیْكُمْ نَارًا وَّ قُوْدُهَا النَّاسُ وَ الْحِجَارَةُ (پ۲۸ التحریم:٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिस के ईंधन आदमी और पथ्थर हैं।*

अपने आप को और अपने घर वालों को दोज़ख़ की आग से बचाने का एक ज़रीआ़ **फ़ैज़ाने सुन्नत** का **दर्स** भी है। (दर्स के इ़लावा सुन्नतों भरे बयान या म-दनी मुज़ाकरे का रोज़ाना एक केसिट भी घर वालों को सुनाइये)

★ **ज़िम्मादार** घड़ी का वक़्त मुक़र्रर कर के रोज़ाना **चौक दर्स** का एहतिमाम करें। म-षलन रात नव बजे **मदीना चौक,** (साढ़े नव बजे) **बग़दादी चौक** में वग़ैरा। छुट्टी वाले दिन एक से ज़ियादा मक़ामात पर **चौक दर्स** का एहतिमाम कीजिये। (मगर हुक़ूक़े आ़म्मा तलफ़ न हों म-षलन मुसलमानों का रास्ता न रुके वरना गुनहगार होंगे)

★ **दर्स** के लिये वोह नमाज़ **मुन्तख़ब** कीजिये जिस में ज़ियादा से ज़ियादा इस्लामी भाई शरीक हो सकें।

★ **दर्स** वाली नमाज़ उसी मस्जिद की पहली सफ़ में तकबीरे ऊला के साथ **बा जमाअ़त** अदा फ़रमाइये।

★ **मेह़राब** से हट कर (सेह़न वग़ैरा में) कोई ऐसी जगह दर्स के लिये मख़्सूस कर लीजिये जहां दीगर नमाज़ियों और तिलावत करने वालों को दुश्वारी न हो।

www.dawateislami.net

★ **जै़ली** निगरान को चाहिये कि अपनी मस्जिद में दो **ख़ैर ख़्वाह** मुक़र्रर करे जो दर्स (बयान) के मौक़अ़ पर जाने वालों को नर्मी से रोकें और सब को क़रीब क़रीब बिठाएं।

★ **पर्दे में पर्दा** किये दो ज़ानू बैठ कर **दर्स** दीजिये। अगर सुनने वाले ज़ियादा हों तो खड़े हो कर या माईक पर देने में भी ह़रज नहीं जब कि नमाज़ियों वग़ैरा को तशवीश न हो।

★ **आवाज़** न तो ज़ियादा बुलन्द हो और न ही बिलकुल आहिस्ता ह़त्तल इम्कान इतनी आवाज़ से **दर्स** दीजिये कि सिर्फ़ ह़ाज़िरीन सुन सकें। इस बात की हमेशा एह़तियात़ फ़रमाइये कि दर्स व बयान की आवाज़ से किसी सोते हुए या किसी नमाज़ी या मश्ग़ूले तिलावत वग़ैरा को तक्लीफ़ न हो।

★ **दर्स** हमेशा ठहर ठहर कर और धीमे अन्दाज़ में दीजिये।

★ **जो** कुछ **दर्स** देना है पहले उस का कम अज़ कम एक बार मुत़ालआ़ कर लीजिये ताकि ग़-लत़ियां न हों।

★ **फ़ैज़ाने सुन्नत** के मुअ़र्रब अलफ़ाज़ ए'राब के मुत़ाबिक़ ही अदा कीजिये इस त़रह़ اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ **तलफ़्फ़ुज़** की दुरुस्त अदाएगी की आ़दत बनेगी।

★ **ह़म्द** व सलात, दुरूदो सलाम के दोनों सीग़े, आयते दुरूद और इख़्तितामी आयात वग़ैरा किसी सुन्नी आ़लिम या क़ारी को ज़रूर सुना दीजिये। इसी त़रह़ अ़-रबी दुआ़एं वग़ैरा जब तक उ़-लमाए अहले सुन्नत को न सुना लें अकेले में भी न पढ़ा करें।

www.dawateislami.net

★ **फ़ैज़ाने सुन्नत** के इलावा **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ् होने वाले **म-दनी रसाइल** से भी **दर्स** दे सकते हैं।

★ **दर्स** मअ् इख़्तितामी दुआ सात मिनट के अन्दर अन्दर मुकम्मल कर लीजिये।

★ **हर** मुबल्लिग़ को चाहिये कि वोह **दर्स का तरीक़ा**, बा'द की **तरग़ीब** और **इख़्तितामी दुआ** ज़बानी याद कर ले।

★ **दर्स** के तरीक़े में इस्लामी बहनें हस्बे ज़रूरत तरमीम कर लें।

मस्जिद में दर्स देने के मक़ासिद

1 : दर्स देने का सब से बड़ा मक़सद **अल्लाह** व **रसूल** عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللّٰہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم की रिज़ा है।

2 : दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत के ज़रीए शु-रकाए दर्स और अहले महल्ला को अहले महब्बत बल्कि हक़ीक़ी मा'नों में "दा'वते इस्लामी" वाला बनाना है।

3 : मस्जिद में दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत के शु-रका के ज़रीए हफ़्ते में एक बार अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत की तरकीब बनानी है।

4 : फ़ैज़ाने सुन्नत के दर्स में शु-रकाए दर्स को म-दनी इन्आमात पर अ़मल और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना कर के (म-दनी इन्आमात का) रिसाला पुर करने की तरग़ीब दिलानी है और उन को म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करने और करवाने का ज़ेहन भी देना है।

5 : हफ़्तावार इजतिमाअ़ में पाबन्दिये वक़्त के साथ अव्वल ता आख़िर शिर्कत के लिये तय्यार करना है।

6 : मस्जिद के इमाम साहिब और कमेटी वालों को भी म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र पर आमादा करना है।

7 : मस्जिद सत़ह पर सदाए मदीना की तरकीब भी बनानी है।

8 : मस्जिद सत़ह पर हर रोज़ मुलाक़ात के लिये फ़ज्र के बा'द म-दनी ह़ल्क़े शुरूअ़ करना है और मस्जिद के अत़राफ़ में जो लोग नमाज़ नहीं पढ़ते उन्हें नमाज़ की तरग़ीब भी दिलानी है।

9 : मस्जिद के क़ुर्बो जवार में पुराने इस्लामी भाइयों में से जो पहले आते थे अब नहीं आते उन से मुलाक़ात कर के उन्हें म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र की तरग़ीब दिलानी है।

10 : शु-रकाए दर्स को "दा'वते इस्लामी" का मुबल्लिग़ व मुअ़ल्लिम बनाना है।

11 : मस्जिद के क़रीब चौक दर्स की तरकीब बनानी है।

12 : मस्जिद में मद्रसतुल मदीना बालिग़ान का सिलसिला शुरूअ़ करना और इसे मज़बूत़ करना है।

★★★★★★

www.dawateislami.net

फ़ैज़ाने सुन्नत से दर्स देने का त़रीक़ा

तीन बार इस त़रह़ ए'लान फ़रमाइये :

क़रीब क़रीब तशरीफ़ लाइये

पर्दे में पर्दा किये दो ज़ानू बैठ कर इस त़रह़ इब्तिदा कीजिये :

(माइक इस्ति'माल न करें, बिग़ैर माइक के भी आवाज़ धीमी रखें, किसी नमाज़ी वग़ैरा को तशवीश न हो)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

इस के बा'द इस त़रह़ दुरूदो सलाम पढ़ाइये :

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه   وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه   وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

अगर मस्जिद में हैं तो इस त़रह़ ए'तिकाफ़ की निय्यत करवाइये :

نَوَيْتُ سُنَّةَ الاعْتِكَاف

*(**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)*

फिर इस त़रह़ कहिये : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** निगाहें नीची किये तवज्जोह के साथ रिज़ाए इलाही के लिये इल्मे दीन ह़ासिल करने की निय्यत से फ़ैज़ाने सुन्नत का **दर्स** सुनिये। इधर उधर देखते हुए, ज़मीन पर उंगली से खेलते हुए, लिबास बदन या बालों वग़ैरा को सहलाते हुए सुनने से हो सकता है इस की ब-र-कत

www.dawateislami.net

जाती रहें। (बयान के आग़ाज़ में भी **क़रीब क़रीब आ जाइये** कह कर इसी अन्दाज़ में रग़बत दिलाइये और अच्छी अच्छी निय्यतें भी करवाइये) येह कहने के बा'द **फ़ैज़ाने सुन्नत** से देख कर दुरूद शरीफ़ की एक फ़ज़ीलत बयान कीजिये। फिर कहिये :

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!   صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

जो कुछ लिखा हुवा है वोही पढ़ कर सुनाइये। आयात व अ़-रबी इ़बारात का सिर्फ़ तर्जमा पढ़िये, लिखे हुए मज़्मून का अपनी राए से हरगिज़ ख़ुलासा मत कीजिये।

दर्स के आख़िर में इस त़रह़ तरग़ीब दिलाइये

(हर मुबल्लिग़ को चाहिये कि ज़बानी याद कर ले और दर्स व बयान के आख़िर में बिला कमी बेशी इसी त़रह़ तरग़ीब दिलाया करे)

ख़ौफ़े ख़ुदा व इ़श्क़े मुस्त़फ़ा के ह़ुसूल के लिये हर हफ़्ते को **इशा की नमाज़** के बा'द अमीरे अहले सुन्नत का मदनी मुज़ाकरा देखने, सुनने और हर जुमा'रात मग़रिब की नमाज़ के बा'द आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में ब निय्यते सवाब सारी रात गुज़ारने की म-दनी इलतिजा है, इशा के बा'द बेशक वहीं आराम फ़रमा लीजिये और **अल्लाह** पाक तौफ़ीक़ दे तो तहज्जुद भी अदा कीजिये। हर माह कम अज़ कम तीन दिन के **म-दनी क़ाफ़िले** में सुन्नतों भरा सफ़र और रोज़ाना

www.dawateislami.net

फ़िक्रे मदीना के ज़रीए "नेक बनने का नुस्ख़ा" बनाम **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर इस्लामी माह की पहली तारीख़ को अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की ह़िफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा।

आख़िर में ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ (या'नी जिस्म व दिल की आ़जिज़ी) और क़बूलिय्यत के यक़ीन के साथ दुआ़ में हाथ उठाने के आदाब बजा लाते हुए बिला कमी बेशी इस त़रह़ दुआ़ मांगिये :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْن

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ ! ब तुफ़ैले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हमारी, हमारे मां बाप की और सारी उम्मत की मग़फ़िरत फ़रमा। **या अल्लाह** पाक ! दर्स की ग़-लति़यां और तमाम गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा, हमें आ़शिक़े रसूल, परहेज़ गार और मां बाप का फ़रमां बरदार बना। **या अल्लाह** पाक ! हमें म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल करने, म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने और नेकी की दा'वत की धूमें मचाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** पाक ! मुसलमानों को बीमारियों, क़र्ज़ दारियों, बे रोज़गारियों, बे औलादियों, झूटे मुक़द्दमों और त़रह़ त़रह़ की परेशानियों से नजात अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** पाक ! इस्लाम का बोल बाला कर। **या अल्लाह** पाक ! हमें दा'वते

www.dawateislami.net

इस्लामी के म-दनी माहोल में इस्तिक़ामत अ़ता फ़रमा। **या अल्लाह** पाक ! हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा जल्वए मह़बूब صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم में शहादत, **जन्नतुल बक़ीअ़** में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में अपने म-दनी ह़बीब صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमा। **या अल्लाह** पाक ! मदीने की खु़श्बूदार ठन्डी ठन्डी हवाओं का वासित़ा हमारी जाइज़ मुरादों पर रह़मत की नज़र फ़रमा।

कहते रहते हैं दुआ़ के वासित़े बन्दे तेरे
कर दे पूरी आरज़ू हर बे कसो मजबूर की

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

शे'र के बा'द येह आयते मुबारका पढ़िये :

اِنَّ اللّٰهَ وَ مَلٰٓىٕكَتَهٗ یُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِیِّ ؕ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَیْهِ وَ سَلِّمُوْا تَسْلِیْمًا ﴿۵۶﴾ (پ۲۲ الاحزاب:۵۶)

सब दुरूद शरीफ़ पढ़ लें फिर पढ़िये :

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا یَصِفُوْنَ ﴿۱۸۰﴾ وَ سَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِیْنَ ﴿۱۸۱﴾ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۱۸۲﴾

(پ۲۳ الصّٰفّٰت:۱۸۰ تا ۱۸۲)

(आख़िर में कलिमा पढ़ कर सुन्नत पर अ़मल की निय्यत से मुंह पर दोनों हाथ फेर लीजिये।)

www.dawateislami.net

दर्स की कमाई पाने के लिये षवाब की निय्यत के साथ (खड़े खड़े नहीं बल्कि) **बैठ** कर ख़न्दा पेशानी के साथ लोगों से मुलाक़ात कीजिये, चन्द नए इस्लामी भाइयों को अपने क़रीब बिठा लीजिये और **इनफ़िरादी कोशिश** के ज़रीए ख़ूब मुस्कुराते हुए उन्हें **म-दनी इन्आमात** और **म-दनी क़ाफ़िलों** की ब-र-कतें समझाइये। (बैठ कर मिलने में हिक्मत येह है कि कुछ न कुछ इस्लामी भाई हो सकता है आप के साथ बैठे रहें वरना खड़े खड़े मिलने वाले उमूमन चल पड़ते हैं यूं इनफ़िरादी कोशिश की सआदत से मह़रूमी हो सकती है)

तुम्हें ऐ मुबल्लिग़ येह मेरी दुआ है
किये जाओ तै तुम तरक़्क़ी का ज़ीना

दुआए अ़त्तार : या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुझे और पाबन्दी के साथ **फ़ैज़ाने सुन्नत** से रोज़ाना कम अज़ कम **दो दर्स** एक घर में दूसरा मस्जिद, चौक या स्कूल वग़ैरा में देने और सुनने वाले की मग़फ़िरत फ़रमा और हमें हुस्ने अख़्लाक़ का पैकर बना।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मुझे दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत की तौफ़ीक़
मिले दिन में दो मरतबा या इलाही

★★★★★★

www.dawateislami.net

बयान की अहम्मिय्यत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! उ़मूमन हम किसी को अपना मक़सद बोल कर ही समझाते हैं। बयान में मुबल्लिग़ के बोलने का अन्दाज़ जितना ज़ियादा मुअष्षिर होगा उतना ही वोह अपने मक़सद को बेहतर अन्दाज़ में समझा सकेगा। यूं समझिये कि बयान अपने मक़सद को पूरी दुन्या में पहुंचाने का ज़रीआ़ है, अच्छे बयान से म-दनी क़ाफ़िले मज़बूत़ होते हैं, हम बयान से इजतिमाई त़ौर पर म-दनी काम करने का ज़ेह्न बना सकते हैं, बयान मुबल्लिग़ की शख़्सिय्यत में निखार पैदा करता है, बयान से खु़द ए'तिमादी पैदा होती है। प्यारे आक़ा म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : **"बा'ज़ बयान जादू हैं।"**

(صحیح البخاری، کتاب النکاح،باب الخطبۃ،الحدیث:٥١٣٦،ج٣،ص٤٤٦)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیۡہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الکریم इस ह़दीष के तह़्त तह़रीर फ़रमाते हैं : "या'नी बा'ज़ कलाम (बयान) लोगों के दिल अपनी त़रफ़ माइल करने में, लोगों को ह़ैरान कर देने में जादू का अषर रखते हैं।"

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 426)

पस इस से मा'लूम हुवा कि बा'ज़ बयान सुनने वालों पर इस त़रह़ अषर अन्दाज़ होते हैं जैसे जादूगर का जादू अषर अन्दाज़ होता है। लिहाज़ा क़ुलूब में इनक़िलाब पैदा करने के सिल्सिले में बयान को नुमायां ह़ैषिय्यत ह़ासिल है। यक़ीनन येह इनक़िलाब व तब्दीली ऐसे बयान से ज़ुहूर पज़ीर होगी जिसे हर ज़ाविये से जांच परख कर सिपुर्दे

www.dawateislami.net

सामिई़न किया गया हो। मज़्कूरा बाला ह़दीषे पाक और इस से अख़ज़ शुदा नतीजे की रोशनी में येह बात बख़ूबी समझ में आती है कि हमें अपनी प्यारी प्यारी सुन्नतों की आ़लमगीर तह़रीक दा'वते इस्लामी की तरक़्क़ी व बक़ा की ख़ात़िर अपने बयान को बेहतर बनाना, इस की अदाएगी में सुस्ती और काहिली से बचना और दीगर इस्लामी भाइयों में इस के लिये शुऊ़र व सलाह़िय्यत बेदार करना बेह़द लाज़िमी व ज़रूरी है।

लिहाज़ा हमें म-दनी क़ाफ़िलों को सफ़र करवाने के लिये और म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल की तरग़ीब दिलाने के लिये अपने बयान को मज़बूत़ करना होगा।

बयान के मक़ासिद

बयान करने वाले मुबल्लिग़ को चन्द बातों का ख़याल रखना ज़रूरी है।

(1) बयान का मक़्सद अपनी इस्लाह़ हो :

अगर मुबल्लिग़ की बयान करते वक़्त येह सोच हो कि मैं सामिई़न इस्लामी भाइयों की इस्लाह़ के लिये बयान कर रहा हूं तो फिर वोह ख़ुद बयान की ब-रकत से मह़रूम हो जाएगा। बयान करते वक़्त मुबल्लिग़ की क्या सोच होनी चाहिये ? इस सिल्सिले में फ़रमाने अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये कि "मुबल्लिग़ बयान करते वक़्त येह निय्यत करे कि मैं दूसरों को नसीह़त करने के बजाए ख़ुद अपने आप को समझा रहा हूं।"

www.dawateislami.net

लिहाज़ा हमें चाहिये कि जब भी बयान करने की सआदत ह़ासिल हो तो अपनी इस्लाह़ की निय्यत से बयान करें। इस म-दनी फूल से اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ बयान के बा'द मुबल्लिग़ के दिल में शैत़ान की त़रफ़ से बेदार होने वाले इस वस्वसे की काट भी हो जाएगी कि लोग मेरे बयान की ता'रीफ़ या मेरी वाह वाह करें। क्यूंकि जब अपनी इस्लाह़ मक़्सूद होगी तो ता'रीफ़ की ख़्वाहिश ख़त्म हो जाएगी ह़क़ीक़त येह है कि बयान उसी मुबल्लिग़ का काम्याब होता है जो इख़्लास के साथ **अल्लाह** व **रसूल** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ा व ख़ुशनूदी के लिये बयान करता है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें भी इख़्लास अ़त़ा फ़रमाए।

(2) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा मक़्सूद हो :

फ़रमाने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ है : **"इख़्लास क़बूलिय्यत की कुन्जी है।"**

लिहाज़ा ! बयान सिर्फ़ और सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ातिर ही करना चाहिये क्यूंकि मख़्लूक़ को मुतअष्षिर करने के लिये बयान करने की नुहूसत से इन्सान न सिर्फ़ गुनहगार होता है बल्कि इस के बाइ़ष बयान की ताषीर भी बेह़द मुतअष्षिर होती है। बा'ज़ अवक़ात ऐसा भी होता है कि अगर किसी मुबल्लिग़ का पुर अषर बयान सुन लिया तो नफ़्स येह चाहता है मैं भी ऐसा ही बयान करूं फिर इस त़रह़ के बयानात का मवाद जम्अ़ करने की कोशिश की जाती है। जिस से मक़्सूद अपनी धाक बिठाना होता है और जब उस मुबल्लिग़ की त़रह़ बयान न किया जा सका तो हौसले पस्त और वल्वले सर्द पड़ जाते हैं। बयान में इख़्लास के बारे में तीन मवाक़ेअ़ पर ग़ौर करना ज़रूरी है।

www.dawateislami.net

(1) इब्तिदा में अपने आप से सुवाल करें कि "तू येह बयान किस निय्यत के साथ कर रहा है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को राज़ी करने और ख़िदमते दीन की निय्यत से या इस लिये कि तेरी इ़ज़्ज़त में इज़ाफ़ा हो, लोग तुझ से मुतअष्षिर हो जाएं, तेरी ता'रीफ़ें की जाएं, बा'दे बयान तुझे तअ़ज्जुब खै़ज़ निगाहों से देखा जाए वग़ैरा।" पहली मरतबा किसी बड़े इजतिमाअ़ में बयान करने वाले मुबल्लिग़ीन इस का ख़ास ख़याल रखें।

(2) बा'ज़ अवक़ात शुरूअ़ में इख़्लास पेशे नज़र होता है लेकिन दरमियान में मज़्कूरा फ़ासिद निय्यतें दाख़िल हो जाती हैं। लिहाज़ा दरमियान में भी इस का ख़याल रखना ज़रूरी है।

(3) बयान के बा'द भी येह ख़्वाहिश हरगिज़ पैदा न हो कि अब मेरे बयान की ता'रीफ़ की जाए लोग मेरे हाथ चूमें, अपने अ़लाक़े में मेरा बयान करवाने के लिये इसरार करें, मुझ से मेरा नाम व पता मा'लूम किया जाए वग़ैरा।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हम इख़्लास के साथ अपनी इस्लाह़ की निय्यत से बयान करते रहेंगे तो एक दिन हम अपने म-दनी मक़सद में काम्याब हो जाएंगे। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ फ़रमाते हैं : "बयान करने वाला सिर्फ़ गुफ़्तार का ग़ाज़ी न हो बल्कि अपने बयान पर अ़मल करने का भी ज़ेहन रखता हो।" काश ! हम सब का ऐसा ही ज़ेहन बन जाए और हम सब अपनी इस्लाह़ के लिये ही बयान करने वाले बन जाएं।

www.dawateislami.net

(3) बयान का अषर ज़ाहिर न हो तो अपने इख़्लास की कमी तसव्वुर करे :

बा'ज़ अवक़ात बयान करने के बा'द मुबल्लिग़ की ज़बान से येह अल्फ़ाज़ भी जारी हो जाते हैं कि "मैं ने बयान तो किया लेकिन सुनने वालों पर अषर नहीं हुवा, म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र के लिये तय्यार नहीं हुए, किसी ने उठ कर म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की निय्यत से नाम नहीं लिखवाया, यहां के इस्लामी भाई बहुत सख़्त दिल हैं इन के दिल पर बात भी अषर नहीं करती है।" इस क़िस्म की बात वोही कर सकता है जो ख़ुद को क़ाबिले इस्लाह़ तसव्वुर न करता हो।

अपने आप को इस्लाह़ शुदा समझना यक़ीनन नादानी है। **अमीरे अहले सुन्नत** مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی फ़रमाते हैं : "लोगों पर अषर न हो तो उन को सख़्त दिल समझने या कहने के बजाए अपने इख़्लास की कमी तसव्वुर कर के इस्तिग़्फ़ार करें।" ऐ काश ! हम सब का ऐसा ही ज़ेहन बन जाए और हम भी ख़ौफ़े ख़ुदा से लरज़ते, इश्क़े रसूल में डूब कर ऐसा बयान करने वाले बन जाएं जैसा बयान हमारे अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं। येह आप مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی के इख़्लास ही की ब-रकत है कि जो भी आप के बयान को कमा ह़क़्क़ुहू सुनता है आप की ज़बाने मुबारक से निकलने वाले अल्फ़ाज़ तासीर का तीर बन कर दिल में उतरते चले जाते हैं, जिस के नतीजे में उसे साबिक़ा गुनाहों पर नदामत मह़सूस होती है और तौबा की तौफ़ीक़ मिलती है, नमाज़ की अदाएगी पर इस्तिक़ामत नसीब होती है, उस के दिल में नेकियों का शौक़ बेदार होता है, वोह म-दनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बनता है। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه के सदक़े में इख़्लास अ़ता फ़रमा दे।

www.dawateislami.net

बयान करने से पहले चन्द एह़तियातें

(1) अपने पाउं देख लीजिये कि इन पर मैल तो नहीं जमा हुवा ? नाख़ुन बढ़े हुए तो नहीं ? क्यूंकि जब आप बयान करने के लिये खड़े होंगे तो क़रीब बैठे हुए लोगों की निगाह आप के पैरों पर भी पड़ेगी अगर उन पर मैल की तह जमी होगी और नाख़ुन बड़े होंगे तो उन पर आप की शख़्सिय्यत का बुरा अषर क़ाइम होगा, जिस का मनफ़ी अषर आप के बयान पर भी पड़ेगा। नीज़ जब भी आप खड़े हों तो ख़याल रखिये कि दोनों पैरों के दरमियान ज़ियादा फ़ासिला न हो।

(2) यूंही बयान के बा'द उ़मूमन लोग मुसा-फ़ह़ा कर के सुन्नत पर अ़मल करने की सआ़दत ह़ासिल करते हैं अगर आप के हाथ मैले कुचैले और नाख़ुन बड़े बड़े और मैल ज़दा हुए तो मुसा-फ़ह़ा करने वाले के दिल में आप के मु-तअ़ल्लिक़ कराहिय्यत पैदा हो सकती है और इस के बाइ़ष बयान का अषर ज़ाइल या कम हो सकता है लिहाज़ा हाथ भी साफ़ सुथरे होने चाहिएं।

(3) इसी त़रह़ लिबास साफ़ सुथरा होना चाहिये ताकि किसी को कराहिय्यत मह़सूस न हो।

(4) इमामा भी साफ़ सुथरा और अच्छे अन्दाज़ से बांधें, नीज़ दाढ़ी शरीफ़ और ज़ुल्फ़ों में कंघा कर लें ताकि देखने वालों के दिल में नफ़रत व कराहिय्यत के बजाए सुन्नत की मह़ब्बत व रग़बत पैदा हो।

www.dawateislami.net

फ़रमाने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه है : "बयान करने वाला दा'वते इस्लामी के मख़्सूस सफ़ेद म-दनी लिबास व सब्ज़ इमामा व सफ़ेद चादर में हर वक़्त मलबूस रहने वाला हो।"

(5) चेक कर लें कि गिरीबान के बटन खुले हुए तो नहीं क्यूंकि गिरीबान के बटन खोल कर रखना शरीफ़ लोगों का शेवा नहीं। गिरीबान के ऊपर तक बटन बन्द करने में अगर तक्लीफ़ मह़सूस न हो तो बन्द कर लें।

(6) पाइंचे सुन्नत के मुत़ाबिक़ हमेशा टख़्नों से ऊपर होने चाहिएं, लेकिन बयान करते वक़्त तो ख़ुसूसी त़ौर पर इस का ख़याल रखें। वरना न सिर्फ़ ए'तिराज़ का निशाना बनना पड़ेगा बल्कि किसी के बद ज़न हो कर बयान की ब-रकात से मह़रूम होने का भी अन्देशा है। यूंही कुरते का दामन देख लें कि कहीं शलवार या पाजामे के नेफ़े में फंसा हुवा तो नहीं ?

(7) पसीना आने की सूरत में इ़त्र का इस्ति'माल भी किया जाए।

(8) मुंह में बदबू नहीं होनी चाहिये।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन म-दनी फूलों पर अ़मल कर के हम बयान से पहले अपने लिबास व जिस्म को देख लें कि कोई इफ़रात़ो तफ़रीत़ न हो।

★★★★★★

www.dawateislami.net

बयान की अक़्साम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें अपने बयानात में अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश का ज़ेह्न देना है और इस सिल्सिले में म-दनी क़ाफ़िलों और म-दनी इन्आ़मात की तरग़ीब दिलानी है । हमारे पास बयान करने के लिये कई मौज़ूआ़त होते हैं जिन के ज़रीए़ हम अपने म-दनी मक़्सद को बयान करते हैं । बयान के मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ होते हैं अगर हम हर बयान को एक ही अन्दाज़ में करेंगे तो बयान की ब-रकात ह़ासिल नहीं कर पाएंगे । लिहाज़ा बयान करने के मुख़्तलिफ़ मौज़ूआ़त के बारे में म-दनी फूल पेश किये जाते हैं ताकि हम इन म-दनी फूलों के तह़्त अपने अन्दाज़े बयान को दुरुस्त कर सकें ।

हमारे पास बयान करने के दो मुख़्तलिफ़ मौज़ूआ़त हैं :

(1) तन्ज़ीमी **(2) इस्लाह़ी**

(1) तन्ज़ीमी :

तन्ज़ीमी ए'तिबार से बयान करने वाले को इस बात का ख़ास ख़याल रखना चाहिये कि वोह अपनी बात को समझाने वाले अन्दाज़ में करे चूंकि तरबिय्यती इजतिमाअ़ में हम म-दनी काम करने का त़रीक़ा सीखते हैं लिहाज़ा हमें इस त़रीक़ए कार को बयान करने के लिये चन्द बातों का ख़याल रखना चाहिये । चूंकि तन्ज़ीमी मौज़ूअ़ दूसरे मौज़ूआ़त से क़दरे ख़ुश्क होता है लिहाज़ा इस में मुबल्लिग़ दिलचस्पी पैदा करने के लिये दिलचस्प वाक़िआ़त को भी शामिल

www.dawateislami.net

करे मगर इस में अन्दाज़ इस त़रह़ का हो जिस त़रह़ हम किसी एक शख़्स से गुफ़्त्गू कर के अपनी बात समझाना चाहते हैं, बल्कि हम सुनने वाले इस्लामी भाइयों के ज़ेह्न में इस त़रह़ उतर जाएं कि उन की बोरियत ख़त्म हो जाए इस के लिये लाज़िम है कि हम ने जो निकात बयान करने हैं, उन पर हमारी अच्छी त़रह़ तय्यारी हो ताकि हम रवानी के साथ बयान करते जाएं और साथ ही साथ उन पर अ़मल की तरग़ीब भी दिलाई जाए मगर किसी भी वक़्त अपने बयान में किसी ज़िम्मादार पर तनक़ीद न की जाए और न येह एह़सास दिलाया जाए कि आप को म-दनी काम करने का सलीक़ा नहीं बल्कि म-दनी काम करने की अहम्मिय्यत को उजागर किया जाए।

तन्ज़ीमी बयान में न बिलकुल सन्जीदगी हो और न बिलकुल ग़ैर सन्जीदा पन बल्कि जोश और नर्मी दोनों शामिल हों, अपनी त़रफ़ से कोई नुक्ता हरगिज़ बयान न करें बल्कि जो म-दनी मर्कज़ ने हमें म-दनी निकात दिये हैं उन्ही को बयान करें। और उन निकात पर अ़मल करने की तरग़ीब भी दिलाएं।

(2) इस्लाह़ी :

इस मौज़ूअ़ पर बयान करने वाला इस बात का ख़ास त़ौर पर ख़याल रखे कि मैं अपनी इस्लाह़ के लिये बयान कर रहा हूं। इस्लाह़ी मौज़ूअ़ में इस्लाह़े मुआ़-शरा, इस्लाह़े नफ़्स, गुनाहों की मज़म्मत, गुनाहों से बचने की तरग़ीब, तकब्बुर की मज़म्मत, ग़ीबत की मज़म्मत, ह़सद, बद निगाही वग़ैरा पर बयान करना शामिल है।

www.dawateislami.net

इस्लाह़ी मौज़ूअ़ में मुबल्लिग़ का अपना अन्दाज़ इस त़रह़ रखना और समझाना चाहिये जैसे बाप अपने बेटे को समझाता है या'नी शफ़्क़त और नर्मी के साथ बयान किया जाए। अगर इस में मह़्ज़ जज़्बाती अन्दाज़ होगा और ज़ोरे बयान दिखाना मक़्सूद होगा तो याद रखिये ! "किसी को सख़्ती के साथ समझाने की मिषाल ऐसी है कि जिस बरतन में पानी डालना है गोया उस में पहले ही से सूराख़ कर दिया।"

है फ़लाह़ो कामरानी नर्मी व आसानी में

हर बना काम बिगड़ जाता है नादानी में

जिस इस्लाह़ी मौज़ूअ़ पर बयान करना है पहले अच्छी त़रह़ उस की तय्यारी फ़रमा लें जब भी इस्लाह़ी बयान करना हो पहले उस के मौज़ूअ़ का तआ़रुफ़ करवाएं। या'नी तकब्बुर को ले लीजिये कि पहले तकब्बुर की ता'रीफ़ बयान करें, फिर तकब्बुर क्या है ? इस के बारे में बताएं, फिर तकब्बुर की मज़म्मत, फिर तकब्बुर से कैसे बच सकते हैं और इस का इ़लाज बताएं। आख़िर में इस के इ़लाज की तरग़ीब ज़रूर दिलाएं म-षलन मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर हम तकब्बुर से बचना और अपने अन्दर आ़जिज़ी पैदा करना चाहते हैं तो हमे म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र और म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल अपना मा'मूल बनाना होगा। हम ख़ुद मह़सूस करेंगे कि आ़जिज़ी हमारी त़बीअ़ते षानिया बनती जा रही है।

फ़रमाने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه है : "हर बयान में ह़त्तल इम्कान तीन मरतबा म-दनी क़ाफ़िले और म-दनी इन्आ़मात की तरग़ीब भी होनी चाहिये।"

www.dawateislami.net

बयान तय्यार करने का त़रीक़ा

(1) पहले जम्अ़ शुदा मवाद म-षलन हि़कायात या वाक़िआ़त, कु़रआनी आयात या अह़ादीष जिन से बयान शुरूअ़ करना है उन्हें बग़ौर पढ़ लें।

(2) अब ग़ौर करें कि इस में कौन सी बात सब से पहले बयान करना ज़रूरी है, फिर कौन सी, इस के बा'द कौन सी और आख़िर में कौन सी या यूं ग़ौर कीजिये कि सुनने वाले इस में से किस चीज़ को पहले जानना चाहेंगे, इस के बा'द किस को, म-षलन आप ह़सद का बयान करना चाहते हैं और आप के पास इस का इलाज, तबाह कारियां, अ़लामात, ता'रीफ़ और इस सिल्सिले में बुज़ुर्गाने दीन के वाक़िआ़त मौजूद हैं तो यक़ीनन सब से पहले इस की ता'रीफ़ बयान करनी चाहिये क्यूंकि अ़वाम तो अ़वाम बा'ज़ ख़्वास भी इस की शरई ता'रीफ़ से ना वाक़िफ़ होंगे। अब अगर आप ने ता'रीफ़ बयान किये बिग़ैर ह़सद की तबाह कारियां बयान करना शुरूअ़ कर दीं तो न सुनने वाले सह़ीह़ मा'ना में ख़ौफ़ मह़सूस करेंगे और न ही अपना मुह़ा-सबा कर सकेंगे, हां अगर आप पहले ता'रीफ़ बयान कर दें तो इब्तिदा ही से सब को मा'लूम हो जाएगा कि येह ऐ़ब मेरी ज़ात में मौजूद है या नहीं। अब इस के बा'द जब आप इस की तबाह कारियां बयान करेंगे तो इस गुनाह में मुब्तला ह़ज़रात बहुत अच्छी त़रह़ अपना मुह़ा-सबा कर सकेंगे, नीज़ इस की आफ़ात के बयान से उन के दिलों में ख़ौफ़ भी पैदा होगा। ता'रीफ़ के बा'द इस गुनाह से तौबा की त़रफ़ माइल करना या मह़फ़ूज़ रहने के लिये अ़-मली इक़्दाम की सोच फ़राहम

www.dawateislami.net

करना भी ज़रूरी है यक़ीनन इस के लिये ह़सद की आफ़ात को बित्तफ़्सील बयान किया जाना चाहिये, चुनान्चे इस की तबाह कारियां बयान कीजिये अगर्चे ता'रीफ़ के ज़रीए ही ह़सद की मौजूदगी पर ब आसानी मुत्त़लअ़ हुवा जा सकता है लेकिन येह मुसल्लमा ह़क़ीक़त है कि नफ़्स अपनी ग़-लत़ी व ऐ़ब कभी भी तस्लीम नहीं करता, चुनान्चे अब इस की अ़लामात बयान की जानी चाहिये ताकि नफ़्स के लिये राहे फ़िरार के तमाम रास्ते बन्द हो जाएं। ता'रीफ़ व अ़लामात व बाइ़षे हलाकत होने का बयान करने के बा'द बेशक इ़लाज बयान करने की भी ज़रूरत है और इ़लाज इख़्तियार करने की तरग़ीब के लिये बुज़ुर्गाने दीन के आ'माल व अक़्वाल मुआ़विन षाबित होते हैं, लिहाज़ा आख़िर में इ़लाज, अस्लाफ़े किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم की ह़याते त़य्यिबा के ईमान अफ़्रोज़ वाक़िआ़त बयान किये जाएं। इस त़रह़ ग़ौर करने पर ह़सद के बयान की दर्जे ज़ैल तरतीब सामने आई :

(1) ह़सद की ता'रीफ़ **(2)** ह़सद की तबाह कारियां
(3) अ़लामात **(4)** इ़लाज **(5)** इ़लाज की तरग़ीब

पस इसी त़रह़ हर बयान को मुरत्तब कर के बयान करने की आ़दत डालिये, इस का फ़ाएदा आप ख़ुद देखेंगे। (اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ)

म-दनी मश्वरा है कि अगर मुमकिन हो सके तो हर उ़न्वान के तह़्त जम्अ़ शुदा मवाद को इसी त़रह़ बित्तरतीब किसी अलग डायरी में लिखते जाएं, यूं आप के पास मुख़्तलिफ़ मौज़ूआ़त पर कई बयान बिलकुल तय्यार ह़ालत में मौजूद होंगे।

★★★★★★

www.dawateislami.net

मुबल्लिग़ के म-दनी फूल

(1) “दा'वते इस्लामी” के म-दनी माह़ोल में बोली जाने वाली इस्तिलाह़ात याद हों और इन का इस्ति'माल आ़म अवक़ात में और दौराने बयान भी करता हो ।

(2) “दा'वते इस्लामी” के मख़्सूस सफ़ेद म-दनी लिबास व सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ और सफ़ेद चादर में हर वक़्त मल्बूस रहता हो ।

(3) क़ब्रो आख़िरत और सुन्नतों के फ़ज़ाइल वग़ैरा इस्लाही मौज़ूआ़त पर बयान करे ।

(4) ज़बानी बयान न करे उ़-लमाए अहले सुन्नत की कुतुब से फ़ोटो कॉपियां करवा कर अपनी डायरी में चस्पां कर ले ।

(5) बयान से क़ब्ल एक नज़र देख लिया करे और बिग़ैर तय्यारी के बयान न करे ।

(6) आयाते करीमा और अह़ादीषे मुबा-रका का अ़-रबी मतन सिर्फ़ आ़लिम ही बयान करें या उ़-लमा से सीख कर उन को सुनाने के बा'द उन की इजाज़त से बयान करने में मुज़ा-यक़ा नहीं । आयाते मुबा-रका का तर्जमा सिर्फ़ कन्ज़ुल ईमान ही से बयान करे ।

(7) दौराने बयान न सिर्फ़ म-दनी क़ाफ़िलों और म-दनी इन्आ़मात का तज़्किरा हो बल्कि इन की अच्छी त़रह़ तरग़ीब दिलाए, सिर्फ़ म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल का कहने के बजाए रोज़ाना फ़िक्रे मदीना कर के हर माह रिसाला जम्अ़ करवाने का मश्वरा भी दे, म-दनी माह़ोल की ब-रकतों और म-दनी बहारों से आगाह करे ।

www.dawateislami.net

(8) बयान करते वक़्त दूसरों को नसीह़त करने के बजाए तसव्वुर येह करे कि ख़ुद अपने आप को समझा रहा हूं।

(9) मुश्किल अलफ़ाज़ और अदक़ (निहायत बारीक) मज़ामीन से इजतिनाब करे।

(10) लोगों पर अषर न हो तो उन को सख़्त दिल समझने या कहने के बजाए अपने इख़्लास की कमी तसव्वुर कर के इस्तिग़फ़ार करे।

(11) बयान सन्जीदा होगा तो दिल पर अषर करेगा दौराने बयान इस क़िस्म के जुम्ले इस्ति'माल न करें म-षलन बोलो سُبْحٰنَ اللّٰہ ! या अधूरा जुम्ला कह कर इस अन्दाज़ में ख़ामोश हुए कि सामिई़न ने फ़िक़रा पूरा किया या बार बार कहते रहे, क्या समझे ? नहीं समझे आप ! समझ गए ना ? वग़ैरा। इसी त़रह़ लत़ाइफ़ बयान किये या ऐसे फ़िक़रे कहे कि लोग हंसने लगे इस त़रह़ ह़ाज़िरीन अगर्चे मह़ज़ूज़ हो कर वाह वाह करते हैं मगर तजरिबा येह है कि इस से सह़ीह़ मा'नों में ख़ौफ़े ख़ुदा (عَزَّوَجَلَّ) व इ़श्क़े मुस्त़फ़ा (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) और सोज़ो गुदाज़ ह़ासिल होना मुश्किल है।

(12) उ़-लमा व मशाइख़े अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ पर न बयान में तन्क़ीद हो न निज्जी गुफ़्तगू में बल्कि दिल में भी इन का एह़तिराम लाज़िम जानें।

(13) सियासी पार्टियों, ह़ुकूमत और इस के मह़कमे, पोलीस,

www.dawateislami.net

अफ़्वाज, बल्कि दुन्या के किसी भी मुल्क और उस के मुआ़मलात पर तन्क़ीद न करे कि इस त़रह़ उस मह़कमे या मुल्क वग़ैरा की इस्लाह़ की उम्मीद कम और दीन के काम में रुकावटें खड़ी हो जाने का इमकान ज़ियादा है।

(**14**) बयान में वक़्त की पाबन्दी को मलह़ूज़ रखे इतना त़वील बयान न करे कि लोग घबरा जाएं।

(**15**) मुबल्लिग़ अपने बयान में अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की सीरत के वाके़आत भी सुनाए और सामिईन को येह भी बताए कि अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه हमें किस त़रह़ से सादगी और आ़जिज़ी वाली ज़िन्दगी सुन्नत के मुत़ाबिक़ गुज़ारने की ताकीद फ़रमाते हैं।

(**16**) बयान का मवाद शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की तसानीफ़ और बयानात से लें। उ़-लमाए अहले सुन्नत की कुतुब का मुत़ालआ़ भी फ़रमाएं। मुत़ालए़ की ब-रकत से न सिर्फ़ मा'लूमात में बेह़द इज़ाफ़ा होता है बल्कि ख़ुद ए'तिमादी के साथ साथ बयान करने में आसानी भी पैदा होती है। इन कुतुब से मदद त़लब करना मुफ़ीद रहेगा : ★ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान ★ तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान ★ फ़ैज़ाने सुन्नत और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के दीगर कुतुबो रसाइल ★ अ़जाइबुल क़ुरआन ★ ग़राइबुल क़ुरआन ★ जामेअ़ करामाते औलिया ★ बज़्मे

www.dawateislami.net

औलिया ★ शर्हुस्सुदूर ★ बहारे शरीअ़त ★ फ़तावा र-ज़विय्या ★ एह़याउल उ़लूम ★ लुबाबुल एह़या ★ मिन्हाजुल आ़बिदीन ★ ख़ौफ़े ख़ुदा (मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना) ★ जन्नत में ले जाने वाले आ'माल ★ जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल ★ जहन्नम के ख़त़रात ★ कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब ★ ग़ीबत की तबाह कारियां ★ इल्मो ह़िकमत के 125 म-दनी फूल ★ तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत, और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ होने वाली दीगर कुतुब का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

(17) मुत़ालए़ के लिये किसी ऐसे वक़्त का इन्तिख़ाब फ़रमाएं कि जिस में दीगर मसरूफ़िय्यात और किसी की मुदा-ख़लत का अन्देशा न हो ताकि बिलकुल यक्सूई के साथ मुत़ालआ़ हो सके याद रखिये कि जो मुत़ालआ़ यक्सूई के साथ किया जाए वोह त़वील अ़र्से तक ज़ेहन में मह़फ़ूज़ रहता है।

(18) मुत़ालआ़ रोज़ाना होना चाहिये। इस में ताख़ीर हरगिज़ न हो इस के लिये लम्बा वक़्त ज़रूरी नहीं चाहे आधा घन्टा ही करे लेकिन रोज़ाना करें।

(19) लैट कर या झुक कर मुत़ालआ़ न करें। इस त़रह़ ज़ेह्न पर बोझ ज़ियादा पड़ता है नीज़ नज़र कमज़ोर होने का अन्देशा है और किताब को थोड़ा उठा कर पढ़ें।

(20) दौराने मुत़ालआ़ एक डायरी अपने पास रखें अब आप जो भी आयते पाक या ह़दीषे मुबा-रका या वाक़िआ़ या किसी बुज़ुर्ग का

क़ौल मुबारक पढ़ें उस पर ग़ौर करें कि इस को किस उ़न्वान के तह़त इस्ति'माल किया जा सकता है। अब जो भी उ़न्वान समझ में आए उसे डायरी के एक सफ़ह़े के ऊपर लिख लें। नीचे उस किताब का नाम और सफ़ह़ा नम्बर दर्ज कर लें म-षलन आप ने "जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल" का मुत़ालआ़ फ़रमाते हुए येह ह़दीषे पाक पढ़ी कि **सरकारे मदीना** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ह़सद से बचो कि ह़सद नेकियों को इस त़रह़ खा जाता है जैसे आग लकड़ी को खा जाती है।"

(سنن أبي داود، كتاب السنة، باب في الحسد، الحديث: ۴۹۰۳، ج۴، ص ۳۶۱)

तो इस ह़दीषे मुबा-रका को जिस सफ़ह़े पर लिखा पाया किताब का नाम लिख कर आगे सफ़ह़ा नम्बर लिख लीजिये इस त़रह़ तरकीब रखेंगे तो मवाद जम्अ़ करने में आसानी रहेगी।

(21) ऐसा न हो कि हम अपने बयान के लिये बेहतरीन और मुन्फ़रिद मवाद तय्यार करने की जुस्त्जू में अपनी इस्लाह़ से ही ग़ाफ़िल हो जाएं क्यूंकि हमारा म-दनी मक़सद येह है कि

"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

(22) किसी भी मौज़ूअ़ पर बयान हो म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल करने और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हुए इस का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाने और म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करने की दा'वत ज़रूर शामिल फ़रमाएं।

★★★★★★

www.dawateislami.net

फ़र्ज़ के बयानात

बयान नम्बर 1 :

फ़ैज़ाने ज़िक्रुल्लाह

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه "**रसाइले अ़त्तारिय्या**" (ह़िस्सए दुवुम) के सफ़ह़ा **12** पर ह़दीषे पाक नक़्ल फ़रमाते हैं कि ताजदारे रिसालत, शमए़ बज़्मे हिदायत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है, दस गुनाह मिटाता है और दस द-रजात बुलन्द फ़रमाता है।" (سنن النسائی، کتاب السهو، باب الفضل فی الصلاة...الخ، الحدیث:١٢٩٤، ص٢٢٢)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज सारी दुन्या में एक आ़लमगीर बेचैनी पाई जा रही है कोई मुल्क, शहर और गाउं बल्कि कोई घर ऐसा नहीं जहां **बद अमनी** और **बेचैनी** न हो। आज **हर शख़्स** बेचैनी का शिकार नज़र आता है आह ! नादान इन्सान शराब व रबाब की मह़फ़िलों, सिनेमा घरों की गेलेरियों, डिरामा गाहों और फ़ोह़ूश व उ़र्यानी से मुरस्सअ़ नाइट क्लबों और जिन्सी व रूमानी नाविलों के मुत़ालए़ में **सुकून** की तलाश में सरगर्दां है आख़िर सुकून कहां मिलेगा ? आइये देखें क़ुरआने पाक ने इस बारे में हमारी क्या रहनुमाई फ़रमाई है, इर्शादे बारी तआ़ला है :

www.dawateislami.net

اَلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ تَطْمَىٕنُّ قُلُوْبُهُمْ بِذِكْرِ اللّٰهِؕ اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَىٕنُّ الْقُلُوْبُؕ ۝۲۸

(پ۱۳،الرعد:۲۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *वोह जो ईमान लाए और उन के दिल **अल्लाह** की याद से चैन पाते हैं सुन लो **अल्लाह** की याद ही में दिलों का चैन है।*

इस आयते मुबा-रका के तह़त सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی तह़रीर करते हैं : "उस के रह़मत व फ़ज़्ल और उस के एह़सान व करम को याद कर के बे क़रार दिलों को क़रार व इत़्मीनान ह़ासिल होता है।"

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुन्या की हर चीज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की **तह़मीद व तक़्दीस** में रत़्बुल्लिसान है, इर्शादे बारी तआला है :

تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبْعُ وَ الْاَرْضُ وَ مَنْ فِیْهِنَّؕ وَ اِنْ مِّنْ شَیْءٍ اِلَّا یُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ وَ لٰكِنْ لَّا تَفْقَهُوْنَ تَسْبِیْحَهُمْؕ

(پ۱۵،بنیٓ اسراءیل:۴۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उस की पाकी बोलते हैं सातों आस्मान और ज़मीन और जो कोई इन में हैं और कोई चीज़ नहीं जो उसे सराहती हुई उस की पाकी न बोले हां तुम उन की तस्बीह़ नहीं समझते।*

इस आयते मुबा-रका के तह़त मुफ़स्सिरे क़ुरआन ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद **मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी** عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی तह़रीर करते हैं :

मुफ़स्सिरीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن ने कहा कि दरवाज़ा **खोलने** की आवाज़ और छत का चटख़ना येह भी तस्बीह़ करना है और इन सब की तस्बीह़ "سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ" है।

(تفسیر البغوی، سورۃ الاسراء،تحت الآیۃ:٤٤،ج٣،ص٩٦)

ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मन्क़ूल है कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की अंगुश्ते मुबारक से पानी के चश्मे जारी होते हम ने देखे और येह भी हम ने देखा कि खाते वक़्त में खाना तस्बीह़ करता था।

(صحیح البخاری،کتاب المناقب، باب علامات النبوۃ...الخ، الحدیث:٣٥٧٩، ج٢،ص٤٩٥)

ह़ज़रते जाबिर बिन समुरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं मक्का के उस पथ्थर को अब भी पहचानता हूं जो मेरी बि'षत से क़ब्ल मुझे **सलाम** किया करता था।"

(صحیح مسلم، کتاب الفضائل،باب فضل نسب النبی علیہ الصلاۃ والسلام...الخ،الحدیث:٢٢٧٧،ص١٢٤٩)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **काएनात** का ज़र्रा ज़र्रा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करता है लेकिन हम किस क़दर नादान हैं कि हम पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बे शुमार ने'मतों और त़रह़ त़रह़ के इन्आ़मात होने के बा वुजूद हम उस की याद और ज़िक्र से ग़ाफ़िल हैं हमें तो चाहिये हर वक़्त उस के ज़िक्र में मश्ग़ूल रहें, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ुरआने पाक में इर्शाद फ़रमाता है :

وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۴۵﴾ (پ١٠،الانفال:٤٥)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** की याद बहुत करो कि तुम मुराद को पहुंचो।*

www.dawateislami.net

इस आयते मुबा–रका के तह़त सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : इस से मा'लूम हुवा कि इन्सान को हर ह़ाल में लाज़िम है कि वोह अपने क़ल्ब व ज़बान को ज़िक्रे इलाही में मश्ग़ूल रखे और किसी सख़्ती व परेशानी में भी इस से ग़ाफ़िल न हो। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़बूआ़ **743** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"जन्नत में ले जाने वाले आ'माल"** सफ़ह़ा **411** पर ह़दीषे पाक है :

नफ़्ली इबादात से आ़जिज़ होने वाला

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تعَالٰى عَنْهُمَا से रिवायत है कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त़्त़र पसीना, बाइषे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम में से जो रात को इबादत करने, अपने माल को राहे ख़ुदा में ख़र्च करने और दुश्मन से जिहाद करने से आ़जिज़ हो तो उसे चाहिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र कषरत से किया करे।"

(شعب الایمان للبیھقی، باب فی محبة اللّٰہ، فصل فی ادامة ذکراللّٰہ، الحدیث:۵۰۸،ج۱،ص۳۹۰)

हर भलाई ले गए

ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِىَ اللّٰهُ تعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने **सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़–लमीन** صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عليك وسلم ! किस मुजाहिद का अज्र सब से ज़ियादा है ? फ़रमाया : "जो उन में **अल्लाह** तबा–र–क व तआ़ला का ज़िक्र कषरत

www.dawateislami.net

से करने वाला हो।'' उस ने अ़र्ज़ किया : ''किस रोज़ादार का अज्र सब से ज़ियादा है ?'' फ़रमाया : ''जो उन में अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला का ज़िक्र कषरत से करने वाला हो।'' फिर उस ने नमाज़, ज़कात, ह़ज और **स-दक़ा** के बारे में येही सुवाल किया, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हर एक के बारे में येही इर्शाद फ़रमाया : ''जो उन में अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला का ज़िक्र कषरत से करने वाला हो।'' इस पर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنۡهُ ने ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنۡهُ से फ़रमाया : ''ऐ अबू ह़फ़्स ! ज़िक्र करने वाले तो हर भलाई ले गए।'' तो **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''हां ! ऐसा ही है।''

(المسند للامام احمد بن حنبل،حديث معاذ بن انس الجهنى، الحديث: ١٥٦١٤،ج٥،ص٣٠٨)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हर घड़ी अपनी ज़बान को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र में मश्ग़ूल रखने और फ़ुज़ूल गुफ़्तगू से बचने की आ़दत बनाने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र भी है लिहाज़ा आ़शिक़ाने रसूल के साथ आप भी बारह माह, बानवे दिन, तीस दिन, बारह दिन और तीन तीन दिन के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र इख़्तियार फ़रमाइये और ख़ूब ब-रकतें लूटिये, आइये मैं आप को म-दनी क़ाफ़िले की म-दनी बहार सुनाता हूं चुनान्चे

शाह दरह (मर्कज़ुल औलिया लाहोर) के एक **इस्लामी भाई** के बयान का लुब्बे लुबाब है, मैं अपने वालिदैन का इक लौता बेटा था, ज़ियादा लाड प्यार ने मुझे ह़द द-रजा ढीट और मां बाप का सख़्त

www.dawateislami.net

ना फ़रमान बना दिया था, रात गए तक आवारा गर्दी करता और सुब्ह़ देर तक सोया रहता। मां बाप समझाते तो उन को झाड़ देता। वोह बेचारे बा'ज़ अवक़ात रो पड़ते। दुआ़एं मांगते मांगते मां की पलकें भीग जातीं। उस अ़ज़ीम लमहे़ पर लाखों सलाम जिस "लमहे़" में मुझे दा'वते इस्लामी वाले एक आ़शिके़ रसूल से मुलाक़ात की सआ़दत मिली और उस ने मह़ब्बत और प्यार से इनफ़िरादी कोशिश करते हुए मुझ पापी व बदकार को **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र के लिये तय्यार किया। चुनान्चे मैं **आ़शिक़ाने रसूल** के हमराह तीन दिन के **म-दनी क़ाफ़िले** का मुसाफ़िर बन गया। न जाने उन **आ़शिक़ाने रसूल** ने तीन दिन के अन्दर क्या घोल कर पिला दिया कि मुझ जैसे ढीट इन्सान का पथ्थर नुमा दिल जो मां बाप के आंसूओं से भी न पिघलता था मोम बन गया, मेरे क़ल्ब में **म-दनी इनक़िलाब** बरपा हो गया और मैं **म-दनी क़ाफ़िले** से नमाज़ी बन कर लौटा। घर आ कर मैं ने सलाम किया, वालिद साह़िब की दस्त बोसी की और अम्मी जान के क़दम चूमे। घर वाले है़रान थे ! इस को क्या हो गया है कि कल तक जो किसी की बात सुनने के लिये तय्यार नहीं था वोह आज इतना बा अदब बन गया है ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **म-दनी क़ाफ़िले** में **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत ने मुझे यकसर बदल कर रख दिया और येह बयान देते वक़्त मुझ साबिक़ा बे नमाज़ी को मुसलमानों को नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाने की या'नी "**सदाए मदीना**" लगाने की ज़िम्मादारी मिली हुई है। (**दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** में मुसलमानों को **नमाज़े फ़ज्र** के लिये उठाने को "**सदाए मदीना**" लगाना कहते हैं)

www.dawateislami.net

गर्चे आ'माले बद और अफ़्आ़ले बद ने है रुस्वा किया, क़ाफ़िले में चलो
कर सफ़र आओगे, तुम सुधर जाओगे मांगो चल कर दुआ़, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत ने किस त़रह़ एक बे नमाज़ी नौ जवान को दूसरों को नमाज़ की दा'वत देने वाला बना दिया ! इस में कोई शक नहीं कि सोह़बत ज़रूर रंग लाती है, अच्छी सोह़बत अच्छा और बुरी सोह़बत बुरा बनाती है। लिहाज़ा हमेशा आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत इख़्तियार करनी चाहिये। (फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब : फ़ैज़ाने र-मज़ान, जि. 1, स. 1370)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए **सुन्नत** की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस ने मेरी **सुन्नत** से **मह़ब्बत** की उस ने मुझ से **मह़ब्बत** की और जिस ने मुझ से **मह़ब्बत** की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा।" (تاریخ مدینة دمشق لابن عساکر، انس بن مالك، ج۹،ص ۳٤۳)

लिहाज़ा घर में आने जाने के 12 म-दनी फूल क़बूल फ़रमाइये,

(इस किताब के सफ़ह़ा नम्बर **665** से बयान करें)

★★★★★

www.dawateislami.net

बयान नम्बर 2 :

फ़ैज़ाने तिलावत

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه **"रसाइले अ़त्तारिय्या"** (ह़िस्सए दुवुम) के सफ़ह़ा **12** पर ह़दीषे पाक नक़्ल फ़रमाते हैं कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम जहां भी हो **मुझ पर दुरूद पढ़ो** कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है।"

(المعجم الكبير للطبراني،الحديث:٢٧٢٩،ج٣،ص٨٢)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللّٰهُ تعالٰى على محمَّد

येही है आरज़ू ता'लीमे क़ुरआं आ़म हो जाए
हर इक परचम से ऊंचा परचमे इस्लाम हो जाए

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** के मत़बूआ़ **49** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले **"तिलावत की फ़ज़ीलत"** सफ़ह़ा **2** पर है :

रोज़ाना एक बार ख़त्मे क़ुरआने पाक

ह़ज़रते सय्यिदुना षाबित बुनानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورَانِى रोज़ाना एक बार ख़त्मे क़ुरआने पाक फ़रमाते थे। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه हमेशा दिन को रोज़ा रखते और सारी रात क़ियाम (इ़बादत) फ़रमाते, जिस मस्जिद से गुज़रते उस में दो रकअ़त (**तह़िय्यतुल मस्जिद**) ज़रूर

www.dawateislami.net

पढ़ते । तह़दीसे ने'मत के तौ़र पर फ़रमाते हैं : मैं ने जामेअ़ मस्जिद के हर सुतून के पास क़ुरआने पाक का ख़त्म और बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में गिर्या किया है । नमाज़ और तिलावते क़ुरआन के साथ आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْه को ख़ुसूसी **मह़ब्बत** थी । आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْه पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ऐसा करम हुवा कि रश्क आता है चुनान्चे वफ़ात के बा'द दौराने तदफ़ीन अचानक एक ईंट सरक कर अन्दर चली गई, लोग ईंट उठाने के लिये जब झुके तो येह देख कर ह़ैरान रह गए कि आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْه **क़ब्र** में खड़े हो कर नमाज़ पढ़ रहे हैं ! आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْه के घर वालों से जब मा'लूम किया गया तो शहज़ादी साहि़बा ने बताया : वालिदे मोह़तरम عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْاَکْرَم रोज़ाना दुआ़ किया करते थे : "**या अल्लाह** ! अगर तू किसी को वफ़ात के बा'द **क़ब्र** में नमाज़ पढ़ने की सआ़दत अ़त़ा फ़रमाए तो मुझे भी मुशर्रफ़ फ़रमाना ।" मन्क़ूल है : जब भी लोग आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْه के मज़ारे पुर अन्वार के क़रीब से गुज़रते तो **क़ब्रे** अन्वर से तिलावते क़ुरआन की आवाज़ आ रही होती ।

(حلیۃ الاولیاء، ۱۹۷، ثابت البنانی، ج۲، ص ۳۶۲۔۳۶۶ مُلتقطاً)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

दहन मैला नहीं होता बदन मैला नहीं होता
ख़ुदा के औलिया का तो कफ़न मैला नहीं होता

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

कुरआने मजीद, फुरक़ाने ह़मीद **अल्लाह** रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ का मुबारक कलाम है, इस का पढ़ना, पढ़ाना और सुनना सुनाना सब षवाब का काम है। कुरआने पाक का एक ह़र्फ़ पढ़ने से **10 नेकियों** का षवाब मिलता है, चुनान्चे

कुरआने पाक काएक ह़र्फ़ पढ़ने का षवाब

ख़ा-तमुल मुर-सलीन, शफ़ीउ़ल मुज़निबीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : "जो शख़्स **किताबुल्लाह** का एक ह़र्फ़ पढ़ेगा, उस को एक नेकी मिलेगी जो दस के बराबर होगी। मैं येह नहीं कहता "الٓمّٓ" एक ह़र्फ़ है, बल्कि अलिफ़ एक ह़र्फ़, लाम एक ह़र्फ़ और मीम एक ह़र्फ़ है।"

(سنن الترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب ماجاء فی من قرء حرفاً...الخ، الحدیث:۲۹۱۹، ج۴، ص۴۱۷)

तिलावत की तौफ़ीक़ दे दे इलाही

गुनाहों की हो दूर दिल से सियाही

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बेहतरीन शख़्स

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे **मुजस्सम**, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मोअ़ज़्ज़म है : خَیْرُکُمْ مَنْ تَعَلَّمَ الْقُرْاٰنَ وَعَلَّمَہٗ या'नी तुम में बेहतरीन शख़्स वोह है जिस ने कुरआन सीखा और दूसरों को सिखाया।

(صحیح البخاری، کتاب فضائل القرآن، باب خیرکم من تعلم القرآن وعلمہ، الحدیث:۵۰۲۷، ج۳، ص۴۱۰)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुर्रह़मान सु-लमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मस्जिद में क़ुरआने पाक पढ़ाया करते और फ़रमाते : इसी ह़दीषे मुबारक ने मुझे यहां बिठा रखा है ।

(فیض القدیر،تحت الحدیث:۳۹۸۳،ج۳،ص۶۱۸)

अल्लाह मुझे ह़ाफ़िज़े क़ुरआन बना दे

क़ुरआन के अह़काम पे भी मुझ को चला दे

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

क़ुरआने पाक शफ़ाअ़त करेगा

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि रसूले अकरम, रह़मते आ़लम, नूरे **मुजस्सम**, शाहे बनी आदम, **रसूले मुह़्तशम** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : जिस शख़्स ने क़ुरआने पाक सीखा और सिखाया और जो कुछ क़ुरआने पाक में है उस पर अ़मल किया, क़ुरआन शरीफ़ उस की शफ़ाअ़त करेगा और जन्नत में ले जाएगा ।

(تاریخ دمشق لابن عساکر،ذکر من اسمہ عقیل،۴۷۳۴۔عقیل بن احمد بن محمد، ج۴۱ ص۳)

इलाही ख़ूब दे दे शौक़ क़ुरआं की तिलावत का

शरफ़ दे गुम्बदे ख़ज़रा के साए में शहादत का

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

www.dawateislami.net

क़ुरआने मजीद की एक आयत सिखाने की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि जिस शख़्स ने **क़ुरआने मजीद** की एक आयत या दीन की कोई **सुन्नत** सिखाई क़ियामत के दिन **अल्लाह तआला** उस के लिये ऐसा षवाब तय्यार फ़रमाएगा कि इस से बेहतर षवाब किसी के लिये भी नहीं होगा। (جمع الجوامع للسیوطی،حرف المیم، الحدیث:۲۲۴۵٤،ج۷،ص۲۰۹)

तिलावते क़ुरआन के मुख़्तलिफ़ म-दनी फूल

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ **49 सफ़ह़ात** पर मुश्तमिल रिसाले **"तिलावत की फ़ज़ीलत" सफ़ह़ा 11** पर तह़रीर फ़रमाते हैं :

﴾1﴿ तिलावत के आग़ाज़ में **अऊज़ु** पढ़ना **मुस्तह़ब** है और इब्तिदाए सूरत में **बिस्मिल्लाह सुन्नत**, वरना **मुस्तह़ब**। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, हिस्सा : 3, स. 550)

﴾2﴿ बा वुज़ू, क़िब्ला रू, अच्छे कपड़े पहन कर तिलावत करना **मुस्तह़ब** है। (ऐज़न, स. 550)

﴾3﴿ क़ुरआने मजीद देख कर पढ़ना, ज़बानी पढ़ने से **अफ़ज़ल** है कि येह पढ़ना भी है और देखना और हाथ से इस का छूना भी और येह सब काम **इबादत** हैं। (غنیۃ المتملی، ص٤۹٥)

www.dawateislami.net

﴾4﴿ कुरआने मजीद को निहायत **अच्छी आवाज़** से पढ़ना चाहिये, अगर आवाज़ अच्छी न हो तो अच्छी आवाज़ बनाने की कोशिश करे, मगर **लह्न** के साथ पढ़ना कि हुरूफ़ में कमी बेशी हो जाए जैसे गाने वाले किया करते हैं येह ना जाइज़ है, बल्कि पढ़ने में **क़वाइदे तजवीद** की रिआयत कीजिये। (الدرالمختار و رد المحتار، کتاب الحظر والاباحة،فصل فی البیع،ج۹، ص۶۹۵)

﴾5﴿ **कुरआने मजीद** बुलन्द आवाज़ से पढ़ना **अफ़ज़ल** है जब कि किसी नमाज़ी या मरीज़ या सोते को ईज़ा न पहुंचे। (غنیة المتملی،ص۴۹۷)

﴾6﴿ जब कुरआने पाक की सूरतें या आयतें पढ़ी जाती हैं उस वक़्त बा'ज़ लोग चुप तो रहते हैं मगर इधर उधर देखने और दीगर ह़-रकात व इशारात वग़ैरा से बाज़ नहीं आते, ऐसों की ख़िदमत में अ़र्ज़ है कि चुप रहने के साथ साथ ग़ौर से सुनना भी लाज़िमी है जैसा कि **फ़तावा र-ज़विय्या** जिल्द **23** सफ़्हा **352** पर मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : **कुरआने मजीद** पढ़ा जाए उसे कान लगा कर ग़ौर से सुनना और ख़ामोश रहना फ़र्ज़ है। قَالَ اللّٰہُ تَعَالٰی (**अल्लाह** **तआ़ला** ने इर्शाद फ़रमाया) :

وَ اِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ وَ اَنْصِتُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿۲۰۴﴾

(پ۹،الاعراف:۲۰۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जब कुरआन पढ़ा जाए तो उसे कान लगा कर सुनो और ख़ामोश रहो कि तुम पर रह़्म हो।*

﴾7﴿ मज्मअ़ में सब लोग बुलन्द आवाज़ से पढ़ें येह ह़राम है, अकषर तीजों में सब बुलन्द आवाज़ से पढ़ते हैं येह ह़राम है, अगर चन्द शख़्स

www.dawateislami.net

पढ़ने वाले हों तो हुक्म है कि आहिस्ता पढ़ें (बहारे शरीअ़त, जि. 1, हिस्सा : 3, स. 552) ❮8❯ मस्जिद में दूसरे लोग हों, नमाज़ या अपने विर्दो वज़ाइफ़ पढ़ रहे हों उस वक़्त फ़क़त़ इतनी आवाज़ से तिलावत कीजिये कि सिर्फ़ आप ख़ुद सुन सकें बराबर वाले को आवाज़ न पहुंचे ❮9❯ बाज़ारों में और जहां लोग काम में मश्ग़ूल हों बुलन्द आवाज़ से पढ़ना ना जाइज़ है, लोग अगर न सुनेंगे तो गुनाह पढ़ने वाले पर है अगर काम में मश्ग़ूल होने से पहले इस ने पढ़ना शुरूअ़ कर दिया हो और अगर वोह जगह काम करने के लिये मुक़र्रर न हो तो अगर पहले पढ़ना इस ने शुरूअ़ किया और लोग नहीं सुनते तो लोगों पर गुनाह और अगर काम शुरूअ़ करने के बा'द इस ने पढ़ना शुरूअ़ किया, तो इस (या'नी पढ़ने वाले) पर गुनाह (غنية المتملى،ص٤٩٧) ❮10❯ जहां कोई शख़्स इल्मे दीन पढ़ा रहा है या त़ालिबे इल्म इल्मे दीन की तकरार करते या मुत़ालआ़ देखते हों, वहां भी बुलन्द आवाज़ से पढ़ना मन्अ़ है। (ايضًا،ص٤٩٧) ❮11❯ लैट कर क़ुरआन पढ़ने में ह़रज नहीं जब कि पाउं सिमटे हों और मुंह खुला हो, यूहीं चलने और काम करने की ह़ालत में भी तिलावत जाइज़ है, जब कि दिल न बटे, वरना मकरूह है। (ايضًا،ص٤٩٦) ❮12❯ ग़ुस्ल ख़ाने और नजासत की जगहों में क़ुरआने मजीद पढ़ना, ना जाइज़ है (ايضًا) ❮13❯ क़ुरआने मजीद सुनना, तिलावत करने और नफ़्ल पढ़ने से अफ़ज़ल है। (ايضًا،ص٤٩٧) ❮14❯ जो शख़्स ग़लत़ पढ़ता हो तो सुनने वाले पर वाजिब है कि बता दे, बशर्ते़ कि बताने की वजह से कीना व ह़सद पैदा न हो (ايضًا،ص٤٩٨)

www.dawateislami.net

﴾15﴿ इसी त़रह़ अगर किसी का मुस्ह़फ़ शरीफ़ (क़ुरआने पाक) अपने पास आ़रियत (या'नी वक़्ती त़ौर पर लिया हुवा) है, अगर उस में किताबत की ग़-लत़ी देखे, (तो जिस का है उसे) बता देना वाजिब है (बहारे शरीअ़त, जि. 1, ह़िस्सा : 3, मस्अला : 60, स. 553) ﴾16﴿ गर्मियों में सुब्ह़ को क़ुरआने मजीद ख़त्म करना बेहतर है और सर्दियों में अव्वल शब को कि ह़दीषे पाक में है : "जिस ने शुरूअ़ दिन में क़ुरआन ख़त्म किया, शाम तक फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार करते हैं और जिस ने इब्तिदाए शब में ख़त्म किया, सुब्ह़ तक इस्तिग़्फ़ार करते हैं।" (حلية الاولياء، طلحة بن مصرف، الحديث: ٦١٩٩،ج٥،ص٣٠) गर्मियों में चूंकि दिन बड़ा होता है तो सुब्ह़ के वक़्त ख़त्म करने में इस्तिग़्फ़ारे मलाएका ज़ियादा होगी और जाड़ों (या'नी सर्दियों) की रातें बड़ी होती हैं तो शुरूअ़ रात में ख़त्म करने से इस्तिग़्फ़ार ज़ियादा होगी। (غنية المتملى، ص٤٩٦)

﴾17﴿ जब क़ुरआने पाक ख़त्म हो तो तीन बार सूरए इख़्लास पढ़ना बेहतर है अगर्चे तरावीह़ में हो, अलबत्ता अगर फ़र्ज़ नमाज़ में ख़त्म करे तो एक बार से ज़ियादा न पढ़े (غنية المتملى، ص٤٩٦) ﴾18﴿ ख़त्मे क़ुरआन का त़रीक़ा येह है कि सूरतुन्नास पढ़ने के बा'द सूरए फ़ातिह़ा और सूरए ब-क़रह से وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ۝ तक पढ़िये और इस के बा'द दुआ़ मांगिये कि येह **सुन्नत** है चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡهُمَا ह़ज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡهُ से रिवायत करते हैं कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम

www.dawateislami.net

सूरए "قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ" पढ़ते तो صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم जब **सूरए फ़ातिह़ा** शुरूअ़ फ़रमाते फिर **सूरए ब-क़रह** से "وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ" तक पढ़ते फिर **ख़त्मे क़ुरआन की दुआ़** पढ़ कर खड़े होते।

(الاتقان فی علوم القران،النوع الخامس و الثلا ثون فی آداب تلاوتہ و تالیفہ،ج۱،ص۱۵۸)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तिलावत की फ़ज़ीलतें और ब-रकतें ह़ासिल करने के लिये ज़रूरी है कि क़ुरआन शरीफ़ को दुरुस्त पढ़ा जाए। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उम्मत की ख़ैर ख़्वाही के मुक़द्दस जज़्बे के तह़्त, तजवीद व मख़ारिज के साथ क़ुरआने पाक सीखने सिखाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, "**दा'वते इस्लामी**" के तह़्त दुन्या के मुख़्तलिफ़ ममालिक में बे शुमार मदारिस बनाम **मद्रसतुल मदीना** क़ाइम हैं। जिन में ता दमे तह़रीर सिर्फ़ पाकिस्तान में कमो बेश **बहत्तर हज़ार** म-दनी मुन्ने और म-दनी मुन्नियां ह़िफ़्ज़ो नाज़िरा की मुफ़्त ता'लीम ह़ासिल कर रहे हैं, नीज़ ला ता'दाद मसाजिद व मक़ामात पर **मद्रसतुल मदीना** (बालिग़ान) का भी एहतिमाम होता है, जिन में दिन के अन्दर काम काज में मसरूफ़ रहने वालों को उ़मूमन नमाज़े इ़शा के बा'द तक़रीबन 40 मिनट के लिये दुरुस्त क़ुरआने मजीद पढ़ाने के इ़लावा मुख़्तलिफ़ दुआ़एं याद करवाई जातीं और सुन्नतें भी सिखाई जाती हैं, आप भी इन मदारिस में क़ुरआने करीम पढ़िये, अगर पढ़े हुए हैं तो पढ़ाइये !

आप की तरग़ीब व **तह़रीस** के लिये अ़र्ज़ है : एक **इस्लामी भाई** के बयान का लुब्बे लुबाब है : मेरे गुनाह बहुत ज़ियादा थे।

www.dawateislami.net

जिन में مَعَاذَاللّٰہ V.C.R. की लीड सप्लाय करना, रातों को औबाश लड़कों के साथ घूमना, रोज़ाना दो बल्कि तीन तीन फ़िल्में देखना, वेरायटी प्रोग्राम्ज़ में रातें काली करना शामिल है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ बाबुल मदीना कराची के अ़लाक़े नयाआबाद के एक इस्लामी भाई की मुसल्सल इनफ़िरादी कोशिश की ब-रकत से अ़लाक़े के **मद्रसतुल मदीना** (बराए बालिग़ान) में जाने की तरकीब बनी, और इस त़रह़ आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत मिली और मैं तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर म-दनी कामों में मसरूफ़ हो गया।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए **सुन्नत** की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। चुनान्चे ताजदारे रिसालत, शमए़ बज़्मे हिदायत, नोशाए बज़्मे जन्नत صَلَّى الله تَعالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस ने मेरी **सुन्नत** से **मह़ब्बत** की उस ने मुझ से **मह़ब्बत** की और जिस ने मुझ से **मह़ब्बत** की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा।" (تاریخ مدینة دمشق لابن عساکر، انس بن مالك، ج٩، ص٣٤٣)

लिहाज़ा सुरमा लगाने के 4 म-दनी फूल क़बूल फ़रमाइये,

(इस किताब के सफ़ह़ा नम्बर 583 से बयान कीजिये)

★★★★★

www.dawateislami.net

बयान नम्बर 3 :

फै़ज़ाने नवाफ़िल

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **"रसाइले अ़त्तारिय्या"** (ह़िस्सए दुवुम) के सफ़ह़ा **12** पर ह़दीषे पाक नक़्ल फ़रमाते हैं कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है : "जो मुझ पर रोज़ाना दिन में एक हज़ार बार दुरूदे पाक पढ़ेगा वोह उस वक़्त तक नहीं मरेगा जब तक जन्नत में अपना मक़ाम न देख ले ।"

(الترغیب و الترھیب، کتاب الذکر والدعاء، الترغیب فی اکثار الصلاۃ علی النبی صلی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہ وسلم، الحدیث: ۲۵۹۱، ج۲، ص۳۲۶)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फ़ारिग़ वक़्त यूं ही पड़े पड़े गुज़ारने के बजाए ज़िक्रो दुरूद और नवाफ़िल वग़ैरा में गुज़ारना चाहिये कि फिर मरने के बा'द येह मौक़अ़ नहीं मिल सकेगा। ज़िन्दगी में काफ़ी फ़ारिग़ वक़्त मिल सकता है लिहाज़ा "फ़ुरसत को मसरूफ़िय्यत से पहले ग़नीमत जानो" के तह़त हो सके तो नवाफ़िल की कषरत कीजिये इन के फ़ज़ाइलो ब-रकात बे शुमार हैं, चुनान्चे

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला ने

www.dawateislami.net

इर्शाद फ़रमाया : "मेरा बन्दा जिन चीज़ों के ज़रीए़ मेरी कु़रबत चाहता है उन में सब से ज़ियादा फ़राइज़ मुझे मह़बूब हैं और नवाफ़िल के ज़रीए़ बन्दा मेरे क़रीब होता रहता है यहां तक कि मैं उस को मह़बूब बना लेता हूं" (صحیح البخاری،کتاب الرقاق،باب التواضع،الحدیث:٦٥٠٢،ج٤،ص٢٤٨)

इस रिवायत के तह़त मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत **मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान** नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی मिरआतुल मनाजीह़, जिल्द 3, सफ़ह़ा 308 पर तह़रीर करते हैं : "या'नी बन्दए मुसलमान फ़र्ज़ इ़बादात के साथ नवाफ़िल भी अदा करता रहता है ह़त्ता कि वोह मेरा प्यारा हो जाता है क्यूंकि वोह फ़राइज़ व नवाफ़िल का जामेअ़ होता है, इस का मत़लब येह नहीं कि फ़राइज़ छोड़ कर नवाफ़िल अदा करे।"

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़बूआ़ **1250** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द अव्वल, ह़िस्सा 4, **सफ़ह़ा 674** पर है : नवाफ़िल तो बहुत कषीर हैं, अवक़ाते ममनूआ़ के सिवा आदमी जितने चाहे पढ़े मगर इन में से बा'ज़ जो हु़ज़ूर सय्यिदुल मुर्सलीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم व अइम्मए दीन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم से मरवी हैं, बयान किये जाते हैं :

तह़िय्यतुल मस्जिद

ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू क़तादा** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है

www.dawateislami.net

कि हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जो शख़्स मस्जिद में दाख़िल हो, बैठने से पहले दो रकअ़त पढ़ ले।"

(صحيح البخاری،كتاب الصلاة،باب اذا دخل المسجد...الخ،الحديث:٤٤٤،ج١،ص١٧٠)

जो शख़्स मस्जिद में आए उसे दो रकअ़त नमाज़ पढ़ना सुन्नत है बल्कि बेहतर येह है कि चार पढ़े, अगर ऐसे वक़्त मस्जिद में आया जिस में नफ़्ल नमाज़ मकरूह है म-षलन बा'दे तुलूए़ फ़ज्र या बा'द नमाज़े अ़स्र तो वोह **तहिय्यतुल मस्जिद** न पढ़े बल्कि **तस्बीह़ व तह्लील** व दुरूद शरीफ़ में मश्गूल हो, ह़क्क़े मस्जिद अदा हो जाएगा।

(ردالمحتار،كتاب الصلاة،باب الوتر والنوافل، مطلب في تحية المسجد،ج٢،ص٥٥٥)

तहिय्यतुल वुज़ू

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स वुज़ू करे और अच्छा वुज़ू करे और ज़ाहिर व बात़िन के साथ मु-तवज्जेह हो कर दो रकअ़त पढ़े, उस के लिये जन्नत वाजिब हो जाती है।"

(صحيح مسلم،كتاب الطهارة، باب الذكر المستحب عقب الوضوء، الحديث:٢٣٤، ص١٤٤)

वुज़ू के बा'द आ'ज़ा ख़ुश्क होने से पहले दो रकअ़त नमाज़ पढ़ना मुस्तह़ब है, ग़ुस्ल के बा'द भी दो रकअ़त नमाज़ मुस्तह़ब है। वुज़ू के बा'द फ़र्ज़ वग़ैरा पढ़े तो क़ाइम मक़ाम **तहिय्यतुल वुज़ू** के हो जाएंगे।

(ردالمحتار،كتاب الصلاة،باب الوتر والنوافل،مطلب سنة الوضوء،ج٢،ص٥٦٣)

www.dawateislami.net

नमाज़े इश्राक़

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : "जो फ़ज्र की नमाज़ जमाअ़त से पढ़ कर बैठा ज़िक्रे ख़ुदा करता रहा, यहां तक कि आफ़ताब बुलन्द हो गया फिर दो रकअ़तें पढ़ीं तो उसे पूरे हज और उ़मरह का षवाब मिलेगा ।"

(سنن الترمذی، کتاب السفر،باب ماذکر مما یستحب من الجلوس في المسجد...الخ، الحدیث: ٥٨٦، ج٢، ص١٠٠)

नमाज़े चाश्त

ह़दीषे पाक में है : "जिस ने चाश्त की बारह रकअ़तें पढ़ीं अल्लाह तआ़ला उस के लिये जन्नत में सोने का मह़ल बनाएगा ।"

(سنن الترمذی،کتاب الوتر،باب ماجاء في صلاۃ الضحیٰ،الحدیث:٤٧٢،ج٢،ص١٧)

हर जोड़ के बदले स-दक़ा

हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ والتسلیم इर्शाद फ़रमाते हैं : आदमी पर उस के हर जोड़ के बदले स-दक़ा है (और कुल तीन सो साठ जोड़ हैं) हर तस्बीह़ स-दक़ा है और हर ह़म्द स-दक़ा है और لَاۤ اِلٰـہَ اِلَّا اللّٰـہُ कहना स-दक़ा है और اَللّٰہُ اَکْبَر कहना स-दक़ा है और अच्छी बात का हुक्म करना स-दक़ा है और बुरी बात से मन्अ़ करना स-दक़ा है और इन सब की त़रफ़ से दो रकअ़तें चाश्त की किफ़ायत करती हैं ।

(صحیح مسلم، کتاب صلاۃ المسا فرین، باب استحباب صلاۃ الضحٰی...الخ، الحدیث: ٧٢ص٣٦٣)

www.dawateislami.net

चाश्त की नमाज़ मुस्तह़ब है, कम अज़ कम दो और ज़ियादा से ज़ियादा इस की बारह रकअ़तें हैं और अफ़्ज़ल बारह हैं, नमाज़े चाश्त का वक़्त आफ़ताब बुलन्द होने से ज़वाल या'नी **निस्फ़ुन्नहारे शरई** तक है और बेहतर येह है कि चौथाई दिन चढ़े पढ़े ।

(الفتاوی الهندیة،کتاب الصلاۃ،الباب التاسع فی النوافل،ج۱، ص۱۱۲،

وردالمحتار، کتاب الصلاۃ،باب الوتروالنوافل،مطلب:سنة الوضوء،ج۲، ص۵٦۳)

नमाज़े सफ़र

सफ़र में जाते वक़्त दो रकअ़तें अपने घर पर पढ़ कर जाए, **ह़दीष** में है : "किसी ने अपने अह्ल के पास उन दो रकअ़तों से बेहतर न छोड़ा जो ब वक़्ते इरादए सफ़र उन के पास पढ़ीं ।"

(ردالمحتار،کتاب الصلاۃ، باب الوتر والنوافل، مطلب في رکعتی السفر،ج۲،ص۵٦۵

وفیض القدیر شرح الجامع الصغیر،الحدیث:۷۹۰۰،ج۵،ص۵٦٦)

नमाज़ वापसिये सफ़र

सफ़र से वापस हो कर दो रकअ़तें मस्जिद में अदा करे, ह़ज़रते का'ब बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि "**रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم सफ़र से दिन में चाश्त के वक़्त तशरीफ़ लाते और इब्तिदाअन मस्जिद में जाते और दो रकअ़तें उस में नमाज़ पढ़ते फिर वहीं मस्जिद में तशरीफ़ रखते ।"

(صحیح مسلم،کتاب صلاۃ المسافرین، باب استحباب رکعتین ...الخ، الحدیث:۷۱٦،ص۳٦۱)

www.dawateislami.net

मुसाफ़िर को चाहिये कि मन्ज़िल में बैठने से पहले दो रकअ़त नफ़्ल पढ़े जैसे हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم किया करते थे।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, हिस्सा : 4, स. 677)

सलातुल्लैल

रात में बा'द नमाज़े इशा जो नवाफ़िल पढ़े जाएं उन को **सलातुल्लैल** कहते हैं और रात के नवाफ़िल दिन के नवाफ़िल से अफ़ज़ल हैं सहीह़ मुस्लिम शरीफ़ में मरफ़ूअ़न है : "फ़र्ज़ों के बा'द अफ़ज़ल नमाज़ रात की नमाज़ है।"

(बहारे शरीअ़त, सुनन व नवाफ़िल का बयान, जि. 1, हिस्सा : 4, स. 677, व صحیح مسلم، کتاب الصیام،باب فضل صوم المحرم، الحدیث: ۱۱۶۳، ص ۵۹۱)

त़-बरानी ने मरफ़ूअ़न रिवायत की है कि **रात** में कुछ नमाज़ ज़रूरी है अगर्चे इतनी ही देर जितनी देर में ऊंटनी या बकरी दोह लेते हैं और फ़र्ज़े इशा के बा'द जो नमाज़ पढ़ी वोह **सलातुल्लैल** है।

(المعجم الکبیر للطبرانی ، ایاس بن معاویۃ المزنی، الحدیث:۷۸۷، ج۱،ص ۲۷۱)

नमाज़े तहज्जुद

इसी **सलातुल्लैल** की एक क़िस्म **तहज्जुद** है कि इशा के बा'द रात में सो कर उठें और नवाफ़िल पढ़ें, सोने से क़ब्ल जो कुछ पढ़ें वोह तहज्जुद नहीं। कम से कम तहज्जुद की दो रकअ़तें हैं और हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से **आठ** तक षाबित। नबिय्ये

www.dawateislami.net

करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स रात में बेदार हो और अपने अहल को जगाए फिर दोनों दो दो रकअ़त पढ़ें तो कषरत से याद करने वालों में लिखे जाएंगे।"

(बहारे शरीअ़त, सुनन व नवाफ़िल का बयान, जि. 1, हिस्सा : 4, स. 677, 678, व المستدرك للحاكم، كتاب صلاة التطوع،باب توديع المنزل بركعتين،الحديث:١٢٣٠،ج١،ص٦٢٤)

जन्नत में सलामती से दाख़िला

ह़दीषे पाक में है : "ऐ लोगो ! सलाम शाएअ़ (आ़म) करो और खाना खिलाओ और रिश्तेदारों से नेक सुलूक करो और रात में नमाज़ पढ़ो जब लोग सोते हों, सलामती के साथ जन्नत में दाख़िल होगे।"

(المستدرك للحاكم،كتاب البر والصلة، باب ارحموا اهل الارض...الخ،الحديث:٧٣٥٩،ج٥،ص٢٢١)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हर मुसलमान को फ़राइज़ के साथ साथ नफ़्ल नमाज़ों का भी ज़ेह्न बनाना चाहिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلّ इस की बे शुमार ब-रकतें देखेंगे। नफ़्ली **इबादात** का जज़्बा पाने और सुन्नतों पर अ़मल की आ़दत डालने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये। सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये, काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये

www.dawateislami.net

म-दनी इन्आ़मात के मुत़ाबिक़ अ़मल करते हुए रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए़ रिसाला पुर कीजिये और हर म-दनी माह की **10** तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाइये।

आइये आप को एक **म-दनी बहार** सुनाऊं कि **फ़ेशन का मतवाला** और **आवारा गर्दी** का मा'मूल रखने वाला एक **नौ जवान** जब **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से वाबस्ता हुवा तो उस पर कैसा करम हो गया !

चुनान्चे वाह केन्ट (पंजाब, पाकिस्तान) के एक **इस्लामी भाई** का कुछ इस त़रह़ बयान है : मैं कॉलेज में पढ़ता था और दीगर स्टूडन्ट्स की त़रह़ फ़ेशन का मतवाला था, क्रिकेट का मेच देखने और खेलने का जुनून की ह़द तक शौक़ और रात गए तक आवारा गर्दी का मा'मूल था। नमाज़ और मस्जिद की ह़ाज़िरी का जहां तक तअ़ल्लुक़ है तो वोह फ़क़त़ ईदैन की नमाज़ तक मह़दूद थी। **र-मज़ानुल मुबारक** (1422 सि. हि., **2001** ई.) में वालिदैन के इसरार पर नमाज़ अदा करने मस्जिद में गया। अ़स्र की नमाज़ के बा'द सफ़ेद लिबास में मल्बूस सर पर सब्ज़ इमामा शरीफ़ का ताज सजाए एक **बा रीश इस्लामी भाई** ने नमाज़ियों को क़रीब करने के बा'द **फ़ैज़ाने सुन्नत** का **दर्स** दिया, मैं दूर बैठ कर सुनता रहा, दर्स के बा'द फ़ौरन मस्जिद से बाहर निकल गया, दो तीन दिन तक येही तरकीब रही। एक दिन मैं मिलने के लिये रुक गया, एक **इस्लामी भाई** ने पुर तपाक अन्दाज़ से मुलाक़ात कर के नाम व पता पूछने के बा'द **तब्लीग़े**

www.dawateislami.net

कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तह्रीक, **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** में होने वाले **इजतिमाई ए'तिकाफ़** में बैठने की तरग़ीब दिलाते हुए ए'तिकाफ़ के फ़ज़ाइल बयान किये। अव्वलन मेरा ज़ेह्न न बना लेकिन वोह **इस्लामी भाई** مَاشَآءَاللّٰه बहुत जज़्बे वाले थे, मायूस न हुए बल्कि मेरे घर आ पहुंचे और बार बार इसरार करने लगे। उन की मुसल्सल **इनफ़िरादी कोशिश** के नतीजे में मैं ने ए'तिकाफ़ से एक दिन क़ब्ल नाम लिखवा कर स-ह़री व इफ़्तार के अख़्राजात जम्अ़ करवा दिये। और आख़िरी अ़-श-रए **र-मज़ानुल मुबारक** 1422 सि.हि. **जामेअ़ मस्जिद नईमिया** (लालारुख़, वाह केन्ट) के अन्दर **आशिक़ाने रसूल** के साथ **मो'तकिफ़** हो गया। इजतिमाई ए'तिकाफ़ के पुरसोज़ माह़ोल और आशिक़ाने रसूल की सोह़बत ने मेरी दिली कैफ़िय्यत को बदल डाला। वहां की जाने वाली **तहज्जुद**, इशराक़, चाश्त और अव्वाबीन के नवाफ़िल की पाबन्दी ने गुज़श्ता ज़िन्दगी में फ़र्ज़ नमाज़ें न पढ़ने पर मुझे सख़्त शरमिन्दा किया, आंखों से नदामत के आंसू जारी हो गए और मैं ने दिल ही दिल में नमाज़ों की पाबन्दी की निय्यत कर ली। पच्चीसवीं[25] शब दुआ़ में मुझ पर इस क़दर रिक़्क़त त़ारी थी कि मैं फूट फूट कर रो रहा था। इसी आ़लम में मुझ पर ग़ुनूदगी त़ारी हो गई और मैं ख़्वाब की दुन्या में पहुंच गया, क्या देखता हूं कि एक पुर वक़ार व नूरबार चेहरे वाली शख़्सिय्यत मौजूद है और उन के इर्द गिर्द काफ़ी हुजूम है। मैं ने किसी से पूछा तो उन्हों ने बताया कि येह **आक़ाए मदीना** صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हैं। मैं ने देखा तो सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने **सब्ज़ सब्ज़**

www.dawateislami.net

इमामा शरीफ़ का ताज सजा रखा था। कुछ देर तक मैं दीदार से आंखें ठन्डी करता रहा, जब बेदार हुवा तो **सलातो सलाम** पढ़ा जा रहा था। मेरी कैफ़िय्यत बहुत अ़जीबो ग़रीब थी, **जिस्म** पर **लरज़ा त़ारी** था, मैं **हिचकियां बांध कर रोए जा रहा था** और **आंसू** थे कि **थम नहीं रहे थे।** सलातो सलाम के बा'द मजलिस बराए ए'तिकाफ़ के निगरान के सामने इमामे का ताज सजाने वालों की क़ित़ार बंधी हुई थी और **आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के लिखे हुए इस **ना'तिया शे'र** की **तकरार** जारी थी :

ताज वाले देख कर तेरा इमामा नूर का

सर झुकाते हैं इलाही बोलबाला नूर का

मैं अपने क़रीबी इस्लामी भाइयों को ब मुश्किल तमाम सिर्फ़ इतना कह पाया : **"मैं ने भी इमामा बांधना है।"** थोड़ी ही देर में **रोते रोते** मैं भी **इमामे का ताज सजा चुका था।** اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **ए'तिकाफ़** ही में **30 दिन के म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की निय्यत भी की। और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र भी किया, सफ़र के दौरान बहुत कुछ सीखने के साथ साथ दर्सो बयान भी सीखने लगा। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ नमाज़ों की पाबन्दी के साथ साथ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी कामों** में ह़िस्सा लेने लगा। आज येह बयान देते वक़्त ज़ैली मुशा-वरत

के निगरान के तौर पर म-दनी कामों की धूमें मचाने की कोशिश कर रहा हूं। (फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब : फ़ैज़ाने र-मज़ान, जि. 1, स. 1397)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए **सुन्नत** की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआदत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहनशाहे **नुबुव्वत**, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शमए बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस ने मेरी **सुन्नत** से **मह़ब्बत** की उस ने मुझ से **मह़ब्बत** की और जिस ने मुझ से **मह़ब्बत** की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा।"

(تاریخ مدینۃدمشق لابن عساکر، انس بن مالک،ج۹،ص۳٤۳)

लिहाज़ा **सोने जागने के 15 म-दनी फूल** क़बूल फ़रमाइये, (इस किताब के सफ़ह़ा नम्बर 650 से बयान कीजिये)

★★★★★

ता'लीमे क़ुरआन की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा *صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : "जो क़ुरआन पढ़ने में माहिर है, वोह किरामन कातिबीन के साथ है और जो शख़्स रुक रुक कर क़ुरआन पढ़ता है और वोह उस पर शाक़ है (या'नी उस की ज़बान आसानी से नहीं चलती, तकलीफ़ के साथ अदा करता है) उस के लिये* ***दो अज्र हैं।"*** (صحیح مسلم،ص٤٠٠،حدیث:۷۹۸)

www.dawateislami.net

बयान नम्बर 4 :

नफ़्ली रोज़ों के फ़ज़ाइल

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه "**रसाइले अ़त्तारिय्या**" (हिस्सए दुवुम) के सफ़ह़ा **13** पर ह़दीषे पाक नक़्ल फ़रमाते हैं कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "बेशक तुम्हारे नाम बमअ़ शनाख़्त मुझ पर पेश किये जाते हैं लिहाज़ा मुझ पर अह़्सन (या'नी ख़ूब सूरत अल्फ़ाज़ में) दुरूदे पाक पढ़ो।"

(المصنف للامام عبد الرزاق،باب الصلاة على النبى،الحديث:٣١١٦،ج٢،ص١٤٠)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फ़र्ज़ रोज़ो के इ़लावा नफ़्ल रोज़ों की भी आ़दत बनानी चाहिये कि इस में बे शुमार दीनी व दुन्यवी फ़वाइद हैं और षवाब तो इतना है कि जी चाहता है बस रोज़े रखते ही चले जाएं। मज़ीद दीनी फ़वाइद में ईमान की ह़िफ़ाज़त, जहन्नम से नजात और जन्नत का ह़ुसूल शामिल हैं और जहां तक दुन्यवी फ़वाइद का तअ़ल्लुक़ है तो रोज़े में दिन के अन्दर खाने पीने में सर्फ़ होने वाले वक़्त और अख़राजात की बचत, पेट की इस्लाह़ और बहुत सारे अमराज़ से ह़िफ़ाज़त का सामान है और तमाम फ़वाइद की अस्ल येह है कि इस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ राज़ी होता है। **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला पारह **22** सू-रतुल अह़्ज़ाब की आयत नम्बर **35** में इर्शाद फ़रमाता है :

www.dawateislami.net

وَ الصَّآىِٕمِیْنَ وَ الصّٰٓىِٕمٰتِ وَ الْحٰفِظِیْنَ فُرُوْجَهُمْ وَ الْحٰفِظٰتِ وَ الذّٰكِرِیْنَ اللّٰهَ كَثِیْرًا وَّ الذّٰكِرٰتِ ۙ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّ اَجْرًا عَظِیْمًا ۝۳۵

(پ۲۲،الاحزاب:۳۵)

तर्जमए कन्जुल ईमान : *और रोज़े वाले और रोज़े वालियां और अपनी पारसाई निगाह रखने वाले और निगाह रखने वालियां और* ***अल्लाह*** *को बहुत याद करने वाले और याद करने वालियां इन सब के लिये* ***अल्लाह*** *ने बख़्शिश और बड़ा षवाब तय्यार कर रखा है।*

सदरुल अफ़ाज़िल हज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی इस के तह़त फ़रमाते हैं : "सौम येह फ़र्ज़ व नफ़्ल दोनों को शामिल है।" (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

जन्नत का अनोखा दरख़्त

हज़रते सय्यिदुना क़ैस बिन ज़ैद **जुहन्नी** رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस ने एक **नफ़्ली रोज़ा** रखा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये **जन्नत में एक दरख़्त** लगाएगा जिस का फल अनार से छोटा और सेब से बड़ा होगा, वोह (मोम से अलग न किये हुए) शहद जैसा मीठा और (मोम से अलग किये हुए ख़ालिस शहद की त़रह़) ख़ुश ज़ाएक़ा होगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत रोज़ादार को उस दरख़्त का फल खिलाएगा।"

(المعجم الکبیر للطبرانی، قیس بن زید الجهنی، الحدیث:۹۳۵،ج۱۸،ص۳۶۵)

www.dawateislami.net

दोज़ख़ से 50 साल मसाफ़त दूरी

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे नबी, मक्की म-दनी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आफ़िय्यत निशान है : "जिस ने रिज़ाए इलाही के लिये एक दिन का **नफ़्ल रोज़ा** रखा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **उस के और दोज़ख़ के दरमियान** एक तेज़ रफ़्तार सुवार की पचास सालह मसाफ़त का फ़ासिला फ़रमा देगा।"

(کنزالعمال،کتاب الصوم،الحدیث:۲۴۱۴۹،ج۸،ص۲۵۵)

मह़शर में रोज़ादारों के मज़े

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन रोज़ेदार क़ब्रों से निकलेंगे तो वोह रोज़े की बू से पहचाने जाएंगे, उन के सामने त़रह़ त़रह़ के खाने और पानी के कूज़े जिन पर मुश्क से मोहर होगी पेश किये जाएंगे और उन्हें कहा जाएगा खाओ कल तुम भूके थे, पियो कल तुम प्यासे थे, आराम करो कल तुम थके हुए थे पस वोह खाएंगे और आराम करेंगे हालां कि लोग ह़िसाब की मशक़्क़त और प्यास में मुब्तला होंगे।

(جامع الاحادیث للسیوطی، الھمزۃ مع الکاف، الحدیث:۲۴۶۲،ج۱،ص۳۵۸)

सफ़र करो मालदार हो जाओगे

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिहाद किया करो खुद कफ़ील हो जाओगे, रोज़े रखो तन्दुरुस्त हो जाओगे और सफ़र किया करो ग़नी (या'नी मालदार) हो जाओगे।

(المعجم الاوسط للطبرانی، من اسمہ موسی،الحدیث:۸۳۱۲، ج۶،ص۱۴۶)

www.dawateislami.net

शैत़ान की परेशानी

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللهِ تعَالٰی عَلَيْه ने मस्जिद के दरवाज़े पर शैत़ान को ह़ैरान व परेशान खड़े हुए देख कर पूछा : क्या बात है ? शैत़ान ने कहा : अन्दर देखिये ! उन्हों ने अन्दर देखा तो एक शख़्स नमाज़ पढ़ रहा था और एक आदमी मस्जिद के दरवाज़े के पास सो रहा था । शैत़ान ने बताया कि वोह जो अन्दर नमाज़ पढ़ रहा है उस के दिल में वस्वसा डालने के लिये मैं अन्दर जाना चाहता हूं लेकिन जो दरवाज़े के क़रीब सो रहा है, येह रोज़ादार है, येह सोया हुवा रोज़ादार जब सांस बाहर निकालता है तो उस की वोह सांस मेरे लिये शो'ला बन कर मुझे अन्दर जाने से रोक देती है ।

(الروض الفائق ،المجلس الخامس فی فضل شهر...الخ، ص۳۹)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शैत़ान के वार से बचने के लिये रोज़ा एक ज़बर दस्त ढाल है रोज़ादार अगर्चे सो रहा है मगर उस की सांस शैत़ान के लिये गोया तलवार है मा'लूम हुवा रोज़ादार से शैत़ान बड़ा घबराता है, शैत़ान चूंकि माहे र-मज़ानुल मुबारक में क़ैद कर लिया जाता है इस लिये वोह जहां भी और जब भी रोज़ादार को देखता है परेशान हो जाता है ।

www.dawateislami.net

रोज़े की ह़ालत में मरने की फ़ज़ीलत

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھَا से रिवायत है कि सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सुल्त़ाने मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो रोज़े की ह़ालत में मरा, **अल्लाह** तआ़ला क़ियामत तक के लिये उस के ह़िसाब में रोज़े लिख देगा ।" (فردوس الاخبار للدیلمی، الحدیث:۵۹۶۷،ج۲،ص۳۷۴)

नेक काम के दौरान मौत की सआ़दत

سُبْحٰنَ اللّٰہ ! खु़श नसीब है वोह मुसलमान जिसे रोज़े की ह़ालत में मौत आए बल्कि किसी भी नेक काम के दौरान मौत आना निहायत ही अच्छी अ़लामत है म-षलन बा वुज़ू या दौराने नमाज़ मरना, सफ़रे मदीना के दौरान बल्कि मदीनए मुनव्वरह में रूह़ क़ब्ज़ होना, दौराने ह़ज मक्कए मुकर्रमा, मिना, मुज़्दलिफ़ा या अ़-रफ़ात शरीफ़ में फ़ौतगी, **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों भरे सफ़र के दौरान दुन्या से रुख़्सत होना, येह सब ऐसी अ़ज़ीम सआ़दतें है कि सिर्फ़ खु़श नसीबों ही को ह़ासिल होती हैं । इस सिलसिले में **सह़ाबए किराम** عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की नेक तमन्नाएं बयान करते हुए ह़ज़रते सय्यिदुना **ख़ैषमह** رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : **सह़ाबए किराम** عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان इस बात को पसन्द करते थे कि इन्तिक़ाल किसी अच्छे काम म-षलन ह़ज, उ़मरह, ग़ज़्वा (जिहाद), र-मज़ान के रोज़े वग़ैरा के दौरान हो ।

(صفۃ الصفوۃ لابن جوزی ،خیثمۃ بن عبد الرحمن ابن ابی سبرۃ،ج۲،ص۵۹)

www.dawateislami.net

कालू चाचा की ईमान अफ़रोज़ मौत

अच्छे काम के दौरान मौत से हम आग़ोश होने की सआ़दत मुक़द्दर वालों ही का हिस्सा है। इस ज़िम्न में तब्लीग़े कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के इजतिमाई ए'तिकाफ़ की एक म-दनी बहार मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये और ज़िन्दगी भर के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता रहने का अ़ज़्मे मुसम्मम कर लीजिये। चुनान्चे **मदीनतुल औलिया** अह़मदआबाद शरीफ़ (गुजरात, अल हिन्द) के कालू चाचा (उ़म्र तक़रीबन 60 बरस) र-मज़ानुल मुबारक 1425 सि.हि., 2004 ई. के आख़िरी अ़-शरे में शाही मस्जिद (शाहे आ़लम, अह़मदआबाद शरीफ़) में होने वाले तब्लीग़े कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के **इजतिमाई ए'तिकाफ़** में **मो'तकिफ़** हो गए। यूं तो येह पहले ही से **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता थे मगर **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ इजतिमाई **ए'तिकाफ़** में शुमूलिय्यत पहली ही बार नसीब हुई थी। ए'तिकाफ़ में बहुत कुछ सीखने का मौक़अ़ मिला और साथ ही साथ **दा'वते इस्लामी** के 72 **म-दनी इन्आ़मात** में से पहली सफ़ में नमाज़ पढ़ने की तरग़ीब वाले दूसरे म-दनी इन्आ़म का ख़ूब जज़्बा मिला, चुनान्चे उन्हों ने पहली सफ़ में नमाज़ पढ़ने की आ़दत बना ली। 2 शव्वालुल मुकर्रम या'नी ईदुल फ़ित्र के दूसरे रोज़ तीन दिन के **म-दनी क़ाफ़िले** में **आ़शिक़ाने रसूल** के हमराह सुन्नतों भरा सफ़र किया, **क़ाफ़िले** से वापसी के पांच या छे दिन के बा'द

www.dawateislami.net

या'नी 11 शव्वालुल मुकर्रम 1425 सि.हि. 2004 ई. को किसी काम से बाज़ार जाना हुवा, मसरूफ़िय्यत भी थी मगर ताख़ीर की सूरत में पहली सफ़ फ़ौत हो जाने का ख़दशा था। लिहाज़ा सारा काम छोड़ कर मस्जिद का रुख़ किया और अज़ान से क़ब्ल ही मस्जिद में पहुंच गए, वुज़ू कर के जूं ही खड़े हुए कि गिर पड़े, **कलिमा** शरीफ़ और दुरूदे पाक पढ़ते हुए उन की रूह क़-फ़से उन्सुरी से परवाज़ कर गई। اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّـآ اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इजतिमाई ए'तिकाफ़ की ब-रकत से **म-दनी इन्आमात** के दूसरे म-दनी इन्आम पहली सफ़ में नमाज़ पढ़ने के मिले हुए जज़्बे ने कालू चाचा को इन्तिक़ाल के वक़्त बाज़ार की ग़फ़लत भरी फ़ज़ाओं से उठा कर मस्जिद की रहमत भरी फ़ज़ाओं में पहुंचा दिया और कैसी ख़ुश नसीबी कि आख़िरी वक़्त **कलिमा** व दुरूद नसीब हो गया। سُبْحٰنَ اللّٰہ ! और जिस को मरते वक़्त **कलिमा** शरीफ़ नसीब हो जाए उस का क़ब्रो ह़श्र में बेड़ा पार है।

चुनान्चे नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत, मालिके जन्नत, महबूबे रब्बुल इज़्ज़त صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस का आख़िरी कलाम "لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰـهُ" हो वोह दाख़िले जन्नत होगा।" (سنن ابی داود، کتاب الجنائز،باب فی التلقین،الحدیث:٣١١٦،ج٣،ص٢٥٥)

मज़ीद दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल की ब-रकत सुनिये : चुनान्चे इन्तिक़ाल के चन्द रोज़ बा'द उन के फ़रज़न्द ने

www.dawateislami.net

ख़्वाब में देखा कि मर्हूम कालू चाचा सफ़ेद लिबास में मलबूस सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ का ताज सजाए मुस्कुराते हुए फ़रमा रहे हैं : बेटा ! दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों में लगे रहो कि इसी म-दनी माह़ोल की ब-रकत से मुझ पर करम हुवा है।

मौत फ़ज़्ले ख़ुदा से हो ईमान पर म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
रब की रह़मत से पाओगे जन्नत में घर म-दनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللّٰهُ تعالٰی علٰی محمَّد

(फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब : फ़ैज़ाने र-मज़ान, जि. 1, स. 1344)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए **सुन्नत की फ़ज़ीलत** और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहनशाहे **नुबुव्वत**, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शमए़ बज़्मे हिदायत, नोशए़ बज़्मे जन्नत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस ने मेरी **सुन्नत** से **मह़ब्बत** की उस ने मुझ से **मह़ब्बत** की और जिस ने मुझ से **मह़ब्बत** की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा।"

(تاریخ مدینة دمشق لابن عساکر، انس بن مالك، ج ۹ ، ص ۳٤۳)

लिहाज़ा **नाख़ुन काटने के 9 म-दनी फूल** क़बूल फ़रमाइये,

(इस किताब के सफ़ह़ा नम्बर **593** से बयान कीजिये)

★★★★★

www.dawateislami.net

बयान नम्बर 5 :

ज़िक्रुल्लाह के फ़ज़ाइल

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **"रसाइले अ़त्तारिय्या"** (ह़िस्सए दुवुम) के सफ़ह़ा **15** पर ह़दीषे पाक नक़्ल फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ाति़र आपस में मह़ब्बत रखने वाले जब बाहम मिलें और **मुसा-फ़ह़ा** करें और नबी (صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) पर **दुरूदे पाक** भेजें तो उन के जुदा होने से पहले दोनों के **अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये** जाते हैं।"

(مسند ابی یعلی، مسند انس بن مالك، الحدیث: ۲۹۵۱، ج۳، ص۹۵)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللهُ تعالىٰ على محمّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सुब्ह़ो शाम बल्कि हर हर घड़ी ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ में अपने आप को मश्ग़ूल रखना दुन्या व आख़िरत में हमारे लिये बहुत बड़े अज्रो षवाब का मूजिब है इस के लिये अगर हम थोड़ी सी तवज्जोह दें और अपने तमाम उमूर म-षलन खाने खिलाने, पीने पिलाने, रखने उठाने, धोने पकाने, पढ़ने पढ़ाने, चलने (गाड़ी वग़ैरा) चलाने, उठने उठाने, बैठने बिठाने, बत्ती जलाने, पंखा चलाने, दस्तर ख़्वान बिछाने बढ़ाने, बिछोना लपेटने बिछाने, दुकान खोलने बढ़ाने, ताला खोलने लगाने, तेल डालने, इत्र लगाने, बयान करने ना'त शरीफ़ सुनाने, जूती पहनने इमामा सजाने, दरवाज़ा खोलने

बन्द फ़रमाने, **अल ग़रज़** हर जाइज़ काम की इब्तिदा (जब कि कोई मानेए़ शरई न हो) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से करें तो اِنْ شَآءَاللّٰه इन तमाम मवाक़ेअ़ पर हमें **ज़िक्रुल्लाह** की फ़ज़ीलत ह़ासिल होगी और मज़ीद अच्छी अच्छी निय्यतें भी कर लें तो येह तमाम उमूर हमारे लिये बाइ़से षवाब होंगे।

क़ुरआने मजीद फ़ुरक़ाने ह़मीद में हमें सुब्ह़ो शाम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने की तरग़ीब दिलाई गई है चुनान्चे इर्शादे बारी तआ़ला है :

وَسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿۴۲﴾
(پ۲۲،الاحزاب:۴۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और सुब्ह़ो शाम उस की पाकी बोलो।*

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन** मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی इस आयए मुबा-रका के तह़त तह़रीर फ़रमाते हैं : "क्यूंकि सुब्ह़ और शाम के अवक़ात मलाएकए रोज़ो शब के जम्अ़ होने के वक़्त हैं और येह भी कहा गया है कि अत़राफ़े लैलो नहार का ज़िक्र करने से ज़िक्र की मुदा-वमत की त़रफ़ इशारा फ़रमाया गया है।" (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

दिन की इब्तिदा

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइ़षे नुज़ूले सकीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने दिन की इब्तिदा किसी अच्छे अ़मल से की और अपने दिन को अच्छे

www.dawateislami.net

अ़मल ही पर ख़त्म किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने फ़िरिश्तों से फ़रमाएगा : इस दौरान में होने वाले इस बन्दे के गुनाह मत लिखो।"

(الجامع الصغیر للسیوطی،حرف المیم،الحدیث:۸۴۲۳،ص۵۱۳)

जन्नत की ज़मानत

ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू मुनैज़िर** رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنہُ फ़रमाते हैं : मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना : "जो सुब्ह़ के वक़्त येह पढ़े : رَضِیْتُ بِاللّٰہِ رَبًّا وَّبِالْاِسْلَامِ دِیْنًا وَّبِمُحَمَّدٍ نَّبِیًّا (या'नी मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रब होने और इस्लाम के दीन होने और ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के नबी होने पर राज़ी हूं) तो मैं उस का हाथ पकड़ कर जन्नत में दाख़िल करने की ज़मानत देता हूं।"

(المعجم الکبیر للطبرانی،من اسمه منیذر الاسلمی،الحدیث:۸۳۸،ج۲۰،ص۳۵۵)

अफ़ज़ल अ़मल

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنہُ फ़रमाते हैं कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे **मुजस्सम**, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस ने सुब्ह़ो शाम सो सो मरतबा येह पढ़ा : سُبْحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ तो क़ियामत के दिन उस से अफ़ज़ल अ़मल ले कर आने वाला कोई न होगा सिवाए उस के जो उस की मिष्ल कहे या उस से ज़ियादा पढ़े।"

(صحیح مسلم،کتاب الذکر والدعاء، باب فضل التهلیل والتسبیح والدعاء، الحدیث: ۲۶۹۲،ص۱۴۴۵)

www.dawateislami.net

जो भलाई मांगे अ़ता की जाए

हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा बाहिली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मैं ने हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना : "जो **बा वुज़ू** अपने **बिस्तर** पर आए फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का **ज़िक्र** करे यहां तक कि उस पर गुनूदगी छा जाए तो **रात** की जिस घड़ी में वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुन्या व आख़िरत की **जो भलाई मांगेगा** **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे वोह **भलाई** अ़ता फ़रमा देगा।"

(سنن الترمذی،کتاب الدعوات،باب:۹۲،الحدیث:۳۵۳۷،ج۵،ص۳۱۱)

जन्नत में दाख़िला

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के निनानवे नाम हैं जो इन मुबारक नामों को गिन गिन कर **इख़्लास के साथ** पढ़ता रहे वोह **जन्नत** में दाख़िल होगा।"

(مشکاۃ المصابیح، کتاب الدعوات، باب اسماء اللّٰہ تعالٰی،الحدیث:۲۲۸۷،ج۱،ص۴۲۷)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत ढांप लेती है

दो जहां के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमियान, सरवरे ज़ीशान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो क़ौम भी **अल्लाह** तआ़ला का **ज़िक्र** करने के लिये बैठती है तो **फ़िरिश्ते** उन को चारों त़रफ़ से घेर लेते

www.dawateislami.net

हैं और **ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ की **रह़मत** उन को ढांप लेती है और उन लोगों पर **सकीना** (दिल का इत़मीनान) नाज़िल होता है और **अल्लाह** तआ़ला अपने **मुक़र्रबीन** में उन का तज़्किरा फ़रमाता है।"

(صحیح مسلم،کتاب الذکر والدعاء،باب فضل الاجتماع...الخ،الحدیث:۲۷۰۰،ص۱۴۴۸)

ज़िक्र करने वाले सब्क़त ले गए

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنہ से मरवी है : हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **मुफ़र्रिदून** सब्क़त ले गए। सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡھُم ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह! मुफ़र्रिदून** कौन हैं? आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का **बहुत ज़ियादा ज़िक्र करने वाले** मर्द और औ़रतें।

(صحیح مسلم،کتاب الذکر...الخ، باب الحث علی...الخ، الحدیث: ۲۶۷۶،ص۱۴۳۹)

रोज़े क़ियामत बुलन्द रुत्बा वाले

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सई़द ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنہ से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में किसी ने अ़र्ज़ किया : सब में अफ़ज़ल और रोज़े क़ियामत सब से बुलन्द रुतबा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में किस का होगा? इर्शाद फ़रमाया : "वोह बन्दे और बन्दियां जो **बहुत ज़ियादा अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने वाले हैं।" तो एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنہ ने अ़र्ज़ किया : क्या येह लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करने वाले से भी अफ़ज़ल हैं? (येह सुन कर) आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद

www.dawateislami.net

फ़रमाया : "अगर कोई मुजाहिद कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन को अपनी तलवार से यहां तक मारता रहे कि तलवार टूट जाए और वोह मुजाहिद ख़ून में लतपत हो जाए फिर भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का **ज़िक्र** करने वाला द–रजे में उस मुजाहिद से अफ़ज़ल ही होगा।"

(مشکاۃالمصابیح،کتاب الدعوات،باب ذکراللّٰہ...الخ،الحدیث:۲۲۸۰،ج۱،ص۴۲۷)

बिग़ैर ज़िक्र गुज़रने वाली घड़ी पर अफ़्सोस

हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ताजदारे मदीना, सुल्ताने बा क़रीना, साहिबे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अहले जन्नत** किसी चीज़ का अफ़्सोस न करेंगे सिवाए उस **साअ़त** के जो दुन्या में उन्हों ने **ज़िक्रुल्लाह** के बिग़ैर गुज़ार दी।"

(المعجم الکبیر للطبرانی، جبیر بن نفیر عن معاذ بن جبل، الحدیث:۱۸۲،ج۲۰،ص۹۳)

क़लम का क़त़

हाफ़िज़ इब्ने अ़साकिर "तबयीनुल कज़िबिल मुफ़्तरी" में फ़रमाते हैं : (पांचवीं सदी के मश्हूर बुज़ुर्ग) हज़रते सय्यिदुना सुलैम राज़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی का **क़लम** जब लिखते लिखते घिस जाता तो **क़त़** लगाते (या'नी नोक तराश्ते) हुए (अगर्चे दीनी तह़रीर के लिये येह भी षवाब का काम है मगर **एक पन्थ दो काज** के मिस्दाक़) **ज़िक्रुल्लाह** शुरूअ़ कर देते ताकि येह वक़्त सिर्फ़ **क़त़** लगाते हुए ही सर्फ़ न हो।

www.dawateislami.net

ज़िक्रो दुरूद हर घड़ी विर्दे ज़बां रहे

मेरी फ़ुज़ूल गोई की आ़दत निकाल दो

साठ साल की इ़बादत से बेहतर

अगर कुछ **पढ़ने** के **बजाए ख़ामोश** रहने को जी चाहे तो इस में भी **षवाब कमाने** की सूरतें हैं और वोह येह कि उलटे सीधे ख़यालात में पड़ने के बजाए आदमी यादे ख़ुदा वन्दी या यादे मदीना व शाहे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم में गुम हो जाए, या **इ़ल्मे दीन** में ग़ौरो **तफ़क्कुर** शुरूअ़ कर दे या **मौत** के झटकों, **क़ब्र** की तन्हाइयों, इस की वह़्शतों और **मह़शर** की होल नाकियों की **सोच में डूब** जाए तो इस त़रह़ भी **वक़्त ज़ाएअ़ नहीं होगा** बल्कि एक एक सांस اِنْ شَآءَاللّٰہ इ़बादत में शुमार होगा, चुनान्चे **"जामेए़ सग़ीर"** में है, सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, बाइ़षे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : (**उ़म्रे आख़िरत** के **मु-तअ़ल्लिक़**) घड़ी भर के लिये ग़ौरो फ़िक्र करना **60** साल की इ़बादत से बेहतर है।

(الجامع الصغیر للسیوطی، الحدیث:۵۸۹۷،ص۳۶۵)

उन की यादों में खो जाइये　　मुस्त़फ़ा मुस्त़फ़ा कीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ की आ़दत बनाने और हर घड़ी अपनी ज़बान को **ज़िक्रुल्लाह** से तर रखने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र

www.dawateislami.net

कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये म-दनी इन्आ़मात के मुत़ाबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए़ रिसाला पुर कीजिये।

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़बूआ़ **1548** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" जिल्द अव्वल, सफ़ह़ा **1133** पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : اَلْحَمْدُ لِلّٰه सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये इ़बादात व अख़्लाक़िय्यात के तअ़ल्लुक़ से इस्लामी भाइयों के लिये 72, इस्लामी बहनों के लिये 63 और त़-ल-बए इ़ल्मे दीन के लिये 92, दीनी त़ालिबात के लिये 83 और म-दनी मुन्नों और मुन्नियों के लिये 40 म-दनी इन्आ़मात सुवालात की सूरत में मुरत्तब किये गए हैं। **फ़िक्रे मदीना** (या'नी अपने आ'माल का मुह़ा-सबा) करते हुए रोज़ाना **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के **दा'वते इस्लामी** के मक़ामी ज़िम्मादार को हर म-दनी माह या'नी इस्लामी महीने की 10 तारीख़ के अन्दर अन्दर जम्अ़ करवाना होता है। म-दनी इन्आ़मात ने न जाने कितने इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों की ज़िन्दगियों में म-दनी इनक़िलाब बरपा कर दिया है ! इस की एक झलक मुला-ह़ज़ा हो चुनान्चे

न्यू कराची के एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ का बयान है : अ़लाक़े की मस्जिद के इमाम साह़िब जो कि दा'वते इस्लामी से

www.dawateislami.net

वाबस्ता हैं, उन्हों ने इनफ़िरादी कोशिश करते हुए मेरे बड़े भाईजान को म-दनी इन्आ़मात का एक रिसाला तोह़फ़े में दिया। वोह घर ले आए और पढ़ा तो ह़ैरान रह गए कि इस मुख़्तसर से रिसाले में एक मुसलमान को इस्लामी ज़िन्दगी गुज़ारने का इतना ज़बर दस्त फ़ोर्मूला दे दिया गया है ! म-दनी इन्आ़मात का रिसाला मिलने की ब-रकत से اَلْحَمْدُ لِلّٰه उन को नमाज़ का जज़्बा मिला और नमाज़े बा जमाअ़त की अदाएगी के लिये मस्जिद में ह़ाज़िर हो गए और अब पांच वक़्त के नमाज़ी बन चुके हैं, दाढ़ी मुबारक भी सजा ली और म-दनी इन्आ़मात का रिसाला भी पुर करते हैं।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए **सुन्नत की फ़ज़ीलत** और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहनशाहे **नुबुव्वत**, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शमए़ बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस ने मेरी **सुन्नत** से **मह़ब्बत** की उस ने मुझ से **मह़ब्बत** की और जिस ने मुझ से **मह़ब्बत** की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा।"

(تاریخ مدینۃ دمشق لابن عساکر، انس بن مالك، ج۹، ص۳۴۳)

लिहाज़ा **सुरमा लगाने के 4 म-दनी फूल** क़बूल फ़रमाइये, (इस किताब के सफ़ह़ा नम्बर **583** से बयान कीजिये)

★★★★★

www.dawateislami.net

बयान नम्बर 6 :

फ़ैज़ाने सलातो सलाम

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले **"बा ह़या नौ जवान"** में दुरूद शरीफ़ के मु-तअ़ल्लिक़ ह़दीषे पाक बयान फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते **सय्यिदुना अबू दरदा** رَضِىَ اللّٰه تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है : **मीठे मीठे मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स **सुब्ह़ो शाम** मुझ पर दस दस बार **दुरूद शरीफ़** पढ़ेगा बरोज़े क़ियामत **मेरी शफ़ाअ़त** उसे पहुंच कर रहेगी।"

(الترغیب و الترھیب، کتاب النوافل، باب الترغیب فی آیات...الخ، الحدیث:۹۹۱، ج۱، ص۳۱۲)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बा कमाल म-दनी मुन्नी

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ मुह़म्मद बिन सुलैमान जज़ूली رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं सफ़र पर था। एक मक़ाम पर नमाज़ का वक़्त हो गया, वहां कूंआं तो था मगर डोल और रस्सी नदारद (या'नी ग़ाइब) मैं इसी फ़िक्र में था कि एक मकान के ऊपर से एक **म-दनी मुन्नी** ने झांका और पूछा : आप क्या तलाश कर रहे हैं? मैं ने कहा : बेटी! रस्सी और डोल। उस ने पूछा : आप का नाम? फ़रमाया : **मुह़म्मद बिन सुलैमान जज़ूली**। म-दनी मुन्नी ने ह़ैरत से कहा : अच्छा आप ही हैं जिन की शोहरत के डंके बज रहे हैं और ह़ाल येह है कि कूंएं से पानी भी नहीं निकाल सकते! येह कह कर उस

www.dawateislami.net

ने कूंएं में थूक दिया **आनन फ़ानन पानी ऊपर आ गया** और **कूंएं से छलकने लगा,** आप رَحمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیہ ने वुज़ू से फ़राग़त के बा'द उस बा कमाल म-दनी मुन्नी से फ़रमाया : **बेटी ! सच बताओ तुम ने येह कमाल किस त़रह़ ह़ासिल किया ?** कहने लगी : **मैं दुरूदे पाक पढ़ती हूं,** इसी की ब-रकत से येह करम हुवा है। आप رَحمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیہ फ़रमाते हैं : उस बा कमाल म-दनी मुन्नी से मुतअष्षिर हो कर मैं ने वहीं अ़ह्द किया कि **मैं दुरूद शरीफ़ के मुतअ़ल्लिक़ किताब लिखूंगा।**

(سعادۃ الدارین،الباب الرابع فیماورد من لطائف المرائی...الخ،اللطیفۃ الخامسۃ عشرۃ بعد المائۃ،ص۱۵۸)

चुनान्चे आप رَحمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیہ ने **दुरूद शरीफ़** के बारे में किताब लिखी जो बेह़द मक़्बूल हुई और **उस किताब का नाम ''दलाइलुल ख़ैरात''** है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुसूले ब-रकत, तरक़्क़िये **मा'रिफ़त** और **मीठे मीठे आक़ा** صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم **की क़ुर्बत के लिये दुरूदो सलाम बेहतरीन ज़रीआ़ है,** शबो रोज़ हमें अपने **मोह़सिन आक़ा** صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم पर **दुरूदो सलाम** के फूल निछावर करते रहना चाहिये, इस में कोताही नहीं करनी चाहिये, **दुरूद शरीफ़ के फ़ज़ाइल** में बे शुमार कुतुब तस्नीफ़ की जा चुकी हैं इस के फ़ज़ाइलो ष-मरात अकषर **मुबल्लिग़ीन** बयान करते ही रहते हैं, क़लम की रोशनाई तो ख़त्म हो सकती है, बयान के अलफ़ाज़ भी ख़त्म हो सकते हैं मगर **फ़ज़ाइले दुरूदो सलाम बर ख़ैरुल अनाम का इह़ात़ा नहीं हो सकता** लिहाज़ा मह़ब्बत व अ़क़ीदत के साथ

www.dawateislami.net

ख़ूब ख़ूब दुरूदो सलाम के नज़राने अपने **मीठे मीठे आक़ा** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में पेश करते रहना चाहिये। वैसे भी हमें **दुरूदो सलाम भेजने का हुक्म ख़ुद हमारे रब** عَزَّوَجَلَّ **ने इर्शाद फ़रमाया** है चुनान्चे इर्शादे बारी तआ़ला है :

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿۵۶﴾

(پ۲۲،الاحزاب:۵٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक अल्लाह और उस के फ़िरिश्ते दुरूद भेजते हैं उस ग़ैब बताने वाले (नबी) पर, ऐ ईमान वालो ! उन पर दुरूद और ख़ूब सलाम भेजो।*

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی अपनी तफ़्सीर **नूरुल इरफ़ान** में इस आयत के तह़त फ़रमाते हैं :

दुरूद शरीफ़ तमाम अह़काम से **अफ़ज़ल है** क्यूंकि **अल्लाह तआ़ला** ने किसी हुक्म में अपना और अपने **फ़िरिश्तों** का ज़िक्र न फ़रमाया कि **हम भी येह करते हैं तुम भी करो**, सिवा **दुरूद शरीफ़** के। **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हमेशा **ह़यात** हैं और सब का **दुरूदो सलाम सुनते हैं, जवाब देते हैं** क्यूंकि जो जवाब न दे सके उसे सलाम करना मन्अ़ है जैसे नमाज़ी, सोने वाला। तमाम **मुसलमानों** को **हमेशा हर ह़ाल** में **दुरूद शरीफ़** पढ़ना चाहिये।

मज़ीद फ़रमाते हैं : **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का मर्तबा **ह़ज़रते सय्यिदुना आदम** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से ज़ियादा है क्यूंकि **ह़ज़रते सय्यिदुना आदम** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को **फ़िरिश्तों** ने सिर्फ़

www.dawateislami.net

एक दफ़्आ़ सज्दा किया मगर हमारे **हु़ज़ूर** صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर तो खुद **खु़दा तआ़ला** और **सारी खु़दाई हमेशा दुरूद** भेजते हैं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللّٰهُ تعالٰی علٰی محمَّد

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़्बूआ़ **1250** सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"बहारे शरीअ़त"** जिल्द अव्वल, हि़स्सा 3, सफ़्ह़ा **533** व **534** पर **दुरूदे पाक** से मु-तअ़ल्लिक़ है कि **उ़म्र** में एक बार **दुरूद शरीफ़** पढ़ना **फ़र्ज़** है और **हर जल्सए ज़िक्र** में **दुरूद शरीफ़** पढ़ना **वाजिब**, ख़्वाह खुद **नामे अक़्दस** ले या दूसरे से सुने और अगर एक मजलिस में **सो बार ज़िक्र आए** तो **हर बार दुरूद शरीफ़ पढ़ना चाहिये**, अगर **नामे अक़्दस** लिया या सुना और **दुरूद शरीफ़** उस वक़्त **न पढ़ा** तो किसी **दूसरे वक़्त** में उस के **बदले का पढ़ ले**।

(الدرالمختارورد المحتار، کتاب الصلاۃ ، باب صفۃ الصلاۃ، فصل فی بیان تالیف الصلاۃ...الخ، ج۲، ص۲۷۶۔۲۸۱)

अकषर लोग आज कल **दुरूद शरीफ़** के बदले (صَلعَم) "صلعم", "عم", "ص" (आधा सोंद), "عم" (आधा ऐ़न) लिखते हैं, येह ना जाइज़ व सख़्त ह़राम है। यूहीं رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنۡهُ की जगह "رض" (रा और आधा दा़द), رَحۡمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيۡه की जगह "رح" (रा और आधा हा़), लिखते हैं येह भी न चाहिये, जिन के नाम मुह़म्मद, अह़मद, अ़ली, ह़सन, हु़सैन वग़ैरा होते हैं उन नामों पर "ص" (आधा सोंद) "عم" (आधा ऐ़न) बनाते हैं येह भी मम्नूअ़ है कि इस जगह तो येह शख़्स मुराद है, इस पर **दुरूद** का इशारा क्या मा'ना।

(حاشیۃ الطحطاوی علی الدرالمختار، خطبۃ الکتاب، ج۱، ص٦ و الفتاوی الرضویۃ، ج۲۳، ص۳۸۷)

www.dawateislami.net

बा कमाल फ़िरिश्ता

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहिबे मुअत्तर पसीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने शफ़ाअत निशान है : "बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने एक **फ़िरिश्ता** मेरी क़ब्र पर मुक़र्रर फ़रमाया है जिसे **तमाम मख़्लूक़ की आवाजें सुनने की ताक़त अ़ता फ़रमाई** है, पस **क़ियामत** तक जो कोई मुझ पर **दुरूदे पाक** पढ़ता है तो वोह मुझे उस का और उस के बाप का नाम पेश करता है कहता है : फ़ुलां बिन फ़ुलां ने **आप पर दुरूदे पाक पढ़ा** है।"

(مجمع الزوائد، کتاب الادعیۃ، باب فی الصّلاۃ علی النبی علیہ الصلاۃ والسلام، الحدیث:۱۷۲۹۱،ج۱۰،ص۲۵۱)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

سُبْحٰنَ اللّٰہ **दुरूद शरीफ़** पढ़ने वाला किस क़दर **बख़्त वर** है कि उस का नाम बमअ़ **वलदिय्यत बारगाहे रिसालत में पेश किया जाता** है यहां येह **नुक्ता** भी इन्तिहाई **ईमान अफ़्रोज़** है कि **क़ब्रे मुनव्वर** عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर ह़ाज़िर फ़िरिश्ते को इस क़दर ज़ियादा **क़ुव्वते समाअ़त** दी गई है कि वोह दुन्या के कोने कोने में एक ही वक़्त के अन्दर **दुरूद शरीफ़** पढ़ने वाले लाखों **मुसलमानों** की इन्तिहाई **धीमी आवाज़ भी सुन लेता** है और उसे **इल्मे ग़ैब** भी अ़ता किया गया है कि वोह **दुरूदे पाक** पढ़ने वालों के नाम बल्कि उन के **वालिद साहिबान** तक के नाम जान लेता है, जब **ख़ादिमे दरबारे रिसालत** की **क़ुव्वते समाअ़त** और **इल्मे ग़ैब** का येह ह़ाल है तो

www.dawateislami.net

सरकारे वाला तबार, मक्के मदीने के ताजदार, महबूबे परवर दगार صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के **इख़्तियारात व इल्मे ग़ैब** की क्या शान होगी ! वोह क्यूं न अपने ग़ुलामों को पहचानेंगे और क्यूं न उन की फ़रियाद सुन कर **बि इज़्निल्लाहि तआ़ला** इमदाद फ़रमाएंगे !

मैं क़ुरबां इस अदाए दस्त गीरी पर मेरे आक़ा
मदद को आ गए जब भी पुकारा या रसूलल्लाह

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلٰی محمَّد

पुल सिरात़ पर नूर

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **के** मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, **मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : “मुझ पर **कषरत** से **दुरूदे पाक** पढ़ा करो क्यूंकि क़ब्र में तुम से मेरे मु-तअ़ल्लिक़ सुवाल होगा ।” और फ़रमाया : “दुरूद शरीफ़ क़ियामत के रोज़ पुल सिरात़ पर तारीकी के वक़्त नूर होगा ।” (افضل الصلاتِ علی سید السادات، الفصل الرابع،ص۲۷)

सायए अ़र्श

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुह़्तशम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : **क़ियामत** के रोज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के **अ़र्श के सिवा कोई साया नहीं** होगा, **तीन शख़्स अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़र्श के साए में होंगे : (1) वोह शख़्स जो मेरे **उम्मती की परेशानी** को दूर करे (2) **मेरी सुन्नत** को ज़िन्दा करने वाला (3) मुझ पर **कषरत से दुरूद शरीफ़** पढ़ने वाला ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلٰی محمَّد

www.dawateislami.net

सोने के दीनार

एक बार किसी भिकारी ने कुफ़्फ़ार से सुवाल किया, उन्हों ने मज़ाक़न अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात **अ़लिय्युल मुर्तज़ा** शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم के पास भेज दिया जो कि सामने तशरीफ़ फ़रमा थे, उस ने ह़ाज़िर हो कर दस्ते सुवाल दराज़ किया, आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने **दस बार दुरूद शरीफ़** पढ़ कर उस की **हथेली पर दम कर दिया** और फ़रमाया : मुठ्ठी बन्द कर लो और जिन लोगों ने भेजा है उन के सामने जा कर **खोल दो** (कुफ़्फ़ार हंस रहे थे कि ख़ाली फूंक मारने से क्या होता है !) जब साइल ने उन के सामने जा कर मुठ्ठी खोली तो **वोह सोने के दीनारों से भरी हुई थी,** येह **करामत** देख कर कई **काफ़िर मुसलमान हो गए ।**

(هشت بهشت، راحت القلوب،ص٢٣٤)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रह़मतों का नुज़ूल

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए **ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : "जिस ने मुझ पर **एक बार दुरूदे पाक** पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर **दस रह़मतें** नाज़िल फ़रमाता है, दस गुनाह मिटाता है **दस द-रजात** बुलन्द फ़रमाता है ।"

(سنن النسائی، کتاب السھو، باب الفضل فی الصلاۃ علی النبی صَلَّی اللّٰہ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم، الحدیث:١٢٩٤،ص٢٢٢)

www.dawateislami.net

दिन और रात के गुनाह मुआ़फ़ हों

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए **ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : जिस ने दिन और रात में मेरी त़रफ़ शौक़ व मह़ब्बत की वजह से तीन तीन मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ह़क़ है कि वोह उस के उस दिन और रात के गुनाह बख़्श दे ।

(الترغيب والترهيب ، كتاب الذكر والدعاء،باب الترغيب فى اكثار الصلاة على النبى،الحديث:٢٥٩٢،ج٢،ص٣٢٦)

शफ़ाअ़त का मुज़्दा

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : जिस ने मुझ पर **दस मरतबा सुब्ह़** और **दस मरतबा शाम दुरूदे पाक** पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी ।

(مجمع الزوائد،كتاب الاذكار، باب مايقول اذااصبح واذاامسى،الحديث:١٧٠٢٢، ج١٠،ص١٦٣)

निफ़ाक़ और जहन्नम से आज़ादी

नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : जिस ने मुझ पर **सो मरतबा दुरूदे पाक** पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की **दोनों आंखों के दरमियान** लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से **आज़ाद** है और उसे **बरोज़े क़ियामत शु-हदा के साथ** रखेगा ।

(مجمع الزوائد، كتاب الادعية، باب فى الصلاة على النبى...الخ،الحديث:١٧٢٩٨، ج١٠،ص٢٥٢)

www.dawateislami.net

जन्नत में अपना मक़ाम देखने का नुस्ख़ा

मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमियान صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जो मुझ पर दिन में **एक हज़ार बार दुरूदे पाक** पढ़ेगा वोह उस वक़्त तक नहीं मरेगा जब तक **जन्नत में अपना मक़ाम** न देख ले।"

(الترغیبو الترھیب، کتاب الذکر و الدعاء، الترغیب فی اکثار الصلاۃ علی النبی، الحدیث:۱۹۵۲، ج۲، ص۳۲۳)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मोह़द्दिष देहलवी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی "**जज़्बुल क़ुलूब**" में फ़रमाते हैं : **मोमिने सादिक़** और **मुह़िब्बे मुश्ताक़** पर लाज़िम है कि **दुरूद शरीफ़** की कषरत करे और दूसरे आ'माल पर इसे मुक़द्दम (बढ़ कर) जानने में कमी न करे जिस क़दर अ़दद मख़्सूस कर सके करे और फिर उस **मुक़र्ररा अ़दद को रोज़ाना का विर्द बनाए।** (जज़्बुल क़ुलूब (मुतर्जम), सत्तरहवां बाब, फ़स्ल : 1, स. 328)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **दुरूदो सलाम** के **फ़ज़ाइल** और **ब-रकतें** आप ने मुला-ह़ज़ा फ़रमाईं और **शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मोह़द्दिष देहलवी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی का फ़रमान भी सुना कि **जिस क़दर अ़दद मख़्सूस** कर सके करे और फिर उस मुक़र्ररा अ़दद को **रोज़ाना का विर्द** बनाए।

लिहाज़ा हमें अपने ह़स्बे ह़ाल एक ता'दाद मुक़र्रर कर के रोज़ाना अपने **मीठे मीठे ग़म ख़्वार आक़ा** صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की **बारगाहे अक़्दस** में **दुरूदो सलाम** के नज़राने पेश करना चाहिये

www.dawateislami.net

और जब आ़दत बन जाए तो उस मुक़र्ररा अ़दद में इज़ाफ़ा करते हुए और ज़ियादा ता'दाद में **दुरूदो सलाम** भेजना चाहिये।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए कि हम कषरत के साथ उस के **प्यारे ह़बीब** صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर **दुरूदे पाक** पढ़ें।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **दुरूदो सलाम** की आ़दत बनाने के लिये **तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** से हर दम वाबस्ता रहिये। **अच्छी सोह़बत** की ब-रकतों से हमें न सिर्फ़ **दुरूदे पाक पढ़ने की कषरत** का जज़्बा नसीब होगा बल्कि अगर करम हो गया तो हम भी अपने **मीठे मीठे ग़म ख़्वार आक़ा** صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की **सुन्नतों पर अ़मल** करते हुए ज़िन्दगी गुज़ारने वाले बन जाएंगे और **दोनों जहां में अपना बेड़ा पार होगा।** اِنۡ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

इस ज़िम्न में **दा'वते इस्लामी** के **इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना** की मत़बूआ़ **1548** सफ़हात पर मुश्तमिल किताब **"फ़ैज़ाने सुन्नत" सफ़हा 802** पर **शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ तह़रीर फ़रमाते हैं :

www.dawateislami.net

अच्छी सोह़बत अच्छी मौत

ख़रबूज़े को देख कर ख़रबूज़ा रंग पकड़ता है, तिल को गुलाब के फूल में रख दो तो उस की सोह़बत में रह कर गुलाबी हो जाता है, इसी त़रह़ **तब्लीग़े कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता हो कर **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत में रहने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के **रसूल** صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मेहरबानी से बे वक़्अ़त पथ्थर भी **अनमोल हीरा** बन जाता, ख़ूब जग मगाता और ऐसी शान से पैके अजल को **लब्बैक** कहता है कि देखने, सुनने वाला उस पर रश्क करता और **ऐसी ही मौत की आरज़ू करने** लगता है।

चुनान्चे टन्डो अल्लाह **यार** (सिन्ध) के एक शख़्स ने **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** से **मुतअष्षिर** हो कर **आ़शिक़ाने रसूल** की **सोह़बत की ब-रकत** से **पांचों वक़्त की नमाज़** की पाबन्दी शुरूअ़ कर दी और **र-मज़ानुल मुबारक** के **आख़िरी अ़-शरे** में **दा'वते इस्लामी** के तह़त होने वाले **सुन्नतों भरे ए'तिकाफ़** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ बैठ गए। दस दिन में कु़रआने पाक की चन्द सूरतें, दुआ़एं और सुन्नतें याद कर लीं। चेहरे पर एक मुश्त दाढ़ी और सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामे का ताज सजाने की निय्यत के साथ साथ **हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़** में शिर्कत और **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र के लिये नाम भी लिखवाया **अल ग़रज़** ज़िन्दगी में **म-दनी**

www.dawateislami.net

इन्क़िलाब बरपा हो गया, **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत रंग लाई, **गुनाहों से तौबा कर के सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने लगे ।**

एक दिन कपड़ों में आग लगने के सबब बेचारे बुरी त़रह़ **झुलस गए**, अस्पताल ले जाया गया, डॉक्टरों ने बताया कि **इन का जिस्म 80 फ़ी सद जल चुका** है मगर देखने वाले ह़ैरत ज़दा थे कि **तक्लीफ़ का इज़्हार** करने के बजाए वोह **ज़िक्रो दुरूद में मश्ग़ूल थे, ए'तिकाफ़** के दौरान **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत में रह कर जो **सूरतें** और **दुआ़एं** याद की थीं उन्हें वोह पढ़े जा रहे थे । कमो बेश **48** घन्टे तक वक़्तन फ़ वक़्तन **क़ुरआने पाक की सूरतें और दुआ़एं वग़ैरा पढ़ते रहे** और **सुब्ह़ अज़ाने फ़ज्र** के वक़्त बुलन्द आवाज़ से **مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **لَاۤ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰـهُ** पढ़ा और उन की **रूह़ क़-फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई ।**

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो ।

(फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब सिवुम, जि. 1, स. 802)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए **सुन्नत** की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं ।

www.dawateislami.net

ताजदारे रिसालत, शहनशाहे **नुबुव्वत**, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शमए़ बज़्मे हिदायत, नोशए़ बज़्मे जन्नत صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस ने मेरी **सुन्नत** से **मह़ब्बत** की उस ने मुझ से **मह़ब्बत** की और जिस ने मुझ से **मह़ब्बत** की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा ।" (تاریخ مدینة دمشق لابن عساکر، انس بن مالك، ج۹، ص۳٤۳)

लिहाज़ा छींक के आदाब के 17 म-दनी फूल क़बूल फ़रमाइये, (इस किताब के सफ़ह़ा नम्बर **586** से बयान कीजिये)

★★★★★

जन्नत के मह़ल्लात ह़ासिल करने का नुस्ख़ा

*ह़ज़रते सय्यिदुना **सईद बिन मुसय्यब** رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जिस ने قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ (पूरी सूरत) को **10** बार पढ़ा **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये **जन्नत में मह़ल** बनाता है जिस ने **20** बार पढ़ा उस के लिये दो **मह़ल** बनाता है जिस ने **30** बार पढ़ा उस के लिये **तीन मह़ल** बनाता है । ह़ज़रते सय्यिदुना **उ़मर बिन ख़त्ताब** رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُ ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! उस वक़्त हमारे बहुत से **मह़ल्लात** होंगे ? इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल इस से भी ज़ियादा वसीअ़ है ।*** (سنن الدارمی، ج۲، ص۵۵۱، حدیث:۳٤۲۹)

www.dawateislami.net

बयान नम्बर 7 :

फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه अपने रिसाले **"गानों के 35 कुफ़्रिय्या अश्आ़र"** में दुरूद शरीफ़ के मु-तअ़ल्लिक़ ह़दीषे पाक नक़्ल फ़रमाते हैं कि **सरकारे मदीना** صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ब-रकत निशान है : "ऐ लोगो ! बेशक तुम में से क़ियामत के दिन उस की दह्शतों और ह़िसाब किताब से **जल्द नजात पाने** वाला वोह शख़्स होगा जिस ने दुन्या में ब कषरत दुरूद शरीफ़ पढ़े होंगे।"

(فردوس الاخبار للدیلمی، باب الیاء،الحدیث:۸۲۱۰،ج۲،ص۴۷۱)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

क़ब्र से अ़ज़ाब उठ गया

ह़ज़रते सय्यिदुना **ईसा रूहुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام एक क़ब्र के क़रीब से गुज़रे तो अ़ज़ाब हो रहा था कुछ वक़्फ़े के बा'द फिर गुज़रे तो मुला-ह़ज़ा फ़रमाया कि उस **क़ब्र में नूर ही नूर** है और वहां रह़मते इलाही की बारिश हो रही है, आप बहुत ह़ैरान हुए और **बारगाहे इलाही** में अ़र्ज़ किया कि मुझे इस का भेद बताया जाए। इर्शाद हुवा : "**ऐ ईसा** ! (عَلَیْہِ السَّلَام) येह शख़्स सख़्त गुनहगार होने के सबब अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार था लेकिन ब वक़्ते इन्तिक़ाल इस की बीवी "उम्मीद" से थी उस के लड़का पैदा हुवा और आज उस को

www.dawateislami.net

मक्तब भेजा गया, उस्ताद ने उस को **बिस्मिल्लाह** पढ़ाई, मुझे ह़या आई कि मैं उस शख़्स को ज़मीन के अन्दर अ़ज़ाब दूं जिस का **बच्चा ज़मीन के ऊपर मेरा नाम** ले रहा है।"

(التفسیرالکبیر،الباب الحادی عشر،ج۱،ص۱۵۵)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।

ऐ ख़ुदाए मुस्त़फ़ा मैं तेरी रह़मतों के क़ुरबां

हो करम से मेरी बख़्शिश ब तुफ़ैले शाहे जीलां

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! **बिस्मिल्लाह** शरीफ़ की ब-रकतों के क्या कहने ! वालिदैन को चाहिये कि अपनी अवलाद को शुरूअ़ ही से अच्छा और **म-दनी माह़ोल** फ़राहम करें, अपने बच्चों को "टाटा, पापा" सिखाने के बजाए इब्तिदा ही से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम लेना सिखाएं और येह नहीं कि सिर्फ़ मरने वाले वालिदैन को ही इस की ब-रकतें ह़ासिल होती हैं ख़ुद सीखने और सिखाने वाले को भी इस की ब-रकतें नसीब होती हैं लिहाज़ा अपने **म-दनी मुन्ने** और **म-दनी मुन्नी** से खेलते हुए सिखाने की निय्यत से उन के सामने बार बार **अल्लाह अल्लाह** करते रहें तो वोह भी اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ज़बान खोलते ही सब से **पहला लफ़्ज़ अल्लाह** कहेंगे।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

76 हज़ार नेकियां

ह़ज़रते सय्यिदुना **इब्ने मसऊ़द** رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि **ताजदारे मदीना, साह़िबे मुअ़त़्त़र पसीना, क़रारे क़ल्बो सीना** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने फ़रह़त निशान है : जो

www.dawateislami.net

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم पढ़ेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **हर ह़र्फ़ के बदले** उस के **नामए आ'माल** में चार हज़ार नेकियां दर्ज फ़रमाएगा, चार हज़ार गुनाह बख़्श देगा और चार हज़ार द-रजात बुलन्द फ़रमाएगा।

(فردوس الاخبار،باب المیم،فصل فضل قراءۃ القران،الحدیث:۵۵۷۳،ج۲،ص۲۳۹)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! झूम जाइये ! अपने प्यारे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत पर क़ुरबान हो जाइये ! ज़रा ह़िसाब तो लगाइये بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم में **19 हुरूफ़** हैं, यूं एक बार पढ़ने से छहत्तर हज़ार[76000] नेकियां मिलेंगी, छहत्तर हज़ार गुनाह मुआ़फ़ होंगे और छहत्तर हज़ार द-रजात बुलन्द होंगे। وَاللّٰہُ ذُو الۡفَضۡلِ الۡعَظِیۡم और **अल्लाह** बड़े फ़ज़्ल वाला है।

(फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब : 1, जि. 1, स. 53)

उन्नीस हुरूफ़ की ह़िक्मतें

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم के **19 हुरूफ़** हैं और दोज़ख़ पर अ़ज़ाब देने वाले फ़िरिश्ते भी उन्नीस। पस उम्मीद है कि इस के एक एक ह़र्फ़ की ब-रकत से एक एक फ़िरिश्ते का अ़ज़ाब दूर हो जाए, **दूसरी ख़ूबी** येह भी है कि दिन रात में **24** घन्टे हैं जिन में से पांच घन्टे पांच नमाज़ों ने घेर लिये और **19** घन्टों के लिये بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم के उन्नीस हुरूफ़ अ़ता फ़रमाए गए पस जो **बिस्मिल्लाह** का विर्द करता रहे اِنۡ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उस का **हर घन्टा इबादत** में शुमार होगा और हर घन्टे के गुनाह मुआ़फ़ होंगे।

(التفسیر الکبیر،الباب الحادی عشر،ج۱،ص۱۵۶)

www.dawateislami.net

पांच म-दनी फूल

हज़्रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन अल आ़स** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا का इर्शादे सआ़दत बुन्याद है : **पांच आ़दतें** ऐसी है कि कोई इन्हें इख़्तियार कर ले तो **दुन्या व आख़िरत** में सआ़दत मन्द हो जाए ﴾1﴿ वक़्तन फ़ वक़्तन لَاۤاِلٰـــهَ اِلَّااللّٰــهُ مُـحَـمَّـدٌرَّسُوۡلُ اللّٰه कहता रहे ﴾2﴿ किसी मुसीबत में मुबतला हो (म-षलन बीमार हो या नुक़्सान हो जाए या परेशानी की ख़बर सुने) तो "اِنَّالِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَيۡهِ رَاجِعُوۡنَ" और "لَا حَوۡلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الۡعَلِيِّ الۡعَظِيۡم" पढ़े ﴾3﴿ जब भी ने'मत मिले तो शुक्राने में "اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ" कहे ﴾4﴿ जब किसी जाइज़ काम का आग़ाज़ करे तो "بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡم" पढ़े और ﴾5﴿ जब गुनाह कर बैठे तो यूं कहे : "اَسۡتَغۡفِرُ اللّٰهَ الۡعَظِيۡمَ وَ اَتُوۡبُ اِلَيۡهِ" (المنبہات للعسقلانی،ص٥٨)

बिस्मिल्लाह दुरुस्त पढ़िये

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡم पढ़ने में **दुरुस्त मख़ारिज** से हुरूफ़ की अदाएगी लाज़िमी है और कम अज़ कम इतनी आवाज़ भी ज़रूरी है कि रुकावट न होने की सूरत में अपने कानों से सुन सकें, जल्द बाज़ी में बा'ज़ लोग हुरूफ़ चबा जाते हैं, जान बूझ कर इस त़रह़ पढ़ना ममनूअ़ है और मा'ना फ़ासिद होने की सूरत में गुनाह, लिहाज़ा जल्दी जल्दी पढ़ने की आ़दत की वजह से जो लोग ग़लत़ पढ़ डालते हैं वोह **अपनी इस्लाह़ कर लें** नीज़ जहां पूरी पढ़ने की कोई ख़ास वजह मौजूद न हो वहां सिर्फ़ "**बिस्मिल्लाह**" कह लें तब भी दुरुस्त है।

www.dawateislami.net

अधूरा काम

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो भी **अहम काम** "بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم" के साथ शुरूअ़ नहीं किया जाता वोह अधूरा रह जाता है।" (الدر المنثور،سورة الفاتحة، ج١،ص٢٦)

लिहाज़ा हर जाइज़ काम के शुरूअ़ में (जब कि कोई मानेए़ शरई न हो) "**बिस्मिल्लाह शरीफ़**" पढ़ने की आ़दत बना लेनी चाहिये।

ज़हरे क़ातिल बे अषर हो गया

एक मरतबा सय्यिदुना **ख़ालिद बिन वलीद** رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنۡهُ से कुछ मजूसियों ने अ़र्ज़ किया कि आप हमें कोई ऐसी निशानी बताइये जिस से हम पर **इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत** वाज़ेह़ हो चुनान्चे **आप** رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنۡهُ ने ज़हरे क़ातिल मंगवाया और بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم पढ़ कर उसे खा लिया, "**बिस्मिल्लाह**" की ब-रकत से उस **ज़हरे क़ातिल** ने **आप** رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنۡهُ पर कोई अषर न किया, येह मन्ज़र देख कर मजूसी (आतश परस्त) बे साख़्ता पुकार उठे : "**दीने इस्लाम ह़क़ है।**" (التفسيرالكبير،الباب الحادى عشر، ج١،ص١٥٥)

मा'लूम हुवा कि खाने या पीने से क़ब्ल بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم पढ़ लेने से जहां आख़िरत का अ़ज़ीम षवाब है वहीं दुन्या में भी इस का येह फ़ाएदा है कि अगर खाने या पीने की चीज़ में कोई मुज़िर (नुक़्सान देह) अज्ज़ा शामिल हों भी तो वोह اِنۡ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ नुक़्सान नहीं करेंगे।

मोटा ताज़ा शैत़ान

एक मरतबा दो शयात़ीन में मुलाक़ात हुई एक शैत़ान ख़ूब मोटा ताज़ा था जब कि दूसरा दुबला पतला, मोटे ने दुबले से पूछा : भाई ! आख़िर तुम इतने कमज़ोर क्यूं हो ? उस ने जवाब दिया : मैं एक ऐसे **नेक बन्दे** के साथ हूं जो घर में दाख़िल होते और खाते पीते वक़्त **बिस्मिल्लाह शरीफ़** पढ़ लेता है तो मुझे उस से दूर भागना पड़ता है, फिर दुबले ने कहा : यार ! येह तो बताओ ! तुम ने बहुत जान बना रखी है इस में क्या राज़ है ? मोटा बोला : "मैं एक **ऐसे ग़ाफ़िल शख़्स** पर मुसल्लत़ हूं जो घर में **बिस्मिल्लाह** पढ़े बिग़ैर दाख़िल हो जाता है और खाते पीते वक़्त भी **बिस्मिल्लाह** नहीं पढ़ता लिहाज़ा मैं उस के इन तमाम कामों में शरीक हो जाता हूं और उस पर जानवर की त़रह़ सुवार रहता हूं। (येह राज़ है मेरी सिह़्ह़त मन्दी का)" (اسرار الفاتحۃ، ص ١٥٥)

इस ह़िकायत से येह **दर्स मिलता** है कि अगर हम अपने कामों में **शैत़ान** की शिर्कत से **ह़िफ़ाज़त और ख़ैरो ब-रकत** के त़लब गार हैं तो हर **नेक काम** के आग़ाज़ में **बिस्मिल्लाह** पढ़ा करें ब सूरते दीगर हर फ़े'ल में शैत़ाने लईन शरीक हो जाएगा।

जिन्नात से सामान की ह़िफ़ाज़त का त़रीक़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना **सफ़्वान बिन सुलैम** رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ फ़रमाते हैं : "**इन्सान** के साज़ो सामान और मलबूसात को जिन्नात इस्ति'माल करते हैं लिहाज़ा तुम में से जब कोई शख़्स कपड़ा (पहनने के लिये) उठाए (या उतार कर) रखे तो "**बिस्मिल्लाह शरीफ़**" पढ़ लिया करे

www.dawateislami.net

इस के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम **मोहर** है।" (या'नी **बिस्मिल्लाह** पढ़ने से जिन्नात उन कपड़ों को इस्ति'माल नहीं करेंगे)

(لقط المرجان فی احکام الجان للسیوطی،ذکرمایعتصم به منهم،ص ۱٦۱)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हर चीज़ रखते उठाते "**बिस्मिल्लाह**" पढ़ने की आदत बनानी चाहिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ शरीर जिन्नात की दस्त बुर्द से **हिफ़ाज़त** हासिल होगी।

घरेलू झगड़ों का इलाज

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : **घर में दाख़िल** होते वक़्त पूरी "**बिस्मिल्लाह**" पढ़ कर दाहना क़दम पहले दरवाज़े में दाख़िल करे फिर घर वालों को सलाम करता हुवा घर में आए, अगर कोई न हो तो : اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهٗ कह दे, बा'ज़ बुज़ुर्गों को देखा गया कि अव्वल दिन में जब पहली बार घर में दाख़िल होते तो "**बिस्मिल्लाह**" और "**क़ुल हुवल्लाह**" पढ़ लेते हैं कि इस से घर में इत्तिफ़ाक़ भी रहता है (या'नी झगड़ा नहीं होता) और **रिज़्क़ में ब-रकत** भी।

(मिरआतुल मनाजीह़, ख़ानों का बयान, जि. 6, स. 9)

फ़िरिश्ते नेकियां लिखते रहते हैं

ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू हुरैरा** رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि **सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद

www.dawateislami.net

फ़रमाया : **ऐ अबू हुरैरा** ! जब तुम **वुज़ू** करो तो "بِسْمِ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ" कह लिया करो जब तक तुम्हारा **वुज़ू** बाक़ी रहेगा उस वक़्त तक तुम्हारे फ़िरिश्ते (या'नी किरामन कातिबीन) तुम्हारे लिये **नेकियां** लिखते रहेंगे।

(المعجم الصغیرللطبرانی،باب الالف من اسمه احمد، الجزء الاوّل،ص ۷۳)

नेकियां ही नेकियां

जो शख़्स किसी जानवर पर सुवार होते वक़्त "بِسْمِ اللّٰهِ" और "اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ" पढ़ ले तो उस जानवर के हर क़दम पर उस सुवार के ह़क़ में एक नेकी लिखी जाएगी, जो शख़्स कश्ती में सुवार होते वक़्त "بِسْمِ اللّٰهِ" और "اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ" पढ़ ले जब तक वोह उस में सुवार रहेगा उस के वासिते **नेकियां** लिखी जाएंगी।

(तफ़्सीरे नईमी, पारह : 1, जि. 1, स. 52)

क़ियामत के लिये निराली सनद

हज़रते **मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : "**तफ़्सीरे अ़ज़ीज़ी**" में "**बिस्मिल्लाह**" के फ़वाइद में लिखा है कि एक **वलिय्युल्लाह** ने मरते वक़्त वसिय्यत की थी कि मेरे **कफ़न** में بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم लिख कर रख देना, लोगों ने इस की वजह पूछी तो उन्हों ने जवाब दिया कि **क़ियामत** के दिन येह मेरी **दस्तावेज़** (या'नी तह़रीरी सुबूत) होगी जिस के ज़रीए़ से **रह़मते इलाही** की दर-ख़्वास्त करूंगा। (तफ़्सीरे नईमी, पारह : 1, जि. 1, स. 52)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

तू अ़ज़ाब से बच गया

फ़िक़्हे ह़-नफ़ी की मशहूरो मा'रूफ़ किताब "**दुर्रे मुख़्तार**" में है : एक शख़्स ने मरने से पहले येह **वसिय्यत** की, कि इन्तिक़ाल के बा'द मेरे सीने और पेशानी पर بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم लिख देना चुनान्चे ऐसा ही किया गया, फिर किसी ने ख़्वाब में उस शख़्स को देख कर ह़ाल पूछा उस ने बताया कि जब मुझे क़ब्र में रखा गया, अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते आए, जब पेशानी पर "**बिस्मिल्लाह शरीफ़**" देखी तो कहा : **तू अ़ज़ाब से बच गया ।**

(الدر المختار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، ج۳، ص۱۸٦)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी कोई मुसलमान फ़ौत हो जाए तो بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم वग़ैरा ज़रूर लिख लिया करें, आप की थोड़ी सी तवज्जोह बेचारे मरने वाले की **बख़्शिश का ज़रीआ़** बन सकती है और **मय्यित** के साथ **हमदर्दी की नेकी** आप की भी **नजात** का बाइ़स बन सकती है ।

मय्यित की पेशानी और सीने पर लिखिये

ह़ज़रते अ़ल्लामा **शामी** عَلَیۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡکَافِی फ़रमाते हैं : "यूं भी हो सकता है कि **मय्यित** की पेशानी पर بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم लिखिये और सीने पर لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰه लिखिये मगर नहलाने के

www.dawateislami.net

बा'द और कफ़न पहनाने से पहले **कलिमे की उंगली** से लिखिये, **रोश्नाई** (INK) से न लिखिये।" (ए'राब लगाने की ह़ाजत नहीं)

(ردالمحتار،کتاب الصلاۃ،باب صلاۃ الجنازۃ،مطلب فی مایکتب...الخ،ج۳،ص۱۸٦)

श-जरह या **अ़ह्द नामा** क़ब्र में रखना जाइज़ है और बेहतर येह है कि **मय्यित** के मुंह के सामने क़िब्ले की जानिब **त़ाक़** खोद कर उस में रखें बल्कि **"दुर्रे मुख़्तार"** में **कफ़न** पर **अ़ह्द नामा** लिखने को जाइज़ कहा है और फ़रमाया कि इस से **मग़्फ़िरत की उम्मीद** है।

(الدرالمختار،کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ،ج۳،ص۱۸۵)

बिस्मिल्लाह लिखने की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना **अनस** رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ता'ज़ीम के लिये **उ़म्दा शक्ल** में بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم तह़रीर किया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे **बख़्श** देगा।"

(الدرالمنثور، سورۃ الفاتحۃ،ج۱،ص۲۷)

उ़म्दगी से पढ़ने की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते **मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा** کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से रिवायत है : एक शख़्स ने بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم को **ख़ूब उ़म्दगी** से पढ़ा उस की **बख़्शिश** हो गई।

(شعب الایمان للبیہقی،باب فی تعظیم القرآن،فصل فی تفخیم قدر المصحف..الخ،الحدیث:۲٦٦۷،ج۲،ص۵٤٦)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

ब-रकतें ही ब-रकतें

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबुल अ़ब्बास **अह़मद बिन अ़ली बूनी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : जो बिला नाग़ा सात दिन तक "بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم" **786 बार** (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़े اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस की **हर ह़ाजत पूरी** हो, अब वोह ह़ाजत ख़्वाह किसी भलाई के पाने की हो या बुराई दूर होने की या कारोबार चलने की । (شمس المعارف الکبریٰ،الباب الخامس فی اسرارالبسملة...الخ،ص۳۷)

हर त़रह़ की आफ़त व बला से मह़फ़ूज़

जो कोई सोते वक़्त "بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم" **21 बार** (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ ले اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस रात शैत़ान, चोरी, अचानक मौत और **हर त़रह़ की आफ़त व बला से मह़फ़ूज़ रहे ।** (ایضًا، ص۳۷)

शर से बचा रहे

जो किसी ज़ालिम के सामने "بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم" **50 बार** (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़े उस ज़ालिम के दिल में पढ़ने वाले की **हैबत पैदा** हो और उस के **शर से बचा** रहे ।

(ایضًا، ص۳۷)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अमीर व कबीर होने का नुस्ख़ा

जो शख़्स तुलूए़ आफ़्ताब के वक़्त सूरज की त़रफ़ रुख़ कर के "بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم" **300 बार** और **दुरूद शरीफ़ 300 बार** पढ़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को ऐसी जगह से रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाएगा जहां उस

www.dawateislami.net

का गुमान भी न होगा और (रोज़ाना पढ़ने से) اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ एक साल के अन्दर अन्दर **अमीर व कबीर** हो जाएगा। (ایضًا، ص ۳۷)

हाफ़िज़ा मज़्बूत

कुन्द ज़ेहन अगर بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم **786 बार** (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर पानी पर दम कर के पी ले तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उस का **हाफ़िज़ा मज़्बूत** हो जाए और जो बात सुने याद रहे। (ایضًا، ص ۳۷)

क़ह्त़ साली दूर

अगर **क़ह्त़ साली** हो तो بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم **61 बार** (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ें (फिर दुआ करें) اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बारिश होगी। (ایضًا، ص ۳۷)

घर व दुकान में ख़ूब ब-रकत हो

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم काग़ज़ पर **350 बार** (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) लिख कर **घर** में लटका दें اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ शैत़ान का गुज़र न हो और **ख़ूब ब-रकत** हो, अगर **दुकान** में लटकाएं तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **कारोबार ख़ूब चमके।** (ایضًا،ص ۳۸)

यकुम मुह़र्रमुल ह़राम को بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم **130 बार** लिख कर (या लिखवा कर) जो कोई अपने पास रखे (या प्लास्टिक कोटिंग करवा कर कपड़े, रेगज़ीन या चमड़े में सिलवा कर पहन ले मर्द ह़ज़रात किसी क़िस्म की धात की डिबिया में ता'वीज़ न पहनें) اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उ़म्र भर उस को या उस के घर में किसी को **कोई बुराई न पहुंचे।**

(ایضًا،ص ۳۸)

www.dawateislami.net

मुन्कर नकीर का मुआ़मला आसान हो

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم **70 बार** लिख कर **मय्यित** के **कफ़न** में रख दीजिये (बेहतर येह है कि मय्यित के चेहरे के सामने दीवारे क़िब्ला में **मेह़राब नुमा त़ाक़** बना कर उस में रखिये साथ ही **अ़ह्द नामा** और **मय्यित** के **पीर साहिब** का **श-जरह** वग़ैरा भी रख दीजिये।) اِنۡ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **मुन्कर नकीर** का मुआ़मला आसान हो जाएगा। (ایضًا،ص۳۸)

बत़ौरे ता'वीज़ कोई आयत या इबारत लिखें तो

लिखने में ए'राब लगाने की ज़रूरत नहीं, जब भी पहनने, पीने या लटकाने के लिये **बत़ौरे ता'वीज़** कोई **आयत** या **इबारत** लिखें तो **दाएरे वाले हुरूफ़** के दाएरे खुले रखने होंगे **म-षलन लफ़्ज़** "اللّٰہ" में "ہ" का और "رحمٰن" और **رحیم** दोनों में "م" का दाएरा खुला हो।

कपड़े तब्दील करते वक़्त

कपड़े उतारते वक़्त "बिस्मिल्लाह" पढ़ लेने से जिन्नात **सित्र नहीं देख सकते।** (عمل الیوم و اللیلۃ لابن سنی، ص۸)

सरकश जिन्नात से हि़फ़ाज़त

कमरे का दरवाज़ा, खिड़कियां, अलमारी की दराज़ें जितनी बार भी खोलें बन्द करें नीज़ लिबास, बरतन वग़ैरा हर चीज़ रखते उठाते हर बार **"बिस्मिल्लाह"** पढ़ने की आ़दत बना लीजिये اِنۡ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ सरकश जिन्नात आप के **घर** में दाख़िल, चोरी और आप की चीज़ें इस्ति'माल करने से बाज़ रहेंगे।

www.dawateislami.net

घर का दरवाज़ा बन्द करते वक़्त याद कर के "**बिस्मिल्लाह**" पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ शैतान और सरकश जिन्नात **घर में दाख़िल न हो सकेंगे।** (صحیح البخاری، کتاب الاشربۃ، باب تغطیۃ الاناء، الحدیث:٥٦٢٣، ج٣، ص٥٩١)

या रब्बे मुस्तफ़ा ! عَزَّوَجَلَّ हमें "**बिस्मिल्लाह**" **की ब-रकतों** से मालामाल फ़रमा और **हर नेक व जाइज़ काम की इब्तिदा** में "**बिस्मिल्लाह**" पढ़ने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! "**बिस्मिल्लाह शरीफ़**" की कैसी ब-रकतें हैं हम भी अगर बात बात पर "**बिस्मिल्लाह**" पढ़ने की आ़दत बनाने के आरज़ू मन्द हैं तो चाहिये कि **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ **सुन्नतों भरे सफ़र** को अपना मा'मूल बना लें। **रूहानी ब-रकतों** के साथ साथ **जिस्मानी फ़ाएदों** से भी اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मालामाल होंगे।

मोहलिक मरज़ से नजात

चुनान्चे बाबुल मदीना कराची के एक **इस्लामी भाई** को दिल की तक्लीफ़ हुई, डॉक्टर ने बताया कि आप के दिल की दो नालियां बन्द हैं, **एन्जियो ग्राफ़ी** (ANGIOGRAPHY) करवा लीजिये, इलाज पर हज़ारहा रुपै का ख़र्च आता था, येह बेचारे ग़रीब घबराए हुए थे, एक **इस्लामी भाई** ने उन पर **इनफ़िरादी कोशिश** करते हुए

दा'वते इस्लामी के **सुन्नतों की तरबिय्यत** के **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र कर के वहां **दुआ** मांगने की तरग़ीब दिलाई, चुनान्चे वोह **तीन दिन** के लिये **म-दनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िर** बने, वापसी पर त़बीअ़त को बेहतर पाया, जब टेस्ट करवाए तो **तमाम रिपोर्टें दुरुस्त** थीं, डॉक्टर ने हैरत से पूछा कि तुम्हारे दिल की दोनों बन्द नालियां खुल चुकी हैं आख़िर येह कैसे हुवा ? जवाब दिया : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र कर के दुआ़ करने की ब-रकत से मुझे दिल के **मोहलिक मरज़ से नजात** मिल गई है।

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो — सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
दिल में गर दर्द हो डर से रुख़ ज़र्द हो — पाओगे राह़तें क़ाफ़िले में चलो

(फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब : 3, जि. 1, स. 772)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए **सुन्नत की फ़ज़ीलत** और चन्द **सुन्नतें** और **आदाब** बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। **ताजदारे नुबुव्वत** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस ने मेरी **सुन्नत** से **मह़ब्बत** की उस ने मुझ से **मह़ब्बत** की और जिस ने मुझ से **मह़ब्बत** की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा।" (تاریخ مدینة دمشق لابن عساکر، انس بن مالک،ج۹،ص۳٤۳)

लिहाज़ा जूते पहनने के 7 म-दनी फूल क़बूल फ़रमाइये,

(इस किताब के सफ़ह़ा नम्बर **647** से म-दनी फूल बयान कीजिये)

★★★★★

www.dawateislami.net

बयान नम्बर 8 :

ज़िक्र की फ़ज़ीलत

शैखे त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَه अपने रिसाले "**नमाज़ का त़रीक़ा (ह़-नफ़ी)**" में दुरूद शरीफ़ के मु-तअ़ल्लिक़ ह़दीषे पाक नक़्ल फ़रमाते हैं कि **सरकारे मदीना, सुल्ताने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना** صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने **नमाज़** के बा'द **ह़म्दो षना** और दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले से फ़रमाया : "**दुआ मांग** ! क़बूल की जाएगी, **सुवाल कर** ! दिया जाएगा।"

(سنن النسائی،کتاب السھو، باب التمجید والصلاۃ...الخ،الحدیث:۱۲۸۱،ص ۲۲۰)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

क़ुरआने करीम में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

فَاِذَا قَضَیْتُمُ الصَّلٰوۃَ فَاذْکُرُوا اللّٰہَ قِیٰمًا وَّقُعُوْدًا (پ۵،النساء:۱۰۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *फिर जब तुम नमाज़ पढ़ चुको तो **अल्लाह** की याद करो खड़े और बैठे*

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْھَادِی इस आयए मुबा-रका के तह़त "**ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" में फ़रमाते हैं : या'नी **ज़िक्रे इलाही** की हर ह़ाल में मुदा-वमत करो और किसी ह़ाल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न रहो। ह़ज़रते **इब्ने अ़ब्बास** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हर फ़र्ज़ की एक ह़द

www.dawateislami.net

मुअय्यन फ़रमाई सिवाए **ज़िक्र** के, इस की कोई हृद न रखी, फ़रमाया : **ज़िक्र** करो खड़े बैठे, करवटों पर लैटे, रात में हो या दिन में, खुश्की में हो या तरी में, सफ़र में और हृज़र में, ग़ना में और फ़क़्र में, तन्दुरुस्ती और बीमारी में, पोशीदा और ज़ाहिर । (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

नूरे अ़र्श में डूबा हुवा शख़्स

हृज़रते सय्यिदुना **अबू मुख़ारिक़** رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहूरो बर** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **मे'राज** की रात मैं ने एक शख़्स को देखा जो **अ़र्श के नूर** में डूबा हुवा था तो पूछा येह कौन है ? क्या कोई **फ़िरिश्ता** है ? कहा गया नहीं, मैं ने पूछा क्या कोई **नबी** हैं ? अ़र्ज़ किया गया : नहीं, मैं ने पूछा फिर येह कौन है ? कहा गया : येह वोह शख़्स है जिस की **ज़बान दुन्या में अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **के ज़िक्र से तर रहती** थी और **दिल मसाजिद में** लगा रहता था और इस ने कभी अपने **वालिदैन** को गालियां नहीं दिलाईं ।

(الترغیب و الترھیب، کتاب الذکر والدعاء، باب الترغیب فی الاکثار من ذکراللّٰہ...الخ،الحدیث:۲۳۰۰،ج۲،ص۲٤۲)

ज़िक्र करने वाले हर भलाई ले गए

हृज़रते **सय्यिदुना मुआ़ज़** رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने **सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहूमतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** ! कौन सा मुजाहिद सब से ज़ियादा षवाब वाला है ? फ़रमाया : जो उन

www.dawateislami.net

में से **अल्लाह** का **ज़िक्र** कषरत से करने वाला हो। उन्हों ने फिर अ़र्ज़ किया : कौन सा रोज़ादार सब से ज़ियादा षवाब वाला है ? फ़रमाया : जो उन में से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का **ज़िक्र** कषरत से करने वाला हो। फिर उन्हों ने नमाज़, ज़कात, ह़ज और स-दक़े के बारे में येही सुवाल किया और **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم वोही जवाब देते रहे कि जो उन में से कषरत से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने वाला हो, तो ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू बक्र सिद्दीक़** رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهُ ने ह़ज़रते सय्यिदुना **उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهُ से फ़रमाया : ऐ अबू ह़फ़्स ! **ज़िक्र** करने वाले तो हर भलाई ले गए, तो **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "हां ! ऐसा ही है।"

(المسند للامام احمد بن حنبل،مسند المکیین، حدیث معاذ بن انس الجھنی، الحدیث: ١٥٦١٤، ج٥،ص٣٠٨)

कषरते ज़िक्र

ह़ज़रते सय्यिदुना **इब्ने अ़ब्बास** رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि **शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइषे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तुम में से जो **रात को इबादत** करने, अपने माल को **राहे ख़ुदा** में ख़र्च करने और दुश्मन से जिहाद करने से आ़जिज़ हो तो उसे चाहिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का **ज़िक्र कषरत** से किया करे।"

(شعب الایمان للبیھقی،باب فی محبۃ اللّٰہ،فصل فی ادامۃ ذکر اللّٰہ، الحدیث:٥٠٨، ج١،ص٣٩٠)

मुमताज़ लोग

एक मरतबा **सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना** صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **मक्कए मुकर्रमा** के एक रास्ते पर चल रहे थे, जब **आप** صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का गुज़र "**जुमदान**" नामी पहाड़ के क़रीब से हुवा तो **आप** صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ऐ लोगो ! चले चलो येह "**जुमदान**" है और सुन लो कि जो **मुमताज़ लोग** हैं वोह **क़ुर्बे ख़ुदा वन्दी** पा लेने में दूसरों से आगे बढ़ गए हैं तो लोगों ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! **मुमताज़ लोग** कौन हैं ? **आप** صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि वोह मर्द जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का **ब कषरत ज़िक्र** करते रहते हैं और वोह औ़रतें जो **ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ का **ज़िक्र** कषरत से करती रहती हैं ।

(صحیح مسلم ، کتاب الذکر...الخ،باب الحث علی ذکراللّٰہ تعالٰی، الحدیث: ۲۶۷۶،ص۱۴۳۹)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब से बचाने वाला अ़मल

ह़ज़रते **सय्यिदुना मुआ़ज़** رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : **ज़िक्रुल्लाह** से बढ़ कर कोई शै ऐसी नहीं जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब से नजात दिलाने वाली हो । .

(سنن الترمذی،کتاب الدعوات، باب منہ(ت:۶)،الحدیث:۳۳۸۸،ج۵،ص۲۴۶)

सब से अफ़्ज़ल माल

ह़ज़रते **सय्यिदुना षौबान** رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि जब येह आयते मुबारका नाज़िल हुई :

www.dawateislami.net

وَالَّذِیْنَ یَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَ الْفِضَّةَ (پ ۱۰،التوبة:۳٤) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *और वोह कि जोड़ कर रखते हैं सोना और चांदी*

तो हम उस वक़्त **रह़मते आ़लम** صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ सफ़र पर थे, बा'ज़ **सह़ाबए किराम** عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان कहने लगे : "**सोने** और **चांदी** के बारे में तो आयत नाज़िल हो गई, अगर हम जान लें कि **कौन सा माल बेहतर** है तो हम उसे इख़्तियार कर लेंगे।" तो **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "सब से **अफ़्ज़ल माल** ज़िक्र करने वाली ज़बान, शुक्र करने वाला दिल और ईमानदार बीवी है जो उस के ईमान में मददगार हो।"

(سنن الترمذی،کتاب التفسیر،باب ومن سورة التوبة،الحدیث:۳۱۰۵،ج۵،ص٦٥)

याद रहे तिलावते क़ुरआन, ह़म्दो षना, मुनाजात व दुआ़, दुरूदो सलाम, ना'त, ख़ुत़्बा, दर्स, सुन्नतों भरा बयान वग़ैरा सब **ज़िक्रुल्लाह** में शामिल हैं लिहाज़ा कितने ख़ुश नसीब हैं वोह **इस्लामी भाई** और **इस्लामी बहनें** जो अपनी ज़बान को फ़ुज़ूल गोई से बचाते हुए उसे **नेकी की दा'वत, सुन्नतों भरे बयान** और **ज़िक्रो दुरूद** में लगाए रखते हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा और रह़मतों के ह़क़दार ठहरते हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम पर रह़्म फ़रमाए और ज़बान को लगाम नसीब करे कि येह **ज़िक्रुल्लाह** से ग़ाफ़िल न हो, फ़ुज़ूल न बोले। **काश !** ज़बान का **क़ुफ़्ले मदीना** लगाने की सआ़दत नसीब हो जाए नीज़ ख़ामोशी की आ़दत डालने के लिये कुछ न कुछ गुफ़्तगू लिख कर या इशारे से कर लेने का भी जे़हन बन जाए क्यूंकि

www.dawateislami.net

जो ज़ियादा बोलता है उमूमन ख़ताएं भी ज़ियादा करता है, राज़ भी फ़ाश कर डालता है। ग़ीबत व चुग़ली और ऐबजूई जैसे गुनाहों से बचना भी ऐसे शख़्स के लिये बहुत दुश्वार होता है बल्कि बक बक का आदी बा'ज़ अवक़ात مَعَاذَاللّٰه कुफ़्रिय्यात भी बक डालता है। **काश** ! हम बोलने से पहले तोलने के आदी हो जाएं कि हम जो बोलना चाहते हैं इस में आख़िरत का कोई फ़ाएदा भी है या नहीं ? अगर नहीं तो फिर ज़हे नसीब ! बात करने के बजाए इतनी देर **ज़िक्रुल्लाह** कर लिया करें, **दुरूद शरीफ़** पढ़ लिया करें कि इस तरह आख़िरत का अज़ीम फ़ाएदा हासिल हो जाएगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करने का तरीक़ा

हज़रते **सय्यिदुना अबू हुरैरा** رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡهُ से रिवायत है कि **शफ़ीउ़ल मुज़निबीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है कि **ऐ इब्ने आदम** ! जब तू मेरा **ज़िक्र** करता है तो मेरा **शुक्र** करता है और जब मुझे भूल जाता है तो मेरी ना शुक्री करता है।"

(المعجم الاوسط لطبرانی،من اسمه محمد،الحدیث:٧٢٦٥،ج٥،ص٢٦١)

करम वाले लोग

हज़रते सय्यिदुना **अबू सईद ख़ुदरी** رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡهُ से मरवी है कि **हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : अ़न क़रीब क़ियामत के दिन जम्अ़ होने वाले जान जाएंगे कि **करम वाले लोग कौन हैं**? अ़र्ज़ किया गया : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! करम वाले लोग कौन हैं ? फ़रमाया : "**मसाजिद** में **ज़िक्र की मह़फ़िलें** क़ाइम करने वाले ।"

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الرقائق، باب الاذکار،ذکر مایکرم اللّٰہ...الخ، الحدیث:۸۱۳،ج۲،ص۹۳)

मोतियों के मिम्बरों पर बैठने वाले

ह़ज़रते **सय्यिदुना अबू दरदा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़्रो बर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन एक क़ौम को उठाएगा जिन के **चेहरों पर नूर** होगा और वोह **मोतियों के मिम्बरों पर होंगे**, लोग उन पर रश्क करेंगे हालां कि न तो वोह **अम्बिया** होंगे न ही **शु-हदा** । एक आ'राबी ने घुटनों के बल खड़े हो कर अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! हमें उन का हुल्या बयान फ़रमाइये ताकि हम उन्हें पहचान सकें ।" इर्शाद फ़रमाया : "वोह मुख़्तलिफ़ क़बाइल और मुख़्तलिफ़ शहरों से तअ़ल्लुक़ रखने वाले और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये आपस में मह़ब्बत करने वाले होंगे जो **ज़िक्रुल्लाह** की मह़फ़िल में जम्अ़ हो कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का **ज़िक्र** करेंगे ।"

(مجمع الزوائد ، کتاب الاذکار، باب ماجاء فی مجالس الذکر، الحدیث:۱۶۷۷۰، ج۱۰،ص۷۷)

www.dawateislami.net

गुनाह नेकियों में बदले जाएं

हज़रते सय्यिदुना **सुहैल बिन हन्ज़ला** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो क़ौम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने के लिये किसी मजलिस में बैठती है उन के उठने से पहले ही उन से कह दिया जाता है कि खड़े हो जाओ तुम्हारी **मग़फ़िरत** कर दी गई और तुम्हारे **गुनाह नेकियों में बदल दिये गए** हैं।"

(المعجم الکبیر للطبرانی، سھیل بن حنظلۃ، الحدیث:۶۰۳۹، ج۶، ص۲۱۲)

एक ग़ुलाम आज़ाद करने का षवाब

हज़रते सय्यिदुना **बराअ बिन आ़ज़िब** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि **सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, ह़बीबे परवर दगार** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस ने चांदी या दूध **स-दक़ा** किया या किसी को रास्ता बताया तो उसे **एक ग़ुलाम आज़ाद करने का षवाब** मिलेगा और जिस ने : لَآ اِلٰـہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحۡدَہٗ لَا شَرِیۡکَ لَہٗ لَہُ الۡمُلۡکُ وَلَہُ الۡحَمۡدُ وَھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیۡءٍ قَدِیۡرٌ कहा उसे भी **एक ग़ुलाम आज़ाद करने का षवाब** मिलेगा।"

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند الکوفیین، حدیث البراء بن عازب، الحدیث:۱۸۵۴۱، ج۶، ص۴۰۸)

दरख़्त लगा रहा हूं

"सु-नने इब्ने माजह" की रिवायत में है : (एक बार) **मदीने के ताजदार** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना **अबू हुरैरा** رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ को मुला-हज़ा फ़रमाया कि एक पौदा लगा रहे हैं। इस्तिफ़्सार फ़रमाया : क्या कर रहे हो ? अ़र्ज़ की : **दरख़्त लगा रहा हूं।** फ़रमाया : मैं **बेहतरीन दरख़्त लगाने का त़रीक़ा** बता दूं ! سُبْحٰنَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ وَلَآ اِلٰـہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ पढ़ने से हर **कलिमे** के इवज़ (या'नी बदले) **जन्नत में एक दरख़्त** लग जाता है।

(سنن ابن ماجه، كتاب الادب، باب فضل التسبيح، الحديث:٣٨٠٧، ج٤، ص٢٥٢)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़दीषे पाक में चार कलिमे इर्शाद फ़रमाए गए हैं :

﴿1﴾ سُبْحٰنَ اللّٰہِ ﴿2﴾ اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ ﴿3﴾ لَآ اِلٰـہَ اِلَّا اللّٰہُ ﴿4﴾ اَللّٰہُ اَکْبَرُ

येह चारों **कलिमात** पढ़ें तो जन्नत में चार दरख़्त लगाए जाएं और कम पढ़ें तो कम। म-षलन अगर سُبْحٰنَ اللّٰہِ कहा तो एक दरख़्त, इन कलिमात को पढ़ने के लिये ज़बान चलाते जाइये और जन्नत में ख़ूब ख़ूब दरख़्त लगवाते जाइये।

गुनाह अगर्चे समुन्दर की झाग के बराबर

हज़रते **सय्यिदुना अबू हुरैरा** رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **ताजदारे रिसालत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानिय्यत** صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो एक दिन में **सो**100 **मरतबा** سُبْحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ पढ़ता है उस के **गुनाह मिटा दिये जाते हैं अगर्चे समुन्दर की झाग के बराबर** हों।"

(سنن الترمذی، كتاب الدعوات، باب(ت:٦١)، الحديث:٣٤٧٧، ج٥، ص٢٨٧)

www.dawateislami.net

हर हर्फ़ के बदले दस नेकियां

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है कि **शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, रसूले बे मिषाल, बीबी आमिना के लाल** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने سُبْحٰنَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ وَلَآ اِلٰـہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ कहा उस के लिये हर **हर्फ़ के बदले दस नेकियां** लिखी जाएंगी।"

(المعجم الاوسط للطبرانی،من اسمہ محمد،الحدیث:٦٤٩١،ج٥،ص٣٢)

सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त पाने वाला

हज़रते **सय्यिदुना अबू हुरैरा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! क़ियामत के दिन आप की **शफ़ाअ़त** से बहरामन्द होने वाला ख़ुश नसीब कौन होगा ? फ़रमाया : "**ऐ अबू हुरैरा** ! मेरा गुमान येही था कि तुम से पहले मुझ से येह बात कोई न पूछेगा क्यूंकि मैं ह़दीष सुनने के मुआ़मले में तुम्हारी हि़र्स को जानता हूं, **क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त पाने वाला ख़ुश नसीब** वोह होगा जो सिद्क़े दिल से لَآ اِلٰـہَ اِلَّا اللّٰہ कहेगा।"

(صحیح البخاری،کتاب العلم،باب الحرص علی الحدیث،الحدیث:٩٩،ج١،ص٥٣)

सब से अफ़्ज़ल ज़िक्र

हज़रते **सय्यिदुना जाबिर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि **शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइषे नुज़ूले सकीना,**

www.dawateislami.net

फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "सब से **अफ़ज़ल ज़िक्र** لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ है और सब से **अफ़ज़ल दुआ** اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ है ।"

(سنن ابن ماجه، کتاب الادب، باب فضل الحامدين،الحديث: ٣٨٠٠، ج٤، ص٢٤٧)

अपने ईमान की तजदीद कर लिया करो

हज़रते **सय्यिदुना अबू हुरैरा** رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि **सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अपने **ईमान की तजदीद** कर लिया करो ।" अ़र्ज़ की गई : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम अपने ईमान की तजदीद कैसे किया करें ? फ़रमाया : "لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ कषरत से पढ़ा करो ।"

(المسند للامام احمد بن حنبل،مسند ابی هريرة ، الحديث: ٨٧١٨، ج٣، ص٢٨١)

सो मरतबा कलिमए त़य्यिबा

हज़रते **सय्यिदुना अबू दरदा** رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि **नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो बन्दा **सो मरतबा** لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ पढ़ेगा क़ियामत के दिन उस का **चेहरा चौदहवीं के चांद की त़रह़ चमकता** होगा और उस बन्दे से अफ़ज़ल किसी का अ़मल नहीं उठाया जाता मगर जो उस की मिष्ल पढ़े या उस से ज़ियादा पढ़े ।"

(مجمع الزوائد، کتاب الاذکار،باب فيمن هلل مائة او اكثر،الحديث: ١٦٨٣٠، ج١٠، ص٩٦)

www.dawateislami.net

आग पर ह़राम है

ह़ज़रते **सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने **नूर के पैकर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना : "मैं एक ऐसा **कलिमा** जानता हूं जो उसे अपने दिल की गहराई से कहे फिर इस पर मर जाए वोह आग पर ह़राम है वोह **कलिमा** : لَآ اِلٰـہَ اِلَّا اللّٰہ है।"

(المستدرك للحاكم، كتاب الايمان،باب من قال: لا اله الا اللّٰه...الخ،الحديث:٢٥٠،ج١،ص٢٥١)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हम ना तुवानों पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का किस क़दर करम है कि हम अ़मल थोड़ा करें और षवाब बहुत ज़ियादा पाएं, हमारे **गुनाह बख़्श दिये** जाएं बल्कि **नेकियों में तबदील** फ़रमा दिये जाएं, रोज़े क़ियामत **अ़र्श का साया, मीठे मीठे आक़ा** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त और जन्नत में दाख़िला नसीब हो। येह सब **ज़िक्रुल्लाह** की ब-रकतें और मह्ज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का करम है, बस हमें चाहिये कि अपने रब की करम नवाज़ियों का शुक्र अदा करें हर वक़्त उस की याद में मश्ग़ूल रहें, गुनाहों से सच्ची तौबा करें और बक़िय्या ज़िन्दगी इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी में गुज़ारें।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अपनी ज़िन्दगी को **सुन्नतों** के सांचे में ढालने के लिये **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** से हर दम वाबस्ता रहिये ! आइये, मैं आप को **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता एक **इस्लामी बहन** की **म-दनी बहार** सुनाता हूं चुनान्चे

www.dawateislami.net

कलिमए त़य्यिबा का विर्द करते करते !

सांघड़ (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के एक **इस्लामी भाई** का **ह़ल्फ़िय्या बयान** है कि मेरी बहन बिन्ते अ़ब्दुल ग़फ़्फ़ार अ़त्तारिय्या को **केन्सर** के मूज़ी मरज़ ने आ लिया, आहिस्ता आहिस्ता ह़ालत बिगड़ती गई, डॉक्टरों के मश्वरे पर ऑपरेशन करवाया, त़बीअ़त कुछ संभली मगर कमो बेश एक साल बा'द मरज़ ने दोबारा ज़ोर पकड़ा तो राजपूताना अस्पताल (ह़ैदरआबाद बाबुल इस्लाम सिन्ध) में दाख़िल कर दिया गया । एक हफ़्ता अस्पताल में रहीं मगर ह़ालत मज़ीद **अबतर** होती चली गई अचानक उन्हों ने **बा आवाज़े** बुलन्द **कलिमए त़य्यिबा का विर्द** शुरूअ़ कर दिया, कभी कभी दरमियान में اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡکَ یَا رَسُوۡلَ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصۡحٰبِکَ یَا حَبِیۡبَ اللّٰہ भी पढ़तीं, बुलन्द आवाज़ से لَآ اِلٰـہَ اِلَّا اللّٰـہُ مُـحَـمَّـدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہ का विर्द करने से पूरा कमरा गूंज उठता था, अ़जीब ईमान अफ़्रोज़ मन्ज़र था जो आता मिज़ाज पुर्सी करने के बजाए उन के साथ **ज़िक्रुल्लाह** शुरूअ़ कर देता डॉक्टर्ज़ और अस्पताल का अ़मला ह़ैरत ज़दा था कि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की कोई मक़्बूल बन्दी मा'लूम होती है वरना हम ने तो आज तक मरीज़ की चीख़ें ही सुनी हैं और येह मरीज़ा शिक्वा करने के बजाए **मुसल्सल ज़िक्रुल्लाह** में मसरूफ़ है । तक़रीबन 12 घन्टे तक येही कैफ़िय्यत रही, **अज़ाने मग़रिब** के वक़्त इसी त़रह़ बुलन्द आवाज़ से **कलिमए त़य्यिबा का विर्द** करते करते उन की **रूह़ क़-फ़से उ़न्सुरी से परवाज़** कर गई ।

(फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब सिवुम, जि. 1, स. 653)

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالیٰ علیه واٰلهٖ وسلَّم

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! **दा'वते इस्लामी का म-दनी** माहोल मर्हूमा को रास आ गया, उन का काम बन गया, **ख़ुदा की क़सम** ! वोह ख़ुश नसीब है जो इस दुन्या से **कलिमा** पढ़ते हुए रुख़्सत हो। **नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत, मालिके जन्नत, महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस का आख़िरी कलाम **لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ** (या'नी **कलिमए तय्यिबा**) हो वोह **दाख़िले जन्नत** होगा। (سنن ابی داود، كتاب الجنائز، باب فى التلقين، الحديث:٣١١٦، ج٣ص ٢٥٥)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए **सुन्नत की फ़ज़ीलत** और चन्द **सुन्नतें** और **आदाब** बयान करने की सआदत हासिल करता हूं। **ताजदारे नुबुव्वत** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस ने मेरी **सुन्नत** से **महब्बत** की उस ने मुझ से **महब्बत** की और जिस ने मुझ से **महब्बत** की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा।" (تاريخ مدينة دمشق لابن عساكر، انس بن مالك، ج٩، ص٣٤٣)

लिहाज़ा **तेल डालने और कंघा करने के 10 म-दनी फूल** क़बूल फ़रमाइये,

(इस किताब के सफ़्हा नम्बर **603** से बयान कीजिये)

★★★★★

www.dawateislami.net

बयान नम्बर 9 :

म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल का त़रीक़ा

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के बयान के तह़रीरी गुलदस्ते "**करामाते उ़स्माने ग़नी** رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ" में मन्क़ूल है कि सुल्त़ाने मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ब-रकत निशान है : "ऐ लोगो ! बेशक बरोज़े क़ियामत उस की दह्शतों और ह़िसाब किताब से जल्द नजात पाने वाला शख़्स वोह होगा जिस ने तुम में से मुझ पर दुन्या के अन्दर ब कषरत **दुरूद शरीफ़** पढ़े होंगे।" (فردوس الاخبار باب الیاء ج۲، ص ۴۷۱ حدیث ۸۲۱۰)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

पन्दरहवीं सदी की अ़ज़ीम इल्मी व रूह़ानी शख़्सिय्यत, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इस पुर फ़ितन दौर में आसानी से नेकियां करने और गुनाहों से बचने के त़रीक़ों पर मुश्तमिल शरीअ़त व त़रीक़त का जामेअ़ मजमूआ़ बनाम "**म-दनी इन्आ़मात**" इस्लामी भाइयों के लिये **72**, इस्लामी बहनों के लिये **63**, जामिअ़तुल मदीना के त़-लबा के लिये **92**, त़ालिबात के लिये **83** म-दनी मुन्नों और म-दनी मुन्नियों के लिये **40**, ख़ुसूसी (या'नी गूंगे और बहरे) इस्लामी भाइयों के लिये **27** **म-दनी इन्आ़मात** ब सूरते सुवालात अ़त़ा फ़रमाए हैं।

(इस्लामी भाइयों में बयान कर रहे हैं तो यूं कहिये)

हो सकता है 72 का अ़दद सुन कर किसी को वस्वसा आए कि मैं तो बहुत मसरूफ़ हूं इतना वक़्त कहां जो **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ अ़मल कर सकूं, इस वस्वसे के तह़त मुमकिन है कई इस्लामी भाई अब तक **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला ह़ासिल करने की सआ़दत से मह़रूम हों।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह शैत़ान का ख़त़रनाक वार है जिस के ज़रीए़ वोह दुन्या व आख़िरत की भलाइयों के ह़ुसूल में रुकावट डालने की कोशिश करता है, अगर आप इन वस्वसों पर तवज्जोह दिये बिग़ैर **म-दनी इन्आ़मात** पर ग़ौर फ़रमाएं तो शायद ह़ैरान रह जाएंगे कि जिन **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल करना मुश्किल लग रहा था उन पर अ़मल करना तो बहुत आसान है, क्यूंकि 72 **म-दनी इन्आ़मात** पर रोज़ाना अ़मल नहीं करना होता है बल्कि सिर्फ़ 50 **म-दनी इन्आ़मात** पर रोज़ाना अ़मल करना है और उन में भी 3 द-रजे हैं पहले और दूसरे द-रजे में 17 और तीसरे द-रजे में सिर्फ़ 16 **म-दनी इन्आ़मात** हैं और 8 **म-दनी इन्आ़मात** पर हफ़्ते में एक बार, 6 **म-दनी इन्आ़मात** पर महीने में एक बार और 8 **म-दनी इन्आ़मात** तो ऐसे हैं जिन पर साल में सिर्फ़ एक बार अ़मल करना है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप को बख़ूबी अन्दाज़ा हो गया होगा कि शैत़ान **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल करना दुश्वार मह़सूस करवा रहा था इस पर अ़मल करना इस क़दर आसान है। फ़ी ज़माना एक मुसलमान के लिये म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल किस क़दर ज़रूरी है, इस का अन्दाज़ा आप को उसी वक़्त हो सकता है जब

www.dawateislami.net

आप **म-दनी इन्आ़मात** का बग़ौर मुत़ा-लआ़ फ़रमाएं आप देखेंगे कि इन **म-दनी इन्आ़मात** में फ़राइज़ो वाजिबात, सुनन व मुस्तह़ब्बात के साथ साथ कहीं अख़्लाक़िय्यात के ह़ुसूल के **म-दनी फूल** ख़ुश्बू लुटा रहे हैं तो कहीं गुनाहों से बचने और आसानी से नेकियों के ह़ुसूल के त़रीके़ अपनी ब-रकतें बिखेर रहे हैं।

ह़ुसूले षवाब की निय्यत से आज मैं आप की ख़िदमत में सिर्फ़ एक **म-दनी इन्आ़म** की वज़ाह़त पेश करने की सआ़दत ह़ासिल करूंगा, अगर मुकम्मल तवज्जोह के साथ शिर्कत रही तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ आप का दिल **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल करने के लिये बे क़रार हो जाएगा। शैख़े त़रीक़त, **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ म-दनी इन्आ़म नम्बर **2** में फ़रमाते हैं : क्या आज आप ने पांचों नमाज़ें मस्जिद की पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त अदा फ़रमाईं ? और किसी एक इस्लामी भाई को अपने साथ मस्जिद ले जाने की कोशिश फ़रमाई ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरे अहले सुन्नत دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ अपने रिसाले "नेक बनने का नुस्ख़ा" में फ़रमाते हैं कि सिर्फ़ इस एक **म-दनी इन्आ़म** पर अगर कोई सह़ीह़ मा'नों में कारबन्द हो जाए तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ उस का बेड़ा पार हो जाए। नमाज़ के फ़ज़ाइल से कौन वाक़िफ़ नहीं ?

www.dawateislami.net

सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सुल्त़ाने मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो दो रकअ़त नमाज़ पढ़े उन में सह्व (या'नी ग़-लत़ी) न करे तो जो पेशतर गुनाह हुए हैं **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ मुआ़फ़ फ़रमा देता है।" (यहां गुनाहे सग़ीरा मुराद है)

(المسند للامام احمد ،مسند الانصار حدیث:۲۱۷٤۹،ج۸،ص۱٦۲)

देखा आप ने ! दो रकअ़त की जब येह फ़ज़ीलत हो तो पांचों नमाज़ों की कैसी कैसी ब-रकतें होंगी ! इस "**म-दनी इन्आ़म**" में नमाज़ें **बा जमाअ़त** अदा करनी हैं, और जमाअ़त की फ़ज़ीलत के तो क्या कहने ! मुस्लिम शरीफ़ में सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْھُما से रिवायत है कि ताजदारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "नमाज़े **बा जमाअ़त** तन्हा पढ़ने से **27** द-रजे बढ़ कर है।"

(صحیح المسلم ،کتاب المساجد...الخ،باب فضل صلاۃ الجماعۃ...الخ، الحدیث:۲٤۹ـ (٦۵۰)،ص۳۲٦)

मज़ीद इस "म-दनी इन्आ़म" में **तक्बीरे ऊला** का ज़िक्र है। इस की भी फ़ज़ीलत सुनिये और झूमिये इब्ने माजह की रिवायत में है, सुल्त़ाने मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो मस्जिद में बा जमाअ़त **40** रातें नमाज़े इशा इस त़रह़ पढ़े कि पहली रकअ़त फ़ौत न हो, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस के लिये जहन्नम से आज़ादी लिख देता है।"

(سنن ابن ماجہ،کتاب المساجد والجماعات،باب صلاۃ العشاء...الخ، الحدیث:۷۹۸،ج۱،ص٤۳۷)

www.dawateislami.net

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! चालीस दिन जब इ़शा की नमाज़ बा जमाअ़त मअ़ **तक्बीरे ऊला** की येह फ़ज़ीलत है तो ज़िन्दा रह जाने की सूरत में बरसहा बरस तक पांचों नमाज़ें **तक्बीरे ऊला** के साथ बा जमाअ़त अदा करने का क्या मक़ाम होगा !

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है, जो त़हरात कर के अपने घर से फ़र्ज़ नमाज़ के लिये निकला उस का षवाब ऐसा है जैसा ह़ज करने वाले मोह़रिम (एह़राम बांधने वाले) का।

(سنن ابی داود ، کتاب الصلاۃ ،باب ماجاء فی فضل المشی...الخ،الحدیث: ۵۵۸،ج۱،ص۲۳۱)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : "बताओ अगर किसी के दरवाज़े पर एक नहर हो जिस में हर रोज़ 5 बार ग़ुस्ल करे तो क्या उस पर कुछ मैल रह जाएगा ?" लोगों ने अ़र्ज़ की "उस के मैल में से कुछ बाक़ी न रहेगा," आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**पांचों** नमाज़ों की ऐसी ही मिषाल है। **अल्लाह तआ़ला** इन के सबब ख़त़ाओं को मिटा देता है।"

(صحیح المسلم ، کتاب المساجد...الخ،باب المشی الی الصلاۃ...الخ، الحدیث: ۲۸۴۔(۶۶۸)،ص۳۳۶)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस "**म-दनी इन्आ़म**" की रू से नमाज़ें भी **मस्जिद** ही में अदा करनी हैं और मस्जिद को जाना سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ !

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, **रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन**, जनाबे सादिक़ो

www.dawateislami.net

अमीन صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो सुब्ह़ या शाम को **मस्जिद** में आए, **अल्लाह तआ़ला** उस के लिये जन्नत में एक ज़ियाफ़त तय्यार फ़रमाएगा।"

(صحیح المسلم ، کتاب المساجد...الخ،باب المشی الی الصلاۃ...الخ، الحدیث: ٢٨٥ـ(٦٦٩)،ص٣٣٦)

पहली सफ़ भी "म-दनी इन्आ़म" में मौजूद है सरकारे मक्कतुल मुकर्रमा, सरदारे मदीनतुल मुनव्वरह صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "लोग अगर जानते कि अज़ान और पहली सफ़ में क्या है तो बिग़ैर कुरआ़ डाले न पाते लिहाज़ा इस के लिये कुरआ़ अन्दाज़ी करते।"

(صحیح المسلم ، کتاب الصلاۃ،باب تسویۃ الصفوف...الخ، الحدیث:١٢٩ـ (٤٣٧)،ص٢٣١)

एक और रिवायत में है कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के फ़िरिश्ते पहली सफ़ पर दुरूद (या'नी रह़मत) भेजते हैं।" सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने फिर अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! और दूसरी पर भी ? फ़रमाया, दूसरी पर भी। मज़ीद इर्शाद फ़रमाया : "सफ़ों को बराबर करो और कन्धों को मुक़ाबिल (या'नी एक सीध में) करो, अपने भाइयों के हाथों में नर्म हो जाओ और कुशादगियों (या'नी सफ़ की ख़ाली जगहों) को बन्द करो कि शैत़ान भेड़ के बच्चे की त़रह़ तुम्हारे बीच में दाख़िल हो जाता है।"

(المسند للامام احمد، حدیث أبی أمامۃ الباھلی، الحدیث:٢٢٣٢٦،ج٨،ص٢٩)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब एक म-दनी इन्आ़म की ऐसी बहारें हैं तो बक़िय्या **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल करने से कैसी ब-रकतें ह़ासिल होंगी । लिहाज़ा तमाम इस्लामी भाई निय्यत फ़रमा लीजिये : اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आयन्दा ज़िन्दगी के शबो रोज़ **म-दनी इन्आ़मात** की ख़ुश्बूओं से मुअ़त़्त़र रखने की कोशिश करेंगे । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : हो सकता है आप में से किसी को मेरे **"म-दनी इन्आ़म"** मुश्किल मा'लूम हों मगर हिम्मत न हारें, मन्क़ूल है कि "اَفْضَلُ الْعِبَادَةِ اَحْمَزُها" या'नी "अफ़ज़ल तरीन इबादत वोह है जिस में ज़ह़मत ज़ियादा हो ।" (كشف الخفاء،الحديث:٣٥٩،ج١،ص١٤١)

सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم फ़रमाते हैं : "दुन्या में जो अ़मल जितना दुश्वार होगा बरोज़े क़ियामत मीज़ाने अ़मल में वोह उतना ही वज़्नदार होगा ।" (تذكرة الاولياء ص٩٥)

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं कि जब आप अ़मल शुरूअ़ कर देंगे तो वोह आप के लिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आसान हो जाएगा । ग़ालिबन आप को तजरिबा होगा कि सख़्त सर्दी के वक़्त वुज़ू के लिये बैठते हैं तो सर्दी से दांत बजते हैं फिर हिम्मत कर के जब वुज़ू शुरूअ़ कर देते हैं तो इब्तिदाअन ठन्डक ज़ियादा मह़सूस होती है और फिर ब तदरीज कम हो जाती है । हर मुश्किल काम का येही उसूल है । म-षलन किसी को कोई मोहलिक बीमारी लग जाए तो वोह बेचैन हो जाता है फिर रफ़्ता रफ़्ता जब आ़दी हो जाता है तो क़ुव्वते बरदाश्त भी पैदा हो जाती है ।

www.dawateislami.net

लिहाज़ा फ़ौरन से पेश्तर आप **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला किसी भी त़रह़ ह़ासिल फ़रमा लीजिये और म-दनी इन्आ़म नम्बर **15** के मुत़ाबिक़ "क्या आप ने यक्सूई के साथ कम अज़् कम **12** मिनट फ़िक्रे मदीना (या'नी अपने अ़मल का मुह़ा-सबा करते हुए) जिन जिन **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल हुवा रिसाले में उन की ख़ाना पुरी फ़रमाई ?" इस पर अ़मल शुरूअ़ कर दीजिये, इस **म-दनी इन्आ़म** पर अ़मल के लिये आप जब अपना रिसाला खोलेंगे तो हर **म-दनी इन्आ़म** के नीचे तीस दिनों के ह़िसाब से ख़ाने दिये हुए नज़र आएंगे। आप बिला नाग़ा वक़्ते मुक़र्रा पर **फ़िक्रे मदीना** करते हुए जिन **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल की सआ़दत मिली नीचे ख़ाने में (✓) वरना (0)बना दीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ब तदरीज अ़मल में इज़ाफ़े के साथ दिल में गुनाहों से नफ़रत मह़सूस फ़रमाएंगे।

ह़दीषे पाक में है कि "आख़िरत के मुआ़मले में घड़ी भर के लिये ग़ौरो फ़िक्र करना साठ साल की इ़बादत से बेहतर है।"

(الجامع الصغير للسيوطى ،الحديث ٥٨٩٧،ص ٣٦٥)

तमाम इस्लामी भाई निय्यत फ़रमा लीजिये कि اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ रोज़ाना पाबन्दी से फ़िक्रे मदीना की सआ़दत ह़ासिल करेंगे।

फ़िक्रे मदीना पर इस्तिक़ामत का आसान त़रीक़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर हम येह ख़्वाहिश रखते हैं कि इस्तिक़ामत के साथ रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** की सआ़दत ह़ासिल हो तो इस के लिये आप एक वक़्त मुक़र्रर फ़रमा लीजिये, म-षलन

www.dawateislami.net

आप की कपड़े की दुकान है या ऑफ़िस जाते हैं और रिज़्क़ में ब-रकत की निय्यत से वहां कु़रआने पाक की तिलावत की सआ़दत के साथ अवरादो वज़ाइफ़ पढ़ते और अगरबत्तियां वग़ैरा जलाते हैं तो इन मा'मूलात में **फ़िक्रे मदीना** जैसे बा ब-रकत काम को भी शामिल कर लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ रिज़्क़ में ब-रकत के साथ **फ़िक्रे मदीना** करने में ऐसी इस्तिक़ामत ह़ासिल होगी कि आप ह़ैरान रह जाएंगे (किसी भी नमाज़ के बा'द या सोते वक़्त भी वक़्त मुक़र्रर किया जा सकता है)

तमाम इस्लामी भाई निय्यत फ़रमा लीजिये कि اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ वक़्ते मुक़र्ररा पर पाबन्दी के साथ **फ़िक्रे मदीना** ज़रूर करेंगे।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर आप येह भी चाहते हैं कि बिला नाग़ा फ़िक्रे मदीना की सआ़दत भी मिलती रहे और अ़मल में इस्तिक़ामत के साथ गुनाहों से नजात भी ह़ासिल हो जाए तो एक बहुत ही प्यारे **म-दनी इन्आ़म** पर अ़मल का मा'मूल बना लीजिये जिसे सारी दुन्या **म-दनी क़ाफ़िले** के नाम से पुकारती है। आप हर माह कम अज़ कम **3** दिन के **म-दनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सफ़र की आ़दत बना कर देखिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप की झोली **म-दनी इन्आ़मात** के ख़ुश्बूदार फूलों से भर कर महकने लगेगी। और اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दुन्या और आख़िरत की बे शुमार भलाइयों के ह़ुसूल के साथ मुसीबतों और बीमारियों से नजात की ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर राहें भी खुल जाएंगी।

तरग़ीब के लिये क़ाफ़िले की एक बहार भी सुन लीजिये।

एक वक़्त में दो जगह जल्वा नुमाई

पंजाब के इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है कि हमारा म-दनी क़ाफ़िला एक गाउं की मस्जिद में पहुंचा तो इन्तिज़ामिया ने रात ठहरने का मन्अ़ करते हुए कहा कि इस मस्जिद में **जिन्नात** हैं, अगर आप अपनी जवाब दारी पर रुकते हैं तो ठीक है। म-दनी क़ाफ़िले के शु-रका में से मैं और एक दूसरे इस्लामी भाई जाग कर पहरा देने लगे, सब इस्लामी भाई सो रहे थे और हम ख़ौफ़ज़दा मस्जिद में बैठे इधर उधर देख रहे थे कि अचानक मस्जिद का दरवाज़ा खुला और शैख़े त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه बेदारी में तशरीफ़ ले आए हम बे इख़्तियार खड़े हो कर आगे बढ़े, आप ने हमें शफ़्क़त से सीने लगा लिया और फ़रमाया कि क्यूं घबरा रहे हो ? हम ने अ़र्ज़ की इस मस्जिदमें **जिन्नात** हैं तो आप मुस्कुराते हुए फ़रमाने लगे **जिन्नात** हैं तो क्यूं घबराते हो वोह देखो सामने ! हम ने जैसे ही सामने नज़र की तो **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के बड़े शहज़ादे अबू उसैद **उ़बैद रज़ा** अ़त़्त़ारी अल म-दनी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِى को तशरीफ़ फ़रमा पाया, फिर **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने मस्जिद के दूसरे कोने की त़रफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया कि उधर देखो तो वहां छोटे शहज़ादे ह़ाजी **बिलाल रज़ा** अ़त़्त़ारी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِى तशरीफ़ फ़रमा थे, फिर **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने मज़ीद मस्जिद में एक त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाया कि वहां देखो तो वहां **निगराने शूरा** तशरीफ़ फ़रमा थे। ऐसा लगता

www.dawateislami.net

था कि येह तमाम म-दनी क़ाफ़िले वालों की हिफ़ाज़त के लिये जल्वा फ़रमा हैं, **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की येह करामत देख कर बे इख़्तियार हमारी आंखों से आंसू बह निकले, **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه कुछ देर तशरीफ़ फ़रमा रहे फिर वापस तशरीफ़ ले गए। سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

तमाम इस्लामी भाई निय्यत फ़रमा लें कि اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ हम हर माह इस प्यारे प्यारे **म-दनी इन्आ़म** पर अ़मल करने की निय्यत से तीन दिन के लिये **म-दनी क़ाफ़िले** में ज़रूर सफ़र करेंगे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ है कि हमें दुन्या और आख़िरत की भलाइयों के हुसूल में आसानी अ़ता फ़रमाए।

(दिये गए बयान करने के त़रीक़ए कार के ज़रीए़ ब आसानी **12** या **26** मिनट बल्कि जितना त़वील **बयान** करना चाहें कर सकते हैं, सिर्फ़ **म-दनी इन्आ़मात** के **फ़ज़ाइल** बढ़ाते जाएं और जब इख़्तिताम करना हो तो फ़िक्रे मदीना का ज़ेहन दे कर इस पर इस्तिक़ामत के लिये **वक़्त मुक़र्रर** करने का त़रीक़ा बता दीजिये और आख़िर में **म-दनी क़ाफ़िले** की तरग़ीब व दा'वत पर बयान ख़त्म फ़रमा दीजिये)

★★★★★

कामिल मुसलमान की ता'रीफ़

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم :

اَلْمُسْلِمُ مَنْ سَلِمَ الْمُسْلِمُوْنَ مِنْ لِّسَانِهٖ وَيَدِهٖ

*या'नी **मुसलमान वोह है** कि उस के **हाथ** और **ज़बान** से **दूसरे मुसलमान महफ़ूज़** रहें।* (صحيح البخاری، ج١،ص١٥،حديث:١٠)

www.dawateislami.net

बाब नम्बर 4

अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत

इस बाब में :

अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत की अहम्मिय्यत, नेकी की दा'वत का मुकम्मल त़रीक़ा, अ़स्र के 9 और मग़रिब के 11 बयानात, इन के इ़लावा मज़ीद उ़न्वानात भी शामिल हैं।

www.dawateislami.net

बाब 4 अ़लाक़ाई दौरा बराए
नेकी की दा'वत की अहम्मिय्यत

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! हम दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हैं। येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का बहुत बड़ा करम है कि उस ने हमें म-दनी माह़ोल की ब-रकत से नेकी की दा'वत को आ़म करने का जज़्बा अ़त़ा फ़रमाया और **अमीरे अहले सुन्नत** ह़ज़रते अ़ल्लामा **मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने हमें अपनी ज़िन्दगी का म-दनी मक़्सद **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है"** अ़त़ा फ़रमाया।

इसी म-दनी मक़्सद के तह़त हमारे **म-दनी मर्कज़** ने हमें मुख़्तलिफ़ **म-दनी काम** करने का ज़ेह्न दिया। म-षलन दर्स देना, बयान करना, म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना, सदाए मदीना लगाना, हफ़्तावार इजतिमाअ़ में शिर्कत करना वग़ैरा। जब भी हमारा म-दनी मर्कज़ हमें कोई भी म-दनी काम करने का ज़ेह्न देता है तो उस म-दनी काम में त़वील तजरिबा कार फ़रमा होता है। हर म-दनी काम अपनी अलग अहम्मिय्यत रखता है लेकिन एक म-दनी काम ऐसा है कि अगर वोह कमा ह़क़्क़ुहू नाफ़िज़ हो जाए तो न सिर्फ़ हमारे अ़लाक़े में म-दनी काम की बहारें आ जाएंगी, बल्कि म-दनी क़ाफ़िलों की धूम मच जाएगी, मसाजिद में नमाज़ पढ़ने वालों की ता'दाद बढ़ जाए। वोह म-दनी काम **अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत** है।

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ फ़रमाते हैं कि "**दा'वते इस्लामी** की बक़ा **म-दनी क़ाफ़िलों** में है और म-दनी क़ाफ़िलों की बक़ा **अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत** में है" बल्कि आप ने यूं भी इर्शाद फ़रमाया : "अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत **म-दनी क़ाफ़िलों** को चलाने की मशीन है।"

याद रखिये ! हम अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत से ख़ात़िर ख़्वाह फ़वाइद उसी वक़्त ह़ासिल कर सकते हैं जब हम म-दनी मर्कज़ के दिये गए त़रीक़ए कार के मुत़ाबिक़ इस की तरकीब करें। अगर हम त़रीक़ए कार के मुत़ाबिक़ अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत का सिलसिला अपने अपने अ़लाक़ों में शुरूअ़ कर दें तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ हमारी मस्जिदों से म-दनी क़ाफ़िले रवाना होने शुरूअ़ हो जाएंगे।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! म-दनी मर्कज़ के दिये गए त़रीक़ए कार पर अ़मल की बे शुमार ब-रकतें हैं म-षलन एक मरतबा एक इस्लामी भाई म-दनी तरबिय्यत गाह से किसी अ़लाक़े में अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत के लिये तशरीफ़ ले गए। उस अ़लाक़े के ज़िम्मादार इस्लामी भाई ने कहा कि यहां से म-दनी क़ाफ़िले तय्यार नहीं होते और न ही अ़लाक़ाई दौरा काम्याब होता है। मगर जब इस्लामी भाई ने वहां जा कर म-दनी मर्कज़ के त़रीक़ए कार के मुत़ाबिक़ अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत का सिलसिला शुरूअ़ किया तो اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! म-दनी मर्कज़ के दिये गए त़रीक़ए कार की ब-रकत से अ़स्र से मग़रिब तक काफ़ी इस्लामी भाई हाथों हाथ मस्जिद में तशरीफ़ लाए। नमाज़े मग़रिब

www.dawateislami.net

के बा'द बयान हुवा और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ हाथों हाथ **म-दनी क़ाफ़िला** तय्यार हुवा और राहे ख़ुदा में सफ़र पर रवाना हो गया।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत की ब-रकत से ता दमे तह़रीर सेंकड़ों ग़ैर मुस्लिम मुसलमान हो चुके हैं। ह़ाल ही में इस्लामी भाई एक अ़लाके़ में अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत के लिये गए और एक ग़ैर मुस्लिम नौ जवान को नेकी की दा'वत पेश की, जिस की ब-रकत से वोह मुसलमान हो गया।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस के इ़लावा भी अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत की बहुत ब-रकतें हैं। अगर हम म-दनी मर्कज़ के दिये गए त़रीक़ए कार के मुत़ाबिक़ अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत पाबन्दी से करते रहें तो न सिर्फ़ हमारी मस्जिदें आबाद होंगी बल्कि हमें बे शुमार नए नए इस्लामी भाई **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र के लिये तय्यार करने में काम्याबी होगी जिस के नतीजे में हमारे अ़लाके़ में दा'वते इस्लामी का काम मज़्बूत़ से मज़्बूत़ तर हो जाएगा। اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! येह हमारी ख़ुश नसीबी है कि हमें लोगों के पास जा कर नेकी की दा'वत पेश करने की अ़ज़ीम सुन्नत अदा करने का मौक़अ़ मिल रहा है।

ह़ज़रते सय्यिदुना **का'बुल अह़बार** رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "जन्नतुल फ़िरदौस ख़ास उस शख़्स के लिये है जो नेकी का हुक्म करे और बुराई से रोके।" (تنبیہ المغترین، ص ۲۹۰)

www.dawateislami.net

अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत में ज़िम्मा दारियां

अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत में एक इस्लामी भाई निगरान, एक राहनुमा, एक दाई, और एक या दो ख़ैर ख़्वाह होंगे। निगरान का काम येह है कि मस्जिद के दरवाज़े के बाहर खड़े हो कर दुआ़ करवाए और राहनुमा क़ाफ़िले वालों को मस्जिद के क़रीब क़रीब घरों, दुकानों वग़ैरा पर अ़लाक़े के इस्लामी भाइयों के पास ले जाए, और सलाम व मुसाफ़ह़ा के बा'द नर्मी से अ़र्ज़ करे कि हम...... मस्जिद से ह़ाज़िर हुए हैं। हम कुछ अ़र्ज़ करना चाहते हैं, आप षवाब की निय्यत से सुन लीजिये।

(1) अगर वोह बैठे हों या काम में मसरूफ़ हों तो खड़े हो कर सुनने की दर-ख़्वास्त करें, इस त़रह़ उन की तवज्जोह रहेगी।

(2) राहनुमा के लोगों को मु-तवज्जेह करने के फ़ौरन बा'द **दाई** नर्मी के साथ नेकी की दा'वत पेश करे, इस दौरान दाई अपनी बे बसी और दिलों को फैरने वाले परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की रह़मत की त़रफ़ मु-तवज्जेह रहे कि येह काम्याबी की कुन्जी है। ख़ैर ख़्वाह का काम येह है कि जो इस्लामी भाई कुछ फ़ासिले पर हों उन्हें क़रीब क़रीब करे और दाई की दा'वत सुन कर हाथों हाथ मस्जिद में चलने के लिये तय्यार होने वालों को अपने साथ मस्जिद में पहुंचा कर, बयान में बिठा कर वापस अ़लाक़ाई दौरे में शामिल हो जाए।

प्यारे इस्लामी भाइयो! अब नेकी की दा'वत देने के आदाब बताए जाएंगे तवज्जोह से सुनिये और इन आदाब को भी मल्ह़ूज़े ख़ातिर रखिये।

www.dawateislami.net

अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत के आदाब

(1) मस्जिद से बाहर दुआ़ के बा'द इस्लामी भाई 2-2 की क़ितार में चलें।

(2) दाई और राहनुमा आगे आगे रहें।

(3) आपस में बातचीत न करें।

(4) कोशिश कर के रास्ते के एक त़रफ़ चलें।

(5) ह़त्तल इम्कान निगाहें नीची कर के चलें और इधर उधर देखने से इजतिनाब करें।

(6) मुन्तशिर होने के बजाए सारे इस्लामी भाई इकठ्ठे ही रहें।

(7) हाथों में तस्बीह़ और लबों पर दुरूदो सलाम जारी रखें اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दुरूदे पाक की ब-रकत से नेकी की दा'वत में ताषीर पैदा हो जाएगी।

(8) अगर किसी को उस का शनासा (या'नी जानने वाला) मिल जाए तो वोह इस्लामी भाई उस से सलाम व मुसाफ़ह़ा कर के चल पड़े या उसे भी अपने साथ ले ले।

(9) जब किसी के मकान पर दस्तक दें तो घर के मर्दों को बुला कर एक त़रफ़ खड़े हो कर नेकी की दा'वत दें।

(10) जब किसी को नेकी की दा'वत पेश की जाए तो कोई इस्लामी भाई दरमियान में न बोले बल्कि तमाम इस्लामी भाई ख़ामोशी के साथ निगाहें नीची किये सुनें।

(11) वापसी पर इस्तिग़्फ़ार पढ़ते हुए आएं।

(12) मग़रिब की अज़ान से दस मिनट क़ब्ल वापस आ कर मस्जिद में जारी बयान में शिर्कत करें।

आदाब बयान करने के बा'द तमाम इस्लामी भाई अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत के लिये रवाना हो जाएं।

नेकी की दा'वत से पहले की दुआ़

नेकी की दा'वत के लिये जाते हुए **निगरान इस्लामी भाई** मस्जिद से **बाहर** दरवाज़े के पास येह दुआ़ मांगे :

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْن

या रब्बे मुस्त़फ़ा ! हमारी और उम्मते मह़बूब की मग़्फ़िरत फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम नेकी की दा'वत देने के लिये अ़लाक़ाई दौरा पर रवाना हो रहे हैं इस दीन के काम में तू हमारी मदद फ़रमा और हमारा दिल लगा दे। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारे दिल में इख़्लास पैदा कर और ज़बान में अषर दे। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अ़लाक़े के मुसलमान भाइयों को भी हमारे साथ चल पड़ने की सआ़दत नसीब फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें और इस अ़लाक़े के बच्चे बच्चे को नमाज़ी, मुख़्लिस आ़शिक़े रसूल बना। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हर त़रफ़ सुन्नतों की बहार आ जाए। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तुझे तेरे प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का वासित़ा हमारी येह टूटी फूटी दुआ़एं क़बूल फ़रमा।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

नेकी की दा'वत से वापसी के बा'द की दुआ़

नेकी की दा'वत से वापसी पर **निगरान इस्लामी भाई** मस्जिद से **बाहर** दरवाज़े के क़रीब येह दुआ़ मांगे :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْن

या रब्बे मुस्त़फ़ा ! हमारी और उम्मते मह़बूब की मग़्फ़िरत फ़रमा । ऐ मौलाए करीम ! तेरी अ़त़ा की हुई तौफ़ीक़ से हम ने अ़लाक़ाई दौरा कर के यहां के मुसलमान भाइयों को नेकी की दा'वत पेश की, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारी येह ह़क़ीर कोशिश क़बूल फ़रमा । इस में हम से जो कुछ कोताहियां हुईं वोह मुआ़फ़ फ़रमा । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम ए'तिराफ़ करते हैं कि हम नेकी की दा'वत देने का ह़क़ अदा न कर सके । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें आयन्दा दिल जमई और इख़्लास के साथ नेकी की दा'वत देने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें बा अ़मल बना और हमारे जो मुसलमान भाई अच्छे अ़मल से दूर हैं उन की इस्लाह़ के लिये हमें कुढ़ना और कोशिश करना नसीब फ़रमा । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें और इस अ़लाक़े के बच्चे बच्चे को नमाज़ी, और मुख़्लिस आ़शिक़े रसूल बना । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हर त़रफ़ सुन्नतों की बहार आ जाए । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तुझे तेरे प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का वासित़ा हमारी येह टूटी फूटी दुआ़एं क़बूल फ़रमा ।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत का त़रीक़ए कार :

अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत का ज़िम्मादार अज़ाने अ़स्र से **26** मिनट क़ब्ल जम्अ़ होने वाले इस्लामी भाइयों में ज़िम्मा दारियां तक़सीम करे। (क़ाफ़िले में येह ज़िम्मा दारियां सुब्ह़ म-दनी मश्वरे के ह़ल्क़े में ही तक़सीम कर ली जाएं)

इन ज़िम्मा दारियों में :

1. अ़स्र का ए'लान
2. अ़स्र के बा'द का बयान (12 मिनट)
3. मस्जिद का ख़ैर ख़्वाह
4. अ़स्र ता मग़रिब दर्स
5. अ़स्र ता मग़रिब मस्जिद में होने वाले दर्स में शिर्कत करने वाले इस्लामी भाई
6. मस्जिद के बाहर जाने वाले इस्लामी भाई
7. मग़रिब का ए'लान
8. मग़रिब का बयान (25 मिनट) शामिल हैं।

ज़िम्मा दारियां तक़सीम हो जाने के बा'द त़बई ह़ाजात से फ़ारिग़ हो कर तमाम इस्लामी भाई पहली सफ़ में तकबीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त नमाज़े अ़स्र अदा करें।

www.dawateislami.net

अ़स्र का ए'लान और अ़स्र का बयान करने वाले इस्लामी भाई इक़ामत कहने वाले के बराबर में नमाज़ अदा करें। जैसे ही इमाम साहि़ब सलाम फैरें मुक़र्रर कर्दा इस्लामी भाई फ़ौरन इमाम साहि़ब के क़रीब खड़े हो कर इस त़रह़ ए'लान करे : (ए'लाने अ़स्र में अपनी त़रफ़ से कोई कमी बेशी न करें)

ए'लाने अ़स्र

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ

"आप के अ़लाक़े में नेकी की दा'वत आ़म करने के लिये आप की मदद दरकार है, बराए करम दुआ़ के बा'द तशरीफ़ रखिये और ढेरों षवाब कमाइये।"

दुआ़ के बा'द मुक़र्रर कर्दा इस्लामी भाई 12 मिनट का बयान करे। जिस में नेकी की दा'वत के फ़ज़ाइल बयान किये जाएं। इस के बा'द अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत में शिर्कत की तरग़ीब दिलाएं।

फिर दुआ़ के फ़ौरन बा'द अ़स्र ता मग़रिब मस्जिद में दर्स के लिये मुक़र्रर कर्दा इस्लामी भाई बैठ कर इस्लामी भाइयों को मज़ीद क़रीब कर के दर्स शुरूअ़ कर दे। अगर पहले से ज़िम्मा दारियां तक़सीम न हों तो जिस इस्लामी भाई की अ़लाक़ाई दौरा करवाने की ज़िम्मादारी है वोह सीधी जानिब आने वाले इस्लामी भाइयों में ज़िम्मा दारियां तक़सीम करे और अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत के फ़ज़ाइल व आदाब बताए।

www.dawateislami.net

बयानाते अ़स्र

बयान नम्बर 1 :

नेकी की दा'वत

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَت بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه अपने रिसाले **"ना चाक़ियों का इलाज"** में दुरूद शरीफ़ के मु-तअ़ल्लिक़ ह़दीषे पाक बयान फ़रमाते हैं कि **नबिय्ये मुकर्रम, शफ़ीए़ मुअ़ज़्ज़म, रसूले मुह़्तशम** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ात़िर आपस में मह़ब्बत रखने वाले जब बाहम मिलें और **मुसाफ़ह़ा** करें और नबी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक भेजें तो उन के जुदा होने से पहले दोनों के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं।"

(مسند ابی یعلی،مسند انس بن مالك،الحدیث:۲۹۵۱،ج۳،ص۹۵)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

पसन्दीदा आ'माल

क़बीलए **ख़षअ़म** का एक आदमी **बारगाहे नुबुव्वत** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हुवा, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मक्का शरीफ़ में थे, कहने लगा : "आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ही हैं जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم होने का दा'वा रखते हैं ?" आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**हां ।**" साइल

www.dawateislami.net

ने पूछा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के यहां सब से ज़ियादा **मह़बूब अ़मल** क्या है ? इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ईमान लाना।" पूछा, फिर कौन सा ? इर्शाद हुवा : "**सिलए रेह़्मी** करना।" (या'नी रिश्तेदारों के साथ ह़ुस्ने सुलूक करना) अ़र्ज़ किया, फिर कौन सा ? इर्शाद फ़रमाया : "**भलाई का ह़ुक्म देना बुराई से रोकना।**"

(مَجمَعُ الزَّوائِد ج ٨ ص٢٧٧ حديث ١٣٤٥٤)

बुराई को कम अज़ कम बुरा तो जानो

सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "तुम में जो शख़्स बुरी बात देखे उसे अपने हाथ से बदल दे और अगर इस की इस्तित़ाअ़त न हो तो ज़बान से बदले और इस की भी इस्तित़ाअ़त न हो तो दिल से (या'नी इसे दिल से बुरा जाने) और येह कमज़ोर ईमान वाला है।"

(صحيح مسلم، كتاب الايمان، باب بيان كون النهى عن المنكر من الايمان... إلخ، الحديث: ١٧٧، ص٦٨٨)

नेकी की दा'वत देना हर शख़्स की ज़िम्मादारी है

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती **अह़मद यार ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : "अम्र बिल मा'रूफ़ हर शख़्स पर उस के **मन्सब** के ह़वाले से और ह़स्बे इस्तित़ाअ़त **वाजिब** है इस पर क़ुरआनो सुन्नत नात़िक़ है और इजमाए़ उम्मत भी।" एक जगह लिखते हैं : "अम्र बिल मा'रूफ़ हुक्मरानों, उ़-लमा व मशाइख़ बल्कि हर मुसलमान की ज़िम्मादारी है इसे सिर्फ़ एक त़बक़े तक

www.dawateislami.net

मह़दूद कर देना सह़ीह़ नहीं और ह़क़ीक़त येह है कि अगर हर शख़्स इस को अपनी **ज़िम्मादारी** समझे तो मुआ़-शरा नेकियों का गहवारा बन सकता है।" मज़ीद फ़रमाते हैं : "बुराई को बदलने के लिये हर त़बके़ को उस की **त़ाक़त** के मुत़ाबिक़ ज़िम्मादारी सोंपी गई क्यूंकि इस्लाम में किसी भी इन्सान को उस की त़ाक़त से ज़ियादा तक्लीफ़ नहीं दी जाती। अरबाबे इक्तिदार, असातिज़ा, वालिदैन वग़ैरा जो अपने मा तह़्तों को कन्ट्रोल कर सकते हैं वोह क़ानून पर सख़्ती से अ़मल करा के और मुख़ा-लफ़त की सूरत में सज़ा दे कर **बुराई** का ख़ातिमा कर सकते हैं। मुबल्लिग़ीने इस्लाम, उ़-लमा व मशाइख़, अदीब व सह़ाफ़ी और दीगर ज़राइए़ इब्लाग़ म-षलन रेडियो और टीवी वग़ैरा से सभी लोग अपनी तक़रीरों तह़रीरों बल्कि शु-अ़रा अपनी नज़्मों के ज़रीए़ बुराई का क़ल्अ़ क़मअ़ करें और नेकी को फ़रोग़ दें, بِلِسَانِهٖ (या'नी ज़बान से नेकी की दा'वत पेश करने) के तह़्त येह तमाम सूरतें आती हैं। और आ़म मुसलमान जिसे **इक्तिदार** की कोई सूरत भी ह़ासिल नहीं और न ही वोह तह़रीर व तक़रीर के ज़रीए़ बुराई का ख़ातिमा कर सकता है वोह दिल से उस बुराई को बुरा समझे अगर्चे येह ईमान का **कमज़ोर तरीन मर्तबा** है क्यूंकि कोशिश कर के ज़बान से रोकना चाहिये लेकिन दिल से जब बुरा समझेगा तो यक़ीनन ख़ुद बुराई के क़रीब नहीं जाएगा और इस त़रह़ मुआ़-शरे के बे शुमार अफ़राद ख़ुद ब ख़ुद **राहे रास्त** पर आ जाएंगे।"

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 502 मक्तबए इस्लामिया)

www.dawateislami.net

हम नेकी की दा'वत के अ़ज़ीम काम को कितना वक़्त देते हैं ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नेकी की दा'वत आ़म करने के लिये हमारे दिल में कम अज़् कम इतनी कुढ़न तो हो जो बच्चे को बीमार देख कर या घर में राशन न देख कर होती है। अपने रोज़् मर्रा मा'मूलात का मुह़ा-सबा किया जाए तो शायद येह कैफ़िय्यत हो कि हम रोज़ाना तकरीबन **8** घन्टे सोने में गुज़ार देते हैं, एक घन्टा तीन वक़्त के खाने में सर्फ़ हो जाता है, निस्फ़ घन्टा इस्तिन्जा ख़ाने और निस्फ़ दीगर ह़वाइजे ज़िन्दगी की नज़्र हो जाता है। बक़िय्या **14** घन्टों में से हम कितना वक़्त नेकी की दा'वत के अ़ज़ीम काम को देते हैं, कभी आप ने सोचा ? बिला शुबा नेकी की दा'वत देना और बुराई से मन्अ़् करना बहुत अहम काम है, अगर इस की बिसात़ लपेट दी जाए तो तबाही व बरबादी की त़रफ़ हमारा सफ़र मज़ीद तेज़् हो जाएगा। दुन्या के कई मुसलमान ममालिक जहां पर नेकी की दा'वत आ़म करने की बा क़ाइदा तरकीब नहीं है और इनफ़िरादी त़ौर पर भी सुस्ती पाई जाती है, वहां के ह़ालात हमें झन्झोड़् देने के लिये काफ़ी हैं। आह ! आज दुन्या का हर काम पूरी ज़िम्मादारी के साथ करने की कोशिश की जाती है मगर इस अ़ज़ीम फ़रीज़े को त़ाक़े निस्यां पर रख दिया जाता है, ख़ुदारा ! इस की अहम्मिय्यत को समझने की कोशिश कीजिये और नेकी की दा'वत की धूमें मचाने के लिये दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये।

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल की ब-रकत से लाखों लाख मुसलमान ताइब हो कर सलातो सुन्नत की राह पर गामज़न हो चुके हैं, चुनान्चे

पुल सिरात़ की दहशत

क़ुसूर (पंजाब, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है कि बहुत से नौ जवानों की त़रह़ मैं भी मु-तअ़द्दद **अख़्लाक़ी बुराइयों** में मुब्तला था। फ़िल्में डिरामे देखना, खेलकूद में वक़्त **बरबाद** करना मेरा मह़बूब मश्ग़ला था। एक मरतबा र-मज़ानुल मुबारक तशरीफ़ लाया तो मुझ गुनाहगार को भी **नमाज़ों** के लिये मस्जिद में ह़ाज़िरी की सआ़दत मिलने लगी। वहां **दा'वते इस्लामी** के एक ज़िम्मादार इस्लामी भाई **फ़ैज़ाने सुन्नत** से दर्स देते थे। दर्स के बा'द वोह बड़ी **मिलन सारी** से मुलाक़ात किया करते, उन का हुस्ने अख़्लाक़ देख कर मैं बहुत मुतअस्सिर हुवा। बिल ख़ुसूस उन का **"मीठे मीठे इस्लामी भाइयो"** कहना काफ़ी देर तक मेरे कानों में रस घोलता रहता। एक दिन वोह मुझे बड़े पुर तपाक अन्दाज़ में मिले और जुमा'रात को होने वाले **दा'वते इस्लामी** के **हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़** में शिर्कत की दा'वत पेश की, मैं ने शिर्कत की निय्यत कर ली। जुमा'रात आने से पहले ही मुझे दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के जारी कर्दा बयान का केसिट **"पुल सिरात़ की दहशत"** कहीं से मुयस्सर आ गया। मैं ने निहायत तवज्जोह से बयान सुनना शुरूअ़ किया। **"पुल सिरात़"** का नाम तो मैं ने पहले भी सुन रखा था मगर पुल सिरात़ उ़बूर करने का मर्ह़ला

www.dawateislami.net

इतना **दहशत नाक** है, इस का पता मुझे येह बयान सुन कर चला। जब मैं ने अपने गुनाहों, फिर **ना तुवां बदन** की त़रफ़ नज़र की तो मेरी आंखों में **आंसू** आ गए कि मैं **पुल सिरात़** क्यूंकर पार कर सकूंगा। चुनान्चे मैं ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानियों से तौबा कर के **सुधरने** का पुख़्ता इरादा कर लिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों भरे म-दनी माह़ोल की ब-रकत से सुन्नत के मुत़ाबिक़ दाढ़ी शरीफ़, इमामा और सफ़ेद लिबास मेरे बदन का हि़स्सा बन चुके हैं।

अम्र बिल मा'रूफ़ की सूरतें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! येह बात ज़ेहन नशीन रखें, जब कोई गुनाह कर रहा हो और हमें येह **ज़न्ने ग़ालिब** हो कि अगर मन्अ़ करेंगे तो गुनाह करने वाला गुनाह से बाज़ आ जाएगा तो **हम पर येह वाजिब व ज़रूरी है** कि हम उस को समझाएं। म-षलन किसी **इस्लामी भाई** ने सोने या किसी और धात की ज़न्जीर गले में पहन रखी है और हमें मा'लूम भी है कि येह ना जाइज़ काम है, अब अगर हमारा ख़याल ग़ालिब है कि हमारी बात येह मान लेगा तो हम पर **वाजिब** है कि हम उस को अह़्सन त़रीक़े पर इस गुनाह से बाज़ रहने की तलक़ीन करें, अगर हम नहीं समझाएंगे तो वाजिब का तर्क होगा और **वाजिब का तर्क** करना गुनाह है।

चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़बूआ़ **1234** सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त जिल्द सिवुम**" हि़स्सा **16 सफ़्ह़ा 615** पर "फ़तावा

आ़लमगीरी" के ह़वाले से मरक़ूम है : "**अम्र बिल मा'रूफ़**" की कई सूरतें हैं : (1) अगर **ग़ालिब गुमान** येह है कि हम उस से कहेंगे तो वोह शख़्स बात मान जाएगा और बुरी बात से बाज़ आ जाएगा तो **अम्र बिल मा'रूफ़ वाजिब है।** अब हमें इस से रुकना **जाइज़ नहीं** और (2) अगर गुमान ग़ालिब येह है कि वोह त़रह़ त़रह़ की **तोहमत** बांधेगा और गालियां देगा तो **तर्क करना अफ़ज़ल है** और (3) अगर मा'लूम हो कि हमें मारेगा और हम सब्र न कर सकेंगे या इस की वजह से **फ़ितना व फ़साद** पैदा होगा, आपस में लड़ाई ठन जाएगी, जब भी **छोड़ना अफ़ज़ल** है, और (4) अगर मा'लूम हो कि मुझे मारेगा तो सब्र कर लूंगा तो जो ऐसे शख़्स को बुरे काम से मन्अ़ करे तो येह शख़्स **मुजाहिद** है, और (5) अगर मा'लूम है कि वोह मानेगा नहीं मगर न ही मारेगा न गालियां देगा तो उसे इख़्तियार है और **अफ़ज़ल** येह है कि **अम्र बिल मा'रूफ़** करे।

(الفتاوی الهندیة، کتاب الکراهیة، الباب السابع عشر فی الغناء...الخ، ج٥، ص٣٥٢-٣٥٣)

बहर ह़ाल अगर हम बुराई को रोक नहीं सकते तो **कम अज़ कम** दिल में बुरा तो जानना ही चाहिये।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमें अपना ज़ेह्न बनाना चाहिये कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है"** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ !

अभी दुआ़ के बा'द اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मस्जिद से बाहर जा कर लोगों को **नेकी की दा'वत** पेश की जाएगी आप भी हमारे साथ इस नेक काम में शिर्कत फ़रमाएं, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **ढेरों नेकियां** ह़ासिल होंगी, अ़लाक़ाई दौरा बराए **नेकी की दा'वत** में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल

www.dawateislami.net

करने वाले इस्लामी भाई मेरे सीधे हाथ की त़रफ़ तशरीफ़ ले आएं, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अ़लाक़ाई दौरा बराए **नेकी की दा'वत** के आदाब बयान किये जाएंगे और जो इस्लामी भाई बाहर नहीं जा सकते वोह मस्जिद ही में तशरीफ़ रखें कि मस्जिद में भी **सुन्नतों भरे दर्स** का सिलसिला जारी रहेगा। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुह़्तशम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बेशक कुछ लोग **मस्जिदों के अवताद** (या'नी इ़बादात के लिये मस्जिद में अकषर वक़्त गुज़ारने वाले) हैं, **फ़िरिश्ते** उन के **हम नशीन** होते हैं अगर वोह मौजूद न हों तो फ़िरिश्ते उन्हें तलाश करते, बीमार हो जाएं तो उन की **इ़यादत** करते और मुश्किल में उन की **मदद** करते हैं।"

(المسند للامام احمد بن حنبل، الحدیث: ۹۴۲۴، ج۳، ص۳۹۹)

एक और ह़दीषे पाक में है कि "जो शख़्स मेरी उम्मत तक कोई इस्लामी बात पहुंचाए ताकि उस से सुन्नत क़ाइम की जाए या उस से बद मज़्हबी दूर की जाए तो वोह जन्नती है।" (حلیۃ الاولیاء ج ۱۰ ص ۴۵ حدیث ۱۴۴۶۶)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें **इ़ल्मे दीन** सीखने सिखाने, **नेकी की दा'वत** देने और **बुराई से मन्अ़** करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

बयान नम्बर 2 :

नेकी की दा'वत

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले **"गानों के 35 कुफ़्रिय्या अश्आ़र"** में दुरूद शरीफ़ के मु-तअ़ल्लिक़ ह़दीषे पाक नक़्ल फ़रमाते हैं कि **सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, बाइ़षे नुज़ूले सकीना** صَلَّى اللهُ تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ब-रकत निशान है : ऐ लोगो ! बेशक तुम में से क़ियामत के दिन उस की दहशतों और ह़िसाब किताब से **जल्द नजात पाने वाला** वोह शख़्स होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ब कषरत दुरूद शरीफ़ पढ़े होंगे।

(فردوس الاخبار للدیلمی، باب الیاء،الحدیث: ۸۲۱۰،ج۲،ص۴۷۱)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللهُ تعالٰی علٰی محمَّد

बह़्री जहाज़ के मुसाफ़िर

ह़ज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللهُ تعالٰی عَنْهُ से मरवी है कि रसूलों के सालार, नबियों के सरदार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मुख़्तार صَلَّى اللهُ تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का **फ़रमाने मुश्कबार** है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हुदूद को क़ाइम रखने वालों और उन में मुब्तला होने (या'नी तोड़ने) वालों की मिषाल उन लोगों जैसी है जिन्हों ने जहाज़ में क़ुरआ़ अन्दाज़ी की, बा'ज़ के ह़िस्से में नीचे वाला ह़िस्सा आया और बा'ज़ के ह़िस्से में ऊपर वाला। नीचे वालों को पानी की ज़रूरत के लिये

www.dawateislami.net

ऊपर वालों के पास जाना पड़ता, वोह उन की वजह से ज़हमत में पड़ जाते। पस निचले हिस्से वालों में से एक शख़्स ने कुल्हाड़ी ली और अपने हिस्से में सूराख़ करने लगा (ताकि पानी तक रसाई हो) ऐसी सूरत में अगर ऊपर वाले उस (सूराख़ करने वाले) को (सूराख़ करने से) न रोकें (और येह ख़याल कर लें कि वोह जानें उन का काम, हमें उन से क्या वासित़ा) तो इस सूरत में सूराख़ करने वाला ख़ुद भी ग़र्क़ (या'नी हलाक) हो जाएगा और दोनों फ़रीक़ भी, और अगर वोह उन का हाथ रोक देंगे तो दोनों फ़रीक़ डूबने से बच जाएंगे और वोह ख़ुद भी।"

(صَحیح بُخاری،حدیث۲۴۹۳و۲۶۸۶،ج۲ص۱۴۳و۲۰۸)

"या शैख़, अपनी अपनी देख !" की सोच ग़लत़ है

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : "इस ह़दीष शरीफ़ में एक मिषाल के ज़रीए बुराई से रोकने और नेकी का हुक्म देने की अहम्मिय्यत को वाज़ेह़ किया गया और बताया गया कि अगर येह समझ कर **अम्र बिल मा'रूफ़ और नह्युन अ़निल मुन्कर** (या'नी नेकी की दा'वत देने और बुराई से मन्अ़ करने) का फ़रीज़ा तर्क कर दिया जाए कि बुराई करने वाला ख़ुद नुक़्सान उठाएगा हमारा क्या नुक़्सान है ? तो येह सोच ग़लत़ है इस लिये कि उस के गुनाह के अ-षरात तमाम मुआ़शरे को अपनी लपेट में ले लेते हैं और जिस त़रह़ कश्ती तोड़ने वाला अकेला ही नहीं डूबता बल्कि वोह सब लोग डूबते हैं जो कश्ती

में सुवार हैं इसी त़रह़ बुराई करने वाले चन्द अफ़राद का येह जुर्म तमाम मुआ़-शरे में नासूर बन कर फैलता है।"

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 504)

रो'ब जाता रहेगा

ह़ज़रते इस्माईल बिन उ़मर رَحْمَۃُاللہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं, मैं ने अबू अ़ब्दुर्रह़मान उ़मरी رَحْمَۃُاللہِ تعَالٰی عَلَیْہ को फ़रमाते हुए सुना कि "तेरा अपनी ज़ात से ग़फ़लत करना येह है कि तू **अल्लाह तआ़ला** से ए'राज़ करने लगे इस त़रह़ कि तू **अल्लाह तआ़ला** की नाराज़ी का सबब बनने वाली कोई बात देखे तो उस से मुंह फैर ले और न नेकी की दा'वत दे न बुराई से मन्अ़ करे, उस शख़्स के डर से जो न तेरे नुक़्सान का मालिक है न नफ़्अ़ का" और मैं ने उन्हें येह फ़रमाते हुए सुना कि "जिस ने मख़्लूक़ के डर से नेकी की दा'वत देना और बुराई से मन्अ़ करना छोड़ दिया तो उस की इत़ाअ़त की अ़-ज़मत ख़त्म कर दी जाएगी यहां तक कि अगर वोह अपनी अवलाद या अपने अहले ख़ाना व ख़ुद्दाम को हुक्म देगा तो वोह उसे हलका जानेंगे।"

(الموسوعة لابن ابی دنیا، الامر بالمعروف ونهی عن المنکر،ج۲،ص۱۹۷)

बुराइयों से न रोकने वाला ही अब नेक समझा जाने लगा है !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बद क़िस्मती से अब वोह दौर आ चुका है कि **सुन्नतों** पर अ़मल करने वालों के लिये ज़मीन तंग होती चली जा रही है और ख़ास कर **नेकी की दा'वत** की सुन्नत को

www.dawateislami.net

अदा करने वाले की लोग त़रह़ त़रह़ से **दिल शिकनी** करते हैं । कभी उस की आवाज़ का मज़ाक़ उड़ाते हैं तो कभी उस के अन्दाज़े गुफ़्त्गू पर तन्क़ीद करते हैं ।

अफ़सोस ! आज इ़ज़्ज़त तो उस की है जो लोगों की हां में हां मिलाए और शरीफ़ तो वोही समझा जाता है जो दूसरों को गुनाह करने दिया करे और उन की चापलूसी करता फिरे, आज आप को बे शुमार **"नेक सूरत"** ऐसे मिलेंगे । जो मालदार फ़ासिक़ों की ता'रीफ़ करते नहीं थकते बल्कि गुनाहों में भी उन की ह़ौसला अफ़्ज़ाई करते हैं, ऐसे ख़ुशामद ख़ोर हरगिज़ हरगिज़ येह नहीं चाहते कि वोह उन लोगों की ना फ़रमानियों पर उन्हें **तम्बीह** कर के उन की नाराज़ी मोल लें, ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہ ने तो पहले ही इस की पेशगोई फ़रमा दी थी ।

चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی फ़रमाते हैं : "अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "अ़न क़रीब लोगों पर एक ऐसा दौर आएगा कि उन में **नेक** वोही समझा जाएगा जो न तो **अम्र बिल मा'रूफ़** करे और न ही किसी को बुराई से रोके, पस लोग कहेंगे : "हम ने तो इस से **नेकी ही नेकी** देखी है ।" क्यूंकि उस ने कभी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये ग़ज़ब किया ही न होगा (और लोग तो उस पर कीचड़ उछालते हैं जो **नसीह़त** की बात करे) ।"

(تَنبِیهُ الْمُغتَرِّین ص ٢٣٦)

www.dawateislami.net

पेशाब में ख़ून

हज़रते सय्यिदुना हफ़्स बिन हुमैद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَجِيْد से किसी ने कहा कि हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى को किस बात ने इस **आ'ला द-रजे** तक पहुंचा दिया हालांकि उन के ज़माने में बहुत से लोग ऐसे थे जो इल्म व इबादत में उन से कम न थे। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन पर रह्म करे, उन को हक़ के मुआमले में **ना फ़रमानों** की रिआयत न करने ही ने **आ'ला द-रजे** तक पहुंचाया है। बसा अवक़ात जब आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه कोई बुराई देखते और उसे रोक न सकते तो आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه को इस क़दर जलाल आ जाता कि आप के **पेशाब में ख़ून** आने लगता।"

(تَنبِيهُ الْمُغتَرِّين ص ٢٣٦)

बुराई को बुराई समझना ज़रूरी है

इमामुल अन्सारि वल मुहाजिरीन, **मुहिब्बुल फु-क़राइ वल मसाकीन**, जनाबे **रह्मतुल्लिल आ-लमीन** صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسلَّم का फ़रमाने हक़ीक़त निशान है : "**जब** ज़मीन में गुनाह किया जाए तो जो वहां मौजूद है मगर उसे बुरा जानता है वोह उस की **मिस्ल** है जो वहां नहीं है और जो वहां नहीं है मगर उस पर राज़ी है वोह उस की **मिस्ल** है जो वहां हाज़िर है।"

(سُنَنِ ابی داود ج ٤ ص ١٦٦ حديث ٤٣٤٥)

www.dawateislami.net

इस ह़दीष शरीफ़ में बुराई को दिल से बुरा जानने की अहम्मिय्यत का ज़िक्र हुवा कि अगर्चे एक शख़्स बुराई के इरतिकाब के वक़्त वहां मौजूद न भी हो लेकिन उस पर राज़ी हो तो गोया वोह मौजूद था और जो वहां मौजूद हो लेकिन इस ह़-र-कत को ना पसन्द करे गोया वोह वहां मौजूद ही नहीं ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मोह़द्दिषे देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं गोया ह़क़ीक़ी मौजूदगी और अ़-दमे मौजूदगी दिल की होती है जिस्म की नहीं।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 506)

हमें चाहिये कि नेकी की दा'वत को आ़म करें। नेकी की दा'वत की ब-रकत से वोह इस्लामी भाई जो नमाज़ों, मस्जिदों, नेकियों और सुन्नतों से दूर हैं उन को नेकी की दा'वत पेश करते हुए नमाज़ें पढ़ने, मस्जिदों को आबाद करने, सुन्नतों और नेकियों को इख़्तियार करने का ज़ेहन दें।

नेकी की दा'वत को आ़म करने के लिये हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है"** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

अभी दुआ़ के बा'द اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मस्जिद से बाहर जा कर लोगों को **नेकी की दा'वत** पेश की जाएगी आप भी हमारे साथ शिर्कत फ़रमाएं, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **ढेरों नेकियां** ह़ासिल होंगी।

www.dawateislami.net

अ़लाक़ाई दौरा बराए **नेकी की दा'वत** में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल करने वाले इस्लामी भाई मेरे सीधे हाथ की त़रफ़ तशरीफ़ ले आएं, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अ़लाक़ाई दौरा बराए **नेकी की दा'वत** के आदाब बयान किये जाएंगे और जो इस्लामी भाई बाहर नहीं जा सकते वोह मस्जिद ही में तशरीफ़ रखें कि मस्जिद में भी **सुन्नतों भरे दर्स** का सिलसिला जारी रहेगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

जन्नत की क्यारियां

दर्सो बयान के षवाब का भी क्या कहना ! ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है कि **नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब तुम जन्नत की क्यारियों से गुज़रा करो तो उस में से कुछ फूल चुन लिया करो." सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُم ने अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह** صلی اللہ تعالی علیك وسلم! जन्नत की क्यारियां कौन सी हैं ?" फ़रमाया : "इ़ल्म की मह़फ़िलें।"

(المعجم الکبیر للطبرانی، الحدیث:۱۱۱۵۸، ج ۱۱، ص ۷۸)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें **इ़ल्मे दीन** सीखने सिखाने, **नेकी की दा'वत** देने और **बुराई से मन्अ़** करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

★★★★★

www.dawateislami.net

बयान नम्बर 3 :

नेकी की दा'वत

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَت بَرَکَاتُہُمُ العَالِیَہ अपने रिसाले "**क़ियामत का इम्तिह़ान**" में **दुरूद शरीफ़** के मु-तअ़ल्लिक़ ह़दीषे पाक बयान फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू दरदा** رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنہُ से रिवायत है कि **शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने **सुब्ह़ व शाम मुझ पर दस दस बार दुरूदे पाक** पढ़ा **बरोज़े क़ियामत** उस को मेरी **शफ़ाअ़त नसीब** होगी ।"

(مجمع الزوائد ، کتاب الاذکار، باب مایقول اذا اصبح...الخ، الحدیث:۱۷۰۲۲، ج۱۰، ص۱۶۳)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمّد

भलाई का दरवाज़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنہُ फ़रमाते हैं कि हु़ज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "कुछ लोग भलाई की कुन्जी और बुराई का ताला होते हैं जब कि कुछ लोग बुराई की चाबियां और भलाई के लिये ताला होते हैं ख़ुश ख़बरी है उन लोगों के लिये जिन के हाथों भलाइयों का फ़ैज़ान हो और बरबादी है उन के लिये जिन के हाथों बुराइयों के दरवाज़े खोले गए ।"

(ابن ماجہ ، رقم الحدیث: ۲۳۷، ج۱، ص۱۵۵)

www.dawateislami.net

यक़ीनन नेकी की दा'वत देने और बुराई से मन्अ़ करने का अ़ज़ीमुश्शान काम बे शुमार फ़ज़ाइलो ब-रकात का सबब है लिहाज़ा हमें चाहिये कि तन, मन, धन से इन के फ़ज़ाइल को पाने की सअ़्य में मश्ग़ूल हो जाएं। एक और फ़ज़ीलत सुनिये और ख़ुशी से झूमिये, चुनान्चे

बेहतरीन कौन ?

साहि़बे क़ुरआने मुबीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم एक मरतबा मिम्बरे अक़्दस पर जल्वा फ़रमा थे कि एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! लोगों में से सब से अच्छा कौन है ?" फ़रमाया : "लोगों में से वोह शख़्स सब से अच्छा है जो कषरत से क़ुरआने ह़कीम की तिलावत करे, ज़ियादा मुत्तक़ी हो, सब से ज़ियादा नेकी का हुक्म देने और बुराई से मन्अ़ करने वाला हो और सब से ज़ियादा सिलए रेह़मी करने वाला हो।"

(المسند للامام احمد بن حنبل،مسند القبائل،حدیث درۃ بنت أبی لھب،الحدیث:٢٧٥٠٤، ج١٠، ص٤٠٢)

अ़र्श का साया किस को मिलेगा

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई कि जिस ने भलाई का हुक्म दिया और **बुराई** से मन्अ़ किया और लोगों को मेरी इत़ाअ़त की त़रफ़ बुलाया क़ियामत के दिन मेरे अ़र्श के साए में होगा।

(حِلْیَۃُ الْاَولیاء ج٦ ص٣٦ رقم٧٧١٦)

www.dawateislami.net

जन्नतुल फ़िरदौस किस के लिये ?

ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ का इर्शाद है : "**जन्नतुल फ़िरदौस** ख़ास उस शख़्स के लिये है जो اَمر بِالْمعْرُوْف وَنَھِی عَنِ الْمُنْکَر (या'नी नेकी का हुक्म दे और बुराई से मन्अ़) करे ।" (تَنبِیہُ الْمُغتَرِّیْن ص ۲۳۶)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मैदाने मह़शर के होलनाक व पुर आशोब माह़ोल में कि जिस दिन अ़र्शे इलाही के इ़लावा कोई साया न होगा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने जिन मुत़ीअ़ व फ़रमां बरदार ख़ास बन्दों को अ़र्शे अ़ज़ीम के साए में जगह और जन्नतुल फ़िरदौस में दाख़िला अ़त़ा फ़रमाएगा उन ख़ुश नसीबों में नेकी की दा'वत देने और बुराई से मन्अ़ करने वाले अफ़राद भी शामिल होंगे ।

मरीज़ त़बीब बन गया

मश्हूर बुज़ुर्ग आ़लिमे दीन ह़ज़रते सय्यिदुना शिबली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی एक मरतबा बीमार हो गए लोगों ने ब ग़-रज़े इलाज **शिफ़ाख़ाने** में दाख़िल करा दिया । वज़ीरे सल्त़नत अ़ली बिन ईसा आप का बेह़द मो'तक़िद था, उस ने ख़लीफ़ए बग़दाद से दर-ख़्वास्त की, कि दरबारे शाही के **रईसुल अत़िब्बा** को इन के इलाज के लिये भेजा जाए । चुनान्चे ख़लीफ़ा ने **रईसुल अत़िब्बा** को भेज दिया जो नसरानी था । उस ने बड़ी दिमाग़ सोज़ी और तवज्जोह से आप का इलाज किया मगर कोई फ़ाएदा नहीं हुवा । एक दिन **रईसुल अत़िब्बा** ने कहा : ऐ शिबली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ! अगर मुझे येह मा'लूम हो जाए

www.dawateislami.net

कि मेरे बदन के किसी टुकड़े में आप का इलाज है तो मुझे आप के लिये अपना उ़ज़्व काट देने में भी कोई तरद्दुद नहीं होगा। **ह़ज़रते** सय्यिदुना शिबली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने फ़रमाया कि "मेरा इलाज आप के एक उ़ज़्व काटने से कहीं ज़ियादा आसान है।" उस ने पूछा कि वोह क्या है? तो आप ने फ़रमाया कि "तुम अपना ज़ुन्नार [1] काट डालो और इस्लाम क़बूल कर लो। मारे ख़ुशी के मेरा मरज़ जाता रहेगा।" त़बीब ने फ़ौरन ज़ुन्नार तोड़ कर **कलिमा** पढ़ लिया उसी वक़्त **ह़ज़रते** सय्यिदुना शिबली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى तन्दुरुस्त हो कर बिस्तरे बीमारी से उठ खड़े हुए। ख़लीफ़ए बग़दाद को जब येह ख़बर पहुंची तो उस ने ह़ैरान हो कर तअ़ज्जुब से येह कहा कि "मैं ने तो त़बीब को मरीज़ के पास भेजा था, मुझे क्या ख़बर थी कि मरीज़ को त़बीब के पास भेज रहा हूं।" (روح البيان ج ۲ ص ٤٦١)

देखा आप ने! उ़-लमाए ह़क़ ख़ल्क़े ख़ुदा की हिदायत और इशाअ़ते इस्लाम के कितने शैदाई थे? कि एक ग़ैर मुस्लिम के इस्लाम क़बूल कर लेने से उन्हें इतनी अ़ज़ीम मुसर्रते क़ल्बी ह़ासिल होती थी कि जज़्बए शादमानी से रूह़ानी त़ौर पर उन की ख़त़रनाक बीमारियां दूर हो जाती थीं। हमें भी अपना ज़ेहन बनाना चाहिये कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है"** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

अभी दुआ़ के बा'द اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मस्जिद से बाहर जा कर **नेकी की दा'वत** पेश की जाएगी आप भी हमारे साथ शिर्कत फ़रमाएं, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **ढेरों नेकियां** ह़ासिल होंगी, अ़लाक़ाई दौरा

1... ज़ुन्नार : वोह धागा या ज़न्जीर जो ईसाई, मजूसी और यहूदी कमर में बांधते हैं।

www.dawateislami.net

बराए **नेकी की दा'वत** में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल करने वाले इस्लामी भाई मेरे सीधे हाथ की त़रफ़ तशरीफ़ ले आएं, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अ़लाक़ाई दौरा बराए **नेकी की दा'वत** के आदाब बयान किये जाएंगे और जो इस्लामी भाई बाहर नहीं जा सकते वोह मस्जिद ही में तशरीफ़ रखें कि मस्जिद में भी **सुन्नतों भरे दर्स** का सिलसिला जारी रहेगा।

मस्जिदों के अवताद

नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुह़्तशम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "बेशक कुछ लोग **मस्जिदों के अवताद** (या'नी इबादात के लिये मस्जिद में अकषर वक़्त गुज़ारने वाले) हैं, **फ़िरिश्ते** उन के **हम नशीन** होते हैं अगर वोह मौजूद न हों तो फ़िरिश्ते उन्हें तलाश करते, बीमार हो जाएं तो उन की **इ़यादत** करते और मुश्किल में उन की **मदद** करते हैं।"

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی ھریرۃ،الحدیث:٩٤٢٤،ج٣،ص٣٩٩)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللّٰهُ تعالٰى على محمَّد

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें **इ़ल्मे दीन** सीखने सिखाने, **नेकी की दा'वत** देने और **बुराई से मन्अ़** करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِىِّ الْاَمِين صلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

★★★★★

www.dawateislami.net

बयान नम्बर 4 :

नेकी की दा'वत

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **"रसाइले अ़त्तारिय्या"** (ह़िस्सए दुवुम) के सफ़ह़ा **12** पर ह़दीषे पाक नक़्ल फ़रमाते हैं : "जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस पर दस रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है, दस गुनाह मिटाता और दस द-रजात बुलन्द फ़रमाता है।"

(سنن النسائی،کتاب السہو،باب الفضل فی الصلاۃ...الخ،الحدیث:۱۲۹۴،ص۲۲۲)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صلَّى اللّٰهُ تعالٰی علٰی محمَّد

क़ाबिले रश्क लोग

बेचैन दिलों के चैन, रह़मते दारैन, ताजदारे ह़-रमैन, सरवरे कौनैन, नानाए ह़-सनैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क्या मैं तुम्हें ऐसे लोगों के बारे में ख़बर न दूं जो न अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में से हैं न शु-हदा में से लेकिन क़ियामत वाले दिन अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और शु-हदा उन के मक़ाम को देख कर रश्क करेंगे, वोह लोग नूर के मिम्बरों पर बुलन्द होंगे।" सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया : वोह कौन लोग होंगे ? इर्शाद फ़रमाया : "येह वोह लोग हैं जो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के बन्दों को **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का मह़बूब बन्दा बना देते हैं। और

www.dawateislami.net

वोह ज़मीन पर (लोगों को) नसीहतें करने चलते हैं" हुज़ूर सरापा नूर صَلَّی اللہ تَعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते सरापा रह़मत में अ़र्ज़ किया गया वोह किस त़रह़ लोगों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मह़बूब बना देते हैं ? इर्शाद फ़रमाया : "वोह लोगों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मह़बूब बातों का हुक्म देते हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना पसन्दीदा बातों से मन्अ़ करते हैं, पस जब लोग उन की इत़ाअ़त करें तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन इत़ाअ़त करने वालों को भी अपना मह़बूब बना लेगा ।"

(شعب الایمان للبیھقی، الباب العاشر باب فی محبۃ اللّٰہ عزوجل،معنی المحبۃ، الحدیث:٤٠٩، ج١،ص٣٦٧)

सुर्ख़ ऊंटों से बेहतर

नबिय्ये हाशिर, रसूले साबिरो शाकिर, मह़बूबे रब्बे क़ादिर صَلَّی اللہ تَعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे ज़रीए़ किसी एक शख़्स को हिदायत अ़त़ा फ़रमाए तो येह तुम्हारे लिये इस से अच्छा है कि तुम्हारे पास सुर्ख़ ऊंट हों ।" (صَحیح مُسلِم ص ١٣١١ حدیث ٢٤٠٦)

ह़ज़रते अ़ल्लामा यह़्या बिन शरफ़ न-ववी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इस ह़दीष की शर्ह़ में लिखते हैं : सुर्ख़ ऊंट अहले अ़रब का बेश क़ीमत माल समझा जाता था, इस लिये ज़र्बुल मषल के त़ौर पर ऊंटों का ज़िक्र किया गया । उख़रवी उमूर का दुन्यवी दौलत से तश्बीह देना सिर्फ़ समझाने के लिये है वरना हमेशा रहने वाली आख़िरत का एक ज़र्रा भी दुन्या और इस जैसी जितनी दुन्याएं तसव्वुर की जा सकें, उन सब से बेहतर है । (شَرح مُسلِم لِلنَّوَوِی ج١٥ ص١٧٨)

नेकी की तरग़ीब देने का फ़ाएदा

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "नेकी की राह दिखाने वाला **नेकी** करने वाले की त़रह़ है।" (سُنَنِ ترمذی ج ٤ ص ٣٠٥ حديث ٢٦٧٩)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीषे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी नेकी करने वाला, कराने वाला, बताने वाला (और) मश्वरा देने वाला सब षवाब के मुस्तह़िक़ हैं। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 183)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जहां नेकी की दा'वत देने के फ़ज़ाइल हैं वहीं इसे छोड़ देने के नुक़सानात भी हैं, चुनान्चे

दुआ़ क़बूल न होगी

सरकारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क़सम है उस की जिस के हाथ में मेरी जान है, या तो तुम अच्छी बात का हुक्म करोगे और बुरी बात से मन्अ़ करोगे या **अल्लाह तआ़ला** तुम पर जल्द अपना अ़ज़ाब भेजेगा फिर दुआ़ करोगे और तुम्हारी दुआ़ क़बूल न होगी।" (سنن الترمذی ج ٤ ص ٦٩ حديث ٢١٧٦)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीषे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : اَمر بِالْمعرُوف وَنَهْى عَنِ الْمُنْكَر (या'नी भलाई का हुक्म देने और बुराई से

www.dawateislami.net

मन्अ़ करने) की ज़िम्मादारी से पहलू तही कितना बड़ा जुर्म है इस ह़दीष में निहायत वज़ाह़त के साथ इस का बयान किया गया।

रसूले अकरम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "या तो तुम्हें येह फ़रीज़ा अन्जाम देना होगा या **अल्लाह तआ़ला** के अ़ज़ाब का सामना करना पड़ेगा और इस के बा'द अगर दुआ़ भी करोगे तो क़बूल न होगी" येह निहायत सख़्त क़िस्म की वईद है या'नी जब तक तुम अपनी कोताही का इज़ाला नहीं करोगे और **अल्लाह तआ़ला** से मुआ़फ़ी नहीं मांगोगे तुम्हारी कोई दुआ़ क़बूल न होगी।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 505)

आह ! मुसलमान की बरबादी

आह ! आज दुन्या में मुसलमानों की जो ह़ालत है वोह किसी से मख़्फ़ी नहीं, हर त़रफ़ ही बे अ़-मली का दौर दौरा है, कोई किसी को टोकने वाला नज़र नहीं आता, मुसलमान अ़-मली त़ौर पर तनज़्ज़ुली के अ़मीक़ गढ़े की त़रफ़ तेज़ी से गिरता चला जा रहा है और अपने शआ़इर तक भूलता चला जा रहा है। येही वजह है कि आज हमारी मस्जिदें वीरान और बुराई के अड्डे आबाद हैं।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हम नेकी की दा'वत के ज़रीए़ बुराइयों के बढ़ते हुए सैलाब को रोकने की कोशिश तो कर सकते हैं।

अभी दुआ़ के बा'द اِنۡ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मस्जिद से बाहर जा कर **नेकी की दा'वत** पेश की जाएगी आप भी इस नेकी की दा'वत में हमारे साथ शिर्कत फ़रमाएं, اِنۡ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **ढेरों नेकियां** ह़ासिल होंगी।

www.dawateislami.net

अ़लाक़ाई दौरा बराए **नेकी की दा'वत** में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल करने वाले इस्लामी भाई मेरे सीधे हाथ की त़रफ़ तशरीफ़ ले आएं, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ अ़लाक़ाई दौरा बराए **नेकी की दा'वत** के आदाब बयान किये जाएंगे और जो इस्लामी भाई बाहर नहीं जा सकते वोह मस्जिद ही में तशरीफ़ रखें कि मस्जिद में भी **सुन्नतों भरे दर्स** का सिल्सिला जारी रहेगा। **दर्सो बयान** के षवाब का भी क्या कहना !

जन्नत की बिशारत

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो शख़्स मेरी उम्मत तक कोई इस्लामी बात पहुंचाए ताकि उस से सुन्नत क़ाइम की जाए या उस से बद मज़हबी दूर की जाए तो वोह जन्नती है।'' (حلية الاولياء ج١٠ ص٤٥ حديث١٤٤٦٦)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना **मूसा कलीमुल्लाह** عَلَیْہِ السَّلَام की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई : ''भलाई की बातें ख़ुद भी सीखो और दूसरों को भी सिखाओ, मैं भलाई सीखने और सिखाने वालों की **क़ब्रों** को रोशन फ़रमाऊंगा ताकि उन को किसी क़िस्म की वह़्शत न हो।'' (حلية الاولياء،٣٢٥-كعب الاحبار،الحديث:٧٦٢٢،ج٦،ص٥)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें **इ़ल्मे दीन** सीखने सिखाने, **नेकी की दा'वत** देने और **बुराई से मन्अ़** करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

बयान नम्बर 5 :

नेकी की दा'वत

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले **"क़ज़ा नमाज़ों का त़रीक़ा"** में दुरूद शरीफ़ के मुतअ़ल्लिक़ ह़दीषे पाक नक़्ल फ़रमाते हैं कि **दो जहां के सुल्त़ान, सरवरे ज़ीशान** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है : "मुझ पर **दुरूदे पाक** पढ़ना **पुल सिरात़ पर नूर** है जो रोज़े जुमुआ़ मुझ पर **अस्सी बार दुरूदे पाक** पढ़े उस के **अस्सी साल के गुनाह मुआ़फ़** हो जाएंगे।"

(الجامع الصغير للسيوطي، الحديث:٥١٩١، ص٣٢٠)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب !   صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नौ जवान राहे रास्त पर आ गया

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की ख़िदमते सरापा अ़-ज़मत में एक शख़्स ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : आ़लीजाह ! मुझ से बहुत गुनाह सरज़द होते हैं, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मुझे गुनाहों का इलाज तजवीज़ फ़रमाइये।

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने **पहली नसीह़त** करते हुए फ़रमाया : "जब गुनाह करने का पक्का इरादा हो जाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का रिज़्क़ खाना छोड़ दो।" उस शख़्स ने ह़ैरत से अ़र्ज़ किया : ह़ज़रत !

आप कैसी नसीह़त फ़रमा रहे हैं ! येह कैसे हो सकता है ? जब कि रज़्ज़ाक़ عَزَّوَجَلَّ वोही है, तो मैं उस की रोज़ी छोड़ कर भला किस की खाऊंगा ? आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ ने इर्शाद फ़रमाया : "देखो ! कितनी बुरी बात है कि जिस परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की रोज़ी खाओ उसी की ना फ़रमानी भी करते रहो ।"

फिर आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعالٰی عَلَیْہ ने **दूसरी नसीह़त** फ़रमाई : "जब भी गुनाह का इरादा हो जाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुल्क से बाहर निकल जाओ ।" उस ने अ़र्ज़ की : हु़ज़ूर येह भी कैसे हो सकता है ? तमाम मशरिक़ मग़रिब, शिमाल जुनूब, दाएं बाएं, ऊपर नीचे अल ग़रज़ जिधर जाऊं उधर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही का मुल्क पाऊं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुल्क से बाहर निकलने की कोई सूरत ही नहीं । आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعالٰی عَلَیْہ ने इर्शाद फ़रमाया, "देखो ! कितनी बुरी बात है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुल्क में भी रहो और फिर उस की ना फ़रमानी भी करो ।"

तीसरी नसीह़त आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعالٰی عَلَیْہ ने येह इर्शाद फ़रमाई : "जब पुख़्ता इरादा हो जाए कि बस अब गुनाह कर ही डालना है तो कर लो लेकिन अपने आप को इतना छुपा लो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ देख न सके ।" उस ने ह़ैरत से अ़र्ज़ किया : हु़ज़ूर ! येह क्यूं कर मुमकिन है ? कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे देख न सके वोह तो दिलों के अह़्वाल से भी बा ख़बर है । तो आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعالٰی عَلَیْہ ने इर्शाद फ़रमाया : "देखो ! कितनी बुरी बात है कि जब तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

को समीअ़ व बसीर भी तस्लीम करते हो और येह भी यक़ीन के साथ कह रहे हो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हर लम्हे़ मुझे देख रहा है मगर फिर भी गुनाह किये जा रहे हो।"

चौथी नसीह़त येह इर्शाद फ़रमाई : "जब म-लकुल मौत सय्यिदुना इ़ज़्राईल عَلَيْهِ السَّلَام तुम्हारी रूह़ क़ब्ज़ करने के लिये तशरीफ़ लाएं तो उन से कह देना कि थोड़ी सी मोहलत दे दीजिये कि मैं तौबा कर लूं।" उस शख़्स ने अ़र्ज़ की : हु़ज़ूर ! मेरी क्या औक़ात और मेरी सुने कौन ? मौत का वक़्त मुक़र्रर है और मुझे एक लम्ह़ा भी मोहलत नहीं मिल सकेगी फ़ौरन मेरी रूह़ क़ब्ज़ कर ली जाएगी। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "जब तुम येह जानते हो कि मैं बे इख़्तियार हूं और तौबा की मोहलत ह़ासिल नहीं कर सकता तो फ़िलह़ाल जो वक़्त तुम्हारे पास है उसी को ग़नीमत जानते हुए म-लकुल मौत सय्यिदुना इ़ज़्राईल عَلَيْهِ السَّلَام की तशरीफ़ आ-वरी से पहले पहले तौबा क्यूं नहीं कर लेते ?"

फिर आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَيْه ने **पांचवीं नसीह़त** येह फ़रमाई : "जब तुम्हारी मौत वाक़ेअ़ हो जाए और क़ब्र में **मुन्कर नकीर** तशरीफ़ ले आएं तो उन को क़ब्र से हटा देना।" उस ने अ़र्ज़ की : आ़लीजाह ! येह क्या फ़रमा रहे हैं ? मैं उन्हें कैसे हटा सकूंगा ? मुझ में इतनी त़ाक़त कहां ? आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : "जब तुम **नकीरैन** को हटा नहीं सकते तो उन के सुवालात के जवाबात देने की तय्यारी अभी से क्यूं शुरूअ़ नहीं कर देते ?"

www.dawateislami.net

छटी और **आख़िरी नसीहत** करते हुए आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ ने इर्शाद फ़रमाया : "अगर क़ियामत के दिन तुम्हें जहन्नम का हुक्म सुनाया जाए तो कह देना कि मैं नहीं जाता।" उस ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! वहां तो घसीट कर दोज़ख़ में डाल दिया जाएगा। तो आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ ने इर्शाद फ़रमाया : "जब तुम्हारा येह ह़ाल है कि तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रोज़ी खाने से भी बाज़ नहीं आ सकते, उस के मुल्क से बाहर भी नहीं निकल सकते, उस से नज़र भी नहीं बचा सकते, **मुन्कर नकीर** को भी नहीं हटा सकते और जहन्नम के अ़ज़ाब का अगर हुक्म हो जाए तो उसे भी नहीं टाल सकते तो फिर गुनाह करना ही छोड़ दो ताकि इन तमाम मसाइब से मह़फ़ूज़ रह सको।" उस शख़्स पर सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم के तजवीज़ कर्दा **गुनाहों के इलाज** के इन **छे नसीहत आमोज़ म-दनी फूलों** की ख़ुश्बूओं ने बहुत अषर किया, वोह ज़ारो क़ित़ार रोने लगा और उसी वक़्त उस ने अपने तमाम गुनाहों से सच्ची तौबा कर ली और मरते दम तक तौबा पर क़ाइम रहा। (مُلَخَّص از تذکرۃالاولیاء ص ۱۰۰)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी चाहिये कि अपने बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَھُمُ اللّٰہ تَعالٰی के नक़्शे क़दम पर चलते हुए नेकी की दा'वत को आ़म करें।

नेकी की दा'वत की ब-रकत से वोह इस्लामी भाई जो नमाज़ों, मस्जिदों, नेकियों और सुन्नतों से दूर हैं उन को नेकी की दा'वत पेश करते हुए नमाज़ें पढ़ने, मस्जिदों को आबाद करने, सुन्नतों और नेकियों को इख़्तियार करने का ज़ेहन दें।

नेक शख़्स भी अ़ज़ाब में

सरकारे मदीना صلَّى الله تعَالى عَلَيهِ و الِهٖ وَسلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : **अल्लाह** عَزَّ وَجلَّ ने ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيهِ السَّلام को हुक्म फ़रमाया : फुलां शहर को उस के रहने वालों के साथ ज़ेरो ज़बर कर दो, ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيهِ السَّلام ने अ़र्ज़ की : ऐ रब عَزَّ وَجلَّ ! उन लोगों में तेरा एक फुलां **नेक बन्दा** भी है जिस ने पलक झपकने की मिक़्दार भी तेरी ना फ़रमानी नहीं की। **अल्लाह** عَزَّ وَجلَّ ने फ़रमाया : "शहर उन पर उलट दो क्यूंकि उस का चेहरा मेरी ना फ़रमानियां देख कर कभी मु-तग़य्यर नहीं हुवा।"

(شُعَبُ الْاِیمان ج٦ ص٩٧ حدیث٧٥٩٥)

इस ह़दीष शरीफ़ से वाज़ेह़ होता है कि जहां आ'माले सालिह़ा से तअ़ल्लुक़ और बुराइयों से इजतिनाब ज़रूरी है वहां दीनो मिल्लत के ख़िलाफ़ साज़िशों और मुसलमानों पर ज़ुल्मो सितम नीज़ मुआ़-श-रती बिगाड़ की वजह से परेशान होना भी ईमान का तक़ाज़ा है जो लोग **अल्लाह तआ़ला** की रिज़ा जूई की ख़ातिर मुआ़-श-रती बुराइयों के इज़ाले के लिये कोशां नहीं रहते और अ़-दमे ताक़त की सूरत में उस पर परेशान भी नहीं होते उन का तक़्वा किस काम का ! लिहाज़ा अपनी इस्लाह़ और इबादते ख़ुदा वन्दी में मश्ग़ूलिय्यत के साथ साथ मुल्क व मिल्लत और मुसलमानाने आ़लम की ज़बूं ह़ाली के ख़ातिमे और मुआ़शरे को ग़ैर शर-ई ह़-रकातो स-कनात से पाक करने के लिये कोशां रहना हम सब की ज़िम्मादारी है।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 516)

www.dawateislami.net

नेकी की दा'वत को आ़म करने के लिये हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है"** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ !

अभी दुआ़ के बा'द मस्जिद से बाहर जा कर **नेकी की दा'वत** पेश की जाएगी आप भी हमारे साथ शिर्कत फ़रमाएं, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **ढेरों नेकियां** ह़ासिल होंगी। अ़लाक़ाई दौरा बराए **नेकी की दा'वत** में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल करने वाले इस्लामी भाई मेरे सीधे हाथ की त़रफ़ तशरीफ़ ले आएं, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अ़लाक़ाई दौरा बराए **नेकी की दा'वत** के आदाब बयान किये जाएंगे और जो इस्लामी भाई बाहर नहीं जा सकते वोह मस्जिद ही में तशरीफ़ रखें कि मस्जिद में भी **सुन्नतों भरे दर्स** का सिल्सिला जारी रहेगा। **दर्सो बयान** के षवाब का भी क्या कहना !

जन्नत की क्यारियां

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जब तुम जन्नत की क्यारियों से गुज़रा करो तो उस में से कुछ फूल चुन लिया करो." सह़ाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया : **"या रसूलल्लाह** صلی اللّٰہ تعالٰی علیک وسلم ! जन्नत की क्यारियां कौन सी हैं ?" फ़रमाया : "इ़ल्म की मह़फ़िलें।" (طبرانی کبیر، رقم: ۱۱۱۵۸، ج ۱۱، ص ۷۸)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें **इ़ल्मे दीन** सीखने सिखाने, **नेकी की दा'वत** देने और **बुराई से मन्अ़** करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

बयान नम्बर 6 :

नेकी की दा'वत

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले **"जन्नती मह़ल का सौदा"** में दुरूद शरीफ़ के मु-तअ़ल्लिक़ ह़दीषे पाक नक़्ल फ़रमाते हैं कि **शाहे बह़्रो बर, मदीने के ताजवर, रसूले अन्वर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बख़्शिश निशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ात़िर आपस में **मह़ब्बत** रखने वाले जब बाहम मिलें और **मुसाफ़ह़ा** करें और नबी صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर **दुरूदे पाक** भेजें तो उन के जुदा होने से पहले **दोनों के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते** हैं।"

(مسند ابی یعلی، مسند انس بن مالک، الحدیث:۲۹۵۱،ج۳،ص۹۵)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب!　صلَّى اللّٰهُ تعالٰى على محمَّد

तीन म-दनी फ़ीसें

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم को एक अमीर शख़्स ने दा'वते त़आ़म दी, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इन्कार फ़रमा दिया लेकिन वोह शख़्स न माना, जब उस का इसरार बढ़ा तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "अगर तू मेरी येह **तीन शर्तें** माने तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ आऊंगा (1) मैं जहां चाहूंगा बैठूंगा (2) जो चाहूंगा खाऊंगा (3) जो कहूंगा वोह तुम्हें करना पड़ेगा।" उस मालदार ने वोह तीनों शर्तें मन्ज़ूर कर लीं। **वलिय्युल्लाह** की ज़ियारत के लिये बहुत

www.dawateislami.net

सारे लोग जम्अ़ हो गए, पुर तकल्लुफ़ त़आ़म का एहतिमाम था। वक़्ते मुक़र्ररा पर ह़ज़रत भी तशरीफ़ ले आए और आते ही जहां **जूते** पड़े थे वहीं तशरीफ़ फ़रमा हो गए। चूंकि शर्त़ थी "जहां चाहूंगा बैठूंगा" लिहाज़ा मेज़बान ने कुछ न कहा। कुछ देर बा'द खाना शुरूअ़ हुवा, लोगों ने मुर्ग़े मुसल्लम पर हाथ साफ़ करने शुरूअ़ कर दिये लेकिन **वलिय्युल्लाह** رَحمۃُ اللّٰہِ تعالٰی علیہ ने अपनी झोली में हाथ डाल कर **सूखी रोटी** का टुकड़ा निकाला और तनावुल फ़रमाने लगे। जब त़आ़म का सिल्सिला ख़त्म हुवा तो आप رَحمۃُ اللّٰہِ تعالٰی علیہ ने मेज़बान से फ़रमाया : "अंगेठी (या'नी चूल्हा) लाओ और उस पर तवा रखो।" हुक्म की ता'मील हुई, जब आग की तपश से तवा सुर्ख़ अंगारा बन गया तो आप رَحمۃُ اللّٰہِ تعالٰی علیہ नंगे पाउं उस पर खड़े हो गए। लोगों की आंखें ह़ैरत के मारे फटी की फटी रह गईं। अब आप رَحمۃُ اللّٰہِ تعالٰی علیہ ने फ़रमाया : **"मैं ने आज के खाने में सूखी रोटी खाई है"** येह फ़रमा कर तवे से नीचे उतर आए और ह़ाज़िरीन से फ़रमाया : "अब आप ह़ज़रात इस तवे पर खड़े हो कर जो कुछ खाया है उस का बारी बारी ह़िसाब दीजिये।" यकबारगी लोगों की चीख़ें निकल गईं **ब-यक** ज़बान बोल उठे : "या सय्यिदी ! आप رَحمۃُ اللّٰہِ تعالٰی علیہ तो **वलिय्युल्लाह** हैं और येह आप رَحمۃُ اللّٰہِ تعالٰی علیہ की करामत है, कहां येह गर्म गर्म तवा और कहां हमारे नाज़ुक क़दम ! हम तो गुनाहगार, दुन्यादार लोग हैं।" आप رَحمۃُ اللّٰہِ تعالٰی علیہ ने फ़रमाया : "**ऐ लोगो** ! उस वक़्त को याद करो जब सूरज सिर्फ़ एक मील दूर होगा, आज सूरज हम से करोड़ों मील

www.dawateislami.net

दूर है, इस वक़्त सूरज का पिछला रुख़ हमारी त़रफ़ है जब कि उस वक़्त उस का अगला रुख़ हमारी जानिब होगा, ज़मीन आग की होगी, उस आग की ज़मीन पर ग़ौर करो और इस गर्म तवे के बारे में सोचो ! येह तवा जो दुन्यवी आग में गर्म हुवा है इस की तपश ख़ुदा की क़सम ! उस आग की ज़मीन के मुक़ाबले में कुछ भी नहीं। उस आग की ज़मीन पर तुम्हें खड़ा होना पड़ेगा। फ़रमाने बारी तआ़ला है :

﴿ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ یَوْمَىٕذٍ عَنِ النَّعِیْمِ ۠﴾ (پ ۳۰ التکاثر:۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *फिर बेशक ज़रूर उस दिन तुम से ने'मतों से पुरसिश होगी।*

जब तुम आज इस दुन्यवी तवे पर खड़े हो कर सिर्फ़ एक वक़्त के खाने का हि़साब नहीं दे सकते तो कल बरोज़े क़ियामत तुम में कौन सी करामत पैदा हो जाएगी कि आग की ज़मीन पर खड़े हो कर ज़िन्दगी भर की ने'मतों का हि़साब चुकाओगे !" येह रिक़्क़त अंगेज़ बयान सुन कर लोग दहाड़ें मार मार कर रोने और गुनाहों से तौबा करने लगे। (مُلخّصاًتذکرۃ الاولیاء الجزء الاول ص ۲۲۲)

सदक़ा प्यारे की ह़या का कि न ले मुझ से हि़साब
बख़्श बे पूछे लजाए को लजाना क्या है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किसी को नेकी की दा'वत देना यक़ीनन हमारे लिये दुन्या व आख़िरत की ढेरों भलाइयों के हुसूल का बेहतरीन ज़रीआ़ है। जैसा कि सरवरे आ़लम صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَيْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

ने इर्शाद फ़रमाया : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र और नेकी की दा'वत के सिवा बनी आदम के हर कलाम के बारे में उस की पुरसिश की जाएगी।''

(الترمذی، کتاب الزھد، رقم الحدیث ۲٤۲۰، ج٤، ص۱۸۵)

नेकी की दा'वत देना स-दक़ा है

हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि **सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़निबीन** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबा में से कुछ लोगों ने अ़र्ज़ किया : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मालदार लोग अज्र ले गए ह़ालांकि वोह भी हमारी त़रह़ नमाज़ें पढ़ते हैं और हमारी त़रह़ रोज़े रखते हैं।'' आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''क्या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारे लिये कोई ऐसी चीज़ नहीं बनाई जो तुम स-दक़ा कर सको ? बेशक हर तस्बीह़ स-दक़ा है और हर तक्बीर स-दक़ा है और हर तह़मीद स-दक़ा है और اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف (या'नी नेकी की दा'वत देना) स-दक़ा है और نَھْیٌ عَنِ الْمُنْکَر (या'नी बुराई से मन्अ़ करना) स-दक़ा है।'' (صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب بیان اسم الصدقۃ، رقم ۱۰۰٦، ص ۵۰۳)

नेक लोगों की हलाकत की वजह

अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते सय्यिदुना यूशुअ़ बिन नून عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर वह़्य भेजी कि आप की क़ौम के **एक लाख** आदमी अ़ज़ाब से हलाक किये जाएंगे जिन में **चालीस हज़ार** नेक लोग हैं और साठ हज़ार बद अ़मल। आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : या रब عَزَّوَجَلَّ ! बद किरदारों की हलाकत की वजह तो ज़ाहिर

www.dawateislami.net

है लेकिन **नेक** लोगों को क्यूं हलाक किया जा रहा है ? इर्शाद फ़रमाया : "येह नेक लोग भी उन बद किरदारों के साथ खाते और पीते थे। मेरी ना फ़रमानियां और गुनाह देख कर कभी इन के चेहरों पर ना गवारी का अषर तक न आया।" (شعب الایمان ج۷ ص۵۳ رقم۹۴۲۸)

क्या हम ना गवारी मह़सूस करते हैं ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अपने ज़मीर से सुवाल कीजिये कि किसी को गुनाह करता देख कर कितनी ना गवारी मह़सूस की, बच्चों की अम्मी खाना पकाने में ताख़ीर कर दे, खाने में नमक तेज़ हो जाए, बेटा स्कूल से छुट्टी कर ले तो ना गवार गुज़रे लेकिन घर वालों की रोज़ाना पांचों नमाज़ें क़ज़ा हो रही हों तो हमारे माथे पर बल न आए। हम उन्हें समझाने की कोई कोशिश न करें, आप ही कहिये क्या येह रविश दुरुस्त है ?

मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار की फ़िक्र मन्दी

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : "हम ने दुन्या की मह़ब्बत पर आपस में सुल्ह़ कर ली, पस हम आपस में **नेकी की दा'वत** नहीं देते और न एक दूसरे को **बुराइयों** से मन्अ़ करते हैं, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ हमें इस ह़ाल पर न रखे वरना न जाने हम पर कौन सा अ़ज़ाब नाज़िल किया जाए।"

(شُعَبُ الْاِیمان ج۶ ص۹۷ رقم۷۵۹۶)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें अपना ज़ेह्न बनाना चाहिये कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है**" اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

अभी दुआ़ के बा'द اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मस्जिद से बाहर जा कर **नेकी की दा'वत** पेश की जाएगी आप भी हमारे साथ शिर्कत फ़रमाएं, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **ढेरों नेकियां** ह़ासिल होंगी, अ़लाक़ाई दौरा बराए **नेकी की दा'वत** में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल करने वाले इस्लामी भाई मेरी सीधी जानिब तशरीफ़ ले आएं, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अ़लाक़ाई दौरा बराए **नेकी की दा'वत** के आदाब बयान किये जाएंगे और जो इस्लामी भाई बाहर नहीं जा सकते वोह मस्जिद ही में तशरीफ़ रखें कि मस्जिद में भी **सुन्नतों भरे दर्स** का सिलसिला जारी रहेगा اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ । **दर्सो बयान** के षवाब का भी क्या कहना !

क़ब्र की रोशनी

ह़ज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی "**शर्हुस्सुदूर**" में नक़्ल करते हैं, **अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला** ने ह़ज़रते सय्यिदुना **मूसा कलीमुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई : "भलाई की बातें ख़ुद भी सीखो और दूसरों को भी सिखाओ, मैं भलाई सीखने और सिखाने वालों की **क़ब्रों** को रोशन फ़रमाऊंगा ताकि उन को किसी क़िस्म की वह़्शत न हो।"

(حلیة الاولیاء،۳۲۵-کعب الاحبار،الحدیث:۷۶۲۲،ج۶،ص۵)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें **इ़ल्मे दीन** सीखने सिखाने, **नेकी की दा'वत** देने और **बुराई से मन्अ़** करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

★★★★★

www.dawateislami.net

बयान नम्बर 7 :

नेकी की दा'वत

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले "**बा ह़या नौ जवान**" में बयान फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते **सय्यिदुना अबू दरदा** رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है : **मीठे मीठे मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स **सुब्ह़ व शाम** मुझ पर दस दस बार **दुरूद शरीफ़** पढ़ेगा बरोजे़ क़ियामत **मेरी शफ़ाअ़त** उसे पहुंच कर रहेगी।"

(الترغيب والترهيب ج ١ ص ٣١٢ حديث ٩٩١)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे बोल की ब-रकत

ख़ुरासान के एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को ख़्वाब में हुक्म हुवा कि "तातारी क़ौम में इस्लाम की दा'वत पेश करो !" उस वक़्त **हलाकू ख़ान** का बेटा तगूदार ख़ान बर सरे इक्तिदार था वोह बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه सफ़र कर के तगूदार ख़ान के पास तशरीफ़ ले आए। सुन्नतों के पैकर बा रीश मुसलमान **मुबल्लिग़** को देख कर उसे मस्ख़री सूझी और कहने लगा : "मियां ! येह तो बताओ तुम्हारी दाढ़ी के बाल अच्छे हैं या मेरे कुत्ते की दुम ?" बात अगर्चे गुस्सा दिलाने वाली थी मगर चूंकि वोह एक समझदार मुबल्लिग़ थे लिहाज़ा निहायत नर्मी के साथ फ़रमाने लगे : "मैं भी अपने ख़ालिक़ो मालिक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कुत्ता हूं अगर जां निषारी और वफ़ादारी से उसे

www.dawateislami.net

ख़ुश करने में काम्याब हो जाऊं तो मैं अच्छा वरना आप के कुत्ते की दुम मुझ से अच्छी है जब कि वोह आप का फ़रमां बरदार व वफ़ादार रहे ।" चूंकि वोह एक बा अ़मल मुबल्लिग़ थे ग़ीबत व चुग़ली, ऐबजूई और बद कलामी नीज़ फ़ुज़ूल गोई वग़ैरा से दूर रहते हुए अपनी ज़बान **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से हमेशा तर रखते थे लिहाज़ा उन की ज़बान से निकले हुए **मीठे बोल** ताषीर का तीर बन कर तग़ूदार ख़ान के दिल में पैवस्त हो गए कि जब उस ने अपने "ज़हरीले कांटे" के जवाब में उस बा अ़मल मुबल्लिग़ की त़रफ़ से "**ख़ुश्बूदार म-दनी फूल**" पाया तो पानी पानी हो गया और नर्मी से बोला : आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه मेरे मेहमान हैं मेरे ही यहां क़ियाम फ़रमाइये ! चुनान्चे आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه उस के पास मुक़ीम हो गए । तग़ूदार ख़ान रोज़ाना रात आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर होता, आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْه निहायत ही शफ़्क़त के साथ उसे **नेकी की दा'वत** पेश करते । आप की सअ्ये पैहम ने तग़ूदार ख़ान के दिल में **म-दनी इनक़िलाब** बरपा कर दिया ! वोही **तग़ूदार ख़ान** जो कल तक इस्लाम को **सफ़्ह़ए** हस्ती से मिटाने के दरपै था आज **इस्लाम का शैदाई** बन चुका था । उसी **बा अ़मल मुबल्लिग़** के हाथों तग़ूदार ख़ान अपनी पूरी तातारी क़ौम समेत मुसलमान हो गया । उस का इस्लामी नाम "**अह़मद**" रखा गया । तारीख़ गवाह है कि एक मुबल्लिग़ के **मीठे बोल** की ब-रकत से वस्ते़ एशिया की ख़ूंख़ार तातारी सल्त़नत इस्लामी हुकूमत से बदल गई । (बयानाते अ़त्तारिय्या, ह़िस्सा : 3, स. 388)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ? मुबल्लिग़ हो तो ऐसा ! अगर तगूदार के तीखे जुम्ले पर वोह बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ गुस्से में आ जाते तो हरगिज़ येह **म-दनी नताइज** बरआमद न होते, लिहाज़ा ऐसे मौक़ओं पर हमें अपने आप पर ख़ूब क़ाबू रखना चाहिये और जब भी **नेकी की दा'वत** पेश करें **प्यार व महब्बत भरा** अन्दाज़ होना चाहिये ।

नेकी की दा'वत देने और **बुराई से रोकने** की फ़ज़ीलतें और ब-रकतें बे शुमार हैं । **क़ुरआने पाक** में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने **नेकी की दा'वत** देने वालों के बारे में इर्शाद फ़रमाया है :

وَمَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَاۤ اِلَى اللّٰهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَّقَالَ اِنَّنِیْ مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ ﴿۳۳﴾ (پ۲۴،حٰمۤ السجدة:۳۳)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : और उस से ज़ियादा किस की बात अच्छी जो **अल्लाह** की तरफ़ बुलाए और नेकी करे और कहे मैं मुसलमान हूं ।*

सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम, शहनशाहे उमम, महबूबे रब्बे अकरम صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर **अल्लाह तआ़ला** तुम्हारे ज़रीए किसी एक को भी हिदायत दे दे तो येह तुम्हारे लिये सुर्ख़ ऊंटों से बेहतर है ।"

(صحیح مسلم، کتاب فضائل الصحابة، باب من فضائل علی بن ابی طالب، الحدیث:۲۴۰۶، ص ۱۳۱۱)

नेकी की दा'वत देने और बुराई से मन्अ़ करने वालों के बे शुमार फ़ज़ाइलो ब-रकात हैं, ह़दीषे पाक का मफ़हूम है कि "**जो क़दम राहे ख़ुदा में ख़ाक आलूद होंगे उन को जहन्नम की आग नहीं छूएगी ।**" (المسند للامام احمد بن حنبل ، حدیث ابی عبس، الحدیث ۱۵۹۳۵،ج۵، ص ۳۹۶)

www.dawateislami.net

अभी दुआ़ के बा'द اِنْ شَآءَاللّٰہعَزَّوَجَلَّ मस्जिद से बाहर जा कर **नेकी की दा'वत** पेश की जाएगी चूंकि नेकी की दा'वत देने वालों का साथ देना भी अ़ज़ीम नेकी है, लिहाज़ा आप भी हमारे साथ इस नेक काम में तआ़वुन फ़रमाएं और अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत में शिर्कत फ़रमाएं। अ़लाक़ाई दौरा बराए **नेकी की दा'वत** में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल करने वाले इस्लामी भाई मेरे सीधे हाथ की त़रफ़ तशरीफ़ ले आएं, اِنْ شَآءَاللّٰہعَزَّوَجَلَّ अ़लाक़ाई दौरा बराए **नेकी की दा'वत** के आदाब बयान किये जाएंगे और जो इस्लामी भाई बाहर नहीं जा सकते वोह मस्जिद ही में तशरीफ़ रखें कि मस्जिद में भी **सुन्नतों भरे दर्स** का सिल्सिला जारी रहेगा। **दर्सो बयान** के षवाब का भी क्या कहना !

जन्नत की बिशारत

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स मेरी उम्मत तक कोई इस्लामी बात पहुंचाए ताकि उस से सुन्नत क़ाइम की जाए या उस से बद मज़हबी दूर की जाए तो वोह जन्नती है।" (حلية الاولياء ج١٠ ص٤٥ حديث١٤٤٦٦)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें **इल्मे दीन** सीखने सिखाने, **नेकी की दा'वत** देने और **बुराई से मन्अ़** करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

★★★★★

www.dawateislami.net

बयान नम्बर 8 :

नेकी की दा'वत

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ **"रसाइले अ़त़्त़ारिय्या"** (ह़िस्सए दुवुम) के सफ़ह़ा **15** पर ह़दीषे पाक नक़्ल फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ात़िर आपस में मह़ब्बत रखने वाले जब बाहम मिलें और **मुसाफ़ह़ा** करें और नबी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर **दुरूदे पाक** भेजें तो उन के जुदा होने से पहले दोनों के **अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये** जाते हैं।"

(مسند ابی یعلی، مسند انس بن مالك، الحديث:۲۹۵۱، ج۳،ص۹۵)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हर चीज़ पर क़ादिर है। वोह किसी भी मुआ़मले में हरगिज़ हरगिज़ किसी का मोह़ताज नहीं। उस ने अपनी क़ुदरते कामिला से दुन्या को बनाया फिर इस को त़रह़ त़रह़ से सजाया और फिर इन्सानों को इस में बसाया और इन्सानों की हिदायत के लिये वक़्तन फ़ वक़्तन अम्बिया व रसुल عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को मबऊ़स फ़रमाया। वोह अगर चाहे तो अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बिग़ैर भी बिगड़े हुए इन्सानों की इस्लाह़ कर सकता है। लेकिन उस की मशिय्यत ही कुछ इस त़रह़ है और उस ने येही पसन्द फ़रमाया कि मेरे बन्दे ही नेकी की दा'वत दें और बुराई से मन्अ़ करें और इस त़रह़

www.dawateislami.net

वोह मेरी राह में मशक़्क़तें झेलें और मेरी बारगाहे आ़ली से द-रजाते रफ़ीआ़ ह़ासिल करें ।

चुनान्चे नेकी की दा'वत देने और बुराई से मन्अ़ करने के मन्सबे आ़ली की बजा आ-वरी के लिये अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ अपने रसूलों और नबियों عَلَیْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को दुन्या में भेजता रहा और आखि़र में अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को भेजा और सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर सिल्सिलए नुबुव्वत को ख़त्म फ़रमाया और फिर येह अ़ज़ीमुश्शान मन्सब अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत के सिपुर्द किया ताकि इस उम्मत के इस्लामी भाई खुद ही आपस में एक दूसरे की इस्लाह़ करते रहें और नेकी की दा'वत के इस अहम फ़रीज़े को अन्जाम देते रहें। अब रहती दुन्या तक हर मुसलमान अपनी अपनी जगह पर मुबल्लिग़ है। अब हम गुलामाने मुस्त़फ़ा ही ने एक दूसरे की इस्लाह़ की कोशिश करनी है । क्यूंकि अब कोई नबी नहीं आएगा । अब नेकी की दा'वत को आ़म करने का अहम मन्सब इस उम्मत के सिपुर्द किया गया है ।

जैसा कि कुरआने मजीद फ़ुरक़ाने ह़मीद में अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया :

كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ
(پ ٤ اٰل عمرٰن: ١١٠)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम बेहतर हो उन सब उम्मतों में जो लोगों में ज़ाहिर हुई भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से मन्अ़ करते हो ।*

www.dawateislami.net

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى "**तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान**" में इस आयत की तफ़्सीर में तह़रीर फ़रमाते हैं : "इस से मा'लूम हुवा कि हर मुसलमान मुबल्लिग़ होना चाहिये, जो मस्अला मा'लूम हो दूसरे को बताए और ख़ुद उस की अपने अ़मल से तब्लीग़ करे।"

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ सह़ाबए किराम और बुज़ुर्गाने दीन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم ने इस काम को अह़सन त़रीक़े से किया है और नेकी की दा'वत के ज़रीए़ से दीने इस्लाम को दुन्या के कोने कोने में पहुंचाया है। हमारे अस्लाफ़ की ऐसी म-दनी सोच हुवा करती थी कि मरते वक़्त भी वोह इस काम को नहीं छोड़ते।

मज़हबे मालिकिय्या के अ़ज़ीमुल मर्तबत पेश्वा और ज़बर दस्त आ़शिक़े रसूल जिन्हों ने अपनी तमाम तर ज़िन्दगी **अम्र बिल मा'रूफ़ व नह्युन अ़निल मुन्कर** में बसर की बिस्तरे मर्ग पर भी इस अहम फ़रीज़े को न भूले। आख़िरी वक़्त भी इस्लामी भाइयों को जो वसिय्यत फ़रमाई उस में **अम्र बिल मा'रूफ़ व नह्युन अ़निल मुन्कर** पर ज़ोर दिया। चुनान्चे आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के आख़िरी कलिमात नक़्ल करते हुए ह़ज़रते यह़्या बिन यह़्या رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "इस के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने रबीअ़ رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की एक रिवायत बयान की, कि "किसी शख़्स को नमाज़ के मसाइल बताना रूए ज़मीन की तमाम दौलत स-दक़ा करने से बेहतर है, और किसी की दीनी उलझन दूर कर देना सो[100] ह़ज करने से अफ़्ज़ल है।" और इब्ने शहाब ज़ोहरी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की रिवायत से बताया कि "किसी शख़्स को दीनी मश्वरा देना सो

www.dawateislami.net

ग़ज़्वात में जिहाद करने से बेहतर है।" ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन यह़्या رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ कहते हैं इस गुफ़्त्गू के बा'द सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने कोई बात नहीं की और अपनी जान जाने आफ़रीन के सिपुर्द कर दी।" (بُستَانُ الْمُحَدِّثِین، ص ٣٩)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن गोया इस बात के मिस्दाक़ थे कि **मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।**

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ नेकी की दा'वत देने वालों और बुराई से मन्अ़ करने वालों से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किस क़दर राज़ी होता है और उन पर किस क़दर रह़मते ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ का नुज़ूल होता है और उन को किस क़दर इन्आ़मात अ़त़ा फ़रमाता है। चुनान्चे

एक साल की इबादत का षवाब

सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ किया ! **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! जो अपने भाई को बुलाए और उसे नेकी का हुक्म करे और बुराई से रोके उस की जज़ा क्या है ? फ़रमाया : "मैं उस की हर बात पर एक साल की इबादत का षवाब लिखता हूं और उसे जहन्नम की सज़ा देने में मुझे ह़या आती है।" (مکاشفة القلوب،ص ٤٨)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि नेकी की दा'वत देने के किस क़दर फ़ज़ाइलो ब-रकात हैं। तो अभी اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ हम भी बाहर जा कर लोगों को नेकी की दा'वत पेश करेंगे। जो नमाज़ नहीं

www.dawateislami.net

पढ़ते उन को नमाज़ों की दा'वत देंगे और जो मस्जिदों से दूर हैं, उन्हें मस्जिद में आने की दा'वत पेश करेंगे और जो सुन्नतों से दूर हैं, उन को सुन्नतों पर अ़मल करने की तरग़ीब दिलाएंगे। ताकि सब मुसलमान **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ और उस के प्यारे मह़बूब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा व ख़ुशनूदी ह़ासिल करने वाले बन जाएं।

अ़लाक़ाई दौरा बराए **नेकी की दा'वत** में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल करने वाले इस्लामी भाई मेरी दाईं जानिब तशरीफ़ ले आएं, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अ़लाक़ाई दौरा बराए **नेकी की दा'वत** के आदाब बयान किये जाएंगे और जो इस्लामी भाई बाहर नहीं जा सकते वोह मस्जिद ही में तशरीफ़ रखें कि मस्जिद में भी **सुन्नतों भरे दर्स** का सिलसिला जारी रहेगा اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

हज़ार रक्अ़त से बेहतर

सरवरे आ़लम, नूरे मुजस्सम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ अबू ज़र ! तेरा सुब्ह़ के वक़्त **किताबुल्लाह** से एक आयत सीखना तेरे लिये सो रक्अ़तें अदा करने से अच्छा है और तेरा सुब्ह़ के वक़्त इ़ल्म की एक बात सीखना हज़ार रक्अ़त नमाज़ पढ़ने से अच्छा है ख़्वाह उस पर अ़मल हो या न हो।"

(سنن ابن ماجه، كتاب السنة، باب فى فضل من تعلم القرآن، الحديث ٢١٩، ج١، ص١٤٢)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ हमें **इ़ल्मे दीन** सीखने सिखाने, **नेकी की दा'वत** देने और **बुराई से मन्अ़** करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

★★★★★

www.dawateislami.net

बयान नम्बर 9 :

नेकी की दा'वत

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले **"कफ़न चोरों के इन्किशाफ़ात"** में ह़दीषे पाक नक़्ल फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : "जब जुमा'रात का दिन आता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़िरिश्तों को भेजता है जिन के पास चांदी के काग़ज़ और सोने के क़लम होते हैं वोह लिखते हैं, कौन यौमे जुमा'रात और शबे जुमुआ़ मुझ पर कषरत से **दुरूदे पाक** पढ़ता है।" (كنزالعمال، ج١،ص٢٥٠،حديث:٢١٧٤)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِيب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हम मुसलमान हैं और मुसलमान का हर काम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ुशनूदी के लिये होना चाहिये। मगर बद क़िस्मती से आज हमारी अकषरिय्यत नेकी के रास्ते से दूर होती जा रही है। शायद इसी वजह से हमें त़रह़ त़रह़ की परेशानियों का सामना है। कोई बीमार है तो कोई क़र्ज़दार, कोई घरेलू ना चाक़ियों का शिकार है तो कोई तंगदस्तो बे रोज़गार, कोई अवलाद का त़लब गार है तो कोई ना फ़रमान अवलाद की वजह से बेज़ार।

अल ग़रज़ हर एक किसी न किसी मुसीबत में गिरिफ़्तार है।

www.dawateislami.net

यक़ीनन येह सब परेशानियां हमारी शामते आ'माल का नतीजा हैं, नजात तमाम जहानों के पालने वाले **अल्लाहो रब्बुल आ-लमीन** جَلَّ جَلَالُهٗ की इत़ाअ़त और मुअमिनीन पर रह़मो करम फ़रमाने वाले रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تعالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों की इत्तिबाअ़ में है।

बुराई से रोकने का अ़ज़ीम जज़्बा

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने हमें जिन आ'माल के करने का हुक्म फ़रमाया उन आ'माल में से बहुत ही अहम तरीन अ़मल नेकी की दा'वत देना और बुराई से मन्अ़ करना है। जो ख़ुश नसीब इस अ़मल को करते हैं **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उन की कैसी मदद फ़रमाता है जैसा कि **वालिये मिस्र** अह़मद बिन तूलून बड़ा ही सफ़्फ़ाक और ख़ूंरेज़ बादशाह था। मगर इस के बा वुजूद उस को मुक़द्दमात में ज़ालिम व मज़्लूम के दरमियान अ़द्ल करने का बड़ा जज़्बा था। एक दिन उस का लड़का अ़ब्बास एक गाने वाली औ़रत के साथ चला जा रहा था और उस का ग़ुलाम हाथ में सितार लिये जा रहा था। एक आ़लिमे बा अ़मल ने येह मन्ज़र देखा तो एक दम नेकी की दा'वत पेश करने का अ़ज़ीम जज़्बा सीने में बेदार हो गया ग़-ज़बो जलाल में बे क़रार हो कर दौड़ पड़े और ग़ुलाम के हाथ से सितार छीन कर ज़मीन पर इस त़रह़ पटख़ दिया कि वोह चूर चूर हो कर बिखर गया। अ़ब्बास ने ग़ज़बनाक हो कर अपने बाप अह़मद बिन तूलून की कचहरी में उस ह़क़्क़ानी आ़लिम رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَيْه पर मुक़द्दमा दाइर कर दिया जब येह पैकरे इल्मो अ़मल कचहरी में पहुंचा तो अह़मद बिन तूलून ने सुवाल किया, क्या वाक़ेई तुम ने सितार तोड़ा है? आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "जी हां!" अह़मद बिन तूलून ने तेवर बदल कर बड़े

www.dawateislami.net

गुस्से में पूछा, क्या तुम्हें इल्म था कि वोह सितार किस का है ? आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : जी हां ! **वोह आप ही के फ़रज़न्द अ़ब्बास का था ।** अह़मद बिन तूलून ने पूछा कि फिर भी तुम ने मेरे ए'ज़ाज़ का कुछ भी ख़याल नहीं रखा ? आ़लिम साहि़ब ने निहायत ही बे ख़ौफ़ी के साथ जवाब दिया आ़लीजाह ! येह क्यूं कर मुमकिन हो सकता है ? कि मैं एक गुनाह होते हुए देखूं और आप के ए'ज़ाज़ के ख़ौफ़ से ख़ामोश रहूं । जब कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ
(پ ۱۰، التوبۃ:۷۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और मुसलमान मर्द और औ़रतें एक दूसरे के रफ़ीक़ हैं, भलाई का हुक्म दें और बुराई से मन्अ़ करें ।*

मीठे मीठे मुस्त़फ़ा, शबे असरा के दूल्हा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे मुबारक है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी में किसी मख़्लूक़ की इत़ाअ़त जाइज़ नहीं है ।"

(المسند للامام احمد بن حنبل،مسند علی بن أبی طالب، الحدیث:۱۰۹۵، ج۱،ص ۶۷۸)

उस मोह़तरम आ़लिम साहि़ब رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَيْه की येह ह़क़ नुमा तक़रीर ताषीर का तीर बन कर अह़मद बिन तूलून के दिल में पैवस्त हो गई । एक दम उस का गुस्सा ठन्डा हो गया और उस ने येह कह दिया कि मैं आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَيْه को मजाज़ बनाता हूं कि आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَيْه पूरे शहर में जो बात भी ख़िलाफ़े शरअ़ देखें उस को बरबाद और तहस नहस कर दें ।

ग़ैरे ह़क़ के सामने मोमिन का सर झुकता नहीं
येह वोह तूफ़ां है पहाड़ों से भी जो रुकता नहीं

प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत से हमें येह दर्स मिला कि अगर कोई जज़्बए इख़्लास के साथ नेकी की दा'वत आ़म करता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के कलाम में ऐसी ताषीर पैदा फ़रमाता है कि सामने वाले चाहे कितने ही सख़्त दिल क्यूं न हों उन के सख़्त दिल भी पिघल कर मोम बन जाते हैं। नेकी की दा'वत की ब–रकत से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन के दिलों में जोशे ईमानी पैदा फ़रमा देता है। और वोह इस्लामी भाई जो पहले मस्जिदों के क़रीब तक नहीं आते थे, नमाज़ें पढ़ने में उन का दिल नहीं लगता था, सुन्नतों पर अ़मल करने का उन को शौक़ तक नहीं होता था, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ नेकी की दा'वत की ब–रकत से उन के अन्दर नमाज़ों का भी जज़्बा पैदा हो जाता है और सुन्नतों पर अ़मल करने का ज़ेहन भी बन जाता है।

याद रखिये कि अगर हमारे नेकी की दा'वत देने पर कोई शख़्स गुनाहों से ताइब हो कर नमाज़ी बन गया, सुन्नतों का आईना दार बन गया तो वोह हमारे लिये षवाबे जारिया का अ़ज़ीम ज़रीआ़ बन जाएगा क्यूंकि ह़दीषे पाक में है : "اِنَّ الدَّالَّ عَلَى الْخَیْرِ کَفَاعِلِہٖ या'नी नेकी की त़रफ़ राहनुमाई करने वाला नेकी करने वाले की त़रह़ है।"

(سنن الترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء الدال علی الخیر، الحدیث ٢٦٧٩، ج٤، ص٣٠٥)

एक और ह़दीषे पाक में है कि "जिस ने हिदायत व भलाई की दा'वत दी उसे उस भलाई की पैरवी करने वालों के बराबर अज्र मिलेगा और उन के षवाब में कोई कमी न होगी और जिस ने किसी को गुमराही की दा'वत दी उसे उस गुमराही की पैरवी करने वालों के बराबर गुनाह होगा और उन के गुनाहों में कमी न होगी।"

(صحیح مسلم، کتاب العلم، باب من سن سنة حسنة، الحدیث ٢٦٧٤، ص١٤٣٨)

www.dawateislami.net

मीठ मीठे इस्लामी भाइयो ! अभी दुआ़ के बा'द اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ मस्जिद से बाहर जा कर लोगों को **नेकी की दा'वत** पेश की जाएगी अगर आप भी हमारे साथ शिर्कत फ़रमाएं तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ आप को ढेरों नेकियां मिलेंगी, **अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत** में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल करने वाले इस्लामी भाई मेरी सीधी जानिब तशरीफ़ ले आएं, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ अ़लाक़ाई दौरा बराए **नेकी की दा'वत** के आदाब बयान किये जाएंगे और जो बाहर नहीं जा सकते वोह मस्जिद ही में तशरीफ़ रखें कि मस्जिद में भी **सुन्नतों भरे दर्स** का सिल्सिला जारी रहेगा اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ । मस्जिद में बैठने से ढेरों नेकियां ह़ासिल होती हैं चुनान्चे

इत़मीनान व सुकून का नुज़ूल

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो क़ौम **किताबुल्लाह** की तिलावत के लिये **अल्लाह तआ़ला** के घरों में से किसी घर में जम्अ़ हो और एक दूसरे के साथ दर्स की तकरार करे तो उन पर (1) सकीना (इत़मीनान व सुकून) नाज़िल होता है (2) रह़मत उन्हें ढांप लेती है (3) फ़िरिश्ते उन्हें घेर लेते हैं (4) और **अल्लाह तआ़ला** उन का ज़िक्र फ़िरिश्तों के सामने फ़रमाता है।"

(صحیح مسلم،کتاب الذکر و الدعا...الخ،باب فضل الاجتماع...الخ،حدیث:۲۶۹۹،ص۱۴۴۷)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें **इल्मे दीन** सीखने सिखाने, **नेकी की दा'वत** देने और **बुराई से मन्अ़** करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم

★★★★★

www.dawateislami.net

बयानाते मग़रिब

बयान नम्बर 1 :

हि़ल्म व बुर्दबारी

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه **"रसाइले अ़त्तारिय्या"** (हि़स्सए दुवुम) के सफ़ह़ा **18** पर ह़दीषे पाक नक़्ल फ़रमाते हैं कि प्यारे आक़ा **मुह़म्मद मुस्त़फ़ा** صَلَّى الله تعَالٰى عَلَيْهِ وَ الِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिसे येह पसन्द हो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पेश होते वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से राज़ी हो, उसे चाहिये कि मुझ पर कषरत से दुरूद शरीफ़ पढ़े ।"

(فردوس الاخبار للدیلمی، الحدیث:۶۰۸۳،ج۲،ص۲۸۴)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللهُ تعالٰی علٰی محمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हि़ल्म व बुर्द-बारी या'नी नर्मी इख़्तियार करने और कोई हम पर ज़ुल्मो ज़ियादती करे उस पर सब्र करने के **फ़ज़ाइल क़ुरआनो ह़दीष** में बे शुमार बयान किये गए हैं चुनान्चे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान है :

وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۳۴﴾

(پ۴،اٰل عمرٰن:۱۳۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और गुस्सा पीने वाले और लोगों से दर गुज़र करने वाले और नेक लोग* ***अल्लाह*** *के मह़बूब हैं ।*

www.dawateislami.net

इस आयते मुबा–रका के तह़्त मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत **मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी** عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡغَنِی तह़रीर फ़रमाते हैं : "इस आयत से चन्द फ़ाएदे ह़ासिल हुए ﴾1﴿ **अल्लाह** तआ़ला के बन्दों पर मेहरबानी करना बेहतरीन इबादत है कि **रब तआ़ला** ने **मुत्तक़ीन** की सिफ़त में पहले इस का ज़िक्र किया, **शैख़ सा'दी** عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡهَادِی फ़रमाते हैं : अगर **ख़ालिक़** की बख़्शिश चाहते हो तो **मख़्लूक़ से भलाई करो** ﴾2﴿ जिन लोगों के साथ (ह़ुस्ने) **सुलूक** करने से नफ़्स रोके उन से (ह़ुस्ने) **सुलूक** करना **बड़ी बहादुरी** है ﴾3﴿ अपने **ज़ाती मुआ़मलात** में लोगों को **मुआ़फ़ी देना** बहुत मह़बूब है ﴾4﴿ जो **ख़ुदा तआ़ला** का मह़बूब बनना चाहे वोह **नेक आ'माल** कर के मोह़सिन बने ।"

बुराई के बदले भलाई

तफ़्सीरे कबीर में है कि **ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام फ़रमाते हैं : "**एह़सान** येह नहीं कि तू भलाई के इवज़ भलाई कर दे, येह तो बदला चुकाना है, **एह़सान येह है** कि जो तेरे साथ बुराई करें तू उन से भलाई कर ।" (التفسیر الکبیر، اٰلِ عِمرٰن، تحت الآیۃ:۱۳٤، ج۳، ص ۳٦۷)

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़बूआ़ **743** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**जन्नत में ले जाने वाले आ'माल**" सफ़ह़ा **559** पर है :

इ़ज़्ज़त में इज़ाफ़ा

ह़ज़रते **सय्यिदुना अबू हुरैरा** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ से रिवायत है कि **सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़**

www.dawateislami.net

रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "स-दक़ा माल में कुछ कमी नहीं करता और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बन्दे के अ़फ़्व व दर गुज़र से काम लेने की वजह से उस की इ़ज़्ज़त में इज़ाफ़ा फ़रमाता है और जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये आ़जिज़ी इख़्तियार करे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस को बुलन्द मर्तबा अ़त़ा फ़रमाता है।"

(صحیح مسلم، کتاب البر والصلة والآداب، باب استحباب العفو والتواضح، الحدیث: ۲۰۸۸، ص۱۳۹۷)

अम्न व हिदायत वाले

ह़ज़रते सय्यिदुना सख़्बरह رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡهُ से रिवायत है कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो बन्दा अ़त़ा पर शुक्र करे, आज़माइश पर सब्र करे, ज़ुल्म कर बैठे तो इस्तिग़फ़ार करे और अगर उस पर ज़ुल्म किया जाए तो मुआ़फ़ कर दे।" येह फ़रमा कर आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ामोश हो गए तो सह़ाबए किराम عَلَیۡهِمُ الرِّضۡوَان ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! उस के लिये क्या है ?" फ़रमाया : "ऐसे लोग ही अम्न और हिदायत वाले हैं।"

(المعجم الکبیرللطبرانی، من اسمه سخبرة الازدی، الحدیث:۶۶۱۳، ج۷، ص۱۳۸)

मुआ़फ़ करो ! मग़फ़िरत पाओ !

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡهُ से रिवायत है कि नबियों के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो

www.dawateislami.net

बर, मह़बूबे रब्बे अकबर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**रह़म** किया करो **तुम पर रह़म किया जाएगा** और **मुआ़फ़** कर दिया करो तुम्हारी मग़्फ़िरत कर दी जाएगी।"

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبد اللّٰه عن عمرو بن العاص،الحديث:٦٥٥٢، ج٢،ص٥٦٥)

बुर्दबारी की आ'ला मिषाल

हज़रते **इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन** رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُ की लौंडी आप को वुज़ू कराने के लिये भरा लौटा लाई, उस के हाथ से वोह लोटा **आप** رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُ पर गिर गया और आप ज़ख़्मी हो गए, **आप** رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُ ने निगाह उठा कर उसे देखा, वोह बोली, **अल्लाह तआ़ला** फ़रमाता है : وَالۡكٰظِمِيۡنَ الۡغَيۡظَ (और गुस्सा पीने वाले) **आप** رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُ ने फ़रमाया : **मैं ने गुस्सा पी लिया**, वोह बोली : وَالۡعَافِيۡنَ عَنِ النَّاسِ (और लोगों से दर गुज़र करने वाले) **आप** رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُ ने फ़रमाया : **रब** عَزَّوَجَلَّ **तुझे मुआ़फ़ी दे** (मैं ने भी मुआ़फ़ किया), वोह बोली : وَاللّٰهُ يُحِبُّ الۡمُحۡسِنِيۡنَ (और एह़सान करने वाले **अल्लाह** के मह़बूब हैं) **आप** رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُ ने फ़रमाया : **जा, तू अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **के लिये आज़ाद है।** (تفسير روح المعانى، اٰلِ عِمرٰن، تحت الآيه:١٣٤، ج٢،ص٣٧٤)

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़बूआ़ **472** सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बयानाते अ़त्तारिय्या**" (हि़स्सए दुवुम) सफ़्ह़ा **22** और **29** पर शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

www.dawateislami.net

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه पेशगी मुआ़फ़ कर देने और ग़ुस्सा ज़ब्त़ करने के बारे में नक़्ल फ़रमाते हैं :

पेशगी मुआ़फ़ करने की फ़ज़ीलत

एह़याउल उ़लूम, जिल्द **3**, सफ़ह़ा **219** में है : एक शख़्स दुआ़ मांग रहा था : "**या अल्लाह** ! मेरे पास **स-दक़ा व ख़ैरात** के लिये कोई माल नहीं बस येही कि **जो मुसलमान मेरी बे इ़ज़्ज़ती करे मैं ने उसे मुआ़फ़ किया ।" सरकार** صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर वह़्य आई : "**हम ने इस बन्दे को बख़्श दिया ।**"

(شعب الايمان للبيهقى، باب فى حسن الخلق، فصل فى التجاوز...الخ،الحديث:٨٠٨٤، ج٦،ص ٢٦١،٢٦٢)

दिल में नूरे ईमान पाने का एक सबब

ह़दीषे पाक में है : "जिस शख़्स ने **ग़ुस्सा ज़ब्त़** कर लिया बा वुजूद इस के कि वोह ग़ुस्सा नाफ़िज़ करने पर क़ुदरत रखता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के **दिल को सुकून व ईमान से भर देगा ।**" (الجامع الصغير للسيوطى،حرف الميم،الحديث:٨٩٩٧،ص ٥٤١) या'नी अगर किसी की त़रफ़ से कोई तक्लीफ़ पहुंच गई और ग़ुस्सा आ गया, येह बदला ले सकता था मगर मह़ज़ रिज़ाए इलाही की ख़ात़िर ग़ुस्सा पी गया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को सुकूने क़ल्ब अ़त़ा फ़रमाएगा और उस का दिल नूरे ईमान से भर देगा ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللّٰهُ تعالٰى على محمَّد

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हि़ल्म व बुर्दबारी का जज़्बा पाने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **आ़शिक़ाने रसूल के साथ म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र भी है, आइये मैं आप को **म-दनी क़ाफ़िले** की **म-दनी बहार** सुनाता हूं : चुनान्चे

मन्डन गढ़ ज़िलअ़ रतना गरी महाराष्ट्र (हिन्द) के एक **इस्लामी भाई** ने बताया कि सिने 2002 ई. की बात है, मैं बुरे दोस्तों की सोह़बत के बाइ़ष गुन्डा गेंग में शामिल हो गया। लोगों को मारना पीटना और गालियां बकना मेरा मा'मूल था, जान बूझ कर झगड़े मोल लेता, जो नया फ़ेशन आता सब से पहले मैं अपनाता, दिन में कई बार कपड़े तबदील करता सिवाए जीन्ज़ (jeans) के दूसरी पेन्ट न पहनता, आवारा दोस्तों के साथ घूम फिर कर रात गए तक घर लौटता और दिन चढ़े तक सोता रहता। वालिद साह़िब का इन्तिक़ाल हो चुका था, **बेवा मां समझाती** तो مَعَاذَاللّٰہ ज़बान दराज़ी करता था। **एक** मरतबा **दा'वते इस्लामी** के किसी **बा इमामा इस्लामी भाई** ने **मुलाक़ात** पर एक रिसाला **"जिन्नात का बादशाह"** (मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना) तोह़फ़े में दिया, **पढ़ा तो अच्छा लगा।**

र-मज़ानुल मुबारक में एक दिन किसी **मस्जिद** में जाने की **सआ़दत** मिली तो **इत्तिफ़ाक़** से एक **सब्ज़ सब्ज़ इमामे और सफ़ेद लिबास** में मल्बूस **सन्जीदा नौ जवान** पर नज़र पड़ी मा'लूम हुवा येह यहां **मो'तकिफ़** हैं। उन्हों ने **दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत** दिया तो मैं बैठ गया। बा'दे दर्स उन्हों ने मुझ पर **इनफ़िरादी कोशिश** करते हुए **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल की ब-रकतें** बताईं।

www.dawateislami.net

उन इस्लामी भाई का लिबास **इस क़दर सादा** था कि **बा'ज़ जगह पैवन्द** तक लगे हुए थे, जब उन के लिये **घर से खाना** आया तो वोह भी **बिल्कुल सादा** था ! मैं उन की **सादगी से बहुत ज़ियादा मुतअस्सिर** हुवा, मुझे उन से **मह़ब्बत** हो गई, मैं उन से मुलाक़ात के लिये आने जाने लगा। **इत्तिफ़ाक़** से **ईदुल फ़ित्र** के बा'द उन **इस्लामी भाई** का **निकाह़** था। येह बेचारे ग़रीब व तंगदस्त थे मगर **ह़ैरत की बात** येह थी कि उन्हों ने इस बात का मुझे **ज़रा भी एह़सास नहीं** होने दिया और न ही किसी क़िस्म की माली इमदाद के लिये सुवाल किया। मैं और ज़ियादा **मुतअस्सिर** हुवा कि مَاشَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी का म-दनी माह़ोल कितना प्यारा है** और इस के **वाबस्तगान किस क़दर सादा और ख़ुद्दार** हैं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की **मह़ब्बत** मेरे दिल में घर करती चली गई **ह़त्ता कि** मैं ने **आ़शिक़ाने रसूल** के हमराह "**8 दिन**" के **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र किया। मेरे **दिल की दुन्या ज़ेरो ज़बर** हो गई, **क़ल्ब** में **म-दनी इनक़िलाब** बरपा हो गया और मैं ने **गुनाहों से सच्ची तौबा** कर के अपनी ज़ात को **दा'वते इस्लामी** के ह़वाले कर दिया।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुझ पर वोह **म-दनी रंग** चढ़ा कि आज कल मैं **अ़लाक़ाई मुशा-वरत** के ख़ादिम (निगरान) की हैसिय्यत से अपने **अ़लाक़े** में **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी कामों** की **धूमें मचा रहा हूं।**

www.dawateislami.net

सादगी चाहिये आ़जिज़ी चाहिये
आप को गर चलें क़ाफ़िले में चलो
ख़ूब ख़ुद्दारियां और ख़ुश अख़्लाक़ियां
आइये सीख लें क़ाफ़िले में चलो
आ़शिक़ाने रसूल लाए सुन्नत के फूल
आओ लेने चलें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब : आदाबे त़आ़म, जि. 1, स. 224)

मीठ मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए **सुन्नत की फ़ज़ीलत** और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। **ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शमए़ बज़्मे हिदायत, नोशए़ बज़्मे जन्नत** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस ने **मेरी सुन्नत** से **मह़ब्बत** की उस ने मुझ से **मह़ब्बत** की और जिस ने मुझ से **मह़ब्बत** की वोह **जन्नत में मेरे साथ** होगा।"

(تاریخ مدینۃ دمشق لابن عساکر، انس بن مالك، ج۹، ص۳٤۳)

लिहाज़ा **हाथ मिलाने के 14 म-दनी फूल** क़बूल फ़रमाइये,

(इस किताब के सफ़ह़ा नम्बर **549** से बयान करें)

★★★★★

बयान नम्बर 2 :

राहे ख़ुदा में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **"रसाइले अ़त्त़ारिय्या"** (ह़िस्सए दुवुम) के सफ़ह़ा **15** पर ह़दीषे पाक नक़्ल फ़रमाते हैं : **"मुझ पर दुरूदे पाक की कषरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है ।"**

(مسند ابی یعلی، مسند ابی ھریرۃ،الحدیث:٦٣٨٣،ج٥،ص٤٥٨)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़बूआ़ **1548** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"फ़ैज़ाने सुन्नत"** सफ़ह़ा **403** पर है :

गुंधा हुवा आटा दे दिया

ह़ज़रते सय्यिदुना **ह़बीब अ़-जमी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی के दरवाज़े पर एक साइल ने सदा लगाई, आप की ज़ौजए मोह़्-त-रमा गुंधा हुवा आटा रख कर पड़ोस से आग लेने गई थीं ताकि रोटी पकाएं । आप ने वोही आटा उठा कर साइल को दे दिया, जब वोह आग ले कर आईं तो आटा नदारद (या'नी ग़ाइब) । आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : उसे रोटी पकाने के लिये ले गए हैं, बहुत पूछा तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَيْه

www.dawateislami.net

ने ख़ैरात कर देने का वाक़िआ़ बताया वोह बोलीं : سُبْحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ ! येह तो अच्छी बात है मगर हमें भी तो कुछ खाने के लिये दरकार है ! इतने में एक शख़्स एक बड़ी लगन में भर कर गोश्त और रोटी ले आया। आप رَحْمَۃُاللہِ تعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : देखो तुम्हें किस क़दर जल्द लौटा दिया गया, गोया रोटी भी पका दी और गोश्त का सालन मज़ीद भेज दिया ! (روض الریاحین، الفصل الثانی فی اثبات کرامات الاولیاء، حکایۃ نمبر۳۲۸،ص۲۷۶)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

स-दक़ा करने से माल कम नहीं होता

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **राहे ख़ुदा** में दी जाने वाली चीज़ हरगिज़ ज़ाएअ़ नहीं होती, आख़िरत में **अज्रो षवाब** की ह़क़दारी तो है ही, बा'ज़ अवक़ात दुन्या में भी इज़ाफ़े के साथ हाथों हाथ इस का ने'मल बदल अ़त़ा किया जाता है और येह यक़ीनी बात है कि **राहे ख़ुदा** में देने से बढ़ता है घटता नहीं जैसा कि ह़ज़रते **सय्यिदुना अबू हुरैरा** رَضِیَ اللہُ تعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : **दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की म-दनी सरकार, मह़बूबे परवर दगार** صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **स-दक़ा माल में कमी नहीं करता** और **अल्लाह तआ़ला मुआ़फ़ करने की वजह से बन्दे की इ़ज़्ज़त ही बढ़ाता है** और जो **अल्लाह तआ़ला** की रिज़ा की ख़ात़िर इनकिसारी करता है तो **अल्लाह तआ़ला** उसे बुलन्दी अ़त़ा फ़रमाता है।

(صحیح مسلم،کتاب البر والصلۃ، باب استحباب العفو والتواضع، الحدیث: ۲۵۸۸، ص۱۳۹۷)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कुरआने पाक में **स-दक़ा व ख़ैरात** करने वालों के **बे शुमार फ़ज़ाइल** बयान किये गए हैं, चुनान्चे **इर्शादे बारी तआ़ला** है :

" فِيْهِ ۚ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ۙ۝ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۙ۝ "

(پ ١، البقرة:٢،٣)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *इस में हिदायत है डर वालों को वोह जो बे देखे ईमान लाएं और नमाज़ क़ाइम रखें और हमारी दी हुई रोज़ी में से* ***हमारी राह में उठाएं ।***

"**हमारी राह में उठाएं**" की तफ़्सीर में सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना **सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : राहे ख़ुदा में ख़र्च करने से या **ज़कात** मुराद है या **मुत्लक़ इन्फ़ाक़**, ख़्वाह फ़र्ज़ व वाजिब हो जैसे ज़कात, नज़्र, अपना और अपने अहल का न-फ़क़ा वग़ैरा, ख़्वाह **मुस्तह़ब** जैसे स-दक़ाते नाफ़िला, अम्वात का ईसाले षवाब । ग्यारहवीं, फ़ातिह़ा, तीजा, चालीसवां वग़ैरा भी इस में दाख़िल हैं कि वोह सब **स-दक़ाते नाफ़िला** हैं और कुरआने पाक व कलिमा शरीफ़ का पढ़ना, नेकी के साथ और नेकी मिला कर अज्रो षवाब बढ़ाता है ।

" رَزَقْنٰهُمْ " की तफ़्सीर में सदरुल अफ़ाज़िल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इर्शाद फ़रमाते हैं : **रिज़्क़** को अपनी त़रफ़ निस्बत फ़रमा कर ज़ाहिर फ़रमाया कि **माल** तुम्हारा पैदा किया हुवा नहीं, हमारा अ़त़ा फ़रमाया

www.dawateislami.net

हुवा है, इस को अगर हमारे हुक्म से हमारी राह में ख़र्च न करो तो तुम निहायत ही बख़ील हो और येह **बुख़्ल निहायत क़बीह़ ।**

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

स-दक़ा आग से पर्दा है

ह़ज़रते **मैमूना बिन्ते सा'द** رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھَا से मरवी है कि आप ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى الله تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! स-दक़े के बारे में हमारी राहनुमाई फ़रमाइये। फ़रमाया : जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ातिर स-दक़ा करे तो वोह (स-दक़ा) उस के और आग के दरमियान पर्दा बन जाता है। (المعجم الکبیر للطبرانی،الحدیث:٦٢،ج٢٥،ص٣٥)

स-दक़ा कोताहियों को मिटाता है

सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّى الله تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**स-दक़ा कोताहियों को यूं मिटाता है जैसे आग को पानी ।**" (فردوس الاخبار للدیلمی،الحدیث:٣٦٤٩،ج٢،ص٣٤)

स-दक़ा देने वालों के लिये क़ब्र की गर्मी से ह़िफ़ाज़त और बरोज़े क़ियामत सायए रह़मत के ह़ुसूल की बिशारत है, चुनान्चे ह़दीष शरीफ़ में है :

क़ब्र में राह़त, क़ियामत में साया

ह़ुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى الله تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "बेशक स-दक़ा करने वालों को

www.dawateislami.net

स-दक़ा क़ब्र की गर्मी से बचाता है और बिला शुबा मुसलमान क़ियामत के दिन अपने स-दक़े के साए में होगा।"

(شعب الایمان للبیهقی، باب فی الزکاۃ،التحریض علی صدقۃ التطوع،الحدیث:۳۳٤۷، ج۳،ص۲۱۲)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمّد

बुराई के सत्तर दरवाज़े बन्द

रहमते आलम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "स-दक़ा बुराई के सत्तर दरवाज़े बन्द करता है।" (المعجم الکبیر للطبرانی،الحدیث:٤٤٠٢،ج٤،ص١٠٩)

सुब्ह सवेरे स-दक़ा दो

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल, रसूले मक़्बूल, बीबी आमिना के महकते फूल صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "सुब्ह सवेरे स-दक़ा दो कि "बला" स-दक़े से आगे क़दम नहीं बढ़ाती।"

(شعب الایمان للبیهقی،باب فی الزکاۃ،التحریض علی صدقۃ التطوع، الحدیث:۳۳۵۳،ج۳،ص۲۱٤)

बुरी मौत से हिफ़ाज़त

शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइषे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ख़ुश ख़ुल्क़ी ब-रकत है और बद ख़ुल्क़ी

www.dawateislami.net

नुहूसत और स-दक़ा बुरी मौत से बचाता है और नेकी उ़म्र बढ़ाती है।"

(مشکاۃ المصابیح،کتاب النکاح،باب النفقات...الخ،الحدیث:۳۳۵۹، ج۱، ص۶۱۶)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मुसलमान का स-दक़ा

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "बेशक मुसलमान का स-दक़ा उ़म्र बढ़ाता है और बुरी मौत को रोकता है और अल्लाह तआ़ला इस की ब-रकत से स-दक़ा देने वाले से तकब्बुर व तफ़ाख़ुर दूर कर देता है।"

(المعجم الکبیر للطبرانی،الحدیث:۳۱،ج۱۷،ص۲۲)

कुछ न कुछ स-दक़ा करें

ह़ज़रते उम्मे बुजैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है, फ़रमाती हैं : मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे दरवाज़े पर कोई मिस्कीन आता है और मैं उसे देने के लिये कोई चीज़ नहीं पाती। तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अगर तुम्हारे पास उसे देने के लिये जले हुए खुर के सिवा कुछ न हो तो वोही उसे दे दो।"

(سنن ابی داود،کتاب الزکاۃ،باب حق السائل،الحدیث:۱۶۶۷،ج۲،ص۲۱۰)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

www.dawateislami.net

सख़ी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के क़रीब है

नबिय्ये मुकर्रम, रसूले मुहूतशम, शफ़ीए़ मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**सख़ी, अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के **क़रीब** है, **जन्नत** के क़रीब है, **लोगों** के क़रीब है, **जहन्नम** से दूर है और **बख़ील, अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से **दूर** है, **जन्नत** से **दूर** है, **लोगों** से दूर है, **जहन्नम** से क़रीब है और **जाहिल सख़ी, बख़ील आ़बिद से अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **के नज़दिक ज़ियादा प्यारा है।**"

(سنن الترمذی،ج۳، ص۳۸۷،حدیث:۱۹۶۸)

हर मुसलमान पर स-दक़ा है

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "हर मुसलमान पर **स-दक़ा** है।" अ़र्ज़ की गई : अगर न पाए ? फ़रमाया : अपने हाथ से काम करे, अपने को नफ़्अ़ पहुंचाए और **स-दक़ा** भी दे। अ़र्ज़ की : अगर इस की इस्तित़ाअ़त न हो या न करे ? फ़रमाया : साहि़बे ह़ाजत परेशान की इआ़नत करे। अ़र्ज़ की : अगर येह भी न करे ? फ़रमाया : नेकी का हुक्म करे। अ़र्ज़ की : अगर येह भी न करे ? फ़रमाया : "**शर से बाज़ रहे कि येही उस के लिये स-दक़ा है।**"

(صحیح بخاری،ج٤،ص١٠٥،حدیث:٦٠٢٢)

अहल पर ख़र्च करना स-दक़ा है

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **के ह़बीब** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मुसलमान जो कुछ अपने अहल पर ख़र्च करता है, अगर षवाब के लिये है तो येह भी **स-दक़ा** है।"

(صحیح البخاری،کتاب النفقات،باب فضل النفقة ...الخ، الحدیث:۵۳۵۱، ج۳، ص۵۱۱)

www.dawateislami.net

स-दक़ा भी और सिलए रेह़्मी भी

शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰه تعالٰی عَلَيْهِ و اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मिस्कीन को स-दक़ा देना सिर्फ़ स-दक़ा है और रिश्ते वाले को देना, स-दक़ा भी है और सिलए रेह़्मी भी।" (سنن الترمذی، ج۲، ص۱٤۲، حدیث: ٦٥٨)

कूंएं से भरने से पानी बढ़ता है

मुफ़स्सिरे शहीर, **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते **मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : **ज़कात देने वाले की ज़कात हर साल बढ़ती ही रहती है,** येह तजरिबा है, जो किसान खेत में बीज फेंक आता है वोह ब ज़ाहिर बोरियां ख़ाली कर लेता है लेकिन ह़क़ीक़त में मअ़ इज़ाफ़ा के भर लेता है। घर की बोरियां चूहे, सुरसुरी वग़ैरा की आफ़ात से हलाक हो जाती हैं या येह मत़लब है कि जिस माल में से स-दक़ा निकलता रहे उस में से ख़र्च करते रहो, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बढ़ता ही रहेगा, कूंएं का पानी भरे जाओ, तो बढ़े ही जाएगा।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 3, स. 93)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صلَّی اللّٰهُ تعالٰی علٰی محمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **राहे ख़ुदा में ख़र्च करने का जज़्बा पाने, नमाज़ों** और **सुन्नतों** की **आ़दत** बनाने के लिये **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** से हर दम वाबस्ता रहिये, **सुन्नतों की तरबिय्यत** के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ **सुन्नतों भरा सफ़र** कीजिये और **काम्याब ज़िन्दगी** गुज़ारने और **आख़िरत संवारने** के लिये **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ अ़मल कर के **रोज़ाना फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए़ **रिसाला** पुर कीजिये और **हर**

www.dawateislami.net

म-दनी माह की **10 तारीख़** के अन्दर अन्दर अपने **ज़िम्मेदार** को जम्अ़ करवाइये। आप की **तरग़ीब** के लिये एक **म-दनी बहार** गोश गुज़ार करता हूं **चुनान्चे**

सख्खर शहर (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के एक **इस्लामी भाई** का कुछ इस त़रह़ बयान है : मैं **पक्का दुन्यादार** था और मुझ पर हर वक़्त **दुन्या का धन** कमाने की **धुन सुवार** रहती थी, **अ़-मली दुन्या** से बहुत दूर **गुनाहों की अंधेरी वादियों** में **भटक** रहा था। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ बा'ज़ **आ़शिक़ाने रसूल** की मुझ पर **मीठी नज़र** पड़ गई वोह **र-मज़ानुल मुबारक** में बार बार मेरे पास तशरीफ़ लाते और मुझे **इजतिमाई ए'तिकाफ़** की **दा'वत** देते मगर मैं टाल दिया करता। वोह बहुत मंझे हुए थे, गोया मायूस होना नहीं जानते थे, उन्हों ने मुझे मेरे ह़ाल पर छोड़ना गवारा न किया, मुझे **नेकी की दा'वत** दे कर अपना **षवाब खरा** करते रहे ! उन की **पैहम इनफ़िरादी कोशिश** के नतीजे में मुझ पापी व बदकार पक्के दुन्यादार का **दिल भी आख़िर कार पसीज ही गया** और मैं **आख़िरी अ़-श-रए र-मज़ानुल मुबारक** (ग़ालिबन 1410 सि.हि., 1990 सि. ई.) में उन के साथ **मो'तकिफ़** हो गया। मुझ दुन्यादार को क्या मा'लूम था कि आ़शिक़ों की दुन्या ही कोई और होती है ! वाक़ेई **आ़शिक़ाने रसूल की सोहबत** ने मुझ पर **रंग** चढ़ा दिया, اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ मैं **नमाज़ी** बन गया, मैं ने **दाढ़ी** रख ली और **इमामा शरीफ़ का ताज** सजा लिया। **तह़दीषे ने'मत** के लिये एक बात अ़र्ज़ करता हूं : मुझे वहां येह **मस्अला** भी सीखने को मिला कि **क़िब्ले की त़रफ़ रुख़ या पीठ किये पेशाब वग़ैरा करना ह़राम है**। सूए इत्तिफ़ाक़ से **ए'तिकाफ़**

www.dawateislami.net

वाली **मस्जिद** के इस्तिन्जा ख़ानों का **रुख़ ग़लत़** था। मैं ने **रिज़ाए इलाही** عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर **हाथों हाथ** कारीगरों को बुलवा कर **अपनी जेब से अख़राजात पेश कर के** इस्तिन्जा ख़ानों के **रुख़ दुरुस्त** करवा लिये। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **ए'तिकाफ़** के बा'द से अब तक कई बार **आशिक़ाने रसूल** के हमराह **सुन्नतों** की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िलों** में **सुन्नतों भरे सफ़र की सआदतें** मिल चुकी हैं।

हुब्बे दुन्या से दिल पाक हो जाएगा — म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
जामे इश्क़े नबी हाथ में आएगा — म-दनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

(फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब : फ़ैज़ाने र-मज़ान, जि. 1, स. 1471)

मीठ मीठे इस्लामी भाइयो! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए **सुन्नत की फ़ज़ीलत** और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआदत ह़ासिल करता हूं।

नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़लाक صَلَّی اللّٰہ تَعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस ने **मेरी सुन्नत** से **महब्बत** की उस ने मुझ से **महब्बत** की और जिस ने मुझ से **महब्बत** की वोह **जन्नत में मेरे साथ** होगा।"

(تاریخ مدینۃ دمشق لابن عساکر، انس بن مالک،ج۹، ص۳۴۳)

लिहाज़ा **बात चीत के 12 म-दनी फूल** क़बूल फ़रमाइये,

(इस किताब के सफ़ह़ा नम्बर 554 से बयान करें)

★★★★★

www.dawateislami.net

बयान नम्बर 3 :

दुन्या की मज़म्मत

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **"बयानाते अ़त्तारिय्या"** (ह़िस्सए अव्वल) सफ़ह़ा **288** पर ह़दीषे पाक नक़्ल फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने मुझ पर दिन भर में **एक हज़ार मरतबा दुरूदे पाक** पढ़ा वोह उस वक़्त तक **नहीं मरेगा जब तक जन्नत में अपनी जगह न देख ले ।"**

(الترغيب و الترهيب، كتاب الذكر والدعاء،الترغيب فى اكثار الصلاة...الخ، الحديث:٢٥٩١، ج٢، ص٣٢٦)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللّٰهُ تعالٰى على محمَّد

वीरान मह़ल

ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى बयान फ़रमाते हैं कि मेरा एक बार कूफ़ा जाना हुवा, वहां एक सरमाया दार के आ़लीशान मह़ल पर मेरी नज़र पड़ी जिस से ऐ़शो **तनअ़ुम** ख़ूब झलक रहा था, दरवाज़े पर ग़ुलामों (नोकरों) का झुरमट था और दरीचे में एक ख़ुश गुलू कनीज़ येह नग़्मा अलाप रही थी :

اَلا يَا دَارُ لا يَدْخُلكِ حُزْنٌ   وَ لا يَعْبَثْ بِسَاكِنِكِ الزَّمَانُ

www.dawateislami.net

या'नी ऐ मकान ! तुझ में कभी ग़म न दाख़िल हो ! और तेरे अन्दर रहने वालों को ज़माना कभी भी पामाल न करे ।

कुछ अ़र्से बा'द मेरा फिर उस मह़ल से गुज़र हुवा तो उस के दरवाज़े पर सियाही छा रही थी, नोकर चाकर ग़ाइब थे और उस **वीरान मह़ल** पर बोसीदगी व शिकस्तगी के आषार नुमायां थे । ज़बाने ह़ाल, मरूरे ज़माना के हाथों उस की ना पाएदारी ज़ाहिर कर रही थी । फ़ना के क़लम ने उस की दीवारों पर आराइश व ज़ैबाइश की जगह बरबादी व इ़ब्रत को इ़बारत कर दिया था और अब वहां ख़ुशी व मुसर्रत के बजाए फ़ना की लै में रन्जो वह़शत का नग़मा गूंज रहा था ।

मैं ने उस मह़ल की वह़शत अंगेज़ वीरानी के बारे में दरयाफ़्त किया तो मा'लूम हुवा कि सरमाया दार मर गया, ख़ुद्दाम रुख़्सत हो गए, भरा घर उजड़ गया, **अ़ज़ीमुश्शान मह़ल वीरान हो गया,** जहां हर वक़्त लोगों की आ-मदो रफ़्त से रौनक़ रहती थी अब वहां सन्नाटा छा गया ।

ह़ज़रते जुनैद बग़दादी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡهَادِی फ़रमाते हैं : "मैं ने उस **वीरान मह़ल** का दरवाज़ा खट खटाया तो एक कनीज़ की नह़ीफ़ (या'नी कमज़ोर) आवाज़ आई, मैं ने उस से पूछा : इस **मह़ल की शानो शौकत** और इस की चमक दमक कहां गई ? इस की रोशनियां, इस के जगमग जगमग करते क़ुमक़ुमे क्या हुए ? और इस में बसने वालों पर क्या बीती ? मेरे इस्तिफ़्सार पर वोह बूढ़ी कनीज़ अश्कबार हो गई और उस ने **वीरान मह़ल की दास्ताने ग़म**

www.dawateislami.net

निशान सुनाना शुरूअ़ की और कहा : इस के मकीन (या'नी रहने वाले) आ़रिज़ी तौ़र पर यहां रिहाइश पज़ीर थे, उन की **तक़्दीर** ने उन को **क़स्र** से **क़ब्र** में मुन्तक़िल कर दिया। इस **वीरान मह़ल** में रहने वाले हर फ़र्दे ख़ुशह़ाल और इस के सारे अस्बाबो माल को ज़वाल लग गया, और येह कोई नई बात नहीं, **दुन्या का तो येही दस्तूर है कि जो भी इस में आता और ख़ुशियों का गन्ज पाता है बिल आख़िर वोह मौत का रन्ज पाता और वीरान क़ब्रिस्तान में पहुंच जाता है।** जो इस दुन्या से **वफ़ा** करता है येह उस के साथ **बे वफ़ाई** ज़रूर करती है। मैं ने उस कनीज़ से कहा : एक बार मैं यहां से गुज़रा था तो इस दरीचे में एक कनीज़ येह नग़मा गा रही थी :

اَلَا یَا دَارُ لَا یَدْخُلْکِ حُزْنٌ   وَ لَا یَعْبَثْ بِسَاکِنِکِ الزَّمَانُ

या'नी ऐ मकान *! तुझ में कभी ग़म न दाख़िल हो ! और तेरे अन्दर रहने वालों को ज़माना कभी भी पामाल न करे।*

वोह कनीज़ बिलक बिलक कर रोने लगी और बोली : वोह **बद नसीब गुलूकारा** मैं ही हूं, इस वीरान मह़ल के मकीनों में से मेरे सिवा अब कोई ज़िन्दा नहीं रहा। फिर उस ने एक आहे सर्द दिले पुर दर्द से खींच कर कहा : **अफ़सोस है उस पर जो येह सब कुछ देख कर भी (फ़ानी) दुन्या के धोके में मुब्तला रहते हुए अपनी मौत से ग़ाफ़िल हो जाए।"** (روض الرياحين،الحكاية الرابعة عشرة بعد المئتين،ص٢٠٤)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

www.dawateislami.net

इब्रत ही इब्रत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **वीरान मह़ल** की ह़िकायत अपने मकीनों के फ़ना के हाथों मौत के घाट उतरने का कैसा इब्रतनाक मन्ज़र पेश कर रही है ! आह ! वोह लोग फ़ानी दुन्या की आसाइशों के बाइ़ष मसरूरो शादां, ज़वाल व फ़ना से बे ख़ौफ़, मौत के तसव्वुर से ना आशना, लज़्ज़ाते दुन्या में बद मस्त थे । इस दारे ना पाएदार में यकायक मौत से हम कनार होने के अन्देशे से ना बलद, पुख़्ता व उ़म्दा मकानात की ता'मीरात करने, उन को दीदा ज़ैब अश्या से मुज़य्यन (DECORATE) करने में मसरूफ़ थे **क़ब्र** के अंधेरों और इस की वह़्शतों से बे नियाज़ जगमग जगमग करती क़िन्दीलों और **क़ुमक़ुमों** से अपने मकानों को रोशन करने में मश्ग़ूल थे, अहलो इ़याल की आ़रिज़ी उन्सिय्यत, दोस्तों की वक़्ती मुसा–ह़बत और ख़ुद्दाम की ख़ुशा–मदाना ख़िदमत के भरम में **क़ब्र** की तन्हाई को भूले हुए थे, मगर आह ! यकायक फ़ना का बादल गरजा, मौत की आंधी चली और दुन्या में ता देर रहने की उन की उम्मीदें ख़ाक में मिल कर रह गईं, उन के मुसर्रतों और शादमानियों से हंसते बसते घर मौत ने वीरान कर दिये । रोशनियों से जग–मगाते क़ुसूर से घुप अंधेरी क़ुबूर में उन्हें मुन्तक़िल कर दिया गया । **आह !** वोह लोग कल तक अहलो इ़याल की रौनक़ों में शादां व मसरूर थे और आज **क़ुबूर** की वह़्शतों और तन्हाइयों में मग़मूम व रन्जूर हैं ।

www.dawateislami.net

अजल ने न किस्रा ही छोड़ा न दारा　　इसी से सिकन्दर सा फ़ातेह़ भी हारा

हर इक ले के क्या क्या न ह़सरत सिधारा　　पड़ा रह गया सब यूंही ठाठ सारा

जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है

येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

दुन्या का धोका

इस ह़िकायत के आख़िर में कनीज़ की नसीह़त में भी इ़ब्रत के **बे शुमार म-दनी फूल** हैं, मगर अफ़सोस है उस पर जो दुन्या की नैरंगियां देखने के बा वुजूद भी इस के धोके में मुब्तला रहे और मौत से यकसर ग़ाफ़िल हो जाए। वाक़ेई़ जो दुन्यावी ज़िन्दगी के धोके में पड़ कर अपनी मौत और **क़ब्र** व ह़श्र को भूल जाए और **अल्लाह तआ़ला** को राज़ी करने के लिये अ़मल न करे, निहायत ही क़ाबिले मज़म्मत है। इस धोके से बचने के लिये हमें **हमारा परवर दगार** ख़ुद **तम्बीह** फ़रमा रहा है, चुनान्चे पारह **22 सू-रतुल फ़ात़िर** की आयत नम्बर **5** में इर्शाद होता है :

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وقفة وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۝

(پ ۲۲، الفاطر: ۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ लोगो बेशक **अल्लाह** का वा'दा सच है तो हरगिज़ तुम्हें धोका न दे दुन्या की ज़िन्दगी और हरगिज़ तुम्हें **अल्लाह** के ह़िल्म पर फ़रेब न दे वोह बड़ा फ़रेबी (या'नी शैत़ान)।*

www.dawateislami.net

यक़ीनन जो मौत और इस के बा'द वाले मुआ़मलात से आगाह है वोह दुन्या की रंगीनियों और इस की आसाइशों के धोके में नहीं पड़ सकता।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

बांस की झोंपड़ी

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते **सय्यिदुना नूह़** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام ने एक सादा सी बांस की झोंपड़ी में रिहाइश इख़्तियार फ़रमाई, अ़र्ज़ किया गया : बेहतर था कि **आप** कोई उ़म्दा मकान ता'मीर फ़रमा लेते, **फ़रमाया :** जो मर जाएगा (या'नी जिस को मौत का यक़ीन है) उस के लिये येह भी बहुत है।

(العقد الفرید، کتاب الزمردۃ فی المواعظ و الزھد، قولھم فی الموت، ج۳، ص۱۳۶)

जहां ताक में हर घड़ी हो अजल भी — वोह है ऐशो इ़शरत का कोई मह़ल भी
येह जीने का अन्दाज़ अपना बदल भी — बस अब अपने इस जहल से तू निकल भी

जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

सब से बेहतर ज़ादे राह

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना **उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْعَزِیْز ने अपने एक **ख़ुत़्बे** में इर्शाद फ़रमाया : ऐ लोगो ! दुन्या तुम्हारा बाक़ी रहने वाला ठिकाना नहीं है येह तो वोह दारे

www.dawateislami.net

ना पाएदार है जिस के लिये **अल्लाह** तआ़ला ने, फ़ना होना और इस के रहने वालों पर यहां से रुख़्सत हो जाना लिख दिया है। **अ़न क़रीब** मज़्बूत़ और आबाद मकान टूट फूट कर वीरान हो जाएंगे और इन मकानात के कितने ही ऐसे मकीन जिन पर रश्क किया जाता है **ब उ़ज्लत** तमाम (या'नी जल्द तर) रुख़्सत हो जाएंगे, पस **ऐ लोगो** ! **अल्लाह** तआ़ला तुम पर रह़्म फ़रमाए इस (दुन्या) में से उ़म्दा चीज़ (या'नी नेकियां) ले कर अच्छे ह़ाल में निकलो और तोशए सफ़र ले लो। पस **बेहतरीन तोशा तक़्वा व परहेज़ गारी है।**

(احیاء علوم الدین، کتاب ذکر الموت و ما بعدہ، الباب الثانی، ج۵، ص۲۰۱)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

दुन्या बरबाद हो कर रहेगी

करोड़ों शाफ़ेइय्यों के अ़ज़ीम पेशवा ह़ज़रते सय्यिदुना **इमाम शाफ़ेई** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने एक बार बयान में इर्शाद फ़रमाया : "**बेशक दुन्या फिसलने की जगह और ज़िल्लत का घर है,** इस की आबादी बरबाद होने वाली और इस के साकिनीन या'नी बाशिन्दे क़ब्रों में पहुंचने वाले हैं, इस का ह़ुसूल इस से जुदाई पर मौक़ूफ़ है और इस की दौलत मन्दी, तंगदस्ती की त़रफ़ फिरने वाली है, इस में ज़ियादती ह़क़ीक़त में तंगी है और इस में तंगी दर अस्ल आसानी है, पस **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में **घबरा कर तौबा कर** और उस के **अ़त़ा कर्दा रिज़्क़ पर राज़ी रह,** दारे बक़ा (या'नी आख़िरत) के अज्र को दारे फ़ना (या'नी दुन्या) के बदले में ज़ाएअ़ न कर, तेरी ज़िन्दगी

www.dawateislami.net

ढलता साया और गिरती दीवार है, अपने अ़मल में ज़ियादती और अमल (या'नी दुन्यावी उम्मीद) में कमी कर।"

(الزهد و قصر الامل، ازهد الناس و اجود الناس، ص ٦١)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

दुन्या आख़िरत की तय्यारी के लिये मख़्सूस है

हज़रते सय्यिदुना **उ़षमाने ग़नी** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने सब से **आख़िरी ख़ुत़्बा** जो इर्शाद फ़रमाया उस में येह भी है : "**अल्लाह** तआ़ला ने तुम्हें दुन्या मह़ज़ इस लिये अ़त़ा फ़रमाई है कि तुम इस के ज़रीए़ **आख़िरत की तय्यारी** करो और इस लिये अ़त़ा नहीं फ़रमाई कि तुम इसी के हो कर रह जाओ, **बेशक दुन्या मह़ज़ फ़ानी और आख़िरत बाक़ी है।** तुम्हें फ़ानी (दुन्या) कहीं बहका कर बाक़ी (आख़िरत) से ग़ाफ़िल न कर दे, फ़ना हो जाने वाली दुन्या को बाक़ी रहने वाली आख़िरत पर तरजीह़ न दो क्यूंकि दुन्या **मुन्क़त़ेअ़** होने वाली है और बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ लौटना है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **से डरो** क्यूंकि उस का डर उस के अ़ज़ाब के लिये (रोक और) ढाल और उस तक पहुंचने का ज़रीआ़ है।"

(الزهد و قصر الامل، ازهد الناس و اجود الناس، ص ٦١)

है येह दुन्या बे वफ़ा आख़िर फ़ना
न रहा इस में गदा न बादशाह

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! अ़क्ल मन्द को चाहिये कि वोह अपनी गुज़श्ता **ज़िन्दगी का जाएज़ा** ले, अपने **गुनाहों पर नादिम** हो कर उन से **सच्ची तौबा** करे, ज़ियादा देर ज़िन्दा रहने की उम्मीद के धोके में न पड़े बल्कि **क़ब्रो आख़िरत की तय्यारी** के लिये फ़ौरन नेक आ'माल में लग जाए, **दौलत व माल और अहलो इयाल की महब्बत में न नेकियां छोड़े न गुनाहों में पड़े कि इन सब का साथ तो दम भर का है** और नेकियां **क़ब्र** व आख़िरत बल्कि दुन्या में भी काम आएंगी। नेकियों का जज़्बा पाने, दुन्या की महब्बत से जान छुड़ाने और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **व रसूल** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत बढ़ाने के लिये **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माहोल** से हर दम वाबस्ता रहिये, **सुन्नतों की तरबिय्यत** के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ **सुन्नतों भरा सफ़र** कीजिये और **काम्याब ज़िन्दगी** गुज़ारने और **आख़िरत संवारने** के लिये **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ अ़मल कर के **रोज़ाना फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए **रिसाला** पुर कीजिये और हर **म-दनी माह** की **10 तारीख़** के अन्दर अन्दर अपने **ज़िम्मेदार** को जम्अ़ करवाइये। आप की **तरग़ीब** के लिये एक **म-दनी बहार** गोश गुज़ार करता हूं **चुनान्चे**

एक मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी का बयान है कि **जुमादल उख़रा** 1429 सि.हि., जून 2008 सि.ई. में हमारा **क़ाफ़िला** ओकाड़ा (पंजाब, पाकिस्तान) पहुंचा। वहां पर एक **बा रीश** (या'नी **दाढ़ी** वाले) उ़म्र रसीदा **इस्लामी भाई** से मेरी मुलाक़ात हुई। उन के सर पर **सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़** अपने जल्वे लुटा रहा था। दौराने गुफ़्तगू उन्हों

www.dawateislami.net

ने **इनकिशाफ़** किया कि **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** में आने से पहले मैं अपने अ़लाक़े का **नामी गिरामी बद मआ़श** था। मैं **शराब** का ऐसा **रसिया** था कि जब कहीं जाता तो **शराब के कनस्तर** मेरी गाड़ी में धरे होते। मैं अपने साथ **गनमेन** रखता और खुद भी **मुसल्लह़** रहता था। मेरे काले करतूतों की वजह से लोग मुझ से इस क़दर **नफ़रत** करते कि मेरे क़रीब से गुज़रना पसन्द न करते थे।

मैं "**म-दनी माह़ोल**" में कैसे आया, इस की **तफ़्सील कुछ यूं** है कि हमारे अ़लाक़े में **नेकी की दा'वत** की **धूमें** मचाने वाले **दा'वते इस्लामी** के **मुबल्लिग़ीन** मुझे भी **नेकी की दा'वत** देने के लिये आया करते, मगर मैं **ग़फ़लत की गहरी वादियों** में **गुम** था इस लिये उन की **दा'वत** तवज्जोह से सुनने के बजाए उन का हाथ पकड़ कर बोलता : "**मेरे साथ बैठ कर शराब पियो।**" उन को कभी डांटता तो कभी झाड़ता मगर वोह मौक़अ़ पा कर फिर **इनफ़िरादी कोशिश** के लिये आ जाया करते। यूं एक त़वील अ़र्से वोह मुझ पर **इनफ़िरादी कोशिश** करते रहे और मैं सुनी अनसुनी करता रहा। एक रोज़ मेरे दिल में ख़याल आया कि येह बेचारे इतने अ़र्से से मुझ पर कोशिशें कर रहे हैं **क्यूं न आज** इन की बात तवज्जोह से सुन ली जाए देखूं तो सही **आख़िर येह कहते क्या हैं**! अब की बार इस्लामी भाई "**नेकी की दा'वत**" देने आए तो मैं ने **बड़ी तवज्जोह** से उन की **दा'वत सुनी अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की शान कि उन की **दा'वत** मेरे **दिल में उतर गई** और **लब्बैक** (या'नी मैं ह़ाज़िर हूं) कहते हुए उन के साथ **मस्जिद** की त़रफ़ चल दिया, **ग़ालिबन होश संभालने के बा'द**

www.dawateislami.net

ज़िन्दगी में पहली बार मैं मस्जिद के अन्दर दाख़िल हुवा। आशिक़ाने रसूल की सोहबत और **मस्जिद** में होने वाले **सुन्नतों भरे बयान** ने मेरे **दिल की कैफ़िय्यत को बदल कर रख दिया।** मैं ने **इस्लामी भाइयों** के पास आना जाना शुरूअ़ कर दिया और फिर **सरकारे ग़ौषे आ'ज़म** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم **के सिल्सिले में मुरीद** बन गया। **मुरीद तो क्या हुवा** मेरे **अन्दाज़ बदलते चले गए।** मैं ने **सब गुनाहों से तौबा कर ली, शराब** पीना **छोड़** दी, **नमाज़ी बन गया, सुन्नत के मुताबिक़ दाढ़ी और सर इमामा शरीफ़** से **"सर सब्ज़"** हो गया। लोग मेरी इस **तबदीली पर हैरान** थे। बा'ज़ों को तो **यक़ीन ही नहीं आ रहा** था कि **इस क़दर बिगड़ा हुवा इन्सान भला कैसे सुधर सकता है!** एक रोज़ **अ़जीब चुटकुला** हुवा कि दो **अख़्बारी नुमायन्दे** मेरे क़रीब से गुज़रे तो एक ने मेरी त़रफ़ इशारा कर के दूसरे को बताया **येह वोही शख़्स है, मेरा तबदील शुदा हुल्या** देख कर दूसरे को यक़ीन न आया और उस ने मुझ से **बा क़ाइदा तस्दीक़ की,** कि क्या **आप वाक़ेई "वोही" हैं?** मेरे **हां** करने पर वोह **दम बख़ुद** रह गया और कहने लगा कि **अपनी तबदीली का राज़ बताइये** हम **अख़्बार** में आप की ख़बर छापेंगे। मगर मैं ने **मन्अ़** कर दिया।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ येह **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माहोल की ब-रकतें** हैं कि मुझ जैसा **रुस्वाए ज़माना इन्सान भी सलातो सुन्नत की राह पर चलने लगा और मुआ-शरे का एक बा इ़ज़्ज़त फ़र्द बन गया।**

www.dawateislami.net

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में

ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

(ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 32)

मीठ मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए **सुन्नत की फ़ज़ीलत** और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं।

ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शमए बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस ने **मेरी सुन्नत** से **मह़ब्बत** की उस ने मुझ से **मह़ब्बत** की और जिस ने मुझ से **मह़ब्बत** की वोह **जन्नत में मेरे साथ** होगा।"

(تاریخ مدینة دمشق لابن عساکر، انس بن مالك،ج۹، ص۳٤۳)

लिहाज़ा **सलाम के 11 म-दनी फूल** क़बूल फ़रमाइये,

(इस किताब के सफ़्ह़ा नम्बर **539** से बयान करें)

मय्यित को ग़ुस्ल देने की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : *"जिस ने मय्यित को ग़ुस्ल दिया फिर उस की पर्दा पोशी की तो अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ *उस के गुनाहों को धोएगा और जिस ने मय्यित को कफ़नाया तो अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ *उसे सुन्दुस (या'नी निहायत बारीक और नफ़ीस कपड़े) का लिबास पहनाएगा।"*

(المعجم الکبیر للطبرانی،الحدیث:۸۰۷۸، ج۸،ص۲۸۱)

www.dawateislami.net

बयान नम्बर : 4

क़ब्र की पुकार

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये **दा'वते इस्लामी** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले "अ़फ़्व व दर गुज़र की फ़ज़ीलत" में **दुरूद शरीफ़** के मुतअ़ल्लिक़ ह़दीषे पाक बयान फ़रमाते हैं कि सरकार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ब-रकत निशान है : ऐ लोगो ! बेशक बरोज़े क़ियामत उस की दहशतों और ह़िसाब किताब से जल्द नजात पाने वाला शख़्स वोह होगा जिस ने तुम में से मुझ पर दुन्या के अन्दर ब कषरत दुरूद शरीफ पढ़े होंगे ।

(فردوس الاخبار للدیلمی، باب الیاء،الحدیث:۸۲۱۰،ج۲،ص۴۷۱)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صلَّی اللهُ تعالٰی علٰی محمَّد

इ़ब्रत के म-दनी फूल

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهُ एक जनाज़े के साथ क़ब्रिस्तान तशरीफ़ ले गए, वहां **एक क़ब्र** के पास बैठ कर **ग़ौरो फ़िक्र** में डूब गए, किसी ने अ़र्ज़ की : "या अमीरल **मोअमिनीन** ! आप यहां तन्हा कैसे तशरीफ़ फ़रमा हैं ?" फ़रमाया : "अभी अभी एक **क़ब्र ने मुझे पुकार कर बुलाया** और बोली : ऐ **उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़** ! मुझ से क्यूं नहीं पूछते कि **मैं अपने अन्दर आने वालों के साथ क्या बरताव करती हूं** ?" मैं ने उस

www.dawateislami.net

क़ब्र से कहा : मुझे ज़रूर बता ! वोह कहने लगी : जब कोई मेरे अन्दर आता है तो मैं उस का **कफ़न फाड़** कर जिस्म के टुकड़े टुकड़े कर डालती और उस का **गोश्त खा जाती** हूं ! क्या आप मुझ से येह नहीं पूछेंगे कि मैं उस के **जोड़ों के साथ** क्या करती हूं ? मैं ने कहां : ज़रूर बता ! तो कहने लगी : "**हथेलियों को कलाइयों से, घुटनों** को पिंडलियों से और **पिंडलियों** को क़दमों से जुदा कर देती हूं" इतना कहने के बा'द हज़रते सय्यिदुना **उमर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़** हिचकियां ले कर रोने लगे, जब कुछ इफ़ाक़ा हुवा तो कुछ इस त़रह **इब्रत के म-दनी फूल** लुटाने लगे :

ऐ इस्लामी भाइयो ! इस **दुन्या में हमें बहुत थोड़ा अ़र्सा रहना है, जो इस दुन्या में** (सख़्त गुनह गार होने के बा वुजूद) **साहिबे इक्तिदार** है वोह (आख़िरत में) **इन्तिहाई ज़लीलो ख़्वार** है, जो इस जहां में **मालदार** है वोह (आख़िरत में) **फ़क़ीर** होगा, इस का **जवान बूढ़ा** हो जाएगा और जो **ज़िन्दा है** वोह **मर जाएगा**, दुन्या का तुम्हारी त़रफ़ आना तुम्हें **धोके में न डाल दे** ! क्यूंकि तुम जानते हो कि येह **बहुत जल्द रुख़्सत हो जाती** है, **कहां गए तिलावते क़ुरआन करने वाले** ? **कहां गए बैतुल्लाह का ह़ज करने वाले** ? **कहां गए माहे र-मज़ान के रोज़े रखने वाले** ? **ख़ाक** ने उन के जिस्मों का क्या ह़ाल कर दिया ! **क़ब्र के कीड़ों ने उन के गोश्त** का क्या अन्जाम कर दिया ! उन की **हड्डियां और जोड़ों** के साथ क्या हुवा ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम दुन्या में येह आराम देह नर्म नर्म बिस्तर पर होते थे लेकिन अब वोह अपने घर वालों और वत़न को छोड़ कर **राह़त के**

www.dawateislami.net

बा'द तंगी में हैं, उन की **बेवाओं** ने दूसरे निकाह् कर के दोबारा घर **बसा लिये**, उन की **अवलाद गलियों में दर बदर है,** उन के रिश्तेदारों ने उन के **मकानात व मीराष आपस में बांट ली। वल्लाह! उन में कुछ ख़ुश नसीब हैं जो क़ब्रों में मज़े लूट रहे हैं और वल्लाह! बा'ज़ क़ब्र में अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार हैं।**

अफ़सोस सद हज़ार अफ़सोस ऐ नादान ! जो आज मरते वक़्त कभी **अपने वालिद** की, कभी **अपने बेटे** की तो कभी **सगे भाई की आंखें बन्द कर रहा है,** उन में से किसी को **नहला रहा है, किसी** को **कफ़न पहना** रहा है, किसी के **जनाज़े को कन्धे** पर उठा रहा है, किसी के **जनाज़े के साथ** जा रहा है, किसी को **क़ब्र के गढ़े में** उतार कर दफ़्ना रहा है (**याद रख! कल येह सभी कुछ तेरे साथ भी होने वाला है**) काश ! **मुझे इ़ल्म होता! कौन सा गाल (क़ब्र में) पहले** ख़राब होगा ! फिर **ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़** رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ रोने लगे और रोते रोते बे होश हो गए और **एक हफ़्ते के बा'द इस दुन्या से तशरीफ़ ले गए** ।

(الروض الفائق،المجلس الثامن عشر فی قولہ تعالٰی یوم تبیض...الخ،ص۱۰۷)

क़ब्र रोज़ाना येह करती है पुकार

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़क़ीह अबुल्लैष समर क़न्दी رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ नक़्ल फ़रमाते हैं **क़ब्र रोज़ाना पांच मरतबा येह निदा करती है : ऐ आदमी** ! तू मेरी **पीठ पर चलता है** ह़ालांकि **मेरा पेट तेरा**

www.dawateislami.net

ठिकाना है, ऐ आदमी ! तू मुझ पर **उ़मदा उ़मदा खाने खाता** है **अ़न क़रीब मेरे पेट में तुझे** कीड़े खाएंगे, **ऐ आदमी** ! तू मेरी **पीठ पर हंसता** है जल्द ही **मेरे अन्दर आ कर रोएगा,** ऐ आदमी ! तू मेरी **पीठ पर ख़ुशियां मनाता है अ़न क़रीब** मुझ में ग़मगीन होगा, ऐ आदमी ! तू मेरी **पीठ पर गुनाह** करता है अ़न क़रीब **मेरे पेट में मुब्तलाए अ़ज़ाब होगा ।** (تنبیہ الغافلین، باب عذاب القبر وشدتہ،ص۲۳)

क़ब्र रोज़ाना येह करती है पुकार — मुझ में हैं कीड़े मकोड़े बे शुमार
याद रख ! मैं हूं अंधेरी कोठड़ी — मुझ में सुन वह्शत तुझे होगी बड़ी
मेरे अन्दर तू अकेला आएगा — हां मगर आ'माल लेता आएगा
तेरा फ़न तेरा हुनर ओ़हदा तेरा — काम आएगा न सरमाया तेरा
दौलते दुन्या के पीछे तू न जा — आख़िरत में माल का है काम क्या
दिल से दुन्या की मह़ब्बत दूर कर — दिल नबी के इ़श्क़ से मा'मूर कर
लन्दनो पेरिस के सपने छोड़ दे — बस मदीने ही से रिश्ता जोड़ ले

रूह़ की दर्दनाक बातें

मन्क़ूल है कि रूह़ जब जिस्म से जुदा होती है और उस **पर सात दिन गुज़रते हैं** तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ करती है : “**ऐ रब** ! عَزَّوَجَلَّ **मुझे इजाज़त अ़त़ा फ़रमा कि मैं अपने जिस्म का ह़ाल दरयाफ़्त करूं** तो उसे इजाज़त मिल जाती है । फिर वोह **अपनी क़ब्र की त़रफ़ आती** है, उसे दूर से देखती और **अपने जिस्म को मुलाह़ज़ा करती है कि वोह मु-तग़य्यर** (या'नी बदला हुवा) है

www.dawateislami.net

और उस के **नथनों, मुंह, आंखों** और **कानों से पानी रवां** है, वोह **अपने जिस्म से कहती है : "बे मिषाल हुस्नो जमाल के बा'द अब तू इस ह़ाल में है !"** येह कह कर चली जाती है।

फिर सात दिन के बा'द इजाज़त ले कर **दोबारा क़ब्र पर आती** और दूर से देखती है कि **मुर्दे के मुंह का पानी ख़ून मिली पीप, आंखों का पानी ख़ालिस पीप और नाक का पानी ख़ून बन चुका है तो उस से कहती है : "अब तू इस ह़ाल पर पहुंच चुका है !" येह** कह कर परवाज़ कर जाती है।

फिर सात रोज़ के बा'द इजाज़त ले कर इसी त़रह़ दूर से देखती है तो ह़ालत येह होती है कि **आंखों की पुतलियां चेहरे पर ढलक चुकी** हैं, **पीप कीडों में तबदील हो चुकी है, कीड़े उस के मुंह से दाख़िल हो कर नाक से निकल रहे हैं,** तब वोह **जिस्म से कहती है : "तू नाज़ो नेअ़्मत में पलने के बा'द अब इस ह़ाल को पहुंच गया है ! अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की क़सम ! तक़्वा व नेक अ़मल के इ़लावा किसी चीज़ ने क़ब्र में किसी को फ़ाएदा न पहुंचाया।"** (الروض الفائق، فی ذکر الموت والتفکر فیه،ص۲۸۳)

जन्नत का बाग़

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰه تعالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : **क़ब्र या तो जहन्नम का गढ़ा है या जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़।**

(سنن الترمذی، کتاب صفة القیامة،الحدیث:۲٤٦۸،ج٤، ص۲۰۹)

क़ब्र की याद !

ह़ज़रते सय्यिदुना **सुफ़्यान षौरी** عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی फ़रमाते हैं : “जो शख़्स **क़ब्र का ज़िक्र** ज़ियादा **करे वोह** उसे **जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ पाता है और जो उस की याद से ग़ाफ़िल होता है वोह उसे जहन्नम के गढ़ों में से एक गढ़ा** पाता है।”

(احیاء علوم الدین، کتاب آداب الالفة...الخ،الباب الثالث ...الخ، ج۲،ص۲٦٤)

बे शुमार लोग मग़्मूम हैं

ह़ज़रते सय्यिदुना **षाबित बुनानी** عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی फ़रमाते हैं : मैं **क़ब्रिस्तान** में दाख़िल हुवा। जब वहां से निकलने लगा तो बुलन्द आवाज़ से किसी ने कहा : **ऐ षाबित ! इन क़ब्र वालों की ख़ामोशी से धोका न खाना इन में बे शुमार लोग मग़्मूम हैं।**

(المرجع السابق، کتاب ذکر الموت ومابعده،بیان حال القبر...الخ،ج٥،ص٢٣٨)

क़ब्र की डांट

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह बिन उ़बैद** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, **जब मुर्दे के साथ आने वाले** लौट कर चलते हैं तो **मुर्दा बैठ** कर उन के **क़दमों की आवाज़ सुनता है** और **क़ब्र** से **पहले** कोई उस के साथ **हम कलाम नहीं** होता, क़ब्र कहती है कि ऐ आदमी ! क्या तूने मेरे ह़ालात न सुने थे ? क्या **मेरी तंगी, बदबू, होलनाकी और कीड़ों से तुझे नहीं डराया गया था** ? अगर ऐसा था तो फिर तूने क्या तय्यारी की ?

(شرح الصدور،باب فی مخاطبة القبر للمیت،ص١١٤)

www.dawateislami.net

बे कसी का दिन

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गि़फ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हें अपनी **बे कसी का दिन** न बताऊं ? **येह वोह दिन** है जब मुझे **क़ब्र में तन्हा उतार दिया जाएगा ।"**

(احیاء علوم الدین، کتاب آداب الالفۃ...الخ،الباب الثالث ...الخ،ج۲، ص۲٦٤)

गिर्यए उ़षमानी

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नूरैन जामेउ़ल कु़रआन उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जब किसी **क़ब्र के क़रीब खड़े होते** तो इस क़दर रोते कि आप की **दाढ़ी मुबारक तर हो जाती,** इस बारे में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से इस्तिफ़्सार किया गया कि **आप जन्नत व दोज़ख़ के तज़किरे** पर **इतना नहीं रोते मगर जब किसी क़ब्र के क़रीब खड़े होते हैं** तो इस क़दर गिर्या व ज़ारी फ़रमाते हैं इस का क्या सबब है ? ह़ज़रते सय्यिदुना **उ़षमाने ग़नी** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : मैं ने **सय्यिदुल मुर्सलीन, शफ़ीउ़ल मुज़निबीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना है कि : **"बेशक आख़िरत की सब से पहली मन्ज़िल क़ब्र है, क़ब्र वाले ने इस से नजात पाई तो बा'द का मुआ़मला आसान है** और अगर इस से **नजात न पाई तो बा'द का मुआ़मला** ज़ियादा **सख़्त है ।"**

(سنن ابن ماجہ، کتاب الزھد،باب ذکر القبر و البلی،الحدیث:٤٢٦٧،ج٤،ص٥٠٠)

www.dawateislami.net

सब से होलनाक मन्ज़र

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ुदा की **क़सम** ! **क़ब्र का अन्दरूनी मुआमला इन्तिहाई तशवीश नाक** है । कोई नहीं जानता कि मेरे साथ क्या होगा ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : **क़ब्र का मन्ज़र सब मनाज़िर से** ज़ियादा **होलनाक है** ।

(سنن الترمذی،کتاب الزھد،باب ماجاء فی ذکر الموت،الحدیث:٢٣١٥،ج٤،ص ١٣٨)

पड़ोसी मुर्दों की पुकार

मन्कूल है जब मुर्दे को क़ब्र में रखा जाता है और उसे अ़ज़ाब होता है तो पड़ोसी मुर्दे उस को पुकार कर कहते हैं : ऐ दुन्या से आने वाले ! क्या तूने **हमारी मौत से नसीहत हासिल न की** ? क्या तूने न देखा कि **हमारे आ'माल कैसे ख़त्म** हुए ? और **तुझे तो अ़मल करने की मोहलत मिली थी** लेकिन तूने वक़्त ज़ाएअ़ **कर दिया क़ब्र का गोशा गोशा उस को पुकार कर कहता है** : ऐ ज़मीन पर **इतरा कर चलने वाले** ! तूने मरने वालों से **इब्रत क्यूं हासिल न की** ? क्या तूने नहीं देखा था कि तेरे **मुर्दा रिश्तेदारों को** लोग उठा उठा कर किस तरह **क़ब्रों तक ले गए** ।

(شرح الصدور،باب فی مخاطبۃ القبر للمیت،ص ١١٢)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई येह हक़ीक़त है कि हम से पहले मरने वाले हमारे लिये **ख़ामोश मुबल्लिग़** की हैषिय्यत रखते हैं, वोह जो कुछ **ज़बाने हाल से** कह **रहे होते हैं उस को किसी ने इस तरह नज़्म किया है** ।

www.dawateislami.net

जनाज़ा आगे आगे कह रहा है ऐ जहां वालो
मेरे पीछे चले आओ तुम्हारा रहनुमा मैं हूं

मेरे अहलो इयाल कहां हैं

हज़रते सय्यिदुना **अ़त़ा बिन यसार** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار से रिवायत है : जब **मुर्दे को क़ब्र में रखा** जाता है तो सब से पहले उस का (अच्छा या बुरा) **अ़मल** आ कर उस की बाइं रान को ह़-रकत दे कर कहता है कि **मैं तेरा अ़मल हूं, मुर्दा पूछता है मेरे अहलो इयाल कहां हैं**? और मेरी **दुन्यवी ने'मतें** कहां हैं? **तो अ़मल कहता है कि येह सब तेरी पीठ पीछे रह गए और सिवाए मेरे तेरी क़ब्र में कोई न आया।** (شرح الصد ور،باب ضمۃ القبرلکل احد،ص ۱۱۱)

साथ जिगरी यार भी न आएगा　　तू अकेला क़ब्र में रह जाएगा
माल दुन्या का यहीं रह जाएगा　　हर अ़मल अच्छा बुरा साथ आएगा

माले दुन्या दो जहां में है वबाल
काम आएगा न पेशे ज़ुल जलाल

क़ाबिले रश्क कौन?

हज़रते सय्यिदुना **मसरूक़** رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मुझे किसी पर इस क़दर **रश्क** नहीं आता जिस क़दर **क़ब्र में जाने वाले उस मोमिन पर रश्क** आता है जो **दुन्या की मशक़्क़त से राहत पा गया और अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़** रहा।

(احیاء علوم الدین،کتاب ذکر الموت و مابعدہ،الباب التاسع فی حقیقۃ الموت...الخ، ج۵، ص۲۴۹)

www.dawateislami.net

नेक शख़्स की निशानी

हज़रते सय्यिदुना **ज़ह्हाक** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : एक शख़्स ने इस्तिफ़्सार किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم लोगों में सब से ज़ियादा **ज़ाहिद कौन है**? आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स क़ब्र और **गल सड़ जाने** को न भूले, **दुन्या की ज़ीनत को छोड़ दे, फ़ना होने वाली ज़िन्दगी पर बाक़ी रहने वाली को** तरजीह़ दे और **कल आने वाले दिन को अपनी ज़िन्दगी में गिनती न करे नीज़** अपने आप को **क़ब्र वालों में शुमार करे**।"

(شعب الایمان للبیهقی،باب فی الزهد وقصر الامل، الحدیث: ١٠٠٥٦،ج٧، ص٣٥٥)

अभी से तय्यारी कर लीजिये !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! **वाक़ेई अक़्ल मन्द** वोही है जो **मौत से क़ब्ल मौत की तय्यारी** करते हुए **नेकियों का ज़ख़ीरा** इकठ्ठा कर ले और **सुन्नतों का म-दनी चराग़ क़ब्र में साथ ले** ले और यूं **क़ब्र की रोशनी का इन्तिज़ाम** कर ले, वरना क़ब्र हरगिज़ येह लिहाज़ न करेगी कि **मेरे अन्दर कौन आया ? अमीर हो या फ़क़ीर, वज़ीर हो या मुशीर, ह़ाकिम हो या मह़कूम, अफ़सर हो या चपरासी, सेठ हो या मुलाज़िम, डॉक्टर हो या मरीज़, ठेकेदार हो या मज़दूर**, अगर किसी के साथ भी **तोशए आख़िरत में कमी रही**, नमाज़ें क़सदन क़ज़ा कीं, र-मज़ान शरीफ़ के रोज़े बिला उ़ज़्रे शरई न रखे, फ़र्ज़ होते हुए भी ज़कात न दी, **ह़ज फ़र्ज़** था मगर अदा न किया, बा वुजूदे क़ुदरत **शरई पर्दा नाफ़िज़** न किया, **मां बाप की**

ना फ़रमानी की, झूट, ग़ीबत, चुग़ली की आदत रही, फ़िल्में, डिरामे देखते रहे, गाने बाजे सुनते रहे, दाढ़ी मुंडवाते या एक मुठ्ठी से घटाते रहे।

अल ग़रज़ ख़ूब गुनाहों का बाज़ार गर्म रखा तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की नाराज़ी की सूरत में सिवाए ह़सरत व नदामत के कुछ हाथ न आएगा। जिस ने फ़राइज़ के साथ साथ नवाफ़िल की भी पाबन्दी की, र-मज़ानुल मुबारक के इलावा नफ़्ली रोज़े भी रखे, कूचा कूचा, गली गली नेकी की दा'वत की धूमें मचाईं, क़ुरआने पाक की ता'लीम न सिर्फ़ ख़ुद ह़ासिल की बल्कि दूसरों को भी दी, चौक दर्स देने में हिचकिचाहट मह़सूस न की, घर दर्स जारी किया, सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िलों में बा क़ाएदगी से सफ़र करने के साथ साथ दीगर मुसलमानों को भी इस की तरग़ीब दिलाई, रोज़ाना म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर माह अपने ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाया, अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़ज़्लो करम से ईमान सलामत ले कर दुन्या से रुख़्सती हुई तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस की क़ब्र में ह़श्र तक रह़मतों का दरया मौजें मारता रहेगा और नूरे मुस्त़फ़ा के चश्मे लहराते रहेंगे।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप सब **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माहोल** से वाबस्ता हो जाइये, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दोनों जहां में बेडा पार** हो जाएगा । आइये ! आप को **दा'वते इस्लामी** की **म-दनी बहारों** में से एक **म-दनी बहार** सुनाऊं, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप का दिल भी **जज़्बाते तअष्षुर** से झूम उठेगा और **सीना बाग़े मदीना** बन जाएगा, चुनान्चे

मुह़म्मद एह़सान अ़त्तारी का लाशा

बाबुल मदीना कराची के अ़लाक़े गुल बहार के एक मॉडर्न नौ जवान ब नाम "मुह़म्मद एह़सान" **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माहोल** से वाबस्ता हुए और **शैख़े त़रीक़त**, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ के ज़रीए सरकारे बग़दाद हुज़ूरे ग़ौषे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के **मुरीद** बन गए । सरकारे ग़ौषे पाक के **मुरीद** तो क्या हुए उन की ज़िन्दगी में **म-दनी इनक़िलाब** बरपा हो गया, चेहरा एक मुठ्ठी दाढ़ी के ज़रीए **म-दनी** चेहरा बन गया और सर पर मुस्तक़िल त़ौर पर सब्ज़ इमामे का ताज जगमग जगमग करने लगा । उन्हों ने **दा'वते इस्लामी** के मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान) में क़ुरआने पाक नाज़िरा ख़त्म कर लिया और लोगों के पास ख़ुद जा जा कर **नेकी की दा'वत** की धूमें मचाने और इनफ़िरादी कोशिश फ़रमाने लगे । एक दिन अचानक उन्हें गले में दर्द मह़सूस हुवा, इलाज भी करवाया "**मगर दर्द बढ़ता गया जूं जूं दवा**

www.dawateislami.net

की" के मिस्दाक़ गले के मरज़ ने बहुत ज़ियादा शिद्दत इख़्तियार कर ली यहां तक कि **क़रीबुल मर्ग** हो गए, इसी ह़ालत में उन्हों ने **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** का मत़बूआ़ 16 **सफ़ह़ात** पर मुश्तमिल रिसाला "**म-दनी** वसिय्यत नामा" सामने रख कर **अपना वसिय्यत नामा** तय्यार करवा कर **दा'वते इस्लामी** के अपने अ़लाक़े के ज़िम्मेदार के सिपुर्द कर दिया और फिर सदा के लिये आंखें मूंद लीं, ब **वक़्ते वफ़ात** उन की उ़म्र **तक़रीबन** 35 साल होगी, उन्हें गुल बहार के **क़ब्रिस्तान** में सिपुर्दे ख़ाक कर दिया गया, **ह़स्बे वसिय्यत** कमो बेश बारह घन्टे तक उन की क़ब्र के क़रीब इस्लामी भाइयों ने **इजतिमाए ज़िक्रो ना'त** जारी रखा, वफ़ात के तक़रीबन साढ़े तीन साल बा'द **बरोज़ मंगल** 6 जुमादल उख़रा सि. 1418 हि. (07-10-1997) का वाक़ेआ़ है कि एक और इस्लामी भाई **मुह़म्मद उ़षमान अ़त्तारी** का जनाज़ा उसी क़ब्रिस्तान में लाया गया, कुछ इस्लामी भाई **मर्ह़ूम मुह़म्मद एह़सान अ़त्तारी** عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡبَارِی की **क़ब्र** पर फ़ातिह़ा के लिये आए तो येह मन्ज़र देख कर उन की आंखें **फटी की फटी** रह गईं कि क़ब्र की एक जानिब बहुत बड़ा शिगाफ़ हो गया है और तक़रीबन **साढ़े तीन साल क़ब्ल** वफ़ात पाने वाले मर्ह़ूम **मुह़म्मद एह़सान अ़त्तारी** सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ का ताज सजाए **ख़ुश्बूदार कफ़न** ओढ़े मज़े से लेटे हुए हैं। आनन फ़ानन येह ख़बर हर त़रफ़ फैल गई और रात गए तक ज़ाइरीन **मुह़म्मद एह़सान अ़त्तारी** عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡبَارِی के **कफ़न में लिपटे हुए तरो ताज़ा लाशे की ज़ियारत करते रहे।**

www.dawateislami.net

तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के बारे में ग़लत़ फ़ह्मियों का शिकार रहने वाले अफ़राद भी **दा'वते इस्लामी** वालों पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस **अज़ीम फ़ज़्लो करम** का खुली आंखों से मुशाहदा कर के बसद तह़सीनो आफ़रीन पुकार उठ्ठे और **दा'वते इस्लामी** के मुह़िब बन गए।

जो अपनी ज़िन्दगी में सुन्नतें उन की सजाते हैं
ख़ुदा व मुस्त़फ़ा अपना उन्हें प्यारा बनाते हैं

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए **सुन्नत की फ़ज़ीलत** और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं।

ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शमए बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस ने **मेरी सुन्नत** से **मह़ब्बत** की उस ने मुझ से **मह़ब्बत** की और जिस ने मुझ से **मह़ब्बत** की वोह **जन्नत में मेरे साथ** होगा।"

(تاریخ مدینة دمشق لابن عساکر، انس بن مالك، ج۹، ص۳٤۳)

लिहाज़ा **पानी पीने के 12 म-दनी फूल** क़बूल फ़रमाइए,

(इस किताब के सफ़ह़ा नम्बर 630 से बयान करें)

★★★★★★

www.dawateislami.net

बयान नम्बर 5 :

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की खुफ़्या तदबीर

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले "**क़ियामत का इम्तिह़ान**" में दुरूद शरीफ़ के मुतअ़ल्लिक़ ह़दीषे पाक बयान फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि शफ़ीउ़ल मुज़निबीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिस ने **सुब्ह़ो शाम** मुझ पर **दस दस** बार दुरूदे पाक पढ़ा **बरोज़े क़ियामत** उस को **मेरी शफ़ाअ़त नसीब होगी**।

(مجمع الزوائد، کتاب الاذکار، باب مایقول اذا اصبح ...الخ، الحدیث:۱۷۰۲۲، ج۱۰، ص۱۶۳)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तीन उ़यूब की नुह़ूसत

मिनहाजुल आ़बिदीन में है : "ह़ज़रते सय्यिदुना **फ़ुज़ैल बिन इयाज़** عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار अपने एक शागिर्द की **नज़्अ़** के वक़्त तशरीफ़ लाए और उस के पास बैठ कर **सूरए यासीन** शरीफ़ पढ़ने लगे तो उस शागिर्द ने कहा : "**सूरए यासीन पढ़ना बन्द कर दो**" फिर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने उसे कलिमा शरीफ़ की तलक़ीन [1]

---

1 तलक़ीन से मुराद येह है कि मरने वाले के सामने **नज़्अ़** के वक़्त बुलन्द आवाज़ से कलिमए त़य्यिबा पढते रहना ताकि उस का ज़ेहन इस त़रफ़ हो जाए और वोह भी कलिमए त़य्यिबा पढ़ कर दुन्या से रुख़्सत हो जाए।

www.dawateislami.net

फ़रमाई, वोह बोला **"मैं हरगिज़ येह कलिमा नहीं पढूंगा मैं इस से बेज़ार हूं ।"** बस इन्हीं अलफ़ाज़ पर उस की मौत वाक़ेअ़ हो गई ।

हज़रते सय्यिदुना फुज़ैल رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْه को अपने **शागिर्द** के बुरे ख़ातिमे का सख़्त सदमा हुवा, **चालीस40 रोज़ तक** अपने घर में बैठे रोते रहे, **चालीस40 दिन** के बाद आप ने ख़्वाब में देखा कि **फ़िरिश्ते** उस शागिर्द को जहन्नम में घसीट रहे हैं, आप رَحْمَةُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْه ने उस से **इस्तिफ़्सार फ़रमाया :** किस सबब से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तेरी **मा'रिफ़त सल्ब फ़रमा ली** ? मेरे शागिर्दों में तेरा तो मक़ाम बहुत ऊंचा था ! उस ने जवाब दिया : तीन उ़यूब के सबब से, ﴾1﴿ **चुग़ली** कि मैं अपने साथियों को कुछ बताता था और आप को कुछ और ﴾2﴿ **हसद** कि मैं अपने साथियों से हसद करता था ﴾3﴿ **शराब नोशी** कि एक बीमारी से शिफ़ा पाने की ग़रज़ से **तबीब** के मश्वरे पर हर साल शराब का एक गिलास पीता था ।

(منہاج العابدین،الباب الخامس،الاصل الثالث فی ذکرما وعد...الخ،ص۱٦٥)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! गुनाहों की नुहूसत किस क़दर भयानक है । आह ! **चुग़ली**, **हसद** और **शराब नोशी** के सबब वलिय्ये कामिल का शागिर्द कुफ़्रिय्या कलिमात बोल कर मरा ! الامان والحفیظ यहां येह ज़रूरी मस्अला ज़ेह्न नशीन फ़रमा लीजिये कि **सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी** عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं :

www.dawateislami.net

“मरते वक़्त مَعَاذَاللّٰه उस की ज़बान से कलिमए कुफ़्र निकला तो कुफ़्र का हुक्म न देंगे कि मुमकिन है मौत की सख़्ती में अ़क़्ल जाती रही हो और बे होशी में येह कलिमा निकल गया।”

(बहारे शरीअ़त, मौत आने का बयान, मस्अला. 9, हिस्सा . 4, जि.1 स. 809
والدرالمختار و رد المحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ الجنازۃ، ج۳، ص۹۶)

नीज़ किसी के बारे में **बुरा ख़्वाब** देखना बेशक बाइ़षे तशवीश है ता हम ग़ैरे नबी का **ख़्वाब** शरीअ़त में **हुज्जत** या'नी दलील नहीं और फ़क़त़ **ख़्वाब** की बुन्याद पर किसी मुसलमान को काफ़िर नहीं कहा जा सकता नीज़ मुसलमान मय्यित पर **ख़्वाब** में कोई अ़लामते कुफ़्र देखने या खुद मरने वाले **मुसलमान** का ख़्वाब में अपने ईमान के सल्ब (बरबाद) होने की ख़बर देने से भी उस को काफ़िर नहीं कह सकते।

एक शैख़ का बुरा ख़ातिमा

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़यान षौरी और ह़ज़रते सय्यिदुना शैबान राई رَحِمَهُمَا اللّٰهُ الْقَوِی दोनों एक जगह इकठ्ठे हुए, **सय्यिदुना सुफ़यान षौरी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی सारी रात रोते रहे। **सय्यिदुना शैबान राई** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی ने सबबे गिर्या दरयाफ़्त किया तो फ़रमाया : मुझे बुरे ख़ातिमे का ख़ौफ़ रुला रहा है, आह ! मैं ने **एक शैख़ से चालीस साल इ़ल्म ह़ासिल किया**, उस ने साठ साल तक **मस्जिदुल ह़राम** में इ़बादत की मगर उस का **ख़ातिमा कुफ़्र पर** हुवा, **सय्यिदुना शैबान राई** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی ने कहा : **ऐ सुफ़यान** ! वोह उस के **गुनाहों की शामत** थी आप **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी हरगिज़ मत करना। (سبع سنابل، ص۳٤)

www.dawateislami.net

फ़िरिश्तों का साबिक़ा उस्ताज़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बे नियाज़ है उस की **ख़ुफ़्या तदबीर** को कोई नहीं जानता, **किसी को भी अपने इल्म या इबादत पर नाज़ नहीं करना चाहिये,** शैतान ने हज़ारों साल इबादत की, अपनी रियाज़त और इल्मिय्यत के सबब **मुअ़ल्लिमुल म-लकूत** या'नी फ़िरिश्तों का उस्ताज़ बन गया था लेकिन उस बद बख़्त को तकब्बुर ले डूबा और वोह **काफ़िर** हो गया, अब बन्दों को बहकाने के लिये वोह पूरा ज़ोर लगाता है, ज़िन्दगी भर तो वस्वसे डालता ही रहता है मगर मरते वक़्त पूरी ताक़त सर्फ़ कर देता है कि किसी त़रह़ बन्दे का **बुरा ख़ातिमा** हो जाए।

शैत़ान वालिदैन के रूप में

चुनान्चे मन्क़ूल है : जब इन्सान **नज़्अ़** के **आ़लम** में होता है दो **शैत़ान** उस के दाएं बाएं आ कर बैठ जाते हैं, दाईं त़रफ़ वाला **शैत़ान** उस के वालिद का रूप धार कर कहता है : "**बेटा** ! देख मैं तेरा मेहरबान व शफ़ीक़ बाप हूं मैं तुझे नसीह़त करता हूं कि तू **नसारा का मज़हब इख़्तियार** कर के मरना क्यूंकि वोही सब से बेहतरीन मज़हब है।" **बाईं जानिब** वाला शैत़ान मरने वाले की मां की **सूरत में आता है** और कहता है : "**मेरे लाल** ! मैं ने तुझे अपने पेट में रखा, अपना दूध पिलाया और अपनी गोद में पाला है प्यारे बेटे ! मैं नसीह़त करती हूं **यहूदी मज़हब इख़्तियार कर के मरना** कि येही सब से आ'ला मज़हब है।" (التذكرة للقرطبى، باب ماجاء ان الشيطان...الخ،ص٣٨)

www.dawateislami.net

मौत की तकालीफ़ का एक क़त्रा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **वाक़ेई** बेहद तशवीश नाक **मुआ़मला** है बन्दा **जब बुख़ार या दर्दे सर वग़ैरा में मुब्तला होता है तो** उसे किसी बात में फ़ैसला करना दुश्वार हो जाता है, फिर **नज़्अ़** की तकालीफ़ तो बहुत ही ज़ियादा होती हैं। "**शर्हुस्सुदूर**" में है : "**अगर मौत की तकालीफ़ का एक क़त्रा तमाम आसमान व ज़मीन में रहने वालों पर टपका दिया जाए तो सब मर जाएं।**"

(شرح الصدور،باب من دنا اجله و کیفیة الموت و شدته،ص ۳۲)

अब ऐसी नाज़ुक ह़ालत में **जब मां बाप के रूप में शयात़ीन** बहकाते होंगे उस वक़्त इन्सान **को इस्लाम पर षाबित क़दम रहना** किस क़दर दुश्वार हो जाता होगा। "**कीमियाए सआ़दत**" में है : "ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाया करते थे : **ख़ुदा** की **क़सम** ! कोई शख़्स इस बात से **मुत़्-मइन नहीं हो सकता कि मरते वक़्त उस का इस्लाम बाक़ी रहेगा या नहीं।**"

(کیمیائے سعادت،اصل سیم ،سوء خا تمت،ج۲،ص ۸۲۵)

शैत़ान दोस्तों की शक्ल में

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : सकरात के वक़्त **शैत़ान** अपने **चैलों** को मरने वाले के **दोस्तों** और **रिश्तेदारों की शक्लों** में ले कर आ पहुंचता है, येह सब कहते हैं, "**भाई** ! हम तुझ से पहले मौत का मज़ा

www.dawateislami.net

चख चुके हैं, मरने के बा'द जो कुछ होता है उस से हम अच्छी तरह वाक़िफ़ हैं, अब तेरी बारी है, हम तुझे हम दर्दाना मश्वरा देते हैं कि तू यहूदी मज़हब इख़्तियार कर ले कि येही दीन **अल्लाह** तआला की बारगाह में मक़्बूल है।" अगर मरने वाला उन की बात नहीं मानता तो इसी तरह दूसरे अह़बाब के रूप में **शयातीन** आ आ कर कहते हैं : "तू **नसारा का मज़हब इख़्तियार कर ले** क्यूंकि इसी मज़हब ने (ह़ज़रत) मूसा (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) के दीन को मन्सूख़ किया था।" यूंही अइज़्ज़ा व अक़रिबा की शक्ल में जमाअ़तें आ कर मुख़्तलिफ़ बातिल फ़िर्क़ों को क़बूल कर लेने के मश्वरे देती हैं तो जिस की क़िस्मत में ह़क़ से मुन्ह़रिफ़ होना (या'नी फिर जाना) लिखा होता है **वोह उस वक़्त डगमगा जाता** और **बातिल मज़हब इख़्तियार** कर लेता है।

(الدرة الفاخرة فی کشف علوم الآخرة مع مجموعة رسائل الامام الغزالی،ص ۵۱۱)

ईमान की ह़िफ़ाज़त की फ़िक्र करते रहिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बे नियाज़ी और उस की खुफ़्या तदबीर से हर मुसलमान को लर्ज़ां व तर्सां रहना चाहिये न जाने कौन सी मा'सिय्यत (या'नी ना फ़रमानी) **अल्लाहो रब्बुल इ़ज़्ज़त** के क़हरो ग़ज़ब को उभार दे और ईमान के लिये ख़त़रा पैदा हो जाए। बस हर वक़्त अपने रब عَزَّوَجَلَّ के आगे **आ़जिज़ी** का मुज़ाहरा करते रहिये सन्जीदा रहिये, **ज़बान को क़ाबू में रखिये** कि ज़ियादा बोलते रहने से भी बा'ज़ अवक़ात मुंह से कलिमाते कुफ़्र

www.dawateislami.net

निकल जाते हैं और पता नहीं लगता, हर वक़्त ईमान की ह़िफ़ाज़त की फ़िक्र करते रहना ज़रूरी है, मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत**, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن का इर्शाद है : उ़-लमाए किराम फ़रमाते हैं : "**जिस को (ज़िन्दगी में) सल्बे ईमान का ख़ौफ़ न हो मरते वक़्त उस का ईमान सल्ब हो जाने का अन्देशा है।**" (अल मल्फ़ूज़, हिस्सा. 4 स. 495)

हमारा क्या बनेगा ?

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ हमारे ह़ाले ज़ार पर करम फ़रमाए **नज़्अ़** के वक़्त न जाने हमारा क्या बनेगा ! आह ! हम ने बहुत गुनाह कर रखे हैं, नेकियां नाम को नहीं हैं, हम दुआ़ करते हैं : ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ **नज़्अ़** के वक़्त हमारे पास शयात़ीन न आएं बल्कि रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم करम फ़रमाएं।

__नज़्अ़__ के वक़्त मुझे जल्वए __मह़बूब__ दिखा
तेरा क्या जाएगा मैं शाद मरूंगा या रब

सरकार صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की गिर्या व ज़ारी

ज़रा धड़कते दिल पर हाथ रख कर सुनिये ! **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के **मह़बूब** صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को हम गुनहगारों के ईमान की सलामती की कितनी फ़िक्र है चुनान्चे रूहुल बयान जिल्द 10 सफ़्ह़ा 315 में है : "एक बार मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबार में **शैत़ान मक्कार** रूप बदल कर हाथ में **पानी की बोतल** लिये ह़ाज़िर

www.dawateislami.net

हुवा और अ़र्ज़ की : मैं लोगों को **नज़्अ़** के वक़्त येह बोतल ईमान के बदले **फ़रोख़्त** किया करता हूं, येह सुन कर आक़ाए नामदार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, उम्मत के ग़मख़्वार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इतना रोए कि अहले बैते अत़्हार भी रोने लगे । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने **वह़्य भेजी ऐ मेरे मह़बूब** ! आप ग़म मत कीजिये ! मैं **ब ह़ालते नज़्अ़** अपने बन्दों को **शैत़ान के मक्र** से बचाता हूं ।"

(تفسیر روح البیان،النازعات، تحت الآیۃ:۲،ج۱۰،ص۳۱۵)

हर उम्मती की फ़िक्र में आक़ा हैं मुज़्तरिब
ग़म ख़्वार वालिदैन से बढ़ कर हुज़ूर हैं

आग के सन्दूक़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस किसी बद नसीब का **कुफ़्र पर ख़ातिमा** होगा उस को क़ब्र इस ज़ोर से दबाएगी **कि इधर की पसलियां** उधर और उधर की इधर हो जाएगी, इसी त़रह़ और भी दर्दनाक **अ़ज़ाब** होंगे फिर **क़ियामत का पचास हज़ार साला** दिन सख़्त तरीन होलनाकियों में बसर होगा और उसे औंधे मुंह घसीट कर जहन्नम में झोंक दिया जाएगा, फिर आख़िर में कुफ़्फ़ार के लिये येह होगा कि उस के **क़द बराबर आग** के सन्दूक़ में उसे बन्द करेंगे, फिर उस में **आग भड़काएंगे** और आग का क़ुफ़्ल (या'नी ताला) लगाया जाएगा, **फिर येह सन्दूक़** आग के दूसरे सन्दूक़ में रखा जाएगा और इन दोनों के दरमियान आग जलाई जाएगी और इस में भी **आग का**

www.dawateislami.net

क़ुफ़्ल लगाया जाएगा, फिर इसी त़रह़ उस को एक और सन्दूक़ में रख कर और आग का क़ुफ़्ल लगा कर आग में डाल दिया जाएगा। फिर **मौत** को एक **मेंढ़े** की त़रह़ जन्नत और दोज़ख़ के दरमियान ला कर ज़ब्ह़ कर दिया जाएगा, अब किसी को **मौत** नहीं आएगी, हर जन्नती हमेशा हमेशा के लिये जन्नत में और हर दोज़ख़ी हमेशा हमेशा के लिये दोज़ख़ में ही रहेगा, **जन्नतियों के लिये मसर्रत** बालाए मसर्रत होगी और **दोज़ख़ियों के लिये ह़सरत** बालाए ह़सरत।

(बहारे शरीअ़त, दोज़ख़ का बयान, हिस्सए अव्वल, स. 170-171 मुलख़्ख़सन)

या रब्बे मुस्त़फ़ा ! हम तुझ से ईमान व आ़फ़िय्यत के साथ मदीने में शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में **म-दनी मह़बूब** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के पड़ोस का सुवाल करते हैं।

पाया है वोह अल्त़ाफ़ो करम आप के दर पर

सब अ़र्ज़ व बयां ख़त्म है ख़ामोश खड़ा है

मरने की दुआ़ करते हैं हम आप के दर पर

आशुफ़्ता है बदर आंख है नम आप के दर पर

अच्छे ख़ातिमे के लिये म-दनी फूल

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى का फ़रमाने आ़ली है : **बुरे ख़ातिमे से अम्न** चाहते हो तो अपनी सारी ज़िन्दगी **अल्लाह** **रब्बुल इ़ज़्ज़त** की इत़ाअ़त में बसर करो और हर हर गुनाह से बचो, ज़रूरी है कि तुम पर आ़रिफ़ीन

www.dawateislami.net

जैसा ख़ौफ़ ग़ालिब रहे ह़त्ता कि इस के सबब तुम्हारा **रोना धोना** त़वील हो जाए और तुम हमेशा **ग़मगीन रहो** । आगे चल कर मज़ीद फ़रमाते हैं : "तुम्हें **अच्छे ख़ातिमे** की तय्यारी में मश्ग़ूल रहना चाहिये, हमेशा ज़िक्रुल्लाह में लगे रहो, दिल से दुन्या की **मह़ब्बत** निकाल दो, गुनाहों से अपने आ'ज़ा बल्कि दिल की भी ह़िफ़ाज़त करो, जिस क़दर मुमकिन हो **बुरे लोगों** को देखने से भी बचो कि इस से भी दिल पर अषर पड़ता है और तुम्हारा ज़ेह्न इस त़रफ़ माइल हो सकता है ।"

(احیاء علوم الدین، کتاب الخوف والرجاء، بیان معنی سوء الخاتمۃ، ج٤، ص٢١٩، ٢٢١ملخصًا)

मुसल्मां है अ़त्त़ार तेरी अ़त़ा से

हो ईमान पर ख़ातिमा या इलाही

प्यारे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त की रह़मत से हरगिज़ मायूस न हों ! आप **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता रहेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **ईमान की ह़िफ़ाज़त** का ज़ेह्न भी बनता रहेगा और इस माह़ोल की ब-र-कतें भी नसीब होंगी । आइये ! मैं आप को एक **म-दनी बहार** सुनाता हूं :

म-दनी चेनल की म-दनी बहार

चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़बूआ़ 504 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**ग़ीबत की तबाह कारियां**" सफ़ह़ा 95 पर है : **सिद्दीक़आबाद** (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि

www.dawateislami.net

20 एप्रिल सि. 2009 ई. बरोज़ पीर शरीफ़ बाबुल मदीना कराची (पाकिस्तान) के रिहाइशी तक़रीबन 50 साला एक ग़ैर मुस्लिम ने जब **म-दनी** चेनल पर इस्लाम की ह़क़ीक़ी ता'लीमात को सुना तो اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **मुतअष्षिर** हो कर इस्लाम क़बूल कर लिया, उन का इस्लामी नाम मुह़म्मद सिद्दीक़ रखा गया, वोह जुमा'रात को **दा'वते इस्लामी** के आ़-लमी **म-दनी** मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में होने वाले हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शरीक हुए और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ हाथों हाथ **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबिय्यत के 12 दिन के **म-दनी क़ाफ़िले** के मुसाफ़िर भी बन गए, **म-दनी क़ाफ़िले** से वापस आने के दूसरे या तीसरे रोज़ ककरी ग्राउन्ड बाबुल मदीना कराची के नज़दीक एक गाड़ी ने उन्हें कुचल दिया, येह ह़ादिषा जान लेवा षाबित हुवा, यूं वोह इस्लाम की अनमोल दौलत से मालामाल होने के तक़रीबन 17 या 18 दिन बा'द इस दुन्या से रुख़्सत हो गए।

अल्लाह तआ़ला उन की मग़फ़िरत फ़रमाए।

اٰمِين بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

म-दनी चेनल की मुहिम है नफ़्सो शैत़ां के ख़िलाफ़
जो भी देखेगा करेगा اِنْ شَآءَ اللّٰہ ए'तिराफ़
नफ़्से अम्मारा पे ज़र्ब ऐसी लगेगी ज़ोरदार
कि नदामत के सबब होगा गुनहगार अश्कबार

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए **सुन्नत की फ़ज़ीलत** और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं ।

ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस ने **मेरी सुन्नत** से **मह़ब्बत** की उस ने मुझ से **मह़ब्बत** की और जिस ने मुझ से **मह़ब्बत** की वोह **जन्नत में मेरे साथ** होगा ।"

(تاریخ مدينة دمشق لابن عساکر، انس بن مالك،ج٩، ص٣٤٣)

लिहाज़ा **तेल डालने और कंघा करने के 10 म-दनी फूल** क़बूल फ़रमाइए,

(इस किताब के सफ़ह़ा नम्बर **603** से बयान करें)

★★★★★★

मोअमिनों पर तीन एह़सान करो

ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन मुआ़ज़ राज़ी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡهَادِی *फ़रमाते हैं : तुम से मोअमिनों को अगर तीन फ़वाइद ह़ासिल हों तो तुम मोह़सिनीन (या'नी एह़सान करने वालों) में शुमार किये जाओगे (1) अगर उन्हें नफ़्अ़ नहीं पहुंचा सकते तो नुक़्सान भी न पहुंचाओ (2) उन्हें ख़ुश नहीं कर सकते तो रन्जीदा भी न करो (3) उन की ता'रीफ़ नहीं कर सकते तो बुराई भी मत करो ।*

(تنبیہ الغافلين،باب الغيبة،ص٨٨)

www.dawateislami.net

बयान नम्बर 6

मुह़ासबए नफ़्स

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले "**मैं सुधरना चाहता हूं**" में दुरूद शरीफ़ के मुतअ़ल्लिक़ ह़दीषे पाक बयान फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम सख़ावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی नक़्ल फ़रमाते हैं : **सरकारे दो आ़लम** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक भेजा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **उस पर दस रह़मतें** नाज़िल फ़रमाता है और जो मुझ पर दस बार दुरूदे पाक भेजे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर सो **रह़मतें नाज़िल फ़रमाता** है और जो मुझ पर सो बार दुरूदे पाक भेजे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की **दोनों आंखों के दरमियान** लिख देता है कि **येह बन्दा निफ़ाक़ और दोज़ख़ की आग से बरी है** और **क़ियामत** के दिन उस को **शहीदों** के साथ रखेगा।" (القول البديع،الباب الثانی،ص۲۳۳)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِيب ! صلَّی اللّٰهُ تعالٰی علٰی محمَّد

अनोखा ह़िसाब

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना **इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی नक़्ल फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना **इब्नुस्सिम्मा** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने एक बार अपना मुह़ासबा करते हुए अपनी उ़म्र शुमार की तो वोह (तक़रीबन) साठ बरस बनी इन **साठ बरसों** को बारह से

www.dawateislami.net

ज़र्ब देने पर **सात सो बीस महीने** बने, सात सो बीस को मज़ीद तीस से मज़रूब (या'नी मल्टीप्लाय) किया तो ह़ासिले ज़र्ब इक्कीस हज़ार छे सो आया जो आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की मुबारक उ़म्र के अय्याम थे फिर अपने आप से मुख़ात़िब हो कर फ़रमाने लगे : "अगर मुझ से रोज़ाना एक गुनाह भी सरज़द हुवा हो तो अब तक **इक्कीस हज़ार छे सो गुनाह हो चुके,** जब कि इस मुद्दत में ऐसे अय्याम भी शामिल होंगे जिन में योमिय्या **एक हज़ार** तक भी गुनाह हुए होंगे," येह कहना था कि ख़ौफ़े **ख़ुदा** से लरज़ने लगे ! फिर यकायक एक चीख़ उन के मुंह से निकल कर फ़ज़ा की पहनाइयों में गुम हो गई और आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ **ज़मीन** पर तशरीफ़ ले आए, देखा गया तो त़ाइरे रूह़ क़फ़से उन्सुरी से परवाज़ कर चुका था।

(کیمیائے سعادت، اصل ششم درمحاسبه ومراقبه، مقام سوم درمحاسبات، ج۲،ص ۸۹۱)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।

मुह़ासबा किसे कहते हैं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अपने साबिक़ा आ'माल का ह़िसाब करना मुह़ासबा कहलाता है। ग़ौर फ़रमाइये कि हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن किस त़रह़ अपना मुह़ासबा फ़रमाते, उन का अन्दाज़े **फ़िक्रे मदीना** (1) कितना आ'ला था हर दम **नेकियों** में मसरूफ़ रहने

---

(1) **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** में अपने मुह़ासबे को "**फ़िक्रे मदीना**" कहते हैं, नेक बनने के बेहतरीन नुस्ख़े "**म-दनी इन्आ़मात**" में से एक म-दनी इन्आ़म "**फ़िक्रे मदीना**" भी है या'नी रोज़ाना रात को अपने आ'माल का **मुह़ासबा** करे और इस दौरान "**म-दनी इन्आ़मात**" का रिसाला भी पुर करे।

www.dawateislami.net

के बा वुजूद ख़ुद को गुनहगार तसव्वुर करते ह़ालांकि उन की शान तो येह है कि वोह **मुस्तह़ब्बात** के तर्क को भी अपने लिये सय्यिआत (या'नी बुराइयों) में से जानते, नफ़्ली इबादात में कमी को भी **जुर्म** तसव्वुर करते और बचपन की ख़त़ा को भी गुनाह शुमार करते ह़ालांकि ना **बालिग़ी** के गुनाह **मह़सूब** (शुमार) नहीं किये जाते।

बचपन की ख़त़ा याद आ गई

चुनान्चे एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना उ़त़बा ग़ुलाम عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ السَّلَام एक मकान के पास से गुज़रे तो **कांपने** लगे और **पसीना** आ गया ! लोगों के **इस्तिफ़्सार** पर फ़रमाया : येह वोह जगह है जहां मैं ने छोटी उ़म्र में **गुनाह** किया था।

(تنبیہ المغترین،خوفھم مما للعباد علیھم،ص۵۷)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।*

नेकी कर के भूल जाओ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अ़क़्ल मन्द वोही है जो नेकियों के ह़ुसूल की **सआ़दत** पा कर इन्हें भूल जाए और **गुनाह** सादिर हो जाएं तों इन्हें याद रखे और अपनी इस्लाह़ के लिये इन पर सख़्ती से अपना मुह़ासबा करता रहे बल्कि **नेक आ'माल** में कमी पर भी ख़ुद को **सरज़निश** (या'नी डांट डपट) करे और हर लम्ह़ा ख़ुद को **अल्लाह** वाह़िदे क़ह्हार के क़हरो ग़ज़ब से डराता रहे येही हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِیْن का मा'मूल रहा है।

www.dawateislami.net

आज "क्या क्या" किया ?

चुनान्चे अमीरुल मोअमिनीन **हज़रते सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रोज़ाना अपना एह़तिसाब फ़रमाया करते और जब रात आती तो अपने पाउं पर दुर्रा मार कर फ़रमाते : बता ! आज तूने "क्या क्या" किया है ?

(احیاء علوم الدین، کتاب المراقبۃ و المحاسبۃ، المرابطۃ الرابعۃ فی معاقبۃ النفس علی تقصیرھا، ج٥، ص١٤١)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदके़ हमारी मग़्फ़िरत हो ।*

फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की आ़जिज़ी

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अ़-शरए मुबश्शरा[1] या'नी जिन **दस सह़ाबए किराम** عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان को **ताजदारे रिसालत** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने **जन्नत** की बिशारत सुनाई उन में शामिल और सय्यिदुना **सिद्दीके़ अकबर** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के बा'द सब से **अफ़्ज़ल** होने के बा वुजूद बहुत **इनकिसारी** फ़रमाया करते थे चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना **अनस बिन मालिक** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : एक बार मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना **फ़ारूके़ आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को एक बाग़ की दीवार के क़रीब देखा कि वोह अपने **नफ़्स** से फ़रमा रहे थे : "वाह ! लोग तुझे **अमीरुल मुअमिनीन**

---

1 अ़-शरए मुबश्शरा के नाम येह हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली, ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह, ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़वाम, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़, ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास, ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद, ह़ज़रते अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمْ اَجْمَعِیْن

www.dawateislami.net

कहते हैं (फिर बत़ौरे आजिज़ी फ़रमाने लगे) और तू (वोह है कि) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से नहीं **डरता** ! (याद रख !) अगर तूने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ नहीं रखा तो उस के **अ़ज़ाब** में गिरिफ़्तार हो जाएगा । "

(کیمیائے سعادت،اصل ششم درمحاسبہ ومراقبہ،مقام سوم درمحاسبات،ج۲،ص۸۹۲)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना **फ़ारूके़ आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ का इस त़रह़ अपने **नफ़्स** को मलामत करना और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ दिला कर इस का **मुह़ासबा** करना हमारी ता'लीम के लिये भी था ।

क़ियामत से पहले ह़िसाब

एक मौक़अ़ पर ह़ज़रते सय्यिदुना **फ़ारूके़ आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया : "**ऐ लोगो** ! अपने आ'माल का इस से पहले मुह़ासबा कर लो कि **क़ियामत आ जाए** और उन का **ह़िसाब लिया जाए** ।"

(احیاءعلوم الدین،کتاب المراقبۃ والمحاسبۃ،المقام الاوّل ...الخ،ج۵،ص۱۲۸)

चराग़ पर अंगूठा

बहुत बड़े **आ़लिम** और ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना **अह़नफ़ बिन कै़स** رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ रात के वक़्त **चराग़** हाथ में उठा लेते और उस की लौ पर **अंगूठा रख** कर इस त़रह़ फ़रमाते : **ऐ नफ़्स** ! तूने फ़ुलां काम क्यूं किया ? और फ़ुलां चीज़ क्यूं खाई ? या'नी अपना

www.dawateislami.net

मुहासबा करते कि अगर मेरे नफ़्स ने ग़-लती की हो तो उस को तम्बीह हो कि येह चराग़ की लौ जो कि बहुत ही हल्की आग है फिर भी ना क़ाबिले बरदाश्त है तो भला जहन्नम की भयानक आग सहना क्यूं कर मुमकिन होगा। (کیمیائے سعادت،اصل ششم، مقام چھارم د رمعاقبت نفس،ج۲،ص۸۹۳)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! येह उन **नुफ़ूसे क़ुदसिय्या** के हालात हैं जो **परवर दगार** عَزَّوَجَلَّ के **परहेज़ गार** बन्दे हैं जिन के सरों पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने विलायत के ताज सजाए हैं, मुलाहज़ा फ़रमाइये **कि बईं हमा शरफ़ व मर्तबत** (या'नी विलायत जैसा अ़ज़ीम मर्तबा ह़ासिल होने के बा वुजूद) किस त़रह़ नफ़्स का मुह़ासबा फ़रमाते और ख़ुद को आ़जिज़ व गुनहगार तसव्वुर करते। काश! हम भी अपना मुह़ासबा कर पाते और जीते जी अपने **आ'माल का जाइज़ा** लेने में काम्याब हो जाते!

हमारा ह़ाल तो येह है कि हम सर ता पा गुनाहों में डूबे हैं, आख़िर कौन सा गुनाह ऐसा है जो हम नहीं करते? नेकियां हम से नहीं हो पातीं और अगर हो भी जाएं तो **इख़्लास** का दूर दूर तक कोई पता नहीं होता, लोगों को अपने नेक आ'माल सुना कर **रियाकारी** की तबाह कारी का **शिकार** हो जाते हैं, हमारा नामए आ'माल **नेकियों** से **ख़ाली** और **गुनाहों** से पुर होता जा रहा है लेकिन **अफ़सोस**! हमें इस के **बुरे नताइज** का कोई एह़सास नहीं और इस पर **तुर्रा येह** कि हम ख़ुद को बहुत **अ़क़्लमन्द** गुमान करते हैं ह़त्ता कि अगर कोई हमें

www.dawateislami.net

बे वुक़ूफ़ या **कम अ़क़्ल** कह दे तो उस के दुश्मन ही हो जाए, लेकिन अब आप ही बताइये कि अगर किसी **मफ़रूर** मुजरिम की फांसी का हुक्म नामा जारी हो चुका हो, **पोलीस** उस को तलाश कर रही हो और वोह **गिरिफ़्तारी** से बे ख़ौफ़, **राहे तह़फ़्फ़ुज़ व एह़तियात़** तर्क कर के आज़ादाना घूम रहा हो तो क्या उस को **अ़क़्लमन्द** कहेंगे ? हरगिज़ नहीं ! ऐसे आदमी को लोग **बे वुक़ूफ़** ही कहेंगे ।

जहन्नम के दरवाज़े पर नाम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिसे बता दिया गया हो कि "जिस ने क़सदन नमाज़ छोड़ी उस का नाम **जहन्नम** के उस दरवाज़े पर लिख दिया जाता है जिस से वोह जहन्नम में दाख़िल होगा ।"

(حلیة الاولیاء،۳۸۹ مسعر بن کدام، الحدیث:۱۰۵۹۰،ج۷،ص۲۹۹)

और येह भी ख़बर दे दी गई हो कि "**जो** माहे र-मज़ान का एक रोज़ा भी बिला उ़ज़्रे शरई व मरज़ क़ज़ा कर देता है तो **ज़माने भर** के रोज़े उस की क़ज़ा नहीं हो सकते अगर्चे बा'द में रख भी ले ।"

(سنن الترمذی، کتاب الصوم،باب ما جاء فی الافطار متعمداً،الحدیث:۷۲۳،ج۲،ص۱۷۵)

और येह भी ख़बर दे दी गई हो कि "जो शख़्स ह़ज के ज़ादे राह (अख़राजात) और सुवारी पर क़ादिर हुवा जो उसे **बैतुल्लाह तक** पहुंचा दे इस के **बा वुजूद** ह़ज न करे वोह चाहे **यहूदी हो कर मरे** या ईसाई हो कर ।"

(المرجع السابق،باب ما جاء من التغلیظ فی ترک الحج،الحدیث:۸۱۲،ج۲،ص۲۱۹)

www.dawateislami.net

अगर तुम ने **बद निगाही** की, **किसी** ना महरम औ़रत को देखा या अमरद को ब नज़रे शहवत देखा या TV, VCR, इन्टरनेट और सीनेमा घर वग़ैरा पर फ़िल्में, डिरामे और बे ह़याई से पुर मनाज़िर देखे तो याद रखो ! मनकूल है : जिस ने अपनी आंख ह़राम से पुर की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **बरोज़े क़ियामत** उस की आंख में आग भर देगा। (مکاشفة القلوب،الباب الاوّل فی بیان الخوف،ص۱۰)

और जिसे येह समझा दिया गया हो कि अ़न क़रीब तुम्हें मरना पड़ेगा क्यूंकि हर जान को मौत से हम कनार होना है जब वक़्त पूरा हो जाएगा तो फिर **मौत** एक पल आगे होगी न पीछे और येह भी इत्तिलाअ़ दे दी गई हो कि मरने के बा'द उस **क़ब्र** में जाना है जो **मुजरिमों** पर तारीक और **वह़शत नाक** होती है, उन के लिये कीड़े मकोड़े और सांप बिच्छू भी होते हैं और उस में हज़ारों साल रहना होगा। आह ! क़ब्र हर एक को दबाएगी, नेकों को ऐसे दबाएगी जैसे मां बिछड़े हुए लाल को शफ़क़त के साथ सीने से चिमटा लेती है और जिन से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नाराज़ होता है उन को ऐसे भींचेगी कि पसलियां टूट फूट कर एक दूसरे में इस त़रह़ पैवस्त हो जाएंगी जिस त़रह़ दोनों हाथों की उंगलियां एक दूसरे में मिल जाती हैं, इसी पर **इक्तिफ़ा** नहीं बल्कि इस बात से भी मुतनब्बेह या'नी ख़बर दार कर दिया गया हो कि **क़ियामत का एक दिन पचास हज़ार साल के बराबर होगा** और सूरज एक मील पर रह कर आग बरसा रहा होगा, ह़िसाब किताब का सिल्सिला होगा, नेकों के लिये जन्नत की राह़तें और मुजरिमों के लिये जहन्नम की आफ़तें होंगी।

www.dawateislami.net

नादानी की इन्तिहा

इतना कुछ मा'लूम होने के बा वुजूद अगर कोई शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से कमा हक़्क़ुहू न डरे, मौत की सख़्तियों, क़ब्र की वह़शत नाकियों, **क़ियामत** की होलनाकियों और **जहन्नम** की सज़ाओं का सह़ीह़ मा'नों में ख़ौफ़ न रखे, ग़फ़लत की नींद सोता रहे, नमाज़ें न पढ़ें, **र-मज़ानुल मुबारक** के रोज़े न रखे, फ़र्ज़ होने की सूरत में भी अपने माल की ज़कात न निकाले, फ़र्ज़ होने के बा वुजूद ह़ज अदा न करे, **वा'दा ख़िलाफ़ी** इस का वतीरा रहे, झूट, ग़ीबत, चुग़ली, बद गुमानी वग़ैरा तर्क न करे, **फ़िल्में डिरामों** का शाइक़ रहे, गाने सुनना इस का बेहतरीन मश्ग़ला रहे, **वालिदैन की ना फ़रमानी** करे, गालियां बकने और त़रह़ त़रह़ की बे ह़याई की बातों में मगन रहे, अल ग़रज़ खुद को बिलकुल भी **न सुधारे** मगर फिर भी अपने आप को **अ़क़्ल मन्द** समझता रहे तो ऐसे शख़्स से बढ़ कर बे वुक़ूफ़ और कौन होगा ? और **बे वुक़ूफ़ी** की इन्तिहा येह है कि जब सुधारने की ख़ात़िर समझाया जाए तो ला परवाही से येह कह दे कि बस जी कोई बात नहीं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तो **रह़ीमो करीम** है मेहरबानी करेगा, वोह करम फ़रमा देगा ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बे नियाज़ है

यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **रह़ीमो करीम** है और बिग़ैर सबब के मह़्ज़ अपनी **रह़मत** से बख़्श देने और जन्नत में दाख़िल फ़रमाने पर क़ादिर है । मगर उस की बे नियाज़ी से डरना ज़रूरी है कि वोह चाहे तो किसी एक गुनाह पर **गिरिफ़्त** फ़रमा ले ।

www.dawateislami.net

चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** के मत़बूआ़ रिसाले "**ज़ुल्म का अन्जाम**" सफ़ह़ा 11 ता 13 पर ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرانی की किताब "**तम्बीहुल मुग़्तर्रीन**" के ह़वाले से नक़्ल किया गया है कि **मशहूर** ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : एक इसराईली शख़्स ने अपने पिछले तमाम गुनाहों से तौबा की, सत्तर साल तक लगातार इस त़रह़ बन्दगी करता रहा कि दिन को रोज़ा रखता और रात को जाग कर इबादत करता, न कोई उ़म्दा ग़िज़ा खाता, न किसी साए के नीचे आराम करता। उस के इन्तिक़ाल के बा'द किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा : ما فعل اللّٰہُ بِکَ؟ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? जवाब दिया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरा ह़िसाब लिया, फिर सारे गुनाह बख़्श दिये मगर एक लकड़ी जिस से मैं ने उस के **मालिक की इजाज़त के बिग़ैर दांतों में ख़िलाल कर लिया था** (और येह मुआ़मला हुक़ूक़ुल इबाद का था) और वोह मुआ़फ़ करवाना रह गया था इस की वजह से मैं अब तक जन्नत से रोक दिया गया हूं।" (تنبیہ المغترین،ص ٥١)

सुधरने के लिये तौबा कर लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बहर ह़ाल उस की रह़मत से मायूस भी नहीं होना चाहिये और उस की बे **नियाज़ी से ग़ाफ़िल**

www.dawateislami.net

भी नहीं रहना चाहिये। **आ़फ़िय्यत** इसी में है कि फ़ौरन अपने साबिक़ा गुनाहों से सच्ची पक्की तौबा कर लें बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तौबा क़बूल करने वाला है और आयन्दा गुनाहों से बचने और नेक बनने के लिये रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** (या'नी अपना मुह़ासबा) कीजिये ! इस ज़िम्न में अमीरे अहले सुन्नत फ़रमाते हैं :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुसलमानों की दुन्या व आख़िरत बेहतर बनाने के लिये **सुवाल नामे** की सूरत में **इस्लामी भाइयों** के लिये 72, **इस्लामी बहनों** के लिये 63, **दीनी त़-लबा** के लिये 92 और **दीनी त़ालिबात** के लिये 83, जब कि **म-दनी** मुन्नों और मुन्नियों के लिये 40 **म-दनी इन्आ़मात** पेश किये गए हैं, **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला **मक्तबतुल मदीना** से मिल सकता है, रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए़ इस को पुर कर के **म-दनी** माह की 10 तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने यहां के **दा'वते इस्लामी** के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाना होता है। अपने गुनाहों का एह़तिसाब करने, क़ब्रो ह़श्र के बारे में ग़ौरो फ़िक्र करने और अपने अच्छे बुरे कामों का जाइज़ा लेते हुए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर करने को **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** में "**फ़िक्रे मदीना**" करना कहते हैं।

आप भी येह रिसाला ह़ासिल कर लीजिये ! अगर फ़िल ह़ाल पुर नहीं करना चाहते तो न सही इतना तो कीजिये कि वलिय्ये कामिल, आ़शिक़े रसूल, आ'ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की **पच्चीसवीं शरीफ़** की निस्बत से रोज़ाना कम अज़् कम 25 सेकन्ड्ज़ के लिये इस को देख लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

देखने से और पढ़ते रहने से **फ़िक्रे मदीना** करने और इस रिसाले को भरने का ज़ेह्न बनेगा और अगर भरने का मा'मूल बन गया तो اِنْ شَآءَاللّٰہعَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कतें आप ख़ुद ही देख लेंगे।

म-दनी इन्आ़मात पर करता है जो कोई अ़मल
मग़्फ़िरत कर बे ह़िसाब उस की ख़ुदाए लम य ज़ल

म-दनी इन्आ़मात के रिसाले की ब-रकत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **म-दनी इन्आ़मात** ने न जाने कितने इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों की ज़िन्दगियों में **म-दनी इनक़िलाब** बर पा कर दिया है, इस की एक झलक मुलाह़ज़ा हो !

चुनान्चे न्यू कराची (पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ बयान है : अ़लाक़े की मस्जिद के इमाम साह़िब जो कि **दा'वते इस्लामी** से वाबस्ता हैं उन्हों ने इनफ़िरादी कोशिश करते हुए मेरे बड़े भाई जान को **म-दनी इन्आ़मात का एक रिसाला** तोह़फ़े में दिया, वोह घर ले आए और पढ़ा तो ह़ैरान रह गए कि इस मुख़्तसर से रिसाले में एक मुसलमान को इस्लामी ज़िन्दगी गुज़ारने का इतना ज़बर दस्त फ़ॉरमूला दे दिया गया है। **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला मिलने की ब-रकत से اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ उन को नमाज़ पढ़ने का जज़्बा मिला और नमाज़े बा जमाअ़त की अदाएगी के लिये मस्जिद में ह़ाज़िर हो गए और अब पांच वक़्त के नमाज़ी बन चुके हैं, दाढ़ी मुबारक भी सजा ली और **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला भी पुर करते हैं।

www.dawateislami.net

म-दनी इन्आ़मात के आ़मिल पे हर दम हर घड़ी

या इलाही ! ख़ूब बरसा रह़मतों की तू छड़ी

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए **सुन्नत की फ़ज़ीलत** और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं।

ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस ने **मेरी सुन्नत** से **मह़ब्बत** की उस ने मुझ से **मह़ब्बत** की और जिस ने मुझ से **मह़ब्बत** की वोह **जन्नत में मेरे साथ** होगा।"

(تاریخ مدینة دمشق لابن عساکر، انس بن مالك، ج۹، ص۳٤۳)

लिहाज़ा **पानी पीने के 12 म-दनी फूल** क़बूल फ़रमाइए, (इस किताब के सफ़ह़ा नम्बर **630** से बयान करें)

★★★★★★

दुआ़ क़बूल होने का वक़्त

फ़रमाने मुस्त़फ़ा : صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

"अज़ान और इक़ामत के दरमियान दुआ़ रद नहीं की जाती।"

(سنن أبی داود، ج۱، ص۲۲۰، حدیث:۵۲۱)

www.dawateislami.net

बयान नम्बर 7 :

अ़फ़्व व दर गुज़र की फ़ज़ीलत

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले "**बा ह़या नौ जवान**" में दुरूद शरीफ़ के मुतअ़ल्लिक़ ह़दीषे पाक बयान फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मीठे **मीठे मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स **सुब्ह़ो शाम** मुझ पर दस दस बार **दुरूद शरीफ़** पढ़ेगा बरोज़े क़ियामत **मेरी शफ़ाअ़त** उसे पहुंच कर रहेगी।"

(الترغیب و الترھیب،کتاب النوافل،باب الترغیب فی آیات...الخ، الحدیث:۹۹۱،ج۱،ص۳۱۲)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

म-दनी आक़ा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का अ़फ़्व व दर गुज़र

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि मैं **नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम** صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के हमराह चल रहा था और आप एक नजरानी चादर औढ़े हुए थे जिस के कनारे मोटे और खुर्दरे थे, एक दम एक ब-दवी (या'नी अ़रब शरीफ़ के देहाती) ने आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की चादर मुबारक को पकड़ कर इतने ज़बर दस्त झटके से खींचा कि सुल्त़ाने ज़मन, **मह़बूबे** रब्बे ज़ुल मिनन صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक गरदन पर चादर के कनारे

www.dawateislami.net

से ख़राश आ गई, फिर वोह कहने लगा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का जो माल **आप** के पास है, **आप हुक्म** दीजिये कि उस में से मुझे कुछ मिल जाए। रहमते आलम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **उस की तरफ़ मुतवज्जेह** हुए और मुस्कुरा दिये फिर उसे कुछ माल **अ़ता फ़रमाने का हुक्म दिया।**

(صحيح البخاری، کتاب فرض الخمس، باب ما کان النبی صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم...الخ، الحديث:٣١٤٩، ج٢، ص٣٥٩)

हर ख़ता पर मेरी चश्म पोशी, हर त़लब पर अ़ताओं की बारिश
मुझ गुनहगार पर किस क़दर हैं मेहरबां ताजदारे मदीना

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **म-दनी आक़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ब-दवी से कैसा **हुस्ने सुलूक** फ़रमाया, इसी त़रह़ कोई हम को ख़्वाह कितना ही सताए, दिल दुखाए ! अफ़्व व दर गुज़र से काम लेना चाहिये और उस के साथ मह़ब्बत भरा सुलूक करने की कोशिश करनी चाहिये। कुरआने मजीद **फ़ुरक़ाने ह़मीद** में भी बद सुलूकी करने वाले के साथ भलाई करने की तरग़ीब दिलाई गई है, चुनान्चे इर्शादे बारी तआ़ला है :

اِدْفَعْ بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِیْ بَیْنَكَ وَ بَیْنَهٗ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ وَلِیٌّ حَمِیْمٌ ﴿۳۴﴾

(پ٢٤،حم السجدة:٣٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ सुनने वाले बुराई को भलाई से टाल जभी वोह कि तुझ में और उस में दुश्मनी थी ऐसा हो जाएगा जैसा कि गहरा दोस्त।*

www.dawateislami.net

आयते मुबारका के जुज़ “**बुराई को भलाई से टाल**” के तह़त सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद **मुह़म्मद नई़मुद्दीन** मुरादआबादी عَلَیۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡهَادِی **तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में फ़रमाते हैं : “म–षलन ग़ुस्से को सब्र से और जह्ल को ह़िल्म से, बद सुलूकी को अ़फ़्व से (टाल) कि अगर तेरे साथ कोई बुराई करे तो मुआ़फ़ कर।”

(ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान)

शाने मुस्त़फ़ा عَلَیۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهَا फ़रमाती हैं कि **मेरे सरताज, साह़िबे मे'राज, मह़बूबे रब्बे बे नियाज़** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم न तो आ़दतन बुरी बातें करते थे और न तकल्लुफ़न और न बाज़ारों में शोर करने वाले थे और न ही बुराई का बदला बुराई से देते थे बल्कि **आप** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **मुआ़फ़ करते और दर गुज़र फ़रमाया करते थे।**

(سنن الترمذی،کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی خلق النبی عَلَیۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام، الحدیث:۲۰۲۳،ج۳،ص۴۰۹)-

ह़िसाब में आसानी के तीन असबाब

ह़ज़रते **सय्यिदुना अबू हुरैरा** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ से मरवी है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : “तीन बातें जिस शख़्स में होंगी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (क़ियामत के दिन) उस का **ह़िसाब बहुत आसान त़रीके़ से लेगा** और उस को अपनी रह़मत से जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा,” **सह़ाबए किराम** عَلَیۡهِمُ الرِّضۡوَان ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हमारे मां बाप आप पर क़ुरबान ! वोह

कौन सी बातें हैं ? फ़रमाया : "(1) जो तुम्हें मह़रूम करे तुम उसे अ़ता करो और (2) जो तुम से क़त़्ए़ तअ़ल्लुक़ करे (या'नी तअ़ल्लुक़ तोड़े) तुम उस से मिलाप करो और (3) जो तुम पर ज़ुल्म करे तुम उस को मुआ़फ़ कर दो ।" (المعجم الاوسط للطبرانی،من اسمه محمد،الحدیث:٥٠٦٤،ج٤،ص١٨)

मोअ़ज़्ज़ज़ कौन

ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अ़र्ज़ की : ऐ रब عَزَّوَجَلَّ ! तेरे नज़दीक कौन सा बन्दा **ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला है** ? फ़रमाया : **"वोह जो बदला लेने की क़ुदरत के बा वुजूद मुआ़फ़ कर दे ।"**

(شعب الایمان للبیهقی، باب فی حسن الخلق، فصل فی ترك الغضب، الحدیث:٨٣٢٧،ج٦،ص٣١٩)

रोज़ाना सत्तर बार मुआ़फ़ करो

एक **शख़्स बारगाहे रिसालत** में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम ख़ादिम को कितनी बार मुआ़फ़ करें ? आप ख़ामोश रहे, उस ने फिर वोही सुवाल दोहराया, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم फिर **ख़ामोश** रहे, जब तीसरी बार सुवाल किया तो इर्शाद फ़रमाया : **"रोज़ाना सत्तर बार ।"**

(مشکاۃالمصابیح،کتاب النکاح،باب النفقات وحق المملوك، الحدیث:٣٣٦٧،ج١،ص٦١٧)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْحَنَّان इस ह़दीषे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : अ़-रबी में सत्तर का लफ़्ज़ बयाने ज़ियादती के लिये होता है या'नी हर दिन उसे

www.dawateislami.net

बहुत दफ़्आ़ मुआ़फ़ी दो, येह उस सूरत में हो कि गुलाम से ख़त़ाअन ग़-लत़ी हो जाती है ख़बाषते नफ़्स से न हो और कुसूर भी मालिक का ज़ाती हो, शरीअ़त का या क़ौमी व मुल्की कुसूर न हो कि येह कुसूर मुआ़फ़ नहीं किये जाते।

(مراۃ المناجیح، کتاب النکاح،باب نفقات کا بیان،ج۵،ص۱۷۰)

नमक ज़ियादा डाल दिया

कहते हैं एक आदमी की बीवी ने खाने में नमक ज़ियादा डाल दिया, उसे गुस्सा तो बहुत आया मगर येह सोचते हुए वोह गुस्से को पी गया कि मैं भी तो ख़त़ाएं करता रहता हूं अगर आज मैं ने बीवी की ख़त़ा पर सख़्ती से गिरिफ़्त की तो कहीं ऐसा न हो कि कल बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी मेरी ख़त़ाओं पर गिरिफ़्त फ़रमा ले ! चुनान्चे उस ने दिल ही दिल में अपनी ज़ौजा की ख़त़ा मुआ़फ़ कर दी। इन्तिक़ाल के बा'द उस को किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? उस ने जवाब दिया कि गुनाहों की कषरत के सबब **अ़ज़ाब** होने ही वाला था कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : मेरी बन्दी ने **सालन में नमक** ज़ियादा डाल दिया था और तुम ने उस की ख़त़ा मुआ़फ़ कर दी थी, जाओ मैं भी उस के सिले में तुम को आज **मुआ़फ़ करता हूं**।

(बयानाते अ़त्तारिय्या, हि़स्सा. 2, स.164)

मुआ़फ़ करने से इ़ज़्ज़त बढ़ती है

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : स-दक़ा देने से माल कम नहीं होता और

बन्दा किसी का **क़ुसूर मुआ़फ़ करे** तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस (मुआ़फ़ करने वाले) की इ़ज़्ज़त ही बढ़ाएगा और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये तवाज़ोअ़ (या'नी आ़जिज़ी) करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे बुलन्द फ़रमाएगा।

(صحیح مسلم، کتاب البروالصلة، باب استحباب العفو والتواضع،الحدیث:۲۵۸۸، ص۱۳۹۷)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمّد

जवाबी कार रवाई पर शैत़ान का आ जाना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! जब हम से कोई उलझे या बुरा भला कहे उस वक़्त **ख़ामोशी** ही में हमारे लिये आ़फ़िय्यत है, तिरमिज़ी शरीफ़ में है : "**مَنْ صَمَتَ نَجَا**" **या'नी जो चुप रहा उस ने नजात पाई।**

(سنن الترمذی، کتاب صفة القیامة،باب(ت:۱۱۵)،الحدیث:۲۵۰۹،ج۴،ص۲۲۵)

और येह मुह़ावरा भी ख़ूब है "**एक चुप सो को हराए**" अगर्चे शैत़ान लाख वस्वसे डाले कि तू भी उस को जवाब दे वरना लोग तुझे बुज़दिल कहेंगे, मियां! शराफ़त का ज़माना नहीं है इस त़रह़ तो लोग तुझ को जीने भी नहीं देंगे वग़ैरा वग़ैरा। मैं एक ह़दीषे मुबारका बयान करता हूं ग़ौर से समाअ़त फ़रमाइये, सुन कर आप को अन्दाज़ा होगा कि दूसरे के बुरा भला कहते वक़्त ख़ामोश रहने वाला रह़मते इलाही के किस क़दर नज़्दीक तर होता है।

चुनान्चे मुस्नदे इमाम अह़मद में है : किसी शख़्स ने **सरकारे मदीना** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मौजूदगी में ह़ज़रते **सय्यिदुना अबू**

www.dawateislami.net

बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को बुरा कहा तो जब उस ने बहुत ज़ियादती की तो उन्हों ने उस की बा'ज़ बातों का जवाब दिया (हालांकि आप की जवाबी कार रवाई मा'सिय्यत से पाक थी मगर) **सरकारे नामदार** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم वहां से उठ गए, **सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ **हुज़ूरे अकरम** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पीछे पहुंचे, अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! वोह मुझे बुरा कहता रहा आप तशरीफ़ फ़रमा रहे, जब मैं ने उस की बात का जवाब दिया तो आप उठ गए, फ़रमाया : "**तुम्हारे साथ फ़िरिश्ता था** जो उस का जवाब दे रहा था फिर जब तुम ने ख़ुद उसे जवाब देना शुरूअ़ किया तो **शैत़ान दरमियान में आ** कूदा ।

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی ہریرۃ رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ، الحدیث:٩٦٣٠،ج٣،ص٤٣٤)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

कर भला हो भला

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ सा'दी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی बोस्ताने सा'दी में नक़्ल करते हैं : एक नेक सीरत शख़्स अपने ज़ाती दुश्मनों का ज़िक्र भी बुराई से न करता था, जब भी किसी की बात छिड़ती उस की ज़बान से नेक कलिमा ही निकलता । उस के मरने के बा'द किसी ने उसे ख़्वाब में देखा तो सुवाल किया : ما فعل اللّٰہ بِک؟ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तेरे साथ क्या **मुआ़मला** फ़रमाया ? येह सुवाल सुन कर उस के होंटों पर मुस्कुराहट आ गई और वोह बुल बुल की त़रह शीरीं

www.dawateislami.net

आवाज़ में बोला : दुन्या में मेरी येही कोशिश होती थी कि मेरी ज़बान से किसी के बारे में कोई **बुरी बात न निकले**, नकीरैन ने भी मुझ से कोई सख़्त सुवाल न किया और यूं मेरा मुआ़मला बहुत अच्छा रहा।''

(بوستان سعدی،باب٤درتواضع،ص١٤٩)

नर्मी ज़ीनत बख़्शती है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाया नर्मी और अ़फ़्व व दर गुज़र करने से **अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त** की किस क़दर रह़मत होती है। **काश ! हम भी अपनी बे इ़ज़्ज़ती करने** वालों या सताने वालों को मुआ़फ़ करना इख़्तियार करें मुस्लिम शरीफ़ में है : ''जिस चीज़ में **नर्मी होती है उसे ज़ीनत बख़्शती है** और जिस चीज़ से जुदा कर ली जाती है उसे **ऐ़ब दार बना देती है**।''

(صحیح مسلم،کتاب البر والصلة والآداب، باب فضل الرفق، الحدیث:٢٥٩٤،ص١٣٩٨)

पेशगी मुआ़फ़ करने की फ़ज़ीलत

एह़याउल उ़लूम, जिल्द 3 सफ़्ह़ा 219 में है : एक शख़्स दुआ़ मांग रहा था : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे पास **स-दक़ा व ख़ैरात** के लिये कोई माल नहीं बस येही कि **जो मुसलमान मेरी बे इ़ज़्ज़ती** करे मैं ने उसे मुआ़फ़ किया। सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर वह़्य आई : ''हम ने इस बन्दे को बख़्श दिया।''

(شعب الایمان للبیهقی، باب فی حسن الخلق، فصل فی التجاوز...الخ،الحدیث:٨٠٨٢-٨٠٨٤،ج٦،ص٢٦١،٢٦٢ والاستیعاب،کتاب الکنٰی،باب الضاد،ج٤،ص٢٥٧)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

बिला हि़साब जन्नत में दाख़िला

ह़ज़रते **सय्यिदुना अनस** رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُ से मरवी है कि **हुज़ूर सरकारे मदीना** صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : क़ियामत के रोज़ ए'लान किया जाएगा : **जिस का अज्र अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के **ज़िम्मए करम** पर है, वोह उठे और जन्नत में दाख़िल हो जाए। पूछा जाएगा : किस के लिये अज्र है ? वोह मुनादी (या'नी ए'लान करने वाला) कहेगा : "उन लोगों के लिये जो मुआ़फ़ करने वाले हैं।" तो हज़ारों आदमी खड़े होंगे और बिला हि़साब जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे। (جمع الجوامع للسیوطی،حرف الھمزۃ،الحدیث:۱۱۲۲،ج۱،ص۱۶۸)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अ़फ़्व व दर गुज़र या'नी दूसरों को मुआ़फ़ कर देने बल्कि **हुस्ने अख़्लाक़** की दौलत पाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** से हर दम वाबस्ता रहिये। हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पाबन्दी से शिर्कत फ़रमाइये, **सुन्नतों की तरबिय्यत** के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये, कामयाब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए़ रिसाला पुर कीजिये और हर **म-दनी माह** की 10 तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाइये।

www.dawateislami.net

आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक **म-दनी बहार** पेश की जाती है, शाह दरह (मर्कज़ुल औलिया, लाहोर) के एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : मैं अपने वालिदैन का इक लौता बेटा था, ज़ियादा लाड़ प्यार ने मुझे ह़द दरजा ढीट और **मां बाप का सख़्त ना फ़रमान** बना दिया था, रात गए तक आवारा गर्दी करता और सुब्ह़ देर तक सोया रहता, मां बाप समझाते तो उन को झाड़ देता, वोह बे चारे बा'ज़ अवक़ात रो पड़ते, दुआएं मांगते मांगते मां की पलकें भीग जातीं ।

उस **अ़ज़ीम लम्ह़े पर लाखों सलाम** जिस लम्ह़े में मुझे **दा'वते इस्लामी** वाले एक आ़शिके़ रसूल से मुलाक़ात की सआ़दत मिली और उस ने मह़ब्बत और प्यार से इनफ़िरादी कोशिश करते हुए मुझ पापी व बदकार को **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र के लिये तय्यार किया चुनान्चे मैं **आ़शिक़ाने रसूल** के हमराह 3 दिन के **म-दनी क़ाफ़िले** का मुसाफ़िर बन गया न जाने इन **आ़शिक़ाने रसूल** ने 3 दिन के अन्दर क्या घोल कर पिला दिया कि मुझ जैसे ढीट इन्सान का पथ्थर नुमा दिल जो मां बाप के आंसूओं से भी न पिघलता था मोम बन गया, मेरे क़ल्ब में **म-दनी इनक़िलाब** बरपा हो गया और मैं **म-दनी क़ाफ़िले** से नमाज़ी बन कर लौटा । घर आ कर मैं ने **सलाम** किया वालिद साह़िब की **दस्त बोसी** की और अम्मी जान के क़दम चूमे, घर वाले है़रान थे ! इस को क्या हो गया है कि कल तक जो किसी की बात सुनने के लिये तय्यार नहीं था वोह आज इतना बा अदब बन गया है !

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ **म-दनी क़ाफ़िले** में **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत ने मुझे यकसर बदल कर रख दिया और येह बयान देते वक़्त मुझ साबिक़ा बे नमाज़ी को मुसलमानों को नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाने (या'नी **सदाए मदीना** लगाने) की ज़िम्मेदारी मिली हुई है। (दा'वते इस्लामी के **म-दनी माह़ोल** में मुसलमानों को **नमाज़े फ़ज्र** के लिये उठाने को **सदाए मदीना** लगाना कहते हैं) (फ़ैज़ाने सुन्नत, जि. 1, स. 1370)

गर्चे आ'माले बद, और अफ़्आ़ले बद ने है रुस्वा किया, क़ाफ़िले में चलो
कर सफ़र आओगे, तुम सुधर जाओगे मांगो चल कर दुआ़, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए **सुन्नत की फ़ज़ीलत** और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं।

ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शमए बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस ने **मेरी सुन्नत** से **मह़ब्बत** की उस ने मुझ से **मह़ब्बत** की और जिस ने मुझ से **मह़ब्बत** की वोह **जन्नत में मेरे साथ** होगा।"

(تاریخ مدینة دمشق لابن عساکر، انس بن مالك، ج۹، ص۳٤۳)

लिहाज़ा **इमामे के 17 म-दनी फूल** क़बूल फ़रमाइये,

(इस किताब के सफ़ह़ा नम्बर 644 से बयान करें)

★★★★★★

www.dawateislami.net

बयान नम्बर 8 :

इल्मे दीन

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَه अपने रिसाले "**एह़तिरामे मुस्लिम**" में दुरूद शरीफ़ के मुतअ़ल्लिक़ ह़दीषे पाक बयान फ़रमाते हैं कि **सरकारे मदीना** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने तक़र्रुब निशान है : "**क़ियामत** के रोज़ लोगों में मेरे नज़दीक तर वोह होगा जिस ने मुझ पर **ज़ियादा दुरूद शरीफ़** पढ़े होंगे।"

(سنن الترمذی، کتاب الوتر، باب ماجاء فی فضل الصلاۃ علی النبی، الحدیث:٤٨٤، ج٢،ص٢٧)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मैं ने इ़ल्म के लिये वत़न छोड़ा

इमाम अबू मुह़म्मद यह़्या बिन यह़्या رَحْمَةُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه एक दिन ह़ज़रते इमाम मालिक عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْخَالِق के दर्स में ह़ाज़िर थे कि एक दम येह शोर मच गया : "**हाथी आया, हाथी आया**" गोया सुनते ही तमाम त़-लबा दर्स छोड़ कर हाथी देखने के लिये दौड़ पड़े मगर **इमाम यह़्या** رَحْمَةُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْه सुकून व इत़्मीनान के साथ अपने सबक़ में मशग़ूल रहे, ह़ज़रते **इमाम मालिक** عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْخَالِق ने फ़रमाया : **यह़्या :** तुम्हारे मुल्क उन्दुलुस में हाथी नहीं होता तुम भी जा कर देख आओ ! **इमाम यह़्या** ने अ़र्ज़ किया कि ह़ज़रत ! मैं

www.dawateislami.net

उन्दुलुस से आप को देखने और इल्म ह़ासिल करने के लिये यहां आया हूं हाथी देखने के लिये मैं ने अपना वत़न नहीं छोड़ा ।

(وفیات الاعیان،حرف الیاء،۷۹۲_ابومحمد یحییٰ بن یحییٰ،ج۵،ص۱۱۷)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि ह़ज़रते **इमाम यह़्या बिन यह़्या** رَحْمَۃُاللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہ को **त़-लबे इल्मे दीन** का कैसा ज़बर दस्त जज़्बा और इस की अहम्मिय्यत का कितना एह़सास था । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन के सदके़ में हमें भी इल्मे दीन सीखने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए ।

जन्नत के बाग़ात

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब तुम लोग **जन्नत के बाग़ात** में गुज़रो तो मेवा चुना करो !" इस पर किसी ने कहा कि जन्नत के बाग़ात क्या हैं ? तो आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**इल्म की मजलिसें** ।"

(المعجم الکبیرللطبرانی،مجاھد عن ابن عباس،الحدیث:۱۱۱۵۸،ج۱۱،ص۷۸)

बेहतरीन इबादत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **नबिय्ये मुकर्रम, रसूले मुह़्तशम, शाहे बनी आदम** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान है : **اَفْضَلُ الْعِبَادَۃِ طَلَبُ الْعِلْمِ** **बेहतरीन इबादत इल्म का ह़ासिल करना है ।**

(فردوس الاخبار للدیلمی، باب الالف،الحدیث:۱۴۲۹، ج۱،ص۲۰۷)

www.dawateislami.net

अफ़्ज़ल स-दक़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''सब से अफ़्ज़ल स-दक़ा येह है कि मुसलमान इल्म सीखे फिर अपने भाई को सिखाए।''

(سنن ابن ماجه، كتاب السنة،باب ثواب معلم الناس الخير، الحديث:٢٤٣،ج١،ص١٥٨)

वोह जन्नती है

ह़ज़रते **सय्यिदुना अबू सई़द ख़ुदरी** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि **नबिय्ये मुकर्रम, शफ़ीए़ मुअ़ज़्ज़म, रसूले मोह़्तशम** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो अपने **दीन का इल्म सीखने** के लिये सुब्ह़ या शाम को चला वोह जन्नती है।''

(حلية الاولياء، مسعر بن كدام ، الحديث:١٠٥٨١،ج٧،ص٢٩٥)

गुज़श्ता गुनाहों का कफ़्फ़ारा

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''**जो शख़्स इल्म की त़लब** करता है तो वोह उस के गुज़श्ता **गुनाहों का कफ़्फ़ारा** हो जाता है।''

(سنن الترمذى، كتاب العلم،باب فضل طلب العلم،الحديث:٢٦٥٧،ج٤،ص٢٩٥)

www.dawateislami.net

दो ह़रीस

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "दो ह़रीस आसूदा नहीं होते एक **इल्म का ह़रीस** कि इल्म से कभी उस का पेट नहीं भरेगा और एक **दुन्या का लालची** कि येह कभी आसूदा नहीं होगा।"

(شعب الایمان،باب في الزهدوقصرالامل،الحدیث:۱۰۲۷۹،ج۷،ص ۲۷۱)

बरोज़े मह़शर सब से ज़ियादा ह़सरत

बरोज़े क़ियामत सब से ज़ियादा ह़सरत उस को होगी जिस को दुन्या में (दीनी) **इल्म** ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने **इल्म** ह़ासिल किया और इस से सुन कर दूसरों ने तो नफ्अ़ उठाया मगर ख़ुद इस ने (अपने **इल्म** पर अ़मल करते हुए) **नफ्अ़ न उठाया**।

(تاریخ مدینة دمشق لابن عساکر، حرف المیم، ذکرمن اسمه محمد، محمد بن احمد بن محمد بن جعفر، ج۵۱، ص۱۳۷)

शोहदा तमन्ना करेंगे

हज़रते **सय्यिदुना इब्ने मसऊ़द** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : **इल्म को लाज़िम पकड़ो!** उस ज़ात की **क़सम** जिस के दस्ते क़ुदरत में मेरी जान है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में क़त्ल किये जाने वाले शोहदा जब **उ़-लमाए किराम** की इ़ज़्ज़त और मर्तबा देखेंगे तो

www.dawateislami.net

तमन्ना करेंगे कि **काश** ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें इस हाल में उठाता कि वोह आ़लिम होते और बेशक कोई शख़्स पैदाइशी आ़लिम नहीं होता बल्कि इल्म तो सीखने से आता है।

(المتجرالرابح فی ثواب العمل الصالح، ابواب العلم،ثواب العلم والعلماء وفضلهم، فصل، ص۱٦)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन रिवायात से इल्म और उ़-लमा की क़द्रो मन्ज़िलत का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि उन के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कैसे कैसे **इन्आ़मात व इकरामात** हैं। पहले के दौर में हमारे उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ السَّلام ने इल्मे दीन ह़ासिल करने के लिये बड़ी से बड़ी कुरबानियां दीं, **आह** ! एक आज का दौर है कि क़ियाम व त़आ़म की सहूलतों समेत **इल्मे दीन पढ़ाया** जाता है लेकिन लोग पढ़ने के लिये तय्यार नहीं होते जब कि पहले के दौर में ऐसी सहूलतें कहां होती थी फिर भी **अस्लाफ़े किराम** رَحِمَهُمُ اللّٰہُ السَّلام त़-लबे इल्मे दीन के जज़्बे से सरशार थे।

भूके त़-लबा की फ़रयाद

हज़रते सय्यिदुना **इमाम त़बरानी**, हज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा **इब्नुल मुकरी** और हज़रते सय्यिदुना **अबुश्शैख़** رَحِمَهُمُ اللّٰہ تَعَالٰی तीनों **मदीनए मुनव्वरा** में **इल्मे दीन** ह़ासिल करते थे, एक मरतबा उन पर फ़ाक़ा मस्ती का दौर आया, रोज़े पर रोज़ा रखते रहे मगर जब भूक की शिद्दत ने बिलकुल ही निढाल कर दिया तो तीनों ने **रह़मते आ़लम**, **नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के **रौज़ए अन्वर**

www.dawateislami.net

पर हाज़िर हो कर फ़रयाद की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! "**अल जूअ़**" **आक़ा** ! **भूक** ! येह अ़र्ज़ कर के सय्यिदुना इमाम त़बरानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى तो **आस्तानए मुबारका** ही पर बैठे रहे और कहा कि इस दर पर या मौत आएगी या रोज़ी, अब यहां से नहीं उठूंगा।

मैं उन के दर पर पड़ा रहूंगा पड़े ही रहने से काम होगा
निगाहे रह़मत ज़रूर होगी तअ़ाम का इन्तिज़ाम होगा

ह़ज़रते सय्यिदुना **इब्नुल मुक़री** और ह़ज़रते सय्यिदुना **अबुश्शैख़** رَحِمَهُمَا اللّٰهُ تعالٰی अपनी क़ियाम गाह पर तशरीफ़ ले आए, थोड़ी देर के बा'द किसी ने दरवाज़ा खट खटाया, दरवाज़ा खोला तो क्या देखते हैं कि **एक अ़-लवी बुज़ुर्ग** दो गुलामों के साथ खाना लिये खड़े हैं और फ़रमा रहे हैं कि आप ह़ज़रात ने **दरबारे रसूल** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم में भूक की शिकायत की तो अभी अभी ख़्वाब में **नबिय्ये रह़मत, क़ासिमे ने'मत** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी ज़ियारत से मुशर्रफ़ फ़रमा कर मुझे हुक्म फ़रमाया कि मैं आप लोगों के पास खाना पहुंचा दूं। चुनान्चे जो कुछ बर वक़्त मुझ से हो सका हाज़िर कर दिया है आप ह़ज़रात क़बूल फ़रमा लीजिये।

(تذکرۃ الحفاظ، الطبقۃ الثانیۃ عشرۃ، ج۲، ص ۱۲۱)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।*

हर त़रफ़ मदीने में भीड़ है फ़क़ीरों की
एक देने वाला है कुल जहां सुवाली है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **हमारे अस्लाफ़** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلام **हुसूले इल्म** की ख़ातिर किस क़दर तकलीफ़ें बरदाश्त करते थे, फ़ाक़ों पर फ़ाक़े कर के उन्हों ने **इल्मे दीन** ह़ासिल किया, इन्तिहाई जां फ़िशानी और ख़ूब अ़रक़ रेज़ी के साथ **तसनीफ़ात व तालीफ़ात** के मुश्कबार **म-दनी गुलदस्ते** तय्यार कर के हमारी त़रफ़ बढ़ाए मगर **अफ़सोस** ! अब अकषर मुसलमान इन की त़रफ़ बिलकुल भी इल्तिफ़ात नहीं करते, **उन बुज़ुर्गों को सरमायए आख़िरत** की त़लब और लगन थी और आज के मुसलमानों की अकषरिय्यत को सिर्फ़ दुन्या का धन (या'नी मालो दौलत) कमाने की धुन है।

इस ह़िकायत से येह भी मा'लूम हुवा कि हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن पर जब कड़ा वक़्त आता तो निहायत ही दिल जमई के साथ **बारगाहे रिसालत** में ह़ाजत रवाई के लिये फ़रयाद करते, **सरकारे नामदार** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबार में दिल की गहराइयों से निकली हुई सदा ज़रूर मसमूअ़ होती (या'नी सुनी जाती) है, **मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, आ़शिक़े माहे रिसालत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़** में फ़रमाते हैं :

__वल्लाह__ वोह सुन लेंगे फ़रयाद को पहुंचेंगे
इतना भी तो हो कोई जो "__आह__" करे दिल से

صَلُّوا عَلَی الْحَبِيب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ बारगाहे रिसालत में की हुई फ़रयाद फ़ौरन सुनी गई और **सरकारे नामदार, जनाबे अह़मदे मुख़्तार** صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़ौरन ह़ाजत रवाई फ़रमाई और अपने भूके दीवानों के लिये खाना भेज दिया।

दरे रसूल से ऐ राज़ क्या नहीं मिलता ?
कोई पलट के न ख़ाली गया मदीने से

सो रोटियां

ह़ाफ़िज़ुल ह़दीष, ह़ज़रते सय्यिदुना **ह़ज्जाज बग़दादी** عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْھَادِی जब **तह़सीले इल्मे दीन** के लिये सफ़र पर रवाना हुए तो वालिदए मोह़तरमा ने **सो अ़दद कुलचे** (या'नी ख़मीरी रोटियां) एक मिट्टी के घड़े में भर कर साथ कर दिये, आप अ़ज़ीम मुह़द्दिष ह़ज़रते **सय्यिदुना शबाबा** رَحْمَۃُ اللہِ تعالٰی عَلَیْہ की ख़िदमते बा ब-रकत में ह़ाज़िर हो कर **इल्मे ह़दीष** पढ़ने में मशग़ूल हुए, रोटियां तो अम्मी जान ने इनायत कर ही दी थीं, आप رَحْمَۃُ اللہِ تعالٰی عَلَیْہ ने सालन का ख़ुद ही बन्दोबस्त किया और वोह सालन भी ऐसा जो सद हा बरस गुज़र जाने के बा'द भी सदा ताज़ा ही ताज़ा और ब-रकत ऐसी कि कभी इस में कोई कमी ही न हुई, **वोह अनोखा सालन कौन सा ?** दरयाए दिजला का पानी, रोज़ाना एक कुलचा दरयाए दिजला के पानी में भिगो कर तनावुल फ़रमा लेते और दिन रात ख़ूब जांफ़िशानी के साथ सबक़ पढ़ते रहते, जब वोह सो कुलचे ख़त्म हो गए तो **मजबूरन उस्ताज़े मोह़तरम** से रुख़्सत लेनी पड़ी। (تذکرۃ الحفاظ،الطبقۃ التاسعۃ،ج۱،ص۱۰۰)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।*

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इल्मे दीन ह़ासिल करने में यक़ीनन दोनों जहां की बेहतरियां हैं कितने ख़ुश नसीब हैं वोह इस्लामी भाई जो **दीनी मदारिस व जामेआ़त** में बा क़ाइदा **इल्मे दीन** सीखते और सिखाते हैं आप भी कोशिश कीजिये बिल फ़र्ज़ किसी मद्रसे या जामेआ़ में मुस्तक़िल दाख़िला लेने की तरकीब नहीं बन पाती तो **दा'वते इस्लामी** की किसी **म-दनी** तरबिय्यत गाह में कम अज़ कम 63 दिन का **म-दनी तरबिय्यती कोर्स** ही कर लीजिये, **म-दनी तरबिय्यती कोर्स** की भी क्या ख़ूब बहारें हैं :

एलर्जी का मरज़ ठीक हो गया

चुनान्चे एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ बयान है : मुझे एलर्जी की बीमारी थी, धूप और सर्दी में काफ़ी तकलीफ़ होती। नीज़ जब बारिश होती उस वक़्त मैं शिद्दते दर्द से माहिये बे आब (या'नी बे पानी की मछली) की त़रह़ तड़पता, मुझे एक **आ़शिक़े रसूल ने दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में रह कर तरबिय्यती कोर्स करने का मश्वरा दिया। लिहाज़ा आ़-लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची में 19 नवम्बर 2004 ई. को शुरूअ़ होने वाले 63 रोज़ा तरबिय्यती कोर्स में दाख़िला ले लिया,** मैं ह़ैरान हूं कि कई डोक्टरों से इलाज करवाने और ख़ूब रक़म ख़र्च करने के बा वुजूद एलर्जी की जो मूज़ी बीमारी अ़र्सए दराज़ से ख़त्म होने का नाम नहीं लेती थी वोह **आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत** में रह कर 63 दिन का **तरबिय्यती कोर्स** करने की ब-रकत से जाती रही।

www.dawateislami.net

दा'वते इस्लामी की क़य्यूम, दोनों जहां में मच जाए धूम

इस पे फ़िदा हो बच्चा बच्चा या **अल्लाह** मेरी झोली भर दे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **आशिक़ाने रसूल** की सोह्बतों से मालामाल **63 रोज़ा तरबिय्यती कोर्स** आख़िरत के लिये इस क़दर नफ़्अ़ बख़्श है कि इस में जो कुछ सीखने को मिलता है उस की तफ़्सीलात मा'लूम हो जाने के बा'द शायद **दीन का दर्द** रखने वाला हर मुसलमान येह ह़सरत करेगा कि काश ! मुझे भी **63 रोज़ा तरबिय्यती कोर्स** करने की सआ़दत ह़ासिल हो जाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! **बाबुल मदीना के इलावा दीगर शहरों में भी तरबिय्यती कोर्स का सिल्सिला किया जाता है। इस में बा'ज़ वोह उ़लूम ह़ासिल होते हैं जिन का सीखना हर आ़क़िल बालिग़ मुसलमान पर फ़र्ज़ है। तरबिय्यती कोर्स** में वुज़ू व गुस्ल के इलावा **नमाज़ का अ़-मली त़रीक़ा** सिखाया जाता है, **गुस्ले मय्यित**, तजहीज़ व तकफ़ीन, नमाज़े जनाज़ा व नमाज़े ईद की तरबिय्यत होती है, **म-दनी** क़ाइदे के ज़रीए़ दुरुस्त मख़ारिज के साथ क़ुरआनी ह़ुरूफ़ की अदाएगी की ता'लीम दी जाती और क़ुरआने करीम की आख़िरी **20 सूरतें ज़बानी ह़िफ़्ज़ और सूरतुल मुल्क की मश्क़ करवाई जाती है** और **क़ुरआने** करीम सीखने के **फ़ज़ाइल** के तो क्या कहने ! चुनान्चे

गुनाहों की बख़्शिश

दो जहां के सुल्तान, सरवरे ज़ीशान, साहिबे कुरआन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़फ़िरत निशान है : **"जो शख़्स अपने बेटे को नाज़िरा कुरआने करीम सिखाए उस के सब अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं।"**

(مجمع الزوائد، کتاب التفسیر،باب فیمن علم ولدہ القرآن،الحدیث:۱۱۶۷۱،ج۷،ص۳۴۴)

जवानी व बुढ़ापे में कुरआने पाक सीखना

शहनशाहे मदीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा करीना है : "जो शख़्स **जवानी** में **कुरआन** सीखे, **कुरआन** उस के गोश्त और ख़ून में पैवस्त हो जाता है और जो इसे बुढ़ापे में सीखे और उसे **कुरआन** बार बार भूल जाता हो और इस के बा वुजूद वोह उसे न छोड़ता हो तो उस के लिये **दो अज्र** हैं।"

(کنزالعمال، کتاب الاذکار،الباب السابع...الخ، الاکمال،الحدیث:۲۳۷۸،ج۱،ص۲۶۷)

तरबिय्यती कोर्स में अख़्लाक़ी तरबिय्यत

तरबिय्यती कोर्स में अख़्लाक़ी तरबिय्यत के ह़वाले से इन **मौज़ूआत** पर ख़ास तवज्जोह दी जाती है (1) सच्चाई (2) नर्मी (3) सब्र (4) आ़जिज़ी (5) अ़फ़्व व दर गुज़र (6) अन्दाज़े गुफ़्तगू (7) ग़ीबत की तबाह कारियां और (8) घर में **म-दनी माह़ोल** बनाने का त़रीक़ा वग़ैरा, **म-दनी क़ाफ़िले** के **जदवल** पर अ़मल करवाते हुए **म-दनी क़ाफ़िला** तय्यार करने का त़रीक़ा, **दर्स, बयान**, अ़लाकाई **दौरा बराए नेकी की दा'वत** बिल ख़ुसूस **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी** काम की जान **"इनफ़िरादी कोशिश"** का अन्दाज़, **म-दनी**

इन्आ़मात का अ़-मली त़रीक़ा ता'लीम दिया जाता है, **तरबिय्यती कोर्स** के दौरान वक़्फ़े वक़्फ़े से तीन बार तीन तीन दिन के और इख़्तिताम से क़ब्ल 12 दिन के **आ़शिक़ाने रसूल** के **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की सआ़दत भी मिलती है, इस क़ाफ़िले से वापसी के बा'द एक दिन **इम्तिह़ान की तय्यारी**, दूसरे दिन इम्तिह़ान और तीसरे दिन **अल वदाई दुआ़ और सलातो सलाम** पर 63 दिन के **तरबिय्यती कोर्स** का इख़्तिताम हो जाता है। **तरबिय्यती कोर्स** की जो कैफ़िय्यत बयान की इस के इ़लावा भी बहुत कुछ सीखने को मिलता है और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत की ने'मत मुयस्सर आती है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **तरबिय्यती कोर्स** की ब-रकत से कई बिगड़े हुए अफ़राद **नमाज़ी** और **अच्छे मुसलमान** बन कर रुख़्सत होते हैं और मुआ़शरे में इ़ज़्ज़त का मक़ाम पाते हैं, लिहाज़ा जिस को मौक़अ़ मिले उसे ज़रूर **तरबिय्यती कोर्स** के ज़रीए़ इल्मे दीन ह़ासिल करना चाहिये, **हमारे प्यारे नबी** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे **इ़ब्रत बुन्याद** है : "**बरोज़े क़ियामत सब से ज़ियादा ह़सरत** उस को होगी जिस को दुन्या में (दीनी) इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने **इ़ल्म** ह़ासिल किया और इस से सुन कर दूसरों ने तो नफ़्अ़ उठाया मगर ख़ुद इस ने (अपने **इ़ल्म** पर अ़मल करते हुए) नफ़्अ़ न उठाया।" (تاريخ مدينة دمشق لابن عساكر، من اسمه محمد، ج٥١،ص١٣٧)

जो मुकम्मल 63 दिन नहीं दे सकते वोह म-दनी मर्कज़ से रुजूअ़ करें तो उन की कम दिनों के लिये भी तरकीब बन सकती है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ **तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी** के ज़ेरे इन्तिज़ाम इल्मे दीन आम करने के लिये कई **जामेआत व मदारिस ब नाम "जामेअ़तुल मदीना"** और **"मद्रसतुल मदीना"** क़ाइम हैं, यहां न सिर्फ़ **इल्म की ला ज़वाल दौलत** तक़्सीम होती बल्कि अ़मल का जज़्बा भी दिया जाता है। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ हज़ारहा **तृ-लबा व तालिबात** इल्मे दीन के नूर से **मुनव्वर** हो रहे हैं और ज़ेवरे इल्मो अ़मल से आरास्ता हो कर अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये **मसरूफ़े अ़मल** हैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** को दिन दुगनी रात चोगुनी तरक़्क़ी अ़ता फ़रमाए। اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! बयान को इख़्तिताम की तरफ़ लाते हुए **सुन्नत की फ़ज़ीलत** और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआदत हासिल करता हूं।

ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत, मुस्तफ़ा जाने रहमत, शम्ए बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस ने **मेरी सुन्नत** से **महब्बत** की उस ने मुझ से **महब्बत** की और जिस ने मुझ से **महब्बत** की वोह **जन्नत में मेरे साथ** होगा।"

(تاريخ مدينة دمشق لابن عساكر، انس بن مالك، ج٩، ص٣٤٣)

लिहाज़ा **मुसाफ़हा के 7 म-दनी फूल** क़बूल फ़रमाइये,

(इस किताब के सफ़हा नम्बर 549 से बयान करें)

★★★★★★

बयान नम्बर : 9

जूदो सख़ा

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले "**जन्नती मह़ल** का सौदा" में दुरूद शरीफ़ के मुतअ़ल्लिक़ ह़दीषे पाक नक़्ल फ़रमाते हैं कि **शाहे बह़्रो बर, मदीने के ताजवर, रसूले अनवर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बख़्शिश निशान है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ात़िर आपस में **मह़ब्बत** रखने वाले जब बाहम मिलें और **मुसाफ़ह़ा** करें और नबी صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक भेजें तो उन के जुदा होने से **पहले दोनों के अगले पिछले गुनाह बख़्श** दिये जाते हैं। (مسند ابی یعلٰی، مسند انس بن مالك، الحدیث:۲۹۵۱،ج۳،ص۹۵)

र-मज़ानुल मुबारक की आमद आमद थी और मशहूर मोअर्रिख़ ह़ज़रते वाक़िदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی के पास कुछ न था, आप ने अपने एक **अ़-लवी** दोस्त की त़रफ़ येह रुक़्आ़ भेजा : "**र-मज़ान शरीफ़** का महीना आने वाला है और मेरे पास ख़र्च के लिये कुछ नहीं मुझे क़र्ज़े ह़-सना के त़ौर पर **एक हज़ार**1000 **दिरहम** भेजिये।" चुनान्चे उस **अ़-लवी** ने एक हज़ार दिरहम की थैली भेज दी, थोड़ी देर के बा'द **ह़ज़रते वाक़िदी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی के एक दोस्त का रुक़्आ़ **ह़ज़रते वाक़िदी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی की त़रफ़ आ गया : "र-मज़ान

www.dawateislami.net

शरीफ़ के महीने में ख़र्च के लिये मुझे एक हज़ार दिरहम की ज़रूरत है।" **हज़रते वाक़िदी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی ने वोही थेली वहां भेज दी। दूसरे रोज़ वोही अ़-लवी दोस्त जिन से **हज़रते वाक़िदी** ने क़र्ज़ लिया था और वोह दूसरे दोस्त जिन्हों ने हज़रते **वाक़िदी** से क़र्ज़ लिया था दोनों **हज़रते वाक़िदी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی के घर आए, अ़-लवी कहने लगे : र-मज़ानुल मुबारक का महीना आ रहा है और मेरे पास इन हज़ार दिरहमों के सिवा और कुछ न था मगर जब आप का रुक़्आ़ आया तो मैं ने येह हज़ार दिरहम आप को भेज दिये और अपनी ज़रूरत के लिये अपने इन दोस्त को रुक़्आ़ लिखा कि **मुझे एक हज़ार दिरहम बत़ौरे क़र्ज़ भेज दीजिये,** इन्हों ने वोही थेली जो मैं ने आप को भेजी थी मुझे भेज दी। तो पता चला कि आप ने मुझ से क़र्ज़ मांगा, मैं ने अपने इन दोस्त से क़र्ज़ मांगा और इन्हों ने आप से मांगा, और जो थेली मैं ने आप को भेजी थी वोह आप ने इसे भेज दी और इस ने वोही थेली मुझे भेज दी।

फिर इन **तीनों हज़रात** ने इत्तिफ़ाक़े राय से इस रक़म के **तीन हिस्से** कर के आपस में तक़सीम कर लिये, उसी रात हज़रते सय्यिदुना वाक़िदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی को ख़्वाब में **जनाबे रिसालत मआब** صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की **ज़ियारत** हुई और फ़रमाया : اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ कल तुम्हें बहुत कुछ मिल जाएगा, चुनान्चे दूसरे रोज़ अमीर यह्या बर्मकी ने **सय्यिदुना वाक़िदी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی को बुला कर पूछा : "मैं ने रात ख़्वाब में आप को परेशान देखा है क्या बात है ?" हज़रते

www.dawateislami.net

सय्यिदुना वाक़िदी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی ने सारा क़िस्सा सुनाया तो यह्या बर्मकी ने कहा : "मैं येह नहीं कह सकता कि आप तीनों में से **कौन ज़ियादा सख़ी है**। आप तीनों ही सख़ी और वाजिबुल एह्तिराम हैं फिर उस ने **तीस हज़ार दिरहम ह़ज़रते वाक़िदी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی को और बीस **बीस हज़ार** उन दोनों को दिये और ह़ज़रते सय्यिदुना वाक़िदी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی को क़ाज़ी भी मुक़र्रर कर दिया।"

(حجۃ اللّٰہ علی العلمین، الفصل الثالث،الاستغاثۃ بہ للسقیا،ص۵۷۷)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सच्चे मुसलमान सख़ी और **पैकरे ईषार** होते हैं और अपने **इस्लामी भाई** की तकलीफ़ दूर करने की ख़ातिर अपनी मुश्किलात की ज़र्रा बराबर परवाह नहीं करते और येह भी मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के **मह़बूब**, दानाए **ग़ुयूब**, **मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उम्मत के ह़ालात से बा ख़बर हैं और सख़ावत करने वालों पर नज़रे रह़मत फ़रमाते हैं और येह भी मा'लूम हुवा कि **सख़ावत** से हमेशा फ़ाएदा ही होता है, माल घटता नहीं बल्कि बढ़ता है।

सख़ावत करो मज़ीद अ़ता किये जाओगे

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है, फ़रमाते हैं कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **सख़ावत अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से है, **सख़ावत** करो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें

www.dawateislami.net

मज़ीद अ़ता फ़रमाएगा, **सुनो, अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने **सख़ावत** को पैदा फ़रमा कर एक **मर्द** की सूरत अ़ता फ़रमाई और इस की **अस्ल** को **तूबा दरख़्त** की जड़ में रासिख़ कर दिया और **टेहनियों** को सिद्रतुल मुन्तहा की **टेहनियों** के साथ मज़बूत कर दिया और इस की बा'ज़ **शाख़ों** को दुन्या की त़रफ़ झुका दिया तो जो शख़्स इस की एक ही टेहनी पकड़ ले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे **जन्नत में दाख़िल फ़रमा देता है, सुनो** ! बेशक सख़ावत ईमान ही से है और **ईमान जन्नत** में है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बुख़्ल को अपने ग़ज़ब से पैदा फ़रमाया और उस की अस्ल को **शजरे ज़क़्क़ूम** (जहन्नम के कांटे दार दरख़्त) की जड़ में मज़बूत कर दिया, उस की बा'ज़ **शाख़ें ज़मीन** की जानिब माइल फ़रमा दीं तो जो शख़्स उस की किसी भी टेहनी को थामता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे **जहन्नम** में दाख़िल फ़रमा देता है, **जान लो** ! बुख़्ल ना शुक्री है और **ना शुक्री** जहन्नम में दाख़िल होने का सबब है।

(كنزالعمال، كتاب الزكاة،الباب الثانى فى السخاء و الصدقة،الفصل الاوّل، الحديث:١٦٢١٣،ج٣،ص١٦٩)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे बख़्शा देता है

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़फ़िरत निशान है : "**जो शख़्स** उस चीज़ को जिस की ख़ुद उसे **ह़ाजत** हो **दूसरे** को दे दे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे **बख़्श** देता है।" (جمع الجوامع للسيوطى، الحديث:٩٥٧٢،ج٣،ص ٣٨٤)

www.dawateislami.net

सख़ी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के क़रीब है

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है, फ़रमाते हैं कि **हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "सख़ी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के क़रीब है, जन्नत के क़रीब है, लोगों के क़रीब है, आग से दूर है और कंजूस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दूर है, जन्नत से दूर है, लोगों से दूर है, आग के क़रीब है और यक़ीनन जाहिल सख़ी, कंजूस आ़बिद से अफ़ज़ल है।"

(سنن الترمذی، کتاب البر والصلة،باب ماجاء في السخاء،الحديث:١٩٦٨،ج٣،ص٣٨٧)

सख़ी से महब्बत

हज़रते यह्या बिन मुआ़ज़ عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : सख़ी लोग चाहे **फ़ाजिर** हों उन के लिये **दिलों में महब्बत** ही होती है और बख़ील चाहे कितने ही भले क्यूं न हों दिलों में उन के लिये नफ़रत ही पाई जाती है। (احیاء علوم الدین، کتاب ذم البخل وذم حب المال،بیان ذم البخل،ج٣،ص٣١٥)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन **सख़ावत** की बहुत **फ़ज़ीलत** है **क़ुरआने पाक** में सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن की **सख़ावत** और **ईषार** की ता'रीफ़ बयान की गई है चुनान्चे इर्शादे बारी तआ़ला है :

وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ﵜ

(پ٢٨،الحشر:٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अपनी जानों पर उन को तरजीह देते हैं अगर्चे उन्हें शदीद मोह्ताजी हो।*

www.dawateislami.net

इस आयते मुबारका का शाने नुज़ूल बयान करते हुए सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में तह़रीर फ़रमाते हैं : ह़दीष शरीफ़ में है कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में एक भूका शख़्स आया, हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने **अज़्वाजे मुतह्हरात** رضى الله تعالى عنهن के हुजरों पर मा'लूम कराया, क्या खाने की कोई चीज़ है ? मा'लूम हुवा किसी बीबी साहिबा के यहां कुछ भी नहीं है, तब **हुज़ूर** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने असहाब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم से फ़रमाया : जो इस शख़्स को मेहमान बनाए **अल्लाह** तआला उस पर रह़मत फ़रमाए, **ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा अन्सारी** رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ खड़े हो गए और हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से इजाज़त ले कर **मेहमान को अपने घर ले गए,** घर जा कर बीबी से दरयाफ़्त किया कुछ है ? उन्हों ने कहा कुछ नहीं सिर्फ़ बच्चों के लिये थोड़ा सा खाना रखा है, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू त़ल्ह़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया : **बच्चों को बहला कर सुला दो** और जब मेहमान खाने बैठे तो **चराग़ दुरुस्त करने उठो** और चराग़ को बुझा दो ताकि वोह **अच्छी त़रह़ खा ले,** येह तजवीज़ इस लिये की, कि मेहमान येह न जान सके कि अहले ख़ाना उस के साथ नहीं खा रहे हैं, अगर उस को येह मा'लूम होगा तो वोह **इसरार करेगा** और खाना कम है भूका रह जाएगा, इस त़रह़ **मेहमान को खिलाया** और ख़ुद **भूक की ह़ालत में रात गुज़ारी,** जब सुब्ह़ हुई और **सय्यिदे आ़लम** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए तो **हुज़ूरे अक़्दस** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : रात फ़ुलां फ़ुलां लोगों में अ़जीब मुआ़मला पेश आया **अल्लाह** तआ़ला उन से बहुत राज़ी है और येह आयत नाज़िल हुई। (صحیح بخاری،ج۳،ص۳۴۸،حدیث:۴۸۸۹)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

हज़रते सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की सख़ावत

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बेहद सख़ी थीं, हज़रते सय्यिदुना उर्वा बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने देखा कि उम्मुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने सत्तर हज़ार दराहिम राहे **ख़ुदा** में तक़सीम कर दिये हालांकि उन की क़मीस मुबारक में पैवन्द लगा हुवा था और एक दफ़्आ हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उन की ख़िदमत में एक लाख दराहिम भेजे तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने वोह सब दराहिम एक ही रोज़ में राहे **ख़ुदा** में तक़सीम कर दिये और उस रोज़ आप ख़ुद रोज़े से थीं, शाम के वक़्त बांदी ने अ़र्ज़ की : क्या ही अच्छा होता कि एक दिरहम रोटी के लिये रख लेतीं ! तो फ़रमाया : "मुझे याद नहीं रहा, याद रहता तो बचा लेती ।"

(مدارج النبوت،قسم پنجم،باب دوم،اُمُّ المؤمنین عائشۃ رضی اللّٰہ عنہا،ج۲،ص۴۷۳)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! उम्मुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने वुस्अ़त के बा वुजूद अपनी ज़िन्दगी निहायत सादा और ज़ाहिदाना गुज़ार दी और जो दौलत भी हाज़िर हुई आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने राहे ख़ुदा में तक़सीम फ़रमा दी यहां तक कि लाख दराहिम आए वोह भी लुटा दिये और रोज़ा इफ़्तार करने के लिये भी कोई एहतिमाम न फ़रमाया और एक हम हैं कि अगर कभी नफ़्ल रोज़ा

www.dawateislami.net

रख भी लें तो हमें इफ़्त़ार के वक़्त हमा अक़्साम के फल, कबाब, समोसे, ठन्डा ठन्डा शरबत और न जाने क्या क्या चाहिये !

बहर ह़ाल हमें **उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا के नक़्शे क़दम पर चलना चाहिये और दौलत से इस क़दर मह़ब्बत न रखनी चाहिये कि राहे **ख़ुदा** में ख़र्च करने के मुआ़मले में दिल तंग हो। सख़ावत का ज़ेहन बनाने, हुब्बे दुन्या से पीछा छुड़ाने और आख़िरत बेहतर बनाने के लिये **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता रहना बे ह़द मुफ़ीद है, जब भी आप के अ़लाक़े में **दा'वते इस्लामी** के **आ़शिक़ाने रसूल** का **म-दनी क़ाफ़िला** तशरीफ़ लाए उन की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर ज़रूर फ़ैज़याब हों कि अच्छी निय्यत के साथ राहे **ख़ुदा** के मुसाफ़िरों की ज़ियारत कारे षवाब और उन की सोह़बत बाइ़षे ह़ुसूले जन्नत है। आप को एक बिगड़े हुए नौ जवान का वाक़ेआ़ सुनाता हूं जो **म-दनी क़ाफ़िले** के **आ़शिक़ाने रसूल** की ज़ियारत के लिये ह़ाज़िर हुवा तो उस की ज़िन्दगी में **म-दनी इनक़िलाब** बरपा हो गया।

चुनान्चे शहर क़ुसूर (पंजाब, पाकिस्तान) के एक नौ जवान **इस्लामी भाई** की तह़रीर **बित्तसर्रुफ़** पेश करता हूं : मैं उन दिनों मेट्रिक का त़ालिबे इल्म था, बुरी सोह़बत के बाइ़ष गुनाहों भरी ज़िन्दगी गुज़ार रहा था, मिज़ाज बेह़द ग़ुसीला था और बद तमीज़ी की नौबत इस ह़द तक पहुंच चुकी थी कि वालिद कुजा दादा और दादी के सामने भी कैंची की त़रह़ ज़बान चलाता था। एक रोज़ **तब्लीग़े**

www.dawateislami.net

कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी का एक **म-दनी क़ाफ़िला** हमारे महल्ले की मस्जिद में हाज़िर हुवा, **खुदा** (عَزَّوَجَلَّ) का करना ऐसा हुवा कि मैं **आशिक़ाने रसूल** से मुलाक़ात के लिये पहुंच गया, एक बा इमामा इस्लामी भाई ने **इनफ़िरादी कोशिश** करते हुए मुझे दर्स में शिर्कत की दा'वत पेश की, मैं उन के साथ बैठ गया, उन्हों ने दर्स के बा'द मुझे बताया कि चन्द ही रोज़ बा'द **मदीनतुल औलिया मुल्तान शरीफ़** में **दा'वते इस्लामी** का तीन रोज़ा बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरा इजतिमाअ़ हो रहा है आप भी शिर्कत कर लीजिये। उन के दर्स ने मुझ पर बहुत अच्छा अषर किया था लिहाज़ा मैं इन्कार न कर सका, यहां तक कि मैं **इजतिमाअ़** (मुल्तान) में हाज़िर हो गया, वहां की रोनकें और ब-रकतें देख कर मैं हैरान रह गया, वहां होने वाले **आख़िरी बयान "गाने बाजे की होलनाकियां"** सुन कर थर्रा उठ्ठा और आंखों से आंसू जारी हो गए, मैं गुनाहों से तौबा कर के उठ्ठा और **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माहोल** से वाबस्ता हो गया, मेरी **म-दनी माहोल** से वाबस्तगी से हमारे घर वालों ने इत्मीनान का सांस लिया, **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माहोल** की ब-रकत से मुझ जैसे बिगड़े हुए बद अख़्लाक़ नौ जवान में **म-दनी इनक़िलाब** की वजह से **मुतअष्षिर** हो कर मेरे बड़े भाई ने भी दाढ़ी रखने के साथ साथ इमामा शरीफ़ का ताज भी सजा लिया, मेरी एक ही बहन है। उस ने भी **म-दनी बुर्क़अ़** पहन लिया, घर का हर फ़र्द **सिल्सिलए आलिय्या क़ादिरिय्या र-ज़विय्या** में दाख़िल हो कर सरकारे गौषे

www.dawateislami.net

आ'ज़म عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡاَکۡرَم का मुरीद हो गया। और मुझ पर **अल्लाह** ने ऐसा करम फ़रमाया कि मैं ने **क़ुरआने पाक ह़िफ़्ज़** करने की सआ़दत ह़ासिल कर ली और **दर्से निज़ामी** (आ़लिम कोर्स) में दाख़िला ले लिया और येह बयान देते वक़्त दरजए षालिषा या'नी तीसरी क्लास में पहुंच चुका हूं।

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी** कामों के तअ़ल्लुक़ से **अ़लाकाई क़ाफ़िला** ज़िम्मादार हूं, मेरी निय्यत है कि اِنۡ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** सि. 1427 हि. से **यक मुश्त 12 माह** के लिये **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र करूंगा।

दिल पे गर ज़ंग हो, सारा घर तंग हो — होगा सब का भला क़ाफ़िले में चलो
ऐसा फ़ैज़ान हो, ह़िफ़्ज़ क़ुरआन हो — कर के हिम्मत ज़रा क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **बयान** को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए **सुन्नत की फ़ज़ीलत** और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं।

मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस ने **मेरी सुन्नत** से **मह़ब्बत** की उस ने मुझ से **मह़ब्बत** की और जिस ने मुझ से **मह़ब्बत** की वोह **जन्नत में मेरे साथ** होगा।"

(تاریخ مدینة دمشق لابن عساکر، انس بن مالك، ج۹، ص۳٤۳)

लिहाज़ा **घर में आने जाने के 12 म-दनी फूल** क़बूल फ़रमाइये, (इस किताब के सफ़ह़ा नम्बर 565 से बयान करें)

★★★★★★

बयान नम्बर 10

मक़्सदे ह़यात

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه अपने रिसाले "**क़ज़ा नमाज़ों का त़रीक़ा**" में दुरूद शरीफ़ के मुतअ़ल्लिक़ ह़दीषे पाक नक़्ल फ़रमाते हैं कि **दो जहां के सुल्त़ान, सरवरे ज़ीशान** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है : "मुझ पर **दुरूदे पाक** पढ़ना पुल सिरात़ पर नूर है जो **रोज़े जुमुआ़** मुझ पर **अस्सी बार दुरूदे पाक** पढ़े उस के **अस्सी साल के गुनाह मुआ़फ़** हो जाएंगे।"

(الجامع الصغير للسيوطی،حرف الصاد،الحديث:٥١٩١،ص٣٢٠)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِيب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़बूआ़ 586 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बयानाते अ़त्तारिय्या हिस्सा 3**" के सफ़ह़ा 13 पर अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه एक ह़िकायत नक़्ल फ़रमाते हैं।

कहते हैं एक बादशाह अपने मुसाह़िबों के साथ किसी बाग़ के क़रीब से गुज़र रहा था कि उस ने देखा बाग़ में से कोई शख़्स संगरेज़े (या'नी छोटे छोटे पथ्थर) फेंक रहा है, एक संगरेज़ा ख़ुद उस को भी आ कर लगा, उस ने ख़ुद्दाम को दौड़ाया कि जा कर संगरेज़े फेंकने वाले

को मेरे पास ह़ाज़िर करो ! चुनान्चे ख़ुद्दाम ने एक गंवार को ह़ाज़िर कर दिया, **बादशाह** ने कहा : येह संगरेज़े तुम ने कहां से ह़ासिल किये ? उस ने डरते डरते कहा : मैं वीराने में सैर कर रहा था कि मेरी नज़र इन ख़ूब सूरत संगरेज़ों पर पड़ी, मैं ने इन को झोली में भर लिया, इस के बा'द फिरता फिराता इस बाग़ में आ निकला और फल तोड़ने के लिये येह संगरेज़े इस्ति'माल कर लिये, बादशाह ने कहा : तुम इन संगरेज़ों की क़ीमत जानते हो ? उस ने अ़र्ज़ की : नहीं ! **बादशाह** बोला : येह **पथ्थर के टुकड़े दर अस्ल अनमोल हीरे** थे जिन्हें तुम नादानी के सबब ज़ाएअ़ कर चुके, इस पर वोह शख़्स अफ़्सोस करने लगा मगर अब उस का **अफ़्सोस** करना बेकार था कि वोह **अनमोल हीरे** उस के हाथ से निकल चुके थे ।

ज़िन्दगी के लमह़ात अनमोल हीरे

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इसी त़रह़ हमारी ज़िन्दगी के लमह़ात भी **अनमोल हीरे** हैं अगर इन को हम ने बेकार ज़ाएअ़ कर दिया तो ह़सरत व नदामत के सिवा कुछ हाथ न आएगा ।

दिन भर खेलों में ख़ाक उड़ाई — *लाज आई न ज़र्रों की हंसी से*

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन्सान को एक **मुक़र्ररा** वक़्त तक के लिये ख़ास मक़्सद के तह़्त इस दुन्या में भेजा है ।

चुनान्चे पारह 18 **सूरतुल मुअमिनून** आयत नम्बर 115 में इर्शाद होता है :

www.dawateislami.net

اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ﴿۱۱۵﴾

(پ۱۸،المؤمنون:۱۱۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो क्या येह समझते हो कि हम ने तुम्हें बेकार बनाया और तुम्हें हमारी त़रफ़ फिरना नहीं ।

“**तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**” में इस आयते मुक़द्दसा के तह्त लिखा है : और (क्या तुम्हें) आख़िरत में जज़ा के लिये उठना नहीं, बल्कि तुम्हें **इबादत के लिये पैदा किया** कि तुम पर इबादत लाज़िम करें और आख़िरत में तुम हमारी त़रफ़ लौट कर आओ तो तुम्हें तुम्हारे **आ'माल की जज़ा** दें ।

ज़िन्दगी का वक़्त थोड़ा है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरा आयत के इलावा भी **क़ुरआने पाक** में दीगर मक़ामात पर तख़्लीक़े इन्सानी या'नी इन्सान की **पैदाइश का मक़्सद** बयान किया गया है इन्सान को इस दुन्या में बहुत मुख़्तसर से वक़्त के लिये रहना है और इस वक़्फ़े में उसे **क़ब्रो हश्र** के त़वील तरीन मुआमलात के लिये तय्यारी करनी है लिहाज़ा **इन्सान का वक़्त बेहद क़ीमती** है, वक़्त एक तेज़ रफ़्तार गाड़ी की त़रह फ़र्राटे भरता हुवा जा रहा है न रोके रुकता है न पकड़ने से हाथ आता है, जो सांस एक बार ले लिया वोह पलट कर नहीं आता, चुनान्चे

सांस की माला

ह़ज़रते सय्यिदुना **ह़सने बसरी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : जल्दी करो ! जल्दी करो ! **तुम्हारी ज़िन्दगी क्या है** ! येही सांस तो

www.dawateislami.net

हैं कि अगर रुक जाएं तो तुम्हारे उन आ'माल का सिलसिला भी मुन्क़त़अ़ हो जाए जिन से तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब ह़ासिल करते हो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस शख़्स पर रह़्म फ़रमाए जिस ने **अपना जाइज़ा** लिया और अपने गुनाहों पर चन्द आंसू बहाए, येह कहने के बा'द आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने येह आयत तिलावत फ़रमाई :

اِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا ﴿۸۴﴾

(پ۱٦،مریم:۸٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और हम तो उन की गिनती पूरी करते हैं।*

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : यहां गिनती से सांसों की गिनती मुराद है।

(احیاء علوم الدین، کتاب ذکر الموت و ما بعدہ، بیان المبادرۃ الی العمل...الخ، ج٥، ص٢٠٥)

येह सांस की माला अब बस टूटने वाली है
दिल आह ! मगर अब भी बेदार नहीं होता

(वसाइले बख़्शिश, स.131)

"दिन" का ए'लान

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बैहक़ी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی **"शुअ़बुल ईमान"** में नक़्ल करते हैं कि **ताजदारे मदीना** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने **इब्रत** निशान है : "रोज़ाना सुब्ह़ जब सूरज तुलूअ़ होता है तो उस वक़्त "**दिन**" येह ए'लान करता है अगर आज कोई अच्छा काम करना है तो कर लो कि आज के बा'द मैं **कभी पलट कर नहीं आऊंगा**।"

(شعب الایمان للبیھقی، باب فی الصیام، الحدیث:۳۸٤۰،ج۳،ص۳۸٦)

www.dawateislami.net

जनाब या मर्हूम !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़िन्दगी का जो दिन नसीब हो गया इसी को ग़नीमत जान कर जितना हो सके इस में अच्छे अच्छे काम कर लिये जाएं तो बेहतर है कि "कल" न जाने हमें लोग "**जनाब**" कह के पुकारते हैं या "**मर्हूम**" कह कर, हमें इस बात का एह्सास हो या न हो मगर येह ह़क़ीक़त है कि हम अपनी मौत की मन्ज़िल की त़रफ़ निहायत तेज़ी के साथ रवां दवां हैं चुनान्चे **पारह 30 सूरए इनशिक़ाक़** की आयत नम्बर 6 में इर्शाद होता है :

يَاَيُّهَا الْاِنْسَانُ اِنَّكَ كَادِحٌ اِلٰى رَبِّكَ كَدْحًا فَمُلٰقِيْهِ ۚ﴿٦﴾

(پ ۳۰، الانشقاق: ٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ आदमी ! बेशक तुझे अपने रब की त़रफ़ ज़रूर दौड़ना है फिर उस से मिलना।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

पांच को पांच से पहले

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन **ज़िन्दगी बेह़द मुख़्तसर** है, जो वक़्त मिल गया सो मिल गया, आयन्दा वक़्त मिलने की उम्मीद **धोका** है क्या मा'लूम आयन्दा **लम्ह़े हम मौत से हम आग़ोश हो चुके हों, रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : पांच चीज़ों को पांच चीज़ों से पहले ग़नीमत जानो : (1) जवानी को बुढ़ापे से पहले (2) सिह़्ह़त

www.dawateislami.net

को बीमारी से पहले (3) मालदारी को तंगदस्ती से पहले (4) फ़ुर्सत को मशग़ूलिय्यत से पहले और (5) ज़िन्दगी को मौत से पहले।

(المستدرك للحاكم، كتاب الرقاق،باب نعمتان مغبون...الخ،الحديث:٧٩١٦، ج٥، ص٤٣٥)

दो ने'मतें

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे मुबारक है : "**दो ने'मतें** ऐसी हैं जिन के बारे में बहुत से लोग धोके में हैं, **एक सिह़्ह़त** और दूसरी **फ़राग़त**।"

(صحيح البخاری، كتاب الرقاق،باب ماجاء فی الرقاق...الخ،الحديث:٦٤١٢،ج٤،ص٢٢٢)

वाक़ेई सिह़्ह़त की क़द्र बीमार ही कर सकता है और **वक़्त** की क़द्र वोह लोग जानते हैं जो बेह़द मसरूफ़ होते हैं वरना जो लोग "**फ़ुर्सती**" होते हैं उन को क्या मा'लूम के वक़्त की क्या अहम्मिय्यत है ! **वक़्त की क़द्र पैदा कीजिये** और फ़ुज़ूल बातों, फ़ुज़ूल कामों, फ़ुज़ूल दोस्तियों से गुरेज़ करने का ज़ेह्न बनाइये,

हुस्ने इस्लाम

तिरमिज़ी शरीफ़ में है : **सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुह़्तशम** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "इन्सान के **इस्लाम की ख़ूबियों** में से **एक** ख़ूबी उस अम्र को छोड़ देना है जो उसे नफ़्अ़ न दे।"

(سنن الترمذی، كتاب الزهد،باب:١١،الحديث:٢٣٢٤،٢٣٢٥،ج٤،ص١٤٢)

www.dawateislami.net

अनमोल लमह़ात की क़द्र

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़िन्दगी का हर सांस अनमोल हीरा है, काश ! एक एक सांस की **क़द्र** नसीब हो जाए कि कहीं कोई सांस बे फ़ाएदा न गुज़र जाए और कल बरोज़े क़ियामत ज़िन्दगी का ख़ज़ाना नेकियों से ख़ाली पा कर अश्के नदामत न बहाने पड़ जाएं ! सद करोड़ काश ! एक एक लम्ह़े का ह़िसाब करने की आ़दत पड़ जाए कि कहां बसर हो रहा है, ज़हे मुक़द्दर ! **ज़िन्दगी की हर हर साअ़त मुफ़ीद कामों ही में सर्फ़ हो** । बरोज़े क़ियामत अवक़ात को फ़ुज़ूल बातों, ख़ुश गप्पियों में गुज़ारा हुवा पा कर कहीं कफ़े अफ़सोस मलते न रह जाएं ।

अगर हम चाहें तो इस दुन्या में रहते हुए सिर्फ़ एक सेकन्ड में **जन्नत के अन्दर एक दरख़्त लगवा सकते हैं** और जन्नत में दरख़्त लगवाने का त़रीक़ा भी निहायत ही आसान है चुनान्चे "इब्ने माजा शरीफ़" की एक ह़दीसे पाक के मुत़ाबिक़ इन चारों कलिमात में से जो भी कलिमा कहें जन्नत में एक दरख़्त लगा दिया जाएगा :

﴾1﴿ سُبْحٰنَ اللّٰه ﴾2﴿ اَلْحَمْدُ لِلّٰه ﴾3﴿ لَاۤاِلٰهَ اِلَّا اللّٰه ﴾4﴿ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

(سنن ابن ماجه، كتاب الادب، باب فضل التسبيح، الحديث:٣٨٠٧، ج٤، ص٢٥٢)

वक़्त के क़द्र दानों के इर्शादात व मन्क़ूलात

﴾1﴿ अमीरुल मोअमिनीन, ह़ज़रते मौलाए काइनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे **ख़ुदा** كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : येह "**अय्याम**" तुम्हारी ज़िन्दगी के सफ़्ह़ात हैं इन को अच्छे आ'माल से ज़ीनत बख़्शो ।

www.dawateislami.net

﴾2﴿ हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह इब्ने मसऊ़द** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं : मैं अपनी **ज़िन्दगी** के गुज़रे हुए उस दिन के मुक़ाबले में किसी चीज़ पर नादिम नहीं होता जो **दिन मेरा नेक आ'माल** में इज़ाफ़े से ख़ाली हो।

﴾3﴿ हज़रते सय्यिदुना **उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं : रोज़ाना तुम्हारी **उ़म्र मुसल्सल** कम होती जा रही है तो फिर नेकियों में क्यूं सुस्ती करते हो ? एक मरतबा किसी ने अ़र्ज़ की : **या अमीरल मोअमिनीन** ! "येह काम आप कल पर मुअख़्ख़र कर दीजिये।" इर्शाद फ़रमाया : मैं रोज़ाना का काम एक दिन में ब मुश्किल मुकम्मल कर पाता हूं अगर **आज का काम** भी कल पर छोड़ दूंगा तो फिर दो दिन का काम एक दिन में क्यूं कर कर सकूंगा ?

आज का काम कल पर मत डालो   कि कल दूसरा काम होगा

﴾4﴿ हज़रते सय्यिदुना **इमाम शाफ़ेई** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं : मैं एक मुद्दत तक **अहलुल्लाह** की सोह़बत से फ़ैज़याब रहा उन की सोह़बत से मुझे दो अहम बातें सीखने को मिलीं : (1) वक़्त तलवार की त़रह़ है तुम इस को (नेक आ'माल के ज़रीए) काटो वरना (फ़ुज़ूलियात में मशग़ूल कर के) येह तुम को काट देगा (2) अपने नफ़्स की ह़िफ़ाज़त करो अगर तुम ने इस को अच्छे काम में मशग़ूल न रखा तो येह तुम को किसी बुरे काम में मशग़ूल कर देगा।

﴾5﴿ आठवीं सदी के मशहूर शाफ़ेई आ़लिम सय्यिदुना **शम्सुद्दीन अस्बहानी** عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡعَالِی के बारे में **ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर** عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡاَکۡبَر

www.dawateislami.net

फ़रमाते हैं : कहा जाता है आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस ख़ौफ़ से खाना **कम तनावुल** फ़रमाते थे कि ज़ियादा खाने से बोलो बराज़ की ज़रूरत बढ़ेगी और बार बार बैतुल ख़ला जा कर **वक़्त** सर्फ़ होगा।

(الدررالکامنة للعسقلانی،ج٤،ص٣٢٧)

निज़ामुल अवक़ात की तरकीब बना लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हो सके तो अपना यौमिय्या निज़ामुल अवक़ात तरतीब दे लेना चाहिये अव्वलन इशा की नमाज़ पढ़ कर हत्तल इमकान **दो घन्टे** के अन्दर अन्दर सो जाइये, रात को फ़ुज़ूल चोपाल लगाना, होटलों की रोनक बढ़ाना और दोस्तों की मजलिसों में वक़्त गंवाना (जब कि कोई दीनी मस्लहत न हो) बहुत बड़ा नुक़्सान है।

तफ़सीरे रुहुल बयान जिल्द 4 सफ़हा 166 पर है : क़ौमे लूत की तबाहकारियों में से येह भी था कि वोह चौराहों पर बैठ कर लोगों से ठठ्ठा मस्ख़री करते थे। (تفسيرروح البيان، هود، تحت الاية:٧٨، ج٤، ص١٦٦)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! **ख़ौफ़े ख़ुदावन्दी** से लरज़ उठिये ! दोस्त ब ज़ाहिर कैसे ही नेक सूरत हों उन की दिल आज़ार और ख़ुदाए ग़फ़्फ़ार से ग़ाफ़िल कर देने वाली महफ़िलों से तौबा कर लीजिये, रात को **दीनी मशाग़िल** से फ़ारिग़ हो कर जल्द सो जाइये कि रात का **आराम** दिन के आराम के मुक़ाबले में **ज़ियादा सिह्हत बख़्श** है और ऐन फ़ितरत का तक़ाज़ा भी। चुनान्चे पारह 20 सूरतुल क़सस आयत नम्बर 73 में इर्शाद होता है :

www.dawateislami.net

وَمِنۡ رَّحۡمَتِهٖ جَعَلَ لَكُمُ الَّيۡلَ وَ النَّهَارَ لِتَسۡكُنُوۡا فِيۡهِ وَ لِتَبۡتَغُوۡا مِنۡ فَضۡلِهٖ وَ لَعَلَّكُمۡ تَشۡكُرُوۡنَ ۝

(پ۲۰،القصص:۷۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और उस ने अपनी मेहर से तुम्हारे लिये रात और दिन बनाए कि रात में आराम करो और दिन में उस का फ़ज़्ल ढूंडो और इस लिये कि तुम ह़क़ मानो ।*

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡحَنَّان **"नूरुल इरफ़ान"** में इस आयत के तह़्त तह़रीर फ़रमाते हैं : इस से येह भी मा'लूम हुवा कि **कमाई** के लिये दिन और **आराम** के लिये रात मुक़र्रर करनी बेहतर है, रात को बिला वजह न जागे, दिन में बेकार न रहे अगर मा'ज़ूरी (मजबूरी) की वजह से दिन में सोए और रात को कमाए तो ह़रज नहीं जैसे **रात** की नोकरियों वाले मुलाज़िम वग़ैरा ।

सुब्ह़ की फ़ज़ीलत

निज़ामुल अवक़ात मुतअ़य्यन करते हुए काम की नोइ़य्यत और कैफ़िय्यत को पेशे नज़र रखना मुनासिब है, म-षलन जो **इस्लामी भाई** रात को जल्दी सो जाते हैं सुब्ह़ के वक़्त वोह तरो ताज़ा होते हैं लिहाज़ा **इ़ल्मी मशाग़िल** के लिये सुब्ह़ का वक़्त बहुत मुनासिब है **सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की येह दुआ़ **"इमाम तिरमिज़ी"** ने नक़्ल की है : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी उम्मत के लिये सुब्ह़ के अवक़ात में **ब-रकत** अ़त़ा फ़रमा ।"

www.dawateislami.net

चुनान्चे **मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْحَنَّان इस हदीषे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी (या **अल्लाह** !) मेरी उम्मत के तमाम उन **दीनी व दुन्यवी कामों में ब-रकत** दे जो वोह **सुब्ह़ सवेरे** किया करें जैसे सफ़र, त़-लबे इ़ल्म, तिजारत वग़ैरा। (मिरआतुल मनाजीह़, सफ़र के त़रीक़े, जि. 5, स. 491)

कोशिश कीजिये कि सुब्ह़ उठने के बा'द से ले कर रात सोने तक **सारे कामों के अवक़ात** मुक़र्रर हों **म-षलन** इतने बजे तहज्जुद, इ़ल्मी मशाग़िल, मस्जिद में तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त नमाज़े फ़ज्र (इसी त़रह़ दीगर नमाज़ें भी) इशराक़, चाश्त, नाश्ता, कस्बे मुआ़श, दोपहर का खाना, घरेलू मुआ़मलात, शाम के मशाग़िल, अच्छी सोह़बत, (अगर येह मुयस्सर न हो तो तन्हाई बदर जहा बेहतर है) **इस्लामी भाइयों** से दीनी ज़रूरियात के तह़्त मुलाक़ात वग़ैरा के अवक़ात मुतअ़य्यन कर लिये जाएं, जो इस के आ़दी नहीं हैं उन के लिये हो सकता है शुरूअ़ में कुछ दुश्वारी पेश आए फिर जब आ़दत पड़ जाएगी तो इस की ब-रकतें भी ख़ुद ही ज़ाहिर हो जाएगी।

बहर ह़ाल ख़ूब ग़ौरो तफ़क्कुर कीजिये कि हमारा **मक़्सदे ह़यात** क्या है ? अब तक हम ने अपनी ज़िन्दगी किस त़रह़ गुज़ारी ? आह ! **नज़्अ़** व क़ब्रो ह़श्र और मीज़ान व पुल सिरात़ पर हमारा क्या बनेगा ? हमारे वोह अ़ज़ीज़ व अक़ारिब जो हम से पहले दुन्या से रुख़्सत हो गए क़ब्र में न जाने उन के साथ क्या हो रहा होगा ? اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस त़रह़ ग़ौरो फ़िक्र करने से लज़्ज़ाते दुन्या से छुटकारा, ज़िन्दगी के **क़ीमती लमह़ात** को फ़ुज़ूलिय्यात में बरबाद करने से

www.dawateislami.net

नजात और मौत की याद की **ब-रकत से नेकियों की रग़्बत** के साथ साथ अज्रे कसीर भी ह़ासिल होगा।

60 साल की इ़बादत से बेहतर

चुनान्चे सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّى اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा करीना है : (आख़िरत के मुआ़मले में) "घड़ी भर के लिये ग़ौरो फ़िक्र करना 60 साल की इ़बादत से बेहतर है।" (الجامع الصغیرللسیوطی،حرف الفاء،الحدیث:٥٨٩٧،ص٣٦٥)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मक़्सदे ह़यात को समझने, अपनी ज़िन्दगी को इस्लामी ता'लीमात के मुत़ाबिक़ गुज़ारने और **दुन्या व आख़िरत बेहतर** बनाने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَه के अ़त़ा कर्दा **म-दनी इन्आ़मात** को अपना लीजिये

आप دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَه ने मुसलमानों की **दुन्या व आख़िरत** बेहतर बनाने के लिये सुवाल नामे की सूरत में इस्लामी भाइयों के लिये 72, इस्लामी बहनों के लिये 63, दीनी त़-लबा के लिये 92 और दीनी त़ालिबात के लिये 83, जब कि **म-दनी** मुन्नों और **मुन्नियों के लिये** 40 **म-दनी इन्आ़मात** पेश किये हैं। **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला **मक्तबतुल मदीना** से मिल सकता है, रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए़ इस को पुर कर के **म-दनी माह** की 10 तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने यहां के **दा'वते इस्लामी** के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

www.dawateislami.net

अपने गुनाहों का एह़तिसाब करने, क़ब्रो ह़श्र के बारे में ग़ौरो **फ़िक्र करने और अपने अच्छे बुरे कामों का जाइज़ा लेते हुए म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर करने को **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** में **फ़िक्रे मदीना करना कहते हैं।**

आप भी रिसाला ह़ासिल कर लीजिये, अगर फ़िल ह़ाल पुर नहीं करना चाहते तो न सही़, इतना तो कीजिये कि वलिय्ये कामिल, आ़शिक़े रसूल, आ'ला ह़ज़रत इमामे अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَنَّان की **पच्चीसवीं** शरीफ़ की निस्बत से रोज़ाना कम अज़ कम **25 सेकन्ड्ज़** के लिये इस को देख लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ देखने से और पढ़ते रहने से **फ़िक्रे मदीना** करने और इस रिसाले को भरने का ज़ेह्न बनेगा और अगर भरने का मा'मूल बन गया तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-रकतें आप ख़ुद ही देख लेंगे।

म-दनी इन्आ़मात पर करता है जो कोई अ़मल
मग़फ़िरत कर बे ह़िसाब उस की ख़ुदाए लम यज़ल

म-दनी इन्आ़मात के रिसाले की ब-रकत

प्यारे इस्लामी भाइयो ! म-दनी इन्आ़मात ने न जाने कितने **इस्लामी भाइयों** और **इस्लामी बहनों** की ज़िन्दगियों में **म-दनी इनक़िलाब** बरपा कर दिया है। इस की एक झलक मुलाह़ज़ा हो, चुनान्चे न्यू कराची के एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ बयान है : अ़लाक़े की **मस्जिद** के **इमाम साह़िब** जो कि **दा'वते इस्लामी** से वाबस्ता हैं, उन्हों ने **इनफ़िरादी कोशिश** करते हुए मेरे बड़े

www.dawateislami.net

भाईजान को **म-दनी इन्आ़मात** का एक रिसाला तोह़्फ़े में दिया, वोह घर ले आए और पढ़ा तो ह़ैरान रह गए कि इस मुख़्तसर से रिसाले में एक मुसलमान को **इस्लामी ज़िन्दगी** गुज़ारने का इतना ज़बर दस्त फ़ोर्मूला दे दिया गया है । **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला मिलने की ब-रकत से اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन को **नमाज़ पढ़ने का जज़्बा** मिला और नमाज़े बा जमाअ़त की अदाएगी के लिये मस्जिद में ह़ाज़िर हो गए और अब पांच वक़्त के **नमाज़ी बन चुके हैं,** दाढ़ी मुबारक भी सजा ली और **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला भी पुर करते हैं ।

म-दनी इन्आ़मात के आ़मिल पे हर दम हर घड़ी
या इलाही ! ख़ूब बरसा रह़मतों की तू झड़ी

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए **सुन्नत की फ़ज़ीलत** और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं ।

ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस ने **मेरी सुन्नत** से **मह़ब्बत** की उस ने मुझ से **मह़ब्बत** की और जिस ने मुझ से **मह़ब्बत** की वोह **जन्नत में मेरे साथ** होगा ।"

(تاریخ مدینۃ دمشق لابن عساکر، انس بن مالک، ج۹، ص۳٤۳)

लिहाज़ा **पानी पीने के 12 म-दनी फूल** क़बूल फ़रमाइये, (इस किताब के सफ़ह़ा नम्बर 630 से बयान करें)

★★★★★★

बयान नम्बर 11

हुस्ने अख़्लाक़

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले "ना चाक़ियों का इलाज" में दुरूद शरीफ़ के मुतअ़ल्लिक़ ह़दीषे पाक नक़्ल फ़रमाते हैं कि नबिय्ये करीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْم का फ़रमाने आ़लीशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर आपस में मह़ब्बत रखने वाले जब बाहम मिलें और मुसाफ़ह़ा करें और नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक भेजें तो उन के जुदा होने से पहले दोनों के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं।"

(مسند ابی یعلٰی،مسند انس بن مالك،الحديث:۲۹۵۱،ج۳،ص۹۵)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू उ़षमान ह़ीरी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى को एक **दा'वत** में बुलाया गया ताकि उन के अख़्लाक़ की आज़्माइश की जाए चुनान्चे जब वोह तशरीफ़ लाए तो **मेज़बान** ने अन्दर न जाने दिया और कहा कि खाना ख़त्म हो चुका है, येह सुन कर आप वापस हो गए, अभी आप ने थोड़ा ही रास्ता तै किया था कि मेज़बान पीछे पहुंचा और आप को वापस ले आया लेकिन फिर लौटा दिया, इसी त़रह़ कई बार आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को बुलाया और फिर लौटा दिया। **आख़िरे कार** मेज़बान आप से **मुतअष्षिर** हो ही गया और ता'रीफ़ी कलिमात उस की ज़बान पर जारी हो गए : "वाक़ेई आप तो एक अ़ज़ीम जवां मर्द हैं, आप के अख़्लाक़ निहायत ही बुलन्द हैं और आप तो सब्र के पहाड़ हैं।" आप

www.dawateislami.net

رَحمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ ने उस शख़्स से इनकिसारन फ़रमाया : "येह जो कुछ तुम ने देखा येह तो **कुत्ते की आ़दत** है कि जब उसे बुलाते हैं तो वोह आ जाता है और जब धुतकारते हैं तो वापस हो जाता है, पस येह कोई क़ाबिले क़द्र बात तो नहीं ।" (احیاء علوم الدین، ج۳،ص ۸۷)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वलियों के अख़्लाक़े करीमा और इन की आ़जिज़ी की एक झलक आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाई ! आज कोई हमारे साथ येह **सुलूक** कर के तो दिखाए ? हमारा तो गुस्से के मारे **बुरा ह़ाल** हो जाए और इस त़रह़ से हमारी **बे इ़ज़्ज़ती** करने वाले के हम तो जानी दुश्मन हो जाएं मगर **वली तो फिर वली** होता है, इतना हो चुकने के बा'द भी आ़जिज़ी का ह़ाल येह है कि अपने इस अज़ीम **अख़्लाक़ी कारनामे** को एक कुत्ते के फ़े'ल से तशबीह़ दे कर शैत़ान के एक बहुत ही **ख़त़रनाक वार** को ना काम कर दिया क्यूंकि अगर कोई हमारी ता'रीफ़ करे और हम फूल जाएं तो येह भी शैत़ान की कामयाबी है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें **शैत़ाने लई़न** के शर से बचाए और **हुस्ने अख़्लाक़** की दौलत अ़त़ा फ़रमाए ! आमीन ।

आक़ा का पसन्दीदा

हर एक के साथ **ख़ुशरूई** और **ख़ुश अख़्लाक़ी** के साथ पेश आना चाहिये, येह वोह सिफ़त है जिस के बारे में **हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, सरवरे आ़लम** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बिला शुबा तुम सब मुसलमानों में सब से ज़ियादा मुझे वोह शख़्स **मह़बूब** है जिस के अख़्लाक़ अच्छे हों ।"

(صحیح البخاری، کتاب المناقب، باب صفۃ النبی صلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ وآلہٖ وسلَّم ،الحدیث:۳۵۵۹،ج۲،ص۴۸۹)

www.dawateislami.net

बेहतरीन चीज़

इसी त़रह एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! सब से बेहतरीन चीज़ जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन्सान को अ़त़ा फ़रमाई है वोह क्या चीज़ है ? तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अच्छे अख़्लाक़** ।"

(شعب الایمان للبیهقی،ج۲،ص۲۰۰، حدیث: ۱۵۲۹)

सब से ज़ियादा वज़्न दार नेकी

हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया "**क़ियामत के दिन मोमिन के मीज़ाने अ़मल में सब से ज़ियादा वज़्न दार नेकी अच्छे अख़्लाक़ होंगे** ।"

(سنن الترمذی،کتاب البر والصلة،باب ماجاء فی حسن الخلق، الحدیث:۲۰۱۰،ج۳،ص۴۰۴)

"अच्छे अख़्लाक़" गुनाह मिटा देते हैं

हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बेशक **अच्छे अख़्लाक़** गुनाह को इस त़रह मिटा देते हैं जिस त़रह **सूरज बर्फ़ को पिघला देता है** ।"

(شعب الایمان للبیهقی،ج۶،ص۲۴۷،حدیث:۸۰۳۶)

हुस्ने अख़्लाक़ किसे कहते हैं ?

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना **आ़इशा सिद्दीक़ा** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهَا से रिवायत है कि **रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया "क्या मैं तुम्हें दुन्या व आख़िरत के **उ़म्दा अख़्लाक़** के बारे में न बताऊं ! वोह येह कि जो तुम से क़त़्ए

www.dawateislami.net

तअ़ल्लुक़ करे तुम उस से जोड़ो, जो तुम्हें मह़रूम करे तुम उसे अ़ता करो और जो तुम पर **ज़ुल्म** करे तुम उस से **दर गुज़र करो** ।”

(شعب الایمان للبیهقی، ج٦، ص٢٦١، حدیث:٨٠٨٠)

तशरीफ़ आवरी का मक़्सद

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी का एक **मक़्सद** येह भी है कि लोगों के **अख़्लाक़ व मुआ़मलात** को दुरुस्त करें, उन के अन्दर से **बुरे अख़्लाक़** की जड़ें उखाड़ें और उन की जगह **बेहतर अख़्लाक़** पैदा करें चुनान्चे **हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़लाक** صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : “मुझे अच्छे अख़्लाक़ की तकमील के लिये भेजा गया है ।”

(السنن الکبری للبیهقی، ج١٠، ص٣٢٣ حدیث: ٢٠٧٨٢)

जो लोग हर वक़्त **गाल फुलाए**, मुंह लटकाए और **पेशानी पर बल डाले हुए तैवरी** चढाए हुए हर आदमी से बद अख़्लाक़ी के साथ पेश आते हैं वोह बहुत ही **बुरी ख़स्लत** के ह़ामिल होते हैं और वोह दुन्या व आख़िरत की सआ़दतों और ख़ुश नसीबियों से मह़रूम हैं जब कि ख़ुशी का इज़्हार करते हुए और मुस्कुराते हुए लोगों से मिलना जुलना बहुत बड़ी सआ़दत और ख़ुश नसीबी और षवाब का काम है ।

बद अख़्लाक़ी में कराहिय्यत ही कराहिय्यत और **ख़ुश अख़्लाक़ी** में हुस्न ही हुस्न है लिहाज़ा **हर इस्लामी भाई** को चाहिये कि अपने **घर वालों, रिश्तेदारों** और **पड़ोसियों** बल्कि हर मिलने जुलने वाले के साथ **ख़ुश अख़्लाक़ी** के साथ पेश आए ।

www.dawateislami.net

घरों में म-दनी माह़ोल न होने की एक वजह

अफ़सोस ! आज कल हम में से अकषर के घरों में **म-दनी माह़ोल** बिलकुल नहीं है इस में **काफ़ी ह़द तक** हमारा अपना भी **क़ुसूर** है, घर वालों के साथ हमारी बे इन्तिहा बे तकल्लुफ़ी, **हंसी मज़ाक़, तू तड़ाक** और **बद अख़्लाक़ी** और ह़द दरजा बे तवज्जोगी वग़ैरा इस के असबाब हैं, आम लोगों के साथ तो हम इन्तिहाई आ़जिज़ी और मिस्कीनी से पेश आते हैं मगर घर में शेरे बब्बर की त़रह़ **दहाड़ते** हैं, इस त़रह़ घर वालों में वक़ार क़ाइम होता ही नहीं और वोह बेचारे इस्लाह़ से अकषर मह़रूम रह जाते हैं, अगर हम ने अपने **अख़्लाक़** न संवारे, घर वालों के साथ आ़जिज़ी और **ख़न्दा पेशानी** का मुज़ाहरा कर के उन की **इस्लाह़ की कोशिश** न फ़रमाई तो कहीं जहन्नम में न जा पड़ें !

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पारह 28 **सूरतुत्तह़रीम** की आयत 6 में इर्शाद फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّ قُوْدُهَا النَّاسُ وَ الْحِجَارَةُ (پ۲۸،التحریم:٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ईमान वालों ! अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिस के ईंधन आदमी और पथ्थर हैं ।*

अहले ख़ाना को दोज़ख़ से कैसे बचाएं !

इस आयत के तह़्त **ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद **मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** तआ़ला और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की फ़रमां

www.dawateislami.net

बरदारी इख़्तियार कर के, **इबादतें** बजा ला कर, **गुनाहों** से बाज़ रह कर **घर वालों** को नेकी की हिदायत और बदी से मुमानअ़त कर के और उन्हें **इल्मो अदब** सिखा कर।" (अपनी जानों और अपने घर वालों को जहन्नम की आग से बचाओ) **वालिदैन** व दीगर ज़विल अरह़ाम (या'नी जिन के साथ ख़ूनी रिश्ता हो दरजा ब दरजा) मुआ़शरे में सब से ज़ियादा **एह़तिराम व हुस्ने सुलूक** के ह़क़दार होते हैं मगर **अफ़सोस** कि इस की त़रफ़ अब ध्यान कम दिया जाता है। बा'ज़ लोग अ़वाम के सामने अगर्चे इन्तिहाई मुन-कसिरुल मिज़ाज व **मिलन सार** गरदाने जाते हैं मगर अपने घर में बिल ख़ुसूस वालिदैन के ह़क़ में निहायत ही **तुन्द मिज़ाज** व **बद अख़्लाक़** होते हैं ऐसों को चाहिये कि इस ह़दीषे मुबारका को पेशे नज़र रखें :

जन्नत व दोज़ख़

चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू उमामा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! वालिदैन का अवलाद पर क्या **ह़क़** है ? फ़रमाया कि "वोह दोनों तेरी जन्नत व दोज़ख़ हैं।"

(سنن ابن ماجه، كتاب الادب، باب برالوالدين، الحديث:٣٦٦٢، ج٤، ص١٨٦)

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़बूआ़ 1334 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द सिवुम, ह़िस्सा 16, सफ़ह़ा 553 पर सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती **मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इस ह़दीषे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : या'नी उन को राज़ी रखने से जन्नत मिलेगी और नाराज़ रखने से दोज़ख़ के मुस्तह़िक़ होंगे।

हज्जे मबरूर का षवाब

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से मरवी है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब अवलाद अपने वालिदैन की त़रफ़ **नज़रे रह़मत** करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये हर नज़र के बदले **हज्जे मबरूर** का षवाब लिखता है।" लोगों ने कहा अगर्चे दिन में सो 100 मरतबा नज़र करे ? फ़रमाया : "हां ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अकबर और अत़्यब है।"

(شعب الایمان للبیہقی،باب فی برالوالدین،الحدیث:۷۸۵٦،ج٦،ص١٨٦)

या'नी उसे सब कुछ **क़ुदरत** है, इस से **पाक** है कि उस को इस के देने से आ़जिज़ कहा जाए।

(बहारे शरीअ़त, जिल्द सिवुम, हि़स्सा. 16, स. 554)

वालिदैन के साथ साथ दीगर **अहले ख़ानदान** म-षलन भाई बहनों का भी ख़याल रखना चाहिये, वालिद साहि़ब के बा'द **दादा जान** और **बड़े भाई** का रुत़्बा है कि बड़ा भाई वालिद की जगह होता है, इसी त़रह़ मर्द को चाहिये कि अपनी ज़ौजा के साथ हुस्ने सुलूक करे, उसे **हि़क्मते अ़-मली** के साथ चलाए और **ख़िलाफ़े मिज़ाज** ह़-रकतें सरज़द हो जाने पर सब्र करता रहे।

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा करीना है : "**कामिल ईमान वालों** में से वोह भी है जो **उ़म्दा अख़्लाक़** वाला और **अपनी ज़ौजा** के साथ सब से ज़ियादा नर्म **त़बीअ़त** हो।"

(سنن الترمذی،کتاب الایمان،باب ما جاء فی استکمال الایمان...الخ،الحدیث:٢٦٢١،ج٤،ص٢٧٨)

www.dawateislami.net

अवलाद को अदब सिखाइये

वालिदैन को चाहिये कि अपनी **अवलाद के हुक़ूक़** का ख़याल रखे, उन्हें मोंडर्न बनाने के बजाए सुन्नतों का चलता फिरता नुमूना बनाएं, उन के **अख़्लाक़** संवारें, बुरी सोह़बत से दूर रखें, सुन्नतों भरे **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता करें, **फ़िल्मों**, डिरामों और **बुरे रस्मो रवाज वाले**, गानों से भरपूर, यादे इलाही से दूर करने वाले फ़ोह़्श **फंकशनों** से बचाएं। आज कल शायद मां बाप अवलाद के हुक़ूक़ येही समझते हैं कि उन को **सिर्फ़ दुन्यवी ता'लीम**, हुनर और **माल कमाना** आ जाए। आह ! लिबास और बदन को तो मैल कुचैल से बचाने का ज़ेहन होता है मगर बच्चे के **दिल** और **आ'माल** की पाकीज़गी का कोई ख़याल नहीं होता।

नबिय्ये करीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया "कोई शख़्स अपनी अवलाद को **अदब सिखाए**, वोह उस के लिये **एक साअ़** स-दक़ा करने से अफ़्ज़ल है।"

(سنن الترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی ادب الولد، الحدیث:۱۹۵۸،ج۳،ص۳۸۲)

एक और हदीषे पाक में है कि "किसी बाप ने अपनी अवलाद को कोई चीज़ ऐसी नहीं दी जो **अच्छे अदब** से बेहतर हो।"

(المرجع السابق، الحدیث:۱۹۵۹، ج۳،ص۳۸۳)

रिश्तेदारों का एह़तिराम

रिश्तेदार भी **हुस्ने सुलूक** के ह़क़दार हैं, तमाम रिश्तेदारों के साथ **अच्छा बरताव** करना चाहिये, ह़ज़रते सय्यिदुना **आ़सिम**

www.dawateislami.net

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शहनशाहे बनी आदम** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया "जिस को येह पसन्द हो कि **उ़म्र में दराज़ी** और रिज़्क़ में फ़राख़ी हो और बुरी मौत दफ़्अ़ हो वोह **अल्लाह** तआ़ला से डरता रहे और रिश्तेदारों से **हुस्ने सुलूक** करे।"

(المستدرک، کتاب البر والصلة،باب من سره ان یدفع...الخ، الحدیث: ۷۳٦۲،ج۵،ص۲۲۲)

सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "रिश्ता काटने वाला जन्नत में नहीं जाएगा।"

(صحیح البخاری، کتاب الادب،باب اثم القاطع، الحدیث:۵۹۸٤،ج٤،ص۹۷)

नाराज़ रिश्तेदारों से सुल्ह़ कर लीजिये

इन अह़ादीषे मुबारका से उन लोगों को **इ़ब्रत** ह़ासिल करनी चाहिये जो बात बात पर अपने रिश्तेदारों से नाराज़ हो जाते और उन से मरासिम तोड़ डालते हैं ऐसों को चाहिये कि अगर्चे रिश्तेदारों ही का क़ुसूर हो सुल्ह़ के लिये ख़ुद पहल करें (जब कि कोई शरई मस्लह़त मानेअ़ न हो) और **ख़न्दा पेशानी** के साथ मिल कर उन से **तअ़ल्लुक़ात** संवार लें।

पड़ोसियों की अहम्मिय्यत

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हम में से हर एक को चाहिये कि अपने पड़ोसियों के साथ भी अच्छा बरताव करें और **बिला मस्लह़ते शरई** उन के **एह़तिराम** में कमी न करें, एक शख़्स ने हुज़ूर सरापा नूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की **ख़िदमत** में अ़र्ज़ की **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे येह क्यूं कर मा'लूम हो कि मैं ने अच्छा

www.dawateislami.net

किया या बुरा ? फ़रमाया : "जब तुम **पड़ोसियों** को येह कहते सुनो कि तुम ने अच्छा किया तो बेशक तुम ने **अच्छा किया** और जब येह कहते सुनो कि तुम ने बुरा किया तो बेशक तुम ने **बुरा किया** है।"

(سنن ابن ماجه، كتاب الزهد، باب الثناء الحسن،الحديث:٤٢٢٣،ج٤،ص٤٧٩)

आ'ला किरदार की सनद

अल्लाह अकबर ! **पड़ोसियों** की इस क़दर अहम्मिय्यत कि केरेक्टर सर्टीफ़िकेट इन के ज़रीए मिले, अफ़सोस ! फिर भी आज **पड़ोसियों** को कोई **ख़ातिर** में नहीं लाता।

मा तह़्तों के बारे में सुवाल होगा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे लिये अपने मा तह़्तों के साथ भी हुस्ने सुलूक करना ज़रूरी है जैसा कि **सरकारे मदीना** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिदायत निशान है : "तुम में से हर एक निगरान है और निगरानी के मुतअ़ल्लिक़ सब से पूछगछ होगी। **बादशाह** निगरान है और उस की रिआ़या के बारे में उस से **सुवाल** होगा, मर्द अपने घर का निगरान है और उस की रिआ़या के बारे में उस से **सुवाल** होगा, औ़रत अपने **शोहर** के घर में **निगरान** है और उस की रिआ़या के बारे में उस से सुवाल होगा।"

(صحيح بخارى،ج٢،ص١١٢،حديث:٢٤٠٩)

दिल न दुखाइये

प्यारे इस्लामी भाइयो ! हर एक से हुस्ने सुलूक से पेश आने का तक़ाज़ा येह है कि हर ह़ाल में हर मुसलमान के तमाम **हुक़ूक़** का लिह़ाज़ रखा जाए और बिला इजाज़ते शरई किसी भी मुसलमान की

www.dawateislami.net

दिल शिकनी न की जाए, हर एक के साथ ख़ैर और भलाई के सुलूक से मु-तअल्लिक़ हज़रते शैख़ सा'दी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡهَادِی एक ह़िकायत नक़्ल फ़रमाते हैं :

कर भला हो भला

कहते हैं : **एक नेक सीरत शख़्स** अपने ज़ाती दुश्मनों का ज़िक्र भी बुराई से न करता था, जब भी किसी की बात छिड़ती उस की ज़बान से नेक कलिमा ही निकलता, उस के मरने के बा'द किसी ने उसे ख़्वाब में देखा तो सुवाल किया "مـا فَعلَ اللّٰہُ بِک؟" या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारे साथ किया मुआ़मला फ़रमाया ? येह सुवाल सुन कर उस के **होंटों** पर मुस्कुराहट आ गई और वोह बुलबुल की त़रह़ शीरीं आवाज़ में बोला : "दुन्या में मैं **कोशिश** किया करता था कि मेरी ज़बान से किसी के बारे में कोई **बुरी बात** न निकले, नकीरैन ने मुझ से भी कोई **सख़्त सुवाल** न किया, और यूं मेरा मुआ़मला बहुत अच्छा रहा।" (بوستان سعدی،باب چهارم درتواضع،ص۱٤۹)

दा'वते इस्लामी क्या चाहती है

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दावते इस्लामी**" नफ़रतें मिटाती और मह़ब्बतों के जाम पिलाती है, **दा'वते इस्लामी** दौरे अस्लाफ़ की याद ताज़ा करना चाहिती है, हर इस्लामी भाई को चाहिये कि **आ़शिक़ाने रसूल** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर **म-दनी** माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़

www.dawateislami.net

करवाने का मा'मूल बनाए, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ब तुफ़ैले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हुस्ने अख़्लाक़ का जज़्बा बेदार होगा अगर ऐसा हो गया तो हमारा मुआ़शरा एक बार फिर मदीनए मुनव्वरा के दिल कश व खुश गवार, **ख़ुश्बूदार व सदा बहार** रंग बिरंगे फूलों से लदा हुवा **ह़सीन गुलज़ार** बन जाएगा। आप की तरग़ीब के लिये **म-दनी बहार** पेश करता हूं :

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं बदल गया !

शालीमार टाउन (मर्कज़ुल औलिया, लाहोर, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई का कुछ यूं बयान है मैं **बेह़द बिगड़ा हुवा** इन्सान था, **फ़िल्मों डिरामों** का रस्या होने के साथ साथ जवान लड़कियों के साथ छेड़ ख़ानियां, **औबाश** नौ जवानों के साथ **दोस्तियां,** रात गए तक उन के साथ **आवारा गर्दियां** वग़ैरा मेरे मा'मूलात थे, मेरी ह़-रकाते बद के बाइ़ष ख़ानदान वाले भी मुझ से कतराते, अपने घरों में मेरी आमद से घबराते नीज़ अपनी अवलाद को मेरी सोह़बत से बचाते थे, मेरी **गुनाहों भरी ख़ज़ां रसीदा शाम** के सुब्ह़े बहारां बनने की सबील यूं हुई कि एक **दा'वते इस्लामी** वाले आ़शिक़े रसूल की मुझ पर मीठी नज़र पड़ गई। उस ने **निहायत ही शफ़क़त** के साथ इनफ़िरादी कोशिश करते हुए मुझे **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की तरग़ीब दिलाई, बात मेरे दिल में उतर गई और मैं ने **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र की सआ़दत ह़ासिल की, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **म-दनी क़ाफ़िले** में **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बतों ने मुझ पापी व बदकार के दिल में

www.dawateislami.net

म-दनी इनक़िलाब बरपा कर दिया, गुनाहों से तौबा की तौफ़ीक़ और सुन्नतों भरे **म-दनी** लिबास का जज़्बा मिला, सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा सजा और मुझ जैसा गुनहगार सुन्नतों के **म-दनी** फूल लुटाने में मशग़ूल हो गया, जो अ़ज़ीज़ व अक़रिबा देख कर कतराते थे, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ अब वोह गले लगाते हैं, पहले मैं ख़ानदान के अन्दर बद तरीन था, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िले** की ब-रकत से अब अ़ज़ीज़ तरीन हो गया हूं।

जब तक बिका न था तो कोई पूछता न था
तुम ने ख़रीद कर मुझे अनमोल कर दिया

(फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब : फ़ैज़ाने र-मज़ान, जि.1 स.1091)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए **सुन्नत की फ़ज़ीलत** और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं।

ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शमए बज़्मे हिदायत, नोशाए बज़्मे जन्नत صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जिस ने **मेरी सुन्नत** से **मह़ब्बत** की उस ने मुझ से **मह़ब्बत** की और जिस ने मुझ से **मह़ब्बत** की वोह **जन्नत में मेरे साथ** होगा।"

(تاریخ مدینة دمشق لابن عساکر، انس بن مالك، ج۹، ص۳٤۳)

लिहाज़ा **मुसाफ़ह़ा के 7 म-दनी फूल** क़बूल फ़रमाइये, (इस किताब के सफ़ह़ा नम्बर 549 से बयान करें)

www.dawateislami.net

बाब नम्बर 5

दुआएं, सुन्नतें, आदाब

इस बाब में :

दुआ की अहम्मिय्यत, **म-दनी क़ाफ़िले** के जदवल में शामिल **48 दुआएं, सुन्नतें, आदाब और बे शुमार म-दनी फूल,** इन के इलावा **मज़ीद उनवानात** भी शामिल हैं ।

www.dawateislami.net

बाब 5 : दुआएं, सुन्नतें और आदाब

दुआ की अहम्मिय्यत

प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

اَلدُّعَآءُ مُخُّ الْعِبَادَة **तर्जमा :** *दुआ़ इबादत का मग़्ज़ है ।*

(سنن الترمذی ج٥ ص٢٤٣ حديث ٣٣٨٢)

दुआ़ मोमिन का हथयार है

ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया :

"اَلدُّعَآءُ سِلَاحُ الْمُؤْمِنِ وَعِمَادُ الدِّيْنِ وَ نُوْرُ السَّمَاوَاتِ وَالْاَرْضِ"

तर्जमा : *दुआ़ मोमिन का हथयार, दीन का सुतून और आस्मानो* ***ज़मीन*** *का नूर है ।* (المستدرك للحاكم ج٢ ص١٦٢ حديث ١٨٥٥)

एक और ह़दीषे पाक में इर्शाद फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हें वोह चीज़ न बताऊं जो तुम्हें तुम्हारे दुश्मन से नजात दे और तुम्हारा रिज़्क़ वसीअ़ कर दे, रात दिन **अल्लाह** तआ़ला से दुआ़ मांगते रहो कि दुआ़ मोमिन का हथयार है ।" (مجمع الزوائد ج١٠ ص ٢٢١ حديث ١٧١٩٩)

दुआ़ दाफ़ए बला है

मक्की म-दनी सरकार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुश्कबार है : "बला उतरती है फिर दुआ़ उस से जा मिलती है फिर दोनों क़ियामत तक झगड़ा करती रहती हैं, या'नी दुआ़ उस "बला" को उतरने नहीं देती ।" (المستدرك للحاكم ج٢ ص١٦٢ حديث١٨٥٦)

www.dawateislami.net

इबादात में दुआ का मक़ाम

हज़रते सय्यिदुना **अबू ज़र गिफ़ारी** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इर्शाद फ़रमाते हैं : “इबादात में दुआ की वोही हैषिय्यत है जो खाने में नमक की।” (مصنف ابن ابی شیبۃ ج۷ ص۴۰ حدیث۴)

दुआ के तीन फ़ाइदे

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के **प्यारे महबूब** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : “जो मुसलमान ऐसी दुआ करे जिस में गुनाह और क़त्ए रेह्मी की कोई बात शामिल न हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे तीन चीज़ों में से कोई एक ज़रूर अता फ़रमाता है : या ﴾1﴿ उस की दुआ का नतीजा जल्द ही उस की ज़िन्दगी में ज़ाहिर हो जाता है, या ﴾2﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कोई मुसीबत उस बन्दे से दूर फ़रमा देता है, या ﴾3﴿ उस के लिये आख़िरत में भलाई जम्अ की जाती है।”

(المستدرك للحاكم ج۲ص۱۶۳ حدیث ۱۸۵۹)

एक और रिवायत में है कि “बन्दा (जब आख़िरत में अपनी दुआओं का षवाब देखेगा जो दुन्या में मुस्तजाब (या'नी मक़्बूल) न हुई थी तो) तमन्ना करेगा, काश ! दुन्या में मेरी कोई दुआ क़बूल न होती।” (المستدرك للحاكم ج۲ص۱۶۵ حدیث ۱۸۶۲)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! दुआ राएगां तो जाती ही नहीं, इस का दुन्या में अगर अषर ज़ाहिर न भी हो तो आख़िरत में अज्रो षवाब मिल ही जाएगा लिहाज़ा दुआ में सुस्ती करना मुनासिब नहीं।

www.dawateislami.net

म-दनी क़ाफ़िले के जदवल में शामिल दुआ़एं

﴾1﴿ जनाज़ा देख कर पढ़िये

سُبْحٰنَ الْحَيِّ الَّذِیْ لَا یَمُوْتُ

तर्जमा : वोह ज़ात पाक है जो ज़िन्दा है उसे कभी मौत नहीं आएगी

(احیاء العلوم ج٥ ص٢٦٦ ملخصًا)

﴾2﴿ क़ब्रिस्तान में दाख़िल होते वक़्त की दुआ़

اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ یَآ اَھْلَ الْقُبُوْرِ یَغْفِرُاللّٰهُ لَنَا وَ لَکُمْ اَنْتُمْ سَلَفُنَا وَ نَحْنُ بِالْاَثَرِ

तर्जमा : ऐ क़ब्र वालो ! तुम पर सलाम हो, **अल्लाह** तआ़ला हमारी और तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाए और तुम हम से पहले पहुंच गए और हम पीछे आने वाले हैं । (الحصن الحصین ص١١٥)

﴾3﴿ क़ब्र पर मिट्टी डालते वक़्त की दुआ़

مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ وَفِیْهَا نُعِیْدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى

तर्जमा : हम ने **ज़मीन** ही से तुम्हें बनाया और इसी में तुम्हें फिर ले जाएंगे और इसी से तुम्हें दोबारा निकालेंगे । (الفتاوی الھندیة ج١ ص١٦٦)

﴾4﴿ बैतुल ख़ला में दाख़िल होने से पहले की दुआ़

(اَللّٰھُمَّ اِنِّیْٓ اَعُوْذُ بِکَ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَآئِثِ)

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं नापाक जिन्न और जिन्नियों से तेरी पनाह मांगता हूं । (صحیح البخاری ج٤ ص١٩٥ حدیث٦٣٢٢)

चूंकि पाख़ाने में गन्दे जिन्नात रहते हैं, इस लिये येह दुआ़ पढ़नी चाहिये । (मिरआतुल मनाजीह़, जि.1, स. 259)

www.dawateislami.net

﴾5﴿ बैतुल ख़ला से बाहर आने के बा'द की दुआ

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْۤ اَذْھَبَ عَنِّی الْاَذٰی وَعَافَانِیْ

तर्जमा : **अल्लाह** तआ़ला का शुक्र है जिस ने मुझ से अज़िय्यत दूर की और मुझे आ़फ़िय्यत दी । (مصنف ابن ابی شیبۃ ج۷ ص۱۴۹ حدیث۲)

﴾6﴿ शैत़ान से बचने का अ़मल

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ لَہُ الْمُلْکُ وَ لَہُ الْحَمْدُ

وَ ھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ

तर्जमा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह तन्हा है, उस का कोई शरीक नहीं उस के लिये मुल्क व ह़म्द है और वोह हर शै पर क़ादिर है ।

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने येह कलिमात दिन में सो बार कहे तो उस का येह अ़मल दस ग़ुलाम आज़ाद करने के बराबर होगा और उस के नामए आ'माल में सो नेकियां लिखी जाएंगी और उस के सो गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे और येह कलिमात उस दिन शाम तक शैत़ान से उस की ह़िफ़ाज़त करेंगे और कोई शख़्स इस से बेहतर अ़मल ले कर नहीं आएगा मगर वोह जिस ने इस से ज़ियादा येह अ़मल किया ।"

(صحیح البخاری ج ۲ ص ۴۰۲ حدیث ۳۲۹۳)

﴾7﴿ लिबास पहनते वक़्त की दुआ

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ کَسَانِیْ ھٰذَا وَ رَزَقَنِیْہِ مِنْ غَیْرِ حَوْلٍ مِّنِّیْ وَ لَا قُوَّۃٍ

www.dawateislami.net

तर्जमा : तमाम ख़ूबियां **अल्लाह** तआ़ला के लिये जिस ने मुझे येह (कपड़ा) पहनाया और बिग़ैर मेरी कुव्वत व त़ाक़त के मुझे येह अ़त़ा किया । (سنن ابی داود ج ٤ ص ٥٩ حدیث ٤٠٢٣)

﴾9﴿ सुरमा लगाते वक़्त की दुआ़

اَللّٰهُمَّ مَتِّعْنِی بِالسَّمْعِ وَالْبَصَرِ

तर्जमा : या इलाही ! मुझे सुनने और देखने से बहरा मन्द (फ़ाएदा उठाने वाला) कर । (हमारा इस्लाम, हिस्सए अव्वल, स. 40)

मुसलमान को हंसता देख कर पढ़ने की दुआ़

اَضْحَکَ اللّٰهُ سِنَّکَ

तर्जमा : **अल्लाह** तआ़ला तुझे हंसता रखे । (الحصن الحصین ص ١٠٤)

﴾10﴿ इ़त्र लगा कर देने की दुआ़

عَطَّرَ اللّٰهُ اَیَّامَکَ

तर्जमा : **अल्लाह** तआ़ला तेरी ज़िन्दगी को मुअ़त्त़र करे ।

﴾11﴿ आबे ज़म ज़म पीते वक़्त की दुआ़

اَللّٰهُمَّ اَسْئَلُکَ عِلْمًا نَّافِعًا وَّ رِزْقًا وَّاسِعًا وَّ شِفَآءً مِّنْ کُلِّ دَآءٍ

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से इ़ल्मे नाफ़ेअ़ का और रिज़्क़ की कुशादगी का और हर बीमारी से शिफ़ायाबी का सुवाल करता हूं ।

(المستدرک للحاکم ج ٢ ص ١٣٢ حدیث ١٧٨٢)

﴾12﴿ मस्जिद में दाख़िल होने की दुआ़

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لِیْۤ اَبْوَابَ رَحْمَتِکَ

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ मुझ पर अपने रह़मत के दरवाज़े खोल दे । (الحصن الحصین ص ٥٤)

www.dawateislami.net

﴾13﴿ मस्जिद से निकलते वक़्त की दुआ

بِسْمِ اللّٰهِ وَ السَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰه

तर्जमा : *अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ *के नाम से (निकलता हूं) और रसूलुल्लाह* صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم *पर सलाम हो ।* (الحصن الحصين ص٥٥)

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْٓ اَسْئَلُکَ مِنْ فَضْلِکَ

तर्जमा : *ऐ* *अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ *मैं तुझ से तेरे फ़ज़्ल का सुवाल करता हूं ।*

(الحصن الحصين ص٥٤)

﴾14﴿ मजलिस के इख़्तिताम पर पढ़ने वाली दुआ

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰه تعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : जो येह दुआ किसी मजलिस से उठते वक़्त तीन मरतबा पढ़े तो उस की ख़ताएं मिटा दी जाती हैं और जो मजलिसे ख़ैर व मजलिसे ज़िक्र में पढ़े तो उस के लिये ख़ैर (या'नी भलाई) पर मोहर लगा दी जाएगी । वोह दुआ येह है :

سُبْحٰنَکَ اللّٰهُمَّ وَ بِحَمْدِکَ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ اَسْتَغْفِرُکَ وَ اَتُوْبُ اِلَيْکَ

तर्जमा : *तेरी ज़ात पाक है और ऐ* *अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ *! तेरे ही लिये तमाम ख़ूबियां हैं, तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, तुझ से बख़्शिश चाहता हूं और तेरी तरफ़ तौबा करता हूं ।* (سنن ابی داود ج٤ص٣٤٧حديث٤٨٥٧)

﴾15﴿ बाज़ार में दाख़िल होते वक़्त की दुआ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْکَ لَهٗ لَهُ الْمُلْکُ وَ لَهُ الْحَمْدُ يُحْيِيْ وَ يُمِيْتُ وَ هُوَ حَيٌّ لَّا يَمُوْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

www.dawateislami.net

*तर्जमा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं उसी के लिये बादशाही और उसी के लिये हम्द है वोही ज़िन्दा करता और मारता है और वोह ज़िन्दा है जिसे मौत नहीं, तमाम भलाइयां उसी के दस्ते क़ुदरत में हैं और वोह हर शै पर क़ादिर है।* (سنن الترمذی ج٥ ص٢٧١ حدیث ٣٤٣٩)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस (दुआ़ के पढ़ने वाले) के लिये दस लाख नेकियां लिखता है और उस के दस लाख गुनाह मिटाता है और उस के दस लाख दरजे बुलन्द करता है और उस के लिये जन्नत में घर बनाता है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 4 स. 39)

﴾16﴿ बाज़ार में नुक़्सान न हो बल्कि फ़ाएदा हो

बाज़ार जाएं तो येह दुआ़ पढ़ें :

بِسۡمِ اللّٰہِ اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡۤ اَسۡئَلُکَ خَیۡرَ ھٰذِہِ السُّوۡقِ وَ خَیۡرَ مَا فِیۡھَا
وَ اَعُوۡذُ بِکَ مِنۡ شَرِّھَا وَ شَرِّ مَا فِیۡھَا اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡۤ اَعُوۡذُ بِکَ اَنۡ
اُصِیۡبَ فِیۡھَا یَمِیۡنًا فَاجِرَۃً اَوۡ صَفۡقَۃً خَاسِرَۃً

*तर्जमा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ! मैं तुझ से इस बाज़ार और जो कुछ इस में है इस की भलाई का सुवाल करता हूं और इस बाज़ार और जो कुछ इस में हैं इस के शर से तेरी पनाह मांगता हूं, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ! मैं तुझ से पनाह मांगता हूं इस बात से कि मैं झूटी **क़सम** का मुर्तकिब होऊं या मैं ख़सारे वाला सौदा करूं।*

(المستدرك للحاكم ج٢ ص٢٣٢ حديث ٢٠٢١)

इस दुआ़ की ब-रकत से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बाज़ार में ख़ूब नफ़्अ़ होगा और कोई घाटा नहीं होगा इस दुआ़ को हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने पढ़ा है। (जन्नती ज़ेवर, स. 570)

www.dawateislami.net

﴾17﴿ खाने से पहले की दुआ़

بِسۡمِ اللّٰہِ وَ بِاللّٰہِ الَّذِیۡ لَا یَضُرُّ مَعَ اسۡمِہٖ شَیۡءٌ فِی الۡاَرۡضِ وَ لَا فِی السَّمَآءِ یَا حَیُّ یَا قَیُّوۡمُ

तर्जमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से शुरूअ़ करता हूं जिस के नाम की ब-रकत से ज़मीनो आसमान की कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहुंचा सकती, ऐ हमेशा ज़िन्दा व क़ाइम रहने वाले ।

(کنز العمال ج۱۵ ص۱۰۹ حدیث۴۰۷۹۲)

﴾18﴿ खाने के बा'द की दुआ़

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ الَّذِیۡۤ اَطۡعَمَنَا وَ سَقَانَا وَ جَعَلَنَا مُسۡلِمِیۡنَ

तर्जमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है जिस ने हमें खिलाया, पिलाया और हमें मुसलमान बनाया । (سنن ابی داود ج۳ ص۵۱۳ حدیث ۳۸۵۰)

﴾19﴿ किसी ने खिलाया हो तो येह दुआ़ भी पढ़िये

اَللّٰھُمَّ اَطۡعِمۡ مَنۡ اَطۡعَمَنِیۡ وَاسۡقِ مَنۡ سَقَانِیۡ

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तू उस को खिला जिस ने मुझे खिलाया और उस को पिला जिस ने मुझे पिलाया ।(صحیح مسلم ص۱۳٦ حدیث ۲۰۵۵)

﴾20﴿ आईना देखते वक़्त की दुआ़

اَللّٰھُمَّ اَنۡتَ حَسَّنۡتَ خَلۡقِیۡ فَحَسِّنۡ خُلُقِیۡ

तर्जमा : या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तूने मेरी सूरत तो अच्छी बनाई है मेरे अख़्लाक़ भी अच्छे कर दे । (الحصن الحصین ص۱۰۲)

www.dawateislami.net

﴾21﴿ छींक आने पर दुआ

اَلْحَمْدُ لِلّٰه

तर्जमा : तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** तआ़ला के लिये हैं।

(الحصن الحصين ص١٠٣)

﴾22﴿ छींक आने पर "اَلْحَمْدُ لِلّٰه" कहने वाले के लिये दुआ

يَرْحَمُکَ اللّٰه

तर्जमा : **अल्लाह** तआ़ला तुझ पर रह़्म फ़रमाए। (الحصن الحصين ص١٠٣)

﴾23﴿ छींक का जवाब देने वाले के लिये दुआ

﴾1﴿ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَنَا وَ لَكُم

तर्जमा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारी और तुम्हारी मग़फ़िरत फ़रमाए।

(الحصن الحصين ص١٠٣)

﴾2﴿ يَهْدِيْكُمُ اللّٰهُ وَ يُصْلِحُ بَالَكُم

तर्जमा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें हिदायत दे और तुम्हारी इस्लाह़ फ़रमाए। (الحصن الحصين ص١٠٣)

﴾24﴿ अदाए क़र्ज़ की दुआ

اَللّٰهُمَّ اكْفِنِيْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَاَغْنِنِيْ بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे ह़लाल रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमा कर ह़राम से बचा और अपने फ़ज़्लो करम से अपने सिवा ग़ैरों से बे नियाज़ कर दे। (المستدرك للحاكم ج٢ ص٢٣٠ حديث ٢٠١٦)

www.dawateislami.net

येह दुआ़ तीर ब ह़दफ़ नुस्ख़ा है अगर हर मुसलमान हमेशा ही येह दुआ़ हर नमाज़ के बा'द ज़रूर एक बार पढ़ लिया करे اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ क़र्ज़ व ज़ुल्म से मह़फ़ूज़ रहेगा।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 4, स. 51)

﴾25﴿ ग़ीबत से बचने की दुआ़

जब किसी मजलिस में (या'नी लोगों में) बैठो तो कहो :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ

तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमा देगा जो तुम को ग़ीबत से बाज़ रखेगा और जब मजलिस से उठो तो कहो :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ

तो वोह फ़िरिश्ता लोगों को तुम्हारी ग़ीबत करने से बाज़ रखेगा।

(القول البدیع ص۲۷۸)

﴾26﴿ दूध पीने के बा'द की दुआ़

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْهِ وَ زِدْنَا مِنْهُ

तर्जमा : *या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारे लिये इस (दूध) में ब-रकत दे और हमें इस से ज़ियादा इनायत फ़रमा।*

(سنن ابی داود ج۳ ص۴۷۶ حدیث ۳۷۳۰)

﴾27﴿ सुवारी पर सुवार होते वक़्त की दुआ़

بِسْمِ اللّٰه

तर्जमा : ***अल्लाह*** *के नाम से (सुवार होता हूं)* (الحصن الحصین ص۸۰)

www.dawateislami.net

﴾28﴿ सुवारी पर इत़मीनान से बैठ जाने पर दुआ़

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ سُبْحٰنَ الَّذِیْ سَخَّرَلَنَا هٰذَا وَ
مَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِيْنَ وَاِنَّآ اِلٰی رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ

तर्जमा : सब ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को, पाकी है उसे जिस ने इस सुवारी को हमारे बस में कर दिया और येह हमारे बूते (त़ाक़त) की न थी और बेशक हमें अपने रब की त़रफ़ पलटना है।

(سنن ابی داود ج٣ ص٤٩ حدیث ٢٦٠٢)

﴾29﴿ घर में दाख़िल होते वक़्त की दुआ़

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَسْئَلُكَ خَيْرَ الْمَوْلَجِ وَ خَيْرَ الْمَخْرَجِ بِسْمِ
اللّٰهِ وَلَجْنَا وَ بِسْمِ اللّٰهِ خَرَجْنَا وَعَلَى اللّٰهِ رَبِّنَا تَوَكَّلْنَا

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** ! मैं तुझ से दाख़िल होने और बाहर जाने की भलाई त़लब करता हूं। **अल्लाह** के नाम से हम अन्दर आए और **अल्लाह** के नाम से हम बाहर निकले और हम ने अपने रब **अल्लाह** पर भरोसा किया। (سنن ابی داود ج٤ ص٤٢١ حدیث ٥٠٩٦)

﴾30﴿ घर से निकलते वक़्त की दुआ़

بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ لَا حَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

तर्जमा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से, मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा किया, गुनाह से बचने की क़ुव्वत और नेकी करने की त़ाक़त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही की त़रफ़ से है। (سنن ابی داود ج٤ ص٤٢٠ حدیث ٥٠٩٥)

﴾31﴿ सोते वक़्त की दुआ़

اَللّٰهُمَّ بِاسْمِكَ اَمُوْتُ وَ اَحْيَا

www.dawateislami.net

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ! मैं तेरे नाम के साथ ही मरता और जीता हूं (या'नी सोता और जागता हूं) । (صحیح البخاری ج٤ ص١٩٣ حدیث٦٣١٤)

﴾32﴿ नींद से बेदार होने के बा'द की दुआ़

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْۤ اَحْیَانَا بَعْدَ مَاۤ اَمَاتَنَا وَ اِلَیْهِ النُّشُوْرُ

तर्जमा : तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस ने हमें मौत (नींद) के बा'द ह़यात (बेदारी) अ़त़ा फ़रमाई और हमें उसी की त़रफ़ लौटना है । (صحیح البخاری ج٤ ص١٩٣ حدیث٦٣١٤)

﴾33﴿ जल जाने पर पढ़ने की दुआ़

اَذْهِبِ الْبَأْسَ رَبَّ النَّاسِ اِشْفِ اَنْتَ الشَّافِیُ لَا شَافِیَ اِلَّاۤ اَنْتَ

तर्जमा : ऐ तमाम लोगों के रब عَزَّوَجَلَّ ! तकलीफ़ दूर फ़रमा, शिफ़ा दे तू ही शिफ़ा देने वाला है तेरे सिवा कोई शिफ़ा देने वाला नहीं ।

(سنن الکبری للنسائی ج٦ ص٢٥٤ حدیث١٠٨٦٤)

﴾34﴿ सांप, बिच्छू वग़ैरा मूज़ियात से पनाह की दुआ़

सुब्ह़ व शाम तीन तीन बार येह पढ़िये :

اَعُوْذُ بِکَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّآمَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ

तर्जमा : मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पूरे और कामिल कलिमात के साथ मख़्लूक़ के शर से पनाह लेता हूं ।

(سنن الترمذی ج٥ ص٣٤٦ حدیث٣٦١٦، المعجم الاوسط ج١ ص١٦١ حدیث٥٢٣)

(आधी रात ढले से सूरज की किरन चमकने तक सुब्ह़ है, इस बीच में जिस वक़्त इस दुआ़ को पढ़ लेंगे सुब्ह़ में पढ़ना होगा, यूं ही दोपहर ढलने से ग़ुरूबे आफ़ताब तक शाम है ।) (अल वज़ीफ़तुल करीमा, स.12)

www.dawateislami.net

﴾35﴿ सख़्त ख़त़रे के वक़्त की दुआ

اَللّٰھُمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِنَا وَ اٰمِنْ رَوْعَاتِنَا

तर्जमा : *या इलाही عَزَّوَجَلَّ! हमारी पर्दा दारी फ़रमा और हमारी घबराहट को बे ख़ौफ़ी व इत़्मीनान से बदल दे।*

(مسند امام احمد بن حنبل ج٤ ص٨حديث١٠٩٩٦)

﴾36﴿ इयादत करते वक़्त की दुआ

﴾1﴿ لَا بَأْسَ طَھُوْرٌ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ

तर्जमा : *कोई ह़रज की बात नहीं اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ येह मरज़ गुनाहों से पाक करने वाला है।* (صحيح البخارى ج٢ ص٥٠٥ حديث٣٦١٦)

﴾2﴿ اَسْئَلُ اللّٰهَ الْعَظِيْمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ اَنْ يَّشْفِيَكَ

तर्जमा : *मैं अ़-ज़मत वाले **अल्लाह** से सुवाल करता हूं जो अ़र्शे अ़ज़ीम का मालिक है कि वोह तुझे शिफ़ा दे।*

(سنن ابى داود ج٣ ص٢٥١ حديث٣١٠٦)

﴾37﴿ वुस्अ़ते रिज़्क़

"يَا مُسَبِّبَ الْاَسْبَابِ" पांच सो बार अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ 11-11 बार, बा'द नमाज़े इशा क़िब्ला रू बा वुज़ू नंगे सर ऐसी जगह कि सर और आसमान के दरमियान कोई चीज़ ह़ाइल न हो, यहां तक कि सर पर टोपी भी न हो, पढ़ा करें।

(म-दनी पंज सूरह, स. 231)

﴾38﴿ बालिग़ मर्द व औ़रत के जनाज़े की दुआ

اَللّٰھُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَ مَيِّتِنَا وَ شَاهِدِنَا وَ غَآئِبِنَا وَ صَغِيْرِنَا وَ كَبِيْرِنَا وَ

www.dawateislami.net

ذَكَرِنَا وَ اُنْثَانَا ط اَللّٰهُمَّ مَنْ اَحْيَيْتَهٗ مِنَّا فَاَحْيِهٖ عَلَى الْاِسْلَامِ وَ مَنْ تَوَفَّيْتَهٗ مِنَّا فَتَوَفَّهٗ عَلَى الْاِيْمَانِ

तर्जमा : इलाही ! बख़्श दे हमारे हर ज़िन्दा को और हमारे हर फ़ौत शुदा को और हमारे हर ह़ाज़िर को और हमारे हर ग़ाइब को और हमारे हर छोटे को और हमारे हर बड़े को और हमारे हर मर्द को और हमारी हर औ़रत को। इलाही ! तू हम में से जिस को ज़िन्दा रखे तो उस को इस्लाम पर ज़िन्दा रख और हम में से जिस को मौत दे तो उस को ईमान पर मौत दे। (سنن الترمذی ج۲ ص۳۱٤ حدیث۱۰۲٦)

﴾39﴿ ना बालिग़ लड़के के जनाज़े की दुआ़

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا فَرَطًا وَّ اجْعَلْهُ لَنَآ اَجْرًا وَّ ذُخْرًا وَّ اجْعَلْهُ لَنَا شَافِعًا وَّ مُشَفَّعًا

तर्जमा : इलाही عَزَّوَجَلَّ ! इस (लड़के) को हमारे लिये आगे पहुंच कर सामान करने वाला बना दे और इस को हमारे लिये अज्र (का मूजिब) और वक़्त पर काम आने वाला बना दे और इस को हमारी सिफ़ारिश करने वाला बना दे और वोह जिस की सिफ़ारिश मन्ज़ूर हो जाए।

(فتاوی عالمگیری ج۱ ص۱٦٤)

﴾40﴿ ना बालिग़ लड़की के जनाज़े की दुआ़

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا لَنَا فَرَطًا وَّ اجْعَلْهَا لَنَآ اَجْرًا وَّ ذُخْرًا وَّ اجْعَلْهَا لَنَا شَافِعَةً وَّ مُشَفَّعَةً

तर्जमा : इलाही عَزَّوَجَلَّ ! इस (लड़की) को हमारे लिये आगे पहुंच कर सामान करने वाली बना दे और इस को हमारे लिये अज्र (की मूजिब) और वक़्त पर काम आने वाली बना दे और इस को हमारे लिये

www.dawateislami.net

सिफ़ारिश करने वाली बना दे और वोह जिस की सिफ़ारिश मन्ज़ूर हो जाए। (فتاویٰ عالمگیری ج١ ص١٦٤ ماخوذاً)

﴾41﴿ ईमाने मुफ़स्सल

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ وَ مَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْقَدْرِ خَيْرِهٖ وَشَرِّهٖ مِنَ اللّٰهِ تَعَالٰى وَالْبَعْثِ بَعْدَ الْمَوْتِ

तर्जमा : मैं ईमान लाया **अल्लाह** पर और उस के फ़िरिश्तों पर और उस की किताबों पर और उस के रसूलों पर और क़ियामत के दिन पर और इस पर कि अच्छी और बुरी तक़्दीर **अल्लाह** की त़रफ़ से है और मौत के बा'द उठाए जाने पर।

﴾42﴿ ईमाने मुजमल

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ كَمَا هُوَ بِاَسْمَآئِهٖ وَ صِفَاتِهٖ وَ قَبِلْتُ جَمِيْعَ اَحْكَامِهٖ اِقْرَارٌ بِاللِّسَانِ وَ تَصْدِيْقٌ بِالْقَلْبِ

तर्जमा : मैं ईमान लाया **अल्लाह** पर जैसा कि वोह अपने नामों और अपनी सिफ़तों के साथ है और मैं ने उस के तमाम अह़काम क़बूल किये ज़बान से इक़रार करते हुए और दिल से तसदीक़ करते हुए।

छ 6 कलिमे

﴾43﴿ अव्वल कलिमा त़य्यिब

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

तर्जमा : **अल्लाह** के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) **अल्लाह** के रसूल हैं।

www.dawateislami.net

﴾44﴿ दूसरा कलिमा शहादत

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ

وَ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ

तर्जमा : मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं और मैं गवाही देता हूं कि बेशक मुहम्मद (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) **अल्लाह** के बन्दे और रसूल हैं।

﴾45﴿ तीसरा कलिमा तमजीद

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ اللّٰهُ اَكْبَرُ

وَ لَا حَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

तर्जमा : अल्लाह पाक है और सब ख़ूबियां **अल्लाह** के लिये हैं और **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं और **अल्लाह** सब से बड़ा है, गुनाहों से बचने की त़ाक़त और नेकी करने की तौफ़ीक़ नहीं मगर **अल्लाह** की त़रफ़ से जो सब से बुलन्द अ़-ज़मत वाला है।

﴾46﴿ चौथा कलिमा तौह़ीद

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَ لَهُ الْحَمْدُ

يُحْيِيْ وَ يُمِيْتُ وَ هُوَ حَيٌّ لَّا يَمُوْتُ اَبَدًا اَبَدًا ط ذُو الْجَلَالِ

وَ الْاِكْرَامِ ط بِيَدِهِ الْخَيْرُ ط وَ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ؕ

तर्जमा : अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं उसी के लिये है बादशाही और उसी के लिये ह़म्द है वोही ज़िन्दा करता और मारता है और वोह ज़िन्दा है उस को हरगिज़ कभी मौत नहीं आएगी। बड़े जलाल और बुज़ुर्गी वाला है। उस के हाथ में भलाई है और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है।

www.dawateislami.net

﴾47﴿ पांचवां कलिमा इस्तिग़्फ़ार

اَسۡتَغۡفِرُ اللّٰهَ رَبِّیۡ مِنۡ کُلِّ ذَنۡبٍ اَذۡنَبۡتُهٗ عَمَدًا اَوۡ خَطَاً سِرًّا اَوۡ عَلَانِيَةً وَّ اَتُوۡبُ اِلَيۡهِ مِنَ الذَّنۡبِ الَّذِیۡۤ اَعۡلَمُ وَ مِنَ الذَّنۡبِ الَّذِیۡ لَاۤ اَعۡلَمُ اِنَّکَ اَنۡتَ عَلَّامُ الۡغُيُوۡبِ وَ سَتَّارُ الۡعُيُوۡبِ وَغَفَّارُ الذُّنُوۡبِ وَ لَا حَوۡلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الۡعَلِیِّ الۡعَظِيۡمِ ط

तर्जमा : मैं **अल्लाह** से मुआ़फ़ी मांगता हूं जो मेरा परवर दगार है हर गुनाह से जो मैं ने जान बुझ कर किया या भूल कर, छूप कर किया या ज़ाहिर हो कर और मैं उस की बारगाह में तौबा करता हूं उस गुनाह से जिस को मैं जानता हूं और उस गुनाह से भी जिस को मैं नहीं जानता, (ऐ **अल्लाह** !) बेशक तू ग़ैबों का जानने वाला और ऐ़बों का छुपाने वाला और गुनाहों का बख़्शने वाला है और गुनाह से बचने की त़ाक़त और नेकी करने की क़ुव्वत नहीं मगर **अल्लाह** की मदद से जो सब से बुलन्द अ़-ज़मत वाला है ।

﴾48﴿ छटा कलिमा रद्दे कुफ़्र

اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡۤ اَعُوۡذُ بِکَ مِنۡ اَنۡ اُشۡرِکَ بِکَ شَيۡئًا وَّ اَنَا اَعۡلَمُ بِهٖ وَ اَسۡتَغۡفِرُکَ لِمَا لَاۤ اَعۡلَمُ بِهٖ تُبۡتُ عَنۡهُ وَ تَبَرَّاۡتُ مِنَ الۡکُفۡرِ وَالشِّرۡکِ وَالۡکِذۡبِ وَالۡغِيۡبَةِ وَالۡبِدۡعَةِ وَ النَّمِيۡمَةِ وَ الۡفَوَاحِشِ وَ الۡبُهۡتَانِ وَ الۡمَعَاصِیۡ کُلِّهَا وَ اَسۡلَمۡتُ وَ اَقُوۡلُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰهِ ط

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** ! मैं तेरी पनाह मांगता हूं इस बात से कि मैं किसी शै को तेरा शरीक बनाऊं जान बूझ कर और बख़्शिश मांगता हूं तुझ से उस (शिर्क) की जिस को मैं नहीं जानता और मैं ने उस से तौबा की और मैं बेज़ार हुवा कुफ़्र से और शिर्क से और झूट से और ग़ीबत से और बिदअ़त से और चुग़ली से और बे ह़याइयों से और बोहतान से और तमाम गुनाहों से और मैं इस्लाम लाया और मैं कहता हूं **अल्लाह** के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं मुह़म्मद صَلَّى اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** के रसूल हैं ।

कफ़्न पर लिखने की दुआएं

जो येह दुआ मय्यित के कफ़न पर लिखे **अल्लाह** तआ़ला क़ियामत तक उस से **अ़ज़ाब** उठा ले । वोह दुआ येह है :

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْۤ اَسْأَلُکَ یَا عَالِمَ السِّرِّ یَا عَظِیْمَ الْخَطَرِ یَاخَالِقَ الْبَشَرِ یَا مُوْقِعَ

الظَّفَرِ یَا مَعْرُوْفَ الْاَ ثَرِ یَاذَا الطَّوْلِ وَ الْمَنِّ یَاکَاشِفَ الضُّرِّ وَ الْمِحَنِ یَا اِلٰـہَ

الْاَوَّلِیْنَ وَالْاٰخِرِیْنَ فَرِّجْ عَنِّیْ ھُمُوْمِیْ وَاکْشِفْ عَنِّیْ غُمُوْمِیْ

وَصَلِّ اَللّٰھُمَّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ سَلِّمْ

जो येह दुआ किसी पर्चे पर लिख कर सीने पर कफ़न के नीचे रख दे उसे **अ़ज़ाबे क़ब्र** न हो न मुन्कर नकीर नज़र आएं और वोह दुआ येह है :

لَآ اِلٰـہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ لَآ اِلٰـہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَاشَرِیْکَ لَہٗ لَآ اِلٰـہَ اِلَّا اللّٰہُ

لَہُ الْمُلْکُ وَلَہُ الْحَمْدُ لَآ اِلٰـہَ اِلَّا اللّٰہُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْمِ

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 9, स.108 -110)

म-दनी फूल : बेहतर येह है कि येह पर्चा (बल्कि अ़हद नामा और श-जरा वग़ैरा) मय्यित के मुंह के सामने क़िब्ला की जानिब (क़ब्र की अन्दरूनी दीवार में) त़ाक़ खोद कर उस में रखें ।

(बहारे शरीअ़त, जि.1, हिस्सा. 4, स. 848)(**म-दनी** पंज सूरह, स. 223)

www.dawateislami.net

सुन्नतें और आदाब

सलाम करने की सुन्नतें और आदाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

सलाम करना **हमारे प्यारे आक़ा, ताजदारे मदीना** صَلَّى اللّٰه تعالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बहुत ही प्यारी सुन्नत है। बद क़िस्मती से आज कल येह **सुन्नत** भी ख़त्म होती नज़र आ रही है। इस्लामी भाई जब आपस में मिलते हैं तो اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ से इब्तिदा करने के बजाए "आदाब अ़र्ज़", "क्या ह़ाल है?", "मिज़ाज शरीफ़", "सुब्ह़ बख़ैर", "शाम बख़ैर" वग़ैरा वग़ैरा अ़जीबो ग़रीब कलिमात से इब्तिदा करते हैं, येह **ख़िलाफ़े सुन्नत** है। रुख़्सत होते वक़्त भी "ख़ुदा ह़ाफ़िज़", "गुड बाय", "टाटा" वग़ैरा कहने के बजाए सलाम करना चाहिये। हां रुख़्सत होते हुए اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ के बा'द अगर ख़ुदा ह़ाफ़िज़ कह दें तो ह़रज नहीं। **सलाम** की चन्द सुन्नतें और आदाब मुलाह़ज़ा हों :

★ सलाम के बेहतरीन अलफ़ाज़ येह हैं :

"اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَکَاتُهٗ *या'नी तुम पर सलामती हो और* **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ *की त़रफ़ से रह़मतें और ब-रकतें नाज़िल हों।"*

(माख़ूज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 409)

★ सलाम करने वाले को इस से बेहतर जवाब देना चाहिये।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

www.dawateislami.net

وَاِذَا حُيِّيْتُمْ بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوْا بِاَحْسَنَ مِنْهَآ اَوْ رُدُّوْهَا ط (پ۵، النسا:۸٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जब तुम्हें कोई किसी लफ़्ज़ से सलाम करे तो तुम उस से बेहतर लफ़्ज़ जवाब में कहो या वोही कह दो।

★ सलाम के जवाब के बेहतरीन अलफ़ाज़ येह हैं :

"وَعَلَيْكُمُ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُه" *या'नी और तुम पर भी सलामती हो और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से रह़मतें और ब-रकतें नाज़िल हों।"*

(माख़ूज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 409)

★ सलाम करना ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام की भी सुन्नत है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 313) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरह رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूर सय्यिदे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को पैदा फ़रमाया तो उन्हें हुक्म दिया कि जाओ और फ़िरिश्तों की उस बैठी हुई जमाअ़त को सलाम करो। और ग़ौर से सुनो कि वोह तुम्हें क्या जवाब देते हैं। क्यूंकि वोही तुम्हारा और तुम्हारी अवलाद का सलाम है। ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़िरिश्तों से कहा : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ तो उन्हों ने जवाब दिया, "اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ" और उन्हों ने "وَرَحْمَةُ اللّٰهِ" के अलफ़ाज़ ज़ाइद कहे।"

(صحیح البخاری، کتاب الاستئذان، باب بدء السلام، الحدیث ٦٢٢٧، ج ۴، ص ۱٦۴)

★ आ़म तौ़र पर मा'रूफ़ येही है कि "اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ" ही सलाम है। मगर सलाम के दूसरे भी बा'ज़ सीगे़ हैं। म-षलन कोई आ कर सिर्फ़ कहे "**सलाम**" तो भी सलाम हो जाता है और "**सलाम**" के जवाब में "**सलाम**" कह दिया, या "اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ" ही कह दिया, या सिर्फ़ "وَعَلَیْکُمْ" कह दिया तो भी जवाब हो गया। (माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, जिल्द सिवुम, हिस्सा : 16, स. 460)

★ **सलाम करने से आपस में मह़ब्बत पैदा होती है।** ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरह رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तुम जन्नत में दाख़िल नहीं होगे जब तक तुम ईमान न लाओ और तुम मोमिन नहीं हो सकते जब तक कि तुम एक दूसरे से मह़ब्बत न करो। क्या मैं तुम को एक ऐसी चीज़ न बताऊं जिस पर तुम अ़मल करो तो एक दूसरे से मह़ब्बत करने लगो। अपने दरमियान सलाम को आ़म करो।"

(سنن ابی داود،کتاب الادب،باب فی افشاء السلام،الحدیث۵۱۹۳،ج۴،ص۴۴۸)

★ **हर मुसलमान को सलाम करना चाहिये ख़्वाह हम उसे जानते हों या न जानते हों।** ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि एक आदमी ने हुज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया, इस्लाम की कौन सी चीज़ सब से बेहतर है? तो आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह कि तुम खाना खिलाओ (मिस्कीनों को) और सलाम कहो हर शख़्स को ख़्वाह तुम उस को जानते हो या नहीं।

(صحیح البخاری،کتاب الاستئذان،باب السلام للمعرفۃ وغیر المعرفۃ،الحدیث۶۲۳۶،ج۴،ص۱۶۸)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हो सके तो जब **बस** में सुवार हों, किसी **अस्पताल** में जाना पड़ जाए, किसी **होटल** में दाख़िल हों, जहां लोग फ़ारिग़ बैठे हों, जहां जहां मुसलमान इकठ्ठे हों, सलाम कर दिया करें । येह दो अलफ़ाज़ ज़बान पर बहुत ही हल्के हैं मगर इन के फ़वाइदो ष-मरात बहुत ही ज़ियादा हैं ।

★ **बात चीत शुरूअ़ करने से पहले ही सलाम करने की आ़दत बनानी चाहिये । नबिय्ये करीम** صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "اَلسَّلَامُ قَبْلَ الْكَلَامِ" या'नी सलाम बात चीत से पहले है ।"

(جامع الترمذی، کتاب الاستئذان...الخ، باب ماجاء فی السلام...الخ، ج۴،ص۳۲۱)

★ **छोटा बड़े को, चलने वाला बैठे हुए को, थोड़े ज़ियादा को और सुवार पैदल को सलाम करने में पहल करें** । सरकारे मदीना صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है, सुवार पैदल को सलाम करे, चलने वाला बैठे हुए को, और थोड़े लोग ज़ियादा को और छोटा बड़े को सलाम करे ।

(صحیح مسلم، کتاب السلام، باب یسلم الراکب علی الماشی والقلیل علی الکثیر، الحدیث۲۱۶۰،ص۱۱۹۱)

★ **पीछे से आने वाला आगे वाले को सलाम करे** ।

(الفتاوی الھندیہ، کتاب الکراھیۃ، باب السابع فی السلام وتشمیت العاطس، ج۵،ص۳۲۵)

★ **जब कोई किसी का सलाम लाए तो इस त़रह़ जवाब दें** "عَلَيْكَ وَعَلَيْهِ السَّلَام" या'नी "तुझ पर भी और उस पर भी सलाम हो ।"

ह़ज़रते ग़ालिब رَضِیَ اللہُ تعالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि हम ह़सन बसरी

www.dawateislami.net

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दरवाज़े पर बैठे हुए थे, एक आदमी ने बताया कि मेरे वालिदे माजिद ने मुझे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पास भेजा और फ़रमाया, आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को मेरा सलाम अ़र्ज़ कर। उस ने कहा, मैं आप (صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) की ख़िदमते बा ब-रकत में ह़ाज़िर हो गया और मैं ने अ़र्ज़ की, सरकार ! صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे वालिद साह़िब आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को सलाम अ़र्ज़ करते हैं। हु़ज़ूर सय्यिदे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "عَلَیْکَ وَعَلٰی اَبِیْکَ السَّلَام या'नी तुझ पर और तेरे बाप पर सलाम हो।"

(سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی الرجل یقول فلان یقرئک السلام، الحدیث ۵۲۳۱، ج۴، ص ۴۵۸)

★ सलाम में पहल करने वाला अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का मुक़र्रब है।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा अल बाहिली सुदय बिन इ़जलान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हु़ज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "लोगों में अल्लाह तआ़ला के ज़ियादा क़रीब वोही शख़्स है जो उन्हें पहले सलाम करे।"

(المرجع السابق،باب فی فضل من بدء بالسلام،الحدیث ٥١٩٧، ج٤،ص ٤٤٩)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, अ़र्ज़ किया गया, या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! दो आदमी आपस में मिलें तो कौन पहले सलाम करे ? फ़रमाया : "जो उन में अल्लाह तआ़ला के ज़ियादा क़रीब हो।"

(جامع الترمذی، کتاب الاستئذان، باب فضل الذی یبدء بالسلام، الحدیث ۲۸۰۳، ج۴، ص ۳۱۸)

www.dawateislami.net

★ ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ बेटे ! जब तुम अपने घर में दाख़िल हो तो सलाम कहो, येह तुम्हारे लिये और तुम्हारे घर वालों के लिये ब-रकत का बाइ़स होगा।"

(جامع الترمذی،کتاب الاستئذان والادب،باب ماجآء فی التسلیم اذا دخل بیتہ،الحدیث ۲۷۰۷،ج ۴،ص ۳۲۰)

घर में जब दाख़िल हों उस वक़्त भी सलाम करें और जब रुख़्सत होने लगें, उस वक़्त भी सलाम करें। ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस वक़्त तुम घर में दाख़िल हो अपने घर के लोगों को सलाम कहो। जब अपने घर वालों से निकलो तो सलाम के साथ रुख़्सत हो।"

(مشکٰوۃ المصابیح،کتاب الادب،باب السلام،الفصل الثانی،الحدیث ۴۶۵۱،ج ۲،ص ۱۲۵)

★ **आज कल** अगर कोई किसी मह़फ़िल, इजतिमाअ़ या मजलिस वग़ैरा में आ कर सलाम कर भी देता है तो जाते हुए "मैं चलता हूं", "ख़ुदा ह़ाफ़िज़", "अच्छा", "बाय बाय", वग़ैरा कलिमात कहता है लिहाज़ा मजलिस के इख़्तिताम पर **इन सब अलफ़ाज़ के बजाए सलाम किया करें**। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से रिवायत करते हैं : "जिस वक़्त तुम में से कोई किसी मजलिस की त़रफ़ पहुंचे, सलाम कहे। अगर ज़रूरत मह़सूस करे, वहां बैठ जाए। फिर जब खड़ा हो सलाम कहे इस लिये कि पहला सलाम दूसरे से ज़ियादा बेहतर नहीं है।"

(جامع الترمذی،کتاب الاستئذان،باب ماجآء فی التسلیم عند القیام وعند القعود،الحدیث ۲۷۱۵،ج ۴،ص ۳۲۴)

www.dawateislami.net

★ **अगर कुछ लोग जम्अ़ हैं** एक ने आ कर اَلسَّلامُ عَلَيْكُم कहा। तो किसी एक का जवाब दे देना काफ़ी है। अगर एक ने भी न दिया तो सब गुनहगार होंगे। अगर सलाम करने वाले ने किसी एक का नाम ले कर सलाम किया या किसी को मुख़ात़ब कर के सलाम किया तो अब उसी को जवाब देना होगा। दूसरे का जवाब काफ़ी न होगा।

(माख़ूज़ बहारे शरीअ़त, सलाम का बयान, जिल्द सिवुम, हिस़्सा : 16, स. 460)

ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تعالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से रिवायत है "जब कोई शख़्स गुज़रते हुए सलाम कह दे और बैठने वालों में से एक शख़्स जवाब दे तो सब लोगों की त़रफ़ से किफ़ायत कर जाता है।" (سنن ابی داود، کتاب الادب، باب ماجآء فی ردواحد عن الجماعۃ، الحدیث۵۲۱۰، ج۴، ص۴۵۲)

★ اَلسَّلامُ عَلَيْكُم कहने से दस नेकियां, اَلسَّلامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ कहने से बीस नेकियां जब कि اَلسَّلامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ कहने से तीस नेकियां मिलती हैं। **चुनान्चे** ह़ज़रते सय्यिदुना इमरान बिन ह़ुसीन رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि एक आदमी हुज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा, और उस ने अ़र्ज़ किया : اَلسَّلامُ عَلَيْكُم आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : दस नेकियां लिखी गई हैं। फिर दूसरा ह़ाज़िर हुवा उस ने अ़र्ज़ किया : اَلسَّلامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ। आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

ने उस को जवाब दिया, वोह भी बैठ गया, आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बीस नेकियां लिखी गई हैं। फिर एक और आदमी हाज़िरे ख़िदमत हुवा, उस ने अ़र्ज़ किया : اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस को जवाब दिया और फ़रमाया, तीस नेकियां हैं। (سنن الترمذی، کتاب الاستئذان والادب، باب ماذکر فی فضل السلام، الحدیث ۲۶۹۸، ج۴، ص۳۱۵)

★ **जो सो रहे हों उन को सलाम न किया जाए बल्कि सिर्फ़ जागने वालों को सलाम करें** चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना मिक़्दाद رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم रात को तशरीफ़ लाते तो सलाम कहते। आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم सोने वालों को न जगाते और जो जाग रहे होते उन को आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم सलाम इर्शाद फ़रमाते। पस एक दिन हुज़ूर صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और इसी त़रह़ सलाम फ़रमाया जिस त़रह़ फ़रमाया करते थे।

(صحیح مسلم، کتاب الاشربۃ، باب اکرام الضیف وفضل ایثارہ، الحدیث ۲۰۵۵، ص۱۱۳۶)

जल्वए यार इधर भी कोई फेरा तेरा !

ह़सरतें आठ पहर तकती हैं रस्ता तेरा !

(ज़ौक़े ना'त)

★ **ज़बान से सलाम करने के बजाए सिर्फ़ उंगलियों या हथेली के इशारे से सलाम न किया जाए।**

(माख़ूज़ बहारे शरीअ़त, जिल्द सिवुम, ह़िस्सा : 16, स. 464)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन शुऐ़ब ब वासित़ा वालिद अपने दादा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत करते हैं, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "हमारे ग़ैर से मुशाबहत पैदा करने वाला हम में से नहीं, यहूदो नसारा के मुशाबेह न बनो, यहूदियों का सलाम उंगलियों के इशारे से है और ईसाइयों का सलाम हथेलियों के इशारे से।"

(جامع الترمذی،کتاب الاستئذان،باب ماجاء فی کراھیۃ اشارۃ الید بالسلام،الحدیث۲۷۰۴،ج۴،ص۳۱۹)

अगर किसी ने ज़बान से सलाम के अलफ़ाज़ कहे और साथ ही हाथ भी उठा दिया तो फिर मुज़ायक़ा नहीं।

(अह़कामे शरीअ़त, ह़िस्सए अव्वल, स. 72)

★ **ग़ैर मुस्लिम को सलाम न करें वोह अगर सलाम करे तो उस का जवाब वाजिब नहीं,** जवाब में फ़क़त "وَعَلَيۡكُم" कह दें। (الفتاوی الھندیہ،کتاب الکراھیۃ،الباب السابع فی السلام،ج۵،ص۳۲۵)

★ **सलाम करते वक़्त ह़द्दे रुकूअ़ तक झुक जाना** (या'नी इतना झुकना कि हाथ बढ़ाए तो घुटनों तक पहुंच जाएं) **ह़राम है अगर इस से कम झुके तो मकरूह।**

(माख़ूज़ बहारे शरीअ़त, जिल्द सिवुम, ह़िस्सा : 16, स. 464)

बद क़िस्मती से आज कल आ़म त़ौर पर सलाम करते वक़्त लोग झुक जाते हैं। अलबत्ता किसी बुज़ुर्ग के हाथ चूमने में ह़रज नहीं बल्कि षवाब है और येह बिग़ैर झुके मुमकिन नहीं यहां ज़रूरत है। जब कि सलाम के वक़्त झुकने की ह़ाजत नहीं।

www.dawateislami.net

★ **बुढ़िया का जवाब आवाज़ से दें और जवान औरत के सलाम का जवाब इतना आहिस्ता दें कि वोह न सुने।** अलबत्ता इतनी आवाज़ लाज़िमी है कि जवाब देने वाला ख़ुद सुन ले।

(माख़ूज़ बहारे शरीअ़त, जिल्द सिवुम, हिस्सा : 16, स. 461)

★ **जब दो इस्लामी भाई** मुलाक़ात करें तो सलाम करें और अगर दोनों के बीच में कोई सुतून, कोई दरख़्त या दीवार वग़ैरा दरमियान में ह़ाइल हो जाए फिर जैसे ही मिलें दोबारा सलाम करें। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब तुम में से कोई शख़्स अपने इस्लामी भाई को मिले तो उस को सलाम करे और अगर इन के दरमियान दरख़्त, दीवार या पथ्थर वग़ैरा ह़ाइल हो जाए और वोह फिर उस से मिले तो दोबारा उस को सलाम करे।"

(سنن ابی داوٗد، کتاب الادب، باب فی الرجل یفارق الرجل.....الخ، الحدیث ۵۲۰۰، ج۴، ص۴۵۰)

★ **ख़त़ में सलाम लिखा होता है उस का भी जवाब देना वाजिब है** इस की दो सूरतें हैं, एक तो येह कि ज़बान से जवाब दे और दूसरा येह कि सलाम का जवाब लिख कर भेज दे लेकिन चूंकि जवाबे सलाम फ़ौरन देना वाजिब है और ख़त़ का जवाब देने में कुछ न कुछ ताख़ीर हो ही जाती है लिहाज़ा फ़ौरन ज़बान से सलाम का जवाब दे दे। आ'ला ह़ज़रत قُدِّسَ سِرُّہٗ जब ख़त़ पढ़ा करते तो ख़त़ में जो "اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ" लिखा होता, उस का जवाब ज़बान से दे कर बा'द का मज़मून पढ़ते।

(माख़ूज़ बहारे शरीअ़त, जिल्द सिवुम, हिस्सा : 16, स. 463)

www.dawateislami.net

★ **अगर किसी ने आप को कहा, ''फ़ुलां को मेरा सलाम कहना''** तो आप ख़ुद उसी वक़्त जवाब न दे दें। आप का जवाब देना कोई मा'ना नहीं रखता बल्कि जिस के बारे में कहा है उस से कहें कि फ़ुलां ने आप को सलाम कहा है।

★ **अगर किसी ने आप से कहा कि फ़ुलां ने आप को सलाम कहा हैं।** अगर सलाम लाने वाला और भेजने वाला दोनों मर्द हों तो यूं कहें : عَلَیْکَ وَ عَلَیْہِ السَّلَام अगर दोनों औ़रतें हों तो कहें عَلَیْکِ وَ عَلَیْھَا السَّلَام अगर पहुंचाने वाला मर्द और भेजने वाली औ़रत हो عَلَیْکَ وَ عَلَیْھَا السَّلَام अगर पहुंचाने वाली औ़रत हो और भेजने वाला मर्द हो عَلَیْکِ وَ عَلَیْہِ السَّلَام (इन सब का तर्जमा येही है ''तुझ पर भी सलाम हो और उस पर भी'')

★ **जब आप मस्जिद में दाख़िल हों** और इस्लामी भाई तिलावते कुरआन, ज़िक्रो दुरूद में मश्ग़ूल हों या इन्तिज़ारे नमाज़ में बैठे हों उन को सलाम न करें। येह सलाम का मौक़अ़ नहीं और न उन पर जवाब वाजिब है।

(الفتاوی الہندیہ،کتاب الکراہیۃ،باب السابع فی السلام وتشمیت العاطس،ج۵،ص۳۲۵)

इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 23 सफ़ह़ा 399 पर लिखते हैं : ज़ाकिर पर सलाम करना मुत़्लक़न मन्अ़ है और अगर कोई करे तो ज़ाकिर को इख़्तियार है कि जवाब दे या न दे। हां अगर किसी के सलाम या जाइज़ कलाम का जवाब न देना उस की दिल शिकनी का मूजिब (या'नी सबब) हो

www.dawateislami.net

तो जवाब दे कि मुसलमान की दिलदारी वज़ीफ़े में बात न करने से अहम व आ'ज़म है।

★ **कोई इस्लामी भाई दर्सो तदरीस या इल्मी गुफ़्त्गू या सबक़ की तकरार में है** उस को सलाम न करें।

(बहारे शरीअ़त, सलाम का बयान, जिल्द सिवुम, हिस्सा : 16, स. 462)

★ **इजतिमाअ़ में बयान हो रहा है,** इस्लामी भाई बयान सुन रहे हैं आने वाला सलाम न करे।

★ **जो पेशाब, पाख़ाना कर रहा है,** या पेशाब करने के बा'द ढेला लिये जाए पेशाब सुखाने के लिये टहल रहा है, ग़ुस्ल ख़ाने में बरह्ना नहा रहा है, गाना गा रहा है, कबूतर उड़ा रहा है या खाना खा रहा है इन सब को सलाम न करें। (المرجع السابق،ص٤٦٢)

★ **जिन सूरतों में सलाम करना मन्अ़ है** अगर किसी ने कर भी दिया तो उन पर जवाब वाजिब नहीं। (المرجع السابق ملخصاً)

★ **खाना खाने वाले को सलाम कर दिया** तो मुंह में उस वक़्त लुक़्मा नहीं तो जवाब दे दे। (المرجع السابق، ص ٤٦١ ملخصاً)

★ **साइल (भिकारी) के सलाम का जवाब वाजिब नहीं** (जब कि भीक मांगने की ग़रज़ से आया हो)। (المرجع السابق،ص٤٦١)

★ **अकषर** जगह येह तरीक़ा है कि छोटा जब बड़े को सलाम करता है तो वोह जवाब में कहता है जीते रहो। येह सलाम का जवाब नहीं है। (المرجع السابق، ص٤٦٥)

www.dawateislami.net

" اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ " के ग्यारह हुरूफ़ की निस्बत से सलाम के 11 म-दनी फूल

★ पेशकर्दा हर हर म-दनी फूल को **सुन्नते रसूले** मक़्बूल على صاحِبِها الصَّلٰوةُ وَالسَّلام पर मह़्मूल न फ़रमाइये, इन में सुन्नतों के इ़लावा बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن से मन्क़ूल म-दनी फूल का भी शुमूल है। जब तक यक़ीनी तौर पर मा'लूम न हो किसी अ़मल को "**सुन्नते रसूल**" नहीं कह सकते।

﴾1﴿ मुसलमान से मुलाक़ात करते वक़्त उसे सलाम करना सुन्नत है।

﴾2﴿ **मक्तबतुल मदीना** की मत़्बूआ़ बहारे शरीअ़त जिल्द सिवुम, हिस्सा. 16, सफ़्ह़ा. 469 पर लिखे हुए जुज़्इये का ख़ुलासा है : "**सलाम** करते वक़्त दिल में येह निय्यत हो कि जिस को सलाम करने लगा हूं इस का माल और इ़ज़्ज़त व आबरू सब कुछ मेरी ह़िफ़ाज़त में है और मैं इन में से किसी चीज़ में दख़्ल अन्दाज़ी करना **ह़राम** जानता हूं।"

﴾3﴿ दिन में कितनी ही बार मुलाक़ात हो, एक कमरे से दूसरे कमरे में बार बार आना जाना हो वहां मौजूद मुसलमानों को **सलाम** करना कारे षवाब है।

﴾4﴿ **सलाम** में पहल करना **सुन्नत** है।

﴾5﴿ **सलाम** में पहल करने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मुक़र्रब है।

www.dawateislami.net

﴾6﴿ **सलाम** में पहल करने वाला **तकब्बुर** से भी बरी है। जैसा कि मेरे मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा सफ़ा है : पहले **सलाम** कहने वाला **तकब्बुर** से बरी है।

(شُعَبُ الایمان ج۶ ص ۴۳۳ حدیث:۸۷۸۶)

﴾7﴿ **सलाम** में पहल करने वाले पर 90 रह़मतें और जवाब देने वाले पर 10 रह़मतें नाज़िल होती हैं।

(جامع الصغیر للسیوطی، الحدیث:۴۸۷،ص۳۶)

﴾8﴿ اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ कहने से 10 नेकियां मिलती हैं। साथ में وَرَحْمَۃُ اللہ भी कहेंगे तो 20 नेकियां हो जाएंगी। और وَبَرَکَاتُہٗ शामिल करेंगे तो 30 नेकियां हो जाएंगी।

बा'ज़ लोग सलाम के साथ जन्नतुल मक़ाम और दोज़ख़ुल ह़राम के अलफ़ाज़ बढ़ा देते हैं येह ग़लत़ त़रीक़ा है। बल्कि मन चले तो مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ यहां तक बक जाते हैं : आप के बच्चे हमारे ग़ुलाम।

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 22 सफ़ह़ा 409 पर फ़रमाते हैं : कम अज़ कम اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ और इस से बेहतर وَرَحْمَۃُ اللہ मिलाना और सब से बेहतर وَبَرَکَاتُہٗ शामिल करना और इस पर ज़ियादत नहीं। **फिर सलाम करने वाले ने जितने अलफ़ाज़ में सलाम किया है जवाब में इतने का इआ़दा तो ज़रूर है** और अफ़ज़ल येह है कि जवाब में ज़ियादा कहे। उस ने

www.dawateislami.net

اَلسَّلامُ عَلَیْکُم कहा तो येह وَعَلَیْکُمُ السَّلام وَرَحْمَةُ الله कहे। और अगर उस ने اَلسَّلامُ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَةُ الله कहा तो येह وَعَلَیْکُمُ السَّلام وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَکَاتُهٗ कहे और अगर उस ने وَبَرَکَاتُهٗ तक कहा **तो येह भी इतना ही कहे कि इस से ज़ियादत नहीं।** واللّٰہ تعالٰی اَعلم

﴾9﴿ इसी त़रह़ जवाब में وَعَلَیْکُمُ السَّلام وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَکَاتُهٗ कह कर 30 नेकियां ह़ासिल की जा सकती हैं।

﴾10﴿ **सलाम** का जवाब फ़ौरन और इतनी आवाज़ से देना **वाजिब** है कि सलाम करने वाला सुन ले।

﴾11﴿ **सलाम** और जवाबे सलाम का दुरुस्त तलफ़्फ़ुज़ याद फ़रमा लीजिये। पहले मैं कहता हूं आप सुन कर दोहराइये।

اَلسَّلامُ عَلَیْکُمْ(اَس۔سَلام۔عَلَے۔کُمْ)

अब पहले मैं जवाब सुनाता हूं फिर आप इस को दोहराइये :

وَعَلَیْکُمُ السَّلام (وَ۔عَ۔لَیْکُ۔مُسْ۔سَلام)

सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** मे आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी हल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो पाओगे ब-र-कतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰهُ تعالٰی علٰی محمَّد

*ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें सलाम की ब-रकतों से मालामाल फ़रमा।* اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

★★★★★★

www.dawateislami.net

मुसाफ़ह़ा और मुआ़नक़ा की सुन्नतें और आदाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

जब दो इस्लामी भाई आपस में मिलें तो पहले सलाम करें और फिर दोनों हाथ मिलाएं कि ब वक़्ते मुलाक़ात मुसाफ़ह़ा करना सुन्नते सह़ाबा बल्कि सुन्नते रसूल صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم है ।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 355)

ह़ज़रते अबुल ख़त़्त़ाब क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से अ़र्ज़ किया, कि मुसाफ़ह़ा (हाथ मिलाना) ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में मुरव्वज था ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया, "हां ।" (صحیح البخاری،کتاب الاستیذان،باب المصافحۃ،الحدیث ۶۲۶۳،ج۴،ص۱۷۷)

★ **आपस में हाथ मिलाने से कीना ख़त्म होता है और एक दूसरे को तोह़फ़ा देने से मह़ब्बत बढ़ती और अ़दावत दूर होती है** जैसा कि ह़ज़रते अ़त़ा ख़ुरासानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "एक दूसरे के साथ मुसाफ़ह़ा करो, इस से कीना जाता रहता है और हदिय्या भेजो आपस में मह़ब्बत होगी और दुश्मनी जाती रहेगी ।"

(مشکاۃ المصابیح،ج۲،ص ۱۷۱،حدیث ٤٦٩٣)

★ **मुलाक़ात के वक़्त मुसाफ़ह़ा करने वालों के लिये दुआ़ की क़बूलिय्यत और हाथ जुदा होने से क़ब्ल ही मग़फ़िरत की बिशारत है ।** चुनान्चे ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि

सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब दो मुसलमानों ने मुलाक़ात की और एक दूसरे का हाथ पकड़ लिया (या'नी मुसाफ़ह़ा किया) तो **अल्लाह** तआ़ला के ज़िम्मए करम पर है कि उन की दुआ़ को ह़ाज़िर कर दे (या'नी क़बूल फ़रमा ले) और हाथ जुदा न होने पाएंगे कि इन की मग़्फ़िरत हो जाएगी। और जो लोग जम्अ़ हो कर **अल्लाह** तआ़ला का ज़िक्र करते हैं और सिवाए रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के उन का कोई मक़्सद नहीं तो आस्मान से मुनादी निदा देता है कि खड़े हो जाओ ! तुम्हारी मग़्फ़िरत हो गई, तुम्हारे गुनाहों को नेकियों से बदल दिया गया।"

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند انس بن مالک، الحدیث ۱۲۴۵۴، ج ۴، ص ۲۸۶)

★ इस्लामी भाइयों के आपस में मुसाफ़ह़ा करने की ब-रकत से दोनों के गुनाह बख़्श दिये जाते हैं।

ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मुसलमान जब अपने मुसलमान भाई से मिले और "हाथ पकड़े" (या'नी मुसाफ़ह़ा करे) तो उन दोनों के गुनाह ऐसे गिरते हैं जैसे तेज़ आंधी के दिन में ख़ुश्क दरख़्त के पत्ते। और उन के गुनाह बख़्श दिये जाते हैं अगर्चे समुन्दर की झाग के बराबर हों।"

(شعب الایمان، باب فی مقاربۃ وموادۃ اہل الدین، فصل فی المصافحۃ والمعانقۃ، الحدیث ۸۹۵۰، ج ۶، ص ۴۷۳)

★ सब से पहले यमनी इस्लामी भाइयों ने सरकारे पुर वक़ार صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **से मुसाफ़ह़ा करने** (हाथ मिलाने) **का शरफ़ ह़ासिल किया।** चुनान्चे ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि जब अहले यमन म-दनी सरकार صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-रकत में ह़ाज़िर हुए तो हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

ने फ़रमाया : "तुम्हारे पास अहले यमन आए हैं और वोह पहले आदमी हैं जिन्हों ने आ कर मुसाफ़हा किया।"

(شعب الایمان، الحدیث۸۹۴۴،ج۶،ص۴۷۱)

★ सलाम के साथ साथ मुसाफ़हा करने से सलाम की तकमील होती है। हज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُ से रिवायत है, सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "मरीज़ की पूरी इयादत येह है कि उस की पेशानी पर हाथ रख कर पूछे कि मिज़ाज कैसा है ? और पूरी तहिय्यत (सलाम करना) येह है कि मुसाफ़हा भी किया जाए।" (جامع الترمذی،الحدیث۲۷۴۰،ج۴،ص۳۳۴)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़न्दा पेशानी से मुलाक़ात करना हुस्ने अख़्लाक़ में से है, सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم फ़रमाते हैं, "लोगों को तुम अपने अमवाल से ख़ुश नहीं कर सकते लेकिन तुम्हारी ख़न्दा पेशानी और ख़ुश अख़्लाक़ी उन्हें ख़ुश कर सकती हैं।"

(شعب الایمان،الحدیث۸۰۵۴،ج۶،ص۲۵۳)

★ ख़ुशी में किसी से गले मिलना सुन्नत है।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 359)

हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : ज़ैद बिन हारिष رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُ मदीना आए और हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم मेरे घर में थे, ज़ैद رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُ वहां आए और दरवाज़ा खटखटाया। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم उठ कर कपड़ा खींचते हुए उन की त़रफ़ तशरीफ़ ले गए। उन से मुआनक़ा किया और उन को बोसा दिया। (جامع الترمذی،الحدیث۲۷۴۱،ج۴،ص۳۳۵)

www.dawateislami.net

सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को त़लब फ़रमाया, जब वोह ह़ाज़िर हुए तो सरकार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़र्ते शफ़्क़त से ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को गले लगा लिया। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब बिन बशीर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ एक साह़िब से रिवायत करते हैं उन्हों ने कहा, मैं ने अबू ज़र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से पूछा, जिस वक़्त तुम रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से मिलते थे क्या आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तुम्हारे साथ मुसाफ़ह़ा फ़रमाते थे ? उन्हों ने फ़रमाया : मैं कभी आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को नहीं मिला मगर आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे साथ मुसाफ़ह़ा करते (या'नी मैं ने जब भी मुलाक़ात का शरफ़ ह़ासिल किया, सरकार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुसाफ़ह़ा ज़रूर फ़रमाया) एक दिन आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरी त़रफ़ पैग़ाम भेजा। मैं अपने घर मौजूद नहीं था। जब मैं आया मुझे ख़बर दी गई। मैं आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो गया। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तख़्त पर रौनक़ अफ़रोज़ थे। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे गले लगा लिया। येह बहुत बेहतर हुवा और बेहतर। (سنن ابی داوٗد،کتاب الادب،باب فی المعانقۃ،الحدیث۵۲۱۴،ج۴،ص۴۵۳)

ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ सरकारे अबद क़रार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-रकत में ह़ाज़िर हुए तो उन को भी गले से लगाया चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना शअ़बी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم जा'फ़र बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को मिले तो गले से लगा लिया और उन की आंखों के दरमियान बोसा दिया।

(المرجع السابق،باب في قبله مابين العينين،الحديث:٥٢٢٠،ج٤،ص٤٥٥)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

ख़ुश नसीब सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان सरकारे ज़ी वक़ार صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के रह़मत भरे हाथों को चूमने की सआ़दत भी ह़ासिल करते थे । ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُمَا से एक वाक़िआ़ मरवी है जिस में आप رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : हम हुज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के क़रीब हुए और हम ने आप صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के हाथों को बोसा दिया ।

(سنن ابی داوٗد،کتاب الادب،باب فی قبلۃ الید،الحدیث۵۲۲۳،ج۴،ص۴۵۶)

जिन को सूए आस्मां फैला के जल थल भर दिये
सदक़ा उन हाथों का प्यारे हम को भी दरकार है

सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मुक़द्दस हाथ पाउं चूमते थे

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ारेअ़ رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि जब क़बीला अ़ब्दिल क़ैस का वफ़्द सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुवा, येह भी उस वक़्त वफ़्द में शरीक थे । आप फ़रमाते हैं कि जब हम अपनी मन्ज़िलों से मदीना शरीफ़ पहुंचे तो जल्दी जल्दी सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुए और सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक और क़दम शरीफ़ को बोसा दिया ।

(سنن ابی داوٗد،کتاب الادب،باب فی قبلۃ الرجل،الحدیث۵۲۲۵،ج۴،ص۴۵۶)

www.dawateislami.net

सिल्सिलए आलिया चिश्तिया के अज़ीम पेशवा हज़रते सय्यिदुना बाबा फ़रीदुद्दीन गन्जे शकर رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मशाइख़ व बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی की दस्त बोसी यक़ीनन दीनो दुन्या की ख़ैरो ब-रकत का बाइष बनती है। एक दफ़्आ किसी ने एक बुज़ुर्ग को इन्तिक़ाल के बा'द ख़्वाब में देखा तो उन से पूछा, "مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ ؟ या'नी अल्लाह तबा-र-क व तआला ने आप के साथ क्या सुलूक किया ?" कहा, दुन्या का हर मुआमला अच्छा और बुरा मेरे आगे रख दिया और बात यहां तक पहुंच गई कि हुक्म हुवा, इसे दोज़ख़ में ले जाओ ! इस हुक्म पर अ़मल होने ही वाला था कि फ़रमान हुवा, ठहरो ! एक दफ़्आ इस ने जामेअ़ दिमिश्क़ में ख़्वाजा शरीफ़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के दस्ते मुबारक को चूमा था। उस दस्त बोसी की ब-रकत से हम ने इसे मुआफ़ किया।"

(اسرار اولیاء مع ہشت بہشت، ص ۱۱۳)

رحمتِ حق "بہا" نہ می جوید رحمتِ حق "بہانہ" می جوید

या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत बहा या'नी क़ीमत त़लब नहीं करती, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत तो बहाना ढूंढती है।

मज़ीद शैख़ुल मशाइख़ बाबा फ़रीदुद्दीन رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : क़ियामत के दिन बहुत सारे गुनाहगार, बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی की दस्त बोसी की ब-रकत से बख़्शे जाएंगे और दोज़ख़ के अ़ज़ाब से नजात ह़ासिल करेंगे। (ایضاً)

★ रुख़्सत होते वक़्त भी मुसाफ़ह़ा करें। सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی लिखते हैं : इस के मस्नून होने की तसरीह़ नज़रे फ़क़ीर से नहीं गुज़री मगर

www.dawateislami.net

अस्ल मुसाफ़ह़ा का जवाज़ ह़दीष से षाबित है तो इस को भी जाइज़ ही समझा जाएगा। (बहारे शरीअ़त, जिल्द सिवुम, ह़िस्सा : 16, स. 471)

★ हर नमाज़ के बा'द लोग आपस में मुसाफ़ह़ा करते हैं येह जाइज़ है। (ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ،فصل فی البیع ،ج۹،ص۶۸۲)

★ गले मिलने को मुआ़नक़ा कहते हैं और येह भी सरकारे मदीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से षाबित है। (سنن ابی داود،ج٤،ص٤٥٥،حدیث:٥٢٢٠)

★ सिर्फ़ तहबन्द बांध कर या पाजामा पहने हों उस वक़्त मुआ़नक़ा न करें बल्कि कुर्ता पहना हुवा हो या कम अज़ कम चादर लिपटी हुई होनी चाहिये। (बहारे शरीअ़त, जिल्द सिवुम, ह़िस्सा : 16, स. 471)

★ ईदैन में मुआ़नक़ा करना जाइज़ है। (المرجع السابق)

★ आ़लिमे दीन के हाथ पाउं चूमना जाइज़ है। (المرجع السابق،ص٤٧٢)

★ हाथ पाउं वग़ैरा चूमने में येह एह़तियात़ ज़रूरी है कि मह़ल्ले फ़ित्ना न हो, अगर مَعَاذَاللہ शहवत के लिये किसी इस्लामी भाई से मुसाफ़ह़ा या मुआ़नक़ा किया, हाथ पाउं चूमे या نَعُوْذُ بِاللہ पेशानी का बोसा लिया तो येह ना जाइज़ है। (المرجع السابق،ص٤٧٢،ملخصاً)

★ वालिदैन के हाथ पांव भी चूम सकते हैं।

★ आ़लिमे बा अ़मल और नेक इस्लामी भाई की आमद पर ता'ज़ीम के लिये खड़े हो जाना जाइज़ बल्कि मुस्तह़ब है मगर वोह आ़लिम या नेक शख़्स ब ज़ाते ख़ुद अपने आप को ता'ज़ीम का अहल तसव्वुर न करे और येह तमन्ना न करे कि लोग मेरे लिये खड़े हो जाया करें। और अगर कोई ता'ज़ीमन खड़ा न हो तो हरगिज़ हरगिज़ दिल में कदूरत (मैल) न लाएं।

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 719)

www.dawateislami.net

“हाथ मिलाना सुन्नत है” के चौदह हुरूफ़ की निस्बत से हाथ मिलाने के 14 म-दनी फूल

★ पेशकर्दा हर हर म-दनी फूल को **सुन्नते रसूले** मक़्बूल على صاحِبِها الصَّلٰوةُ وَالسَّلام पर मह़्मूल न फ़रमाइये, इन में सुन्नतों के इलावा बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِین से मन्क़ूल म-दनी फूल का भी शुमूल है। जब तक यक़ीनी तौ़र पर मा'लूम न हो किसी अ़मल को “**सुन्नते रसूल**” नहीं कह सकते।

﴾1﴿ दो मुसलमानों का ब वक़्ते मुलाक़ात सलाम कर के दोनों हाथों से **मुसाफ़ह़ा** करना या'नी दोनों हाथ मिलाना सुन्नत है।

﴾2﴿ रुख़्सत होते वक़्त भी सलाम कीजिये और हाथ भी मिला सकते हैं।

﴾3﴿ नबिय्ये मुकर्रम صَلَّى اللهُ تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे मुअ़ज़्ज़म है : “जब दो मुसलमान मुलाक़ात करते हुए **मुसाफ़ह़ा** करते हैं और एक दूसरे से ख़ैरियत दरयाफ़्त करते हैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन के दरमियान सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है जिन में से निनानवे रह़मतें ज़ियादा पुर तपाक त़रीके़ से मिलने वाले और अच्छे त़रीके़ से अपने भाई से ख़ैरिय्यत दरयाफ़्त करने वाले के लिये होती हैं।”

(اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط لِلطَّبَرَانِی ج ٥ ص ٣٨٠ رقم ٧٦٧٢)

﴾4﴿ “जब दो दोस्त आपस में मिलते हैं और **मुसाफ़ह़ा** करते हैं और नबी (صَلَّى اللهُ تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) पर दुरूदे पाक पढ़ते हैं तो उन दोनों के जुदा होने से पहले पहले दोनों के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं।” (شعب الایمان للبیهقی،حدیث:٨٩٤٤،ج٦،ص ٤٧١)

www.dawateislami.net

《5》 हाथ मिलाते वक़्त दुरूद शरीफ़ पढ़ कर हो सके तो येह दुआ़ भी पढ़ लीजिये : "يَغْفِرُ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُم" (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारी और तुम्हारी मग़फ़िरत फ़रमाए)

《6》 दो मुसलमान हाथ मिलाने के दौरान जो दुआ़ मांगेंगे اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ क़बूल होगी हाथ जुदा होने से पहले पहले दोनों की मग़फ़िरत हो जाएगी । اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

(مُسنَد إمام احمد بن حَنبل ج ٤ ص ٢٨٦ حديث ١٢٤٥٤)

《7》 आपस में हाथ मिलाने से दुश्मनी दूर होती है ।

《8》 **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم है : जो मुसलमान अपने भाई से मुसाफ़ह़ा करे और किसी के दिल में दूसरे से अ़दावत न हो तो हाथ जुदा होने से पहले अल्लाह तआ़ला दोनों के गुज़श्ता गुनाहों को बख़्श देगा और जो कोई अपने मुसलमान भाई की त़रफ़ मह़ब्बत भरी नज़र से देखे और उस के दिल या सीने में अ़दावत न हो तो निगाह लौटने से पहले दोनों के पिछले गुनाह बख़्श दिये जाएंगे । (كَنزُ الْعُمّال ج٩ص٥٧ حديث:٢٥٣٥٨)

《9》 जितनी बार मुलाक़ात हो हर बार हाथ मिला सकते हैं ।

《10》 दोनों त़रफ़ से एक एक हाथ मिलाना सुन्नत नहीं मुसाफ़ह़ा दो हाथ से करना सुन्नत है । (ردالمحتار،ج٩،ص٦٢٩)

《11》 बा'ज़ लोग सिर्फ़ उंगलियां ही आपस में टकरा देते हैं येह भी सुन्नत नहीं ।

《12》 हाथ मिलाने के बा'द ख़ुद अपना ही हाथ चूम लेना मकरूह

www.dawateislami.net

है । हाथ मिलाने के बा'द अपनी हथेली **चूम** लेने वाले इस्लामी भाई अपनी आ़दत निकालें ।

(बहारे शरीअ़त, जिल्द सिवुम, हि़स्सा : 16, स. 472, मुलख़्ख़सन)

﴾13﴿ अगर अमरद (या'नी ख़ूब सूरत लड़के) से हाथ मिलाने में शहवत आती हो तो उस से हाथ मिलाना जाइज़ नहीं बल्कि अगर देखने से शहवत आती हो तो अब देखना भी गुनाह है

(دُرِّمُختار ج۲ ص۹۸)

﴾14﴿ **मुसाफ़ह़ा** करते (या'नी हाथ मिलाते) वक़्त सुन्नत येह है कि हाथ में रुमाल वग़ैरा ह़ाइल न हो, दोनों हथेलियां ख़ाली हों और हथेली से हथेली मिलनी चाहिये । (ردالمحتار ج۹،ص٦٢٩)

सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** मे आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है ।

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो   सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी हल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो   पाओगे ब-र-कतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें इख़्लास और ख़ुश दिली के साथ हर मुसलमान को सलाम करने और उन के साथ ख़न्दा पेशानी के साथ मुसाफ़ह़ा करने की तौफ़ीक़े रफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमा ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

★★★★★★

www.dawateislami.net

बात चीत करने की सुन्नतें और आदाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

इस ज़िन्दगी में हमें हर वक़्त बात चीत करने की ज़रूरत पड़ती रहती है। बल्कि हम लोग बिला ज़रूरत भी हर वक़्त बोलते रहते हैं ह़ालांकि येह बिला ज़रूरत बोलना बहुत ही नुक़्सान देह है, ग़ैर ज़रूरी गुफ़्तगू करने से ख़ामोश रहना अफ़ज़ल है। लिहाज़ा हमारे प्यारे म-दनी आक़ा صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बात चीत के सिलसिले में सुन्नतें और आदाब और ख़ामोशी के फ़ज़ाइल वग़ैरा यहां पर बयान किये जाते हैं।

★ **सरकारे मदीना صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم गुफ़्तगू इस त़रह़ दिल नशीन अन्दाज़ में ठहर ठहर कर फ़रमाते कि सुनने वाला आसानी से याद कर लेता चुनान्चे** उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं कि सरकारे दो आलम صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم साफ़ साफ़ और जुदा जुदा कलाम फ़रमाते थे, हर सुनने वाला उस को याद कर लेता था।

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عائشۃ، الحدیث ۲۶۲۶۹، ج۱۰، ص۱۱۵)

★ **किसी से जब बात चीत की जाए तो उस का कोई सह़ीह़ मक़्सद भी होना चाहिये।** और हमेशा मुख़ात़ब के ज़र्फ़ और उस की नफ़्सियात के मुत़ाबिक़ बात की जाए। जैसा कि कहा जाता है, "کَلِّمُوا النَّاسَ عَلٰی قَدْرِ عُقُوْلِھِمْ" (या'नी लोगों से उन की अ़क़्लों के मुत़ाबिक़ कलाम करो।) या'नी इस त़रह़ की बातें न की जाएं कि दूसरों की समझ में न आएं, अलफ़ाज़ भी सादा साफ़ साफ़ हों, मुश्किल तरीन अलफ़ाज़ भी इस्ति'माल न किये जाएं कि इस त़रह़

www.dawateislami.net

अगले पर आप की इ़ल्मिय्यत की धाक तो बैठ जाएगी मगर मुद्दआ़ ख़ाक भी समझ न आएगा ।

★ **अपनी ज़बान को हमेशा बुरी बातों से रोके रखें ।** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं मैं ने अ़र्ज़ किया, **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم नजात क्या है ? फ़रमाया, ''अपनी ज़बान को बुरी बातों से रोक रखो ।''

(جامع الترمذی، کتاب الزہد، باب ماجاء فی حفظ اللسان، الحدیث۲۴۱۴، ج۴،ص۱۸۲)

★ **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर हम ने ज़बान को सह़ीह़ इस्ति'माल किया तो इस का जो कुछ फ़ाएदा होगा वोह सारा ही जिस्म पाएगा** और अगर येह सीधी न चली किसी को गाली वग़ैरा दे दी तो ज़बान को कोई तक्लीफ़ हो या न हो पिटाई दीगर आ'ज़ा की होगी । ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''जब इन्सान सुब्ह़ करता है तो उस के आ'ज़ा झुक कर ज़बान से कहते हैं, हमारे बारे में अल्लाह तआ़ला से डर ! क्यूंकि हम तुझ से मु-तअ़ल्लिक़ हैं । अगर तू सीधी रहेगी, हम भी सीधे रहेंगे और अगर तू टेढ़ी होगी हम भी टेढ़े हो जाएंगे ।''

(المسند للامام احمد بن حنبل، الحدیث ۱۱۹۰۸، ج۴، ص۱۹۰)

★ **आपस में हंसी मज़ाक की आ़दत कभी महंगी पड़ जाती है ।** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया : ''आपस में ठठ्ठा मज़ाक़ मत किया करो कि इस त़रह़ (हंसी ही हंसी में) दिलों में नफ़रत बैठ जाती है । और बुरे अफ़्आ़ल की बुन्यादें दिलों में उस्तुवार हो जाती हैं ।''

(کیمیائے سعادت، رکن سوم مہلکات، باب پیدا کردن ثواب خاموشی، ج۲، ص۵۶۳)

“एक चुप हज़ार सुख” के बारह हुरूफ़ की निस्बत से बात चीत करने के 12 म-दनी फूल

★ पेशकर्दा हर हर म-दनी फूल को **सुन्नते रसूले** मक़्बूल على صاحِبِها الصَّلٰوةُ وَالسَّلام पर महमूल न फ़रमाइये, इन में सुन्नतों के इलावा बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن से मन्क़ूल **म-दनी फूल** का भी शुमूल है। जब तक यक़ीनी तौर पर मा'लूम न हो किसी अ़मल को “**सुन्नते रसूल**” नहीं कह सकते।

﴾1﴿ मुस्कुरा कर और ख़न्दा पेशानी से बात चीत कीजिये।

﴾2﴿ मुसलमानों की दिलजूई की निय्यत से छोटों के साथ मुशफ़िक़ाना और बड़ों के साथ मुअद्दबाना लहजा रखिये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ षवाब कमाने के साथ साथ दोनों के नज़्दीक आप मुअ़ज़्ज़ज़ रहेंगे।

﴾3﴿ चिल्ला चिल्ला कर बात करना जैसा कि आज कल बे तकल्लुफ़ी में अकषर दोस्त आपस में करते हैं सुन्नत नहीं।

﴾4﴿ चाहे एक दिन का बच्चा हो अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ उस से भी आप जनाब से गुफ़्त्गू की आ़दत बनाइये। आप के अख़्लाक़ भी اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ उ़म्दा होंगे और बच्चा भी आदाब सीखेगा। ﴾5﴿ बात चीत करते वक़्त पर्दे की जगह हाथ लगाना, उंगलियों के ज़रीए़ बदन का मैल छुड़ाना, दूसरों के सामने बार बार नाक को छूना या नाक या कान में उंगली डालना, थूकते रहना अच्छी बात नहीं, इस से दूसरों को घिन आती है।

www.dawateislami.net

﴾6﴿ जब तक दूसरा बात कर रहा हो, इत़मीनान से सुनिये। उस की बात काट कर अपनी बात शुरूअ़ कर देना सुन्नत नहीं।

﴾7﴿ बात चीत करते हुए बल्कि किसी भी ह़ालत में क़ह्क़हा न लगाइये कि सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने कभी क़ह्क़हा नहीं लगाया

﴾8﴿ ज़ियादा बातें करने और बार बार क़ह्क़हा लगाने से हैबत जाती रहती है

﴾9﴿ सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जब तुम किसी बन्दे को देखो कि उसे दुन्या से बे रग़बती और कम बोलने की ने'मत अ़त़ा की गई है तो उस की क़ुरबत व सोह़बत इख़्तियार करो क्यूंकि उसे ह़िकमत दी जाती है।"

(سُنَن ابن ماجه ج٤ ص٤٢٢ حديث ٤١٠١)

﴾10﴿ फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : **"जो चुप रहा उस ने नजात पाई।"** (سُنَنُ التِّرمِذِیّ ج٤ ص٢٢٥ حديث ٢٥٠٩) मिरआतुल मनाजीह़ में है : हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : गुफ़्त्गू की चार क़िस्में हैं : (1) ख़ालिस मुज़िर (या'नी मुकम्मल तौर पर नुक़सान देह) (2) ख़ालिस मुफ़ीद (3) मुज़िर (या'नी नुक़सान देह) भी मुफ़ीद भी (4) न मुज़िर न मुफ़ीद। ख़ालिस मुज़िर (या'नी मुकम्मल नुक़सान देह) से हमेशा परहेज़ ज़रूरी है, ख़ालिस मुफ़ीद कलाम (बात) ज़रूर कीजिये, जो कलाम मुज़िर भी हो मुफ़ीद भी उस के बोलने में एह़तियात़ करे बेहतर है कि न बोले और चौथी क़िस्म के कलाम में वक़्त ज़ाएअ़ करना है। इन कलामों में इम्तियाज़ करना मुश्किल है लिहाज़ा ख़ामोशी बेहतर है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 464)

www.dawateislami.net

﴾11﴿ किसी से जब बात चीत की जाए तो उस का कोई सह़ीह़ मक़्सद भी होना चाहिये और हमेशा मुख़ात़ब के ज़र्फ़ और उस की नफ़्सियात के मुत़ाबिक़ बात की जाए।

﴾12﴿ बद ज़बानी और बे ह़याई की बातों से हर वक़्त परहेज़ कीजिये, गाली गलोच से इजतिनाब करते रहिये और याद रखिये कि किसी मुसलमान को बिला इजाज़ते शरई गाली देना ह़रामे क़त़ई है (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 21, स. 127) और बे ह़याई की बात करने वाले पर जन्नत ह़राम है। ह़ुज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "उस शख़्स पर जन्नत ह़राम है जो फ़ोह़्श गोई (बे ह़याई की बात) से काम लेता है।"

(کتابُ الصَّمت مع موسوعۃالامام ابن ابی الدنیا، ج۷،ص۲۰۴ الحدیث:۳۲۵)

सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** मे आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो — सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी हल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो — पाओगे ब-र-कतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

*ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें गुफ़्तगू करने की सुन्नतों और आदाब पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमा।*

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

★★★★★★

www.dawateislami.net

घर में आने जाने की सुन्नतें और आदाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

हमें हर रोज़ अपने या किसी अ़ज़ीज़ या दोस्त व अह़बाब के घर में जाने की ह़ाजत पड़ती रहती है तो हमें येह मा'लूम होना चाहिये कि घर में दाख़िल होने का सुन्नत त़रीक़ा क्या है ? किसी के घर में जाएं तो दरवाज़े के सामने खड़े हों या एक त़रफ़ हट कर ? और किस त़रह़ इजाज़त त़लब करें ? अगर इजाज़त न मिले तो क्या करना चाहिये ? दुआ़ पढ़ कर घर से निकलने की क्या क्या ब-रकतें हैं ? अगर घर में कोई मौजूद न हो तो क्या पढ़ना चाहिये ? घर में दाख़िल होने और इजाज़त त़लब करने वग़ैरा के ह़वाले से मु-तअ़द्दद सुन्नतें और आदाब हैं :

★ **अपने घर में आते हुए भी सलाम करें और जाते हुए भी सलाम करें।** हुज़ूरे पुर नूर, शाफ़ेए़ यौमुन्नुशूर صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जब तुम घर में आओ तो घर वालों को सलाम करो और जाओ तो सलाम कर के जाओ।"

(شعب الایمان، ج٦،ص ٤٤٧،حدیث:٨٨٤٥)

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی मिरआतुल मनाजीह़ जिल्द 6 सफ़ह़ा 9 पर तह़रीर फ़रमाते हैं : "बा'ज़ बुज़ुर्गों को देखा गया है कि अव्वल दिन में जब पहली बार घर में दाख़िल होते तो बिस्मिल्लाह और قُلْ هُوَ اللّٰه पढ़ लेते, कि इस से घर में इत्तिफ़ाक़ भी रहता है और रिज़्क़ में ब-रकत भी।"

www.dawateislami.net

★ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का नाम लिये बिग़ैर जो घर में दाख़िल होता है, शैत़ान भी उस के साथ घर में दाख़िल हो जाता है। जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब आदमी घर में दाख़िल होते वक़्त और खाना खाते वक़्त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करता है तो शैत़ान कहता है : "आज यहां न तुम्हारी रात गुज़र सकती है और न तुम्हें खाना मिल सकता है।" और जब इन्सान घर मे बिग़ैर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र किये दाख़िल होता है तो शैत़ान कहता है, आज की रात यहीं गुज़रेगी। और जब खाने के वक़्त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का नाम नहीं लेता तो वोह कहता है : "तुम्हें ठिकाना भी मिल गया और खाना भी मिल गया।" (صحیح مسلم،ص۱۱۱٦حدیث:۲۰۱۸)

★ जब कोई ख़ुश नसीब अपने घर से बाहर जाते वक़्त बाहर जाने की दुआ़ पढ़ लेता है तो वोह घर लौटने तक हर बला व आफ़त से मह़फ़ूज़ हो जाता है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों पर अ़मल करने में ब-रकत ही ब-रकत है। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरह رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "आदमी अपने घर के दरवाज़े से बाहर निकलता है तो उस के साथ दो फ़िरिश्ते मुक़र्रर होते हैं। जब वोह आदमी कहता है कि "بِسْمِ اللّٰہِ" तो वोह फ़िरिश्ते कहते हैं तूने सीधी राह इख़्तियार की। और जब इन्सान कहता है, "لاحَوْلَ وَلا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ" तो फ़िरिश्ते कहते हैं अब तू हर

www.dawateislami.net

आफ़त से महफ़ूज़ है । जब बन्दा कहता है, "تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ" तो फ़िरिश्ते कहते हैं अब तुझे किसी और की मदद की हाजत नहीं, इस के बा'द उस शख़्स के दो शैतान जो उस पर मुसल्लत होते हैं वोह उस से मिलते हैं। फ़िरिश्ते कहते हैं अब तुम इस के साथ क्या करना चाहते हो ? इस ने तो सीधा रास्ता इख़्तियार किया । तमाम आफ़ात से महफ़ूज़ हो गया और ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की इमदाद के इलावा दूसरे की इमदाद से बे नियाज़ हो गया ।"

(سنن ابن ماجه،ج٤،ص٢٩٢،حديث:٣٨٨٦)

★ जब किसी के घर जाना हो तो इस का त़रीक़ा येह है कि पहले अन्दर आने की इजाज़त ह़ासिल कीजिये फिर जब अन्दर जाएं तो पहले सलाम करें फिर बात चीत शुरूअ़ कीजिये ।

(बहारे शरीअ़त, जिल्द सिवुम, हिस्सा : 16, स. 452 मुलख़्ख़सन)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तीन मरतबा इजाज़त त़लब करो अगर इजाज़त मिल जाए तो ठीक वरना वापस लौट जाओ ।"

(صحيح مسلم،ص١١٨٦،حديث٢١٥٣)

★जो सलाम किये बिग़ैर घर में दाख़िले की इजाज़त मांगे उसे दाख़िले की इजाज़त न दी जाए। ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो शख़्स सलाम के साथ इब्तिदा न करे उस को इजाज़त न दो ।"

(شعب الايمان، الحديث:٨٨١٦،ج٦،ص٤٤١)

www.dawateislami.net

घर में दाख़िले की इजाज़त मांगने में एक ह़िकमत येह भी है कि फ़ौरन घर में बाहर वाले की नज़र न पड़े। आने वाला बाहर से सलाम कर रहा हो, इजाज़त चाह रहा हो और साह़िबे ख़ाना पर्दा वग़ैरा का इन्तिज़ाम कर ले।

ह़ज़रते सह्ल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, फ़रमाते हैं कि हुज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "इजाज़त त़लब करने का हुक्म आंख की वजह से दिया गया है। (इस लिये कि अहले ख़ाना की निजी ज़िन्दगी के असरार मुन्कशिफ़ न हो सकें।)"

(صحیح مسلم، کتاب الادب، باب الاستئذان، الحدیث ۲۱۵۶، ص ۱۱۸۹)

★ जब किसी के घर जाना हो इजाज़त मांगना सुन्नत है। बेहतर येह है कि इस त़रह़ इजाज़त मांगें "اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ क्या मैं अन्दर आ सकता हूं ?" (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 346)

ह़ज़रते सय्यिदुना रिब्ई बिन ह़िराश رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, हमें बनू आ़मिर के एक शख़्स ने येह बात बताई कि उस ने हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से इजाज़त त़लब की। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم घर में तशरीफ़ फरमा थे। उस ने अ़र्ज़ किया, क्या मैं दाख़िल हो जाऊं ? हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने ख़ादिम से फ़रमाया : बाहर उस आदमी के पास जाओ और उस को इजाज़त त़लब करने का त़रीक़ा सिखाओ, उस से कहो कि इस त़रह़ कहे, "اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ क्या मैं दाख़िल हो सकता हूं ?" उस आदमी ने सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का

www.dawateislami.net

इर्शाद सुन लिया और अ़र्ज़ किया, اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ क्या मैं दाख़िल हो सकता हूं ? तो सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस को इजाज़त अ़ता फ़रमाई और वोह अन्दर दाख़िल हुवा ।

(سنن ابی داود،ج٤،ص٤٤٣،حدیث ٥١٧٧)

हज़रते सय्यिदुना कलदा बिन हम्बल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं, मैं हुज़ूर सय्यिदे दो आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-रकत में हाज़िर हुवा । मैं जब अन्दर दाख़िल हुवा और सलाम अ़र्ज़ न किया तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ,“लौट जाओ और येह कहो, “اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ क्या मैं दाख़िल हो सकता हूं ?”

(المرجع السابق،ج٤،ص٤٤٢،حدیث ٥١٧٦)

★ अगर कोई शख़्स आप को बुलाने के लिये भेजे और भेजा हुवा शख़्स आप को साथ ले कर जाए तो अब इजाज़त लेने की ज़रूरत नहीं । साथ वाला शख़्स ही ख़ुद “**इजाज़त**” है

जैसा कि हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : “जिस वक़्त तुम में से किसी को बुलाया जाए, और वोह एलची (या'नी क़ासिद) के साथ आए येह उस का इज़्न (इजाज़त) है”

(المرجع السابق،ج٤، ص٤٤٧،حدیث ٥١٩٠)

एक और रिवायत में है कि आदमी का किसी को बुलाने के लिये भेजना उस की त़रफ़ से इजाज़त है ।

(المرجع السابق،ج٤، ص٤٤٧،حدیث٥١٨٩)

www.dawateislami.net

★ **अपनी मौजूदगी का एह़सास दिलाने के लिये खन्कारना चाहिये** जैसा कि मौलाए काएनात ह़ज़रते **सय्यिदुना** अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि "मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-रकत में एक मरतबा रात के वक़्त और एक मरतबा दिन के वक़्त ह़ाज़िर होता था। जब मैं रात के वक़्त आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पास ह़ाज़िरी देता आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे लिये खन्कारते।"

(سنن ابن ماجه، ج٤،ص٢٠٦،حديث٣٧٠٨)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

जब किसी के घर जाएं तो दरवाज़े से गुज़रते वक़्त ज़रूरतन दूसरे कमरे की त़रफ़ जाते हुए खन्कार लेना चाहिये ताकि घर के दीगर अफ़राद को हमारी मौजूदगी का एह़सास हो जाए और वोह आगे पीछे हो सकें।

★**अगर दरवाज़े पर पर्दा न हो तो एक त़रफ़ हट कर खड़े हों।** ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन बुसर رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जब किसी के दरवाज़े पर तशरीफ़ लाते तो दरवाज़े के सामने खड़े न होते बल्कि दाईं या बांई जानिब खड़े होते फिर फ़रमाते "اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ" "اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ" और येह इस लिये कि उन दिनों दरवाज़ों पर पर्दे नहीं होते थे।

(سنن ابی داود، ج٤،ص٤٤٦،حديث:٥١٨٦)

www.dawateislami.net

★ **जब कोई किसी के घर जाए तो अन्दर से जब कोई दरवाज़े पर आए तो पूछे कौन है?** बाहर वाला "मैं" न कहे जैसा कि आज कल भी येही रवाज है। बल्कि अपना नाम बताए। जवाबन "मैं" कहना सरकार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को पसन्द नहीं।

(बहारे शरीअ़त, जिल्द सिवुम, हि़स्सा : 16, स. 453)

जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है फ़रमाया कि मैं म-दनी आक़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा। और दरवाज़ा खट खटाया। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "कौन है ?" मैं ने अ़र्ज़ की "मैं।" आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं, मैं क्या ? गोया आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस को ना पसन्द फ़रमाया।

(صحيح البخاری،ج٤،ص ١٧١، حديث ٦٢٥٠)

★ **किसी के घर में झांकना नहीं चाहिये,** जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, रसूले अकरम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ानए अक़दस में तशरीफ़ फ़रमा थे कि एक शख़्स ने आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को झांका तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने नेज़े की नोक उस की त़रफ़ की चुनान्चे वोह पीछे हट गया।

(جامع الترمذی،ج٤،ص٣٢٥،حديث:٢٧١٧)

इसी त़रह़ किसी मौक़अ़ पर सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم दरे दौलत पर जल्वा फ़रमा थे और किसी ने जब सूराख़ से झांक कर देखा तो सरकार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने

इज़्हारे नाराज़ी फ़रमाया । जैसा कि हज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन साइदी رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم को एक शख़्स ने हुजरए मुबारक के सूराख़ से झांका । आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم लोहे की कंघी से सरे मुबारक खुजा रहे थे फ़रमाया : अगर मेरी तवज्जोह इस त़रफ़ होती कि तू देख रहा है तो इस लोहे की कंघी को तेरी आंख में चुभो देता । नज़र से बचाव के लिये ही तो इजाज़त त़लब करने का हुक्म है ।

(جامع الترمذی،ج٤،ص٣٢٥، حدیث:٢٧١٧)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

दूसरों के घरों में झांकने से बचने के साथ साथ हमें अपने घरों के दरवाज़े या खिड़कियां बन्द रखनी चाहिएं या उन पर कोई सादा सा पर्दा वग़ैरा डाल देना चाहिये जिस की वजह से बे पर्दगी न हो ।

★ **घर के इन्तिज़ामात पर बे जा तन्क़ीद न करें जिस से मेज़बान की दिल आज़ारी हो ।** हां, अगर ना जाइज़ बात देखें, म-षलन जानदारों की तसावीर वग़ैरा आवेज़ां हों तो अह़सन त़रीक़े से समझा दें । हो सके तो कुछ न कुछ तोह़फ़ा पेश करें ख़्वाह कितना ही कम क़ीमत हो, मह़ब्बत बढ़ेगी ।

★ **जो कुछ खाने पीने को पेश किया जाए, कोई सह़ीह़ मजबूरी न हो तो ज़रूर क़बूल करें ।** ना पसन्द हो जब भी मुंह न बिगाड़ें कि मेज़बान की दिल शिकनी होगी ।

www.dawateislami.net

"मदीने की हाज़िरी" के बारह हुरूफ़ की निस्बत से घर में आने जाने के 12 म-दनी फूल

★ पेशकर्दा हर हर म-दनी फूल को **सुन्नते रसूले** मक़्बूल علی صاحِبِها الصَّلوٰۃُ وَالسَّلام पर महमूल न फ़रमाइये, इन में सुन्नतों के इलावा बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن से मन्कूल **म-दनी फूल** का भी शुमूल है। जब तक यक़ीनी तौर पर मा'लूम न हो किसी अ़मल को "**सुन्नते रसूल**" नहीं कह सकते।

﴾1﴿ जब घर से बाहर निकलें तो येह दुआ़ पढ़िये :

"بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ"

तर्जमा : अल्लाह के नाम से, मैं ने अल्लाह पर भरोसा किया। अल्लाह के बिग़ैर न (गुनाहों से बचने की) कुव्वत है और न (नेकियां करने की) ताक़त है। (سنن ابی داود، ج٤، ص٤٢٠، حدیث٥٠٩٥)

اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस दुआ़ को पढ़ने की ब-रकत से सीधी राह पर रहेंगे, आफ़तों से हिफ़ाज़त होगी और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मदद शामिले हाल रहेगी।

﴾2﴿ घर में दाख़िल होने की दुआ़ :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْۤ اَسْأَلُكَ خَيْرَ الْمَوْلَجِ وَ خَيْرَ الْمَخْرَجِ بِسْمِ اللّٰهِ وَلَجْنَا وَ بِسْمِ اللّٰهِ خَرَجْنَا وَ عَلَى اللّٰهِ رَبِّنَا تَوَكَّلْنَا

(المرجع السابق، ج٤، ص٤٢٠، حدیث٥٠٩٦)

(तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से दाख़िल होने की और निकलने की भलाई मांगता हूं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से हम (घर में) दाख़िल हुए और उसी के नाम से बाहर आए और अपने रब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर हम ने भरोसा किया)

दुआ़ पढ़ने के बा'द घर वालों को सलाम करे फिर बारगाहे रिसालत में सलाम अ़र्ज़ करे इस के बा'द सू-रतुल इख़्लास शरीफ़ पढ़े। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ रोज़ी में ब-रकत, और घरेलू झगड़ों से बचत होगी।

《3》 अपने घर में आते जाते मह़ारिम व मह़रिमात (म-सलन मां, बाप, भाई, बहन, बाल बच्चे वग़ैरा) को सलाम कीजिये।

《4》 **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम लिये बिग़ैर म-षलन बिस्मिल्लाह कहे बिग़ैर जो घर में दाख़िल होता है शैत़ान भी उस के साथ दाख़िल हो जाता है।

《5》 अगर ऐसे मकान (ख़्वाह अपने ख़ाली घर) में जाना हो कि उस में कोई न हो तो येह कहिये : اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰہِ الصّٰلِحِيْن *(या'नी हम पर और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों पर सलाम)* फ़िरिश्ते उस सलाम का जवाब देंगे। (رَدُّالْمُحتار ج۹ ص ٦٨٢) या इस त़रह़ कहे : اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِىُّ (या'नी या नबी आप पर सलाम) क्यूंकि ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰہ تعالٰی عَلَيْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم की रूहे मुबारक मुसलमानों के घरों में तशरीफ़ फ़रमा होती है। (شرح الشّفاء للقاری ج۲ ص۱۱۸)

《6》 जब किसी के घर में दाख़िल होना चाहें तो इस त़रह़ कहिये : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُم क्या मैं अन्दर आ सकता हूं ?

《7》 अगर दाख़िले की इजाज़त न मिले तो ब ख़ुशी लौट जाइये हो सकता है किसी मजबूरी के तह़त साहि़बे ख़ाना ने इजाज़त न दी हो।

《8》 जब आप के घर पर कोई दस्तक दे तो सुन्नत येह है कि पूछिये : कौन है ? बाहर वाले को चाहिये कि अपना नाम बताए :

www.dawateislami.net

म-षलन कहे : "मुह़म्मद इल्यास ।" नाम बताने के बजाए इस मौक़अ़ पर "मदीना !", "मैं हूं !", "दरवाज़ा खोलो" वग़ैरा कहना सुन्नत नहीं ।

﴾9﴿ जवाब में नाम बताने के बा'द दरवाज़े से हट कर खड़े हों ताकि दरवाज़ा खुलते ही घर के अन्दर नज़र न पड़े ।

﴾10﴿ किसी के घर में झांकना मम्नूअ़ है । बा'ज़ लोगों के मकान के सामने नीचे की त़रफ़ दूसरों के मकानात होते हैं लिहाज़ा बालकूनी वग़ैरा से झांकते हुए इस बात का ख़याल रखना चाहिये कि उन के घरों में नज़र न पड़े ।

﴾11﴿ किसी के घर जाएं तो वहां के इन्तिज़ामात पर बे जा तन्क़ीद न कीजिये इस से उस की दिल आज़ारी हो सकती है ।

﴾12﴿ वापसी पर अहले ख़ाना के ह़क़ में दुआ़ भी कीजिये और शुक्रिया भी अदा कीजिये और सलाम भी और हो सके तो कोई सुन्नतों भरा रिसाला वग़ैरा भी तोह़फ़तन पेश कीजिये

सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللهُ تعالٰی علٰی محمَّد

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें घर में आने जाने की सुन्नतों पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमा ।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم

★★★★★★

www.dawateislami.net

सफ़र की सुन्नतें और आदाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

अकषरो बेशतर हमें सफ़र की ज़रूरत पेश आती रहती है बल्कि बहुत से खुश नसीब इस्लामी भाइयों को तो राहे खुदा में आशिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने की भी सआदत मिलती है। लिहाज़ा हम कोशिश कर के सफ़र की भी कुछ न कुछ सुन्नतें और आदाब सीख लें ताकि इन पर अ़मल कर के हम अपने सफ़र को भी हुसूले षवाब का ज़रीआ़ बना सकें।

★**मुम्किन हो तो जुमा'रात को सफ़र की इब्तिदा की जाए कि जुमा'रात को सफ़र की इब्तिदा करना सुन्नत है।** (اشعۃاللمعات،ج۵،ص۱٦۱) चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ग़ज़्वए तबूक के लिये जुमा'रात के दिन रवाना हुए और आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जुमा'रात के दिन रवाना होना पसन्द फ़रमाते थे।

(صحیح البخاری،کتاب الجہاد،باب من اراد غزوۃ فوَرَّی....الخ،الحدیث۲۹۵۰،ج۲،ص۲۹٦)

★**अगर सहूलत हो तो रात को सफ़र किया जाए** कि रात को सफ़र जल्द तै होता है ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, सरकारे मदीना, सुलत़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, स़ाहिबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइषे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "रात को सफ़र किया करो, क्यूंकि रात को ज़मीन लपेट दी जाती है।"

(سنن ابی داوٗد،کتاب الجہاد،باب فی الدرجۃ،الحدیث۲۵۷۱،ج۳،ص۴۰)

www.dawateislami.net

★ **अगर चन्द इस्लामी भाई मिल कर क़ाफ़िले की सूरत में सफ़र करें तो किसी एक को अमीर बना लें।** ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरह رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ रिवायत करते हैं कि ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब तीन आदमी सफ़र पर रवाना हों तो वोह अपने में से एक को अमीर बना लें।"

(سنن ابی داود، کتاب الجہاد، باب فی القوم یسافرون......الخ، الحدیث ۲۶۰۹، ج۳، ص ۵۱، ۵۲)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

अमीरे क़ाफ़िला ख़ुश अख़्लाक़, जज़्बए इख़्लास व ईषार से आरास्ता व पैरास्ता होना चाहिये। अपने हम सफ़र इस्लामी भाइयों की देख भाल करे। बिलफ़र्ज़ अगर शु-रकाए क़ाफ़िला किसी बात पर नाराज़ भी हो जाएं, आपस में कोई चप क़लिश या रन्जिश भी हो जाए तो ह़िक्मते अ़-मली के साथ मुआ़मलात को सुलझा दे मगर अ़दलो इन्साफ़ का दामन भी न छोड़े। नीज़ मामूर भाइयों को भी चाहिये कि जहां तक शरीअ़त के मुत़ाबिक़ अमीरे क़ाफ़िला हिदायात दे उन की बजा आवरी में हरगिज़ हरगिज़ कोताही न करें। सफ़र में ह़ौसला बुलन्द रखना चाहिये। बा'ज़ अवक़ात सफ़र की थकान के सबब या आपस में इख़्तिलाफ़े राय की वजह से कुछ तल्ख़ियां भी पैदा हो जाती हैं। इन मवाक़ेअ़ पर सब्रो तह़म्मुल का दामन न छोड़ें। प्यार व मह़ब्बत से सारे मुआ़मलात को सुलझाते चले जाएं।

★ **चलते वक़्त अ़ज़ीज़ों, दोस्तों से मिलें और अपने क़ुसूर मुआ़फ़ करवाएं** और जिन से मुआ़फ़ी त़लब की जाए उन पर लाज़िम है कि दिल से **मुआ़फ़** कर दें। (बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल, ह़िस्सा : 6, स. 1052)

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरह رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि हुज़ूर सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस के पास उस का भाई मा'ज़िरत के लिये आए तो वोह उस का उ़ज़्र क़बूल करे, ख़्वाह ह़क़ पर हो या बात़िल पर, जो ऐसा न करे वोह मेरे हौज़ पर नहीं आएगा।" (المستدرك للحاكم،ج٥،ص٢١٣،حديث٧٣٤٠)

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि हुज़ूर सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, "क़ियामत के दिन जब लोग ह़िसाब के लिये खड़े होंगे तो एक मुनादी ए'लान करेगा, "जिस का कुछ ज़िम्मा अल्लाह की त़रफ़ निकलता है वोह उठे और जन्नत में दाख़िल हो जाए।" (लेकिन कोई खड़ा न होगा) मुनादी फिर दूसरी मरतबा ए'लान करेगा, "जिस का ज़िम्मा अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ निकलता है वोह खड़ा हो।" (लोग हैरानी से पूछेंगे) "अल्लाह की त़रफ़ किसी का ज़िम्मा कैसे निकल सकता है ?" जवाब मिलेगा, "(वोह) जो लोगों को मुआ़फ़ करने वाले थे।" मुनादी फिर तीसरी मरतबा ए'लान करेगा, "जिस का ज़िम्मा अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ निकलता है वोह खड़ा हो और जन्नत में दाख़िल हो जाए।" पस इतने इतने हज़ार खड़े होंगे और बिग़ैर ह़िसाबो किताब जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे।"

(المعجم الاوسط،الحديث١٩٩٨،ج١،ص٥٤٢)

★ **लिबासे सफ़र पहन कर अगर वक़्ते मकरूह न हो तो घर में चार रकअ़त नफ़्ल اَلۡحَمۡدُ व قُلۡ से पढ़ कर बाहर निकलें,** वोह रकअ़तें वापसी तक अहलो माल की निगहबानी करेंगी। फिर अपनी मस्जिद से रुख़्सत हों। अगर वक़्ते मकरूह न हो तो इस में भी दो रकअ़त नफ़्ल पढ़ लें।

www.dawateislami.net

★हम जब भी सफ़र पर रवाना हों तो हमें चाहिये कि हम अपने अहल व माल को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हवाले कर के जाएं। अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला ही सब से बेहतर हिफ़ाज़त करने वाला है। बल्कि हो सके तो अपने घर वालों को येह कलिमात कह कर सफ़र पर रवाना हों :

اَسْتَوْدِعُکَ اللّٰہَ الَّذِیْ لَایُضِیْعُ وَدَائِعَهٗ

तर्जमा : मैं तुम को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ह़वाले करता हूं जो सोंपी हुई अमानतों को ज़ाएअ़ नहीं करता।

(سنن ابن ماجه ، کتاب الجهاد ،باب تشییع الغزوة ووداعهم،الحدیث،۲۸۲۵،ج۳،ص۳۷۲)

★ **सफ़रे तिजारत करने वाले इस्लामी भाइयों को चाहिये कि येह पांच सूरतें पढ़ लिया करें।**

(1) قُلْ يٰاَيُّهَاالْكٰفِرُوْنَ आख़िर तक (2) اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ आख़िर तक (3) قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ आख़िर तक (4) قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ आख़िर तक (5) قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ आख़िर तक।

सरवरे आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰه تعالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना जुबैर बिन मुत़्अ़म رَضِیَ اللّٰه تعالٰی عَنْهُ से फ़रमाया : ऐ जुबैर (رَضِیَ اللّٰه تعالٰی عَنْهُ) क्या तुम चाहते हो कि जब तुम सफ़र में जाओ तो अपने साथियों में बेहतर और तोशए सफ़र में बढ़ कर रहो। (या'नी सफ़र में ख़ुशहाली और फ़ारिग़ुल बाली नसीब हो)

आप صَلَّى اللّٰه تعالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : येह पांच सूरतें पढ़ लिया करो।

www.dawateislami.net

(1) قُلْ یٰۤاَیُّهَا الْكٰفِرُوْنَ आख़िर तक। (2) اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَ الْفَتْحُ आख़िर तक।
(3) قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ आख़िर तक। (4) قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ आख़िर तक।
(5) قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ आख़िर तक।

हर सूरत को "بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ" से शुरूअ़ करो और इसी पर ख़त्म करो। (इस त़रह़ इन पांच सूरतों के साथ **बिस्मिल्लाह** शरीफ़ छे बार पढ़ी जाएगी।)

ह़ज़रते सय्यिदुना जुबैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं ने इन को पढ़ना शुरूअ़ किया तो मैं पूरे सफ़र में वापसी तक अपने साथियों में सब से ज़ियादा ख़ुशह़ाल और तोशए सफ़र में फ़ारिग़ुल बाल रहने लगा। (کنزالعمّال،ج٦،ص٣١٤،حدیث:١٧٤٥٠)

★ **ट्रेन या बस वग़ैरा में** اَللّٰهُ اَکْبَر, بِسْمِ اللّٰه **, और** سُبْحٰنَ اللّٰه **तीन तीन बार,** لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه **एक बार फिर कहे :**

﴿سُبْحٰنَ الَّذِیْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَ مَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِیْنَۙ(۱۳) وَ اِنَّاۤ اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ(۱۴)﴾
(پ٢٥،الزخرف١٣،١٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *पाकी है उसे जिस ने इस सुवारी को हमारे बस में कर दिया और येह हमारे बूते (क़ाबू) की न थी और बेशक हमें अपने रब* عَزَّوَجَلَّ *की त़रफ़ पलटना है।*

(फ़तावा र-ज़विय्यह, जि. 10, स. 728)

★ **जब कश्ती में सुवार हों तो येह दुआ़ पढ़ें,** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ डूबने से मह़फ़ूज़ रहेंगे।

﴿بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖؔىهَا وَ مُرْسٰىهَا ؕ اِنَّ رَبِّیْ لَغَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ(۴۱)﴾ (پ١٢،ھود:٤١)

www.dawateislami.net

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अल्लाह के नाम पर इस का चलना और इस का ठहरना बेशक मेरा रब ज़रूर बख़्शने वाला मेहरबान है ।*

(फ़तावा र-ज़विय्यह, जि. 10, स. 729)

★ **दौराने सफ़र ज़िक्रुल्लाह करते रहें** । ट्रेन या बस वग़ैरा में سُبْحٰنَ اللّٰہ **और** بِسْمِ اللّٰہِ, اَللّٰہُ اَکْبَر, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ सब तीन तीन बार, لَآاِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ एक बार ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

जब कभी सफ़र पर जाएं तो ज़िक्रो दुरूद का विर्द रखें या इस अ़ज़ीम मक़सद को पेशे नज़र रखते हुए इनफ़िरादी कोशिश करते रहें कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है ।"** अगर हम दौराने सफ़र ज़िक्रुल्लाह में मसरूफ़ रहेंगे तो फ़िरिश्ता रास्ते भर ह़िफ़ाज़त करेगा और अगर مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ गाने बाजे सुनते रहे या फ़ुज़ूल ठठ्ठा मस्ख़री करते रहे तो शैत़ान शरीके सफ़र होगा जैसा कि ताजदारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो शख़्स सफ़र के दौरान अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ तवज्जोह रखे और उस के ज़िक्र में मश्ग़ूल रहें, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये एक फ़िरिश्ता मुह़ाफ़िज़ मुक़र्रर कर देता है । और जो बेहूदा शे'रो शाइरी और फ़ुज़ूल बातों में मसरूफ़ रहे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के पीछे एक शैत़ान लगा देता है ।" (الحصن الحصین، کتاب ادعیۃ السفر، ص۸۳)

राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने का सवाब

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया,

www.dawateislami.net

"जिस शख़्स का चेहरा राहे ख़ुदा में गर्द आलूद हो जाए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे क़ियामत के दिन जहन्नम के धुवें से अमान अ़त़ा फ़रमाएगा और जिस शख़्स के क़दम राहे ख़ुदा में गर्द आलूद हो जाएं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के क़दमों को क़ियामत के दिन जहन्नम की आग से मह़फ़ूज़ फ़रमा देगा।" (المعجم الکبیر،رقم ٧٤٨٢،ج٨،ص٩٦)

★**जब कभी क़ाफ़िले की सूरत में सफ़र पर जाएं तो मिल जुल कर एक ही जगह उतरें**। क्यूंकि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू षा'लबा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि लोग जब मन्ज़िल पर उतरते तो मुन्तशिर हो कर ठहरते थे। सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तुम्हारा मुन्तशिर हो कर ठहरना शैत़ान की जानिब से है।" इस के बा'द सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان जब कभी किसी मन्ज़िल पर उतरते तो मिल कर ठहरते।

(سنن ابی داؤد،کتاب الجہاد،باب مایؤمر من انضمام العسکر،الحدیث ٢٦٢٨،ج٣،ص٥٨)

★**दौराने सफ़र अगर कोई ह़ाजत मन्द मिल जाए तो उस की ह़ाजत रवाई करनी चाहिये**। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस में षवाब ज़ियादा होगा कि बसा अवक़ात मुसाफ़िर ख़ुद भी तो ह़ाजत मन्द हो जाता है फिर भी वोह दूसरों की मदद करेगा तो उस के अज्रो षवाब का कौन अन्दाज़ा कर सकता है ? ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, हम एक सफ़र में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ थे कि एक आदमी अपनी सुवारी पर आया। और दाएं बाएं उसे फिराने लगा तो म-दनी ताजदार हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

www.dawateislami.net

"जिस के पास फ़ालतू सुवारी है तो वोह उसे दे दे जिस के पास सुवारी नहीं है और जिस के पास फ़ालतू ज़ादे राह हो तो वोह उस को दे दे जिस के पास ज़ादे राह नहीं है ।" हत्ता कि हम ने येह महसूस किया कि हम में से किसी का फ़ालतू माल पर कोई हक़ नहीं है । (سنن ابی داود،ج۲، ص۱۷۵،حدیث ۱۶۶۳)

★ **जब सीढ़ियों पर चढ़ें या ऊंची जगह की त़रफ़ चलें, या हमारी बस वग़ैरा किसी ऐसी सड़क से गुज़रे जो ऊंचाई की त़रफ़ जा रही हो तो "اَللّٰہُ اَکْبَر" कहना सुन्नत है** और जब सीढ़ियों से उतरें या ढलान की त़रफ़ चलें तो "سُبْحٰنَ اللّٰہ" कहना सुन्नत है । ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُ से मरवी है, फ़रमाया : "जब हम बुलन्दी पर चढ़ते तो "اَللّٰہُ اَکْبَر" कहते और जब पस्त (ढलान वाली) जगह पर उतरते तो "سُبْحٰنَ اللّٰہ" कहते थे ।"

(صحیح البخاری،ج۲، ص۳۰۷، حدیث:۲۹۹۴)

★ **मुसाफ़िर को चाहिये कि वोह दुआ़ से ग़फ़लत न करे कि येह जब तक सफ़र में है इस की दुआ़ क़बूल होती है** बल्कि जब तक घर नहीं पहुंचता उस वक़्त तक दुआ़ मक़्बूल है । इसी त़रह़ मज़्लूम की दुआ़ और मां बाप की अपनी औलाद के ह़क़ में दुआ़ भी क़बूल होती है । ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरह رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना, बाइषे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया :

www.dawateislami.net

"तीन क़िस्म की दुआएं मुस्तजाब (मक़्बूल) हैं। इन की क़बूलिय्यत में कोई शक नहीं। (1) मज़्लूम की दुआ (2) मुसाफ़िर की दुआ (3) बाप की अपने बेटे के लिये दुआ।"

(جامع الترمذی،ج۵،ص۲۸۰،حدیث:۳۴۵۹)

★ **मन्ज़िल पर उतरें तो वक़्तन फ़ वक़्तन येह दुआ पढ़ें** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **हर नुक़सान से बचेंगे।** दुआ येह है :

"اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّآمَّاتِ مِنْ شَرِّمَا خَلَقَ"

तर्जमा : *अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ *के कलिमाते ताम्मह की पनाह मांगता हूं उस के शर से जिसे उस ने पैदा किया।* (کنز العمال،ج۶،ص۳۰۱،حدیث:۱۷۵۰۸)

★**जब दुश्मन का ख़ौफ़ हो। सूरए "لِاِيْلٰفِ" पढ़ लें।** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ हर बला से अमान मिलेगी।

(الحصن الحصین،کتاب ادعیۃ السفر،ص۸۰)

★ **जब किसी मुश्किल में मदद की ज़रूरत पड़े तो ह़दीषे पाक में है इस त़रह़ तीन बार पुकारें :** اَعِيْنُوْنِى يَا عِبَادَ اللّٰه

तर्जमा : *ऐ अल्लाह के बन्दो ! मेरी मदद करो।*

(المرجع السابق،ص۸۲)

★ **सफ़र से वापसी पर घर वालों के लिये कोई तोह़फ़ा ले आएं कि येह सुन्नते मुबारका है।** सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब सफ़र से कोई वापस आए तो घर वालों के लिये कुछ न कुछ हदिया लाए, अगर्चे अपनी झोली में पथ्थर ही डाल लाए। (کنز العمال،ج۶،ص۳۰۱،حدیث:۱۷۵۰۲)

www.dawateislami.net

★ **सफ़र से वापसी पर अपनी मस्जिद में दोगाना** (या'नी दो रकअ़त नफ़्ल) **पढ़ना सुन्नत है।** ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ताजदारे मदीना ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जब सफ़र से वापस तशरीफ़ लाते तो पहले मस्जिद में तशरीफ़ ले जाते और वहां बैठने से पहले दो रकअ़त (नमाज़ नफ़्ल) अदा फ़रमाते।

(صحیح البخاری،ج۲،ص۳۳۶،حدیث:۳۰۸۸)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

नेक बनने के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये। **म-दनी इन्आ़मात** पर **अ़मल** करते रहिये, **दा'वते इस्लामी** का हफ़्तावार इजतिमाअ़ जिस मस्जिद में, जिस नमाज़ के बा'द शुरूअ़ होता हो वोह नमाज़ उसी मस्जिद में तकबीरे ऊला के साथ अदा कर के इजतिमाअ़ में आख़िर तक शिर्कत फ़रमाइये।

हर इस्लामी भाई को चाहिये कि ज़िन्दगी में कम अज़ कम 12 माह और हर 12 माह में यक मुश्त कम अज़ कम 30 दिन नीज़ हर 30 दिन में कम अज़ कम 3 दिन सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी क़ाफ़िलों में ज़रूर सफ़र करे।

ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें जब कभी सफ़र दर पेश हो तो पूरा सफ़र सुन्नतों के मुत़ाबिक करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा और हमें बार बार ह़-रमैन त़य्यिबैन का मुबारक सफ़र नीज़ आ़शिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र नसीब फ़रमा।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

★★★★★★

www.dawateislami.net

क़ाफ़िले में चलो

(कलाम : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی)

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो
सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो

चाहो गर ब-रकतें क़ाफ़िले में चलो
पाओगे अ़-ज़-मतें क़ाफ़िले में चलो

होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो
ख़त्म हों शामतें क़ाफ़िले में चलो

त़यबा की जुस्त्जू ह़ज की गर आरज़ू
है बता दूं तुम्हें क़ाफ़िले में चलो

उल्फ़ते मुस्त़फ़ा और ख़ौफ़े ख़ुदा
चाहिये गर तुम्हें क़ाफ़िले में चलो

गर मदीने का ग़म चाहिये चश्मे नम
लेने येह ने'मतें क़ाफ़िले में चलो

क़र्ज़ होगा अदा आ के मांगो दुआ़
पाओगे ब-रकतें क़ाफ़िले में चलो

दुख का दरमां मिले आएंगे दिन भले
ख़त्म हों गर्दिशें क़ाफ़िले में चलो

ग़म के बादल छटें ख़ूब ख़ुशियां मिलें
दिल की कलियां खिलें क़ाफ़िले में चलो

हो क़वी ह़ाफ़िज़ा ठीक हो हाज़िमा
काम सारे बनें क़ाफ़िले में चलो

इ़ल्म ह़ासिल करो जहल ज़ाइल करो
पाओगे राह़तें क़ाफ़िले में चलो

क़र्ज़ का बार हो, बे कसी यार हो
चाहो गर राह़तें क़ाफ़िले मे चलो

गर्चे हों गर्मियां या कि हों सर्दियां
चाहे हों बारिशें क़ाफ़िले में चलो

www.dawateislami.net

कूदें गर बिज्लियां या चलें आंधियां चाहे ओले पड़ें क़ाफ़िले में चलो
बारह मह के लिये तीस दिन के लिये बारह दिन दे ही दें क़ाफ़िले में चलो
सुन्नतें सीखने तीन दिन के लिये हर महीने चलें क़ाफ़िले में चलो
ऐ मेरे भाइयो ! रट लगाते रहो क़ाफ़िले में चलें क़ाफ़िले में चलो
फ़ोन पर बात हो या मुलाक़ात हो सब से कहते रहें क़ाफ़िले में चलो
आप बाज़ार में हों या दफ़्तर में हों सब से कहते रहें क़ाफ़िले में चलो
दर्स दें या सुनें या बयां जो करें उस में येह भी कहें क़ाफ़िले में चलो
आ़शिक़ाने रसूल उन से हम म-दनी फूल आओ लेने चलें क़ाफ़िले में चलो
आ़शिक़ाने रसूल आए लेने दुआ़ आओ मिल कर चलें क़ाफ़िले में चलो
आ़शिक़ाने रसूल आए हैं मरह़बा ख़ैर ख़्वाही करें क़ाफ़िले में चलो
आप जब भी सुनें क़ाफ़िला आ गया ख़ैर ख़्वाही करें क़ाफ़िले में चलो
खाना ले के चलें ठन्डा शरबत भी लें ख़ैर ख़्वाही करें क़ाफ़िले में चलो
उन पे हो रह़मतें क़ाफ़िले का सुनें ख़ैर ख़्वाही करें क़ाफ़िले में चलो
बख़्श दे मेरे मौला तू उन को कि जो ख़ैर ख़्वाही करें क़ाफ़िले में चलो
या ख़ुदा हर घड़ी रट हो अ़त्तार की क़ाफ़िले में चलें क़ाफ़िले में चलो

★★★★★★

www.dawateislami.net

सुरमा लगाने की सुन्नतें और आदाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

सुरमा लगाना हमारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की निहायत ही प्यारी प्यारी और मीठी मीठी सुन्नत है। सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم जब सोने लगते तो अपनी मुबारक आंखों में सुरमा लगाया करते। लिहाज़ा हमें भी सोने से पहले इत्तिबाए़ सुन्नत की निय्यत से अपनी आंखों में सुरमा लगाना चाहिये। इस से हमें सुरमा लगाने की सुन्नत का भी षवाब ह़ासिल होगा और साथ ही साथ इस के दुन्यवी फ़वाइद भी ह़ासिल होंगे।

सोते वक़्त सुरमा डालना सुन्नत है

सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم सुरमा सोते वक़्त इस्ति'माल फ़रमाते थे चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि ताजदारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم सोने से पहले हर आंख में सुरमए इषमिद की तीन सलाइयां लगाया करते थे।

(جامع الترمذی، کتاب اللباس، باب ماجاء فی الاکتحال، الحدیث ۱۷۶۳، ج۳، ص۲۹۴)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़दीषे पाक से मा'लूम हुवा कि सुरमा सोते वक़्त इस्ति'माल करना सुन्नत है।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 180)

लिहाज़ा हम रात को जब भी सोया करें हमें सुरमा लगाना न भूलना चाहिये। सोते वक़्त सुरमा लगाने में येह मस्लह़त है कि सुरमा ज़ियादा देर तक आंखों में रहता है और आंखों के मसामात में सरायत कर के आंखों को फ़ाएदा पहुंचाता है।

सुरमए इषमिद बेहतर है :

इब्ने माजह की रिवायत में है : "तमाम सुरमों में बेहतर सुरमा "इषमिद" है कि येह निगाह को रोशन करता और पलकें उगाता है।"

(سنن ابن ماجہ، کتاب الطب، باب الکحل بالاثمد، الحدیث ۳۴۹۷، ج۴، ص ۱۱۵)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सुरमए इषमिद की फ़ज़ीलत के लिये येही काफ़ी है कि येह सुरमा आमिना बीबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के दुलारे, हम बे कसों के सहारे, मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को पसन्द है। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इसे ख़ुद भी इस्ति'माल फ़रमाया और अपने ग़ुलामों को इस के इस्ति'माल की तरग़ीब भी दिलाई और इस के फ़वाइद भी इर्शाद फ़रमाए। लिहाज़ा हो सके तो सुरमए इषमिद ही इस्ति'माल करना चाहिये। अह़ादीसे बाला से येह भी मा'लूम हुवा कि सुरमए इषमिद बीनाई को तेज़ करने के साथ साथ पलकों के बाल भी उगाता है। कहा जाता है कि इषमिद इस्फ़हान में पाया जाता है। उ-लमाए किराम फ़रमाते हैं कि इस का रंग सियाह होता है और मश्रिक़ी ममालिक में पैदा होता है। बहर ह़ाल इषमिद का सुरमा मुयस्सर आ जाए तो येही अफ़्ज़ल है वरना किसी क़िस्म का भी सुरमा डाला जाए सुन्नत अदा हो जाएगी।

सुरमा लगाने का त़रीक़ा

ह़दीषे बाला में येह भी इर्शाद फ़रमाया गया है कि हमारे प्यारे सरकार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم दोनों मुक़द्दस आंखों में सुरमे की तीन तीन सलाइयां इस्ति'माल फ़रमाते थे और अकषर इसी पर अ़मल था। ता हम बा'ज़ रिवायात में सीधी आंख मुबारक में तीन सलाइयां और बाईं में दो का भी ज़िक्र आया है और "शमाइले रसूल صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم" में इसी त़रह़ बयान किया गया है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हर आंख मुबारक में दो दो सलाइयां सुरमे की डालते और एक सलाई को दोनों मुबारक आंखों में लगाते। (وسائل الوصول الی شمائل الرسول صلی اللہ علیہ واٰلہ وسلم، الفصل الثانی فی صفۃ بصرہ....الخ، ص ۷۷)

लिहाज़ा हमें मुख़्तलिफ़ अवक़ात में मुख़्तलिफ़ त़रीक़े पर सुरमा इस्ति'माल करना चाहिये। या'नी कभी दोनों आंखों में तीन तीन सलाइयां कभी दाईं आंख में तीन और बाईं में दो, तो कभी दोनों आंखों में दो दो और फिर आख़िर में एक सलाई को सुरमे वाली कर के बारी बारी दोनों आंखों में लगाएं। इस त़रह़ करने से तीनों सुन्नतें अदा हो जाएंगी।

येह बात याद रखें कि तकरीम के जितने भी काम होते सब हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم सीधी जानिब से शुरूअ़ किया करते, लिहाज़ा पहले सीधी आंख में सुरमा लगाएं फिर बाईं आंख में। (المرجع السابق، الفصل الثالث، فی صفۃ شعرہ....الخ، ص ۸۱)

www.dawateislami.net

"इषमिद" के चार हुरूफ़ की निस्बत से सुरमा लगाने के 4 म-दनी फूल

★ पेशकर्दा हर हर म-दनी फूल को **सुन्नते रसूले** मक़्बूल عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर मह़मूल न फ़रमाइये, इन में सुन्नतों के इलावा बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِیْن से मन्क़ूल **म-दनी फूल** का भी शुमूल है। जब तक यक़ीनी त़ौर पर मा'लूम न हो किसी अ़मल को "**सुन्नते रसूल**" नहीं कह सकते।

﴾1﴿ **सुनने** इब्ने माजह की रिवायत में है, "तमाम सुरमों में बेहतर सुरमा **इषमिद (إِثْـمِد)** है कि येह निगाह को रोशन करता और पल्कें उगाता है।" (سُنَن ابن ماجه ج٤ ص ١١٥ حديث ٣٤٩٧)

﴾2﴿ पथ्थर का सुरमा इस्ति'माल करने में ह़रज नहीं और सियाह सुरमा या काजल ब क़स्दे ज़ीनत (या'नी ज़ीनत की निय्यत से) मर्द को लगाना मकरूह है और ज़ीनत मक़्सूद न हो तो कराहत नहीं। (فتاوٰی عالمگیری ج٥ ص٣٥٩)

﴾3﴿ सुरमा सोते वक़्त इस्ति'माल करना सुन्नत है।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 180)

﴾4﴿ सुरमा इस्ति'माल करने के तीन मन्क़ूल त़रीक़ों का ख़ुलासा पेशे ख़िदमत है : (1) कभी दोनों आंखों में तीन तीन सलाइयां (2) कभी दाईं (सीधी) आंख में तीन और बाईं (उल्टी) में दो,

www.dawateislami.net

(3) तो कभी दोनों आंखों में दो दो और फिर आख़िर में एक सलाई को सुरमे वाली कर के उसी को बारी बारी दोनों आंखों में लगाइये । (انظر:شُعَبُ الْاِیمان،ج۵،ص ۲۱۸۔ ۲۱۹)

इस त़रह़ करने से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ तीनों पर अ़मल होता रहेगा ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तकरीम के जितने भी काम होते सब हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم सीधी जानिब से शुरूअ़ किया करते, लिहाज़ा पहले सीधी आंख में सुरमा लगाइये फिर बाईं आंख में ।

सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है ।

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो   सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो   पाओगे ब-र-कतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب !   صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

*ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें हर बार सोते वक़्त सुरमा लगाने की सुन्नत भी अदा करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा ।*

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہُ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

अ़जब नहीं कि लिखा लौह़ का नज़र आए !
जो नक़्शे पा का लगाऊं गुबार आंखों में

★★★★★★

www.dawateislami.net

छींकने की सुन्नतें और आदाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

छींकना भी एक अहम अम्र है इस की भी सुन्नतें और आदाब हैं। लेकिन अफ़्सोस ! म-दनी माह़ोल से दूर रहने के बाइ़ष मुसलमानों की अक्सरिय्यत को इस सिल्सिले में कोई मा'लूमात नहीं होतीं, जहां छींक आई ज़ोर ज़ोर से "आक्छी आक्छी" कर लिया। नाक भर आई तो सिनक ली और बस। ऐसा नहीं है, इस की भी सुन्नतें और आदाब हमें सीखने चाहिएं।

★ छींक के वक़्त सर झुकाएं, मुंह छुपाएं और आवाज़ आहिस्ता निकालें। छींक की आवाज़ बुलन्द करना ह़माक़त है।

(ردالمحتار،ج۹،ص٦٨٤)

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित व शद्दाद बिन औस व ह़ज़रते वाषिला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "किसी को डकार या छींक आए तो आवाज़ बुलन्द न करे कि शैत़ान को येह बात पसन्द है कि इन में आवाज़ बुलन्द की जाए।" (شعب الایمان،ج۷،ص۳۲،حدیث:۹۳۵۵)

★ जब छींक आए और "اَلْحَمْدُ لِلّٰہ" कहेंगे तो फ़िरिश्ते "رَبِّ الْعٰلَمِیْن" कहेंगे। अगर आप "اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْن" कहेंगे तो मा'सूम फ़िरिश्ते येह दुआ़ करेंगे, یَرْحَمُکَ اللّٰہ (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझ पर रह़्म फ़रमाए)।

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब किसी को छींक आए और वोह "اَلْحَمْدُ لِلّٰہ" कहे तो फ़िरिश्ते कहते हैं "رَبِّ الْعٰلَمِیْن" और वोह "اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْن" कहता है, तो फ़िरिश्ते कहते हैं "یَرْحَمُکَ اللّٰہ" या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझ पर रह़म फ़रमाए ।" (طبرانی اوسط،الحدیث ۳۳۷۱،ج۲،ص۳۰۵)

"اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْن" के सत्तरह हुरूफ़ की निस्बत से छींकने के आदाब के 17 म-दनी फूल

★ पेशकर्दा हर हर म-दनी फूल को **सुन्नते रसूल** मक़्बूल عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर महमूल न फ़रमाइये, इन में सुन्नतों के इलावा बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَھُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن से मन्क़ूल **म-दनी फूल** का भी शुमूल है । जब तक यक़ीनी तौर पर मा'लूम न हो किसी अ़मल को "**सुन्नते रसूल**" नहीं कह सकते ।

दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم :

《1》 **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को छींक पसन्द है और जमाही ना पसन्द । (بُخاری ج ٤ ص ١٦٣ حدیث: ٦٢٢٦) 《2》 जब किसी को छींक आए और वोह اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहे तो फ़िरिश्ते कहते हैं : رَبِّ الْعٰلَمِیْن । और अगर वोह رَبِّ الْعٰلَمِیْن कहता है तो फ़िरिश्ते कहते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझ पर रह़म फ़रमाए । (اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیْر ج ١١ ص ٣٥٨ حدیث: ١٢٢٨٤)

《3》 छींक के वक़्त सर झुकाइये, मुंह छुपाइये और आवाज़ आहिस्ता निकालिये, छींक की आवाज़ बुलन्द करना ह़माक़त है । (رَدُّ الْمُحتار ج ٩ ص ٦٨٤) 《4》 छींक आने पर اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहना चाहिये

www.dawateislami.net

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान सफ़ह़ा 3 पर त़ह़त़ावी के ह़वाले से छींक आने पर ह़म्दे इलाही को सुन्नते मुअक्कदा लिखा है) बेहतर येह है कि اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ या اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی کُلِّ حَال कहे ﴿5﴾ सुनने वाले पर वाजिब है कि फ़ौरन "یَرْحَمُکَ اللہ" (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझ पर रह़्म फ़रमाए) कहे। और इतनी आवाज़ से कहे कि छींकने वाला ख़ुद सुन ले। (बहारे शरीअ़त, जिल्द सिवुम, ह़िस्सा : 16, स. 472) ﴾6﴿ जवाब सुन कर छींकने वाला कहे : "یَغْفِرُ اللہُ لَنَا وَلَکُمْ" (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारी और तुम्हारी मग़फ़िरत फ़रमाए) या येह कहे : "یَھْدِیْکُمُ اللہُ وَیُصْلِحُ بَالَکُمْ" (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें हिदायत दे और तुम्हारा ह़ाल दुरुस्त करे)। (عالمگیری، ج٥، ص ٣٢٦) ﴾7﴿ जो कोई छींक आने पर اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی کُلِّ حَال कहे और अपनी ज़बान सारे दांतों पर फैर लिया करे तो اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ दांतों की बीमारियों से मह़फ़ूज़ रहेगा। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 396) ﴾8﴿ ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं : जो कोई छींक आने पर اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی کُلِّ حَال कहे तो वोह दाढ़ और कान के दर्द में कभी मुबतला नहीं होगा। (مِرْقَاۃُ الْمَفَاتِیْح ج٨ ص٤٩٩) ﴾9﴿ छींकने वाले को चाहिये कि ज़ोर से ह़म्द कहे ताकि कोई सुने और जवाब दे। (رَدُّالْمُحتار ج ٩ ص ٦٨٤) ﴾10﴿ छींक का जवाब एक मरतबा वाजिब है, दूसरी बार छींक आए और वोह اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहे तो दोबारा जवाब वाजिब नहीं बल्कि मुस्तह़ब है। (عالمگیری، ج٥، ص٣٢٦) ﴾11﴿ जवाब उस सूरत में वाजिब होगा जब छींकने वाला اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहे और ह़म्द न करे तो जवाब नहीं। (बहारे शरीअ़त,जिल्द सिवुम, ह़िस्सा : 16, स. 477) ﴾12﴿ ख़ुत्बे के वक़्त किसी को

www.dawateislami.net

छींक आई तो सुनने वाला उस को जवाब न दे। (फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, जि. 2, स. 377) «13» कई इस्लामी भाई मौजूद हों तो बा'ज़ हाज़िरीन ने जवाब दे दिया तो सब की त़रफ़ से जवाब होगा मगर बेहतर येही है कि सारे जवाब दें। (رَدُّالْمُحتار، ج ۹، ص ٦٨٤) «14» दीवार के पीछे किसी को छींक आई और उस ने اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहा तो सुनने वाला उस का जवाब दे। (ایضاً) «15» नमाज़ में छींक आए तो सुकूत करे (या'नी ख़ामोश रहे) और اَلْحَمْدُ لِلّٰه कह लिया तो भी नमाज़ में ह़रज नहीं और अगर उस वक़्त ह़म्द न की तो फ़ारिग़ हो कर कहे। (عالمگیری، ج ۱ ص ۹۸) «16» आप नमाज़ पढ़ रहे हैं और किसी को छींक आई और आप ने जवाब की निय्यत से اَلْحَمْدُ لِلّٰه कह लिया तो आप की नमाज़ टूट जाएगी। (ایضاً) «17» काफ़िर को छींक आई और उस ने اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहा तो जवाब में يَهْدِيْكَ اللّٰه (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे हिदायत दे) कहा जाए। (رَدُّالْمُحتار ج۹ ص ٦٨٤) सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللّٰهُ تعالٰى علٰى محمَّد

*ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें छींक की सुन्नतों और आदाब पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा।*

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَبَارَکَ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

नाख़ुन, ह़जामत, मूए बग़ल वग़ैरा से मु-तअ़ल्लिक़ सुन्नतें और आदाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

हमारे प्यारे सरकार, म-दनी ताजदार صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم सफ़ाई को बे ह़द पसन्द फ़रमाते हैं, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "اَلطُّهُوْرُ نِصْفُ الْاِيْمَانِ या'नी सफ़ाई आधा ईमान है।" (جامع الترمذی،کتاب الدعوات،باب۹۲،الحدیث۳۵۳۰،ج۵،ص۳۰۸)

चुनान्चे हर मुसलमान को चाहिये कि अपने ज़ाहिर व बात़िन दोनों की सफ़ाई का ख़याल रखे। ज़ाहिर की सफ़ाई का जहां तक तअ़ल्लुक है तो वोह येह है कि अपना जिस्म और लिबास वग़ैरा नजासत से पाक रखने के साथ साथ मैल कुचैल वग़ैरा से भी साफ़ रखना चाहिये। नीज़ अपने सर और दाढ़ी के बालों को भी दुरुस्त रखें। नाख़ुन भी ज़ियादा न बढ़ने दें कि इन में मैल कुचैल भर जाता है और वोह खाना वग़ैरा खाने में पेट के अन्दर पहुंचता है जिस के सबब त़रह़ त़रह़ की बीमारियां पैदा होने का अन्देशा रहता है। नीज़ बग़ल व ज़ेरे नाफ़ के बाल भी साफ़ करते रहना चाहिये। रहा बात़िन की सफ़ाई का मुआ़मला तो अपने बात़िन को भी कीनए मुस्लिम, ग़ुरूर व तकब्बुर, बुग़्ज़ व ह़सद, वग़ैरा वग़ैरा रज़ाइल से पाक व साफ़ रखना ज़रूरी है। बात़िन की सफ़ाई के लिये अच्छी सोह़बत बे ह़द ज़रूरी है। ज़ाहिरी सफ़ाई या'नी नाख़ुन, मूए बग़ल वग़ैरा की सफ़ाई के मु-तअ़ल्लिक़ म-दनी फूल मुलाह़ज़ा हों।

www.dawateislami.net

★ **चालीस दिन के अन्दर अन्दर इन कामों को ज़रूर कर लें, मूंछें और नाख़ुन तराशना, बग़ल के बाल उखाड़ना और मूए ज़ेरे नाफ़ मूंडना।**

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मूंछें और नाख़ुन तरश्वाने और बग़ल के बाल उखाड़ने और मूए ज़ेरे नाफ़ मूंडने में हमारे लिये येह वक़्त मुक़र्रर किया गया है कि चालीस दिन से ज़ियादा न छोड़ें।

(صحیح مسلم،کتاب الطھارۃ،باب فی خصال الفطرۃ،الحدیث۲۵۸،ص۱۵۳)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़दीषे बाला से पता चला कि चालीस दिन के अन्दर अन्दर येह काम ज़रूर कर लेना चाहिये। हफ़्ते में एक बार नहाना और बदन को साफ़ सुथरा रखना और मूए ज़ेरे नाफ़ दूर करना मुस्तह़ब है। पन्दरहवें रोज़ करना भी जाइज़ है और चालीस रोज़ से ज़ियादा गुज़ार देना मकरूह व ममनूअ़। (बहारे शरीअ़त, जिल्द सिवुम, ह़िस्सा : 16, स. 584) हो सके तो हर जुमुआ़ को येह काम कर ही लेने चाहिएं क्यूंकि एक ह़दीषे मुबारक में है कि हुज़ूर ताजदारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जुमुआ़ के दिन नमाज़ के लिये जाने से पहले मूंछें कतरवाते और नाख़ुन तरशवाते।

(شعب الایمان،باب فی الطھارات،فصل الوضوء،الحدیث۲۷۶۳،ج۳،ص۲۴)

★ **बग़ल के बालों को उखाड़ना सुन्नत है** और मूंडना गुनाह भी नहीं। (درمختار مع ردالمحتار،کتاب الحظر والاباحۃ،فصل فی البیع،ج۹،ص۶۷۱)

www.dawateislami.net

★ **नाक के बाल न उखाड़ें** कि इस से मरज़े आकिला पैदा हो जाने का ख़ौफ़ है।

(الفتاوی الھندیہ،کتاب الکراھیۃ،الباب التاسع عشر فی الختان والخصا...الخ،ج۵،ص۳۵۸)

★ **गरदन के बाल मूंडना मकरूह है।** (المرجع السابق،ص۳۵۷)

या'नी जब कि सर के बाल न मुंडाएं सिर्फ़ गरदन ही के मुंडाएं। हां, अगर पूरे सर के बाल मुंडाएं तो इस के साथ गरदन के भी मुंडा दें।

नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़जामत के सिवा गरदन के बाल मुंडाने से मन्अ़ फ़रमाया। (المعجم الاوسط،الحدیث۲۹۶۹،ج۲،ص۱۸۷)

★ **अब्रू के बाल अगर बड़े हो जाएं तो उन को तरश्वा सकते हैं।**

(درمختار مع ردالمحتار،کتاب الحظر والاباحۃ،فصل فی البیع،ج۹،ص۶۷۰)

★ **दाढ़ी का ख़त बनवाना जाइज़ है।** (ردالمحتار،ج۴،ص۱۷۱)

इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 22 सफ़ह़ा 296 पर लिखते हैं : "दाढ़ी क़लमों के नीचे से कन्पटियों, जबड़ों, ठोड़ी पर जमती है और अ़र्ज़न इस का बालाई ह़िस्सा कानों और गालों के बीच में होता है। जिस त़रह़ बा'ज़ लोगों के कानों पर रोंगटे होते हैं वोह दाढ़ी से ख़ारिज हैं, यूं ही गालों पर जो ख़फ़ीफ़ बाल किसी के कम किसी के आंखों तक निकलते हैं वोह भी दाढ़ी में दाख़िल नहीं। येह बाल क़ुदरती तौ़र पर मूए रीश से जुदा व मुमताज़ होते हैं। इस का मुसल्सल रास्ता जो क़लमों के नीचे से एक मख़रूत़ी शक्ल पर जानिबे ज़क़न जाता है येह बाल इस राह से जुदा होते हैं, न इन में मूए

www.dawateislami.net

मह़ासिन के मिस्ल क़ुव्वते नामिया, इन के साफ़ करने में कोई ह़रज नहीं बल्कि बसा अवक़ात इन की परवरिश बाइ़से तश्वियए ख़ल्क़ व तक़्बीहे़ सूरत होती है जो शरअ़न हरगिज़ पसन्दीदा नहीं।"

★ **हाथ, पाउं और पेट के बाल दूर करना चाहें तो मन्अ़ नहीं।**

(बहारे शरीअ़त, जिल्द सिवुम, ह़िस्सा : 16, स. 585)

★ **सीना और पीठ के बाल काटना या मूंडना अच्छा नहीं।**

(المرجع السابق)

★ **दाढ़ी बढ़ाना सु-नने अम्बिया व मुर्सलीन** عَلَيْهِمُ السَّلَام **से है।** (المرجع السابق) मुंडाना या एक मुश्त से कम करना ह़राम है। "हां एक मुश्त से ज़ाइद हो जाए तो जितनी ज़ियादा है उस को कटवा सकते हैं।" (درمختار مع ردالمحتار،ج۹ص۶۷۱)

★ **मूंछों के दोनों कनारों के बाल बड़े बड़े हों तो ह़रज नहीं।** बा'ज़ अस्लाफ़ رَحِمَهُمُ الله (या'नी गुज़श्ता बुज़ुर्गों) की मूंछें इस क़िस्म की थीं। (الفتاوی الھندیۃ،کتاب الکراھیۃ،الباب التاسع عشر فی الختان والخصاء...الخ،ج۵ص۳۵۸)

★ **मर्द को चाहिये कि मूए ज़ेरे नाफ़ उस्तरे वग़ैरा से मूंड दे।**

(बहारे शरीअ़त, जिल्द सिवुम, ह़िस्सा : 16, स. 584)

★ **इस काम के लिये बाल सफ़ा पावडर वग़ैरा का इस्ति'माल मर्द व औ़रत दोनों को जाइज़ है।** (المرجع السابق)

★ **मूए ज़ेरे नाफ़ को नाफ़ के ऐ़न नीचे से मूंडना शुरूअ़ करें।**

(المرجع السابق)

★ **जनाबत की ह़ालत में** (या'नी ग़ुस्ल फ़र्ज़ होने की सूरत में) **न कहीं के बाल मूंडें न ही नाख़ुन तराशें** कि ऐसा करना मकरूह है। (المرجع السابق،ص۵۸۵)

www.dawateislami.net

★ **इस्लामी बहनें अपने सर वग़ैरा के बाल ऐसी जगह न डालें जहां ग़ैर महरम की नज़र पड़े।**

(माखूज़ बहारे शरीअत, जिल्द सिवुम, हिस्सा : 16, स. 449)

★ **इन्सान के बाल** (ख़्वाह वोह जिस्म के किसी भी हिस्से के हों) **नाखुन, हैज़ का लत्ता** (या'नी वोह कपड़ा जिस से हैज़ का ख़ून साफ़ किया गया हो) **और इन्सानी ख़ून इन चारों चीज़ों को दफ़्न कर देने का हुक्म है।** (درمختار و ردالمحتار،ج٩،ص٦٦٨)

"या नबिय्यल्लाह" के नौ हुरूफ़ की निस्बत से नाखुन काटने के 9 म-दनी फूल

★ पेशकर्दा हर हर म-दनी फूल को **सुन्नते रसूले** मक़्बूल عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर मह़मूल न फ़रमाइये, इन में सुन्नतों के इलावा बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن से मन्क़ूल **म-दनी फूल** का भी शुमूल है। जब तक यक़ीनी तौर पर मा'लूम न हो किसी अ़मल को "**सुन्नते रसूल**" नहीं कह सकते।

﴾1﴿ जुमुआ़ के दिन नाखुन काटना **मुस्तह़ब** है। हां अगर ज़ियादा बढ़ गए हों तो जुमुआ़ का इन्तिज़ार न कीजिये (دُرِّمُختار،ج٩،ص٦٦٨) **सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा** मौलाना मुहम्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى बहारे शरीअ़त जिल्द सिवुम हिस्सा 16 सफ़हा 583 में फ़रमाते हैं : मन्क़ूल है कि जो **जुमुआ़** के रोज़ नाखुन तरशवाए (काटे) **अल्लाह** तआ़ला उस को दूसरे जुमुआ़ तक बलाओं से मह़फ़ूज़ रखेगा और तीन दिन ज़ाइद या'नी दस दिन तक। (مرقاة المفاتيح ج٨ص٢١٢ تحت الحديث٤٤٢٢)

www.dawateislami.net

एक रिवायत में येह भी है कि जुमुआ़ के दिन नाखु़न तरशवाए (काटे) तो **रह़मत आएगी और गुनाह जाएंगे** (دُرِّمُختار وردالمحتار ج٩ ص٦٦٨) ﴾2﴿ हाथों के नाखु़न काटने के मन्कू़ल त़रीके़ का खु़लासा पेशे ख़िदमत है : पहले सीधे हाथ की शहादत की उंगली से शुरूअ़ कर के तरतीब वार छुंगलिया (या'नी छोटी उंगली) समेत नाखु़न काटे जाएं मगर अंगूठा छोड़ दीजिये। अब उलटे हाथ की छुंगलिया (या'नी छोटी उंगली) से शुरूअ़ कर के तरतीब वार अंगूठे समेत नाखु़न काट लीजिये। अब आख़िर में सीधे हाथ के अंगूठे का नाखु़न काटा जाए । (دُرِّمُختار وردالمحتار، ج٩، ص٦٧٠ واِحیاءُ العُلوم، ج١، ص١٩٣) ﴾3﴿ पाउं के नाखु़न काटने की कोई तरतीब मन्कू़ल नहीं, बेहतर येह है कि सीधे पाउं की छुंगलिया (या'नी छोटी उंगली) से शुरूअ़ कर के तरतीब वार अंगूठे समेत नाखु़न काट लीजिये फिर उलटे पाउं के अंगूठे से शुरूअ़ कर के छुंगलिया समेत नाखु़न काट लीजिये। (دُرِّمُختار، ج٩، ص٦٧٠)

﴾4﴿ जनाबत की ह़ालत (या'नी ग़ुस्ल फ़र्ज़ होने की सूरत) में नाखु़न काटना मकरूह है। (فتاوٰی ھندیہ، ج٥، ص٣٥٨) ﴾5﴿ दांत से नाखु़न काटना मकरूह है और इस से बरस या'नी **कोढ़** के मरज़ का अन्देशा है। (المرجع السابق) ﴾6﴿ नाखु़न काटने के बा'द उन को दफ़्न कर दीजिये और अगर इन को फेंक दें तो भी ह़रज नहीं। (المرجع السابق) ﴾7﴿ नाखु़न का तराशा (या'नी कटे हुए नाखु़न) बैतुल ख़ला या ग़ुस्लख़ाने में डाल देना मकरूह है कि इस से **बीमारी** पैदा होती है। (المرجع السابق) ﴾8﴿ बुध के दिन नाखु़न नहीं काटने

चाहियें कि बरस या'नी कोढ़ हो जाने का अन्देशा है अलबत्ता अगर उन्तालीस (39) दिन से नहीं काटे थे, आज बुध को चालीसवां दिन है अगर आज नहीं काटता तो चालीस दिन से ज़ाइद हो जाएंगे तो इस पर वाजिब होगा कि आज ही के दिन काटे इस लिये कि चालीस दिन से ज़ाइद नाखुन रखना ना जाइज़ व मकरूहे तह़रीमी है। (तफ़्सीली मा'लूमात के लिये फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा जिल्द 22 सफ़ह़ा 574, 685 मुलाह़ज़ा फ़रमा लीजिये)

﴾9﴿ लम्बे नाखुन शैत़ान की निशस्त गाह हैं या'नी इन पर शैत़ान बैठता है। (إتحاف السّادة للزّبيدى ج٢ص٦٥٣)

सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो पाओगे ब-रकतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صلَّى اللهُ تعالٰى على محمَّد

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमें अपने ज़ाहिर व बात़िन दोनों को साफ़ रखने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा और इस मुआ़मले में जो जो सुन्नतें हैं उन तमाम सुन्नतों पर खु़श दिली से अ़मल करने की तौफ़ीक़े रफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमा।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وبارک وسلَّم

दो दर्द सुन्नतों का पए शाहे करबला
उम्मत के दिल से लज़्ज़ते इस्यां निकाल दो

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 305)

www.dawateislami.net

ज़ुल्फ़ें रखने की सुन्नतें और आदाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

हमारे प्यारे म-दनी आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नते करीमा है कि आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमेशा अपने सरे मुबारक के बाल शरीफ़ पूरे रखे। कभी निस्फ़ कान मुबारक तक तो कभी कान मुबारक की लौ तक और बा'ज़ अवक़ात आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के गेसू शरीफ़ बढ़ जाते तो मुबारक शानों को झूम झूम कर चूमने लगते।

गोश तक सुनते थे फ़रियाद अब आए ता दौश
कि बनें ख़ाना बदोशों को सहारे गेसू

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

★ **चाहें तो आधे कानों तक गेसू रखिये कि** ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मदीने वाले आक़ा, शबे अस्रा के दूल्हा, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के बाल मुबारक आधे मुबारक कानों तक थे।

(جامع الترمذی، الشمائل باب ماجاء فی شعر رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہ وسلم الحدیث ۲۴ص ۵۰۷)

देखो क़ुरआं में शबे क़द्र है ता मत़्लए फ़ज्र
या'नी नज़्दीक हैं आ़रिज़ के वोह प्यारे गेसू

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 89)

www.dawateislami.net

चूंकि बाल बढ़ने वाली चीज़ है। इस लिये जिस सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने जैसा देखा वोही रिवायत कर दिया। चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने निस्फ़ कानों तक देखा तो इसी को रिवायत किया और जिस ने इस से ज़ियादा बड़े देखे उस ने उसी मिक़्दार को रिवायत किया।

★ **चाहें तो पूरे कानों तक गेसू रखिये कि** हज़रते सय्यिदुना बराअ बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि सुल्ताने मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का क़दे मुबारक दरमियाना था, दोनों मुबारक शानों के दरमियान फ़ासिला था और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के गेसू मुबारक मुक़द्दस कानों को चूमते थे।

(شمائل ترمذی، باب ماجاء فی خلق رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم، الحدیث ۳، ص ۱۷)

★ **चाहें तो शानों तक गेसू बढ़ाइये कि** उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं कि मेरे आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सरे अक़्दस पर जो बाल मुबारक होते वोह कान मुबारक की लौ से ज़रा नीचे होते और मुबारक शानों को चूमते। (المرجع السابق، الحدیث ۲۵، ص ۳۵)

★ **सर के बीच में से मांग निकालिये कि सुन्नत है।**

मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ **बहारे शरीअ़त जिल्द सिवुम, हिस्सा : 16, सफ़ह़ा 587 पर है :** "बा'ज़ लोग दाईं या बाईं जानिब मांग निकालते हैं, येह सुन्नत के ख़िलाफ़ है।

“गेसू रखना नबिय्ये पाक की सुन्नत है” के बाईस हुरूफ़ की निस्बत से ज़ुल्फ़ों और सर के बालों वग़ैरा के 22 म-दनी फूल

★ पेशकर्दा हर हर म-दनी फूल को **सुन्नते रसूले** मक़्बूल عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर मह़्मूल न फ़रमाइये, इन में सुन्नतों के इलावा बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِیْن से मन्क़ूल **म-दनी फूल** का भी शुमूल है। जब तक यक़ीनी त़ौर पर मा'लूम न हो किसी अ़मल को “**सुन्नते रसूल**” नहीं कह सकते।

﴾1﴿ **ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक ज़ुल्फ़ें कभी निस्फ़ (या'नी आधे) कान मुबारक तक तो ﴾2﴿ कभी कान मुबारक की लौ तक और ﴾3﴿ बा'ज़ अवक़ात बढ़ जातीं तो मुबारक शानों या'नी कन्धों को झूम झूम कर चूमने लगतीं (الشمائل المحمدیة للترمذی ص۱۸،۳۵،۳۴)

﴾4﴿ हमें चाहिये कि मौक़अ़ ब मौक़अ़ तीनों सुन्नतें अदा करें, या'नी कभी आधे कान तक तो कभी पूरे कान तक तो कभी कन्धों तक ज़ुल्फ़ें रखें।

﴾5﴿ कन्धों को छूने की ह़द तक ज़ुल्फ़ें बढ़ाने वाली सुन्नत की अदाएगी उ़मूमन नफ़्स पर ज़ियादा शाक़ (या'नी भारी) होती है मगर ज़िन्दगी में एक आध बार तो हर एक को येह सुन्नत अदा कर ही लेनी चाहिये, अलबत्ता येह ख़याल रखना ज़रूरी है कि बाल कन्धों से नीचे

www.dawateislami.net

न होने पाएं, पानी से अच्छी त़रह़ भीग जाने के बा'द ज़ुल्फ़ों की दराज़ी (या'नी लम्बाई) ख़ूब नुमायां हो जाती है लिहाज़ा जिन दिनों बढ़ाएं उन दिनों ग़ुस्ल के बा'द कंघी कर के ग़ौर से देख लिया करें कि बाल कहीं कन्धों से नीचे तो नहीं जा रहे।

﴾6﴿ मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** عَلَیْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं : औ़रतों की त़रह़ कन्धों से नीचे बाल रखना मर्द के लिये **ह़राम** है।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 21, स. 600 तस्हीलन)

﴾7﴿ **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मर्द को येह जाइज़ नहीं कि औ़रतों की त़रह़ बाल बढ़ाए, बा'ज़ सूफ़ी बनने वाले लम्बी लम्बी लटें बढ़ा लेते हैं जो उन के सीने पर सांप की त़रह़ लहराती हैं और बा'ज़ चोटियां गूंधते हैं या जूड़े (या'नी औ़रतों की त़रह़ बाल इकठ्ठे कर के गुद्दी की त़रफ़ गांठ) बना लेते हैं येह सब ना जाइज़ काम और ख़िलाफ़े शरअ़ हैं। **तसव्वुफ़** बालों के बढ़ाने और रंगे हुए कपड़े पहनने का नाम नहीं बल्कि ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की पूरी पैरवी करने और ख़्वाहिशाते नफ़्स को मिटाने का नाम है।

(बहारे शरीअ़त, जिल्द सिवुम, ह़िस्सा : 16, स. 587)

﴾8﴿ औ़रत का सर मुंडवाना ह़राम है।

(ख़ुलासा अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 664)

﴾9﴿ औ़रत को सर के बाल कटवाने जैसा कि इस ज़माने में नसरानी औ़रतों ने कटवाने शुरूअ़ कर दिये ना जाइज़ व गुनाह है और इस पर

www.dawateislami.net

ला'नत आई। शोहर ने ऐसा करने को कहा जब भी येही हुक्म है कि औ़रत ऐसा करने में गुनहगार होगी क्यूं कि शरीअ़त की ना फ़रमानी करने में किसी का (या'नी मां बाप या शोहर वग़ैरा का) कहना नहीं माना जाएगा। (बहारे शरीअ़त, जिल्द सिवुम, हि़स्सा : 16, स. 588)

《10》 बा'ज़ लोग सीधी या उलटी जानिब मांग निकालते हैं येह **सुन्नत** के ख़िलाफ़ है।

《11》 **सुन्नत** येह है कि अगर सर पर बाल हों तो बीच में मांग निकाली जाए। (المرجع السابق)

《12》 (सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से) बिग़ैर ह़ज कभी सर मुंडवाना षाबित नहीं। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 690)

《13》 आज कल क़ैंची या मशीन के ज़रीए बालों को मख़्सूस त़र्ज़ पर काट कर कहीं बड़े तो कहीं छोटे कर दिये जाते हैं, ऐसे बाल रखना **सुन्नत** नहीं।

《14》 **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : "जिस के बाल हों वोह उन का **इकराम** करे।" (या'नी उन को धोए, तेल लगाए और कंघा करे।) (سُنَنِ ابی داوٗد،ج٤،ص١٠٣،حدیث:٤١٦٣)

《15》 ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम **ख़लीलुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने सब से पहले मेहमानों की ज़ियाफ़त की और सब से पहले ख़तना किया और सब से पहले **मूंछ** के बाल तराशे और सब से पहले **सफ़ेद बाल** देखा। अ़र्ज़ की : ऐ रब ! येह क्या है ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : "ऐ इब्राहीम ! येह **वक़ार** है।" अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब ! मेरा **वक़ार** ज़ियादा कर। (موطّا ج ٢ ص ٤١٥ حدیث ١٧٥٦)

www.dawateislami.net

《16》 **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1334 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त, जिल्द सिवुम**" हिस्सा 16 सफ़हा 581 पर है : मह़बूबे रब्बुल इ़बाद صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत बुन्याद है : "जो शख़्स क़सदन (या'नी जान बूझ कर) सफ़ेद बाल उखाडेगा क़ियामत के दिन वोह नेज़ा हो जाएगा जिस से उस को भोंका जाएगा।"

(کَنزُ الْعُمّال ج ٦ ص ٢٨١رقم ١٧٢٧٦)

《17》 बुच्ची (या'नी वोह चन्द बाल जो नीचे के होंट और ठोड़ी के बीच में होते हैं उस) के अग़ल बग़ल (या'नी आस पास) के बाल मुंडाना या उखेड़ना बिदअ़त है। (فتاوی ھندیہ ج٥، ص٣٥٨)

《18》 गरदन के बाल मूंडना मकरूह है (اَیـضـاًص٣٥٧) या'नी जब सर के बाल न मुंडाएं सिर्फ़ गरदन ही के मुंडाएं जैसा कि बहुत से लोग ख़त़ बनवाने में गरदन के बाल भी मुंडाते हैं और अगर पूरे सर के बाल मुंडा दिये तो इस के साथ गरदन के बाल भी मुंडा दिये जाएं

(बहारे शरीअ़त, जिल्द सिवुम, ह़िस्सा : 16, स. 587)

《19》 चार चीज़ों के **मुतअ़ल्लिक़** हुक्म येह है कि दफ़्न कर दी जाएं : बाल, नाख़ुन, हैज़ का लत्ता (या'नी वोह कपड़ा जिस से औ़रत हैज़ का ख़ून साफ़ करे) और ख़ून। (ऐज़न, स. 588, عالمگیری ج٥ ص٣٥٨)

《20》 मर्द को दाढ़ी या सर के सफ़ेद बालों को सुर्ख़ या ज़र्द रंग कर देना **मुस्तह़ब** है, इस के लिये मेहंदी लगाई जा सकती है।

《21》 दाढ़ी या सर में मेहंदी लगा कर सोना नहीं चाहिये। एक ह़कीम के बक़ौल इस त़रह़ मेहंदी लगा कर सो जाने से सर वग़ैरा की गर्मी आंखों में उतर आती है जो बीनाई के लिये मुज़िर या'नी

www.dawateislami.net

नुक़्सान देह है। ह़कीम की बात की तौसीक़ यूं हुई कि एक बार सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ के पास एक नाबीना शख़्स आया और उस ने बताया कि मैं पैदाइशी अन्धा नहीं हूं, अफ़्सोस कि सर में मेहंदी लगा कर सो गया जब बेदार हुवा तो मेरी आंखों का नूर जा चुका था !

﴾22﴿ मेहंदी लगाने वाले की मूंछ, निचले होंट और दाढ़ी के ख़त़ के कनारे के बालों की सफ़ेदी चन्द ही दिनों में ज़ाहिर होने लगती है जो कि देखने में भली मा'लूम नहीं होती लिहाज़ा अगर बार बार सारी दाढ़ी नहीं भी रंग सकते तो कोशिश कर के हर चार दिन के बा'द कम अज़ कम इन जगहों पर जहां जहां सफ़ेदी नज़र आती हो थोड़ी थोड़ी मेहंदी लगा लेनी चाहिये।

सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी हल मुश्किलें क़ाफ़िलें में चलो पाओगे ब-र-कतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

*ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम सब मुसलमानों को ख़िलाफ़े सुन्नत बाल रखने और रखवाने की सोच से नजात दे कर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी, मीठी मीठी सुन्नत ज़ुल्फ़ें रखने वाली "**म-दनी सोच**" अ़त़ा फ़रमा।*

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَبَارَکَ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

तेल डालने और कंघा करने की सुन्नतें और आदाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

हमारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपने सरे अक़्दस और दाढ़ी मुबारक में तेल डालते, कंघा करते, बीच सर में मांग निकालते। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरह رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस के बाल हों तो वोह उन का इकराम करे।" (या'नी उन को धोए, तेल लगाए, कंघा करे)

(سنن ابوداود،کتاب الترجل،باب فی اصلاح الشعر،الحدیث۴۱۶۳،ج۴،ص۱۰۳)

"शाने इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा" के उन्नीस हु़रूफ़ की निस्बत से तेल डालने और कंघी करने के 19 म-दनी फूल

★ पेशकर्दा हर हर म-दनी फूल को **सुन्नते रसूले** मक़्बूल عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर मह़मूल न फ़रमाइये, इन में सुन्नतों के इलावा बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن से मन्क़ूल **म-दनी फूल** का भी शुमूल है। जब तक यक़ीनी त़ौर पर मा'लूम न हो किसी अ़मल को "**सुन्नते रसूल**" नहीं कह सकते।

﴾1﴿ **ह़ज़रते** सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के **मह़बूब, दानाए ग़ुयूब** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم सरे अक़्दस

में अकषर तेल लगाते और दाढ़ी मुबारक में कंघी करते थे और अकषर सरे मुबारक पर कपड़ा रखते थे यहां तक कि वोह कपड़ा तेल से तर रहता था (اَلشَّمائِلُ الْمُحَمَّدِيَّة لِلتِّرمِذی ص ٤٠) मा'लूम हुवा "सरबन्द" का इस्ति'माल सुन्नत है, इस्लामी भाइयों को चाहिये कि जब भी सर में तेल डालें, एक छोटा सा कपड़ा सर पर बांध लिया करें, इस त़रह़ اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ टोपी और इ़मामा शरीफ़ तेल की आलूदगी से काफ़ी ह़द तक मह़फ़ूज़ रहेंगे । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ का बरसहा बरस से "सरबन्द" इस्ति'माल करने का मा'मूल है ।

﴾2﴿ **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : "जिस के बाल हों वोह उन का **एह़तिराम** करे" (سُنَنِ اَبی داود ج٤ ص١٠٣ حديث ٤١٦٣) या'नी उन्हें धोए, तेल लगाए और कंघी करे । (اَشِعَّةُ اللّمعات ج٣ ص ٦١٧)

﴾3﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना **नाफ़ेअ़** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, **ह़ज़रते** सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا दिन में दो मरतबा तेल लगाते थे (مُصَنَّف ابنِ اَبی شَيْبه ج٦ ص١١٧) बालों में तेल का ब कषरत इस्ति'माल ख़ुसूसन अहले इ़ल्म ह़ज़रात के लिये मुफ़ीद है कि इस से सर में ख़ुश्की नहीं होती, दिमाग़ तर और ह़ाफ़िज़ा क़वी होता है ।

﴾4﴿ **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : "जब तुम में से कोई तेल लगाए तो भंवों (या'नी अब्रूओं) से शुरूअ़ करे, इस से **सर का दर्द दूर** होता है" (اَلْجامِعُ الصَّغِير ص٢٨ حديث ٣٦٩) ﴾5﴿ "**कन्ज़ुल उ़म्माल**" में है : प्यारे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم जब तेल इस्ति'माल फ़रमाते तो पहले अपनी उलटी हथेली पर तेल डाल

www.dawateislami.net

लेते थे, फिर पहले दोनों अब्रूओं पर फिर दोनों आंखों पर और फिर सरे मुबारक पर लगाते थे। (كَنْزُ الْعُمّال ج۷ ص۴٦ رقم ١٨٢٩٥)
《6》 "त़-बरानी" की रिवायत में है : **सरकारे** नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जब दाढ़ी मुबारक को तेल लगाते तो "अ़न्फ़क़ह" (या'नी निचले होंट और ठोड़ी के दरमियानी बालों) से इब्तिदा फ़रमाते थे (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ج۵ص۳٦٦حدیث ۷٦٢٩) 《7》 दाढ़ी में कंघी करना सुन्नत है (اَشِعَّةُ اللَّمعات ج۳ ص٦١٦) 《8》बिग़ैर **बिस्मिल्लाह** पढ़े तेल लगाना और बालों को ख़ुश्क और परागन्दा (या'नी बिखरे हुए) रखना ख़िलाफ़े सुन्नत है 《9》 ह़दीषे पाक में है : जो बिग़ैर **बिस्मिल्लाह** पढ़े तेल लगाए तो 70 शयात़ीन उस के साथ शरीक हो जाते हैं। (عَمَلُ الْیَوْمِ وَاللَّیْلَةِ لابن السُّنّی ص۳٢۷ حدیث ١۷۳) 《10》 **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْوَالِی नक़्ल करते हैं, **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : एक मरतबा मोमिन के शैत़ान और काफ़िर के शैत़ान में मुलाक़ात हुई, काफ़िर का शैत़ान ख़ूब **मोटा ताज़ा** और अच्छे लिबास में था। जब कि मोमिन का शैत़ान **दुबला पतला,** परागन्दा (या'नी बिखरे हुए) बालों वाला और बरह्ना (या'नी नंगा) था। काफ़िर के शैत़ान ने मोमिन के शैत़ान से पूछा : आख़िर तुम इतने कमज़ोर क्यूं हो ? उस ने जवाब दिया : मैं एक ऐसे शख़्स के साथ हूं जो खाते पीते वक़्त **बिस्मिल्लाह** शरीफ़ पढ़ लेता है तो मैं भूका व प्यासा रह जाता हूं, जब तेल लगाता है तो **बिस्मिल्लाह** शरीफ़ पढ़ लेता है तो मेरे बाल परागन्दा (या'नी बिखरे हुए) रह जाते हैं। इस पर काफ़िर के शैत़ान ने कहा : मैं तो

www.dawateislami.net

ऐसे के साथ हूं जो इन कामों में कुछ भी नहीं करता लिहाज़ा मैं उस के साथ खाने पीने, लिबास और तेल लगाने में शरीक हो जाता हूं । (اِحیاءُ العُلوم ج ٣ ص ٤٥) ﴾11﴿ **तेल डालने से क़ब्ल** "بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم" पढ़ कर तेल की शीशी वग़ैरा में से उलटे हाथ की हथेली में थोड़ा सा तेल डालिये, फिर पहले सीधी आंख के अब्रू पर तेल लगाइये, फिर उलटी के, इस के बा'द सीधी आंख की पलक पर, फिर उलटी पर, अब सर में तेल डालिये । और दाढ़ी को तेल लगाएं तो निचले होंट और ठोड़ी के दरमियानी बालों से आग़ाज़ कीजिये ﴾12﴿ सरसों का तेल डालने वाला टोपी या इ़मामा उतारता है तो बा'ज़ अवक़ात बदबू का भपका निकलता है लिहाज़ा जिस से बन पड़े वोह सर में उ़म्दा ख़ुश्बूदार तेल डाले, ख़ुश्बूदार तेल बनाने का एक आसान त़रीक़ा येह भी है कि खोपरे के तेल की शीशी में अपने पसन्दीदा इ़त्र के चन्द क़त़रे डाल कर ह़ल कर लीजिये, ख़ुश्बूदार तेल तय्यार है । सर और दाढ़ी के बालों को वक़्तन फ़ वक़्तन साबुन से धोते रहिये ﴾13﴿ औ़रतों को लाज़िम है कि कंघी करने में या सर धोने में जो बाल निकलें उन्हें कहीं छुपा दें कि उन पर अजनबी (या'नी ऐसा शख़्स जिस से हमेशा के लिये निकाह़ ह़राम न हो) की नज़र न पड़े (बहारे शरीअ़त, जिल्द सिवुम, हिस्सा : 16, स. 449) ﴾14﴿ **ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने रोज़ाना कंघी करने से मन्अ़ फ़रमाया । (ترمذی ج ٣ ص ٢٩٣ حدیث ١٧٦٢) येह नह्य (या'नी मुमा-न-अ़त मकरूहे) तन्ज़ीही है और मक़सद येह है कि मर्द को बनाव सिंघार

में मश्ग़ूल न रहना चाहिये (बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 592) इमाम मुनावी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : जिस शख़्स को बालों की कषरत की वजह से ज़रूरत हो वोह मुत़्लक़न रोज़ाना कंघी कर सकता है (فَیضُ القدیرج٦ ص٤٠٤) «15» बारगाहे र-ज़विय्यत में होने वाले सुवाल व जवाब मुलाह़ज़ा हों, **सुवाल :** कंघा दाढ़ी में किस किस वक़्त किया जाए ? **जवाब :** कंघे के लिये शरीअ़त में कोई ख़ास वक़्त मुक़र्रर नहीं है ए'तिदाल (या'नी मियाना रवी) का हुक्म है, न तो येह हो कि आदमी जिन्नाती शक्ल बना रहे न येह हो कि हर वक़्त मांग चोटी में गिरिफ़्तार (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 29, स. 92, 94) «16» कंघी करते वक़्त सीधी तरफ़ से इब्तिदा कीजिये चुनान्चे **उम्मुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि : सरकारे रिसालत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हर काम में दाईं (या'नी सीधी) जानिब से शुरूअ़ करना पसन्द फ़रमाते यहां तक कि जूता पहनने, कंघी करने और त़हारत करने में भी (صحیح بُخاری ج١ص٨١حدیث ١٦٨) शारेह़े बुख़ारी ह़ज़रते अ़ल्लामा बदरुद्दीन ऐनी ह़-नफ़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इस ह़दीषे पाक के तह़्त लिखते हैं : येह तीन चीज़ें बत़ौरे मिषाल इर्शाद फ़रमाई गईं, वरना हर काम जो इ़ज़्ज़त और बुज़ुर्गी रखता है उसे सीधी त़रफ़ से शुरूअ़ करना मुस्तह़ब है जैसे मस्जिद में दाख़िल होना, लिबास पहनना, मिस्वाक करना, सुरमा लगाना, नाख़ुन तराशना, मूंछें काटना, बग़लों के बाल उतारना, वुज़ू, ग़ुस्ल करना और बैतुल ख़ला से बाहर आना वग़ैरा और जिस काम में येह बात नहीं जैसे मस्जिद से बाहर

आने, बैतुल ख़ला में दाख़िल होने, नाक साफ़ करने, नीज़ शलवार और कपड़े उतारते वक़्त बाईं (या'नी उलटी त़रफ़) से इब्तिदा करना मुस्तह़ब है (عُمدةُ القاری ج٢ص٤٧٦) ❮17❯ नमाज़े जुमुआ़ के लिये तेल और ख़ुश्बू लगाना मुस्तह़ब है (बहारे शरीअ़त, जि. 1, हिस्सा : 4, स. 774)

❮18❯ रोज़े की ह़ालत में दाढ़ी मूंछ में तेल लगाना मकरूह नहीं मगर इस लिये तेल लगाया कि दाढ़ी बढ़ जाए, ह़ालां कि एक मुश्त (या'नी एक मुठ्ठी) दाढ़ी है तो येह बिग़ैर रोज़े के भी मकरूह है और रोज़े में ब द-र-जए औला। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, हिस्सा : 5, स. 997)

❮19❯ मय्यित की दाढ़ी या सर के बाल में कंघी करना, ना जाइज़ व गुनाह है। (دُرِّمُختارج٣ص١٠٤)

तेल की बूंदें टपकती नहीं बालों से रज़ा
सुब्ह़े आ़रिज़ पे लुटाते हैं सितारे गेसू

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी हल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो पाओगे ब-र-कतें क़ाफ़िले में चलो

*ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें सुन्नत के मुत़ाबिक़ अपने सर और दाढ़ी में तेल लगाने और कंघा करने की तौफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमा।* اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

ज़ीनत की सुन्नतें और आदाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

हमारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की त़बीअ़ते मुबारका में बेह़द नफ़ासत थी और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم सफ़ाई और पाकीज़गी को बेह़द पसन्द फ़रमाते थे। इसी ज़िम्न में गुज़श्ता सफ़ह़ात में नाख़ुन व मूंछें तराशने, सर और दाढ़ी शरीफ़ में तेल लगाने और कंघा करने की सुन्नतें और आदाब पेश किये गए। अब इसी ज़िम्न में "**ज़ीनत की सुन्नतें और आदाब**" बयान किये जाते हैं ताकि हमारे इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों को मा'लूम हो कि कौन सी ज़ीनत ब मुत़ाबिक़े सुन्नत है और कौन सी ज़ीनत सुन्नत का दाएरा तोड़ कर फ़िरंगी फ़ेशन के अंधेरे गढ़े में जा पड़ती और दुन्या और आख़िरत की तबाही का सबब बनती है।

★ **इन्सान के बालों की चोटी बना कर अ़ौरत अपने बालों में गूंधे, येह ह़राम है।** ह़दीषे मुबारका में उस पर ला'नत आई बल्कि उस पर भी ला'नत आई जिस ने किसी दूसरी अ़ौरत के सर में इन्सानी बालों की चोटी गूंधी।

(درمختار،کتاب الحظر والاباحۃ،باب فی النظرِ والمس،ج۹،ص۶۱۴ تا ۶۱۵)

★ **अगर वोह बाल जिस की चोटी बनाई गई ख़ुद इस अ़ौरत के अपने बाल हैं जिस के सर में जोड़ी गई जब भी ना जाइज़ है।** (المرجع السابق)

www.dawateislami.net

★ **ऊन या सियाह धागे की चोटी इस्लामी बहनों को सर में लगाना जाइज़ है।** (درمختار،کتاب الحظر والاباحۃ،باب فی النظر والمس،ج۹ص۶۱۴ تا ۶۱۵)

★ **लड़कियों के कान नाक छेदना जाइज़ है।**

(ردالمحتار،کتاب الحظر والاباحۃ،فصل فی اللبس،ج۹ص۵۹۸)

★ **बा'ज़ लोग लड़कों के भी कान छिदवाते हैं और बाली वग़ैरा पहनाते हैं येह ना जाइज़ है।** या'नी कान छिदवाना भी ना जाइज़ और उसे ज़ेवर पहनाना भी ना जाइज़।

(المرجع السابق،ص۵۹۸،ملخصاً)

★ **औ़रतों को हाथ पाउं में मेहंदी लगाना जाइज़ है।** छोटे बच्चों के हाथ पाउं में मेहंदी लगाना ना जाइज़ है, बच्चियों को मेहंदी लगाने में ह़रज नहीं। (المرجع السابق،ص ۵۹۹ ملتقطاً)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरह رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि मदीने के ताजदार, सरकारे अबद क़रार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पास एक मुख़न्नस (या'नी हीजड़ा) ह़ाज़िर किया गया जिस ने अपने हाथ और पाउं मेहंदी से रंगे हुए थे। इर्शाद फ़रमाया : इस का क्या ह़ाल है ? (या'नी इस ने क्यूं मेहंदी लगाई है ?) लोगों ने अ़र्ज़ की, येह औ़रतों की नक़्ल करता है। हमारे मीठे म-दनी आक़ा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हुक्म फ़रमाया कि "इसे शहर बदर कर दो।" लिहाज़ा उस को शहर बदर कर दिया गया, मदीनए मुनव्वरह से निकाल कर "नक़ीअ़" को भेज दिया गया।

(سنن ابی داوٗد،کتاب الادب،باب فی الحکم فی المخنثین،الحدیث۴۹۲۸،ج۴ص۳۶۸)

www.dawateislami.net

प्यारे इस्लामी भाइयो !

देखा आप ने ! मुख़न्नस ने औ़रतों की नक़्ल की या'नी हाथ पाउं में मेहंदी लगाई तो हमारे मक्की म-दनी सरकार صَلَّى اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उस से किस क़दर नाराज़ हुए कि उसे शहर बदर कर दिया । इस मुबारक ह़दीष से हमारे वोह भाई दर्स ह़ासिल करें जो शादी या ईदैन वग़ैरा के मवाक़ेअ़ पर अपने हाथों या उंगलियों पर मेहंदी लगा लिया करते हैं । और हां ! जिस त़रह़ मर्दों को औ़रतों की नक़्ल जाइज़ नहीं उसी त़रह़ औ़रतें भी मर्दों की नक़्ल नहीं कर सकतीं । जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है कि ताजदारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ला'नत फ़रमाई ज़नाना मर्दों पर जो औ़रतों की सूरत बनाएं और मर्दानी औ़रतों पर जो मर्दों की सूरत बनाएं ।

(المسند للامام احمد بن حنبل،مسند عبداللہ بن عباس،الحدیث ۲۲۶۳،ج۱،ص۵۴۰)

★ **जानदार की तसावीर वाले लिबास हरगिज़ न पहना करें** न ही जानवरों या इन्सानों की तसावीर वाले स्टीकर्ज़ अपने कपड़ों पर लगाएं, न ही घरों में आवेज़ां करें ।

★ **अपने बच्चों को ऐसे "बाबा सूट" न पहनाएं जिन पर जानवरों और इन्सानों के फ़ोटो बने हुए होते हैं ।**

★ **ख़्वातीन अपने शोहर के लिये जाइज़ अश्या के ज़रीए, मगर घर की चार दीवारी में ज़ीनत करें** लेकिन मेक-अप कर के और बन संवर के घर से बाहर न निकला करें कि हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡهِ و اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "औ़रत पूरी की पूरी औ़रत (या'नी छुपाने की चीज़) है जब कोई औ़रत बाहर निकलती है तो शैत़ान उस को झांक झांक कर देखता है।"

(جامع الترمذی، کتاب الرضاع، باب (۱۸)، الحدیث ۱۱۷۶، ج۲، ص۳۹۲)

★ **नंगे सर फिरना सुन्नत नहीं है।** लिहाज़ा इस्लामी भाइयों को चाहिये कि अपने सर पर इमामा शरीफ़ का ताज सजाए रखें कि येह हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡهِ و اٰلِهٖ وَسَلَّم की निहायत ही मीठी सुन्नत है। (माख़ूज़ बहारे शरीअ़त, जिल्द सिवुम, हिस्सा : 16, स. 418)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! बस ज़ीनत वोही कीजिये जिस की शरीअ़ते मुत़हहरा ने इजाज़त मर्हमत फ़रमाई और हरगिज़ हरगिज़ फ़िरंगी फ़ेशन न अपनाइये जिस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का क़हरो ग़ज़ब जोश पर आए।

ऐ हमारे प्यारे ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *! हमें फ़िरंगी फ़ेशन की आफ़त से छुड़ा कर अपने प्यारे ह़बीब* صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡهِ و اٰلِهٖ وَسَلَّم *की सुन्नतों का दीवाना बना दे।* اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡهِ و اٰلِهٖ وَسَلَّم

★★★★★★

www.dawateislami.net

ख़ुश्बू लगाना सुन्नत है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

हमारे मीठे मीठे सरकार, मदीने के ताजदार, दो आ़लम के मुख़्तार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़ुश्बू बेह़द पसन्द थी । लिहाज़ा आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हर वक़्त मुअ़त्त़र मुअ़त्त़र रहते । आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ुश्बू का बहुत इस्ति'माल फ़रमाया करते थे ताकि गु़लाम भी अदाए सुन्नत की निय्यत से ख़ुश्बू लगाया करें वरना इस बात में किस को शक व शुबा हो सकता है कि आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का वुजूदे मसऊ़द तो क़ुदरती त़ौर पर ख़ुद ही महकता रहता और ताजदारे मदीना صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का मुबारक पसीना बज़ाते ख़ुद काएनात की सब से बेह्तरीन ख़ुश्बू है ।

मुश्को अ़म्बर क्या करूं ? ऐ दोस्त ख़ुश्बू के लिये
मुझ को सुल्त़ाने मदीना (عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) का पसीना चाहिये

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन समुरा رَضِیَ اللہ تعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक बार मीठे मीठे सरकार صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना दस्ते पुर अन्वार मेरे चेहरे पर फेरा मैं ने उसे ठन्डा और ऐसी ख़ुश्बूदार हवा की त़रह़ पाया जो किसी इ़त्र फ़रोश के इ़त्रदान से निकलती है ।

(وسائل الوصول الی شمائل الرسول صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہ وسلم، الفصل الرابع فی صفۃ عرقہ.....الخ، ص ۸۵)

www.dawateislami.net

★ **उ़म्दा क़िस्म की ख़ुश्बू लगाना सुन्नत है :** हमारे मदीने वाले आक़ा, महकने और महकाने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم को उ़म्दा और बेह़तरीन क़िस्म की ख़ुश्बू बहुत पसन्द थी और ना ख़ुश गवार बू या'नी बदबू आप صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم ना पसन्द फ़रमाते। आप صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم हमेशा उ़म्दा ख़ुश्बू इस्ति'माल करते और इसी की दूसरे लोगों को भी तल्क़ीन फ़रमाते। ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि "हमारे मुअ़त़्त़र मुअ़त़्त़र हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم के पास एक ख़ास क़िस्म की ख़ुश्बू थी जिसे आप صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم इस्ति'माल फ़रमाते थे।"

(وسائل الوصول الی شمائل الرسول،الفصل الخامس فی صفة طیبه صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم،ص ۸۷)

★ **सर में ख़ुश्बू लगाना सुन्नत है :** सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم की आ़दते करीमा थी कि आप صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم "मुश्क" सरे अक़्दस के मुक़द्दस बालों और दाढ़ी मुबारक में लगाते। (المرجع السابق)

ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہَا से मरवी है, फ़रमाती हैं : मैं अपने सरताज, माहे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم को निहायत उ़म्दा से उ़म्दा ख़ुश्बू लगाती थी यहां तक कि उस की चमक हुज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم के सरे मुबारक और दाढ़ी शरीफ़ में पाती।

(صحیح البخاری،کتاب اللباس،باب الطیب فی الرأس واللحیة،الحدیث۵۹۲۳،ج۴،ص۸۱)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि सर और दाढ़ी के बालों में ख़ुश्बू लगाना सुन्नत है। मगर येह ख़याल रखें कि सर और दाढ़ी में सिर्फ़ देसी ख़ुश्बू इस्ति'माल करें। बद क़िस्मती से आज कल देसी ख़ुश्बूजात का मिलना बेहद दुश्वार हो गया है। अब उ़मूमन इ़त्रियात केमीकल्ज़ से बनाए जाते हैं। इन का लिबास में इस्ति'माल करना जाइज़ तो है मगर सर और दाढ़ी में लगाना नुक़सान देह है आज कल "एयर फ्रे़शनर" का इस्ति'माल आ़म होता जा रहा है इन का छिड़काव ख़ास तौ़र पर उन कमरों में किया जाता है जो बन्द रहते हैं इस से वक़्ती तौ़र पर कमरे में ख़ुश्बू तो हो जाती है मगर इस के कीमियावी माद्दे फ़ज़ा में फैल जाते हैं जो सांस के साथ फेफडों में दाख़िल हो कर सिह़्ह़त को नुक़सान पहुंचाते हैं। एक तिब्बी तह़क़ीक़ के मुता़बिक़ "एयर फ्रे़शनर" के इस्ति'माल से चमड़ी का केन्सर हो जाता है। चन्द लम्ह़ों की ख़ुश्बू के ह़ुसूल की ख़ाति़र इतना बड़ा ख़त़रा मोल लेना अ़क़्लमन्दी नहीं। लिहाज़ा "एयर फ्रे़शनर" के इस्ति'माल से इजतिनाब करना चाहिये।

ख़ुश्बू का तोह़फ़ा रद न करें :

"**शमाइले तिरमिज़ी**" में है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ख़ुश्बू का तोह़फ़ा रद नहीं फ़रमाते थे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नबियों के सरदार, हमारे मुअ़त्त़र मुअ़त्त़र सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-रकत में जब ख़ुश्बू तोह़फ़तन पेश की जाती तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रद न फ़रमाते। (جامع الترمذی،الشمائل،باب ماجاء فی تعطر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم،الحدیث ۲۱۶،ج۵،ص۵۴۰)

www.dawateislami.net

"**शमाइले तिरमिज़ी**" में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना, बाइ़षे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि तीन चीज़ें वापस नहीं लौटानी चाहिएं :

(1) तकिया (2) ख़ुश्बू व तेल और (3) दूध। (المرجع السابق، الحدیث ۲۱۷)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ख़ुश्बू, तकिया और दूध (और इन में तमाम कम क़ीमत की चीज़ें शामिल हैं) का हदिया क़बूल करने की ह़िकमत मुह़द्दिषीने किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہ येह बयान करते हैं कि उ़मूमन येह चीज़ें इतनी क़ीमती नहीं होतीं और ज़ाहिर है जो सस्ती चीज़ होती है वोह देने वाले के लिये ज़ियादा बोझ षाबित नहीं होती और क़बूल न करने पर देने वाले का दिल टूटने का अन्देशा भी रहता है । और चूंकि हमारे मदीने वाले आक़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم किसी का दिल तोड़ना पसन्द नहीं करते थे । इस लिये आप صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ुश्बू का तोह़फ़ा रद नहीं फ़रमाते । चुनान्चे हमें भी चाहिये कि अगर हमें कोई ख़ुश्बू या सस्ती चीज़ तोह़फ़तन पेश करे तो उसे सुन्नत समझ कर क़बूल कर लेना चाहिये । अगर कोई क़ीमती चीज़ पेश करे तो उसे भी क़बूल करने में कोई ह़रज नहीं मगर ग़ौर कर लेना मुनासिब मा'लूम होता है कि कहीं मुरव्वत वग़ैरा में तो नहीं दे रहा कि येह देना बा'द में ख़ुद उसी पर बार पड़ जाए ।

www.dawateislami.net

मर्दों को अपने लिबास पर ऐसी ख़ुश्बू इस्ति'माल करनी चाहिये जिस की ख़ुश्बू फैले मगर रंग के धब्बे वग़ैरा नज़र न आएं, जैसा कि गुलाब, केवड़ा, सन्दल और इसी क़िस्म के बे रंग इत़्रियात। औ़रतों के लिये महक की मुमानअ़त इस सूरत में है जब कि वोह ख़ुश्बू अजनबी मर्दों तक पहुंचे, अगर वोह घर में इ़त्र लगाएं जिस की ख़ुश्बू ख़ावन्द या अवलाद या मां बाप तक ही पहुंचे तो ह़रज नहीं। (माख़ूज़ अज़ मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 113)

चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मक्की म-दनी सरकार صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मर्दाना ख़ुश्बू वोह है कि उस की ख़ुश्बू तो ज़ाहिर हो मगर रंग ज़ाहिर न हो और ज़नाना ख़ुश्बू वोह है कि उस का रंग तो ज़ाहिर हो मगर ख़ुश्बू ज़ाहिर न हो।

(جامع الترمذی، کتاب الادب، باب ماجاء فی طیب الرجال والنساء، الحدیث ۲۷۹۶، ج۴، ص۳۶۱)

मा'लूम हुवा कि इस्लामी बहनों को ऐसी ख़ुश्बू नहीं लगानी चाहिये जिस की ख़ुश्बू उड़ कर ग़ैर मर्दों तक पहुंच जाए।

इस्लामी बहनें ह़दीषे ज़ैल से इ़ब्रत ह़ासिल करें।

चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "औ़रत जब ख़ुश्बू लगा कर किसी मजलिस के पास से गुज़रती है तो वोह ऐसी और ऐसी है या'नी ज़ानिया है।"

(المرجع السابق،باب ماجاء فی کراھیۃ خروج المرأۃ...الخ،الحدیث:۲۷۹۵،ج۴، ص۳۶۱)

www.dawateislami.net

★ **खुश्बू की धूनी लेना सुन्नत से षाबित है ।** ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا कभी कभी ख़ालिस ऊ़द (या'नी अगर) की धूनी लेते । या'नी ऊ़द के साथ किसी दूसरी चीज़ की आमैज़िश नहीं करते और कभी ऊ़द के साथ काफ़ूर मिला कर धूनी लेते और फ़रमाया कि मीठे मीठे म-दनी आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم भी इसी त़रह़ धूनी लिया करते थे ।

(صحیح مسلم، کتاب الالفاظ من الادب وغیرہ، باستعمال المسک وانہ....الخ، الحدیث۲۲۵۴، ص۱۲۳۷)

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **!**

हमें हमारे प्यारे सरकार, महके महके मदीने के ग़म ख़्वार, दो आ़लम के ताजदार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सदक़े में मदीनए मुनव्वरह की मुअ़त्त़र मुअ़त्त़र फ़ज़ाओं और मुअ़म्बर मुअ़म्बर हवाओं में सांस लेने की सआ़दत नसीब फ़रमा और फिर इन्हीं मुअ़त्त़र मुअ़त्त़र फ़ज़ाओं में मुअ़त्त़र मुअ़त्त़र हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के जल्वों में आ़फ़ियत के साथ ईमान पर मौत नसीब फ़रमा और जन्नतुल बक़ीअ़ की महकी महकी सर ज़मीन में मदफ़न नसीब फ़रमा ।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

टूट जाए दम मदीने में मेरा या रब बक़ीअ़
काश ! हो जाए मुयस्सर सब्ज़ गुम्बद देख कर

(वसाइले बख़्शिश, स. 372)

www.dawateislami.net

ख़ुश्बू लगाने की 47 निय्यतें

(अज़ शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी مَدَّظِلُّہُ العَالِی)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (المعجم الکبیرللطَّبَرانی حدیث ۵۹۴۲ج۶ص۱۸۵)

(1) नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत है इस लिये ख़ुश्बू लगाऊंगा (2) लगाने से क़ब्ल बिस्मिल्लाह (3) लगाते हुए दुरूद शरीफ़ और (4) लगाने बा'द अदाए शुक्रे ने'मत की निय्यत से اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ कहूंगा (5) मलाइका और (6) मुसलमानों को फ़रह़त पहुंचाऊंगा (7) अ़क़्ल बढ़ेगी तो अह़कामे शरई याद करने और सुन्नतें सीखने पर क़ुव्वत ह़ासिल करूंगा, इमाम शाफ़ेई رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : उ़म्दा ख़ुश्बू लगाने से अ़क़्ल बढ़ती है (8) लिबास वग़ैरा से बदबू दूर कर के मुसलमानों को ग़ीबत के गुनाहों से बचाऊंगा (क्यूंकि बिला इजाज़ते शरई किसी मुसलमान के बारे में पीछे से म-षलन इस त़रह़ से कहना कि "इस के लिबास या हाथों या मुंह से बदबू आ रही थी," ग़ीबत है) (9) मौक़अ़ की मुनासबत से येह निय्यतें भी की जा सकती हैं म-षलन (10) नमाज़ के लिये ज़ीनत ह़ासिल करूंगा (11) मस्जिद (12) नमाज़े तहज्जुद (13) जुमुआ़ (14) पीर शरीफ़ (15) र-मज़ानुल मुबारक (16) ईदुल फ़ित्र (17) ईदुल अज़्ह़ा (18) शबे मीलाद (19) ईदे मीलादुन्नबी (20) जुलूसे मीलाद

www.dawateislami.net

(21) शबे मे'राजुन्नबी (22) शबे बराअत (23) ग्यारहवीं शरीफ़ (24) यौमे रज़ा (25-26) दर्से कुरआन व ह़दीष (27) तिलावत (28) अवरादो वज़ाइफ़ (29) दुरूद शरीफ़ (30) दीनी किताब का मुतालआ (31) तदरीसे इल्मे दीन (32) ता'लीमे इल्मे दीन (33) फ़तवा नवीसी (34) दीनी कुतुब की तस्नीफ़ो तालीफ़ (35) सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ व (36) इजतिमाए ज़िक्रो ना'त (37) कुरआन ख़्वानी (38) दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत (39) अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत (40) सुन्नतों भरा बयान करते वक्त (41) आ़लिम (42) मां (43) बाप (44) मोमिने सालेह़ (45) पीर साह़िब (46) मूए मुबारक की ज़ियारत और (47) मज़ार शरीफ़ की ह़ाज़िरी के मवाके़अ़ पर भी ता'ज़ीम की निय्यत से ख़ुश्बू लगाई जा सकती है।

जितनी अच्छी अच्छी निय्यतें करेंगे उतना ही ज़ियादा षवाब मिलेगा। जब कि निय्यत का मौक़अ़ भी हो और वोह निय्यत शरअ़न दुरुस्त भी हो। ज़ियादा याद न भी रहें तो कम अज़ कम दो तीन निय्यतें कर ही लेनी चाहिएं।

ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ *हमें अच्छी निय्यतों के साथ ख़ुश्बू लगाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा और अपने प्यारे ह़बीब* صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم *की सुन्नतों का दीवाना बना दे।*

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الۡاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

★★★★★★

www.dawateislami.net

खाने की सुन्नतें और आदाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

खाना अल्लाह तआ़ला की बहुत लज़ीज़ ने'मत है। अगर सुन्नते अह़मदे मुज्तबा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मुत़ाबिक़ खाना खाया जाए तो हमें पेट भरने के साथ साथ षवाब भी ह़ासिल होगा। इस लिये हमें चाहिये कि सुन्नत के मुत़ाबिक़ खाना खाने की आ़दत डालें। खाना खाने की कुछ सुन्नतें और आदाब मुलाह़ज़ा हों :

★ **खाने से पहले अपने हाथ पहुंचों तक धो लें।** ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡهُ रिवायत करते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो येह पसन्द करे कि अल्लाह तआ़ला उस के घर में ब-रकत ज़ियादा करे तो उसे चाहिये कि जब खाना ह़ाज़िर किया जाए तो वुज़ू करे और जब उठाया जाए तब भी वुज़ू करे।"

(سنن ابن ماجہ، کتاب الاطعمہ، باب الوضوء عند الطعام، الحدیث ۳۲۶۰، ج ۴، ص ۹)

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡغَنِی **लिखते हैं :** इस (या'नी खाने के वुज़ू) के मा'ना हैं हाथ व मुंह की सफ़ाई करना कि हाथ धोना कुल्ली कर लेना।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 32)

★ **जब भी खाना खाएं तो** उल्टा पाउं बिछा दें और सीधा खड़ा रखें या सुरीन पर बैठ जाएं और दोनों घुटने खड़े रखें।

(बहारे शरीअ़त, जिल्द सिवुम, ह़िस्सा : 16, स. 378)

www.dawateislami.net

★ **खाने से पहले जूते उतार लें।** हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, फ़ैज़ गन्जीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "खाना खाने बैठो तो जूते उतार लो, इस में तुम्हारे लिये राहत है।"

(مشکاۃ المصابیح،کتاب الأطعمۃ،الفصل الثالث،الحدیث:٤٢٤٠،ج٢،ص٤٥٤)

★ **खाने से पहले** بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ **पढ़ लें।** हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस खाने पर बिस्मिल्लाह न पढ़ी जाए उस खाने को शैतान अपने लिये हलाल समझता है।"

(صحیح مسلم،کتاب الاشربہ،باب آداب الطعام...الخ،الحدیث ٢٠١٧،ص١١١٦)

★ **अगर खाने के शुरूअ़ में बिस्मिल्लाह पढ़ना भूल जाएं तो याद आने पर** بِسۡمِ اللّٰہِ اَوَّلَہٗ وَاٰخِرَہٗ **पढ़ लें।**

हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब तुम में से कोई खाना खाए तो उसे चाहिये कि पहले बिस्मिल्लाह पढ़े। अगर शुरूअ़ में बिस्मिल्लाह पढ़ना भूल जाए तो येह कहे "بِسۡمِ اللّٰہِ اَوَّلَہٗ وَاٰخِرَہٗ"

(سنن ابوداود،کتاب الاطعمہ،باب التسمیۃ علی الطعام،الحدیث ٣٧٦٧،ج٣،ص٤٨٧)

www.dawateislami.net

★ **खाने से पहले येह दुआ़ पढ़ ली जाए तो अगर खाने में ज़हर भी होगा तो** اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ **अषर नहीं करेगा,** "بِسۡمِ اللّٰهِ الَّذِیۡ لَایَضُرُّ مَعَ اسۡمِهٖ شَیۡءٌ فِی الۡاَرۡضِ وَلَا فِی السَّمَآءِ یَاحَیُّ یَاقَیُّوۡمُ" या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से शुरूअ़ करता हूं जिस के नाम की ब-रकत से ज़मीन व आस्मान की कोई चीज़ नुक़सान नहीं पहुंचा सकती। ऐ हमेशा से ज़िन्दा व क़ाइम रहने वाले।"

(فردوس الاخبار بماثور الخطاب، الحدیث ۱۹۵۵، ج ۱، ص ۲۷۴)

★ **सीधे हाथ से खाएं।** हुज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़लाक صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान है : "जब तुम में से कोई खाना खाए तो सीधे हाथ से खाए और जब पिये तो सीधे हाथ से पिये कि शैत़ान उल्टे हाथ से खाता पीता है।" (صحیح مسلم، کتاب الاشربۃ، باب آداب الطعام والشرب، الحدیث ۲۰۲۰، ص ۱۱۱۷)

★ **अपने सामने से खाएं।** ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡهُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "हर शख़्स बरतन की उसी जानिब से खाए जो उस के सामने हो।"

(صحیح البخاری، کتاب الاطعمۃ، باب الاکل ممایلیہ، الحدیث ۵۳۷۷، ج ۳، ص ۵۲۱)

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना अबू स-लमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक रोज़ खाना खाते हुए मेरा हाथ प्याले में इधर उधर ह-रकत कर रहा था (या'नी कभी एक त़रफ़ से लुक़्मा उठाया कभी दूसरी त़रफ़ से और कभी तीसरी त़रफ़ से लुक़्मा उठाया) जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे इस तरह़ करते हुए देखा तो फ़रमाया : "ऐ लड़के ! बिस्मिल्लाह पढ़ कर दाएं हाथ से खाया कर और अपने सामने से खाया कर, चुनान्चे इस के बा'द से मेरे खाने का त़रीक़ा येही हो गया ।"

(المرجع السابق،باب التسمیۃعلی الطعام ،ج۳،الحدیث ۵۳۷۶،ص ۵۲۱)

★**खाने में किसी क़िस्म का ऐ़ब न लगाएं** म-षलन येह न कहें कि मज़ेदार नहीं, कच्चा रह गया है, फीका रह गया, क्यूंकि खाने में ऐ़ब निकालना मकरूह व ख़िलाफ़े सुन्नत है बल्कि जी चाहे तो खाएं वरना हाथ रोक लें ।

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि शहनशाहे कौनो मकान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने कभी किसी खाने को ऐ़ब नहीं लगाया (या'नी बुरा नहीं कहा) अगर ख़्वाहिश होती तो खा लेते और ख़्वाहिश न होती तो छोड़ देते ।

(المرجع السابق،باب ماعاب النبی طعاماً ، الحدیث ۵۴۰۹،ج۳،ص ۵۳۱)

www.dawateislami.net

इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن लिखते हैं : "खाने में ऐ़ब निकालना अपने घर पर भी न चाहिये, मकरूह व ख़िलाफ़े सुन्नत है। (सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की) आ़दते करीमा येह थी कि पसन्द आया तो तनावुल फ़रमाया, वरना नहीं और पराए घर ऐ़ब निकालना तो (इस में) मुसलमानों की दिल शिकनी है और कमाले ह़िर्स व बे मुरव्वती पर दलील है। "घी कम है या मज़े का नहीं" येह ऐ़ब निकालना है और अगर कोई शै उसे मुज़िर (नुक़सान देती) है, उसे न खाने के उ़ज़्र के लिये इस का इज़्हार किया न (कि) बत़ौरे ता'न व ऐ़ब म-षलन इस में मिर्च ज़ाइद है मैं इतनी मिर्च का आ़दी नहीं, तो येह ऐ़ब निकालना नहीं और इतना भी (उस वक़्त है कि जब) बे तकल्लुफ़ी ख़ास की जगह हो और इस के सबब दा'वत कुनन्दा (या'नी मेज़बान) को और तक्लीफ़ न करनी पड़े, म-षलन दो[2] क़िस्म का सालन है, एक में मिर्च ज़ाइद है और येह आ़दी नहीं तो उसे न खाए और वजह पूछी जाए बता दे। और अगर एक ही क़िस्म का खाना है, अब अगर (येह) नहीं खाता तो दा'वत कुनन्दा (या'नी मेज़बान) को उस के लिये कुछ और मंगवाना पड़ेगा, उसे नदामत होगी और तंगदस्त है तो तक्लीफ़ होगी ऐसी ह़ालत में मुरव्वत येह है कि सब्र करे और खाए और अपनी अज़िय्यत ज़ाहिर न करे واللّٰہ تعالٰی اعلم"

(फ़तावा र-ज़विय्यह, जि. 21, स. 652)

www.dawateislami.net

खाने की "40" निय्यतें

(अज़् शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना ***मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार*** *क़ादिरी र-ज़वी* مدَّظِلُّہُ العالی*)*

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (المعجم الکبیر للطبرانی، حدیث ۵۹۴۲، ج ۶، ص ۱۸۵)

(1,2) खाने से क़ब्ल और बा'द का वुज़ू करूंगा। (या'नी हाथ मुंह का अगला हिस्सा धोऊंगा और कुल्लियां करूंगा) (3) इ़बादत (4) तिलावत (5) वालिदैन की ख़िदमत (6) तह़सीले इ़ल्मे दीन (7) सुन्नतों की तरबिय्यत की ख़ातिर म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र (8) अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत में शिर्कत (9) उमूरे आख़िरत और (10) ह़स्बे ज़रूरत कस्बे ह़लाल के लिये भाग दौड़ पर क़ुव्वत ह़ासिल करूंगा (येह **निय्यतें** उसी सूरत में मुफ़ीद होंगी जब कि भूक से कम खाए। ख़ूब डट कर खाने से उल्टा इ़बादत में सुस्ती पैदा होती, गुनाहों की त़रफ़ रुज्ह़ान बढ़ता और पेट की ख़राबियां जनम लेती हैं) (11) ज़मीन पर (12) दस्तर ख़्वान बिछाने की सुन्नत अदा कर के (13) सुन्नत के मुत़ाबिक़ बैठ कर (14) खाने से क़ब्ल बिस्मिल्लाह और (15) दीगर दुआ़एं पढ़ कर (16) तीन उंगलियों से (17) छोटे छोटे निवाले बना कर (18) अच्छी त़रह़ चबा कर खाऊंगा (19) हर दो एक लुक़्मे पर **يَا وَاجِدُ** पढूंगा (20) जो दाना वग़ैरा गिर गया उठा कर खा लूंगा (21) रोटी का हर निवाला सालन के बरतन के ऊपर कर के तोडूंगा ताकि रोटी के ज़र्रात बरतन ही में गिरें (22) हड्डी और गर्म मसालह़ा अच्छी त़रह़ साफ़ करने और चाटने

www.dawateislami.net

के बा'द फेंकूंगा (23) भूक से कम खाऊंगा (24) आख़िर में सुन्नत की अदाएगी की निय्यत से बरतन और (25) तीन बार उंगलियां चाटूंगा (26) खाने के बरतन धो कर पी कर एक ग़ुलाम आज़ाद करने के षवाब का ह़क़दार बनूंगा (احیاء العلوم، ج۲،ص۷) (27) जब तक दस्तर ख़्वान न उठा लिया जाए उस वक़्त तक बिला ज़रूरत नहीं उठूंगा (28) खाने के बा'द मस्नून दुआ़एं पढ़ूंगा (29) ख़िलाल करूंगा।

मिल कर खाने की मज़ीद निय्यतें

(30) दस्तर ख़्वान पर अगर कोई आ़लिम या बुज़ुर्ग मौजूद हुए तो उन से पहले खाना शुरूअ़ नहीं करूंगा (31) मुसलमानों के क़ुर्ब की ब-रकतें ह़ासिल करूंगा (32) उन को बोटी, कद्दू शरीफ़, खुरचन और पानी वग़ैरा पेश कर के उन का दिल खुश करूंगा (33) उन के सामने मुस्कुरा कर स-दक़े का सवाब कमाऊंगा (34) खाने की निय्यतें और (35) सुन्नतें बताऊंगा (36) मौक़अ़ मिला तो खाने से क़ब्ल और (37) बा'द की दुआ़एं पढ़ाऊंगा (38) ग़िज़ा का उ़म्दा ह़िस्सा म-षलन बोटी वग़ैरा ह़िर्स से बचते हुए दूसरों की ख़ातिर ईषार करूंगा (39) उन को ख़िलाल का तोह़फ़ा पेश करूंगा (40) खाने के हर एक दो लुक़्मे पर हो सका तो इस निय्यत के साथ बुलन्द आवाज़ से يَا وَاجِدُ कहूंगा कि दूसरों को भी याद आ जाए।

अल्लाह तआ़ला हमें सुन्नत के मुत़ाबिक़ खाना खाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

पानी पीने की सुन्नतें और आदाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

पानी बैठ कर, उजाले में देख कर, सीधे हाथ से बिस्मिल्लाह पढ़ कर इस त़रह़ पियें कि हर मरतबा गिलास को मुंह से हटा कर सांस लें, पहली और दूसरी बार एक एक घूंट पियें और तीसरी सांस में जितना चाहें पियें।

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऊंट की त़रह़ एक ही घूंट में न पी जाया करो बल्कि दो या तीन बार पिया करो और जब पीने लगो तो बिस्मिल्लाह पढ़ा करो और जब पी चुको तो اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहा करो।"

(سنن ترمذی، کتاب الاشربۃ، باب ماجاء فی التنفس فی الاناء، الحدیث۱۸۹۲، ج۳،ص۳۵۲)

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पीने में तीन बार सांस लेते थे और फ़रमाते थे : "इस त़रह़ पीने में ज़ियादा सैराबी होती है और सिह़ह़त के लिये मुफ़ीद व ख़ुश गवार है।"

(صحیح مسلم، کتاب الاشربۃ، باب کراھۃ التنفس فی الاناء...الخ، الحدیث ۲۰۲۸، ج۳، ص۱۱۲۰)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल ड़यूब صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने बरतन में सांस लेने और फूंकने से मन्अ़ फ़रमाया है।

(سنن ابی داود، کتاب الاشربۃ، باب فی النفخ فی الشراب، الحدیث:۳۷۲۸، ج۳، ص۴۷۵)

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عنہ से रिवायत है कि मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने खड़े हो कर पानी पीने से मन्अ़ फ़रमाया है।

(صحیح مسلم، کتاب الاشربۃ، باب کراھۃ الشرب قائما، الحدیث ۲۰۲۴، ص۱۱۱۹)

पानी पीने की "15" निय्यतें

(अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی)

(1) इबादत (2) तिलावत (3) वालिदैन की ख़िदमत (4) तह़सीले इल्मे दीन (5) सुन्नतों की तरबिय्यत की ख़ात़िर म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र (6) अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत में शिर्कत (7) उमूरे आख़िरत और (8) ह़स्बे ज़रूरत कस्बे ह़लाल के लिये भाग दौड़ पर क़ुव्वत ह़ासिल करूंगा। (येह निय्यतें उसी वक़्त मुफ़ीद होंगी जब कि फ़्रीज़र या बर्फ़ का ख़ूब ठन्डा पानी न हो कि ऐसा पानी मज़ीद बीमारियां पैदा करता है।) (9) बैठ कर (10) बिस्मिल्लाह पढ़ कर (11) उजाले में देख कर (12) चूस कर (13) तीन सांस में पियूंगा (14) पी चुकने के बा'द اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ कहूंगा (15) बचा हुवा पानी नहीं फेंकूंगा।

चाय पीने की "6" निय्यतें

(1) बिस्मिल्लाह पढ़ कर पियूंगा (2) सुस्ती उड़ा कर इबादत (3) तिलावत (4) दीनी किताबत और (5) इस्लामी मुत़ालआ़ पर क़ुव्वत ह़ासिल करूंगा (6) पीने के बा'द اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ कहूंगा।

www.dawateislami.net

"मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" के बारह हुरूफ़ की निस्बत से पानी पीने के 12 म-दनी फूल

★ पेशकर्दा हर हर **म-दनी फूल** को सुन्नते रसूले मक़्बूल علی صاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام पर मह़मूल न फ़रमाइये, इन में सुन्नतों के इलावा बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن से मन्क़ूल **म-दनी फूल** का भी शुमूल है। जब तक यक़ीनी तौर पर मा'लूम न हो किसी अ़मल को "**सुन्नते रसूल**" नहीं कह सकते।

दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:**

﴾1﴿ ऊंट की त़रह़ एक ही सांस में मत पियो, बल्कि दो या तीन मरतबा (सांस ले कर) पियो और पीने से क़ब्ल **बिस्मिल्लाह** पढ़ो और फ़रागत पर اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहा करो (ترمِذی ج۳ ص۳۵۲ حدیث ۱۸۹۲) ﴾2﴿ आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने बरतन में सांस लेने या इस में फूंकने से मन्अ़ फ़रमाया है। (سُنَنِ ابی داوٗد ج۳ ص۴۷۴ حدیث۳۷۲۸)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीषे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : बरतन में सांस लेना जानवरों का काम है नीज़ सांस कभी ज़हरीली होती है इस लिये बरतन से अलग मुंह कर के सांस लो, (या'नी सांस लेते वक़्त गिलास मुंह से हटा लो) गर्म दूध या चाय को फूंकों से ठन्डा न करो बल्कि कुछ ठहरो, क़दरे ठन्डी हो जाए फिर पियो। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 77) अलबत्ता दुरूदे पाक वग़ैरा पढ़ कर ब निय्यते शिफ़ा पानी पर दम करने में ह़रज नहीं ﴾3﴿ पीने से पहले **बिस्मिल्लाह** पढ़ लीजिये ﴾4﴿ चूस कर छोटे छोटे घूंट से पीजिये, बड़े बड़े घूंट पीने से **जिगर**

www.dawateislami.net

की बीमारी पैदा होती है ﴾5﴿ पानी तीन सांस में पीजिये ﴾6-7﴿ सीधे हाथ से और बैठ कर पानी नोश कीजिये ﴾8﴿ लौटे वग़ैरा से वुज़ू किया हो तो उस का बचा हुवा पानी पीना 70 मरज़ से शिफ़ा है कि येह आबे ज़मज़म शरीफ़ की मुशाबहत रखता है, इन दो (या'नी वुज़ू का बचा हुवा पानी और ज़मज़म शरीफ़) के इ़लावा कोई सा भी पानी खड़े खड़े पीना मकरूह है। (माख़ूज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 4, स. 575, जि. 21, स. 669) येह दोनों पानी क़िब्ला रू हो कर खड़े खड़े पियें। ﴾9﴿ पीने से पहले देख लीजिये कि पीने की शै में कोई नुक़सान देह चीज़ वग़ैरा तो नहीं है (إتحافُ السّادَة للزّبيدى ج ٥ ص ٥٩٤) ﴾10﴿ पी चुकने के बा'द اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहिये ﴾11﴿ **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : **बिस्मिल्लाह** पढ़ कर पीना शुरूअ़ करे पहली सांस के आख़िर में اَلْحَمْدُ لِلّٰه दूसरे के बा'द اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِين और तीसरे सांस के बा'द اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ الرَّحمٰنِ الرَّحِيم पढ़े। (اِحياءُ الْعُلَوم ج ٢ ص ٨) ﴾12﴿ **गिलास** में बचे हुए मुसलमान के साफ़ सुथरे झूटे पानी को क़ाबिले इस्ति'माल होने के बा वुजूद ख़्वाह म ख़्वाह फैंकना न चाहिये। पी लेने के चन्द लम्ह़ों के बा'द ख़ाली गिलास को देखेंगे तो उस की दीवारों से बह कर चन्द क़त़रे पैंदे में जम्अ़ हो चुके होंगे उन्हें भी पी लीजिये।

सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

चलने की सुन्नतें और आदाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

म-दनी सरकार صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते त़य्यिबा ज़िन्दगी के हर शो'बे में हमारी रहनुमाई करती है। मुसलमान की चाल भी इम्तियाज़ी होनी चाहिये। गिरीबान खोल कर, गले में ज़न्जीर सजाए, सीना तान कर, क़दम पछाड़ते हुए चलना अह़मक़ों और मग़रूरों की चाल है। मुसलमानों को दरमियाना और पुर वक़ार त़रीक़े पर चलना चाहिये।

★ **लफ़ंगों की त़रह़ गिरीबान खोल कर अकड़ते हुए हरगिज़ न चलें** कि येह अह़मक़ों और मग़रूरों की चाल है बल्कि नीची नज़रें किये पुर वक़ार त़रीक़े पर चलें। ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि जब हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़लाक صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم चलते तो झुके हुए मा'लूम होते थे। (سُنن ابوداوٗد،کتاب الادب،باب فی ھدی الرجل،الحدیث۴۸۶۳،ج۴،ص۳۴۹)

★ **राह चलने में परेशान नज़री से बचें** और सड़क उ़बूर करते वक़्त गाड़ियों वाली सम्त देख कर सड़क उ़बूर करें। अगर गाड़ी आ रही हो तो बे तह़ाशा भाग न पड़ें बल्कि रुक जाएं कि इस में ह़िफ़ाज़त का ज़ियादा इमकान है।

★ **रास्ते में इधर उधर न झांकें, सर झुका कर शरीफ़ाना चाल चलें।**

"राहे मदीना का मुसाफ़िर" के पन्दरह हुरूफ़ की निस्बत से चलने के 15 म-दनी फूल

★ पेशकर्दा हर हर **म-दनी फूल** को सुन्नते रसूले मक़्बूल عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर महमूल न फ़रमाइये, इन में सुन्नतों के इलावा बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِیْن से मन्क़ूल **म-दनी फूल** का भी शुमूल है। जब तक यक़ीनी तौर पर मा'लूम न हो किसी अ़मल को "**सुन्नते रसूल**" नहीं कह सकते।

﴾1﴿ पारह **15 सूरए बनी इसराईल** आयत 37 में इर्शादे रब्बुल इ़बाद है :

وَلَا تَمْشِ فِی الْاَرْضِ مَرَحًاۚ اِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْاَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُوْلًا ﴿۳۷﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और ज़मीन में इतराता न चल, बेशक हरगिज़ ज़मीन न चीर डालेगा और हरगिज़ बुलन्दी में पहाड़ों को न पहुंचेगा।*

﴾2﴿ दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़बूआ़ 1334 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" **जिल्द सिवुम, हिस्सा 16 सफ़्ह़ा 435 पर फ़रमाने मुस्त़फ़ा** है : एक शख़्स दो चादरें ओढ़े हुए इतरा कर चल रहा था और घमन्ड में था, वोह ज़मीन में धंसा दिया गया, वोह क़ियामत तक धंसता ही जाएगा (صَحِیح مُسلِم ص۱۱۵۶ حدیث ۲۰۸۸) ﴾3﴿ सरवरे काएनात, शहनशाहे मौजूदात صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बसा अवक़ात चलते हुए अपने किसी सह़ाबी का हाथ अपने दस्ते मुबारक से पकड़ लेते (اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیر لِلطّبرانی ج۷ص۱۶۲) **अमरद** का हाथ न पकड़े, शहवत के साथ किसी भी इस्लामी भाई का

www.dawateislami.net

हाथ पकड़ना या मुसाफ़ह़ा करना (या'नी हाथ मिलाना) या गले मिलना **ह़राम** और जहन्नम में ले जाने वाला काम है ﴾4﴿ **रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम** صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم चलते तो किसी क़दर आगे झुक कर चलते गोया कि आप बुलन्दी से उतर रहे हैं (الشمائل المحمدیة للترمذی ص۸۷رقم ۱۱۸) ﴾5﴿ गले में सोने या किसी भी धात (या'नी मेटल की) चेन डाले, लोगों को दिखाने के लिये गिरीबान खोल कर अकड़ते हुए हरगिज़ न चलें कि येह अह़मक़ों, मग़रूरों और फ़ासिक़ों की चाल है। गले में सोने की चेन पहनना मर्द के लिये **ह़राम** और दीगर धातों (या'नी मेटल्ज़) की भी ना जाइज़ है ﴾6﴿ अगर कोई रुकावट न हो तो रास्ते के कनारे कनारे दरमियानी रफ़्तार से चलिये, न इतना तेज़ कि लोगों की निगाहें आप की त़रफ़ उठें कि दौड़े दौड़े कहां जा रहा है ! और न इतना आहिस्ता कि देखने वाले को आप बीमार लगें। ﴾7﴿ राह चलने में परेशान नज़री (या'नी बिला ज़रूरत इधर उधर देखना) सुन्नत नहीं, नीची नज़रें किये पुर वक़ार त़रीक़े पर चलिये। ह़ज़रते सय्यिदुना ह़स्सान बिन अबी सिनान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان नमाज़े ई़द के लिये गए, जब वापस घर तशरीफ़ लाए तो अहलिया (बीवी) कहने लगीं : आज कितनी औ़रतें देखीं ? आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ ख़ामोश रहे, जब उस ने ज़ियादा इसरार किया तो फ़रमाया : **"घर से निकलने से ले कर, तुम्हारे पास वापस आने तक मैं अपने (पाउं के) अंगूठों की त़रफ़ देखता रहा।"**

(کتابُ الْوَرَع مع موسُوعَہ امام ابن ابی الدُّنیا ج۱ص۲۰۵)

www.dawateislami.net

سُبْحٰنَ اللہ! **अल्लाह** वाले राह चलते हुए बिला ज़रूरत बिल ख़ुसूस भीड़ के मौक़अ़ पर इधर उधर देखते ही नहीं कि मबादा (या'नी ऐसा न हो) शरअ़न जिस की इजाज़त नहीं उस पर नज़र पड़ जाए ! येह उन बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का तक़्वा था, मस्अला येह है कि किसी औ़रत पर बे इख़्तियार नज़र पड़ भी जाए और फ़ौरन लौटा ले तो गुनाहगार नहीं ﴾8﴿ किसी के घर की बाल्कूनी या खिड़की की त़रफ़ बिला ज़रूरत नज़र उठा कर देखना मुनासिब नहीं ﴾9﴿ चलने या सीढ़ी चढ़ने उतरने में येह एह़तियात़ कीजिये कि जूतों की आवाज़ पैदा न हो, हमारे प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को जूतों की धमक ना पसन्द थी ﴾10﴿ रास्ते में दो औ़रतें खड़ी हों या जा रही हों तो उन के बीच में से न गुज़रें कि ह़दीषे पाक में इस की मुमानअ़त आई है। ﴾11﴿ राह चलते हुए, खड़े बल्कि बैठे होने की सूरत में भी लोगों के सामने थूकना, नाक सिनकना, नाक में उंगली डालना, कान खुजाते रहना, बदन का मैल उंगलियों से छुड़ाना, पर्दे की जगह खुजाना वग़ैरा तहज़ीब के ख़िलाफ़ है ﴾12﴿ बा'ज़ लोगों की आ़दत होती है कि राह चलते हुए जो चीज़ भी आड़े आए उसे लातें मारते जाते हैं, येह क़त़अ़न ग़ैर मुहज़्ज़ब त़रीक़ा है, इस त़रह़ पाउं ज़ख़्मी होने का भी अन्देशा रहता है, नीज़ अख़्बारात या लिखाई वाले डिब्बों, पेकिटों और **मिनरल वॉटर** की ख़ाली बोतलों वग़ैरा पर लात मारना **बे अ-दबी** भी है ﴾13﴿ पैदल चलने में जो क़वानीन ख़िलाफ़े शरअ़ न हों उन की पासदारी कीजिये म-षलन गाड़ियों की आमदो रफ़्त के मौक़अ़ पर सड़क पार करने के लिये मुयस्सर हो तो "**ज़ेब्रा क्रॉसिंग**" या "**ओवर हेड पुल**" इस्ति'माल कीजिये ﴾14﴿ जिस सम्त से गाड़ियां आ रही हों उस त़रफ़

www.dawateislami.net

देख कर ही सड़क उ़बूर कीजिये, अगर आप बीच सड़क पर हों और गाड़ी आ रही हो तो भाग पड़ने के बजाए वहीं खड़े रह जाइये कि इस में हि़फ़ाज़त ज़ियादा है नीज़ रेलगाड़ी गुज़रने के अवक़ात में **पटरियां** उ़बूर करना अपनी मौत को दा'वत देना है, रेलगाड़ी को काफ़ी दूर समझ कर गुज़रने वाले को जल्दी या बे ख़याली में किसी तार वग़ैरा में पाउं उलझ जाने की सूरत में गिरने और ऊपर से रेलगाड़ी गुज़र जाने के ख़त़रे को पेशे नज़र रखना चाहिये नीज़ बा'ज़ जगहें ऐसी होती हैं जहां **पटरी** से गुज़रना ही ख़िलाफ़े क़ानून होता है ख़ुसूसन स्टेशनों पर, इन क़वानीन पर अ़मल कीजिये ﴾15﴿ इ़बादत पर क़ुव्वत ह़ासिल करने की निय्यत से ह़त्तल इम्कान रोज़ाना **पौन घन्टा** ज़िक्रो दुरूद के साथ पैदल चलिये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ सिह़्ह़त अच्छी रहेगी ।

चलने का बेहतर त़रीक़ा येह है कि शुरूअ़ में 15 मिनट तेज़ तेज़ क़दम, फिर 15 मिनट दरमियाना, आख़िर में 15 मिनट फिर तेज़ क़दम चलिये, इस त़रह़ चलने से सारे जिस्म को वरज़िश मिलेगी, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ निज़ामे इन्हिज़ाम (हाज़िमा) दुरुस्त रहेगा, दिल के अमराज़ और दीगर बे शुमार बीमारियों से भी اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ हि़फ़ाज़त होगी ।

ऐ हमारे प्यारे ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *! हमें प्यारे ह़बीब* صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم *की सुन्नत के मुत़ाबिक़ दरमियाना, तकब्बुर से बिलकुल पाक चाल चलने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा और हमें रास्ते के एक त़रफ़, इधर उधर झांके ताके बिग़ैर सर झुका कर शरीफ़ाना चाल चलने की तौफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमा ।*

www.dawateislami.net

बैठने की सुन्नतें और आदाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

हमारा उठना बैठना भी सुन्नत के मुताबिक़ होना चाहिये । हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अकषर क़िब्ला शरीफ़ की तरफ़ रूए अन्वर कर के बैठा करते थे । ज़हे नसीब हम भी कभी कभी क़िब्ला रू हो कर बैठें तो कभी मदीनए मुनव्वरह की तरफ़ मुंह कर के बैठें कि येह भी बहुत बड़ी सआदत है । काश ! मदीनए पाक की तरफ़ रुख कर के बैठते वक़्त येह तसव्वुर भी बंध जाए और ज़बाने ह़ाल से येह इज़्हार होने लगे :

दीदार के क़ाबिल तो कहां मेरी नज़र है
येह तेरी इनायत है जो रुख़ तेरा इधर है

बैठने की चन्द सुन्नतें और आदाब मुलाह़ज़ा हों :

★ **सुरीन ज़मीन पर रखें और दोनों घुटनों को खड़ा कर के दोनों हाथों से घेर लें और एक हाथ से दूसरे को पकड़ लें, इस तरह़ बैठना सुन्नत है** (लेकिन इस दौरान घुटनों पर कोई चादर वग़ैरा ओढ़ लेना बेहतर है ।) (मिरआतुल मनाजीह़, जिल्द . 6, स. 387)

★ **चार ज़ानू** (या'नी पालती मार कर) **बैठना भी नबिय्ये करीम** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **से षाबित है ।**

★ **जहां कुछ धूप और कुछ छाउं हो वहां न बैठें ।** ह़ज़रते सय्यिदुना

www.dawateislami.net

अबू हुरैरह رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब तुम में से कोई साए में हो और उस पर से साया रुख़्सत हो जाए और वोह कुछ धूप कुछ छाउं में रह जाए तो उसे चाहिये कि वहां से उठ जाए।"

(سنن ابی داوٗد، کتاب الادب، باب فی الجلوس بین الظل والشمس، الحدیث ۴۸۲۱، ج۴، ص۳۴۴)

★**क़िब्ला रुख़ हो कर बैठें।**

(रसाइले अत्तारिय्या, हिस्सा : 2, स. 229)

★**बुज़ुर्गों की निशस्त** पर बैठना अदब के ख़िलाफ़ है।

आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن लिखते हैं : पीर व उस्ताज़ की निशस्त पर उन की ग़ैबत (या'नी ग़ैर मौजूदगी) में भी न बैठे। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 24, स. 369 / 424)

★कोशिश करें कि उठते बैठते वक़्त **बुज़ुर्गाने दीन की तरफ़ पीठ** न होने पाए और पाउं तो उन की तरफ़ न ही करें।

★जब कभी इजतिमाअ़ या मजलिस में आएं तो **लोगों को फलांग** कर आगे न जाएं जहां जगह मिले वहीं बैठ जाएं।

★ **जब बैठें तो जूते उतार लें** आप के क़दम आराम पाएंगे।

(الجامع الصغیر، الحدیث ۵۵۴، ص۴۰)

★ **मजलिस से फ़ारिग हो कर येह दुआ तीन बार पढ़ लें** तो गुनाह मुआफ़ हो जाएंगे। और जो इस्लामी भाई मजलिसे ख़ैर व मजलिसे

www.dawateislami.net

ज़िक्र में पढ़े तो उस के लिये उस ख़ैर पर मोहर लगा दी जाएगी। वोह दुआ़ येह है :

"سُبْحَانَکَ اللّٰھُمَّ وَبِحَمْدِکَ لَا اِلٰہَ اِلَّا اَنْتَ اَسْتَغْفِرُکَ وَاَتُوْبُ اِلَیْکَ"

तर्जमा : तेरी ज़ात पाक है और ऐ ***अल्लाह*** *! तेरे ही लिये तमाम ख़ूबियां हैं, तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, तुझ से बख़्शिश चाहता हूं और तेरी त़रफ़ तौबा करता हूं।*

(سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی کفارۃ المجلس، الحدیث ۴۸۵۷، ج۴، ص۳۴۷)

★ जब कोई आ़लिमे बा अ़मल या मुत्तक़ी शख़्स या सय्यिद साहि़ब या वालिदैन आएं तो **ता'ज़ीमन खड़े हो जाना षवाब है**।

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی लिखते हैं : बुज़ुर्गों की आमद पर येह दोनों काम या'नी ता'ज़ीमी क़ियाम और इस्तिक़्बाल जाइज़ बल्कि सुन्नते सह़ाबा है बल्कि हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नते क़ौली है।

(मिरआतुल मनाजीह़, जिल्द . 6, स. 370)

ऐ हमारे प्यारे ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *!*

हमें उठने बैठने की सुन्नतों और आदाब पर अ़मल पैरा होने की तौफ़ीक़े रफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमा।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

★★★★★★

लिबास पहनने के आदाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का येह एह्साने अ़ज़ीम है कि उस ने हमें लिबास की दौलत अ़ता की। लिबास से हम सर्दी, गर्मी के अ-षरात से अपनी हि़फ़ाज़त कर सकतें हैं, येह लिबास हमारी ज़ीनत का सबब भी है और सबबे वक़ार भी है। हर क़ौम का जुदा जुदा लिबास होता है, मगर मुसलमान का लिबास सब से मुमताज़ है।

★ **सफे़द लिबास हर लिबास से बेहतर है और सरकारे मदीना** صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **ने इस को पसन्द फ़रमाया है।** ह़ज़रते सय्यिदुना समुरह رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हु़ज़ूरे पाक صَلَّى اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "सफे़द लिबास पहनो क्यूंकि येह ज़ियादा साफ़ और पाकीज़ा है और अपने मुर्दों को भी इसी में कफ़्नाओ।"

(جامع ترمذی،ج٤،ص٣٧٠،حدیث:٢٨١٩)

"म-दनी हुल्या अपनाओ" के चौदह हु़रूफ़ की निस्बत से लिबास के 14 म-दनी फूल

★ पेशकर्दा हर हर **म-दनी फूल** को सुन्नते रसूले मक़्बूल علٰی صاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام पर मह़्मूल न फ़रमाइये, इन में सुन्नतों के इ़लावा बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن से मन्क़ूल **म-दनी फूल** का भी शुमूल है। जब तक यक़ीनी तौर पर मा'लूम न हो किसी अ़मल को "**सुन्नते रसूल**" नहीं कह सकते।

पहले **तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा** मुलाह़ज़ा हों :

www.dawateislami.net

《1》 जिन्न की आंखों और लोगों के सित्र के दरमियान पर्दा येह है कि जब कोई कपड़े उतारे तो **बिस्मिल्लाह** कह ले (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ج۱۰ص۱۷۳حدیث ۱۰۳٦۲) **हकीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नइमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی फ़रमाते हैं : जैसे दीवार और पर्दे लोगों की निगाह के लिये आड़ बनते हैं ऐसे ही येह, **अल्लाह** (عَزَّ وَجَلَّ) का ज़िक्र जिन्नात की निगाहों से आड़ बनेगा कि जिन्नात इस को देख न सकेंगे । (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 268)

《2》 जो शख़्स कपड़ा पहने और येह पढ़े : اَلْحَمْدُلِلّٰهِ الَّذِیْ كَسَانِیْ هٰذَا وَرَزَقَنِيْهِ مِنْ غَيْرِحَوْلٍ مِّنِّیْ وَلَا قُوَّةٍ तो उस के अगले पिछले गुनाह मुआ़फ़ हो जाएंगे (شُعَبُ الْإيمان ج٥ ص ١٨١حديث ٦٢٨٥) 《3》 जो बा वुजूदे कुदरत अच्छे कपड़े पहनना तवाज़ोअ़ (आ़जिज़ी) के तौर पर छोड़ दे, **अल्लाह तआ़ला** उस को करामत का हुल्ला पहनाएगा (ابوداوٗد ج٤ ص٣٢٦حديث ٤٧٧٨) 《4》 **नबिय्ये पाक** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का मुबारक लिबास अकषर सफ़ेद कपड़े का होता। (كَشْفُ الْاِلْتِبَاس فِی اسْتِحْبَابِ اللِّبَاس ص٣٦)

《5》 लिबास ह़लाल कमाई से हो और जो लिबास ह़राम कमाई से ह़ासिल हुवा हो, उस में फ़र्ज़ व नफ़्ल कोई नमाज़ क़बूल नहीं होती (اَیضاً ص٤١) 《6》 **मन्क़ूल** है : जिस ने बैठ कर इमामा बांधा, या खड़े हो कर सरावील (या'नी पाजामा या शलवार) पहनी तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उसे ऐसे मरज़ में मुब्तला फ़रमाएगा जिस की दवा नहीं (اَیضاً ص ٣٩)

《7》 पहनते वक़्त सीधी त़रफ़ से शुरूअ़ कीजिये (कि सुन्नत है) म-षलन जब कुरता पहनें तो पहले सीधी आस्तीन में सीधा हाथ दाख़िल कीजिये फिर उलटा हाथ उलटी आस्तीन में (اَیضاً٤٣)

《8》 इसी त़रह़ पाजामा पहनने में पहले सीधे पाइंचे में सीधा पाउं

www.dawateislami.net

दाख़िल कीजिये और जब (कुरता या पाजामा) उतारने लगें तो इस के बर अ़क्स या'नी उलटी त़रफ़ से शुरूअ़ कीजिये ﴾9﴿ दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़बूआ़ 1334 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द सिवुम, हिस्सा : 16, सफ़ह़ा 409 पर है : सुन्नत येह है कि दामन की लम्बाई आधी पिंडली तक हो और आस्तीन की लम्बाई ज़ियादा से ज़ियादा उंगलियों के पोरों तक और चौड़ाई एक बालिश्त हो (رَدُّالْمُحتار ج ۹ ص ۵۷۹) ﴾10﴿ सुन्नत येह है कि मर्द का तहबन्द या पाजामा टख़्ने से ऊपर रहे (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 94) ﴾11﴿ मर्द मर्दाना और औ़रत ज़नाना ही लिबास पहने। छोटे बच्चों और बच्चियों में भी इस बात का लिह़ाज़ रखिये ﴾12﴿ मर्द के लिये नाफ़ के नीचे से घुटनों के नीचे तक "**औ़रत**" है, या'नी इस का छुपाना **फ़र्ज़** है। नाफ़ इस में दाख़िल नहीं और घुटने दाख़िल हैं।

(دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتار ج۲ ص۹۳)

इस ज़माने में बहुतेरे ऐसे हैं कि तहबन्द या पाजामा इस त़रह़ पहनते हैं कि **पेडू** (या'नी नाफ़ के नीचे) का कुछ ह़िस्सा खुला रहता है, अगर कुरते वग़ैरा से इस त़रह़ छुपा हो कि जिल्द (या'नी खाल) की रंगत न चमके तो ख़ैर, वरना **ह़राम** है और नमाज़ में चौथाई की मिक्दार खुला रहा तो नमाज़ न होगी (बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल, ह़िस्सा : 3, स. 481) ख़ुसूसन ह़ज व उ़मरे के एह़राम वाले को इस एह़तियात़ की सख़्त ज़रूरत है ﴾13﴿ आज कल बा'ज़ लोग नीकर (हाफ़ पेन्ट) पहने फिरते हैं जिस से उन के घुटने और रानें नज़र आती हैं येह **ह़राम** है, ऐसों के खुले घुटनों और रानों की त़रफ़ नज़र करना भी **ह़राम** है। बिल ख़ुसूस दरिया के कनारे पर खेलकूद के

www.dawateislami.net

मैदान और वरज़िश करने के मक़ामात पर इस त़रह़ के मनाज़िर ज़ियादा होते हैं। लिहाज़ा ऐसे मक़ामात पर जाने में सख़्त एह़तियात ज़रूरी है ﴾14﴿ **तकब्बुर** के तौ़र पर जो लिबास हो वोह ममनूअ़ है। **तकब्बुर** है या नहीं इस की शनाख़्त यूं करे कि इन कपड़ों के पहनने से पहले अपनी जो ह़ालत पाता था अगर पहनने के बा'द भी वोही ह़ालत है तो मा'लूम हुवा कि इन कपड़ों से **तकब्बुर** पैदा नहीं हुवा। अगर वोह ह़ालत अब बाक़ी नहीं रही तो **तकब्बुर** आ गया। लिहाज़ा ऐसे कपड़े से बचे कि **तकब्बुर** बहुत बुरी सिफ़त है।

(رَدُّالْمُحتارج ۹ ص ۵۷۹)

म-दनी हुल्या

दाढ़ी, ज़ुल्फ़ें, सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ (सब्ज़ रंग गहरा या'नी डार्क न हो), सफ़ेद कुरता, सुन्नत के मुत़ाबिक़ आधी पिंडली तक लम्बा, आस्तीनें एक बालिश्त चौड़ी, सीने पर दिल की जानिब वाली जेब में नुमायां मिस्वाक, पाजामा या शलवार टख़्नों से ऊपर। (सर पर सफ़ेद चादर और पर्दे में पर्दा करने के लिये **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल करते हुए कथ्थई चादर भी साथ रहे तो मदीना मदीना)

दुआ़ए अ़त्तार : या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ***! मुझे और म-दनी हुल्ये में रहने वाले तमाम इस्लामी भाइयों को सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के साए में शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में अपने प्यारे मह़बूब*** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ***का पड़ोस नसीब फ़रमा।***

www.dawateislami.net

"इ़मामा बांधना सुन्नत है" के सतरह हुरूफ़ की निस्बत से इ़मामे के 17 म-दनी फूल

छे फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم :

﴾1﴿ इ़मामे के साथ दो रकअ़त नमाज़ बिग़ैर इ़मामे की सत्तर (70) रकअ़तों से अफ़्ज़ल हैं (اَلْفِردَوس بمأثور الْخَطّاب ج٢ص٢٦٥ حديث٣٢٣٣) ﴾2﴿ टोपी पर इ़मामा हमारे और मुश्रिकीन के दरमियान फ़र्क़ है हर पेच पर कि मुसलमान अपने सर पर देगा इस पर रोज़े क़ियामत एक नूर अ़त़ा किया जाएगा (اَلْجامِعُ الصَّغِير لِلسُّيُوطي ص٣٥٣ حديث٥٧٢٥) ﴾3﴿ बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के फ़िरिश्ते दुरूद भेजते हैं जुमुए़ के रोज़ इ़मामे वालों पर (اَلْفِردَوس بمأثور الْخَطّاب ج١ص١٤٧ حديث٥٢٩) ﴾4﴿ इ़मामे के साथ नमाज़ दस हज़ार नेकियों के बराबर है (ايضاً ج٢ص ٤٠٦ حديث ٣٨٠٥, फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 6, स. 220) ﴾5﴿ इ़मामे के साथ एक जुमुआ़ बिग़ैर इ़मामे के सत्तर (70) जुमुओ़ं के बराबर है। (تاريخ مدينة دمشق لابن عساكِر ج٣٧ ص٣٥٥) ﴾6﴿ इ़मामे अ़रब के ताज हैं तो इ़मामा बांधो तुम्हारा वक़ार बढ़ेगा और जो इ़मामा बांधे उस के लिये हर पेच पर एक नेकी है (جَمْعُ الْجَوامِع للسيوطي ج٥ص٢٠٢ حديث١٤٥٣٦) ﴾7﴿ दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1334 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"बहारे शरीअ़त" जिल्द सिवुम हिस्सा 16 सफ़्ह़ा 660** पर है : इ़मामा खड़े हो कर बांधे और पाजामा बैठ कर पहने, जिस ने इस का उलटा किया (या'नी इ़मामा बैठ कर बांधा और पाजामा खड़े हो कर पहना) वोह ऐसे मरज़ में मुब्तला होगा जिस की दवा नहीं ﴾8﴿ मुनासिब येह है कि इ़मामे का पहला पेच सर की सीधी जानिब जाए (फ़तावा र-ज़विय्या, जि.

22, स. 199) ﴾9﴿ नबिय्ये करीम عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ و التسلیم के मुबारक इमामे का शमला उ़मूमन पुश्त (या'नी पीठ मुबारक) के पीछे होता था और कभी कभी सीधी जानिब, कभी दोनों कन्धों के दरमियान दो शमले होते, उलटी जानिब शमले का लटकाना ख़िलाफ़े सुन्नत है। (اشعۃ اللمعات ج۳ ص۵۸۲) ﴾10﴿ इमामे के शमले की मिक़्दार कम अज़् कम चार उंगल और ज़ियादा से ज़ियादा (आधी पीठ तक या'नी तक़्रीबन) एक हाथ (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 182) ﴾11﴿ **इमामा क़िब्ला** रू खड़े खड़े बांधिये (کَشْفُ الْاِلْتِبَاس فِی اسْتِحْبَابِ اللِّبَاس ص۳۸) ﴾12-13﴿ इमामे में सुन्नत येह है कि ढाई गज़ से कम न हो, न छे गज़ से ज़ियादा और इस की बन्दिश **गुम्बद नुमा** हो (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 186) ﴾14-15﴿ रुमाल अगर बड़ा हो कि इतने पेच आ सकें जो सर को छुपा लें तो वोह इमामा ही हो गया और छोटा रुमाल जिस से सिर्फ़ दो एक पेच आ सकें लपेटना मकरूह है (ऐज़न, जि. 7, स. 299) ﴾16﴿ इमामा उतारते वक़्त (बंधा बंधाया रख देने के बजाए) एक एक कर के पेच खोला जाए। (فتاوٰی ھندیۃ ج۵ ص۳۳۰) ﴾17﴿ अ़ल्लामा **शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिषे देहलवी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं :

دَسْتارِمُبارَك آنْحضرَت صَلَّی اللّٰہ تَعالٰی عَلَیْہِ واٰلِہٖ وسلَّم دراَکْثر سَفَیْد بُوْد وَگاہے سِیاہ اَحیاناً سَبْز.

नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰه تَعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का इमामा शरीफ़ अकषर सफ़ेद, कभी सियाह और कभी **सब्ज़** होता था।

(کَشْفُ الْاِلْتِبَاس فِی اسْتِحْبَابِ اللِّبَاس لِلشَّیْخ عبدالْحَقّ الدّھلَوی ص۳۸)

सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** मे **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

www.dawateislami.net

जूता पहनने की सुन्नतें और आदाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

ना'लैन पहनना सरकारे मदीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत है। जूते पहनने से कंकर, कांटे वग़ैरा चुभने से पाउं की ह़िफ़ाज़त रहती है। नीज़ मौसिमे सरमा में सर्दी से भी पाउं मह़फ़ूज़ रहते हैं और गर्मियों में धूप में चलने के लिये जूते निहायत ही कार आमद हैं। जूता पहनने की चन्द सुन्नतें और आदाब मुलाह़ज़ा हों :

★**किसी भी रंग का जूता पहनना अगर्चे जाइज़ है लेकिन पीले रंग के जूते पहनना बेहतर है** कि मौला मुश्किल कुशा अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं जो पीले जूते पहनेगा उस की फ़िक्रों में कमी होगी। (کشف الخفاء،الحدیث۲۵۹۵،ج۲،ص۲۴۶)

★ **पहले सीधा जूता पहनें फिर उल्टा और उतारते वक़्त पहले उल्टा जूता उतारें फिर सीधा**। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरह رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "(कोई शख़्स) जब जूता पहने तो पहले दाहने पाउं में पहने और जब उतारे तो पहले बाएं पाउं का उतारे।"

(سنن ابن ماجہ،کتاب اللباس،باب لبس النعال وخلعہا،الحدیث۳۶۱۶،ج۴،ص۱۶۶)

www.dawateislami.net

"चल मदीना" के सात हुरूफ़ की निस्बत से जूते पहनने के 7 म-दनी फूल

★ पेशकर्दा हर हर **म-दनी फूल** को सुन्नते रसूले मक़्बूल عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर मह़मूल न फ़रमाइये, इन में सुन्नतों के इलावा बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِیْن से मन्क़ूल म-दनी फूल का भी शुमूल है। जब तक यक़ीनी त़ौर पर मा'लूम न हो किसी अ़मल को "**सुन्नते रसूल**" नहीं कह सकते।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم :

《1》 जूते ब कषरत इस्ति'माल करो कि आदमी जब तक जूते पहने होता है गोया वोह सुवार होता है। (या'नी कम थकता है) (مُسلِم ص۱۱۶۱حدیث۲۰۹۶) 《2》 जूते पहनने से पहले झाड़ लीजिये ताकि कीड़ा या कंकर वग़ैरा हो तो निकल जाए 《3》 पहले सीधा जूता पहनिये फिर उलटा और उतारते वक़्त पहले उलटा जूता उतारिये फिर सीधा। **नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जब तुम में से कोई जूते पहने तो दाईं (सीधी) जानिब से इब्तिदा करनी चाहिये और जब उतारे तो बाईं (उलटी) जानिब से इब्तिदा करनी चाहिये ताकि दायां (सीधा) पाउं पहनने में अव्वल और उतारने में आख़िरी रहे। (بُخاری ج ٤ ص ٦٥ حدیث٥٨٥٥) **नुज़्हतुल क़ारी में है :** मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त हुक्म येह है पहले सीधा पाउं मस्जिद में रखे और जब मस्जिद से निकले तो पहले उलटा पाउं निकाले। मस्जिद के दाख़िले के वक़्त इस ह़दीष पर अ़मल दुश्वार है। **आ'ला ह़ज़रत** इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने इस का ह़ल

www.dawateislami.net

येह इर्शाद फ़रमाया है : जब मस्जिद में जाना हो तो पहले उलटे पाउं को निकाल कर जूते पर रख लीजिये फिर सीधे पाउं से जूता निकाल कर मस्जिद में दाख़िल हो। और जब मस्जिद से बाहर हो तो उलटा पाउं निकाल कर जूते पर रख लीजिये फिर सीधा पाउं निकाल कर सीधा जूता पहन लीजिये फिर उलटा पहन लीजिये । (نزھۃ القاری ج ٥ ص ٥٣٠) 《4》 मर्द मर्दाना और औ़रत ज़नाना जूता इस्ति'माल करे 《5》 किसी ने **ह़ज़रते** सय्यिदतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡھَا से कहा कि एक औ़रत (मर्दों की त़रह़) जूते पहनती है । उन्हों ने फ़रमाया : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मर्दानी औ़रतों पर ला'नत फ़रमाई है । (سنن ابی داود ج ٤ ص ٨٤ حدیث ٤٠٩٩)

बहारे शरीअ़त जि. 3 हिस्सा : 16 स. 422 पर है : या'नी औ़रतों को मर्दाना जूता नहीं पहनना चाहिये बल्कि वोह तमाम बातें जिन में मर्दों और औ़रतों का इम्तियाज़ होता है इन में हर एक को दूसरे की वज़्अ़ इख़्तियार करने (या'नी नक़्क़ाली करने) से मुमानअ़त है, न मर्द औ़रत की वज़्अ़ (त़र्ज़) इख़्तियार करे, न औ़रत मर्द की। 《6》 जब बैठें तो जूते उतार लीजिये कि इस से क़दम आराम पाते हैं 《7》 (तंगदस्ती का एक सबब येह भी है कि) औंधे जूते को देखना और उस को सीधा न करना "**दौलते बे ज़वाल**" में लिखा है कि अगर रात भर जूता औंधा पड़ा रहा तो शैत़ान उस पर आन कर बैठता है वोह उस का तख़्त है । (सुन्नी बहिश्ती ज़ेवर, हि़स्सा : 5, स. 601) इस्ति'माली जूता उलटा पड़ा हो तो सीधा कर दीजिये ।

*या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें सुन्नत के मुत़ाबिक़ जूते पहनने और उतारने की तौफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमा ।*

www.dawateislami.net

सोने जागने की सुन्नतें और आदाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

नींद भी एक त़रह़ की मौत है। जब भी हम सोने लगें तो हमें डर जाना चाहिये कि कहीं ऐसा न हो कि आंख ही न खुले और हमेशा हमेशा के लिये ही सोते न रह जाएं। लिहाज़ा रोज़ाना सोने से पहले भी अपने गुनाहों से तौबा कर लेनी चाहिये।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अगर हम **सुन्नत के मुत़ाबिक़** दुआ़एं वग़ैरा पढ़ कर सोएं तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ हमें सोने का भी कुछ न कुछ फ़ाएदा ह़ासिल हो ही जाएगा।

★ **उल्टा या'नी पेट के बल न सोएं।** ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स को पेट के बल लेटे हुए देखा तो फ़रमाया : "इस त़रह़ लेटने को अल्लाह तआ़ला पसन्द नहीं फ़रमाता।"

(سنن ابن ماجه،ج٤،ص٢١٤،حديث:٣٧٢٣ وجامع الترمذی، كتاب الشمائل،ج٥،ص٥٤٩،حديث٢٥٣)

★ **क़ुरआने मजीद** के आदाब में से येह भी है कि इस की त़रफ़ पीठ न की जाए न पाउं फैलाए जाएं, न पाउं को इस से ऊंचा करें, न येह कि ख़ुद ऊंची जगह पर हो और क़ुरआने मजीद नीचे हो। (बहारे शरीअ़त, जिल्द सिवुम, ह़िस्सा : 16, स. 496) हां अगर क़ुरआने पाक और मुक़द्दस तुग़रे वग़ैरा ऊंची जगह हों तो उस सम्त पाउं करने में मुज़ायक़ा नहीं। (الفتاوى الهنديه،ج٥،ص٣٢٢)

www.dawateislami.net

“काश ! जन्नतुल बक़ीअ़ मिले” के पन्दरह हुरूफ़ की निस्बत से सोने, जागने के 15 म-दनी फूल

★ पेशकर्दा हर हर **म-दनी फूल** को सुन्नते रसूले मक़्बूल عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर मह्मूल न फ़रमाइये, इन में सुन्नतों के इलावा बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن से मन्क़ूल म-दनी फूल का भी शुमूल है । जब तक यक़ीनी तौर पर मा'लूम न हो किसी अ़मल को **“सुन्नते रसूल”** नहीं कह सकते ।

﴾1﴿ सोने से पहले बिस्तर को अच्छी तरह झाड़ लीजिये ताकि कोई मूज़ी कीड़ा वग़ैरा हो तो निकल जाए ﴾2﴿ सोने से पहले येह दुआ़ पढ़ लीजिये : اَللّٰهُمَّ بِاسْمِكَ اَمُوْتُ وَاَحْيٰى तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरे नाम के साथ ही मरता हूं और जीता हूं (या'नी सोता और जागता हूं) (بُخاری ج ٤ ص ١٩٦ حدیث ٦٣٢٥) ﴾3﴿ **अ़स्र के बा'द न सोएं अ़क़्ल ज़ाइल होने का ख़ौफ़ है । फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : “जो शख़्स अ़स्र के बा'द सोए और उस की अ़क़्ल जाती रहे तो वोह अपने ही को मलामत करे ।” (مسند ابی یعلی ج ٤ ص ٢٧٨ حدیث ٤٨٩٧)

﴾4﴿ दोपहर को क़ैलूला (या'नी कुछ देर लैटना) मुस्तहब है ।

(عالمگیری ج ٥ ص ٣٧٦)

सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ग़ालिबन येह उन लोगों के लिये होगा जो शब बेदारी करते हैं, रात

www.dawateislami.net

में नमाज़ें पढ़ते, ज़िक्रे इलाही करते हैं या कुतुब बीनी या मुत़ालए़ में मशग़ूल रहते हैं कि शब बेदारी में जो तकान हुई क़ैलूला से दफ़्अ़ हो जाएगी । (बहारे शरीअ़त, जिल्द सिवुम, हिस्सा : 16, स. 435)

﴾5﴿ दिन के इब्तिदाई हिस्से में सोना या मग़रिब व इशा के दरमियान सोना मकरूह है । (عالمگیری ج ٥ ص ٣٧٦) ﴾6-7﴿ सोने में मुस्तह़ब येह है कि बा त़हारत सोए और कुछ देर सीधी करवट पर सीधे हाथ को रुख़्सार (या'नी गाल) के नीचे रख कर क़िब्ला रू सोए फिर इस के बा'द बाईं करवट पर (ایضاً) ﴾8﴿ सोते वक़्त क़ब्र में सोने को याद करे कि वहां तन्हा सोना होगा सिवा अपने आ'माल के कोई साथ न होगा ﴾9﴿ सोते वक़्त यादे ख़ुदा में मश्ग़ूल हो तहलील व तस्बीह़ व तह़मीद पढ़े (या'नी لَا اِلٰہَ اِلَّااللّٰہ- سُبْحٰنَ اللّٰہ और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ का विर्द करता रहे) यहां तक कि सो जाए, कि जिस ह़ालत पर इन्सान सोता है उसी पर उठता है और जिस ह़ालत पर मरता है क़ियामत के दिन उसी पर उठेगा (ایضاً) ﴾10﴿ जागने के बा'द येह दुआ़ पढ़िये : ''اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْٓ اَحْیَانَا بَعْدَ مَآ اَمَا تَنَا وَاِلَیْہِ النُّشُوْرُ'' (بخاری ج ٤ ص ١٩٦ حدیث ٦٣٢٥) **तर्जमा :** तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने हमें मारने के बा'द ज़िन्दा किया और उसी की त़रफ़ लौट कर जाना है ﴾11﴿ उसी वक़्त इस का पक्का इरादा करे कि परहेज़ गारी व तक़्वा करेगा किसी को सताएगा नहीं । (فتاوٰی ھندیه ج ٥ ص ٣٧٦) ﴾12﴿ जब लड़के और लड़की की उ़म्र दस

www.dawateislami.net

साल की हो जाए तो उन को अलग अलग सुलाना चाहिये बल्कि इस उ़म्र का लड़का इतने बड़े (या'नी अपनी उ़म्र के) लड़कों या (अपने से बड़े) मर्दों के साथ भी न सोए। (دُرِّمُختار و رَدُّالْمُحتار ج۹ ص۶۲۹)

﴾13﴿ मियां बीवी जब एक चारपाई पर सोएं तो दस बरस के बच्चे को साथ न सुलाएं, लड़का जब ह़द्दे शहवत को पहुंच जाए तो वोह मर्द के हुक्म में है। (دُرِّمُختار ج۹ ص۶۳۰) ﴾14﴿ नींद से बेदार हो कर मिस्वाक कीजिये ﴾15﴿ रात में नींद से बेदार हो कर तहज्जुद अदा कीजिये तो बड़ी सआ़दत है। **सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "फ़र्ज़ों के बा'द अफ़ज़ल नमाज़ रात की नमाज़ है।" (صَحِيح مُسلِم ص ۵۹۱ حديث ۱۱۶۳)

सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी हल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो पाओगे ब-र-कतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صلَّى اللّٰهُ تعالٰى على محمَّد

*ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें कम सोने और सुन्नत के मुत़ाबिक़ सोने की तौफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमा।*

اٰمين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

★★★★★★

“मिस्वाक करना सुन्नते मुबारका है” के बीस हुरूफ़ की निस्बत से मिस्वाक के 20 म-दनी फूल

पहले **दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा हों : ❁ दो रकअ़त मिस्वाक कर के पढ़ना बिग़ैर मिस्वाक की 70 रकअ़तों से अफ़्ज़ल है (اَلتَّرغِیب وَالتَّرھِیب ج ۱ ص ۱۰۲ حدیث۱۸) ❁ मिस्वाक का इस्ति'माल अपने लिये लाज़िम कर लो क्यूंकि इस में मुंह की सफ़ाई और रब तआ़ला की रिज़ा का सबब है (مُسنَدِ اِمام احمد بن حنبل ج ۲ ص۴۳۸ حدیث ۵۸۶۹) ❁ **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़बूआ़ **बहारे शरीअ़त** जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 288 पर **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی लिखते हैं : मशाइख़े किराम फ़रमाते हैं : जो शख़्स **मिस्वाक** का आ़दी हो मरते वक़्त उसे **कलिमा** पढ़ना नसीब होगा और जो **अफ़्यून** खाता हो मरते वक़्त उसे **कलिमा** नसीब न होगा ❁ ह़ज़रते सय्यिदुना **इब्ने अ़ब्बास** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है कि **मिस्वाक** में दस ख़ूबियां हैं : मुंह साफ़ करती, मसूढ़े को मज़बूत़ बनाती है, बीनाई बढ़ाती, बलग़म दूर करती है, मुंह की बदबू ख़त्म करती, सुन्नत के मुवाफ़िक़ है, फ़िरिश्ते ख़ुश होते हैं, रब राज़ी होता है, नेकी बढ़ाती और मे'दा दुरुस्त करती है (جَمْعُ الْجَوامِع لِلسُّیُوطی ج۵ ص ۲۴۹ حدیث ۱۴۸۶۷) ❁ ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी** قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی नक़्ल करते हैं : एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू बक्र शिब्ली** बग़दादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی को वुज़ू के वक़्त **मिस्वाक** की ज़रूरत हुई, तलाश

www.dawateislami.net

की मगर न मिली, लिहाज़ा एक दीनार (या'नी एक सोने की अशरफ़ी) में **मिस्वाक** ख़रीद कर इस्ति'माल फ़रमाई। बा'ज़ लोगों ने कहा : येह तो आप ने बहुत ज़ियादा ख़र्च कर डाला ! कहीं इतनी महंगी भी **मिस्वाक** ली जाती है ? फ़रमाया : बेशक येह दुन्या और इस की तमाम चीज़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक मच्छर के पर बराबर भी हैषिय्यत नहीं रखतीं, अगर बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझ से येह पूछ लिया तो क्या जवाब दूंगा कि "तूने मेरे प्यारे ह़बीब की सुन्नत (मिस्वाक) क्यूं तर्क की ? जो मालो दौलत मैं ने तुझे दिया था उस की ह़क़ीक़त तो (मेरे नज़्दीक) मच्छर के पर बराबर भी नहीं थी, तो आख़िर ऐसी ह़क़ीर दौलत इस अ़ज़ीम सुन्नत (मिस्वाक) को ह़ासिल करने पर क्यूं ख़र्च नहीं की ?" (مُلَخَّص از لواقح الانوار ص ٣٨)

❁ सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : चार चीज़ें अ़क़्ल बढ़ाती हैं : फ़ुज़ूल बातों से परहेज़, **मिस्वाक** का इस्ति'माल, सुलहा या'नी नेक लोगों की सोह़बत और अपने इ़ल्म पर अ़मल करना (اِحْیاءُ الْعُلُوم ج ٢ ص ٢٧) ❁ मिस्वाक पीलू या ज़ैतून या नीम वग़ैरा कड़वी लकड़ी की हो ❁ मिस्वाक की मोटाई छुंगलिया या'नी छोटी उंगली के बराबर हो ❁ मिस्वाक एक बालिश्त से ज़ियादा लम्बी न हो वरना उस पर शैत़ान बैठता है ❁ इस के रेशे नर्म हों कि सख़्त रेशे दांतों और मसूढ़ों के दरमियान ख़ला (GAP) का बाइ़ष बनते हैं ❁ मिस्वाक ताज़ा हो तो ख़ूब (या'नी बेहतर) वरना कुछ देर पानी के गिलास में भिगो कर नर्म कर लीजिये ❁ मुनासिब है कि इस के रेशे रोज़ाना काटते रहिये कि रेशे उस वक़्त तक कार आमद रहते हैं जब तक उन में तल्ख़ी बाक़ी रहे

www.dawateislami.net

❁ दांतों की चौड़ाई में मिस्वाक कीजिये ❁ जब भी मिस्वाक करनी हो कम अज़ कम तीन बार कीजिये ❁ हर बार धो लीजिये ❁ मिस्वाक सीधे हाथ में इस त़रह़ लीजिये कि छुंगलिया या'नी छोटी उंगली उस के नीचे और बीच की तीन उंगलियां ऊपर और अंगूठा सिरे पर हो ❁ पहले सीधी त़रफ़ के ऊपर के दांतों पर फिर उलटी त़रफ़ के ऊपर के दांतों पर फिर सीधी त़रफ़ नीचे फिर उलटी त़रफ़ नीचे मिस्वाक कीजिये ❁ मुठ्ठी बांध कर मिस्वाक करने से बवासीर हो जाने का अन्देशा है ❁ मिस्वाक वुज़ू की सुन्नते क़ब्लिया है अलबत्ता **सुन्नते मुअक्कदा** उसी वक़्त है जब कि मुंह में बदबू हो (माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 1, स. 623) ❁ मिस्वाक जब ना क़ाबिले इस्ति'माल हो जाए तो फैंक मत दीजिये कि येह आलए अदाए सुन्नत है, किसी जगह एह़तियात़ से रख दीजिये या दफ़्न कर दीजिये या पथ्थर वग़ैरा वज़्न बांध कर समुन्दर में डुबो दीजिये।

ह़ज़रते अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मिस्वाक को लाज़िम कर लो, इस में ग़फ़लत न करो, क्यूंकि मिस्वाक में चोबीस ख़ूबियां हैं। इन में सब से बड़ी ख़ूबी येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ राज़ी होता है, मालदारी और कुशादगी पैदा होती है, मुंह में ख़ुश्बू पैदा होती है, मसूढ़े मज़बूत़ हो जाते हैं, दर्दे सर को सुकून होता है, दाढ़ का दर्द दूर होता है और चेहरे के नूर और दांतों की चमक की वजह से फ़िरिश्ते मुसाफ़ह़ा करते हैं।

(فیض القدیر، ج٤،ص٥٩٣،تحت الحدیث:٥٩٣٠)

(मज़ीद मा'लूमात के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 294 ता 295 का मुता-लआ़ फ़रमा लीजिये)

www.dawateislami.net

"क़ुबूर की ज़ियारत सुन्नत है" के सोलह हुरूफ़ की निस्बत से क़ब्रिस्तान की ह़ाज़िरी के 16 म-दनी फूल

❁ ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़ीम है : मैं तुम्हें ज़ियारते क़ुबूर से मन्अ़ किया करता था, लेकिन अब तुम क़ब्रों की ज़ियारत करो क्यूंकि येह दुन्या में बे रग़बती का सबब और आख़िरत की याद दिलाती है (ابن ماجہ ج۲ص۲۵۲حدیث۱۵۷۱) ❁ क़ुबूरे मुस्लिमीन की ज़ियारत सुन्नत और **मज़ाराते औलियाए किराम** व **शु-हदाए उ़ज़्ज़ाम** رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلام की ह़ाज़िरी सआ़दत बर सआ़दत और इन्हें ईसाले षवाब मन्दूब (या'नी पसन्दीदा) व षवाब (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 9, स. 532) ❁ (**वलिय्युल्लाह** के मज़ार शरीफ़ या) किसी भी मुसलमान की **क़ब्र** की ज़ियारत को जाना चाहे तो **मुस्तह़ब** येह है कि पहले अपने मकान पर (ग़ैर मकरूह वक़्त में) दो रकअ़त नफ़्ल पढ़े, हर रकअ़त में **सूरतुल फ़ातिह़ा** के बा'द एक बार **आयतुल कुर्सी** और तीन बार **सूरतुल इख़्लास** पढ़े और इस नमाज़ का षवाब साहि़बे **क़ब्र** को पहुंचाए, **अल्लाह तआ़ला** उस फ़ौत शुदा बन्दे की **क़ब्र** में **नूर** पैदा करेगा और इस (षवाब पहुंचाने वाले) शख़्स को बहुत ज़ियादा षवाब अ़ता फ़रमाएगा (عالمگیری ج۵ ص۳۵۰) ❁ मज़ार शरीफ़ या **क़ब्र** की ज़ियारत के लिये जाते हुए रास्ते में फ़ुज़ूल बातों में मश्ग़ूल न हो (ऐज़न) ❁ **क़ब्र** को बोसा न दें, न **क़ब्र** पर हाथ लगाएं (फ़तावा र-ज़विय्या, जि.

9, स. 522, 526) बल्कि **क़ब्र** से कुछ फ़ासिले पर खड़े हो जाएं ❁ **क़ब्र** को सजदए ता'ज़ीमी करना **ह़राम** है और अगर इ़बादत की निय्यत हो तो **कुफ़्र** है (माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 423) ❁ क़ब्रिस्तान में उस आ़म रास्ते से जाए, जहां माज़ी में कभी भी मुसलमानों की क़ब्रें न थीं, जो रास्ता नया बना हुवा हो उस पर न चले। "**रद्दुल मुह़तार**" में है : (क़ब्रिस्तान में क़ब्रें पाट कर) जो नया रास्ता निकाला गया हो उस पर चलना ह़राम है। (رَدُّالْمُحتار ج ۱ ص ۶۱۲) बल्कि नए रास्ते का सिर्फ़ गुमान हो तब भी उस पर चलना ना जाइज़ व गुनाह है (دُرِّمُختار ج ۳ ص ۱۸۳) ❁ कई मज़ाराते औलिया पर देखा गया है कि ज़ाइरीन की सहूलत की ख़ातिर मुसलमानों की क़ब्रें मिस्मार (या'नी तोड़ फोड़) कर के फ़र्श बना दिया जाता है, ऐसे फ़र्श पर लैटना, चलना, खड़ा होना, तिलावत और ज़िक्रो अज़्कार के लिये बैठना वग़ैरा **ह़राम** है, दूर ही से फ़ातिह़ा पढ़ लीजिये ❁ ज़ियारते क़ब्र मय्यित के **मुवाजहा** में (या'नी चेहरे के सामने) खड़े हो कर हो और इस (या'नी क़ब्र वाले) की पाइंती (या'नी क़दमों) की त़रफ़ से जाए कि उस की निगाह के सामने हो, सिरहाने से न आए कि उसे सर उठा कर देखना पड़े। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 9, स. 532) ❁ क़ब्रिस्तान में इस त़रह़ खड़े हों कि क़िब्ले की त़रफ़ पीठ और क़ब्र वालों के चेहरों की त़रफ़ मुंह हो इस के बा'द कहिये :

www.dawateislami.net

اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ یَا اَھْلَ الْقُبُوْرِ یَغْفِرُ اللّٰہُ لَنَا وَلَکُمْ اَنْتُمْ لَنَا سَلَفٌ وَّنَحْنُ بِالْاَثَر

तर्जमा : *ऐ **क़ब्र** वालो ! तुम पर सलाम हो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारी और तुम्हारी मग़फ़िरत फ़रमाए, तुम हम से पहले आ गए और हम तुम्हारे बा'द आने वाले हैं* (عالمگیری ج ٥ ص ٣٥٠)

❁ जो क़ब्रिस्तान में दाख़िल हो कर येह कहे :

اَللّٰھُمَّ رَبَّ الْاَجْسَادِ الْبَالِیَۃِ وَالْعِظَامِ النَّخِرَۃِ الَّتِیْ خَرَجَتْ مِنَ الدُّنْیَا وَھِیَ بِکَ مُؤْمِنَۃٌ اَدْخِلْ عَلَیْھَا رَوْحًا مِّنْ عِنْدِکَ وَسَلَامًا مِّنِّیْ

तर्जमा : *ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! (ऐ) गल जाने वाले जिस्मों और बोसीदा हड्डियों के रब ! जो दुन्या से ईमान की हालत में रुख़्सत हुए तू उन पर अपनी रहमत और मेरा सलाम पहुंचा दे ।* तो **हज़रते** सय्यिदुना आदम عَلَیْهِ السَّلَام से ले कर उस वक़्त तक जितने मोमिन फ़ौत हुए सब उस (या'नी दुआ पढ़ने वाले) के लिये दुआए मग़फ़िरत करेंगे (مُصَنَّف ابن اَبی شَیْبَه ج٨ص ٢٥٧) ❁ हुज़ूर صَلَّى الله تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने शफ़ाअ़त निशान है : जो शख़्स क़ब्रिस्तान में दाख़िल हुवा फिर उस ने **सूरतुल फ़ातिहा, सूरतुल इख़्लास** और **सूरतुत्तकाषुर** पढ़ी फिर येह दुआ मांगी : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने जो कुछ कुरआन पढ़ा उस का षवाब इस क़ब्रिस्तान के मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को पहुंचा । तो वोह तमाम मोमिन क़ियामत के रोज़ इस (या'नी ईसाले षवाब करने वाले) के सिफ़ारिशी होंगे (شَرحُ الصُّدور ص ٣١١) ❁ ह़दीषे पाक में है :"जो ग्यारह बार **सूरतुल इख़्लास** या'नी قُلْ هُوَاللّٰهُ اَحَد (मुकम्मल सूरह) पढ़ कर इस का षवाब मुर्दों को पहुंचाए, तो मुर्दों की गिनती के बराबर इसे (या'नी ईसाले षवाब करने वाले को)

www.dawateislami.net

षवाब मिलेगा" (دُرِّمُختارج۳ ص ۱۸۳) ❁ **क़ब्र** के ऊपर **अगरबत्ती** न जलाई जाए इस में सूए अदब (या'नी बे अ-दबी) और बदफ़ाली है (और इस से मय्यित को तक्लीफ़ होती है) हां अगर (ह़ाज़िरीन को) ख़ुश्बू (पहुंचाने) के लिये (लगाना चाहें तो) **क़ब्र** के पास ख़ाली जगह हो वहां लगाएं कि ख़ुश्बू पहुंचाना मह़बूब (या'नी पसन्दीदा) है (मुलख़्ख़स फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 9, स. 482-525) ❁ आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه एक और जगह फ़रमाते हैं : "सह़ीह़ मुस्लिम शरीफ़" में ह़ज़रते **अ़म्र बिन आ़स** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी, उन्हों ने दमे मर्ग (या'नी ब वक़्ते वफ़ात) अपने फ़रज़न्द से फ़रमाया : "जब मैं मर जाऊं तो मेरे साथ न कोई नौह़ा करने वाली जाए न आग जाए" (صحیح مُسلِم ص۷۵ حدیث ۱۹۲) ❁ **क़ब्र** पर चराग़ या **मोमबत्ती** वग़ैरा न रखे कि येह आग है, और क़ब्र पर आग रखने से मय्यित को अज़िय्यत (या'नी तक्लीफ़) होती है, हां रात में राह चलने वालों के लिये रोशनी मक़्सूद हो, तो क़ब्र की एक जानिब ख़ाली ज़मीन पर **मोमबत्ती** या चराग़ रख सकते हैं।

सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** मे आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

*ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ! हमें सुन्नत व आदाब के मुत़ाबिक़ क़ब्रिस्तान जाने और वहां पर मुर्दों के लिये दुआ़ए मग़फ़िरत करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा।* اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

इस्तिन्जा का त़रीक़ा और आदाब

❁ इस्तिन्जा ख़ाने में जिन्नात और शयात़ीन रहते हैं अगर जाने से पहले **बिस्मिल्लाह** पढ़ ली जाए तो इस की ब-रकत से वोह सित्र देख नहीं सकते। ह़दीषे पाक में है : जिन्न की आंखों और लोगों के सित्र के दरमियान पर्दा येह है कि जब पाख़ाने को जाए तो **बिस्मिल्लाह** कह ले। (سُنَنِ تِرمِذی ج۲ص۱۱۳حدیث۶۰۶) या'नी जैसे दीवार और पर्दे लोगों की निगाह के लिये आड़ बनते हैं ऐसे ही येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र जिन्नात की निगाहों से आड़ बनेगा कि जिन्नात उस को देख न सकेंगे। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1 स. 268) ❁ इस्तिन्जा ख़ाने में दाख़िल होने से पहले **बिस्मिल्लाह** पढ़ लीजिये बल्कि बेहतर है कि (अव्वल एक बार दुरूद शरीफ़ फिर) येह दुआ पढ़ लीजिये :

بِسۡمِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ اَعُوۡذُبِكَ مِنَ الۡخُبُثِ وَالۡخَبَآئِثِ
(كِتابُ الدّعاء لِلطّبَرانی حدیث۳۵۷ص۱۳۲)

*तर्जमा : **अल्लाह** के नाम से शुरूअ़, या **अल्लाह** ! मैं नापाक जिन्नों (नर व मादा) से तेरी पनाह मांगता हूं।*

❁ फिर पहले **उलटा क़दम** इस्तिन्जा ख़ाने में रख कर दाख़िल हों ❁ सर ढांप कर इस्तिन्जा करें ❁ **नंगे सर** इस्तिन्जा ख़ाने में दाख़िल होना ममनूअ़ है ❁ जब पेशाब करने या क़ज़ाए ह़ाजत के लिये बैठें तो मुंह और पीठ दोनों में से कोई भी क़िब्ला की त़रफ़ न हो अगर भूल कर क़िब्ला की त़रफ़ मुंह या पुश्त कर के बैठ गए तो याद आते ही फ़ौरन क़िब्ला की त़रफ़ से इस त़रह़ रुख़ बदल दे कि कम अज़् कम 45 डिग्री से बाहर हो जाए इस में उम्मीद है कि फ़ौरन उस के लिये मग़फ़िरत व बख़्शिश फ़रमा दी जाए ❁ बच्चों को भी क़िब्ला की

www.dawateislami.net

त़रफ़ मुंह या पीठ करा के पेशाब या पाख़ाना न कराएं, अगर किसी ने ऐसा किया तो वोह गुनहगार होगा ❁ **जब** तक क़ज़ाए ह़ाजत के लिये बैठने के क़रीब न हो कपड़ा बदन से न हटाए और न ही ज़रूरत से ज़ियादा बदन खोले ❁ फिर दोनों पाउं ज़रा कुशादा (खुले) कर के बाएं (या'नी उलटे) पाउं पर ज़ोर दे कर बैठे कि इस त़रह़ बड़ी आंत का मुंह खुलता है और इजाबत आसानी से होती है ❁ किसी दीनी मस्अले पर ग़ौर न करे कि मह़रूमी का बाइ़ष है ❁ उस वक़्त छींक ❁ सलाम या अज़ान का जवाब ज़बान से न दे ❁ अगर ख़ुद छींके तो ज़बान से اَلْحَمْدُ لِلّٰه न कहे, दिल में कह ले ❁ बातचीत न करे ❁ अपनी शर्मगाह की त़रफ़ न देखे ❁ उस नजासत को न देखे जो बदन से निकली है ❁ ख़्वाह म ख़्वाह देर तक इस्तिन्जा ख़ाने में न बैठे कि बवासीर होने का अन्देशा है ❁ पेशाब में न थूके, न नाक साफ़ करे, न बिला ज़रूरत खन्कारे, न बार बार इधर उधर देखे, न बेकार बदन छूए, न आस्मान की त़रफ़ निगाह करे, बल्कि शर्म के साथ सर झुकाए रहे ❁ क़ज़ाए ह़ाजत से फ़ारिग़ होने के बा'द पहले पेशाब का मक़ाम धोए फिर पाख़ाने का मक़ाम ❁ पानी से इस्तिन्जा करने का **मुस्तह़ब** त़रीक़ा येह है कि ज़रा कुशादा (या'नी खुला) हो कर बैठे और सीधे हाथ से आहिस्ता आहिस्ता पानी डाले और उलटे हाथ की उंगलियों के पेट से नजासत के मक़ाम को धोए उंगलियों का सिरा न लगे और पहले बीच की उंगली ऊंची रखे फिर इस के बराबर वाली इस के बा'द छोटी उंगली को ऊंची रखे, लोटा ऊंचा रखे कि छींटें न पड़ें, सीधे

www.dawateislami.net

हाथ से इस्तिन्जा करना मकरूह है और धोने में मुबालग़ा करे या'नी सांस का दबाव नीचे की जानिब डाले यहां तक कि अच्छी त़रह़ नजासत का मक़ाम धुल जाए या'नी इस त़रह़ कि चिकनाई का अषर बाक़ी न रहे अगर रोज़ादार हो तो फिर मुबालग़ा न करे ❁ त़हारत ह़ासिल होने के बा'द हाथ भी पाक हो गए लेकिन बा'द में साबुन वग़ैरा से भी धो ले ❁ जब इस्तिन्जा ख़ाने से निकले तो पहले सीधा क़दम बाहर निकाले और बाहर निकलने के बा'द (अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ के साथ) येह दुआ़ पढ़े :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَذْهَبَ عَنِّی الْاَذٰی وَعَافَانِیْ

(سُنَن ابن ماجه ج١ ص١٩٣ حديث٣٠١)

*या'नी **अल्लाह** तआ़ला का शुक्र है जिस ने मुझ से तक्लीफ़ देह चीज़ को दूर किया और मुझे आ़फ़िय्यत (राह़त) बख़्शी ।*

बेहतर येह है कि साथ में येह दुआ़ भी मिला ले इस त़रह़ दो ह़दीषों पर अ़मल हो जाएगा : غُفْرَانَكَ *तर्जमा : मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मग़फ़िरत का सुवाल करता हूं ।* (سُنَنِ تِرمِذی ج١ ص٨٧ حديث٧)

आबे ज़म ज़म से इस्तिन्जा करना कैसा ?

❁ ज़मज़म शरीफ़ से इस्तिन्जा करना मकरूह है और ढेला न लिया हो तो ना जाइज़ । (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 413) ❁ वुज़ू के बक़िय्या पानी से त़हारत करना ख़िलाफ़े औला है । (ऐज़न) ❁ त़हारत के बचे हुए पानी से वुज़ू कर सकते हैं, बा'ज़ लोग जो इस को फेंक देते हैं येह न चाहिये इसराफ़ में दाख़िल है ।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 413)

www.dawateislami.net

इस्तिन्जा ख़ाने का रुख़ दुरुस्त रखिये

अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता आप के घर के इस्तिन्जा ख़ाने का रुख़ ग़लत़ है या'नी बैठते वक़्त क़िब्ला की त़रफ़ मुंह या पीठ होती है तो इस को दुरुस्त करने की फ़ौरन तरकीब कीजिये। मगर येह ज़ेह्न में रहे कि मा'मूली सा तिरछा करना काफ़ी नहीं। W.C. इस त़रह़ हो कि बैठते वक़्त मुंह या पीठ क़िब्ला से 45 डिग्री के बाहर रहे। आसानी इसी में है कि क़िब्ला से 90 डिग्री पर रुख़ रखिये। या'नी नमाज़ के बा'द दोनों बार सलाम फैरने में जिस त़रफ़ मुंह करते हैं उन दोनों सम्तों में से किसी एक जानिब W.C. का रुख़ रखिये।

इस्तिन्जा के बा'द क़दम धो लीजिये

पानी से इस्तिन्जा करते वक़्त उ़मूमन पाउं के टख़्नों की त़रफ़ छींटे आ जाते हैं लिहाज़ा एह़तियात़ इसी में है कि बा'दे फ़राग़त क़दमों के वोह ह़िस्से धो कर पाक कर लिये जाएं मगर येह ख़याल रहे कि धोने के दौरान अपने कपड़ों या दीगर चीज़ों पर छींटे न पड़ें।

बिल में पेशाब करना

रह़मत वाले आक़ा, दो जहां के दाता, शाफ़ेए़ रोज़े जज़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा, मह़बूबे किब्रिया صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم का फ़रमाने शफ़्क़त निशान है : तुम में से कोई शख़्स सूराख़ में पेशाब न करे। (سُنَنِ نَسائی ص١٤ حدیث٣٤)

ह़म्माम में पेशाब करना

सरकारे मदीना صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم ने फ़रमाया : कोई ग़ुस्ल ख़ाने में पेशाब न करे, फिर उस में नहाए या वुज़ू करे कि अकषर **वस्वसे** इस से होते हैं। (ابوداؤد ج١ ص٤٤ حدیث٢٧)

www.dawateislami.net

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीषे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : अगर ग़ुस्ल ख़ाने की ज़मीन पुख़्ता हो और उस में पानी ख़ारिज होने की नाली भी हो तो वहां पेशाब करने में ह़रज नहीं अगर्चे बेहतर है कि न करे, लेकिन अगर ज़मीन कच्ची हो और पानी निकलने का रास्ता भी न हो तो पेशाब करना सख़्त बुरा है कि ज़मीन नजिस हो जाएगी, और ग़ुस्ल या वुज़ू में गन्दा पानी जिस्म पर पड़ेगा। यहां दूसरी सूरत ही मुराद है इस लिये ताकीदी मुमानअ़त फ़रमाई गई, या'नी इस से वस्वसे और वहम की बीमारी पैदा होती है जैसा कि तजरिबा है या गन्दी **छींटें** पड़ने का **वस्वसा** रहेगा।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 266)

इस्तिन्जा के ढेलों के अह़काम

❀ आगे पीछे से जब नजासत निकले तो ढेलों से इस्तिन्जा करना सुन्नत है और अगर सिर्फ़ पानी ही से त़हारत कर ली तो भी जाइज़ है, मगर **मुस्तह़ब** येह है कि ढेले लेने के बा'द पानी से त़हारत करे ❀ आगे और पीछे से पेशाब, पाख़ाने के सिवा कोई और नजासत, म-षलन ख़ून, पीप वग़ैरा निकले, या इस जगह ख़ारिज से नजासत लग जाए तो भी ढेले से साफ़ कर लेने से त़हारत हो जाएगी, जब कि उस मौज़अ़ (या'नी जगह) से बाहर न हो मगर धो डालना **मुस्तह़ब** है ❀ ढेलों की कोई ता'दाद **मुअ़य्यन** (या'नी मुक़र्ररा ता'दाद) **सुन्नत** नहीं, बल्कि जितने से सफ़ाई हो जाए, तो अगर एक से सफ़ाई हो गई **सुन्नत** अदा हो गई और अगर तीन ढेले लिये और सफ़ाई न हुई **सुन्नत** अदा न हुई, अलबत्ता **मुस्तह़ब**

www.dawateislami.net

येह है कि त़ाक़ (म-षलन एक, तीन, पांच) हों और कम से कम तीन हों तो अगर एक या दो से सफ़ाई हो गई तो तीन की गिनती पूरी करे, और अगर चार से सफ़ाई हो तो एक और ले कि त़ाक़ हो जाएं ❁ ढेलों से त़हारत उस वक़्त होगी कि नजासत से मख़्रज (या'नी ख़ारिज होने की जगह) के आस पास की जगह एक दिरहम [1] से ज़ियादा आलूदा न हो और अगर दिरहम से ज़ियादा सन जाए तो धोना फ़र्ज़ है, मगर ढेले लेना अब भी **सुन्नत** रहेगा। ❁ कंकर, पथ्थर, फटा हुवा कपड़ा, येह सब ढेले के हुक्म में हैं, इन से भी साफ़ कर लेना बिला कराहत जाइज़ है (बेहतर येह है कि फटा कपड़ा या दरज़ी की बे क़ीमत कतरन सूती (COTTON) हो ताकि जल्द जज़्ब कर ले) ❁ हड्डी और खाने और गोबर और पक्की ईंट और ठेकरी और शीशा और कोइले और जानवर के चारे से और ऐसी चीज़ से जिस की कुछ क़ीमत हो, अगर्चे एक आध पैसा सही, उन चीज़ों से इस्तिन्जा करना मकरूह है ❁ काग़ज़ से इस्तिन्जा मन्अ़ है, अगर्चे उस पर कुछ लिखा न हो, या अबू जह्ल ऐसे काफ़िर का नाम लिखा हो ❁ दाह्ने (या'नी सीधे) हाथ से इस्तिन्जा करना मकरूह है, अगर किसी का बायां हाथ बेकार हो गया, तो उसे दहने (या'नी सीधे) हाथ से जाइज़ है ❁ जिस ढेले से एक बार इस्तिन्जा कर लिया उसे दोबारा काम में लाना मकरूह है, मगर दूसरी करवट उस की साफ़ हो तो उस

---

(1) **दिरहम की मिक़्दार** मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ बहारे शरीअ़त जिल्द 1 सफ़्ह़ा 389 पर मुलाह़ज़ा फ़रमाइये।

www.dawateislami.net

से कर सकते हैं ❁ मर्द के लिये पीछे के मक़ाम के लिये ढेलों के इस्ति'माल का त़रीक़ा येह है कि गर्मी के मौसिम में पहला ढेला आगे से पीछे को ले जाएं, दूसरा पीछे से आगे को और तीसरा आगे से पीछे को, सर्दियों में पहला ढेला पीछे से आगे, दूसरा आगे से पीछे को और तीसरा पीछे से आगे को ले जाएं। ❁ पाक ढेले दाहनी (या'नी सीधी) जानिब रखना और बा'द काम में लाने के, बाईं (उलटे हाथ की) त़रफ़ डाल देना, इस त़रह़ पर कि जिस रुख़ में नजासत लगी हो नीचे हो, **मुस्तह़ब** है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 410 ता 412, عالمگیری ج١ ص ٤٨-٥٠)
❁ टॉइलेट पेपर के इस्ति'माल की उ़-लमा ने इजाज़त दी है क्यूंकि येह इसी मक़्सद के लिये बनाया गया है और लिखने में काम नहीं आता। अलबत्ता बेहतर **मिट्टी का ढेला** है।

इस्तिन्जा के बारे में मज़ीद मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ "**बहारे शरीअ़त**" जि.1 हिस्सा दुवुम सफ़ह़ा 405 ता 413 और शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का रिसाला "**इस्तिन्जा का त़रीक़ा**" मुलाह़ज़ा फ़रमाएं।

*ऐ हमारे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें सुन्नत व आदाब के मुत़ाबिक़ इस्तिन्जा करने के साथ साथ अपने बात़िन को भी हर क़िस्म की आलूदगियों से पाक रखने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा।*

اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

इलाही येह मक़्बूल मेरी दुआ़ हो
मेरी हर अदा सुन्नते मुस्त़फ़ा हो

www.dawateislami.net

मेहमान नवाज़ी की सुन्नतें और आदाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

मेहमान नवाज़ी करना सुन्नते मुबारका है, अहादीषे मुबारका में इस के बहुत से फ़ज़ाइल बयान किये गए हैं बल्कि यहां तक फ़रमाया कि मेहमान बाइषे ख़ैरो ब-रकत है । एक दफ़्आ सरकारे मदीना صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के यहां मेहमान हाज़िर हुवा तो आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़र्ज़ ले कर उस की मेहमान नवाज़ी फ़रमाई ।

चुनान्चे ताजदारे मदीना صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ग़ुलाम अबू राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ कहते हैं कि सरकारे मदीना صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया, फ़ुलां यहूदी से कहो कि मुझे आटा क़र्ज़ दे । मैं रजब शरीफ़ के महीने में अदा कर दूंगा (क्यूंकि एक मेहमान मेरे पास आया हुवा है) यहूदी ने कहा, जब तक कुछ गिरवी नहीं रखोगे, न दूंगा । हज़रते सय्यिदुना अबू राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ कहते हैं कि मैं वापस आया और ताजदारे मदीना صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में उस का जवाब अ़र्ज़ किया । आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "**वल्लाह** ! मैं आस्मान में भी **अमीन** हूं और ज़मीन में भी **अमीन** हूं । अगर वोह दे देता तो मैं अदा कर देता ।" (अब मेरी वो ज़िरह ले जा और गिरवी रख आ । मैं ले गया और ज़िरह गिरवी रख कर लाया)

(المعجم الکبیر الحدیث ۹۸۹، ج۱، ص۳۳۱)

www.dawateislami.net

मेहमान बाइ़से ख़ैरो ब-रकत है :

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْهُ का बयान है कि ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, “जिस घर में मेहमान हो उस घर में ख़ैरो ब-रकत उसी त़रह़ दौड़ती है जैसे ऊंट की कौहान से छुरी (तेज़ी से गिरती है), बल्कि इस से भी तेज़ ।”

(سنن ابن ماجہ، کتاب الاطعمۃ، باب الضیافۃ، الحدیث ۳۳۵۶، ج۴، ص۵۱)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ऊंट की कौहान में हड्डी नहीं होती चरबी ही होती है इसे छुरी बहुत जल्द काटती है और इस की तह तक पहुंच जाती है इस लिये इस से तश्बीह दी गई है ।

मेहमान मेज़बान के गुनाह मुआ़फ़ होने का सबब होता है :

सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है, “जब कोई मेहमान किसी के यहां आता है तो अपना रिज़्क़ ले कर आता है और जब उस के यहां से जाता है तो साहि़बे ख़ाना के गुनाह बख़्शे जाने का सबब होता है ।”

(کشف الخفا، حرف الضاد المعجمۃ، الحدیث ۱۶۴۱، ج۲، ص۳۳)

दस 10 फ़िरिश्ते साल भर तक घर में रह़मत लुटाते हैं :

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना बराअ बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنْهُ से फ़रमाया, “ऐ बराअ ! आदमी जब अपने भाई की, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये मेहमान नवाज़ी करता है और इस

www.dawateislami.net

की कोई जज़ा और शुक्रिया नहीं चाहता तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के घर में दस[10] फ़िरिश्तों को भेज देता है जो पूरे एक साल तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह़ व तह़लील और तकबीर पढ़ते और उस के लिये मग़फ़िरत की दुआ़ करते रहते हैं। और जब साल पूरा हो जाता है तो उन फ़िरिश्तों की पूरी साल की इ़बादत के बराबर उस के नामए आ'माल में इ़बादत लिख दी जाती है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है कि उस को जन्नत की लज़ीज़ ग़िज़ाएं "जन्नतुल ख़ुल्द" और न फ़ना होने वाली बादशाही में खिलाए।"

(کنز العمال، کتاب الضیافۃ، قسم الافعال، الحدیث ۲۵۹۷۲، ج۹، ص۱۱۹)

سُبْحٰنَ اللہ ! किसी के घर मेहमान तो क्या आता है गोया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत की छमाछम बरसात शुरूअ़ हो जाती है इस क़दर अज्रो षवाब अल्लाह ! अल्लाह !

मेहमान को दरवाज़े तक रुख़्सत करना सुन्नत है :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरह رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "सुन्नत येह है कि आदमी मेहमान को दरवाज़े तक रुख़्सत करने जाए।"

(سنن ابن ماجہ، کتاب الاطعمۃ، باب الضیافۃ، الحدیث ۳۳۵۸، ج۴، ص۵۲)

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमें मेहमानों की ख़ुश दिली के साथ मेहमान नवाज़ी की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा और बार बार हमें मीठे मीठे मदीने की महकी महकी फ़ज़ाओं में मीठे मीठे म-दनी आक़ा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का मेहमान बनने की सआ़दत नसीब फ़रमा।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

आह ! म-दनी क़ाफ़िला अब जा रहा है लौट कर

येह नज़्म दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये घरों से सफ़र पर रवाना होने वाले म-दनी क़ाफ़िले की वापसी पर सुन्नतों की तड़प रखने वाले इस्लामी भाई के वल्वला अंगेज़ जज़्बात की अ़क्कासी है ।

आह ! म-दनी क़ाफ़िला अब जा रहा है लौट कर
कोई दिल थामे खड़ा है कोई है बा चश्मे तर

सुन्नतों की तरबिय्यत के क़ाफ़िलों के क़द्रदां
जब पलटते हैं घरों को रोते हैं वोह फूट कर

किस क़दर ख़ुश थे निकल कर चल दिये थे घर से जब
अब उदासी छा रही है हाए अपने क़ल्ब पर

फ़िक्र थी घर की न कोई फ़िक्र कारोबार की
लुत्फ़ ख़ूब आता था हम को मस्जिदों में बैठ कर

जाते ही दुन्या के झगड़े फिर गले पड़ जाएंगे
क्या करें नाचार हैं क़ाबू नहीं ह़ालात पर

बा जमाअ़त सब नमाज़ें और तहज्जुद के मज़े
इतनी आसानी से फिर मिल जाएंगे क्या जा के घर ?

या ख़ुदा ! निकलूं मैं म-दनी क़ाफ़िलों के साथ काश !
सुन्नतों की तरबिय्यत के वासिते फिर जल्द तर ! !

हाए ! सारा वक़्त मेरा ग़फ़लतों में कट गया
आह ! कब होगा मुयस्सर फिर मुबारक येह सफ़र

मस्जिदों का कुछ अदब हाए ! न मुझ से हो सका
अज़ तुफ़ैले मुस्त़फ़ा फ़रमा इलाही दर गुज़र

आह ! शैत़ां हर घड़ी हर वक़्त ग़ालिब ही रहा
आ़दते इस्यां ने रख दी तोड़ कर हाए ! कमर

या रसूलल्लाह अपने दर पे अब बुलवाइये
हो नसीब आक़ा हमें मीठे मदीने का सफ़र

है दुआ़ अ़त्तार की : "उस की हो ह़तमी मग़्फ़िरत"
क़ाफ़िलों में उ़म्र भर करता रहे जो भी सफ़र

तम्मत बिल ख़ैर

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

"दुन्या भर में हो जाए ऐ काश ! धूम धाम
अमीरे अहले सुन्नत के म-दनी इन्आ़मात हों ख़ूब आ़म"

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के मजलिसे म-दनी इन्आ़मात से मुतअ़ल्लिक़ 92 म-दनी फूल

﴾म-दनी इन्आ़मात﴿ ﴾22 म-दनी फूल﴿

(1)...मुझे म-दनी इन्आ़मात से बेह़द प्यार है।

(म-दनी मुज़ा-करा, 2 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., म-दनी फूल नम्बर 7)

(2)...अगर कोई सह़ीह़ मा'नों में म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल करे तो वोह नेक व परहेज़गार बन जाएगा।

(म-दनी मुज़ा-करा, 9 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., म-दनी फूल नम्बर 31, ऑफ़ ऐर)

(3)...म-दनी इन्आ़मात जन्नत में जाने का फ़ॉर्मूला है, इन पर अ़मल करने वाले का किरदार सुथरा हो जाएगा और वोह नमाज़ी व परहेज़गार बन जाएगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

(म-दनी मुज़ा-करा, 10 रबीउ़ल अव्वल 1436 हि., म-दनी फूल नम्बर 5)

(4)...म-दनी इन्आ़मात, रूह़ानियत पाने का नुस्ख़ा हैं, इन पर अ़मल करने से ख़ौफ़े ख़ुदा और इ़श्क़े मुस्त़फ़ा ह़ासिल होता है।

(म-दनी मुज़ा-करा, 12 रबीउ़ल अव्वल 1436 हि., म-दनी फूल नम्बर 2)

(5)...म-दनी इन्आ़मात का ह़क़ीक़ी आ़मिल, हज़ारों लाखों में पहचाना जाता है, क्यूंकि वोह निखरा निखरा नज़र आता है।

(म-दनी मुज़ा-करा, रबीउ़ल अव्वल 1436 हि., म-दनी फूल नम्बर 4)

(6)...म-दनी इन्आ़मात के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारें।

(म-दनी मुज़ा-करा, 6 रबीउ़ल अव्वल 1436 हि.)

www.dawateislami.net

(7)...म-दनी इन्आ़मात के बिग़ैर आदमी अधूरा है।

(म-दनी मुज़ा-करा, 7 मुह़र्रमुल ह़राम 1436 हि., म-दनी फूल नम्बर 16)

(8)...म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल करते रहें।

(म-दनी मुज़ा-करा, 28 र-मज़ानुल मुबारक 1435 हि.)

(9)...12 माह सफ़र किये हुए त़ालिबे इ़ल्म का ओढ़ना बिछौना म-दनी इन्आ़मात के मुत़ाबिक़ हो।

(म-दनी मुज़ा-करा, 30 शव्वालुल मुकर्रम 1435 हि., म-दनी फूल नम्बर 42) (ऑफ़ ऐर)

(10)...बड़ी बड़ी बातें करने के बजाए आप दा'वते इस्लामी में अ़-मली त़ौर पर आ के देखें, म-दनी इन्आ़मात अपना कर देखें।

(म-दनी मुज़ा-करा, 16 र-मज़ानुल मुबारक 1435 हि.)

(11)...जो म-दनी इन्आ़मात के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं, वोह बेहतरीन मुसलमान हैं। (म-दनी मुज़ा-करा, 17 र-मज़ानुल मुबारक 1435 हि.)

(12)...म-दनी इन्आ़मात न सिह़्ह़त तबाह करते हैं, न आख़िरत।

(म-दनी मुज़ा-करा, 23 र-मज़ानुल मुबारक 1435 हि.)

(13)...जो सच्चे दिल से म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल करने वाला होगा उस का घर अम्न का गहवारा बन जाएगा।

(म-दनी मुज़ा-करा, 24 र-मज़ानुल मुबारक 1435 हि.)

(14)...ह़-रमैन त़य्यिबैन में भी अपने अवक़ात ह़त्तल इमकान म-दनी इन्आ़मात के मुत़ाबिक़ गुज़ारिये।

(म-दनी मुज़ा-करा, 2 ज़ुल ह़िज्जा 1435 हि., म-दनी फूल नम्बर 6)

(15)...अगर आप म-दनी इन्आ़मात के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारेंगे तो मुआ़शरे में अच्छे मुसलमान बन कर उभरेंगे। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

(म-दनी मुज़ा-करा, 8 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1437 हि., म-दनी फूल नम्बर 1)

www.dawateislami.net

(16)...म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल करना, इस्लामी ज़िन्दगी गुज़ारने का बेहतरीन फ़ोर्मूला और नुस्ख़ा है।

(म-दनी मुज़ा-करा, 3 रबीउ़ल अव्वल 1437 हि., म-दनी फूल नम्बर 7)

(17)...अगर सुधरना चाहते हैं तो म-दनी इन्आ़मात को थाम लीजिये। (म-दनी मुज़ा-करा, 22 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1437 हि., म-दनी फूल नम्बर 9)

(18)...इस्लामी ज़िन्दगी कैसे गुज़ारनी है? इस की मा'लूमात के लिये म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पढ़िये और इस के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारिये। (म-दनी मुज़ा-करा, 9 जुमादल ऊला 1437 हि., म-दनी फूल नम्बर 3)

(19)...अगर आप नेक बनना चाहते हैं तो म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल कीजिये। (म-दनी मुज़ा-करा, 4 र-मज़ान 1437 हि.)

(20)...जो इख़्लास के साथ म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल करेगा वोह बा अ़मल बन जाएगा। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ (म-दनी मुज़ा-करा, 26 र-मज़ान 1437 हि.)

(21)...म-दनी इन्आ़मात नेक बनने का बेहतरीन नुस्ख़ा है।

(म-दनी मुज़ा-करा, 26 र-मज़ान 1437 हि.)

(22)...म-दनी इन्आ़मात हमारी नफ़्सियात के मुत़ाबिक़ हैं।

(म-दनी मुज़ा-करा, 9 जुमादल उख़रा 1437 हि., म-दनी फूल नम्बर 13)

﴾फ़िक्रे मदीना﴿ ﴾4 म-दनी फूल﴿

(23)...जो रोज़ाना फ़िक्रे मदीना कर के चांद रात या यकुम तारीख़ को म-दनी इन्आ़मात का रिसाला जम्अ़ करवा दे, तो मेरा जी चाहता है कि मैं उसे "**चल मदीना**" कर दूं।

(म-दनी मुज़ा-करा, 2 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., म-दनी फूल नम्बर 6)

(24)...हर रोज़ फ़िक्रे मदीना कर के हर महीने अपने ज़िम्मेदार को

म-दनी इन्आ़मात का रिसाला जम्अ़ करवाइये, इस से इस्तिक़ामत मिलेगी। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

(म-दनी मुज़ा-करा, 12 रबीउ़ल अव्वल 1436 हि., म-दनी फूल नम्बर 3)

(25)...हर रोज़ फ़िक्रे मदीना कर के म-दनी इन्आ़मात के रिसाले के ख़ाने पुर करें और ज़िम्मेदार को हर म-दनी माह की पहली तारीख़ को जम्अ़ करवा दें, 10 तारीख़ का इन्तिज़ार न करें।

(म-दनी मुज़ा-करा, 30 शव्वालुल मुकर्रम 1435 हि., म-दनी फूल नम्बर 12)

(26)...रोज़ाना पाबन्दी से फ़िक्रे मदीना न करने वाला मुकम्मल दा'वते इस्लामी वाला नहीं अलबत्ता आधा दा'वते इस्लामी वाला तस्लीम कर लेता हूं।

(म-दनी मश्वरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, 16 फ़रवरी 2005 ई., म-दनी फूल नम्बर 13)

﴾ज़बान का कुफ़्ले मदीना﴿ ﴾26 म-दनी फूल﴿

(27)...अगर हम कमा ह़क़्क़ुहू फ़ुज़ूल बातों से बचने में कामयाब हो जाएं, तो येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से ने'मत है।

(म-दनी मुज़ा-करा, 9 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., म-दनी फूल नम्बर 26) (ऑफ़ ऐर)

(28)...कुफ़्ले मदीना में सन्जीदा हो जाएं **यौमे कुफ़्ले मदीना** पूरी ज़िन्दगी मनाना है।

(म-दनी मुज़ा-करा, 7 रबीउ़ल अव्वल 1436 हि., म-दनी फूल नम्बर 9)

(29)...अगर फ़ुज़ूल बातों की आ़दत ख़त्म हो जाए तो अम्न क़ाइम हो जाए।

(म-दनी मुज़ा-करा, 15 मुह़र्रमुल ह़राम 1436 हि., म-दनी फूल नम्बर 20) (ऑफ़ ऐर)

(30)...ख़ामोश रहने में दुन्या व आख़िरत के फ़वाइद हैं।

(म-दनी मुज़ा-करा, 7 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1436 हि.)

www.dawateislami.net

(31)...फ़ुज़ूल बातों से दिल सख़्त हो जाता है, दिल का सख़्त होना बहुत बुरी बात है। ऐसा शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मह़रूम हो जाता है। (म-दनी मुज़ा-करा, 7 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1436 हि.)

(32)...काश ! ऐसा हो जाए कि जब हम बोलना चाहें तो थोड़ा सा रुक जाएं, सोचें, फिर बोलें। (म-दनी मुज़ा-करा, 28 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1436 हि.)

(33)...गुनाहों भरी बातों से हर वक़्त बचना वाजिब है।

(म-दनी मुज़ा-करा, 1 मुह़र्रमुल ह़राम 1436 हि., म-दनी फूल नम्बर 13)

(34)...तमाम इस्लामी भाई यौमे क़ुफ़्ले मदीना मनाएं।

(म-दनी मुज़ा-करा, 4 ज़ुल क़ा'दतिल ह़राम 1435 हि., म-दनी फूल नम्बर 33)

(35)...फ़ुज़ूल बात की ता'रीफ़ येह है कि ऐसी बात जिस में न दीन का फ़ाएदा हो न दुन्या का।

(म-दनी मुज़ा-करा, 4 ज़ुल क़ा'दतिल ह़राम 1435 हि., म-दनी फूल नम्बर 21)

(36)...अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें हर उ़ज़्व का क़ुफ़्ले मदीना नसीब फ़रमाए। (म-दनी मुज़ा-करा, 13 शव्वालुल मुकर्रम 1435 हि., म-दनी फूल नम्बर 17)

(37)...काश ! ज़बान पर ह़क़ीक़ी क़ुफ़्ले मदीना लग जाए।

(म-दनी मुज़ा-करा, 30 शव्वालुल मुकर्रम 1435 हि., म-दनी फूल नम्बर 11)

(38)...हम ने गुनाहों भरी बातों से बचाने के लिये क़ुफ़्ले मदीना का सिलसिला शुरूअ़ किया है।

(म-दनी मुज़ा-करा, 20 शव्वालुल मुकर्रम 1435 हि., म-दनी फूल नम्बर 14)

(39)...ज़बान, आंख का क़ुफ़्ले मदीना लगाने वाले इस्लामी भाई मुस्कुराने की आ़दत बनाएं ताकि लोग आप के क़रीब आएं।

(म-दनी मुज़ा-करा, यकुम जुमादल ऊला 1436 हि., म-दनी फूल नम्बर 5)

(40)...अपनी गुफ़्त-गू पर ग़ौरो फ़िक्र किया करें कि मैं ने क्या और क्यूं बोला ? (म-दनी मुज़ा-करा, 11 जुमादल ऊला 1436 हि., म-दनी फूल नम्बर 2) (ऑफ़ ऐर)

(41)...**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से कुफ़्ले मदीना लगाने वाले त़लबा पढ़ते भी हैं और म-दनी काम भी करते हैं।

(म-दनी मुज़ा-करा, 13 जुमादल ऊला 1436 हि., म-दनी फूल नम्बर 1)

(42)...बेहतरीन गुफ़्त-गू वोह है जो मुख़्तसर और पुर दलील हो।

(म-दनी मुज़ा-करा, 6 र-जबुल मुरज्जब 1436 हि., म-दनी फूल नम्बर 4)

(43)...लिख कर गुफ़्त-गू करने के लिये कुफ़्ले मदीना पेड और क़लम रखने की ह़ाजत होती है, इस लिये इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों को चाहिये कि अपने कुर्ते में जेब भी रखा करें।

(म-दनी मुज़ा-करा, 5 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1436 हि., म-दनी फूल नम्बर 5)

(44)...**अल्लाह** तआ़ला हमें ज़िक्र करने वाली ज़बान और फ़िक्र करने वाली ख़ामोशी अ़त़ा फ़रमाए।

(म-दनी मुज़ा-करा, 10 शव्वालुल मुकर्रम 1436 हि., म-दनी फूल नम्बर 11)

(45)...95 % गुनाह ज़बान के ग़लत़ इस्ति'माल से होते हैं।

(म-दनी मुज़ा-करा, 27 र-मज़ानुल मुबारक 1436 हि., म-दनी फूल नम्बर 1)

(46)...ग़मे र-मज़ान बाक़ी रखना चाहते हैं तो फ़ुज़ूल न बोलिये।

(म-दनी मुज़ा-करा, 22 र-मज़ानुल मुबारक 1436 हि., म-दनी फूल नम्बर 9)

(47)...ख़ामोश त़बीअ़त की अपनी हैबत होती है, रिसाला "**ख़ामोश शहज़ादा**" का मुत़ालआ़ फ़रमाएं।

(म-दनी मुज़ा-करा, 13 शव्वालुल मुकर्रम 1435 हि., म-दनी फूल नम्बर 14)

(48)...**अल्लाह** करे हम बोलने से पहले तोलने की आ़दत बनाएं।

(म-दनी मुज़ा-करा, 28 शव्वालुल मुकर्रम 1435 हि., म-दनी फूल नम्बर 16)

www.dawateislami.net

(49)...तमाम मुसलमान फ़ुज़ूल बातों और गुनाहों से बचें, तो आ़लमे इस्लाम में अम्न आ जाए।

(म-दनी मुज़ा-करा, 1 मुह़र्रम 1435 हि., म-दनी फूल नम्बर 14)

(50)...जो कम बोलता है, उसे मुत़ालआ़ का वक़्त ज़ियादा मिलता है। (म-दनी मुज़ा-करा, यकुम रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., म-दनी फूल नम्बर 14)

(51)...मस्जिद में भी ज़बान का क़ुफ़्ले मदीना नहीं लगाएंगे, तो कहां लगाएंगे ? (म-दनी मुज़ा-करा, 11 रबीउ़ल अव्वल 1436 हि., म-दनी फूल नम्बर 8)

(52)...ज़बान का क़ुफ़्ले मदीना दा'वते इस्लामी की इस्त़िलाह़ ज़रूर है मगर ख़ामोश रहने की तल्क़ीन तो अह़ादीषे मुबारका में भी मौजूद है।

(म-दनी मुज़ा-करा, 1 र-मज़ान 1437 हि.)

आंखों का क़ुफ़्ले मदीना 5 म-दनी फूल

(53)...निगाहें झुका कर बात करने की आ़दत अपने ऊपर नाफ़िज़ कर लें, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ लुत़्फ़ आएगा।

(म-दनी मुज़ा-करा, 15 मुह़र्रमुल ह़राम 1436 हि., म-दनी फूल नम्बर 21)(ऑफ़ ऐर)

(54)...बद निगाही और फ़ुज़ूल निगाही से बचने के लिये दर्सो बयान करते हुए निगाहें नीची रखने की मश्क़ करें। याद रखिये ! क़ियामत के रोज़ फ़ुज़ूल नज़री का भी ह़िसाब है।

(म-दनी मुज़ा-करा, 9 शव्वालुल मुकर्रम 1435 हि., म-दनी फूल नम्बर 7)

(55)...निगाहों की ह़िफ़ाज़त के लिये कोशिश तेज़ तर कर दें।

(म-दनी मुज़ा-करा, 18 ज़ुल क़ा'दतिल ह़राम 1435 हि., म-दनी फूल नम्बर 9)

(56)...नीची नज़र रखने में दुन्या व आख़िरत के फ़वाइद हैं।

(म-दनी मुज़ा-करा, 23 र-मज़ानुल मुबारक 1435 हि.)

www.dawateislami.net

(57)...कम गो और नीची नज़र रखने वाले सुन्नतों के पैकर इस्लामी भाई मुझे अच्छे लगते हैं।

(म-दनी मुज़ा-करा, 24 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., म-दनी फूल नम्बर 27)(ऑफ़ ऐर)

﴾पेट का क़ुफ़्ले मदीना﴿ ﴾4 म-दनी फूल﴿

(58)...कम खाने की तह़रीक को सारा साल ज़िन्दा रखना है। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ (म-दनी मुज़ा-करा, 29 र-मज़ानुल मुबारक 1435 हि.)

(59)...रोटी कम खाने की तह़रीक में आधी रोटी खाने वाले मुमताज़, पौन रोटी वाले बेहतर और पूरी रोटी वाले मुनासिब दरजे वाले हैं। रोटी से मुराद **"नॉर्मल रोटी"** है।

(म-दनी मुज़ा-करा, 3 र-मज़ानुल मुबारक 1436 हि., म-दनी फूल नम्बर 7)

(60)...**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये कम खाना इबादत है।

(म-दनी मुज़ा-करा, 3 र-मज़ानुल मुबारक 1436 हि., म-दनी फूल नम्बर 8)

(61)...मिट्टी के बरतन में खाना सवाब का काम है।

(म-दनी मुज़ा-करा, 24 ज़ुल हिज्जतिल ह़राम 1435 हि., म-दनी फूल नम्बर 8)

﴾मुस्तक़िल क़ुफ़्ले मदीना﴿ ﴾2 म-दनी फूल﴿

(62)...मुस्तक़िल क़ुफ़्ले मदीना लगाने से सुकूने क़ल्ब नसीब होगा। (म-दनी मुज़ा-करा, 30 शव्वालुल मुकर्रम 1435 हि., म-दनी फूल नम्बर 15)

(63)...मुस्तक़िल क़ुफ़्ले मदीना पर ख़ुसूसी तवज्जोह दें। मुस्तक़िल क़ुफ़्ले मदीना वालों में अपना नाम लिखवा दें اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इस से इस्तिक़ामत मिलेगी।

(म-दनी मुज़ा-करा, 30 शव्वालुल मुकर्रम 1435 हि., म-दनी फूल नम्बर 13)

﴾नफ़्ल रोज़ों की म-दनी तह़रीक﴿ ﴾4 म-दनी फूल﴿

(64)...रोज़े की रूह़ तक़्वा है।

(म-दनी मुज़ा-करा, 15 र-मज़ानुल मुबारक 1436 हि., म-दनी फूल नम्बर 2)

www.dawateislami.net

(65)...रोज़ा बहुत बड़ी ने'मत है, इस का षवाब बिला ह़िसाब है । (म-दनी मुज़ा-करा, 29 र-मज़ानुल मुबारक 1436 हि., म-दनी फूल नम्बर 3)

(66)...''रोज़ा तह़रीक'' पेम्फ़्लेट शाएअ़ हो गया है, इसे अपनी डाइरी में चस्पां कर लें और इस की मदद से इस्लामी भाइयों को नफ़्ली रोज़ा तह़रीक में शामिल होने की तरग़ीब दिलाएं ।

(म-दनी मुज़ा-करा, 11 ज़ुल क़ा'दतिल ह़राम 1435 हि., म-दनी फूल नम्बर 5)

(67)...नफ़्ल अ़रबी लफ़्ज़ है, जब कि नफ़्ली उर्दू, मा'ना एक ही हैं बेहतर है नफ़्ली की बजाए नफ़्ल कहा जाए ।

(म-दनी मुज़ा-करा, 3 ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम 1436 हि., म-दनी फूल नम्बर 13)

हफ़्तावार इजतिमाअ़ रात ए'तिकाफ़ (3 म-दनी फूल)

(68)...तमाम ज़िम्मेदारान हफ़्तावार इजतिमाअ़ में जुमा'रात मग़रिब ता जुमुआ़ इशराक़ व चाश्त शिर्कत को लाज़िमन अपना मा'मूल बना लें ।

(म-दनी मुज़ा-करा, 23 ज़ुल क़ा'दतिल ह़राम 1436 हि., म-दनी फूल नम्बर 10)

(69)...हफ़्तावार इजतिमाअ़ के बा'द म-दनी ह़ल्क़ों में शिर्कत और खाने वग़ैरा से फ़ारिग़ हो कर जल्द सो जाइये ताकि नमाज़े तहज्जुद के लिये उठने में सहूलत हो ।

(म-दनी मुज़ा-करा, 23 ज़ुल क़ा'दतिल ह़राम 1436 हि., म-दनी फूल नम्बर 11)

(70)...सब इस्लामी भाई हफ़्तावार इजतिमाअ़ के बा'द रात ए'तिकाफ़ की तरकीब फ़रमाया करें ।

(म-दनी मुज़ा-करा, 2 ज़ुल ह़िज्जा 1435 हि., म-दनी फूल नम्बर 9) (ऑफ़ ऐर)

म-दनी ह़ुल्या (6 म-दनी फूल)

(71)...मुझे सफ़ेद कपड़े की टोपी (जो सर पर चुपड़ी हुई हो) पसन्द है ।

(म-दनी मुज़ा-करा, 16 मुह़र्रमुल ह़राम 1436 हि., म-दनी फूल नम्बर 11) (ऑफ़ ऐर)

www.dawateislami.net

(72)...सफ़ेद चादर ओढ़ने से चूंकि चेहरे पर जाज़िबिय्यत व ख़ूब सूरती के आसार बढ़ते और ज़ीनत ह़ासिल होती है, लिहाज़ा इस निय्यत से चादर ओढ़ें कि नमाज़ के लिये ज़ीनत ह़ासिल करता हूं।

(म-दनी मुज़ा-करा, 26 ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम 1435 हि., म-दनी फूल नम्बर 10)

(73)...जो इमामा शरीफ़ पर सफ़ेद चादर ओढ़ता है, मैं उस से ख़ुश होता हूं। (म-दनी मुज़ा-करा, 24 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., म-दनी फूल नम्बर 8)

(74)...अपनी जेब में प्लास्टिक की थेली (शॉपर वग़ैरा) रखें, मस्जिद में तिन्का, बाल वग़ैरा देखें तो उठा कर उस में डाल दें।

(म-दनी मुज़ा-करा, 25 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1436 हि., म-दनी फूल नम्बर 4)

(75)...सरबन्द सुन्नत है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे (म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल करने वाले) इसे इस्ति'माल करते हैं।

(म-दनी मुज़ा-करा, 5 रबीउ़ल अव्वल 1436 हि., म-दनी फूल नम्बर 1)

(76)...इमामे पर सफ़ेद चादर और पर्दे में पर्दे वाली चादर डालना, मुझे अच्छा लगता है।

(म-दनी मुज़ा-करा, 5 मुह़र्रमुल ह़राम 1437 हि., म-दनी फूल नम्बर 8)

﴾मजलिसे म-दनी इन्आ़मात﴿ ﴾4 म-दनी फूल﴿

(77)...सालाना म-दनी इन्आ़म **"एक माह का म-दनी क़ाफ़िला"** में 12 रोज़ा म-दनी कोर्स शामिल कर दिया गया है, एक माह के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करने वाले आ़शिक़ाने रसूल पहले येह कोर्स करेंगे फिर सुन्नतों की धूमें मचाने के लिये बक़िय्या अय्याम म-दनी क़ाफ़िले में गुज़ारेंगे।

(म-दनी मुज़ा-करा, 6 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., म-दनी फूल नम्बर 17) (ऑफ़ ऐर)

www.dawateislami.net

(78)...ह़ाजी ज़मज़म अ़त्तारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मेरे क़रीब तरीन रुफ़क़ा में से थे और मुझ से बहुत मह़ब्बत करते थे।

(म-दनी मुज़ा-करा, 13 र-जबुल मुरज्जब 1436 हि., म-दनी फूल नम्बर 8)

(79)...اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मजलिसे म-दनी इन्आ़मात सरबन्द की सुन्नत आ़म करने में मसरूफ़े अ़मल है।

(म-दनी मुज़ा-करा, 18 र-मज़ानुल मुबारक 1436 हि., म-दनी फूल नम्बर 6)

(80)...मजलिसे म-दनी इन्आ़मात ने तै़ किया है कि म-दनी चैनल पर सूरए मुल्क सुन ली तो **म-दनी इन्आ़म नम्बर 3** के एक ह़िस्से पर अ़मल माना जाएगा।

(म-दनी मुज़ा-करा, 24 जुमादल उख़रा 1437 हि., म-दनी फूल नम्बर 11)

﴾नि य्यतें﴿ ﴾4 म-दनी फूल﴿

(81)...हमारे हज़ारों अच्छे काम, षवाब की निय्यत न करने की वज्ह से मह़्ज़ मुबाह़ होते हैं (या'नी वोह कारे षवाब नहीं बनते)।

(म-दनी मुज़ा-करा, 15 जुमादल आख़िर 1436 हि., म-दनी फूल नम्बर 4)

(82)...आ़म तौ़र पर निय्यतें करने का ज़ेह्न नहीं है।

(म-दनी मुज़ा-करा, 10 शव्वालुल मुकर्रम 1436 हि., म-दनी फूल नम्बर 21)

(83)...मक्तबतुल मदीना का शाएअ़ कर्दा रिसाला **"षवाब बढ़ाने के नुस्ख़े"** बार बार पढ़िये।

(म-दनी मुज़ा-करा, 10 शव्वालुल मुकर्रम 1436 हि., म-दनी फूल नम्बर 18)

(84)...बिग़ैर निय्यत के षवाब नहीं।

(म-दनी मुज़ा-करा, 18 र-मज़ानुल मुबारक 1436 हि., म-दनी फूल नम्बर 8)

﴾मुतफ़र्रिक़ म-दनी इन्आ़मात﴿ ﴾8 म-दनी फूल﴿

(85)...इह़याउल उ़लूम इन्सान बनाने वाली किताब है।

(म-दनी मुज़ा-करा, 11 जुमादल ऊला 1436 हि., म-दनी फूल नम्बर 15) (ऑफ़ ऐर)

www.dawateislami.net

(86)...तहज्जुद पढ़ने से चेहरे पर ऐसी नूरानिय्यत आती है, जो क़ब्र में भी साथ रहेगी। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

(म-दनी मुज़ा-करा, 7 र-मज़ानुल मुबारक 1436 हि., म-दनी फूल नम्बर 1)

(87)...अज़ान का एह़तिराम करते हुए गुफ़्त-गू मौक़ूफ़ कर देना चाहिये। (म-दनी मुज़ा-करा, 17 र-मज़ानुल मुबारक 1436 हि., म-दनी फूल नम्बर 1)

(88)...घूर कर देखना, बे मौक़अ़ मुस्कुराना, त़न्ज़ करना, मज़ाक़ उड़ाना, दिल आज़ारी का बाइ़ष हैं।

(म-दनी मुज़ा-करा, 22 र-मज़ानुल मुबारक 1436 हि., म-दनी फूल नम्बर 4)

(89)...या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! जो रोज़ाना दो दर्स दें या सुनें, वोह मरने से पहले मदीना देखें।

(म-दनी मुज़ा-करा, 17 शव्वालुल मुकर्रम 1435 हि., म-दनी फूल नम्बर 24) (ऑफ़ ऐर)

(90)...मेरा जी चाहता है कि हर शै का रुख़ क़िब्ले की त़रफ़ किया करूं। (म-दनी मुज़ा-करा, यकुम रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., म-दनी फूल नम्बर 18)

(91)...हर आ़शिक़े रसूल को चाहिये कि **म-दनी इन्आ़म नम्बर** 23 (क्या आज आप ने दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों मसलन इनफ़िरादी कोशिश, दर्सो बयान, मद्रसतुल मदीना बालिग़ान वग़ैरा पर कम अज़ कम 2 घंटे सर्फ़ किये ?) पर अ़मल करते हुए दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों के लिये रोज़ाना 2 घंटे ज़रूर दे। (म-दनी मुज़ा-करा, 9 जुमादल उख़रा 1437 हि., म-दनी फूल नम्बर 5)

(92)...वोह दा'वते इस्लामी वाले जो म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल का ज़ेहन रखते हैं, वोह क़ह्क़हा नहीं लगाते। क्यूंकि क़ह्क़हा लगाना सुन्नत नहीं, अलबत्ता क़ह्क़हा लगाना गुनाह भी नहीं।

(म-दनी मुज़ा-करा, 1 र-मज़ान 1437 हि.)

मक्तब म-दनी इन्आ़मात

www.dawateislami.net

आइये ग़ौर करें !

कहीं ऐसा तो नहीं ! कि हम जिस मक़्सद को ले कर इस **म-दनी माह़ोल** के क़रीब हुए थे, आज ना दानिस्ता अपने इस मक़्सद को भुलते जा रहे हों। कहीं हमें **दो बारा** वाबस्ता होने की ज़रूरत तो नहीं ? क्यूंकि वाबस्ता कहलाना और है और वाबस्ता होना और.....

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर कोई यूं कहे कि **नेकियों** में दिल नहीं लगता, **नमाज़ों** में लुत़्फ़ नहीं आता, **तिलावत** की त़रफ़ दिल माइल नहीं होता। **सुन्नतों** पर अ़मल में सुस्ती रहती है। न **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र होता है न ही **मद्रसे** में मज़ा आता है। **नमाज़े फ़ज्र** के लिये उठा नहीं जाता, **इजतिमाअ़** में भी ज़बर दस्ती आता हूं, आह ! **रूह़ानिय्यत** नाम की कोई शै मैं अपने अन्दर नहीं पाता। पहले नेकियों में **लज़्ज़त** मिलती थी अब नहीं मिलती। पहले ना'तों मे ख़ूब **रोता** था मगर अब दिल की **सख़्ती** के बाइ़ष रोना भी नहीं आता.....या बा'ज़ इस्लामी भाइयों का, मस्जिद में मद्रसा न लगने या **ता'दाद कम** हो जाने पर तो दिल उदास हो मगर नमाज़ में दिल न लगने या **जमाअ़त छूटने** पर कम होने वाली नेकियों पर कोई रन्ज त़ारी न हो। ह़ल्क़े में **बद मज़गी** हो जाने पर फ़िक्र मन्द हों मगर ज़बान से **फ़ुज़ूल बातें** निकलें या (مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ) **बद निगाही** की आफ़त में जा पड़ें तो फ़िक्र तो दूर की बात **माथे पर शिकन** भी न आए। **म-दनी कामों** की कमी पर रन्जीदा तो हों मगर अ़मल में सुस्ती से होने वाली **बरबादी और तबाही पर** ध्यान न हो, कोई ज़िम्मादार **नाराज़** हो

www.dawateislami.net

जाए तो परेशान हों, मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे मह़बूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की नाराज़ी के ख़ौफ़ से ख़ुद को मह़रूम पाएं तो कहीं ऐसा तो नहीं कि **दीनी कामों की गहमा गहमी में हम ने म-दनी माह़ोल से वाबस्तगी के अस्ल मक़्सद को भूला दिया हो ।**

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अ़लाक़े में **म-दनी काम** कम होने के बाइ़ष दिल कुढ़ना यक़ीनन सआ़दत है मगर इस के साथ साथ अपने **म-दनी मक़्सद** की जानिब भी ध्यान रखना ज़रूरी है, जिसे अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِيَه ने एक जुम्ले में समो दिया है (या'नी) **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है ।"** اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

ऐसा नहीं होना चाहिये कि **नेक बनाने का जज़्बा** तो बर क़रार रहे, मगर **नेक बनने का जज़्बा** कम हो जाए ।

(जन्नत के त़लबगारों के लिये म-दनी गुलदस्ता, स. 23)

हर एक के लिये अ़मल करना आसान

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप के पास कोई दीनी मन्सब हो या न हो, आप ने दाढ़ी, इमामा और म-दनी लिबास अपनाया हो या नहीं या आज पहली मरतबा ही **"इन म-दनी इन्आ़मात"** के ज़रीए **"दा'वते इस्लामी"** के **म-दनी माह़ोल** से मुतआ़रिफ़ हो रहे हों आप भी **"म-दनी इन्आ़मात"** के मुत़ाबिक़ आसानी से अ़मल कर सकते हैं, याद रखिये, हम कितने भी मसरूफ़ हों اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **"म-दनी इन्आ़मात"** के मुत़ाबिक़ अ़मल करने से न हमारे दुन्यवी **काम काज** मुतअष्षिर होंगे न ही **ता'लीम** में ह़रज होगा और न ही

www.dawateislami.net

हमारे घरबार और **कारोबार** के मुआ़मलात में रुकावटें होंगी बल्कि रुकावटें दूर होंगी, क्यूंकि "**म-दनी इन्आ़मात**" के मुत़ाबिक़ अ़मल करने वालों को **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इस त़रह़ अपनी दुआ़ओं से नवाज़ रहे हैं :

दुआ़ए अ़त़ार : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को **मदीनए मुनव्वरा** के सदा बहार फूलों की त़रह़ **मुस्कुराता** रखे कभी भी आप की **ख़ुशियां** ख़त्म न हों, ह़यात व ममात (मौत), बरज़ख़ व सकरात (ह़ालते नज़्अ़) और क़ियामत के जांसोज़ लमह़ात में हर जगह **मसर्रतें** और शादमानियां नसीब हों, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप की और तमाम **क़बीले की मग़फ़िरत** करे, **जन्नतुल फ़िरदौस** में आप को अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का जवार अ़त़ा फ़रमाए ।

(اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم)

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इरशाद फ़रमाते हैं कि जब मुझे मा'लूम होता है कि फ़ुलां इस्लामी भाई या इस्लामी बहन का "**म-दनी इन्आ़मात**" पर अ़मल है तो दिल बाग़ बाग़ बल्कि बाग़े मदीना हो जाता है । या सुनता हूं कि फ़ुलां ने ज़बान और आंखों का या इन में से किसी एक का "**कुफ़्ले मदीना**" लगाया है तो अ़जीब कैफ़ो सुरूर ह़ासिल होता है ।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की दुआ़ और आप की तरग़ीब का अन्दाज़ देख कर मह़सूस होता है कि **दुन्या और आख़िरत की बेहतरी** के ख़्वाहिश मन्द हर मुसलमान को चाहिये कि वोह इन **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल करने वाला बन जाए ।

(जन्नत के त़लबगारों के लिये म-दनी गुलदस्ता, स. 32)

www.dawateislami.net

म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल करने का फ़र्ज़ी व मुख़्तसर जदवल

﴾सुब्ह़ दो घन्टे का जदवल﴿

फ़ज्र का वक़्त शुरूअ़ होने से क़ब्ल 20 मिनट पहले बेदार हो जाइये। अगर वक़्ते फ़ज्र 5 बजे शुरूअ़ हो रहा है तो आप 4:40 पर बेदार हो जाइये।

4:40 ता 5:00	(1) अच्छी अच्छी निय्यतें (20) तहि़य्यतुल वुज़ू (19) तहज्जुद (39) बा वुज़ू
5:00 ता 5:05	(5) अवरादो वज़ाइफ़
5:05 ता 5:17	(14) 12 मिनट मुत़ालआ़
5:17 ता 5:30	(4) अज़ान का जवाब (27) क़िब्ला रुख़ (39) बा वुज़ू
5:30 ता 5:35	(35) सदाए मदीना (36) निगाहें झुका कर चलना
5:35 ता 5:40	(18) सुन्नतें क़ब्लिया
5:40 ता 6:00	(2) बा जमाअ़त नमाज़ (3) नमाज़ के बा'द के वज़ाइफ़ (44) दुआ़ (6) सलाम (9) सलाम का जवाब
6:00 ता 6:20	(21) तीन आयात (14) 4 सफ़ह़ात
6:20 ता 6:30	(5) 313 बार दुरूदे पाक
6:30 ता 6:40	(19) इशराक़ व चाश्त

यूं आप का 17 म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल हो जाएगा।

www.dawateislami.net

﴾मग़रिब की नमाज़ के बा'द जदवल﴿ अगर मग़रिब की नमाज़ 6 बजे है।

6:00 ता 6:15	(2) नमाजे़ बा जमाअ़त (18) नवाफ़िले बा'दिया
6:15 ता 6:30	(19) अव्वाबीन (3) सूरतुल मुल्क (12) मदनी दर्स
6:30 ता 6:35	(15) फ़िक्रे मदीना
6:35 ता 7:48	(47) मदनी चैनल (11) मिट्टी के बरतन, पेट का कुफ़्ले मदीना

यूं आप का 21 म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल हो जाएगा।

﴾इशा की नमाज़ से 2 घन्टे का जदवल﴿

7:48 ता 8:00	(4) अज़ान का जवाब (18) सुन्नते क़ब्लिया
8:00 ता 8:25	(2) नमाजे़ बा जमाअ़त (18) बा'दे नवाफ़िल
8:25 ता 9:06	(13) मद्रसतुल मदीना बराए बालिग़ान
9:06 ता 9:20	(22) दो पर इन्फ़िरादी कोशिश (40) निगाह गाड़े बिग़ैर गुफ़्त-गू (10) इस्तिलाहात का इस्ति'माल
9:20 ता 9:40	(12) घर में मदनी दर्स (16) सलातुत्तौबा (23) दो घन्टे मदनी काम
9:40 ता 9:50	(17) सुन्नत बॉक्स, चटाई आराम

यूं आप का 29 म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल हो जाएगा।

वोह म-दनी इन्आ़मात जिन को आप अपनी आ़दात में शामिल फ़रमा लीजिये :

★(7) घर में आप, जी कह कर गुफ़्त-गू ★(8) اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ का इस्ति'माल ★(24) शूरा, जो आप के निगरान हैं उन की इत़ाअ़त

www.dawateislami.net

★(25) दूसरों से चीज़ें मांगने से बचना ★(26) तन्ज़ीमी तौर पर मस्अला ह़ल ★(28) ग़ुस्से का इलाज ★(29) फ़ुज़ूल सुवालात से बचना ★(30) ना मह़रम से शरई पर्दा ★(31) फ़िल्में डिरामों से बचना ★(32) घर में म-दनी माह़ोल की तरकीब ★(33) तोहमत, गाली गलोच से बचना ★(34) बात काटने से बचना ★(37) घरों में झांकने से बचना ★(38) झूट, ग़ीबत से बचना ★(41) क़र्ज़ की वक़्त पर अदाएगी ★(42) उ़यूब की पर्दा पोशी ★(43) यक्सां तअ़ल्लुक़ात ★(45) रियाकारी से बचना ★(48) मज़ाक़ मस्ख़री से बचना ★(49) फ़ुज़ूल गुफ़्त-गू पर नादिम हो कर दुरूदे पाक पढ़ना ★(50) म-दनी हुल्या अपनाना

यूं आप का 50 म-दनी इन्आ़मात पर बा आसानी अ़मल हो सकता है।

﴾मक्तब म-दनी इन्आ़मात﴿

म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल करने का फ़र्ज़ी व मुख़्तसर जदवल

﴾हफ़्तावार म-दनी इन्आ़मात﴿ (जुमा'रात की मग़रिब से ले कर पीर की मग़रिब तक का जदवल)

जुमा'रात	(51) हफ़्तावार इजतिमाअ़, रात ए'तिकाफ़ (52) चार पर इन्फ़िरादी कोशिश
जुमुआ़	(53) इयादत (बा'दे इशा : 12 मिनट)
हफ़्ता	(56) मस्जिद इजतिमाअ़ या मदनी मुज़ा-करा (बा'दे इशा)
इतवार	(54) मदनी दौरा (बा'दे अ़स्र ता मग़रिब), (55) जो आते थे अब नहीं आते उन से मुलाक़ात (बा'दे इशा : 26 मिनट)
पीर	(12) मक्तूब तह़रीर व रवाना (अ़स्र ता मग़रिब), (58) पीर शरीफ़ का रोज़ा

www.dawateislami.net

❁माहाना म-दनी इन्आ़मात❁

(म-दनी माह की पहली तारीख़ व पहली पीर शरीफ़ का जदवल)

पहली तारीख़	(59) मदनी इन्आ़मात का रिसाला जम्अ़ (30) 3 दिन मदनी क़ाफ़िले की निय्यत व अ़मल
पहली पीर	(60) यौमे क़ुफ़्ले मदीना (61) राबित़ा इस्लामी भाई मदनी क़ाफ़िले में सफ़र, मदनी इन्आ़मात रिसाला जम्अ़ (62) इमाम व मुअज़्ज़िन को पेश 112 रूपे (63) दोहराई दुआ़एं (64) दोहराई आख़िरी दस सूरतें

❁सालाना म-दनी इन्आ़मात❁

(मुह़र्रमुल ह़राम ता ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम का जदवल)

मुह़र्रम ता ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम	(70) अगर रोज़ाना 19 आयात की तिलावत की जाए तो यूं साल में नाज़िरा ख़त्म फ़रमा लेंगे।
मुह़र्रम ता रबीउ़ल अव्वल (3 माह)	(72) नमाज़ के अह़काम व नमाज़ व वुज़ू व गुस्ल दुरुस्त व दोहराई
रबीउ़ल आख़िर (1 माह)	(69) बहारे शरीअ़त का मुत़ालआ़
जुमादियुल अव्वल (1माह)	(67) एक माह का मदनी क़ाफ़िला
जुमादियुल आख़िर (1 माह)	(68) मिन्हाजुल आ़बिदीन का मुत़ालआ़
रजब ता शा'बान (2 माह)	(71) कुफ़्रिय्या कलिमात व चन्दे के बारे में सुवाल जवाब का मुत़ालआ़
रमज़ान ता ज़ुल ह़िज्जा (4 माह)	(65), (65) अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के तमाम रसाइल व पेम्फ़्लेट का मुत़ालआ़

❁मक्तब म-दनी इन्आ़मात❁

यौमे क़ुफ़्ले मदीना

फ़ुज़ूल बात करने में गुनाह नहीं मगर फ़ुज़ूल बोलते बोलते गुनाहों भरी बातों में जा पड़ने का सख़्त अन्देशा रहता है इस लिये फ़ुज़ूल गोई से बचने की आ़दत बनाने के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल में हर महीने की पहली पीर शरीफ़ (या'नी इतवार मग़्रिब ता पीर मग़्रिब तक) "यौमे क़ुफ़्ले मदीना" मनाने की इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों के लिये तरग़ीब है, इस का लुत़्फ़ तो वोही समझ सकता है जो येह दिन मनाता है। इस में मक्तबतुल मदीना का रिसाला "**ख़ामोश शहज़ादा**" (48 सफ़ह़ात) एक बार पढ़ना या सुनना है, अकेले पढ़िये या आपस में थोड़ा थोड़ा पढ़ कर सुना दीजिये, इस त़रह़ ख़ामोशी का जज़्बा मिलेगा। **यौमे क़ुफ़्ले मदीना** में ह़त्तल इमकान ज़रूरत की बात भी इशारे से या लिख कर कीजिये। हां जो इशारे वग़ैरा न समझता हो या जहां बोलना ज़रूरी हो वहां ज़बान से बोलिये मसलन सलाम व जवाबे सलाम, छींक पर ह़म्द या ह़म्द करने वाले का जवाब, इसी त़रह़ नेकी की दा'वत देना वग़ैरा वग़ैरा। जो लोग इशारे नहीं समझते उन के साथ ज़रूरतन ज़बान से बात चीत कीजिये और येह म-दनी फूल तो उ़म्र भर के लिये क़बूल फ़रमा लीजिये कि जब भी काम की बात करनी हो कम से कम अल्फ़ाज़ में निमटा ली जाए, इतना ज़ियादा मत बोलिये कि मुख़ात़ब या'नी जिस से बात कर रहे हैं वोह बेज़ार हो जाए। बहर ह़ाल हर उस अन्दाज़ से बचिये जो तन्फ़ीरे अ़वाम (या'नी लोगों में नफ़रत फैलने) का बाइ़स हो। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ बा'ज़ ऐसे भी हैं जो हर माह लगातार तीन दिन "**यौमे क़ुफ़्ले मदीना**" मनाते हैं। काश ! हम ज़िन्दगी भर रोज़ाना ही "यौमे क़ुफ़्ले मदीना" मनाने वाले बन जाएं। काश ! दिल के म-दनी गुलदस्ते में उ़म्र भर के लिये येह म-दनी फूल सज जाए : "फ़ुज़ूल गोई से बचो ताकि गुनाहों भरी बातों में पड़ कर जहन्नम में न जा पडो !"

(नेक बनने का नुस्ख़ा, स. 9)

www.dawateislami.net

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के तमाम म-दनी रसाइल

म-दनी इन्आ़म नम्बर 65 : क्या आप ने इस साल कम अज़् कम एक मरतबा (**अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के) तमाम म-दनी रसाइल (**जो आप को मा'लूम हैं**) पढ़ या सुन लिये हैं ?

1	हुसैनी दुल्हा	19	भयानक ऊंट
2	मैं सुधरना चाहता हूं	20	ग़फ़्लत
3	अनमोल हीरे	21	ख़ामोश शहज़ादा
4	बुरे ख़ातिमे के अस्बाब	22	क़ौमे लूत़ की तबाहकारियां
5	ग़ुस्से का इ़लाज	23	अबू जह्ल की मौत
6	बा ह़या नौजवान	24	नेक बनने का नुस्ख़ा
7	ज़ुल्म का अन्जाम	25	वुज़ू और साइन्स
8	बुड्ढा पुजारी	26	क़ियामत का इम्तिह़ान
9	चार सन्सनी ख़ेज़ ख़्वाब	27	क़ब्र का इम्तिहान
10	टी वी की तबाहकारियां	28	जौशे ईमानी
11	गाने बाजे के 35 कुफ़्रिय्या अश्आ़र	29	मुर्दे के सदमे
12	खुद कुशी का इ़लाज	30	पुर असरार ख़ज़ाना
13	सियाह फ़ाम ग़ुलाम	31	मुर्दे की बेबसी
14	करामाते फ़ारूके़ आ'ज़म	32	एह़तिरामे मुस्लिम
15	मीठे बोल	33	करबला का ख़ूनी मन्ज़र
16	करामाते उ़षमाने ग़नी	34	101 मदनी फूल
17	जन्नती मह़ल का सौदा	35	पुर असरार भिकारी
18	सगे मदीना कहना कैसा ?	36	अ़फ़्वो दरगुज़र की फ़ज़ीलत

37	क़ब्र की पहली रात	57	तिलावत की फ़ज़ीलत
38	समुन्दरी गुम्बद	58	ख़ौफ़नाक जादूगर
39	आक़ा का महीना	59	कफ़न चोरों के इन्किशाफ़ात
40	क़ब्र वालों की 25 हिकायात	60	काले बिच्छू
41	आ़शिक़े अक्बर	61	तज़्किरए सदरुश्शरीआ़
42	ख़ज़ाने के अम्बार	62	सय्यिदी क़ुत़्बे मदीना
43	मदीने की मछली	63	ज़िक्र वाली ना'त ख़्वानी
44	अश्कों की बरसात	64	163 मदनी फूल
45	नह्र की सदाएं	65	नमाज़े ईद का त़रीक़ा
46	कपड़े पाक करने का त़रीक़ा (मअ़ नजासतों का बयान)	66	ज़ियाए दुरूदो सलाम
47	अब्लक़ घोड़े सुवार	67	फ़ातिहा और ईसाले षवाब का त़रीक़ा
48	जिन्नात का बादशाह	68	मदनी वसिय्यत नामा
49	सांप नुमा जिन्न	69	ह़लाल त़रीक़े से कमाने के 50 मदनी फूल
50	खाने का इस्लामी त़रीक़ा	70	नूरवाला चेहरा
51	वस्वसे और उन का इलाज	71	फ़ैज़ाने अज़ान
52	इमामे ह़ुसैन की करामात	72	क़ज़ा नमाज़ों का त़रीक़ा
53	तज़्किरए इमाम अह़मद रज़ा	73	नमाज़े जनाज़ा का त़रीक़ा
54	बरेली से मदीना	74	ज़ख़्मी सांप
55	सुब्ह़े बहारां	75	फ़िरऔ़न का ख़्वाब
56	कफ़न की वापसी	76	बेटा हो तो ऐसा

www.dawateislami.net

77	40 रूहानी इलाज	94	वुज़ू का तरीक़ा
78	ग़ुस्ल का तरीक़ा	95	ज़िन्दा बेटी कुंएं में फेंक दी
79	वज़्न कम करने का तरीक़ा	96	मछली के अ़जाइबात
80	फै़ज़ाने जुमुआ़	97	हाथों हाथ फूफी से सुल्ह़ कर ली
81	इस्तिन्जा का तरीक़ा	98	मेथी के 50 मदनी फूल
82	मस्जिदें ख़ुश्बूदार रखिये	99	षवाब बढ़ाने के नुस्खे़
83	मुन्ने की लाश	100	चिड़िया और अंधा सांप
84	पान गुटका	101	बसन्त मेला
85	अख़्बार के बारे में सुवाल जवाब	102	कबाब समोसे के नुक़्सानात
86	करामाते शैरे ख़ुदा	103	बीमार आ़बिद
87	28 कलिमाते कुफ़्र	104	झूटा चोर
88	ना'त ख़्वां और नज़राना	105	मेंडक सुवार बिच्छू
89	क़सम के बारे में मदनी फूल	106	दूध पीता मदनी मुन्ना
90	अ़क़ीक़े के बारे में सुवाल जवाब	107	गरमी से ह़िफ़ाज़त के मदनी फूल
91	बिजली इस्ति'माल करने के मदनी फूल	108	तज़्किरए मुजद्दिदे अल्फ़े सानी
92	शैत़ान के बा'ज़ हथियार	109	मिस्वाक शरीफ़ के फ़ज़ाइल
93	बादशाहों की हड्डियां	★	★★★★★

(अपडेट : 20 दिसम्बर 2016 ईसवी)

मक्तब म-दनी इन्आ़मात

www.dawateislami.net

इज्तिमाई फ़िक्रे मदीना करने का त़रीक़ा

(72 म-दनी इन्आ़मात)

(1) क्या आज आप ने अच्छी अच्छी निय्यतें कीं ? (2) पांचों नमाज़ें तक्बीरे ऊला के साथ पहली सफ़ में बा जमाअ़त अदा कीं ? (3) हर नमाज़ के बा'द आयतुल कुरसी, तस्बीहे़ फ़ाति़मा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا), सूरए इख़्लास और रात में सूरए मुल्क पढ़ी ? (4) अज़ानो इक़ामत का जवाब दिया ? (5) शजरे के कुछ न कुछ अवराद और 313 बार दुरूदे पाक पढ़े ? (6) मुसलमानों को सलाम किया ? (7) आप और जी से गुफ़्त-गू की ? (8) जाइज़ बात के इरादे पर اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ने'मत देख कर مَاشَآءَاللّٰہ कहा ? (9) सलाम और छींकने वाले की ह़म्द कहने पर जवाब दिया ? (10) दा'वते इस्लामी की इस्ति़लाह़ात इस्ति'माल कीं नीज़ तलफ़्फ़ुज़ की दुरुस्ती की कोशिश की ? (11) पर्दे में पर्दा किये मिट्टी के बरतन में भूक से कम खाने की कोशिश की ? (12) दो दर्स दिये या सुने ? (13) मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में पढ़ा या पढ़ाया ? (14) 12 मिनट मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ किसी इस्लाही़ किताब और फ़ैज़ाने सुन्नत से 4 सफ़ह़ात पढ़े ? (15) फ़िक्रे मदीना की ? (16) सलातुत्तौबा अदा की ? (17) चटाई पर सोए, सिरहाने सुन्नत बॉक्स रखा ? (18) सुन्नतें क़ब्लिया और फ़र्ज़ों के बा'द वाले नवाफ़िल अदा किये ? (19) तहज्जुद, इशराक़ व चाश्त और अव्वाबीन की नमाज़ अदा की ? (20) तह़िय्यतुल वुज़ू और तह़िय्यतुल मस्जिद अदा की ?

www.dawateislami.net

(21) कन्ज़ुल ईमान से तीन आयात मअ़ तर्जमा व तफ़्सीर पढ़ीं ? (22) इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए कम अज़ कम दो को म-दनी क़ाफ़िले और म-दनी इन्आ़मात की तरग़ीब दिलाई ? (23) दो घन्टे म-दनी कामों पर सर्फ़ किये ? (24) अपने निगरान की इत़ाअ़त की ? (25) दूसरों से चीज़ें मांग कर इस्ति'माल तो नहीं कीं ? (26) किसी से बुराई सादिर हो तो तह़रीरी त़ौर पर या बराहे रास्त इस्लाह़ की कोशिश की ? बिला इजाज़ते शरई इस का किसी पर इज़्हार तो नहीं किया ? (27) पर्दे में पर्दा किया ? बैठने में क़िब्ले की सम्त रुख़ किया ? (28) ग़ुस्से का इलाज करते हुए दरगुज़र से काम लिया ? (29) फ़ुज़ूल सुवालात तो नहीं किये ? (30) ना मह़रम रिश्तेदारों से पर्दा किया ? (31) फ़िल्में, डिरामे, गाने बाजों से बचे ? (32) घर में म-दनी माह़ोल बनाने के लिये 19 म-दनी फूलों पर अ़मल किया ? (33) तोहमत, गाली गलोच तो नहीं की ? (34) दूसरों की बात काट कर अपनी बात तो शुरूअ़ नहीं की ? (35) सदाए मदीना लगाई ? (36) निगाहें नीची रखते हुए चलने की कोशिश की ? (37) दूसरों के घरों के अन्दर झांकने से बचे ? (38) झूट, ग़ीबत, चुग़ली, ह़सद, तकब्बुर, वा'दा ख़िलाफ़ी से बचे ? (39) अकषर दिन का हिस्सा बा वुज़ू रहे ? (40) मुख़ात़ब के चेहरे पर निगाहें तो नहीं गाड़ीं ? (41) वक़्त पर क़र्ज़ अदा किया ? (42) मुसलमानों के उ़यूब की पर्दा पोशी की ? (43) यक्सां तअ़ल्लुक़ात रखे ? (44) नमाज़ और दुआ़ में ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ पैदा किया ? (45) आ़जिज़ी के ऐसे अल्फ़ाज़ तो नहीं बोले जिन

www.dawateislami.net

से झूट और रियाकारी का इरतिकाब हो ?(46) ज़बान का कुफ़्ले मदीना लगाते हुए इशारे और चार बार लिख कर गुफ़्त-गू की ? (47) एक बयान, म-दनी मुज़ा-करा या म-दनी चैनल देखा ? (48) मज़ाक़ मस्ख़री, त़न्ज़, दिल आज़ारी और क़ह्क़हा से बचे ? (49) ज़रूरी गुफ़्त-गू कम से कम अल्फ़ाज़ में की ? (50) सारा दिन इमामा, ज़ुल्फ़ें, सरबन्द, दाढ़ी, कुर्ता, मिस्वाक और टख़्नों से ऊंचे पाइंचे रखे ?

लिख कर बात करने की आ़दत बनाने का त़रीक़ा

रोज़ाना बा'दे मग़रिब या किसी भी वक़्ते मुक़र्ररा पर फ़िक्रे मदीना करने के बा'द येह चार जुम्ले लिखने का मा'मूल बना लीजिये ।

12 रबीउ़ल अव्वल 1436 हिजरी 4 जनवरी 2015 ईसवी बरोज़ इतवार

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم ط　　　صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

या मुर्शिदे पाक करम फ़रमाइये صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

﴾1﴿ क्या आज आप ने फ़िक्रे मदीना कर ली ? ﴾2﴿ क्या हर दूसरे दिन तह़रीरी गुफ़्त-गू के लिये तारीख़ लिख लेते हैं ? ﴾3﴿ कम अज़ कम चार बार लिख कर गुफ़्त-गू की ? ﴾4﴿ अगर नहीं तो फ़ौरन तरकीब बना लीजिये । ﴾5﴿........

★★★★★★

www.dawateislami.net

مآخذ ومراجع

نمبرشمار	نام کتاب	مصنف / مؤلف	مطبوعات
1	قرآن مجيد	کلامِ الٰہی	
2	کنز الإيمان(ترجمۂ قرآن)	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاہور

كتب التفسير

1	تفسير بغوى	امام ابومحمد حسین بن مسعود بغوی، متوفّٰی ۵۱۶ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت
2	التفسير الكبير	امام فخر الدین محمد بن عمر بن حسین رازی، متوفّٰی ۶۰۶ھ	داراحیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۰ھ
3	تفسير قرطبي	امام محمد بن احمد القرطبی، متوفّٰی ۶۷۱ھ	دارالفکر بیروت
4	الدر المنثور	امام جلال الدین عبد الرحمٰن بن ابی بکر سیوطی، متوفّٰی ۹۱۱ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۰۳ھ
5	روح البيان	شیخ اسماعیل حقی بروسی، متوفّٰی ۱۱۳۷ھ	کوئٹہ ۱۴۱۹ھ
6	تفسير خزائن العرفان	صدر الافاضل سید محمد نعیم الدین، متوفّٰی ۱۳۶۷ھ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاہور
7	تفسير نور العرفان	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفّٰی ۱۳۹۱ھ	پیر بھائی کمپنی، لاہور
8	تفسير نعيمي	ایضاً	ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاہور

كتب الأحاديث

1	الموطأ لإمام مالك	امام مالک بن انس اصبحی، متوفّٰی ۱۷۹ھ	دارالمعرفۃ بیروت، ۱۴۲۰ھ
2	مسند الطيالسي	امام سلیمان بن داوٗد بن جارود طیالسی، متوفّٰی ۲۰۳ھ	مکتبہ حسینیہ، گوجرانوالہ
3	المسند لإمام شافعي	امام محمد بن ادریس شافعی، متوفّٰی ۲۰۴ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت
4	المصنف لعبد الرزاق	امام ابوبکر عبد الرزاق بن ہمام بن نافع صنعانی، متوفّٰی ۲۱۱ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت، ۱۴۲۱ھ
5	سنن سعيد بن منصور	سعید بن منصور، متوفّٰی ۲۲۷ھ	دارالصمیعی ریاض ۱۴۲۰ھ
6	المصنف لإبن أبي شيبه	امام ابوبکر عبد اللّٰہ بن محمد بن ابی شیبہ، متوفّٰی ۲۳۵ھ	دارالفکر بیروت، ۱۴۱۴ھ
7	المسند للإمام أحمد	امام احمد بن حنبل، متوفّٰی ۲۴۱ھ	دارالفکر بیروت، ۱۴۱۴ھ
8	سنن الدارمي	حافظ عبد اللّٰہ بن عبد الرحمٰن دارمی، متوفّٰی ۲۵۵ھ	دارالکتاب العربی بیروت، ۱۴۰۷ھ

9	صحيح البخاري	امام ابوعبداللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت، ۱۴۱۹ھ
10	صحيح مسلم	امام ابوالحسین مسلم بن حجاج قشیری، متوفی ۲۶۱ھ	دار ابن حزم بیروت، ۱۴۱۹ھ
11	سنن ابن ماجه	امام ابوعبداللہ محمد بن یزید ابن ماجہ، متوفی ۲۷۳ھ	دار المعرفۃ بیروت، ۱۴۲۰ھ
12	سنن أبي داود	امام ابوداؤد سلیمان بن اشعث سجستانی، متوفی ۲۷۵ھ	دار احیاء التراث العربی بیروت، ۱۴۲۱ھ
13	جامع الترمذي	امام ابوعیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی، متوفی ۲۷۹ھ	دار الفکر بیروت، ۱۴۱۴ھ
14	شمائل الترمذی	ایضاً	ایضاً
15	الموسوعة لابن ابی الدنیا	حافظ ابوبکر عبداللہ بن محمد قُرشی، متوفی ۲۸۱ھ	مکتبۃ العصریہ بیروت ۱۴۲۶ھ
16	البحر الزخار المعروف بمسند البزار	امام ابوبکر احمد بن عمرو بن عبد الخالق بزار، متوفی ۲۹۲ھ	مکتبۃ العلوم والحکم، المدینۃ المنورۃ، ۱۴۲۴ھ
17	سنن النسائي	امام ابوعبدالرحمٰن بن احمد شعیب نسائی، متوفی ۳۰۳ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت، ۱۴۲۶ھ
18	عمل اليوم و الليلة	ایضاً	دار الکتب العلمیہ بیروت
19	مسند أبي يعلى	شیخ الاسلام ابویعلی احمد بن علی بن مثنی موصلی، متوفی ۳۰۷ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت، ۱۴۱۸ھ
20	شرح معانی الآثار	امام ابوجعفر احمد بن محمد طحاوی، متوفی ۳۲۱ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۲۲ھ
21	المعجم الكبير	امام ابوالقاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	دار احیاء التراث العربی بیروت، ۱۴۲۲ھ
22	المعجم الأوسط	ایضاً	دار الکتب العلمیۃ بیروت، ۱۴۲۰ھ
23	المعجم الصغير	ایضاً	ایضاً، ۱۴۰۳ھ
24	الكامل فی ضعفاء الرجال	امام ابواحمد عبداللہ بن عدی جرجانی، متوفی ۳۶۵ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۱۸ھ
25	سنن الدارقطنی	امام علی بن عمر دارقطنی، متوفی ۳۸۵ھ	مدینۃ الاولیاء ملتان ۱۴۲۱ھ
26	المستدرک	امام ابوعبداللہ محمد بن عبداللہ حاکم نیشاپوری، متوفی ۴۰۵ھ	دار المعرفۃ بیروت، ۱۴۱۸ھ

27	حلية الأولياء	امام ابو نعیم احمد بن عبد اللہ اصفہانی، متوفی ۴۳۰ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت، ۱۴۱۸ھ
28	السنن الكبرى	امام ابو بکر احمد بن حسین بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ	ایضاً ۱۴۲۴ھ
29	شعب الإيمان للبيهقي	امام ابو بکر احمد بن حسین بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ	ایضاً، ۱۴۲۱ھ
30	تاريخ بغداد	حافظ ابو بکر احمد علی بن خطیب بغدادی، متوفی ۴۶۳ھ	ایضاً، ۱۴۱۷ھ
31	فردوس الأخبار	حافظ ابو شجاع شیرویہ بن شہردار بن شیرویہ دیلمی، متوفی ۵۰۹ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۱۷ھ
32	شرح السنة	امام ابو محمد حسین بن مسعود بغوی، متوفی ۵۱۶ھ	ایضاً ۱۴۲۴ھ
33	تاريخ دمشق لابن عساكر	علامہ علی بن حسن، متوفی ۵۷۱ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۵ھ
34	الأحاديث المختارة	ضیاء الدین محمد بن عبد الواحد مقدسی، متوفی ۶۴۳ھ	دار خضر، بیروت ۱۴۱۲ھ
35	الترغيب والترهيب	امام زکی الدین عبد العظیم بن عبد القوی منذری، متوفی ۶۵۶ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۱۸ھ
36	مشكاة المصابيح	علامہ ولی الدین تبریزی، متوفی ۷۴۲ھ	دار الفکر بیروت، ۱۴۲۱ھ
37	مجمع الزوائد	حافظ نور الدین علی بن ابی بکر، متوفی ۸۰۷ھ	دار الفکر بیروت، ۱۴۲۰ھ
38	عمدة القاري	امام بدر الدین ابو محمد محمود بن احمد عینی، متوفی ۸۵۵ھ	دار الفکر بیروت، ۱۴۱۸ھ
39	جمع الجوامع للسيوطي	امام جلال الدین عبد الرحمٰن بن ابی بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت، ۱۴۲۱ھ
40	كنز العمال	علامہ علی متقی بن حسام الدین ہندی برہان پوری، متوفی ۹۷۵ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت، ۱۴۱۹ھ
41	مرقاة المفاتيح	علامہ ملا علی بن سلطان قاری، متوفی ۱۰۱۴ھ	دار الفکر بیروت، ۱۴۱۴ھ
42	فيض القدير	علامہ محمد عبد الرؤوف مناوی متوفی ۱۰۳۱ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت، ۱۴۲۲ھ
43	أشعة اللمعات	شیخ محقق عبد الحق محدث دہلوی، متوفی ۱۰۵۲ھ	کوئٹہ ۱۳۳۲ھ
44	كشف الخفاء	شیخ اسماعیل بن محمد عجلونی، متوفی ۱۱۶۲ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۲ھ
45	مرآة المناجيح	مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاہور
46	نزهة القاري	علامہ مفتی محمد شریف الحق امجدی متوفی ۱۴۲۰ھ	برکاتی پبلشرز کھارادر کراچی

www.dawateislami.net

كتب السيرة

1	الشمائل المحمدية	امام ابوعیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی، متوفی ۲۷۹ھ	داراحیاء التراث العربی بیروت
2	دلائل النبوة	ابوبکر احمد بن الحسین بن علی بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۳ھ
3	الحصن الحصين	ابوالخیر محمد بن محمد بن محمد ابن جزری متوفی ۸۳۳ھ	المکتبة العصریة بیروت ۱۴۲۵ھ
4	شرح الشفا	علی بن سلطان محمد المعروف علامہ ملا علی قاری حنفی، متوفی ۱۰۱۴ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت، ۱۴۲۱ھ
5	جمع الوسائل في شرح الشمائل	علی بن سلطان محمد المعروف علامہ ملا علی قاری حنفی، متوفی ۱۰۱۴ھ	مدینة الاولیاء ملتان
6	وسائل الوصول الى شمائل الرسول	امام محقق محدث علامہ یوسف بن اسماعیل نبہانی متوفی ۱۳۵۰ھ	دارالمنہاج بیروت،
7	سعادة الدارين	امام محقق محدث علامہ یوسف بن اسماعیل نبہانی متوفی ۱۳۵۰ھ	مرکز اہل سنت برکاتِ رضا ہند ۱۴۲۵ھ
8	افضل الصلاة على سيد السادات	ایضاً	دارالثمر

كتب الفقه

1	خلاصة الفتاوى	علامہ طاہر بن عبد الرشید بخاری، متوفی ۵۴۲ھ	کوئٹہ
2	الفتاوى الخانية	علامہ حسن بن منصور قاضی خان، متوفی ۵۹۲ھ	پشاور
3	الهداية	برہان الدین علی بن ابی بکر مرغینانی، متوفی ۵۹۳ھ	داراحیاء التراث العربی بیروت
4	لقط المرجان في احكام الجان	امام جلال الدین عبد الرحمٰن بن ابی بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت، ۱۴۰۶ھ
5	غنية المُتَمَلِّي	علامہ محمد بن ابراہیم بن حلبی، متوفی ۹۵۶ھ	سہیل اکیڈمی، لاہور
6	الدر المختار	علامہ علاء الدین محمد بن علی حصکفی، متوفی ۱۰۸۸ھ	دارالمعرفة، بیروت، ۱۴۲۰ھ
7	حاشية الطحطاوي على الدر المختار	سید احمد بن محمد بن اسماعیل طحطاوی الحنفی، متوفی ۱۲۳۱ھ	کوئٹہ
8	الفتاوى الهندية	ملا نظام الدین، متوفی ۱۱۶۱ھ، وعلمائے ہند	دارالفکر بیروت، ۱۴۱۱ھ
9	ردالمحتار	علامہ سید محمد امین ابن عابدین شامی، متوفی ۱۲۵۲ھ	دارالمعرفة، بیروت، ۱۴۲۰ھ

www.dawateislami.net

10	الفتاوى الرضوية	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن، لاہور ۱۴۱۲ھ
11	احکامِ شریعت	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
12	بہار شریعت	علامہ مفتی محمد امجد علی اعظمی، متوفی ۱۳۶۸ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی

كتب التصوف

1	احياء علوم الدين	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	دار صادر، بیروت ۲۰۰۰ء
2	کیمیائے سعادت	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	تہران، ایران
3	مكاشفة القلوب	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت
4	تذكرة الاولياء	شیخ فرید الدین عطار، متوفی ۶۰۶/۶۱۶ھ	انتشارات گنجینہ، تہران ایران
5	شرح الصدور	امام جلال الدین عبد الرحمٰن بن ابی بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	مرکز اہلسنت برکاتِ رضا ہند ۱۴۲۳ھ
6	تنبيه المُغْتَرِّين	امام عبد الوہاب بن احمد شعرانی، متوفی ۹۷۳ھ	دار البشائر، دار المعرفہ بیروت
7	اتحاف السادة المتقين	سید محمد بن محمد حسینی زبیدی، متوفی ۱۲۰۵ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت
8	هشت بهشت	مرتب: خواجہ غریب نواز علیہ الرحمۃ	شبیر برادرز لاہور
9	جامع كرامات اؤلياء	امام محمد یوسف بن اسماعیل نبہانی متوفی ۱۳۵۰ھ	مرکز اہلسنت برکاتِ رضا ہند ۱۴۲۲ھ

كتب المتفرقة

1	التذكرة للقرطبي	ابو عبد اللہ محمد بن احمد بن ابی بکر قرطبی متوفی ۶۷۱ھ	دار السلام مصر ۱۴۲۹ھ
2	الروض الفائق	مبلغِ اسلام شیخ شعیب حریفیش متوفی ۸۱۰ھ	دار احیاء التراث العربی ۱۴۱۶ھ
3	الاتقان في علوم القرآن	امام جلال الدین عبد الرحمٰن بن ابی بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	باب المدینہ کراچی
4	شرح الفقه الاكبر	شیخ علی بن سلطان المعروف بملا علی قاری متوفی ۱۰۱۴ھ	باب المدینہ کراچی
5	ملفوظات اعلیٰ حضرت	شہزادۂ اعلیٰ حضرت محمد مصطفیٰ رضا خان متوفی ۱۴۰۲ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
6	سنی بهشتی زیور	مفتی محمد خلیل خان برکاتی متوفی ۱۴۰۵ھ	فرید بک سٹال لاہور ۲۰۰۱ء
7	فیضانِ سنت (جلد اول)	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
8	رسائل عطاریہ (حصہ دوم)	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
9	نماز کے احکام	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
10	مدنی پنج سورہ	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
11	چندے کے بارے میں سوال جواب	امیر اہلسنت حضرت علامہ محمد الیاس عطار قادری مدظلہ العالی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی

तफ़्सीली फ़ेहरिस

बाब : 1 म-दनी क़ाफ़िला	1	अमीरे क़ाफ़िला को कैसा होना चाहिये	46
म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करने की अहम्मिय्यत	1	शु-रकाए क़ाफ़िला की तरबिय्यत के म-दनी फूल	48
बलूचिस्तान का वाक़ेआ़	6	इत़ाअ़ते अमीर के लिये ज़ेहन बनाना	48
वीरान मस्जिद	7	नज़्मो ज़ब्त़	49
बूढ़ा रोने लगा	8	म-दनी मश्वरा	51
दर्द भरे मकतूब की पुकार	8	शु-रकाए क़ाफ़िला से अच्छा बरताव	53
इन सब की जहालत का ज़िम्मादार कौन	9	म-दनी क़ाफ़िले को सफ़र करवाने के म-दनी फूल	55
मां ! इस्लाम क्या है ?	9	सफ़र से क़ब्ल म-दनी फूल	55
आह ! इस्लाम से दूरी	10	दौराने सफ़र म-दनी फूल	58
आह सारा गोठ ही दाढ़ी मुन्डा	12	मक़ामे तरबिय्यत के म-दनी फूल	61
अफ़सोस नमाज़ के लिये कोई भी न आया	12	वापसी के म-दनी फूल	64
राहे ख़ुदा में सफ़र की तरग़ीब पर मुश्तमिल		एह़तिरामे मस्जिद के म-दनी फूल	65
रिवायात व हिकायात	16	मस्जिद के मु-तअ़ल्लिक़ 19 म-दनी फूल	68
फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم	16	म-दनी क़ाफ़िले से मु-तअ़ल्लिक़ चन्द ज़रूरी सुवाल जवाब	73
अक़्वाले सहाबा رِضْوَانُ اللہِ تعالٰی عَلَیۡھِمۡ	26	ह़लाल व ह़राम के मसाइल का सीखना फ़र्ज़ है	73
अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَھُمُ اللہُ تعالٰی	27	क़ाफ़िले वालों का मद्रसे के मत़बख़ से खाना पकाना	73
वाक़ेआ़त	28	क़ाफ़िले वालों का फ़िनाए मस्जिद में खाना पकाना	74
फ़रामीने अमीरे अहले सुन्नत مَدَّظِلُّہُ العَالِی	29	क्या म-दनी क़ाफ़िले वाले जामिअ़तुल मदीना का	
अ़लाक़े में म-दनी क़ाफ़िला कैसे तय्यार किया जाए	35	खाना खा सकते हैं	74
क़ाफ़िला से क़ाफ़िले कैसे सफ़र करवाएं ?	41	मद्रसे के कम्बल दूसरा कोई इस्ति'माल कर सकता	

www.dawateislami.net

है या नहीं	75	शैतान से धोका न खाना	90
म-दनी क़ाफ़िले के अख़्राजात के बारे में सुवाल जवाब	75	तरबिय्यती बयान का आख़िरी हिस्सा	93
		अमीर की इताअ़त	93
क़ाफ़िले में सब यक्सां रक़म जम्अ़ करवाएं	76	शैतान के हीलों से दिफ़ाअ़ की तरकीब	95
रक़म यक्सां हो मगर ख़ूराक सब की यक्सां नहीं होती......!	76	सब्र	97
		मसाजिद का अ-दबो एह्तिराम	98
म-दनी क़ाफ़िला और मेहमानों की ख़ैर ख़्वाही	77	म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करने की 72 निय्यतें	101
इख़्तितामे क़ाफ़िला पर बची हुई रक़म का मसरफ़ क्या ?	77	**दूसरा तरबिय्यती बयान**	104
दूसरे के ख़र्च पर सफ़र किया, रक़म बच गई, क्या करे ?	78	म-दनी क़ाफ़िले का मुख़्तसर जदवल व सामाने म-दनी क़ाफ़िला	114
		सामाने म-दनी क़ाफ़िला की फ़ेहरिस	120
आधी ज़िन्दगी, आधी अ़क़्ल और आधा इल्म	79	म-दनी क़ाफ़िले के जदवल की तफ़्सील	121
ग़रीबों के लिये रक़म मिली, मालदारों पर ख़र्च कर दी, अब क्या करे ?	80	जदवल और ए'लानात की दोहराई, मश्वरे का हल्क़ा	121
म-दनी क़ाफ़िले के लिये मिली हुई रक़म दूसरे दीनी कामों में......?	81	अब अमीरे क़ाफ़िला ए'लानात की दोहराई की तरकीब बनाए	126
मालदारों को चन्दे से इजतिमाअ़ में ले जाना कैसा ?	82	ए'लान करने की फ़ज़ीलत	126
		ए'लान के म-दनी फूल	127
बाब : 2 म-दनी क़ाफ़िले का जदवल	83	ए'लाने फ़ज्र व ए'लाने अ़स्र	128
म-दनी क़ाफ़िले के जदवल पर अ़मल की ब-रकतें	83	ए'लाने मग़रिब	129
म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की इब्तिदा	85	ज़िम्मादारियां तक़्सीम करना	129
तरबिय्यती बयानात बराए रवानगिये म-दनी क़ाफ़िला	86	मश्वरे का तरीक़ए कार	130
पहला तरबिय्यती बयान	86	इस्लामी भाइयों की ज़िम्मादारी	133

www.dawateislami.net

म-दनी मक़सद का ह़ल्क़ा	133	सिखाने की तरतीब	157
रसाइले अमीरे अहले सुन्नत से म-दनी		पहले बारह दिन में	157
क़ाफ़िलों में बयानात की तरकीब	134	दूसरे बारह दिन में	157
3 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में तरतीब	134	वक़्फ़ए त़आम व चौक दर्स	158
12 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में तरतीब	135	दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत	160
30दिन के म-दनी क़ाफ़िले में तरतीब	135	नमाज़ सीखने का ह़ल्क़ा	160
इनफ़िरादी इबादत का ह़ल्क़ा	136	हर माह तीन दिन के म-दनी क़ाफ़िले में	
नेकी की दा'वत का ह़ल्क़ा	136	"नमाज़ के अह़काम" से सीखाने का 12 माह का जदवल	160
इनफ़िरादी कोशिश का त़रीक़ा	136	12 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में सिखाने की तरतीब	166
इनफ़िरादी कोशिश के म-दनी फूल	137	30दिन के म-दनी क़ाफ़िले में सिखाने की तरतीब	168
इनफ़िरादी कोशिश का ह़ल्क़ा	140	पहले 12 दिन में	168
इनफ़िरादी कोशिश के लिये तरग़ीबात	141	दूसरे 12 दिन में	169
पहली तरग़ीब : राहे ख़ुदा में क़ुरबानियां	141	दर्स व बयान सीखने का ह़ल्क़ा	171
दूसरी तरग़ीब : वक़्त की क़द्र	144	दुआएं याद करने का ह़ल्क़ा	172
तीसरी तरग़ीब : नेकी की दा'वत	147	हर माह तीन दिन के म-दनी क़ाफ़िले में	
चौथी तरग़ीब : अल्लाह तआला की बारगाह में ह़ाज़िरी	150	दुआएं सीखने का 12 माह का जदवल	172
सुन्नतें सीखने का ह़ल्क़ा	153	12 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में "दुआएं" सीखने	
हर माह तीन दिन के म-दनी क़ाफ़िले में सुन्नतें		सिखाने की तरतीब	175
व आदाब सीखने के 12 माह का जदवल	154	30 दिन के म-दनी क़ाफ़िल में "दुआएं"सीखने	
12 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में "सुन्नतें"		सिखाने की तरतीब	175
सीखने सिखाने की तरकीब	156	पहले 12 दिन में	175
30 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में "सुन्नतें" सीखने		दूसरे 12 दिन में	176

www.dawateislami.net

नेकी की दा'वत (मुख़्तसर)	177	फ़ैज़ाने सुन्नत से दर्स देने का त़रीक़ा	199
अ़स्र ता मग़रिब मस्जिद में (फ़ैज़ाने सुन्नत से)		दर्स के आख़िर में तरग़ीब	200
दर्स की तरकीब	178	दुआए अ़त्तार	203
3 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में तरतीब	178	बयान की अहम्मिय्यत	204
12 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में तरतीब	179	बयान के मक़ासिद	205
30 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में तरतीब	180	बयान करने से पहले चन्द एह़तियातें	209
पहले 12 दिन में तरतीब	180	बयान की अक़्साम (1 तन्ज़ीमी 2 इस्लाही)	211
दूसरे 12 दिन में तरतीब	181	बयान तय्यार करने का त़रीक़ा	214
बा'द नमाज़े मग़रिब (ए'लान व बयान)	182	मुबल्लिग़ के म-दनी फूल	216
बा'द नमाज़े इशा (दर्स)	183	**फ़ज्र के बयानात**	221
दोहराई का ह़ल्क़ा	184	**बयान नम्बर 1 :** फ़ैज़ाने ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ	221
अख़्लाक़ी निखार के लिये	185	नफ़्ली इबादात से आ़जिज़ होने वाला	224
सदाए मदीना	187	हर भलाई ले गए	224
सदाए मदीना का त़रीक़ा	188	**बयान नम्बर 2 :** फ़ैज़ाने तिलावत	228
सदाए मदीना के अश्आ़र	190	रोज़ाना एक बार ख़त्मे क़ुरआने पाक	228
बाब : 3 दर्स व बयान	191	क़ुरआने पाक के एक ह़र्फ़ पढ़ने का षवाब	230
दर्स की अहम्मिय्यत	191	बेहतरीन शख़्स	230
दर्स की ब-रकात	192	क़ुरआने पाक शफ़ाअ़त करेगा	231
दर्स देने वाले को खुली आंखों से मुर्शिद		क़ुरआने मजीद की एक आयत सिखाने की	
का दीदार	193	फ़ज़ीलत	232
दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत के म-दनी फूल	194	तिलावते क़ुरआन के मुख़्तलिफ़ म-दनी फूल	232
मस्जिद में दर्स देने के मक़ासिद	197	**बयान नम्बर 3 :** फ़ैज़ाने नवाफ़िल	238

www.dawateislami.net

तहिय्यतुल मस्जिद	239	अफ़्ज़ल अ़मल	259
तहिय्यतुल वुज़ू	240	जो भलाई मांगे अ़त़ा की जाए	260
नमाज़े इशराक़	241	जन्नत में दाख़िला	260
नमाज़े चाश्त	241	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत ढांप लेती है	260
हर जोड़ के बदले स-दक़ा	241	ज़िक्र करने वाले सब्क़त ले गए	261
नमाज़े सफ़र	242	रोज़े क़ियामत बुलन्द रुत्बा वाले	261
नमाज़ वापसिये सफ़र	242	बिग़ैर ज़िक्र गुज़रने वाली घड़ी पर अफ़्सोस	262
सलातुल्लैल	243	क़लम का क़त़	262
नमाज़े तहज्जुद	243	साठ साल की इ़बादत से बेहतर	263
जन्नत में सलामती से दाख़िला	244	**बयान नम्बर 6 :** फ़ैज़ाने सलातो सलाम	266
बयान नम्बर : 4 नफ़्ली रोज़ों के फ़ज़ाइल	249	बा कमाल म-दनी मुन्नी	266
जन्नत का अनोखा दरख़्त	250	बा कमाल फ़िरिश्ता	270
दोज़ख़ से 50 साल मसाफ़त दूरी	251	पुल सिरात़ पर नूर	271
मह़शर में रोज़ादारों के मज़े	251	सायए अ़र्श	271
सफ़र करो मालदार हो जाओगे	251	सोने के दीनार	272
शैत़ान की परेशानी	252	रह़मतों का नुज़ूल	272
रोज़े की ह़ालत में मरने की फ़ज़ीलत	253	दिन और रात के गुनाह मुआ़फ़ हों	273
नेक काम के दौरान मौत की सआ़दत	235	शफ़ाअ़त का मुज़्दा	273
कालू चाचा की ईमान अफ़रोज़ मौत	254	निफ़ाक़ और जहन्नम से आज़ादी	273
बयान नम्बर 5 : ज़िक्रुल्लाह के फ़ज़ाइल	257	जन्नत में अपना मक़ाम देखने का नुस्ख़ा	274
दिन की इब्तिदा	258	अच्छी सोह़बत अच्छी मौत	276
जन्नत की ज़मानत	259	**बयान नम्बर 7 :** फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह	279

www.dawateislami.net

क़ब्र से अ़ज़ाब उठ गया	279	क़ह़त़ साली दूर	290
76 हज़ार नेकियां	280	घर व दुकान में ख़ूब ब-रकत हो	290
उन्नीस ह़ुरूफ़ की ह़िक्मतें	281	मुन्कर नकीर का मुआ़मला आसान हो	291
पांच म-दनी फूल	282	बत़ौरे ता'वीज़ कोई आयत या इ़बारत लिखें	291
बिस्मिल्लाह दुरुस्त पढ़िये	282	कपड़े तबदील करते वक़्त	291
अधूरा काम	283	सरकश जिन्नात से ह़िफ़ाज़त	291
ज़ह्रे क़ातिल बे असर हो गया	283	मोहलिक मरज़ से नजात	292
मोटा ताज़ा शैत़ान	284	**बयान नम्बर : 8** ज़िक्र की फ़ज़ीलत	294
जिन्नात से सामान की ह़िफ़ाज़त का त़रीक़ा	284	नूरे अ़र्श में डूबा हुवा शख़्स	295
घरेलू झगड़ों का इ़लाज	285	ज़िक्र करने वाले हर भलाई ले गए	295
फ़िरिश्ते नेकियां लिखते रहते हैं	285	कसरते ज़िक्र	296
नेकियां ही नेकियां	286	मुमताज़ लोग	297
क़ियामत के लिये निराली सनद	286	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब से बचाने वाला अ़मल	297
तू अ़ज़ाब से बच गया	287	सब से अफ़्ज़ल माल	297
मय्यित की पेशानी और सीने पर लिखिये	287	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करने का त़रीक़ा	299
बिस्मिल्लाह लिखने की फ़ज़ीलत	288	करम वाले लोग	299
उ़म्दगी से पढ़ने की फ़ज़ीलत	288	मोतियों के मिम्बरों पर बैठने वाले	300
ब-रकतें ही ब-रकतें	289	गुनाह नेकियों में बदले जाएं	301
हर त़रह़ की आफ़त व बला से मह़फ़ूज़	289	एक ग़ुलाम आज़ाद करने का षवाब	301
शर से बचा रहे	289	दरख़्त लगा रहा हूं	301
अमीर व कबीर होने का नुस्ख़ा	289	गुनाह अगर्चे समुन्दर की झाग के बराबर	302
ह़ाफ़िज़ा मज़बूत़	290	हर ह़र्फ़ के बदले दस नेकियां	303

सरकार عَلَیْہِ السَّلَام की शफ़ाअ़त पाने वाला	303	कितना वक़्त देते हैं ?	331
सब से अफ़्ज़ल ज़िक्र	303	पुल सिरात़ की दह्शत	332
अपने ईमान की तजदीद कर लिया करो	304	अम्र बिल मा'रूफ़ की सूरतें	333
सो मर्तबा कलिमए त़य्यिबा	304	**बयान नम्बर : 2** नेकी की दा'वत	336
आग पर ह़राम है	305	बह़री जहाज़ के मुसाफ़िर	336
कलिमए त़य्यिबा का विर्द करते करते	306	या शैख़, अपनी अपनी देख ! की सोच ग़लत़ है	337
बयान नम्बर : 9 म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल का त़रीक़ा	308	रो'ब जाता रहेगा	338
फ़िक्रे मदीना पर इस्तिक़ामत का आसान त़रीक़ा	315	बुराइयों से न रोकने वाला ही अब नेक समझा	
एक वक़्त में दो जगह जल्वा नुमाई	317	जाने लगा है	338
बाब 4 : अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत	319	पेशाब में ख़ून	340
अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत की अहम्मिय्यत	319	बुराई को बुराई समझना ज़रूरी है	340
अ़लाक़ाई दौरा में ज़िम्मादारियां	322	जन्नत की क्यारियां	342
नेकी की दा'वत के आदाब	323	**बयान नम्बर : 3** नेकी की दा'वत	343
नेकी की दा'वत से पहले की दुआ़	324	भलाई का दरवाज़ा	343
नेकी की दा'वत से वापसी के बा'द की दुआ़	325	बेहतरीन कौन ?	344
नेकी की दा'वत का त़रीक़ए कार	326	अ़र्श का साया किस को मिलेगा	344
बयानाते अ़स्र	328	जन्नतुल फ़िरदौस किस के लिये ?	345
बयान नम्बर : 1 नेकी की दा'वत	328	मरीज़ त़बीब बन गया	345
पसन्दीदा आ'माल	328	मस्जिदों के अवताद	347
बुराई को कम अज़ कम बुरा तो जानो	329	**बयान नम्बर : 4** नेकी की दा'वत	348
नेकी की दा'वत देना हर शख़्स की ज़िम्मादारी है	329	क़ाबिले रश्क लोग	348
हम नेकी की दा'वत के अ़ज़ीम काम को		सुर्ख़ ऊंटों से बेहतर	349

www.dawateislami.net

नेकी की तरग़ीब देने का फ़ाएदा	350	बुराई से रोकने का अ़ज़ीम जज़्बा	375
दुआ़ क़बूल न होगी	350	इत्मीनान व सुकून का नुज़ूल	378
आह ! मुसलमान की बरबादी	351	**बयानाते मग़रिब**	379
जन्नत की बिशारत	352	**बयान नम्बर : 1** हिल्म व बुर्द-बारी	379
बयान नम्बर : 5 नेकी की दा'वत	353	बुराई के बदले भलाई	380
नौ जवान राहे रास्त पर आ गया	353	इ़ज़्ज़त में इज़ाफ़ा	380
नेक शख़्स भी अ़ज़ाब में	357	अम्न व हिदायत वाले	381
जन्नत की क्यारियां	358	मुआ़फ़ करो मग़फ़िरत पाओ	381
बयान नम्बर : 6 नेकी की दा'वत	359	बुर्दबारी की आ'ला मिषाल	382
तीन म-दनी फ़ीसें	359	पेशगी मुआ़फ़ करने की फ़ज़ीलत	383
नेकी की दा'वत देना स-दक़ा है	362	दिल में नूरे ईमान पाने का एक सबब	383
नेक लोगों की हलाकत की वजह	362	**बयान नम्बर : 2** राहे ख़ुदा में ख़र्च के फ़ज़ाइल	387
क्या हम ना गवारी महसूस करते हैं ?	363	गुंधा हुवा आटा दे दिया	387
मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ الرَّحْمَة की फ़िक्र मन्दी	363	स-दक़ा करने से माल कम नहीं होता	388
क़ब्र की रोशनी	364	स-दक़ा आग से पर्दा है	390
बयान नम्बर : 7 नेकी की दा'वत	365	स-दक़ा कोताहियों को मिटाता है	390
मीठे बोल की ब-रकत	365	क़ब्र में राहत, क़ियामत में साया	390
जन्नत की बिशारत	368	बुराई के सत्तर दरवाज़े बन्द	391
बयान नम्बर : 8 नेकी की दा'वत	369	सुब्ह सवेरे स-दक़ा दो	391
एक साल की इ़बादत का षवाब	372	बुरी मौत से हिफ़ाज़त	391
हज़ार रकअ़त से बेहतर	372	मुसलमान का स-दक़ा	392
बयान नम्बर : 9 नेकी की दा'वत	374	कुछ न कुछ स-दक़ा करें	392

www.dawateislami.net

सख़ी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के क़रीब है	393	गिर्यए उ़षमानी	415
हर मुसलमान पर स-दक़ा है	393	सब से होलनाक मन्ज़र	416
अह्ल पर ख़र्च करना स-दक़ा है	393	पड़ोसी मुर्दों की पुकार	416
स-दक़ा भी और सिलए रेह़्मी भी	394	मेरे अहलो इ़याल कहां हैं ?	417
कूंएं से भरने से पानी बढ़ता है	394	क़ाबिले रश्क कौन ?	417
बयान नम्बर : 3 दुन्या की मज़म्मत	397	नेक शख़्स की निशानी	418
वीरान मह़ल	397	अभी से तय्यारी कर लीजिये	418
इ़ब्रत ही इ़ब्रत	400	मुह़म्मद एह़सान अ़त्तारी का लाशा	420
दुन्या का धोका	401	**बयान नम्बर : 5** अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर	423
बांस की झोंपड़ी	402	तीन उ़यूब की नुह़ूसत	423
सब से बेहतर ज़ादे राह	402	एक शैख़ का बुरा ख़ातिमा	425
दुन्या बरबाद हो कर रहेगी	403	फ़िरिश्तों का साबिक़ा उस्ताज़	426
दुन्या आख़िरत की तय्यारी के लिये मख़्सूस है	404	शैत़ान वालिदैन के रूप में	426
बयान नम्बर : 4 क़ब्र की पुकार	409	मौत की तकालीफ़ का एक क़त़्रा	427
इ़ब्रत के म-दनी फूल	409	शैत़ान दोस्तों की शक्ल में	427
क़ब्र रोज़ाना येह करती है पुकार	411	ईमान की ह़िफ़ाज़त की फ़िक्र करते रहिये	428
रूह़ की दर्दनाक बातें	412	हमारा क्या बनेगा	429
जन्नत का बाग़	413	सरकार عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की गिर्या व ज़ारी	429
क़ब्र की याद !	414	आग के सन्दूक़	430
बे शुमार लोग मग़्मूम हैं	414	अच्छे ख़ातिमे के लिये म-दनी फूल	431
क़ब्र की डांट	414	म-दनी चेनल की म-दनी बहार	432
बे कसी का दिन	415	**बयान नम्बर : 6** मुह़ासबए नफ़्स	435

www.dawateislami.net

अनोखा ह़िसाब	435	कर भला हो भला	454
मुह़ासबा किसे कहते हैं	436	नर्मी ज़ीनत बख़्शती है	455
बचपन की ख़त़ा याद आ गई	437	पेशगी मुआफ़ करने की फ़ज़ीलत	455
नेकी कर के भूल जाओ	437	बिला ह़िसाब जन्नत में दाख़िला	456
आज "क्या क्या" किया ?	438	**बयान नम्बर : 8** इ़ल्मे दीन	459
फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ की आ़जिज़ी	438	मैं ने इ़ल्म के लिये वत़न छोड़ा	459
क़ियामत से पहले ह़िसाब	439	जन्नत के बाग़ात	460
चराग़ पर अंगूठा	439	बेहतरीन इ़बादत	460
जहन्नम के दरवाज़े पर नाम	441	अफ़ज़ल स-दक़ा	461
नादानी की इन्तिहा	443	वोह जन्नती है	461
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बे नियाज़ है	443	गुज़श्ता गुनाहों का कफ़्फ़ारा	461
सुधरने के लिये तौबा कर लीजिये	444	दो ह़रीस	462
म-दनी इन्आ़मात के रिसाले की ब-रकत	446	बरोज़े मह़शर सब से ज़ियादा ह़सरत	462
बयान नम्बर : 7 अ़फ़्व व दर गुज़र की फ़ज़ीलत	448	शोहदा तमन्ना करेंगे	462
म-दनी आक़ा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का अ़फ़्व व दर गुज़र	448	भूके त़-लबा की फ़रयाद	463
शाने मुस्त़फ़ा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام	450	सो रोटियां	466
ह़िसाब में आसानी के तीन असबाब	450	एलर्जी का मरज़ ठीक हो गया	467
मोअ़ज़्ज़ज़ कौन ?	451	गुनाहों की बख़्शिश	469
रोज़ाना सत्तर बार मुआफ़ करो	451	जवानी व बुढापे में क़ुरआने पाक सीखना	469
नमक ज़ियादा डाल दिया	452	तरबिय्यती कोर्स में अख़्लाक़ी तरबिय्यत	469
मुआफ़ करने से इ़ज़्ज़त बढ़ती है	452	**बयान नम्बर : 9** जूदो सख़ा	472
जवाबी कार रवाई पर शैत़ान का आ जाना	453	सख़ावत करो मज़ीद अ़त़ा किये जाओगे	474

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे बख़्श देता है	475	सब से ज़ियादा वज़्न दार नेकी	498
सख़ी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के क़रीब है	476	"अच्छे अख़्लाक़" गुनाह मिटा देते हैं	498
सख़ी से मह़ब्बत	476	ह़ुस्ने अख़्लाक़ किसे कहते हैं ?	498
सय्यिदतुना सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की सख़ावत	478	तशरीफ़ आवरी का मक़सद	499
बयान नम्बर : 10 मक़्सदे ह़यात	482	घरों में म-दनी माह़ोल न होने की	
ज़िन्दगी के लमह़ात अनमोल हीरे	483	एक वजह	500
ज़िन्दगी का वक़्त थोड़ा है	484	अहले ख़ाना को दोज़ख़ से कैसे बचाएं ?	500
सांस की माला	484	जन्नत व दोज़ख़	501
"दिन" का ए'लान	485	ह़ज्जे मबरूर का षवाब	502
जनाब या मर्ह़ूम !	486	अवलाद को अदब सिखाइये	503
पांच को पांच से पहले	486	रिश्तेदारों का एह़तिराम	503
दो ने'मतें	487	नाराज़ रिश्तेदारों से सुल्ह़ कर लीजिये	504
ह़ुस्ने इस्लाम	487	पड़ोसियों की अहम्मिय्यत	504
अनमोल लमह़ात की क़द्र	488	आ'ला किरदार की सनद	505
वक़्त के क़द्र दानों के इर्शादात व मनक़ूलात	488	मा तह़्तों के बारे में सुवाल होगा	505
निज़ामुल अवक़ात की तरकीब बना लीजिये	490	दिल न दुखाइये	505
सुब्ह़ की फ़ज़ीलत	491	कर भला हो भला	506
60 साल की इबादत से बेहतर	493	दा'वते इस्लामी क्या चाहती है	506
म-दनी इन्आमात के रिसाले की ब-रकत	494	اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं बदल गया !	507
बयान नम्बर 11 : ह़ुस्ने अख़्लाक़	496	**बाब 5 : दुआएं, सुन्नतें और आदाब**	509
आक़ा का पसन्दीदा	497	दुआ की अहम्मिय्यत	509
बेहतरीन चीज़	498	दुआ मोमिन का हथयार है	509

www.dawateislami.net

दुआ दाफ़ए बला है	509	किसी ने खिलाया हो तो येह दुआ भी पढिये	516
इबादात में दुआ का मक़ाम	510	आइना देखते वक़्त की दुआ	516
दुआ के तीन फ़ाइदे	510	छींक आने पर दुआ	517
म-दनी क़ाफ़िले के जदवल में शामिल दुआएं	511	छींक आने पर اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहने वाले के	
जनाज़ा देख कर पढ़िये	511	लिये दुआ	517
क़ब्रिस्तान में दाख़िल होते वक़्त की दुआ	511	छींक का जवाब देने वाले के लिये दुआ	517
क़ब्र पर मिट्टी डालते वक़्त की दुआ	511	अदाए क़र्ज़ की दुआ	517
बैतुल ख़ला में दाख़िल होने से पहले की दुआ	511	ग़ीबत से बचने की दुआ	518
बैतुल ख़ला से बाहर आने के बा'द की दुआ	512	दूध पीने के बा'द की दुआ	518
शैतान से बचने का अ़मल	512	सुवारी पर सुवार होते वक़्त की दुआ	518
लिबास पहनते वक़्त की दुआ	512	सुवारी पर इत़मीनान से बैठ जाने पर दुआ	519
सुरमा लगाते वक़्त की दुआ	513	घर में दाख़िल होते वक़्त की दुआ	519
मुसलमान को हंसता देख कर पढने की दुआ	513	घर से निकलते वक़्त की दुआ	519
इत्र लगा कर देने की दुआ	513	सोते वक़्त की दुआ	519
आबे ज़म ज़म पीते वक़्त की दुआ	513	नींद से बेदार होने के बा'द की दुआ	520
मस्जिद में दाख़िल होने की दुआ	513	जल जाने पर पढ़ने की दुआ	520
मस्जिद से निकलते वक़्त की दुआ	514	सांप, बिच्छू वग़ैरा मूज़ियात से पनाह की दुआ	520
मजलिस के इख़्तिताम पर पढ़ने वाली दुआ	514	सख़्त ख़त़रे के वक़्त की दुआ	521
बाज़ार में दाख़िल होते वक़्त की दुआ	514	इयादत करते वक़्त की दुआ	521
बाज़ार में नुक़सान न हो बल्कि फ़ाएदा हो	515	वुस्अ़ते रिज़्क़	521
खाने से पहले की दुआ	516	बालिग़ मर्द व औ़रत के जनाज़े की दुआ	521
खाने के बा'द की दुआ	516	ना बालिग़ लड़के के जनाज़े की दुआ	522

www.dawateislami.net

ना बालिग़ लड़की के जनाज़े की दुआ	522	राहे ख़ुदा में सफ़र करने का षवाब	573
ईमाने मुफ़स्सल	523	क़ाफ़िले में चलो	578
ईमाने मुजमल	523	सुरमा लगाने की सुन्नतें और आदाब	580
शश कलिमे	523	सोते वक़्त सुरमा डालना सुन्नत है	580
अव्वल कलिमा त़य्यिब	523	सुरमए इस्मद बेहतर है	581
दूसरा कलिमा शहादत	524	सुरमा लगाने का त़रीक़ा	582
तीसरा कलिमा तमजीद	524	सुरमा लगाने के 4 म-दनी फूल	583
चौथा कलिमा तौह़ीद	524	छींकने की सुन्नतें और आदाब	585
पांचवां कलिमा इस्तिग़फ़ार	525	छींकने के आदाब के 17 म-दनी फूल	586
छटा कलिमा रद्दे कुफ़्र	525	नाख़ुन, ह़जामत, मूए बग़ल वग़ैरा से	
सुन्नतें और आदाब	527	मु-तअ़ल्लिक़ सुन्नतें और आदाब	589
सलाम करने की सुन्नतें और आदाब	527	नाख़ुन काटने के 9 म-दनी फूल	593
सलाम के 11 म-दनी फूल	539	ज़ुल्फ़ें रखने की सुन्नतें और आदाब	596
मुसाफ़ह़ा और मुआ़नक़ा की सुन्नतें और आदाब	542	ज़ुल्फ़ों और सर के बालों वग़ैरा के 22	
सह़ाबए किराम رضی اللہ عنہم सरकारे मदीना ﷺ		म-दनी फूल	598
के मुक़द्दस हाथ पाउं चूमते थे	546	तेल डालने और कंघा करने की सुन्नतें	
हाथ मिलाने के 14 म-दनी फूल	549	और आदाब	603
बात चीत करने की सुन्नतें और आदाब	552	तेल डालने और कंघी करने के 19	
बात चीत करने के 12 म-दनी फूल	554	म-दनी फूल	603
घर में आने जाने की सुन्नतें और आदाब	557	ज़ीनत की सुन्नतें और आदाब	609
घर में आने जाने के 12 म-दनी फूल	565	ख़ुश्बू लगाना सुन्नत है	613
सफ़र की सुन्नतें और आदाब	568	ख़ुश्बू का तोह़फ़ा रद न करें	615

www.dawateislami.net

खुशबू लगाने की 47 निय्यतें	619	आबे ज़म ज़म से इस्तिन्जा करना कैसा	663
खाने की सुन्नतें और आदाब	621	इस्तिन्जा ख़ाने का रुख़ दुरुस्त कीजिये	663
खाने की "40" निय्यतें	626	इस्तिन्जा के बा'द क़दम धो लीजिये	663
पानी पीने की सुन्नतें और आदाब	628	बिल में पिशाब करना	663
पानी पीने की "15" निय्यतें	629	ह़म्माम में पेशाब करना	663
चाय पीने की "6" निय्यतें	629	इस्तिन्जा के ढेलों के अह़काम	664
पानी पीने के "12" म-दनी फूल	630	मेहमान नवाज़ी की सुन्नतें और आदाब	667
चलने की सुन्नतें और आदाब	632	मेहमान बाइ़षे ख़ैरो ब-रकत है	668
चलने के 15 म-दनी फूल	633	मेहमान मेज़बान के गुनाह मुआ़फ़ होने का	
बैठने की सुन्नतें और आदाब	637	सबब होता है	668
लिबास पहनने के आदाब	340	दस[10] फ़िरिश्ते साल भर तक घर में रह़मत	
लिबास के 14 म-दनी फूल	340	लुटाते हैं	668
म-दनी हुल्या	643	मेहमान को दरवाज़े तक रुख़्सत करना	
इ़मामे के 17 म-दनी फूल	644	सुन्नत है	669
जूता पहनने की सुन्नतें और आदाब	646	आह ! म-दनी क़ाफ़िला अब जा रहा है लौट कर	670
जूते पहनने के 7 म-दनी फूल	647	म-दनी इन्आ़मात से मुतअ़ल्लिक़ 92 म-दनी फूल	671
सोने जागने की सुन्नतें और आदाब	649	फ़र्ज़ी व मुख़्तसर जदवल	686
सोने जागने के 15 म-दनी फूल	650	यौमे क़ुफ़्ले मदीना	690
मिस्वाक के 20 म-दनी फूल	653	म-दनी रसाइल	691
क़ब्रिस्तान की ह़ाज़िरी के 16 म-दनी फूल	656	इज्तिमाई फ़िक्रे मदीना	694
इस्तिन्जा का त़रीक़ा और आदाब	660	मआख़िज़ व मराजेअ़	697

www.dawateislami.net

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की त़रफ़ से पेश कर्दा क़ाबिले मुत़ा-लआ़ कुतुब

शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْه

(1) करन्सी नोट के शरई अह़कामात : (अल किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम फ़ी क़िरत़ासिद्दराहिम) (कुल सफ़ह़ात : 199)

(2) विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़) (अल याक़ूतितुल वासित़ह) (कुल सफ़ह़ात : 60)

(3) ईमान की पहचान (ह़ाशिया तम्हीदे ईमान) (कुल सफ़ह़ात : 74)

(4) मआ़शी तरक़्क़ी का राज़ (ह़ाशिया व तशरीह़ तदबीरे फ़लाह़ो नजात व इस्लाह़) (कुल सफ़ह़ात : 41)

(5) शरीअ़त व त़रीक़त (मक़ालुल उ़-रफ़ाअ बि इ'ज़ाज़ि शर-इ़ व उ़-लमाअ) (कुल सफ़ह़ात : 57)

(6) षुबूते हिलाल के त़रीक़े (तु़-रक़ि इस्बाति हिलाल) (कुल सफ़ह़ात : 63)

(7) आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब (इज़्हारिल ह़क़्क़िल जली) (कुल सफ़ह़ात : 100)

(8) ईदैन में गले मिलना कैसा ? (विशाह़ुल जीद फ़ी तह़लीलि मुआ़नि-क़तिल ईद) (कुल सफ़ह़ात : 55)

(9) राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल (रद्दिल क़ह़्त़ि वल वबाअ बि दा'वतिल जीरानि व मुवासातिल फ़ु-क़राअ) (कुल सफ़ह़ात : 40)

www.dawateislami.net

(10) वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के हुक़ूक़ (अल हुक़ूक़ लि त़र्हिल उ़क़ूक़) (कुल सफ़ह़ात : 125)

(11) दुआ़ के फ़ज़ाइल (अह़्सनुल विआ़अ लि आदाबिद्दुआ़अ मअ़हू ज़ैलुल मुद्दआ़ लि अह़्सनिल विआ़अ) (कुल सफ़ह़ात : 140)

शाएअ़ होने वाली अ़-रबी कुतुब

अज़ : इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत

मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُالرَّحْمٰن

(12) किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम (कुल सफ़ह़ात : 74) । (13) तम्हीदुल ईमान (कुल सफ़ह़ात : 77) । (14) अल इजाज़ातुल मतीनह (कुल सफ़ह़ात : 62) । (15) इक़ा-मतुल क़ियामह (कुल सफ़ह़ात : 60) । (16) अल फ़ज़्लुल मौहबी (कुल सफ़ह़ात : 46) । (17) अज्लल ए'लाम (कुल सफ़ह़ात : 70) । (18) अज़्ज़म-ज़-मतुल क़-मरिय्यह (कुल सफ़ह़ात : 93) । (19,20,21) जद्दुल मुम्तार अ़ला रद्दिल मुह़तार (अल मुजल्लद अल अव्वल वष्षानी) (कुल सफ़ह़ात : 713,677,570)

शो'बए इस्लाही कुतुब

(22) ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ (कुल सफ़ह़ात : 160)

(23) इनफ़िरादी कोशिश (कुल सफ़ह़ात : 200)

(24) तंग दस्ती के अस्बाब (कुल सफ़ह़ात : 33)

(25) फ़िक्रे मदीना (कुल सफ़ह़ात : 164)

www.dawateislami.net

(26) इम्तिह़ान की तय्यारी कैसे करें ? (कुल सफ़ह़ात : 32)

(27) नमाज़ में लुक़्मा के मसाइल (कुल सफ़ह़ात : 39)

(28) जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़ह़ात : 152)

(29) काम्याब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़ह़ात : 43)

(30) निसाबे म-दनी क़ाफ़िला (कुल सफ़ह़ात : 196)

(31) काम्याब त़ालिबे इल्म कौन ? (कुल सफ़ह़ात : तक़रीबन 63)

(32) फ़ैज़ाने एह़्याउल उ़लूम (कुल सफ़ह़ात : 325)

(33) मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी (कुल सफ़ह़ात : 96)

(34) ह़क़ व बात़िल का फ़र्क़ (कुल सफ़ह़ात : 50)

(35) तह़क़ीक़ात (कुल सफ़ह़ात : 142)

(36) अर-बईने ह़-नफ़िय्यह (कुल सफ़ह़ात : 112)

(37) अ़त़्त़ारी जिन्न का ग़ुस्ले मय्यित (कुल सफ़ह़ात : 24)

(38) त़लाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़ह़ात : 30)

(39) तौबा की रिवायात व ह़िकायात (कुल सफ़ह़ात : 124)

(40) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़ह़ात : 48)

(41) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच ह़िस्से) (कुल सफ़ह़ात : 275)

(42) टी वी और मूवी (कुल सफ़ह़ात : 32)

(43 ता 49) फ़तावा अहले सुन्नत (सात ह़िस्से)

(50) क़ब्रिस्तान की चुड़ैल (कुल सफ़ह़ात : 24)

www.dawateislami.net

(51) ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ह़ालात (कुल सफ़ह़ात :106)

(52) तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़ह़ात : 100)

(53) रहनुमाए जदवल बराए म-दनी क़ाफ़िला (कुल सफ़ह़ात : 255)

(54) दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़ह़ात : 24)

(55) म-दनी कामों की तक़्सीम (कुल सफ़ह़ात : 68)

(56) दा'वते इस्लामी की म-दनी बहारें (कुल सफ़ह़ात : 220)

(57) तरबिय्यते औलाद (कुल सफ़ह़ात : 187)

(58) आयाते क़ुरआनी के अन्वार (कुल सफ़ह़ात : 62)

(59) अह़ादीसे मुबा-रका के अन्वार (कुल सफ़ह़ात : 66)

(60) फ़ैज़ाने चहल अह़ादीष (कुल सफ़ह़ात : 120)

(61) बद गुमानी (कुल सफ़ह़ात : 57)

शो'बए तराजिमे कुतुब

(62) जन्नत में ले जाने वाले आ'माल (अल मुत्जरुर्राबेह़ फ़ी षवाबिल अ़-मलिस्सालेह़) (कुल सफ़ह़ात : 743)

(63) शाहराहे औलिया (मिन्हाजुल आ़रिफ़ीन) (कुल सफ़ह़ात : 36)

(64) ह़ुस्ने अख़्लाक़ (मकारिमुल अख़्लाक़)(कुल सफ़ह़ात : 74)

(65) राहे इ़ल्म (ता'लीमुल मु-तअ़ल्लिम त़रीक़ुत्तअ़ल्लुम) (कुल सफ़ह़ात : 102)

(66) बेटे को नसीह़त (अय्युहल वलद)(कुल सफ़ह़ात : 64)

(67) अद्दा'वति इल्ल फ़िक्र (कुल सफ़ह़ात : 148)

(68) आंसूओं का दरिया (बह़्रुद्दुमूअ़) (कुल सफ़ह़ात : 300)

www.dawateislami.net

(69) नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (कुर्रतुल उ़यून)

(कुल सफ़्हात : 136)

(70) उ़यूनुल ह़िकायात (मुतर्जम) (कुल सफ़्हात : 412)

शो'बए दर्सी कुतुब

(71) ता'रीफ़ाते नह़्विय्यह (कुल सफ़्हात : 45)

(72) किताबुल अ़क़ाइद (कुल सफ़्हात : 64)

(73) नुज़्हतुन्नज़र शर्हे नख़्बतुल फ़िक्र (कुल सफ़्हात : 175)

(74) अर-बईनिन न-वविय्यह (कुल सफ़्हात : 121)

(75) निसाबुत्तज्वीद (कुल सफ़्हात : 79)

(76) गुलदस्तए अ़क़ाइदो आ'माल (कुल सफ़्हात : 180)

(77) वक़ा-यतिन्नह़्व फ़ी शर्हे हिदा-यतुन्नह़्व

(78) सर्फ़ बहाई मुतर्जम मअ़ हाशिया सर्फ़ बनाई

शो'बए तख़रीज

(79) अ़जाइबुल क़ुरआन मअ़ ग़राइबुल क़ुरआन (कुल सफ़्हात : 422)

(80) जन्नती ज़ेवर (कुल सफ़्हात : 679)

(81) बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल (ह़िस्सा : 1 से 6)

(82) बहारे शरीअ़त, जिल्द दुवुम (ह़िस्सा : 7 से 13)

(83) बहारे शरीअ़त, जिल्द सिवुम (ह़िस्सा : 14 से 20)

(84) इस्लामी ज़िन्दगी (कुल सफ़्हात : 170)

(85) आईनए क़ियामत (कुल सफ़्हात : 108)

(86) उम्महातुल मुअमिनीन (कुल सफ़्हात : 59)

(87) सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡہُ का इ़श्क़े रसूल صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

(कुल सफ़्हात : 274)

www.dawateislami.net

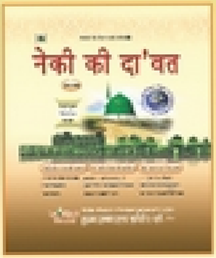

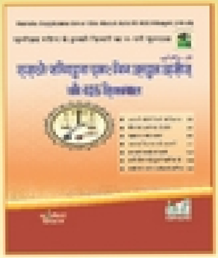

सुन्नत की बहारें

الحمد لله عزوجل तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, ان شاء الله عزوجل इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेह्न बनाए कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** ان شاء الله عزوجل" अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये "**म-दनी इन्आ़मात**" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "**म-दनी क़ाफ़िलों**" में सफ़र करना है। ان شاء الله عزوجل

मक-त-बतुल मदीना की शाखें

अहमद आबाद : सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अहमद आबाद-1, (M) 09327168200

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़्लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

मक-त-बतुल मदीना
दा'वते इस्लामी

421, उर्दू मार्केट, मटया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली - 6

फ़ोन : (011) 23284560 E-Mail : Maktabadehli@gmail.com